संयुक्त राज्य अमेरिका का इतिहास

सम्पादक :
डॉ. बी.एस. माथुर

संशोधनकर्त्ता :
डॉ. एल.पी. माथुर

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
(माध्यमिक शिक्षा और उच्चतर शिक्षा विभाग)
भारत सरकार



॥ राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी ॥



1947 ई. के बाद भारत के बहुत से विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में संयुक्त राज्य अमेरिका का इतिहास सम्मिलित किया गया है। परन्तु इस विषय पर हिन्दी में बहुत कम अच्छी पुस्तकें उपलब्ध हैं। प्रस्तुत ग्रन्थ मूल रूप से विश्वविद्यालयों के ऑनर्स तथा एम.ए., पाठ्यक्रम की दृष्टि से तैयार किया गया है। सम्पूर्ण पुस्तक दो खण्डों में विभाजित है। प्रथम खण्ड में अमेरिका में उपनिवेशों की स्थापना से गृह युद्ध के प्रारम्भ तक एवं द्वितीय खण्ड में गृह युद्ध से लेकर द्वितीय विश्व युद्धोपरान्त तक की घटनाओं एवं नीतियों का ऐतिहासिक विवरण व विश्लेषण दिया गया है। पुस्तक के अन्त में 1953 ई. तक के राष्ट्रपतियों के नाम, दलीय सम्बन्ध तथा कार्य अवधि की सूची भी सम्मिलित की गई है।

संयुक्त राज्य अमेरिका
का
इतिहास

संयुक्त राज्य अमेरिका
का
इतिहास

सम्पादक
डॉ. बी.एस. माथुर

संशोधनकर्ता
डॉ. एल.पी. माथुर



राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर

मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार की विश्वविद्यालय-स्तरीय ग्रन्थ-निर्माण योजना के अन्तर्गत, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर द्वारा प्रकाशित।

पांचवां संस्करण : 2013
(प्रतियाँ 550)

संयुक्त राज्य अमेरिका का इतिहास
ISBN 978-81-7137-952-1

मूल्य : 160.00 रुपये मात्र

प्रकाशक :
राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी
प्लाट नं. 1, झालाना सांस्थानिक क्षेत्र
जयपुर- 302 004
दूरभाष : 2711129, 2710341
Website : www.rajhga.com.

मुद्रक :
कोटावाला ऑफसैट
जयपुर

प्रकाशकीय

केन्द्र प्रवर्तित योजना के अन्तर्गत अकादमी लगभग चार दशक से माध्यम परिवर्तन की नीति की पालना कर रही है। इस निमित्त उच्च शिक्षा के विद्यार्थियों के लिए विज्ञान, तकनीकी, सामाजिक विज्ञान, मानविकी, शिक्षा एवं कृषि आदि विषयों की पुस्तकें हिन्दी में उपलब्ध करवाने का महत्त्वपूर्ण कार्य अकादमी ने किया है। दिसम्बर 2012 तक अकादमी के द्वारा 567 मौलिक एवं 89 अनूदित पुस्तकें प्रकाशित की जा चुकी हैं। इनमें पाठ्यपुस्तकें हैं तो सन्दर्भ ग्रन्थ भी हैं।

राजस्थान के विभिन्न विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में अकादमी द्वारा प्रकाशित 100 से अधिक पुस्तकें अनुशंसित हैं। इसके अलावा मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, बिहार, हरियाणा एवं दिल्ली सहित हिन्दी भाषी प्रदेशों के अनेक विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में अकादमी की अनेक पुस्तकें अनुशंसित हैं।

अकादमी का सदैव प्रयास रहा है कि विद्यार्थियों को सस्ती एवं स्तरीय पुस्तकें उपलब्ध करवायी जा सकें। इसके लिए पूर्व में प्रकाशित पुस्तकों का पुनः मुद्रण करवाने से पहले आवश्यक संशोधन करवाया जाता है। निरन्तर संशोधन, परिवर्द्धन एवं परिष्कार से तैयार करवायी गयी पुस्तकों के 727 संस्करण प्रकाशित किये जा चुके हैं।

प्रस्तुत पुस्तक का पांचवां संस्करण प्रकाशित करते हुए अकादमी हर्ष का अनुभव करती है। आशा करती है कि पुस्तक का यह संस्करण पूर्व की भाँति उपयोगी सिद्ध होगा।

हम पुस्तक के सम्पादक डॉ. बी.एस. माथुर एवं संशोधनकर्त्ता डॉ. एल. पी. माथुर के प्रति सहयोग हेतु आभारी हैं।

डॉ. आर.डी. सैनी

जनवरी, 2013

निदेशक

प्राक्कथन

(पांचवां संस्करण)

राजस्थान के विभिन्न विश्वविद्यालयों के बी.ए. ऑनर्स एवं एम.ए. इतिहास के विद्यार्थियों के लिए पुस्तक को पहले के संस्करणों की अपेक्षा अधिक उपयोगी बनाने की दृष्टि से पुस्तक के चतुर्थ संस्करण में आवश्यक संशोधन कर अद्यतन बनाने की कोशिश की गयी थी। ये संशोधन इन कक्षाओं के पाठ्यक्रमों के अनुसार किये गये थे। आशा है कि पुस्तक का पांचवां संस्करण भी पूर्व की भाँति उपयोगी सिद्ध होगा।

डॉ. एल. पी. माथुर

प्राक्कथन

(प्रथम संस्करण)

1947 ईसवी के बाद अनेक भारतीय विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में संयुक्त राज्य अमेरिका का इतिहास सम्मिलित किया गया है, परन्तु इस विषय पर हिन्दी में बहुत कम अच्छी पुस्तकें उपलब्ध हैं। प्रस्तुत ग्रन्थ मूल रूप से विश्वविद्यालयों के ऑनर्स तथा एम.ए. पाठयक्रम की दृष्टि से तैयार किया गया है। सम्पूर्ण पुस्तक दो खण्डों में विभाजित है। प्रथम खण्ड में अमेरिका में उपनिवेशों के स्थापन काल से गृह युद्ध के प्रारम्भ तक एवं द्वितीय खण्ड में गृह युद्ध से लेकर द्वितीय विश्व-युद्धोपरान्त तक की घटनाओं एवं नीतियों का ऐतिहासिक विवरण व विश्लेषण दिया गया है। पुस्तक के अन्त में 1953 ईसवी तक के राष्ट्रपतियों के नाम, दलीय सम्बन्ध तथा कार्य अवधि की अनुसूची सम्मिलित की गई है। लेखकों द्वारा दी गई पुस्तक-सूची में अन्य सन्दर्भ-ग्रंथों के नाम और जोड़ दिये गये हैं जिससे यह सूची विद्यार्थियों के लिए और अधिक उपयोगी हो गई। पुस्तक को सरल एवं सुस्पष्ट भाषा में लिखने का प्रयास किया गया है। आशा है, उक्त पुस्तक छात्रों को रुचिकर सिद्ध होगी।

पुस्तक के सभी लेखकों के प्रति मैं अपना आभार प्रकट करता हूँ जिनके सहयोग से इसे साकार रूप देने में सहायता मिली है। मैं राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी के प्रति भी आभारी हूँ जिसने मुझे इस पुस्तक के सम्पादक का कार्य सौंपा।

- डॉ. बी. एस. माथुर

सी-13, मोती मार्ग,
बापू नगर, जयपुर

विषय-सूची

प्रथम खण्ड

द्वितीय खण्ड

परिशिष्ट

❑❑❑

प्रथम खण्ड

अध्याय - 1

अमेरिका की खोज और उपनिवेशों की स्थापना

□ एल. पी. माथुर

पंद्रहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध तक विश्व के किसी भी भाग में रहने वाले के लिए विश्व का बहुत बड़ा भाग अनजान था। अमेरीका महाद्वीप, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड तथा अफ्रीका एवं एशिया के अधिकांश भागों से शेष दुनिया के लोग परिचित नहीं थे। किन्तु पंद्रहवीं शताब्दी के उत्तरर्द्ध तथा सोलहवीं शताब्दी में यूरोप के अनेक देशों में भौगोलिक अन्वेषण की प्रवृत्ति जागृत हुई। इसके फलस्वरूप यूरोपवासियों ने कई नये देशों का अन्वेषण किया जिनमें अमेरिका सबसे अधिक प्रसिद्ध है। इन अन्वेषणों के परिणामस्वरूप विश्व के इतिहास में एक नये युग का आरम्भ हुआ। इस युग में यूरोपीय सभ्यता का विस्तार अनेक देशों में हुआ। इतिहासकार हेज के शब्दों में ''आधुनिक विश्व सभ्यता के उत्कर्ष का इतिहास वास्तव में 'यूरोपीय विस्तार' का इतिहास है।'' अत: हमें भौगोलिक खोजें जैसे महत्त्वपूर्ण विषय, जिसके साथ नवीन विचारों का इतिहास आरम्भ होता है, के कारणों का विवेचन करना चाहिए।

(I) भौगोलिक अन्वेषण को प्रेरित करने वाली परिस्थितियाँ:

(1) भारत, चीन और पूर्व के अन्य देशों के साथ व्यापार के लिए जल-मार्ग के खोज की आवश्यकता - प्राचीन काल में भारत, चीन और पूर्व के अन्य देशों के साथ यूरोप के अनेक देशों के घनिष्ठ व्यापारिक सम्बन्ध थे। उस समय यह व्यापार स्थल मार्ग द्वारा होता था। 1098 से 1291 के बीच ईसाइयों तथा मुसलमानों के बीच लड़े गये धर्म युद्धों के कारण पश्चिम व पूर्व के देशों के मध्य स्थापित साम्राज्य में एक सीमा तक वृद्धि हुई, किन्तु इसके पश्चात् तुर्कों के साम्राज्यवादी राज्य की स्थापना तथा इस्लामी साम्राज्य के विस्तार से यूरोप व पूर्व के देशों के मध्य स्थल मार्ग से होने वाले व्यापार को धक्का लगा। तुर्कों ने एशिया-ए-कोचक और सीरिया से होकर जाने वाले व्यापारिक मार्ग को अपने नियन्त्रण में ले लिया। वे इतना अधिक पारगमन शुल्क वसूल करते थे कि व्यापारियों के लिए इन देशों के जरिये माल ले जाना अलाभदायक हो गया। 1453 ईसवी में कुस्तुन्तुनिया पर तुर्कों का अधिकार हो जाने से वे वास्फोरस और काला सागर के व्यापार पर नियन्त्रण स्थापित करने में समर्थ हो गए। अत: इटली तथा यूरोप के कुछ अन्य देशों के व्यापारियों को नये जल-मार्ग खोजने की आवश्यकता प्रतीत हुई। भारत के जल-मार्ग की खोज करते समय अकस्मात् कोलम्बस ने अमेरिका का अन्वेषण किया।

(2) सामन्तवाद का पतन - एच.बी.पार्केस के अनुसार, यूरोप के प्रसार में जिस अन्य तत्त्व ने प्रभाव डाला, वह भूमि के स्वामित्त्व की व्यवस्था में होने वाला परिवर्तन था। मध्य युग के प्रारम्भ में यूरोप में सामंतवाद का बोलबाला था। इस व्यवस्था ने किसानों को भूमि से बांध दिया था। किंतु मध्य युग के अन्तिम काल में इस व्यवस्था में परिवर्तन आया। सामंतवाद के पतन के समय कृषकों की दशा में बदलाव आया। उसे अधिक स्वतंत्रता मिली। वह अपने सामंत की भूमि को छोड़ कर ऐसे स्थानों में जाने के लिए स्वतंत्र हो गया जहाँ उसे उन्नति के अवसर मिल सके। अतएव काफी संख्या में यूरोप के भूमिहीन कृषक अमेरिका चले गये। एच.बी.पार्केस के अनुसार, ''उन्नीसवीं शताब्दी तक अनेक यूरोपीय किसानों एवं मजदूरों के अमेरिका जाने का मुख्य कारण सामन्तवादी पृष्ठभूमि एवं वर्गीय विशेषाधिकारों से पूर्ण सामंतवाद था।''

(3) राष्ट्रीय राज्यों का उदय - मध्य युग में इंगलैंड, फ्रांस व कुछ अन्य देशों में निरंकुश राजाओं की सत्ता बनी रही, किन्तु यह केवल राष्ट्रीय एकता का प्रतीक थी। उनके समय में सामंतवादी व्यवस्था ने देशों को छोटे-छोटे भागों में विभाजित कर दिया था। मध्य युग के अन्त में मध्यम वर्ग के उदय तथा वणिकवाद के प्रसार के कारण देश में एक शक्तिशाली केन्द्रीय सरकार का समर्थन किया जाने लगा। सामंतवाद का विरोध किया गया तथा राष्ट्रीय राज्यों की स्थापना को प्रोत्साहित किया गया।

यूरोप के अधिकांश देशों में राष्ट्रीय राज्यों की स्थापना से व्यापार और व्यवसाय को प्रोत्साहन मिला। कोलम्बस और वास्को-द-गामा आदि साहसी अन्वेषक राष्ट्रीय राजाओं द्वारा ही अन्वेषण के लिए भेजे गये थे। बाद में राष्ट्रीय राजाओं ने दूर-दूर के प्रदेशों में उपनिवेश बसाने में जनता को सहायता दी। पार्केस के मत में नई दुनिया की खोज और विजय राष्ट्रीय राज्यों की शक्ति और साधनों के बिना सम्भव नहीं थी।

(4) आर्थिक क्षेत्र के महत्त्वपूर्ण परिवर्तन - नवोदित राष्ट्रीय राज्यों ने अपनी शक्ति बढ़ाने के साथ-साथ देश की आर्थिक व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने का प्रयास किया। उनके शासन काल में आर्थिक राष्ट्रवाद की भावना प्रबल होती चली गई। पूँजीवाद का उदय व विकास हुआ। नवीन आर्थिक विचारधारा के अनुसार यह माना जाने लगा कि प्रत्येक राष्ट्र को आर्थिक क्षेत्र में आत्मनिर्भर होना चाहिए। उसे अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उत्पादन, अपने देश में ही करना चाहिए। सोना व चाँदी की मात्रा को बढ़ाना चाहिए तथा शस्त्रों का उत्पादन भी देश में ही करना चाहिए। इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए राष्ट्रीय राज्यों ने पूँजीपतियों को पूर्ण समर्थन प्रदान किया। इस नवीन व्यवस्था में उपनिवेशों की स्थापना को महत्त्वपूर्ण माना गया, क्योंकि एक यूरोपीय राष्ट्र अपने अधीनस्थ उपनिदेशों से ऐसा कच्चा माल, जो उसके प्रदेशों में उपलब्ध नहीं था, ला सकता था तथा अपने अतिरिक्त उत्पादन को वहाँ खपा सकता था। पार्केस के अनुसार वणिकवाद की नीति अमेरिका को उपनिवेश बनाने में सबसे महत्त्वपूर्ण तत्त्व था।

(5) पुनर्जागरण की प्रवृत्तियों का प्रभाव - उत्तरी इटली के कुछ धनी नगरों से प्रारम्भ होकर पुनर्जागरण यूरोप के दूसरे देशों में फैल गया। शिक्षा के विकास ने यूरोप में अंधविश्वासों को लगभग समाप्त कर दिया। व्यक्ति की क्षमता पर जोर दिया जाने लगा। प्राचीन बंधनों से मुक्त

होने के कारण यूरोप की जनता में आत्मविश्वास की भावना जागृत हुई तथा उसमें साहसपूर्ण कार्यों को करने की रुचि पैदा हुई। इसके फलस्वरूप भौगोलिक अन्वेषण की प्रवृत्ति को बल मिला।

(6) धर्म-सुधार आन्दोलनों का प्रभाव - आधुनिक युग के आरम्भ में धर्म-सुधार आन्दोलनों ने यूरोप के निवासियों को एक नया दृष्टिकोण प्रदान किया। धर्म-सुधारकों ने पोप की सत्ता को चुनौती देकर कई देशों में प्रोटेस्टेंट धर्म का प्रचार किया। उन्होंने परिश्रम और साहस को महत्त्वपूर्ण बताया। कैथोलिकों ने भी प्रतिवादात्मक सुधार आंदोलन द्वारा चर्च के दोषों को दूर किया। इस प्रकार धार्मिक सुधार आंदोलन ने जनता को अन्धविश्वास, धार्मिक कुरीतियों और पोप की सत्ता से मुक्त कर यूरोपीय सभ्यता का विस्तार करने की प्रेरणा दी। यूरोप के विभिन्न देशों में कैथोलिकों और प्रोटेस्टेंटों के मध्य होने वाले धार्मिक संघर्ष और शासकों की धार्मिक असहिष्णुता की नीति से तंग आकर अनेक लोग अपनी मातृभूमि छोड़ कर अमेरिका चले गये।

(7) भौगोलिक ज्ञान में वृद्धि - धर्म-युद्धों के समय यूरोप का सम्पर्क पुनः पूर्व के देशों में स्थापित हुआ। इसके फलस्वरूप यूरोप के निवासियों के भौगोलिक ज्ञान में वृद्धि हुई। मार्को पोलो की साहसी यात्रा के वर्णन से प्रेरित होकर भूगोल के अध्ययन में लोगों की रुचि बढ़ी। भूगोलवेत्ताओं के द्वारा वैज्ञानिक ढंग से यह सिद्ध करने पर कि पृथ्वी का आकार गोल है, साहसी अन्वेषकों को पृथ्वी का चक्कर लगाने की इच्छा जागृत हुई। इसके आधार पर पहले की अपेक्षा विश्व के मानचित्र अधिक सही बनने लगे। ऐसा माना जाता है कोलम्बस ने अपनी यात्रा में टैस्केनेली (Tascanally) द्वारा बनाये गये एक मानचित्र का प्रयोग किया था। इस प्रकार के मानचित्रों में स्थानों की स्थिति को रूपरेखाओं द्वारा इंगित किया जाने लगा था।

(8) नौ-चालन विज्ञान का विकास - नौ-चालन विज्ञान के विकास ने भी अन्वेषण में सहयोग दिया। कुतुबनुमा के अविष्कार से दिशा का सही ज्ञान प्राप्त करने में सहायता मिली। अक्षांश व देशान्तर रेखाओं को निर्धारित करने के लिए एक यंत्र बनाया गया। इस समय में पहले की अपेक्षा बड़े-बड़े जहाज बनने लगे जिसमें बैठ कर यात्री तूफानी समुद्रों में भी जा सकते थे।

(9) साहसी व्यक्तियों का योगदान - अमेरिका व अन्य देशों के अन्वेषण में साहसी व्यक्तियों का योगदान महत्त्वपूर्ण है। डियाज, वास्को-द-गामा और कोलम्बस ने अपार संकटों की चिन्ता न करते हुए भौगोलिक अन्वेषण के कार्य को सफल बनाया।

(10) ईसाई धर्म प्रचारकों के प्रयास - अन्वेषित प्रदेशों में ईसाई धर्म के प्रसार की भावना ने भी नये देशों की खोज के लिए यूरोपवासियों को प्रेरित किया। स्वयं कोलम्बस के सामने भी अन्य उद्देश्यों के साथ यह एक आदर्श था।

(11) मार्को पोलो का विवरण - तेरहवीं शताब्दी में मार्को पोलो ने इटली के वेनिस नगर से चीन व जापान तक की यात्रा की। वहाँ से 24 वर्ष बाद स्वदेश लौटने पर उसने अपनी यात्रा का वृतान्त प्रकाशित किया। इसमें उसने पूर्वी देशों के महान वैभव का विस्तृत रूप से वर्णन किया। पूर्वी देशों से मिलने वाली चीनी, कपास, मसाले, सोना और रत्न आदि के विवरण ने

यूरोपवासियों को आकर्षित किया और वे पूर्वी देशों के साथ प्रत्यक्ष सम्पर्क स्थापित करने के लिए उत्सुक हो गये। उनकी साहस भरे काम करने की भावना को चुनौती दी और उनके लालच को भड़काया। इसने उन्हें और भी ज्यादा समुद्री यात्राएँ करने को उकसाया। एच.बी.वेल्स के शब्दों में "इससे प्रत्यक्षत: अमेरिका की खोज हुई।"

(II) भौगोलिक खोजों में पुर्तगाल व स्पेन की भूमिका :

आधुनिक युग में भौगोलिक अनुसंधान के लिए समुद्री यात्राओं को सबसे अधिक प्रोत्साहन देने का श्रेय पुर्तगाल के समाट् जॉन प्रथम के तृतीय पुत्र हेनरी द नेवीगेटर (Henry the Navigator) को दिया जाता है। उसने पश्चिम अफ्रीका के समुद्री तट के अन्वेषण के लिए कई अभियान भेजे। काफी समय तक उसने कप्तान केप ऑफ गुड होप तक नहीं पहुँच सके। अन्त में 1488 ईसवी में डियाज (Diaz) इस स्थान तक पहुँचने में सफल हुआ। इस घटना के चार वर्ष बाद स्पेन की महारानी ईसाबेला (Isabella) ने कोलम्बस नामक एक इटालियन को भारत का जल मार्ग खोजने के लिए वित्तीय सहायता दी। कोलम्बस ने अपने भौगोलिक ज्ञान के आधार पर यह विश्वास प्रकट किया था कि स्पेन ने पश्चिम की ओर समुद्र में यात्रा करके वह पूर्व के देशों को पहुँच सकता है। 3 अगस्त, 1492 ईसवी को वह तीन जहाजों में नब्बे साथियों के साथ केडिज (Cadiz) के निकट स्थित पालोस (Palos) के बन्दरगाह से रवाना हुआ। 12 अक्टूबर को वह वेस्ट इंडीज (West Indies) के बहामा (Bahama) द्वीप पहुँच गया। बहामा द्वीप से आगे बढ़ कर उसने क्यूबा (Cuba) के उत्तर पश्चिमी तट का अन्वेषण किया। इसके पश्चात् वह सेंटो डोमिन्गो (Santo Domingo) जा पहुँचा। 1493 ईसवी में कोलम्बस सत्रह जहाजों में लगभग बारह सौ व्यक्तियों को लेकर फिर इसी ओर गया। उसकी तीसरी यात्रा 1498 ईसवी में आरम्भ हुई। त्रिनिदाद (Trinidad) पहुँचकर उसने पहली बार दक्षिण अमेरिका की भूमि के दर्शन किये। 1402 ईसवी में अपनी अन्तिम यात्रा में कोलम्बस क्यूबा (Cuba) से मध्य अमेरिका के तट पर जा पहुँचा और उसने वहाँ से मध्य पनामा (Panama) के तट का अन्वेषण किया। अपनी आरम्भिक यात्राओं में कोलम्बस ने वहाँ के निवासियों को देखकर यह अनुमान लगाया कि वह एशिया महाद्वीप की मुख्य भूमि के निकट के द्वीपों में जा पहुँचा है, अतएव उसने वहाँ के निवासियों को रेड इण्डियन्स (Red Indians) का नाम दिया।

इस शताब्दी के ऐतिहासिक अनुसंधानों ने यह सिद्ध कर दिया है कि कोलम्बस अमेरिका का प्रथम अन्वेषक नहीं था। अमेरिका की खोज करने वालों में प्रथम स्थान फोनिशयनों (Phonecians) को दिया जा सकता है। उनके लिए एटलांटिक महासागर (Atlantic Ocean) को पार करना असम्भव बात नहीं थी। अत: उनका भूमध्य सागर को पार कर अमेरिकन महाद्वीप तक पहुँचना एक सम्भावित घटना मानी जा सकती है। टर्की के इतिहासज्ञ यह दावा करते हैं कि ईसा से पाँच हजार वर्ष पूर्व उनके प्रदेश के निवासियों का सम्पर्क अमेरिका के आदिवासियों से था। इसी प्रकार के सम्पर्कों का दावा प्राचीन भारत के निवासियों के विषय में भी किया जाता है। लेकिन इन दोनों को अभी तक मान्यता नहीं मिली है। ऐतिहासिक युग में नार्वे के वाइकिंगों (Vikings) ने आइसलैंड (Iceland) में 874 ईसवी के लगभग अपना उपनिवेश

स्थापित किया। ऐरिक दी रेड (Eric the Red) ने आइसलैंड से आगे बढ़ कर 986 ईसवी में ग्रीनलैंड (Greenland) के दक्षिण-पश्चिम तट पर कुछ व्यक्तियों को बसाया। इसी साल एक जहाजी कप्तान तूफान के कारण मार्ग से भटक गया और उसने उत्तरी अमेरिका के तट को देखा। 1000 ईसवी के लगभग ऐरिक के पुत्र ऐरिकसन (Ericson) ने उत्तरी अमेरिका के तट का अन्वेषण किया। चौदहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में ग्रीनलैंड में वाइकिंग उपनिवेश के नष्ट हो जाने के पश्चात् उत्तरी अमेरिका से उनके सम्पर्क टूट गये। यद्यपि उपर्युक्त विवरण से यह स्पष्ट है कि कोलम्बस के पहले भी यूरोप निवासियो को अमेरिकन महाद्वीप के कुछ प्रदेशों का साधारण ज्ञान था, परन्तु आधुनिक काल में नई दुनिया का विस्तृत परिचय देने का श्रेय कोलम्बस को ही दिया जा सकता है।

यद्यपि कोलम्बस अमेरिका का आधुनिक अन्वेपक था, परन्तु उसके द्वारा खोजे गये विशाल महाद्वीप का नाम एक अन्य अन्वेषक के नाम पर रखा गया। कोलम्बस की प्रथम यात्रा के पश्चात् 1497 ईसवी में पुर्तगाल से वित्तीय सहायता प्राप्त कर एक इटालियन व्यापारी अमेरिकस वेस्पीसियस (Americus Vespecious) अमेरिका गया। 1501 ईसवी तक उसने तीन और यात्राएँ कीं। अपने यात्रा-संस्मरणों में उसने यह मत प्रकट किया कि वह एशिया महाद्वीप के स्थान पर एक नये महाद्वीप में जा पहुँचा है। उसके संस्मरणों के आधार पर एक जर्मन भूगोल-वेत्ता ने विश्व के मानचित्र में अमेरिका की स्थिति निर्धारित करते हुए इस महाद्वीप का नाम अमेरिगो के नाम पर अमेरिका रखा।

कोलम्बस की यात्राओं ने पुर्तगाल और इंग्लैंड का ध्यान अमेरिका की ओर आकर्षित किया। पुर्तगाल के सम्राट ने फर्नान्डेस (Farnandas) को 1499 ईसवी में ग्रीनलैंड भेजा। उसके पश्चात् 1500 ईसवी और 1501 ईसवी में पुर्तगाल ने दो और अभियान ग्रीनलैंड की दिशा में भेजे। द्वितीय अभियान में पुर्तगाली न्यू फाउण्डलैंड के दक्षिण में पहुँच गये। 1500 ईसवी में पुर्तगाली एडमिरल कैब्राल (Cabral) ब्राजील के तट पर पहुँच गया। वेस्पीसियस की इस समय की यात्राओं का उल्लेख किया जा चुका है। 1501 ईसवी में इंग्लैंड के सम्राट हेनरी सप्तम द्वारा भेजे गये तीन अंग्रेज व तीन पुर्तगाली व्यापारियों ने एटलांटिक महासागर में यात्रा की। अगले तीन वर्षों में प्रत्येक वर्ष वे अपनी यात्राओं में अटलांटिक महासागर के तट पर मध्य अमेरिका तक गये। 1509 ईसवी में कैबट (Cabot) नामक एक इटालियन को इंगलैंड ने भेजा। वह इसके पहले भी दो बार न्यू फाउण्डलैंड और अमेरिका के तटीय प्रदेशों की यात्रा कर चुका था।

(III) स्पेन के उपनिवेश :

शीघ्र ही स्पेन को अमेरिका से अधिक मात्रा में लाभ होने लगा। उन्होंने सेंटो डोमिन्गो (Santo Domingo) में गन्ने व कपास की सफल खेती के साथ पशु-पालन भी किया। 1512 ईसवी में सेंटो डोमिन्गो का स्पेनिश उपनिवेश लगभग एक लाख डालर की कीमत का स्वर्ण मातृभूमि को भेज रहा था। इस उपनिवेश को आधार बना कर उन्होंने क्यूबा, प्यूरटो रिको (Puerto Rico) और जैमेका (Jaimaca)पर अधिकार कर लिया। 1513 ईसवी में प्यूरटो

रिको का स्पीनिश विजेता लियों (Leon) बहामा के पास के समुद्रों को पार कर फ्लोरिडा में सेंट आगस्टीन (Saint Augustine)और सेंट जॉन्स (Saint Jones) नदी के मध्य के भाग में कुछ समय तक रहा। वेनेजुएला और कोलम्बिया के प्रदेशों में भी उन्होंने अपनी व्यापारिक चौकियाँ स्थापित की। पनामा के तट का अन्वेषण करते समय स्पेनवासियों ने प्रशान्त महासागर को देखा। अगले कुछ वर्षों में स्पेनिश अन्वेषकों ने दक्षिण अमेरिका और मैक्सिको के तटीय प्रदेशों के विषय में अधिक जानकारी प्राप्त की। 1519 ईसवी में स्पेन ने मैगेलान (Magellan) को विश्व का चक्कर लगाने के लिए भेजा। यद्यपि उसकी मार्ग में फिलीपाइन्स में मृत्यु हो गई, लेकिन उसका अभियान सफल रहा।

स्पेन की सबसे महत्त्वपूर्ण सफलता मैक्सिको की विजय थी। 1519 ईसवी में कोर्टेज (Cortez) क्यूबा से रवाना होकर मैक्सिको पहुँचा। मैक्सिको के आन्तरिक भागों में उसने वैभवशाली आज्टैक्स (Aztecs) साम्राज्य की सेना को परास्त कर मैक्सिको में स्पेन का साम्राज्य स्थापित किया। मैक्सिको के सोने व चाँदी के भंडार एवं विशाल सम्पत्ति को देखकर उसकी आँखें चकाचौंध हो गईं। सोलहवीं शताब्दी के शेष समय में स्पेनवासियों ने अमेरिका के कई अन्य आन्तरिक भागों का अन्वेषण किया। दक्षिण मैक्सिको को आधार बनाकर वे उत्तर की ओर बढ़ते हुए सोलहवीं शताब्दी के अन्त तक न्यू-मैक्सिको और केलिफोर्निया (California) तक पहुँच गये। क्रमशः हरनांडो द सोटो (Hernando de Soto) और फ्रांसिस्को वासक्वेज कारोनाडो (Fransisco Vasquez Caronado) ने मिसीसिप्पी नदी की घाटियों और 'बड़े मैदान' के प्रदेशों की यात्रा की। स्पेन के जहाज कुछ ही समय में एटलांटिक और प्रशान्त महासागर में निर्विघ्न घूमने लगे। दक्षिण अमेरिका में पिजारो (Pizaro) ने 1531 ईसवी में पेरु के समृद्धिशाली इन्कास (Incas) साम्राज्य को जीत लिया। कोलम्बिया, वेनेजुएला, चिली और अर्जेन्टीना भी स्पेन के अधीन हो गये। अमेजन के विशाल प्रदेश भी उनके साम्राज्य के अंग बन गये। 1565 ईसवी में उन्होंने फ्लोरिडा पर अधिकार कर सेंट आगस्टीन में प्रथम यूरोपियन बस्ती की स्थापना की। इसी प्रकार सत्रहवीं शताब्दी के आरम्भ में स्पेन का विशाल साम्राज्य अमेरिका में राओ ग्रान्डे (Rio Grande) और केलीफोर्निया की खाड़ी से ब्यूनस आयरस (Buenos Aires) तक लगभग छः हजार मील के क्षेत्र में फैला हुआ था। 1493 में पोप द्वारा प्रसारित आज्ञापत्र के अनुसार ब्राजील को छोड़कर शेष अमेरिकन महाद्वीप पर स्पेन अपना अधिकार मानता था। ब्राजील पर सोलहवीं व सत्रहवीं शताब्दी में पुर्तगाल का अधिकारं हो गया था।

(IV) अमेरिका में इंग्लैण्ड के औपनिवेशिक साम्राज्य को स्थापित करने के कारण :

स्पेन के पश्चात् इंग्लैण्ड को अमेरिका में औपनिवेशिक साम्राज्य स्थापित करने में सबसे अधिक सफलता मिली। अंग्रेजों के इस प्रकार के प्रयत्नों के अध्ययन के पहले उन परिस्थितियों का ज्ञान प्राप्त करना उचित होगा जिनसे प्रेरित हो इंग्लैण्ड ने इसके लिए गम्भीर प्रयत्न किए। इन कारणों के अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाता है कि अमेरिका में अंग्रेजों के उपनिवेशों की स्थापना सरकार, व्यापारी, धर्म-सुधारक और जनता के सम्मिलित योगदान का फल था।

(अ) आर्थिक कारण :

(1) स्पेन की सफलता व समृद्धि - स्पेन को अमेरिकन उपनिवेशों से काफी मात्रा में धन प्राप्त हो रहा था। यूरोप के अन्य देशों को इससे ईर्ष्या हुई और उन्होंने भी अमेरिका में उपनिवेश बसाने का निश्चय किया।

(2) इंग्लैण्ड में भूमिहीन किसानों की वृद्धि - यद्यपि इंग्लैण्ड की जनसंख्या अधिक नहीं थी, परन्तु गरीबों को जीवन-निर्वाह की कठिनाइयों का अनुभव हो रहा था। इस समय ऊन की माँग बढ़ रही थी। इसलिए पूँजीपतियों ने अपनी भेड़ों के पालन के लिए गरीब किसानों से खेत खरीद लिए थे। बड़े पैमाने पर खेती के प्रचलन के कारण भी कई किसान भूमिहीन हो चुके थे। अमेरिका में उन्हें साधारण मूल्य पर इच्छानुसार कृषियोग्य भूमि मिल सकती थी।

(3) इंग्लैण्ड में बढ़ती हुई गरीबी - स्पेन के अमेरिकन उपनिवेशों से आने वाले सोना और चांदी को इंग्लैण्ड के समुद्री लुटेरों द्वारा लूट के फलस्वरूप और स्पेनिशों से व्यापार के कारण इंग्लैण्ड में इन धातुओं की अधिकता हो गई थी। इसके फलस्वरूप वस्तुओं के मूल्यों में वृद्धि हो रही थी। साधारण जनता को अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करने में कठिनाइयों का अनुभव हो रहा था। अत: जनता गरीबी से बचने के लिए अमेरिका जाने को तैयार थी।

(4) इंग्लैण्ड में भिखारियों व अपराधियों की संख्या में वृद्धि - भूमिहीन कृषकों की संख्या में वृद्धि के कारण इंग्लैण्ड में भिखारियों की संख्या बढ़ रही थी। इसके साथ-साथ अपराधियों की संख्या में भी वृद्धि हो रही थी। ऐसे भिखारियों व अपराधियों को अमेरिका भेजना उचित समझा गया।

(5) पूँजीपतियों के प्रयास - इस समय में इंग्लैण्ड में पूँजीपतियों का प्रभाव बढ़ रहा था। वे अपनी पूँजी को लाभदायक व्यवसाय में लगाने को अत्यन्त इच्छुक थे। उन्होंने उपनिवेशों में व्यापार करने के लिए कई सम्मिलित कम्पनियाँ खोलीं। इस प्रकार की व्यापारिक कम्पनियों ने पूँजी और नेतृत्व प्रदान कर इंग्लैण्ड को अमेरिका में प्रमुख साम्राज्यवादी देश बना दिया। इन व्यापारिक कम्पनियों को इंग्लैण्ड की सरकार की ओर से भी प्रोत्साहन मिला।

(6) अमेरिका से कुछ वस्तुओं की प्राप्ति - स्पेन के निवासियों ने अमेरिकन उपनिवेशों से शक्कर, रेशम व तेल प्राप्त किया। इस प्रकार की वस्तुएँ इंग्लैण्ड के लिए वहाँ से प्राप्त की जा सकती थीं। कुछ समय बाद तम्बाकू की खेती व व्यापार से भी इंग्लैण्ड को लाभ होने लगा। इसी प्रकार फर(Fur) के व्यापार में भी उन्नति हुई। अतएव इंग्लैण्ड की रुचि अमेरिका में बढ़ने लगी।

(7) उत्पादन की खपत के लिए बाजार -इंग्लैण्ड के कई प्रमुख व्यवसायों, विशेषकर वस्त्र उद्योग के लिए अमेरिका में बाजार प्राप्त हो सकते थे।

(8) अमेरिका में उच्च सरकारी पदों पर नियुक्ति -प्रभावशाली वर्ग के सदस्यों को उपनिवेशों में सरकारी पद मिल जाते थे।

(ब) राजनीतिक कारण :

(1) स्पेन से प्रतिद्वंद्विता -अमेरिका में उपनिवेश स्थापित कर इंग्लैण्ड अपने प्रतिद्वन्द्वी स्पेन की शक्ति पर आघात कर सकता था।

(2) राज्य की आमदनी में वृद्धि – इस प्रकार के उपनिवेश सदैव साम्राज्यवादी देशों के लिए आर्थिक दृष्टि से लाभपूर्ण सिद्ध होते हैं। इसके साथ किये गये व्यापार से राज्य की आमदनी बढ़ती है।

(3) उपनिवेश राष्ट्र के गौरव का प्रतीक - उस समय में यूरोपियन देश उपनिवेशों को राष्ट्र के लिए गौरव का प्रतीक मानते थे।

(4) इंग्लैण्ड के स्वेच्छाचारी शासकों के दमन से बचाव - स्टुअर्ट राजाओं के अधीन इंग्लैण्ड में जनता के राजनीतिक अधिकारों का दमन किया गया था। "दैवी सिद्धान्त" का पालन करते हुए उन्होंने कई बार पार्लियामेंट की अनुमति के बिना कानूनों को पास किया था। पार्लियामेंट और स्वेच्छाचारी राजाओं के निरन्तर संघर्ष से तंग आकर कई अंग्रेजों ने देश छोड़ कर अमेरिका में बसना उचित समझा।

(स) धार्मिक कारण :

(1) प्रथम दो स्टुअर्ट शासकों व क्रामवेल के शासन काल में धार्मिक असहिष्णुता की नीति -यूरोप के धार्मिक सुधार-आन्दोलन का प्रभाव इंग्लैण्ड पर भी पड़ा। ट्यूडर सम्राटों के शासनकाल में वहाँ पर प्रोटेस्टेंट धर्म का भी प्रचार हुआ। 1600 ईसवी में साम्राज्ञी ऐलिजाबेथ ने इंग्लैण्ड में एंग्लिकन चर्च की स्थापना की। स्टुअर्ट राजाओं के शासन काल में धार्मिक मतभेदों ने गम्भीर रूप धारण कर लिया। कैथोलिकों के अतिरिक्त प्यूरिटनों ने भी एंग्लिकन चर्च की सत्ता मानने से इन्कार कर दिया। जेम्स प्रथम व चार्ल्स प्रथम की धार्मिक असहिष्णुता की नीति से तंग आकर सहस्त्रों की संख्या में प्रोटेस्टेंट इंग्लैण्ड छोड़ने को बाध्य हुए। क्रॉमवेल के शासन में कैथोलिकों को देश छोड़ कर अमेरिका जाना पड़ा। जेम्स द्वितीय के शासनकाल में पुन: प्रोटेस्टेंट काफी संख्या में अमेरिका चले गये।

मेसाचूसेट्स के निकट प्लीमथ उपनिवेश की स्थापना करने वाले प्यूरिटन अंग्रेज ही थे जो जेम्स प्रथम के समय में धार्मिक उत्पीड़न से बचने के लिए अमेरिका चले गये थे।

(द) सामाजिक कारण :

उपनिवेशों में सामाजिक समानता की भावना -अमेरिका में सामाजिक समानता के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए नये कदम उठाये गये। इन उपनिवेशों में यूरोपियन देशों की अपेक्षा विभिन्न सामाजिक वर्गों के मनुष्यों में अधिक सहृदयता और सहयोग की भावना थी।

(न) अन्य कारण :

(1) साहसी व्यक्तियों का योगदान - कुछ साहसी व्यक्तियों ने भी इस ओर सराहनीय योगदान दिया। अमेरिका में नये प्रदेशों की खोज के बाद राज्य से आज्ञा-पत्र प्राप्त कर उन्होंने नये उपनिवेशों की स्थापना की।

(2) गरीबों, भिखारियों व अपराधियों का बसाना -कुछ व्यक्तियों ने गरीबों को सहायता देने के उद्देश्य से प्रेरित होकर भी इस कार्य में रुचि ली। सरकार ने भी अपराधियों व भिखारियों को अमेरिका में निर्वासित कर फिर से अपना भाग्य बनाने का अवसर प्रदान किया।

(V) अमेरिका में इंग्लैण्ड की बढ़ती हुई रुचि

उपर्युक्त कारणों से प्रभावित होकर एलिजाबेथ के शासन काल में इंग्लैण्ड ने अमेरिका में उपनिवेश बसाने के प्रयत्नों में पहले की अपेक्षा अधिक रुचि लेना आरम्भ किया। केबट (Cabot) के पश्चात् इंग्लैण्ड ने मार्टिन फ्रोबिशर (Martin Frobisher) को लेब्रोडोर (Labrodor) के तटीय प्रदेशों का अन्वेषण करने के लिए भेजा। वह अपनी यात्राओं में हडसन जलडमरूमध्य (Hudson Straits) तक जा पहुँचा। राजनीतिक क्षेत्र में इंग्लैण्ड व स्पेन की प्रतिद्वन्द्विता का लाभ उठाकर कुछ अंग्रेज समुद्री लुटेरों ने अमेरिका से स्वर्ण लाने वाले स्पेनिश जहाजों को समुद्र में लूटना आरम्भ किया। उनका साहस इतना बढ़ गया कि वे स्पेन के बन्दरगाहों में उनके जहाज लूटने लगे। इस प्रकार इन समुद्री लुटेरों ने नयी दुनिया के प्रदेशों में स्पेन और पुर्तगाल के एकाधिकार को चुनौती दी, क्योंकि इन दोनों देशों की जनता कैथोलिक थी। अतएव इंग्लैण्ड की प्रोटेस्टेंट जनता ने इनके कार्यों का समर्थन किया। 1588 में स्पेनिश आर्मेडा (Armada) की पराजय के बाद इंग्लैण्ड की समुद्री शक्ति के बढ़ने के फलस्वरूप समुद्री डाकुओं की हलचल में वृद्धि हुई। ऐसे समद्री लुटेरों में जॉन हाकिन्स (John Hawkins) और फ्रांसिस ड्रेक (Francis Drake) के नाम प्रसिद्ध हैं।

सोलहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में इंग्लैण्ड के राजनीतिज्ञ एवं व्यापारी अमेरिका में उपनिवेश बसाने की योजना पर गम्भीर से विचार करने लगे। हाक्ल्यूत (Haklouyt) बन्धुओं ने अपने लेखों के एक संग्रह को पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया। इस पुस्तक में इस विचार का समर्थन करते हुए उन्होंने लिखा कि अमेरिका में अंग्रेज उपनिवेशों की स्थापना स्पेन के अमेरिकन साम्राज्य की शक्ति को कम करने और उसके जहाजों पर आक्रमण करने में सहायक हो सकते हैं। इस समय में इंग्लैण्ड ऊँची कीमतों पर स्पेन में शक्कर, तेल, रेशम व अन्य वस्तुएँ खरीदता था। हाक्ल्यूत बन्धुओं के अनुसार ऐसी वस्तुएँ कम कीमत पर अंग्रेजी उपनिवेशों से कुछ समय में प्राप्त की जा सकती थीं। इंग्लैण्ड के कई प्रमुख उद्योग, विशेषकर कपड़ा उद्योग, अपने उत्पादित माल को इन उपनिवेशों में बेच सकते थे। यद्यपि इंग्लैण्ड की साम्राज्ञी ऐलिजाबेथ अमेरिका में अंग्रेज उपनिवेश बसाने के प्रयत्नों को आर्थिक सहायता देना चाहती थी, लेकिन सरकार की वित्तीय दशा दुर्बल होने के कारण उसने अपनी असमर्थता प्रकट की।

(VI) इंग्लैण्ड द्वारा उपनिवेशों की स्थापना व उनकी प्रगति का विवरण

वर्जीनिया :

1538 ईसवी में सर हम्फ्रे गिलबर्ट (Sir Humphrey Gilbert) ने इंग्लैण्ड के ब्रिस्टल और साउथेम्पटन नगरों के कुछ व्यापारियों से धन एकत्रित कर ऐलिजाबेथ से उत्तर-पश्चिम अमेरिका के प्रदेशों में नगरों के अनुसन्धान करने और उपनिवेश बसाने के लिए एक आज्ञा-पत्र

प्राप्त किया। पाँच जहाजों में दो सौ साठ व्यक्तियों को लेकर उसने अमेरिकन महाद्वीप में न्यू फाउण्डलैण्ड के पास के तटीय प्रदेशों का अन्वेषण किया। दुर्भाग्यवश अमेरिका से लौटते समय गिलबर्ट का जहाज डूब गया।

अगले वर्ष गिलबर्ट के सौतले भाई सर वाल्टर रेले (Sir Walter Raleigh) ने गिलबर्ट के अधिकार प्राप्त करके सर रिचर्ड ग्रेनविल्ले (Sir Richard Granville) और राल्फ लेन (Ralph Lane) के नेतृत्व में ड्रेक, सिडनी, हाक्ल्यूत बन्धुओं और वालसिंघम (Walsingham) को अमेरिका भेजा। इन्होंने उत्तर अमेरिका में चीसापीक (Chesapeake) के दक्षिण में रोआनोके (Roannoake) द्वीप को अंग्रेजी उपनिवेश के लिए उपयुक्त स्थान चुन कर उसका नाम इंग्लैण्ड की कुमारी (Virgin) रानी एलिजाबेथ के नाम पर वर्जीनिया (Virginia) रखा। 1585 ईसवी में रेले ने इंग्लैण्ड से ग्रेनविल्ले और लेन (Lane) को पुन: अमेरिका भेजा। रोआनोके (Roannoake) द्वीप में लेन को प्रथम अंग्रेजी बस्ती का अधिकारी बना कर ग्रेनविल्ले इंग्लैण्ड लौट आया। अमेरिका के मूल निवासियों के लगातार आक्रमणों में इस बस्ती के सभी अंग्रेज मारे गये।

1606 ईसवी में लन्दन को साउथ वर्जीनिया कम्पनी और प्लाईमाऊथ की नार्थ वर्जीनिया कम्पनी को सम्राट जेम्स प्रथम ने एक आज्ञा-पत्र प्रदान किया। इस आज्ञा-पत्र में लन्दन की कम्पनी को दक्षिण और प्लाईमाऊथ की कम्पनी को उत्तर वर्जीनिया में उपनिवेश बसाने के अधिकार प्रदान किये गये। इस आज्ञा-पत्र की एक विशेषता यह थी कि इसमें अमेरिका में बसने वाले अंग्रेजों को ब्रिटेन अथवा उसके साम्राज्य के किसी भी भाग में रहने वाले व्यक्तियों के समान अधिकार देने का वचन दिया गया था। बाद में 1606 ईसवी के इस आज्ञा-पत्र की इस धारा को अमेरिकनों ने प्रजातन्त्रीय अधिकारों का मूल मन्त्र माना।

लन्दन कम्पनी द्वारा भेजे गये तीन जहाज एक सौ बीस व्यक्तियों को लेकर 1607 ईसवी में वर्जीनिया पहुँचे। उन्होंने जेम्स टाउन (James Town) में अपनी बस्ती स्थापित की। प्रथम सात महीनों में खाद्य पदार्थ की कमी और बीमारी के कारण यहाँ पर रहने वाले एक सौ पाँच व्यक्तियों में से तिहत्तर की मृत्यु हो गई। इंग्लैण्ड से सहायता मिलने पर भी स्थिति में सुधार नहीं हुआ। जेम्स टाउन के प्रवन्धकों की अकुशलता, रेड इंडियन्स के आक्रमण और प्रतिकूल जलवायु के कारण वहाँ अगले दस वर्षों में विशेष प्रगति नहीं हो सकी। लेकिन इन आरम्भिक कठिनाइयों के पश्चात् वर्जीनिया में अंग्रजों को सफलता मिलने लगी। बर्नार्ड बेलीन (Bernard Bailyn) के अनुसार 1609 ईसवी में वर्जीनिया के उपनिवेश में इंग्लैण्ड के सम्राट द्वारा नियुक्त एक गवर्नर को शासन करने के सब अधिकार दिये गये, किन्तु उसे एक समिति की सलाह पर राज्य करना था। उसके लिए यह आवश्यक नहीं था कि वह इस समिति की सलाह माने। गवर्नर के लिए यह जरूरी था कि वह मौलिक स्वतंत्रता और इस प्रकार के अन्य अधिकारों के साथ- साथ कम्पनी के आदेशों का पालन करे।

1618 ईसवी में सर एडवर्ड सेंडीज (Edward Sandys) ने कम्पनी का कार्यभार सम्भाला। अगले वर्ष उसने वर्जीनिया के विभिन्न नगरों के प्रतिनिधियों के एक सदन जिसे हाऊस ऑफ बरगेसेस् (House of Burgesses) कहा जाता था, का निर्माण किया। इस सदन को कानून

बनाने का अधिकार दिया। जुलाई 1619 ईसवी में इस सदन की पहली बैठक हुई। इसमें गवर्नर, उसकी समिति के सभी सदस्य एवं नगरों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इसमें यह निश्चय किया गया कि वह जनता की शिकायतों को इंग्लैण्ड की सरकार के समक्ष प्रस्तुत करेगी तथा उन सब मौलिक अधिकारों की रक्षा करेगी जो कि इंग्लैण्ड में जनता को प्राप्त थे। अमेरिका के इतिहास में इस संस्था को विधायी शक्ति वाली प्रथम प्रतिनिधि संस्था माना जाता है।

1622 ईसवी में रेड इन्डियन्स के एक आक्रमण में लगभग 350 अंग्रेज मारे जाने से वर्जीनिया में निराशा फैल गई। कम्पनी के मालिकों के आपसी मतभेद और अधिक लाभ न होने के कारण कम्पनी की स्थिति डांवाडोल होने लगी। अत: 1624 ईसवी में इंग्लैण्ड के सम्राट ने कम्पनी के अधिकारों को समाप्त करने की घोषणा की। इस समय से वर्जीनिया सम्राट द्वारा शासित उपनिवेश बन गया। 1642 ईसवी में सम्राट द्वारा नियुक्त गवर्नर सर विलियम बर्कले (Sir William Berkeley) ने योग्यता के साथ शासन किया। इंग्लैण्ड की सरकार ने हाउस ऑफ बरगेसस् के अधिकारों को सीमित करने का प्रयत्न नहीं किया। लंदन कम्पनी द्वारा दिये गये भूमि के स्वामित्व के अधिकारों में भी कोई परिवर्तन नहीं किये गये। अमेरिका की स्वतन्त्रता प्राप्ति तक वर्जीनिया में इंग्लैण्ड की सरकार द्वारा नियुक्त गवर्नर ही शासन करता रहा। गवर्नर द्वारा मनोनीत परिषद् उच्च सदन और हाउस ऑफ बरगेसस् प्रतिनिधि सदन का कार्य करती रही। अमेरिका के अन्य उपनिवेशों में वर्जीनिया की शासन-पद्धति का अनुकरण किया गया।

1624 ईसवी के बाद वर्जीनिया दिन प्रतिदिन उन्नति करने लगा। यहाँ की बढ़ती हुई समृद्धि का अनुमान उसकी जनसंख्या में वृद्धि से लगाया जा सकता है। जहाँ 1624 ईसवी में वर्जीनिया की जनसंख्या आठ हजार थी वहाँ 1700 ईसवी में इस उपनिवेश की आबादी बहत्तर हजार के लगभग पहुँच चुकी थी। सत्रहवीं शताब्दी के अन्त में वर्जीनिया के तटीय प्रदेशों में छोटे-छोटे खेतों के स्थान पर बड़े-बड़े खेत स्थापित हो चुके थे। इन बड़े फार्मों में श्वेत श्रमिकों और नीग्रो की मदद से खेती की जाती थी।

मेरीलैंड :

वर्जीनिया के कैथोलिक उपनिवेश की सफलता से प्रभावित होकर लार्ड बाल्टीमोर (Lord Baltimore) के पुत्र सेसीलियस कॉल्वर्ट (Cecillius Calvert) ने सम्राट चार्ल्स प्रथम से 1632 ईसवी में वर्जीनिया के उत्तर में एक नया उपनिवेश बसाने का आज्ञा-पत्र प्राप्त किया। यद्यपि कॉल्वर्ट का उद्देश्य अपने उपनिवेश मेरीलैण्ड (Maryland) में कैथोलिकों को बसाने का था लेकिन सम्राट द्वारा दिये गये आज्ञा-पत्र में यह स्पष्ट कर दिया गया था कि मेरीलैण्ड में अन्य मतों के अनुयायी भी अपने चर्च की स्थापना कर सकेंगे। 1634 ईसवी में कॉल्वर्ट ने, जो कि इस समय तक लॉर्ड बाल्टीमोर (Baltimore) बन चुका था। चेशापीक खाड़ी के उत्तर में सेंट मेरी (Saint Mary) नामक बस्ती की स्थापना की। इंग्लैण्ड से कैथोलिकों के काफी संख्या में वहाँ न आने पर बाल्टीमोर ने प्रोटेस्टेंटों को भी बसने की अनुमति दे दी। 1649 ईसवी में सम्राट के आज्ञा-पत्र के अनुसार यहाँ पर सबको धार्मिक स्वतन्त्रता के अधिकार दिये गये। तम्बाकू की सफल खेती से शीघ्र ही इस उपनिवेश के निवासियों की आर्थिक स्थिति सुधरने लगी। लेकिन स्वाम्याधिकार

(Proprietor) द्वारा नियुक्त गवर्नरों का शासन धीरे-धीरे अलोकप्रिय होता गया। अधिकारियों के भ्रष्टाचार, इंडियन्स के आक्रमण, तम्बाकू की कीमतों में गिरावट, जनता की कैथोलिक विरोधी भावनाओं और उनके अधिकारों को सीमित करने के प्रयत्नों के फलस्वरूप यहाँ पर कई उपद्रव हुए। अन्त में यहाँ के प्रतिनिधियों ने इंग्लैण्ड के सम्राट से मेरीलैण्ड का शासन अपने हाथों में लेने की अपील की। अतएव 1691 ईसवी में बाल्टीमोर परिवार के स्वाम्याधिकार अधिकार समाप्त कर मेरीलैण्ड को सम्राट का उपनिवेश घोषित कर दिया गया। 1715 ईसवी में ये अधिकार पुनः इस परिवार को लौटा दिये गये। अमेरिकन क्रांति तक बाल्टीमोर के उत्तराधिकारी ही मेरीलैण्ड का शासन करते रहे।

मैन एवं न्यू हेम्पशायर :

1606 ईसवी के आज्ञा-पत्र में लंदन कम्पनी के साथ प्लाईमाऊथ कम्पनी को उत्तर वर्जीनिया में उपनिवेश बसाने के अधिकार दिये गये थे। इस कम्पनी के प्रबन्धकों ने 1607 ईसवी में केनबेक (Kennebec) नदी, जो आजकल मेन नदी कहलाती है, के तट पर एक उपनिवेश की स्थापना की, लेकिन यहाँ के अधिकारियों के आलस्य एवं आपसी मतभेदों के कारण इस प्रयत्न में सफलता नहीं मिली और कुछ ही महीनों बाद इसको त्याग दिया गया। इन प्रदेशों में कुछ वर्षों के अनुसन्धान के पश्चात् 1620 ईसवी में मेन (Maine) और न्यू हैम्पशायर (New Hampshire) में अंग्रेजों के उपनिवेश बसाये गये। इसी वर्ष इंग्लैण्ड के एक बड़े जहाज 'मे फ्लावर' (May Flower) में एक सौ से कुछ अधिक व्यक्ति अपनी मातृभूमि छोड़ कर अमेरिका के लिए रवाना हुए। इनमें से अधिकांश वे व्यक्ति थे जो इंग्लैण्ड के तत्कालीन सम्राट जेम्स प्रथम की धार्मिक असहिष्णुता की नीति से तंग आकर 1608 ईसवी में हॉलैण्ड चले गये थे। कई कारणों से उन्हें हॉलैण्ड छोड़कर अमेरिका में बसने का निश्चय करना पड़ा। उनके प्रतिनिधियों ने इंग्लैण्ड में आकर इसके लिए आज्ञा-पत्र प्राप्त करने के प्रयत्न आरम्भ किऐ। लंदन में कुछ व्यापारियों के सहयोग से उन्होंने एक कम्पनी खोली। इन व्यापारियों से ऋण लेकर व उनके नाम आज्ञा पत्र प्राप्त कर 22 जुलाई , 1620 ईसवी को 'मे फ्लावर' नामक जहाज में वे इंग्लैण्ड से रवाना हुए। इंग्लैण्ड व अमेरिका के इतिहास में 'मे फ्लावर' के यात्री "पिलग्रिम फादर्स" (Pilgrim Fathers) के नाम से विख्यात हैं। तूफान के कारण "मे फ्लावर" वर्जीनिया के स्थान पर केप कॉड (Cape Cod) पहुँच गया। "पिलग्रिम फादर्स" ने अब वर्जीनिया जाने के विचार को त्याग कर वहीं पर अपना उपनिवेश बसाने का निश्चय किया। जहाज पर ही इस नये उपनिवेश के व्यवस्थित शासन के लिए एक सामान्य योजना बनाई गई जिसे "मे फ्लावर कॉम्पेक्ट" (May Flower Compact) कहा जाता है। इस योजना के अन्तर्गत एक नागरिक संस्था (Civic Body Politic) को जन्म दिया गया, जिसका कार्य उपनिवेश के हित में कानून बनाना और शासन चलाना था। यह भी निश्चित किया गया कि प्रत्येक मामले में बहुमत से निर्णय किया जायेगा। इंग्लैण्ड के सम्राट के प्रति निष्ठा की शपथ इसमें ली गई थी। यद्यपि "मे फ्लावर काम्पेक्ट" में शासन के आदर्शों की विस्तृत व्याख्या एवं योजना प्रस्तुत नहीं की गई थी परन्तु अमेरिकन इतिहास में इसको अत्यधिक महत्त्व दिया जाता है। इसका प्रमुख कारण यह है कि इसमें यह स्पष्ट रूप से माना गया था कि जनता की इच्छा पर शासन निर्भर रहता है।

यद्यपि "पिलग्रिम फादर्स" ने अनुकरणीय साहस व अनुशासन का प्रदर्शन किया, परन्तु प्लाईमाऊथ का उपनिवेश आरम्भ में सफलता प्राप्त नहीं कर सका। प्रथम वर्ष में प्लेग फैल जाने से आधे के लगभग प्रवासियों की मृत्यु हो गई। यहाँ के निवासियों को कृषि-कार्यों का पर्याप्त अनुभव नहीं था। इसके अतिरिक्त यहाँ की भूमि भी उपजाऊ नहीं थी। उनकी आमदनी का एक बड़ा भाग लंदन के व्यापारियों से लिए गये ऋण की किश्त को अदा करने में व्यय हो जाता था। 1627 ईसवी में इस ऋण की अन्तिम किश्त अदा होने पर स्थिति में सुधार होने लगा। 1636 ईसवी में प्लाईमाऊथ के निवासियों ने अपने उपनिवेश के शासन के लिए एक कोड (Code) की रचना की जिसे "ग्रांड फन्डामेन्टल्स" (Grand Fundamentals) कहते हैं। इसके अनुसार एक "जनरल कोर्ट" (General Court) की स्थापना की गई। प्रत्येक नगर के स्वतन्त्र नागरिकों द्वारा चुने गये दो प्रतिनिधियों के अतिरिक्त गवर्नर और उसके सलाहकार इस संसद के सदस्य होते थे। 1691 में प्लाईमाऊथ का उपनिवेश मैसाचुसेट्स (Massachusetts) की खाड़ी के तट पर बसे प्यूरिटन उपनिवेश में सम्मिलित हो गया।

प्लाईमाऊथ में अंग्रेजों के औपनिवेशक प्रयत्नों को अमेरिकन इतिहास में एक विशिष्ट स्थान प्राप्त है। पहली बार इस उपनिवेश में कुछ साधारण व्यक्तियों ने इस प्रकार का प्रयास किया था। इनके द्वारा बनाये गये "मे फ्लावर कॉम्पेक्ट" और "ग्रांड फन्डामेन्टल्स" को अमेरिकन स्वतन्त्रता के इतिहास में महत्त्वपूर्ण माना जाता है। यहाँ के निवासियों के बलिदान साहस व धैर्य ने भविष्य में अमेरिकनों को सदा प्रेरित किया।

मैसाचुसेट्स :

इंग्लैण्ड के एक प्यूरिटन पादरी जान वाइट (John White) ने प्यूरिटनों को अमेरिका में बसाने के लिए न्यू इंग्लैण्ड कम्पनी का निर्माण किया। इंग्लैण्ड के सम्राट से इस कम्पनी ने 1628 ईसवी में मैसाचुसेट्स की खाड़ी के तट पर एक उपनिवेश बसाने के अधिकार प्राप्त कर लिये। 1629 व 1630 ईसवी में इसकी उत्तराधिकारी कम्पनी ने, जिसे मैसाचुसेट्स बे कम्पनी (Massachusetts Bay Company) कहते थे, जान विन्थ्रोप (John Winthrop) के नेतृत्व में ग्यारह जहाज अमेरिका भेजे। उन्होंने प्लाईमाऊथ के उत्तर में बोस्टन (Boston), चार्ल्स टाउन (Charles Town), मेडफोर्ड (Medford) और सेलेम (Salem) में प्यूरिटनों के नगर स्थापित किये। शीघ्र ही इन नगरों की जनसंख्या बढ़ने लगी। 1640 ईसवी में इस उपनिवेश के नगरों की जनसंख्या बीस हजार के लगभग थी। इसकी सफलता का एक प्रमुख कारण यह था कि सम्राट द्वारा प्रदान किये गये आज्ञा पत्र में कम्पनी को अपनी वार्षिक सभा एक निश्चित स्थान पर करने के स्पष्ट आदेश नही दिये थे। अतएव इस कम्पनी के भागीदारों ने अपनी गतिविधियों का संचालन इंग्लैण्ड के किसी नगर के स्थान पर बोस्टन से करने का निश्चय किया। इसके अतिरिक्त कम्पनी के भागीदार आर्थिक लाभ की अपेक्षा धर्म के प्रचार और नैतिकता को अधिक महत्त्व देते थे।

इस उपनिवेश में स्थानीय आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए एक संविधान का निर्माण किया गया। इस संविधान के अन्तर्गत उपनिवेश में रहने वाले स्वतन्त्र प्यूरिटन नागरिकों को गवर्नर और उसके सहायकों का चुनाव करने का अधिकार प्राप्त था। उनके द्वारा चुने गये प्रतिनिधियों और गवर्नर के सहायकों का सदन "जनरल कोर्ट" (General Court) कहलाता

था। इस सदन को कानून बनाने का अधिकार प्राप्त था। 1634 ईसवी में यह निश्चित किया गया कि जनरल कोर्ट के सदस्यों के एक मत होने पर ही किसी नगर में कर लगाये जायेंगे। 1644 ईसवी में जनरल कोर्ट को दो सदनों में विभाजित कर दिया गया। इसी वर्ष से गवर्नर और उसके सहायकों का चुनाव प्रति वर्ष किया जाने लगा। इस प्रकार इस उपनिवेश में शीघ्र ही प्रतिनिधि-संस्थाओं का विकास हुआ।

कनेक्टिकट :

मैसाचुसेट्स की खाड़ी के तट के प्यूरिटनों की कट्टर नीति से असन्तुष्ट होकर कुछ व्यक्तियों ने कनेक्टिकट (Connecticut) नदी की घाटी में छोटे-छोटे ग्राम व नगर बसाये। 1636 ईसवी में मादरी थामस हूकर (Thomas Hooker) ने हर्टफोर्ड (Hertford) में एक नयी अंग्रेजी बस्ती बसाई। उसने यह स्पष्ट कर दिया कि इस नयी बस्ती में जनता की स्वतन्त्र इच्छा पर ही सत्ता को निर्भर रहना था। शीघ्र ही हर्टफोर्ड (Hertford) के निकट सेब्रुक (Seybrooke), फेयरफील्ड (Fairfield), स्ट्रेफोर्ड (Straford) व न्यू हेवन (New Heaven) के नगर बस गये। 1639 ईसवी में इस नये उपनिवेश में मूलभूत आज्ञाओं (Fundamental Orders) के अनुसार प्रतिनिधि संस्था स्थापित की गई। इस उपनिवेश की स्थापना में अमेरिका में पश्चिम की ओर प्रसार आरम्भ हुआ। 1626 ईसवी में इंग्लैण्ड के सम्राट् चार्ल्स द्वितीय ने इस उपनिवेश के निवासियों को आज्ञा पत्र देकर यहाँ की सरकार को कानूनी मान्यता प्रदान की। इंग्लैण्ड की सरकार ने जनता के प्रतिनिधियों के अधिकारों को भी इस आज्ञा पत्र में स्वीकार किया।

रोडे द्वीप :

मैसाचुसेट्स में प्यूरिटन पादरियों की कट्टरता और प्रभाव को चुनौती देने के कारण इस उपनिवेश से कुछ प्यूरिटनों को निष्कासित किया गया। इनमें श्रीमती हचिन्सन (Hutchinson) और रोजर विलियम्स (Roger Williams) प्रसिद्ध हैं। 1636 ईसवी में रोजर विलियम्स ने रोडे द्वीप (Rhode Island) में एक अंग्रेजी उपनिवेश की स्थापना की। उसने सबको धार्मिक स्वतन्त्रता देने और शासन में पादरियों के प्रभाव को समाप्त करने की घोषणा की। क्रॉमवेल के शासन काल में इंग्लैण्ड की सरकार से रोजर विलियम्स ने एक आज्ञा पत्र प्राप्त किया। इस आज्ञा पत्र में रोडे द्वीप के उपनिवेश में चर्च व राज्य में कोई सम्बन्ध नहीं माना गया। सभी नागरिकों को धार्मिक स्वतन्त्रता के अधिकार दिये गये और प्रजातन्त्रीय सिद्धान्तों पर शासन चलाने के आश्वासन दिये गये। अमेरिका के इतिहास में रोजर विलियम्स को बौद्धिक स्वतन्त्रता का पहला महान् प्रतिपादक माना जाता है, क्योंकि उसने अपने लेखों और भाषणों में सदैव स्वतन्त्र विचारों का समर्थन किया। उसके विचारों से प्रभावित होकर बड़ी संख्या में पड़ोस के नगरों और यूरोप के देशों से व्यक्ति रोडे द्वीप में रहने के लिए आने लगे जिसके फलस्वरूप इस उपनिवेश की जनसंख्या बढ़ती गई। 1664 ईसवी में सम्राट ने इस उपनिवेश को कानूनी मान्यता प्रदान की।

प्लाईमाऊथ कम्पनी द्वारा स्थापित मेन व न्यू हैम्पशायर के नगर आरम्भ में अधिक प्रगति नहीं कर सके, लेकिन कुछ समय पश्चात् मैसाचूसेट्स के उपनिवेश से अंग्रेज काफी संख्या में

इन स्थानों में आकर बसने लगे। 1680 ईसवी तक न्यू हैम्पशायर मैसाचुसेट्स के साथ रहा। इस वर्ष इंग्लैण्ड के सम्राट ने एक आज्ञा पत्र में न्यू हैम्पशायर को एक पृथक् उपनिवेश घोषित कर दिया। मेन के प्रदेश 1820 ईसवी तक मैसाचुसेट्स में ही सम्मिलित रहे।

न्यू इंग्लैण्ड के उपनिवेशों तथा वर्जीनिया एवं मेरीलैण्ड की भिन्नताएँ :

कनेक्टिकट (Connecticut), मैसाचुसेट्स, न्यू हैम्पशायर, रोडे द्वीप और मेन के उपनिवेश को सम्मिलित रूप से न्यू इंग्लैण्ड (New England) कहा जाता था। न्यू इंग्लैण्ड के ये उपनिवेश वर्जीनिया और मेरीलैण्ड के उपनिवेशों से अपनी आर्थिक और धार्मिक व्यवस्था में काफी भिन्न थे। जहाँ वर्जीनिया और मेरीलैण्ड क्रमश: सम्राट और प्रोप्राइटर्स द्वारा शासित प्रदेश थे वहाँ कनेक्टिकट और रोड द्वीप स्वशासित प्रदेश और मैसाचुसेट्स, न्यू हैम्पशायर व मेन सम्राट द्वारा शासित प्रदेश थे। वर्जीनिया और मेरीलैण्ड में बड़े-बड़े फार्म स्थापित किये गये थे, लेकिन न्यू इंग्लैण्ड के उपनिवेशों में छोटे-छोटे खेतों में कृषि होती थी। इन उपनिवेशों के निवासियों ने मछली पकड़ने के उद्योग में काफी उन्नति की। कुछ ही समय में बोस्टन न्यू इंग्लैण्ड का एक प्रमुख बन्दरगाह और व्यापारिक केन्द्र बन गया। रोडे द्वीप की विशेषता यह थी कि यहाँ चर्च का राज्य पर प्रभाव समाप्त किया गया था। न्यू इंग्लैण्ड के इन उपनिवशों ने अपने पड़ोसियों – डच, फ्रांसीसी और अमेरिका के मूल-निवासियों के डर से 1643 ईसवी में बोस्टन में आयोजित एक सभा में विचार-विमर्श कर एक संघ की स्थापना की। न्यू इंग्लैण्ड संघ के सदस्यों ने एक-दूसरे की प्रादेशिक सीमाओं को मान्यता प्रदान करते हुए अपनी रक्षा के लिए संगठित होने का निश्चय किया। सत्रहवीं शताब्दी के अन्त में न्यू इंग्लैण्ड संघ के सदस्यों के आपसी मतभेद बढ़ने लगे। संघ में मैसाचुसेट्स का बढ़ता हुआ प्रभाव संघ के अन्य सदस्यों को पसन्द नहीं था। इंग्लैण्ड के शासक भी मैसाचुसेट्स द्वारा आदेशों के बार-बार उल्लंघन से अप्रसन्न थे। अतएव 1684 ईसवी में उन्होंने मैसाचुसेट्स बे कम्पनी के अधिकारों को समाप्त कर इस उपनिवेश का शासन अपने हाथ में ले लिया। न्यू इंग्लैण्ड संघ के उपनिवेशों के साथ न्यूयार्क (New York) और न्यू जर्सी (New Jeresy) के उपनिवेशों को मिलाकर एक नये डोमिनियन (Dominion) की स्थापना की गई। इस डोमिनियन का शासन सम्राट द्वारा नियुक्त एक गवर्नर करने लगा। 1691 ईसवी में सम्राट ने एक आज्ञा पत्र से मेसाचुसेट्स में जनरल कोर्ट को पुन: उसके अधिकार दे दिये। इस उपनिवेश में प्यूरिटनों के अतिरिक्त प्रोटेस्टेंट धर्म के अन्य मतावलम्बियों को भी मत देने तथा अपना धर्म पालन करने की स्वतन्त्रता के अधिकार दिये गये। मैसाचुसेट्स में प्लाईमाऊथ व मेन सम्मिलित किये गये और कनेक्टिकट व रोडे द्वीप उससे पृथक् कर दिये गये।

उत्तरी व दक्षिणी कैरोलिना :

आरम्भ में कैरोलिना (Carolina) के प्रदेशों में वर्जीनिया के शासकों द्वारा उपनिवेश बसाने के प्रयत्नों को सफलता न मिलने के कारण काफी समय तक इन प्रदेशों में और कोई प्रयत्न नहीं किये गये। 1663 ईसवी में वर्जीनिया के अवकाश प्राप्त गवर्नर सर विलियम बर्कले (Sir William

Berkeley) ने सात अन्य सामन्तों के साथ मिल कर इंग्लैण्ड के सम्राट् से कैरोलिना में उपनिवेश बसाने के अधिकार प्राप्त कर लिए। सम्राट ने अपने आज्ञापत्र में इन आठ व्यक्तियों को स्वाम्याधिकार अधिकार (Proprietor Right) प्रदान करते हुए यह स्पष्ट कर दिया था कि उन्हें शासन में जनता का सहयोग प्राप्त करना होगा। यद्यपि कैरोलिना में एंग्लिकन चर्च की स्थापना की गई, परन्तु यहाँ के निवासियों को अपना धर्म पालन करने की स्वतन्त्रता दी गई। आरम्भ में गवर्नर, प्रोपराइटरों के प्रतिनिधि और पाँच सौ एकड़ भूमि के स्वामियों का एक सदन बनाया गया। 1693 ईसवी में दो सदनों का निर्माण किया गया। उच्च सदन को ग्रांड कौंसिल (Grand Council) कहते थे। उसके सदस्य गवर्नर द्वारा मनोनीत होते थे। प्रतिनिधि सदन का चुनाव वयस्क मताधिकार से होता था। भूमि का वितरण वर्जीनिया में प्रचलित पद्धति के अनुसार किया गया था। यूरोप से आने वाले प्रत्येक व्यक्ति को पचास एकड़ या उससे अधिक भूमि सामान्य मूल्य पर दी जाती थी। अगर उसके पास अफ्रीका से लाया गया नीग्रो दास अथवा यूरोप से आया हुआ कोई श्वेत नौकर होता था तो उसे भूमि दी जाती थी।

कैरोलिना का उपनिवेश अपनी स्थापना के समय से ही दो भागों में विभाजित रहा। उत्तरी कैरोलिना में वर्जीनिया के सीमान्त प्रदेशों के निवासियों के अतिरिक्त एक नयी धार्मिक संस्था सोसायटी ऑफ फ्रेंड्स (Society of Friends) के सदस्य क्वेकर्स (Quakers) काफी संख्या में बस गये थे। इस उपनिवेश में कृषकों ने छोटे-छोटे खेतों में तम्बाकू व नील की खेती की। दक्षिण कैरोलिना में भी आरम्भ में छोटे-छोटे खेतों व बागानों में खेती की गई, लेकिन शीघ्र ही इस प्रदेशों में नीग्रो दासों की मदद से चावलों व नील के बड़े-बड़े बागानों में खेती होने लगी। इसके फलस्वरूप यहाँ की आबादी तेजी के साथ बढ़ने लगी। 1700 ईसवी में दक्षिण कैरोलिना की कुल जनसंख्या पाँच हजार थी जिसमें आधे के लगभग हब्शी दास थे। अंग्रेजों के अतिरिक्त आयरिश, फ्रांस के प्रोटेस्टेंट, जर्मन और वेस्टइण्डीज से यूरोपियन काफी संख्या यहाँ में आकर बसने लगे। इस उपनिवेश का प्रमुख बन्दरगाह चार्ल्स टाउन कैरोलिना का आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक केन्द्र था।

कैरोलिना के दोनों उपनिवेशों में आठ साम्याधिकारियों ने "ग्रांड मॉडल" (Grand Model) नामक संविधान के अनुसार शासन किया। इस उपनिवेश के निवासियों को उन्होंने सामाजिक स्तर के आधार पर अधिकार प्रदान किये। लेकिन नयी दुनिया के स्वतन्त्र वातावरण में वर्ग-भेद पर आधारित यह पद्धति सफल नहीं हो सकी। जनता के विरोध के कारण कुछ समय बाद न्यू इंग्लैण्ड के उपनिवेशों की शासन प्रणाली को यहाँ के निवासियों ने अपनाया। इस पर भी जनता द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधियों के साथ उसका मतभेद समाप्त नहीं हुआ। आठों सामन्त व उनके द्वारा नियुक्त गवर्नर अपने कई अधिकारों को छोड़ने के लिए तैयार नहीं थे। अन्त में 1719 ईसवी में दक्षिण कैरोलिना के स्वामियों ने अपने अधिकार सम्राट के हाथ बेच दिये 1728-29 ईसवी में उत्तर कैरोलिना भी इस प्रकार सम्राट द्वारा शासित एक उपनिवेश बन गया।

(VII) डच व स्वेडन के अमेरिकन उपनिवेश तथा अंग्रेजों के तेरह उपनिवेशों की उनसे झडपें :

(1) डच उपनिवेश - 1609 ईसवी में डच ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने हेनरी हडसन (Henry Hudson) को अमेरिका के आन्तरिक भागों का अन्वेषण करने के लिए भेजा। उसने व कई अन्वेषकों ने हडसन (Hudson) और डेलावेयर (Delaware) नदी की घाटियों में उपनिवेश बसाने के प्रस्तावों का समर्थन किया। अत: इन प्रदेशों में डचों के उपनिवेश स्थापित किये गये। 1621 ईसवी में एक आज्ञा पत्र द्वारा नवनिर्मित डच वेस्ट इण्डिया कम्पनी को हॉलैण्ड की सरकार ने इन प्रदेशों में व्यापार करने की और उपनिवेश बसाने का एकाधिकार प्रदान किया। इस कम्पनी में न्यू नैदरलैण्ड में बसाने वाले डचों को अपनी भूमि पर शासन करने का अधिकार प्रदान किया। इसके फलस्वरूप न्यू नैदरलैण्ड में कई डच परिवारों का प्रभाव स्थापित हो गया। इस उपनिवेश का प्रमुख नगर न्यू एमस्टर्डम (New Amsterdam) था।

(2) स्वेडन के उपनिवेश व उन पर डचों का अधिकार - 1633 ईसवी में डच व स्वेडन के व्यापारियों ने स्वेडन की न्यू साउथ कम्पनी की स्थापना अमेरिका में स्वेडन के उपनिवेश बसाने और व्यापार करने के लिए की। 1637 ईसवी में स्वेडन की सरकार ने न्यू साउथ कम्पनी को डेलावेयर में उपनिवेश बसाने के अधिकार दिये। 1644 ईसवी में स्वेडन के व्यापारियों ने डच भागीदारी के हिस्से खरीद कर उनके अधिकार समाप्त कर दिये। इसी वर्ष उन्होंने डेलावेयर में स्वेडन के सम्राट का अधिकार स्वीकार किया। इन परिवर्तनों को डचों ने पसन्द नहीं किया। अतएव डेलावेयर में डचों और स्विसों में आये दिन झड़पें होने लगीं। 1655 ईसवी में डचों ने स्वेडन के अमेरिकन प्रदेशों पर अधिकार कर उसे न्यू नैदरलैण्ड में सम्मिलित कर लिया।

(3) डच उपनिवेशों से झड़पों के कारण -सत्रहवीं शताब्दी में विश्व के कई भागों में अंग्रेज व डचों में व्यापारिक प्रतिद्वन्द्विता के कारण संघर्ष हो रहे थे। न्यू इंग्लैण्ड और दक्षिण के उपनिवेशों के मध्य में स्थित न्यू नैदरलैण्ड का उपनिवेश अंग्रेजों के पश्चिम की ओर विस्तार के प्रयत्नों में बाधक था। इसके अतिरिक्त इंग्लैण्ड की सरकार अपने अमेरिकन उपनिवेशो में डचों के कारण नौ-चालन अधिनियमों का पालन कराने में कठिनाइयों का अनुभव कर रही थी। अतएव इंग्लैण्ड की सरकार ने न्यू नैदरलैण्ड को जीतने का निश्चय कर लिया।

न्यू नैदरलैण्ड पर अंग्रेजों का अधिकार व न्यूयार्क का उपनिवेश :

इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए इंग्लैण्ड के सम्राट चार्ल्स द्वितीय ने अपने छोटे भाई ड्यूक ऑफ यॉर्क (Duke of York) को, जो बाद में जेम्स द्वितीय के नाम से इंग्लैण्ड का सम्राट बना, कनेक्टिकट नदी से लेकर डेलावेयर नदी के मध्य के सभी प्रदेशों के स्वामित्व के अधिकार 1664 ईसवी में प्रदान किये। ड्यूक ऑफ यॉर्क ने 1667 ईसवी में एक सेना भेज कर न्यू नैदरलैण्ड पर आक्रमण कर दिया। डचों की शक्ति क्षीण होने के कारण वे अंग्रेजों का मुकाबला न कर सके और उन्होंने शीघ्र ही आत्मसमर्पण कर दिया। अंग्रेजों ने अपने विजित प्रदेशों में डचों को अपने मत के पालन करने की स्वतन्त्रता दी और भूमि पर उनके अधिकार को भी नही छीना। न्यू

एमस्टर्डम का नाम न्यू यार्क (New York)रखा गया। 1685 ईसवी में ड्यूक ऑफ यॉर्क के सम्राट बनने पर न्यू यार्क का उपनिवेश सम्राट का उपनिवेश बन गया। अमेरिकन क्रान्ति तक सम्राट द्वारा नियुक्त गवर्नर इसका शासन करता रहा। अंग्रेज गवर्नर ने डचों के समान पूँजीपतियों और प्रभावशाली व्यक्तियों को भूमि प्रदान की।

डेलावेयर :

1668 ईसवी में ड्यूक ऑफ यार्क की सेना ने डेलावेयर के डच उपनिवेश पर भी अधिकार कर लिया। उसने इस प्रदेश के अधिकार अपने दो कृपापात्रों को बेच दिये। अंग्रेजों ने डेलावेयर में डचों व स्वेडन के निवासियों को रहने दिया। शीघ्र ही डेलावेयर की जनसंख्या बढ़ने लगी। यहाँ पर आने वाले अंग्रेजों में अधिकांश क्वेकर्स (Quakers)थे। डेलावेयर के स्वामियों ने धर्म-पालन करने की स्वतन्त्रता, प्रतिनिधि सदन में प्रतिनिधि भेजने का अधिकार और लगान की साधारण दरों पर भूमि पर कृषि करने के अधिकार जनता को दिये। बाद में पेन (Pain) नामक एक क्वेकर ने इस प्रदेश को खरीद लिया। अमेरिकन क्रान्ति तक इस उपनिवेश का शासन उसके उत्तराधिकारी करते रहे।

न्यू जर्सी :

न्यू जर्सी (New Jeresy) के प्रदेश आरम्भ में डेलावेयर के एक अंग थे। डेलावेयर के एक प्रोपराइटर लॉर्ड बर्कले ने इन प्रदेशों के अधिकार जॉन फैनविक (John Fenwick) और एडवर्ड बाइलिंज (Edwad Byllinge)नामक दो क्वेकर्स को बेच दिये। न्यू जर्सी के निवासियों और न्यू यार्क की औपनिवेशक सरकार में मतभेद बढ़ते गये। व्यापारिक प्रतिस्पर्द्धा के कारण दोनों प्रदेशों के निवासियों में कभी-कभी झड़पें भी होने लगीं। 1702 ईसवी में न्यू जर्सी को सम्राट के अधीन घोषित कर दिया गया।

पेनसिलवेनिया:

विलियम पेन (William Paine) ने क्वेकर्स को बसाने के लिए 1681 ईसवी में सोलह हजार पौण्ड में इंग्लैण्ड की सरकार से न्यू यार्क के दक्षिण के एक प्रदेश के अधिकार खरीद लिए। सम्राट ने अपने आज्ञा पत्र में यह स्पष्ट कर दिया था कि पेनसिलवेनिया (Pennsylvania) के उपनिवेश में कानून जनता की सम्मति से ही बनाये जा सकते हैं। ऐसे कानूनों का इंग्लैण्ड की पार्लियामेंट द्वारा अनुमोदित होना भी आवश्यक था। कोई नया कर भी जनता की सम्मति और इंग्लैण्ड की पार्लियामेंट की स्वीकृति के बाद ही लगाया जा सकता था। यद्यपि पेन का प्रमुख उद्देश्य अपने मत के अनुयायियों को अधिक से अधिक जनसंख्या में बसाना था, परन्तु उसने सभी जातियों और सभी धर्मों के अनुयायियों को स्व-धर्म पालन की स्वतन्त्रता का अधिकार दिया। उसने अन्य उपनिवेशों के मुकाबले में कम कीमतों में भूमि के अधिकार बेचे। पेन ने एक सुनिश्चित योजना के आधार पर यहाँ के मुख्य नगर फिलाडेल्फिया (Philadelphia) का निर्माण कराया। शीघ्र ही यह नगर पेनसिलवेनिया का आर्थिक एवं सांस्कृतिक केन्द्र बन गया। 1701 ईसवी में बनाये गये एक संविधान के अनुसार पेन व उसके उत्तराधिकारियों के अधिकारों का अंत किया गया।

जार्जिया:

अंग्रजों द्वारा अमेरिका में स्थापित अन्तिम उपनिवेश जार्जिया (Georgia) था। इसका संस्थापक इंग्लैण्ड का धनी व उदार जेम्स ओग्लेथोर्पे (Jemes Oglethorpe) था। ऋण न अदा करने पर सजा प्राप्त करने वाले गरीब व्यक्तियों को कष्ट से बचाने और उन्हें उन्नति के अवसर प्रदान करने के लिए उसने कैरोलिना के दक्षिण में एक नया उपनिवेश बसाने की योजना बनाई। इंग्लैण्ड की सरकार स्वयं इस बात की इच्छुक थी कि जार्जिया में अंग्रेज उपनिवेश स्थापित हो, क्योंकि ये प्रदेश स्पेन के उपनिवेश फ्लोरिडा (Florida) की सीमा पर स्थित होने के कारण सैनिक चौकी का काम कर सकते थे। इस प्रदेश के आबाद होने से फर के व्यापार में उन्नति की सम्भावनाएँ भी थीं। अतएव 1732 ईसवी में सम्राट जार्ज द्वितीय ने ओग्लेथोर्पे व ग्यारह अन्य व्यक्तियों को इक्कीस वर्ष के लिए जार्जिया के अधिकार प्रदान किये। ओग्लेथोर्पे व उसके साथियों के उच्च आदर्शों, लगन व परिश्रम से प्रभावित होकर अंग्रेजों के अतिरिक्त स्कॉटलैण्ड के पहाड़ी प्रदेशों तथा स्वेडन, जर्मनी और इटली से काफी लोग जार्जिया में आकर बस गये। ओग्लेथोर्पे ने जार्जिया में दास प्रथा और शराब की बिक्री पर प्रतिबन्ध लगा दिये। 1753 ईसवी में इसके संस्थापकों ने अपने अधिकार सम्राट को वापस लौटा दिये। इस समय से जार्जिया का शासन सम्राट द्वारा नियुक्त एक गवर्नर अपने सलाहकरों की सहायता से करने लगा। अन्य अंग्रेजी उपनिवेशों के समान यहाँ पर भी जनता द्वारा निर्वाचित एक प्रतिनिधि सदन था।

(VIII) अमेरिका में इंग्लैण्ड के तेरह उपनिवेश :

1607 ईसवी में अंग्रेजों ने अमेरिका में अपने प्रथम उपनिवेश की स्थापना जेम्स टाऊन में की थी। 1776 तक अमेरिका में एटलांटिक महासागर के तट पर मेन से लेकर जार्जिया तक एक सहस्त्र मील के विस्तृत प्रदेशों में उनके तेरह उपनिवेश स्थापित हो चुके थे।

ये तेरह उपनिवेश तीन क्षेत्रों में स्थित थे। इन क्षेत्रों व उपनिवेशों के नाम निम्नांकित हैं-

(क) उत्तरी क्षेत्र :

यह न्यू इंग्लैण्ड के नाम से जाना जाता था।

1. न्यू हैम्पशायर
2. मैसाचुसेट्स (1820 ईसवी तक मेन इसका एक भाग था।)
3. रोडे द्वीप
4. कनेक्टिकट

(ख) मध्यवर्ती क्षेत्र:

1. न्यू यार्क
2. पेनसिलवेनिया
3. न्यू जर्सी
4. डेलावेयर

(ग) दक्षिणी क्षेत्र :

1. मेरीलैण्ड
2. वर्जीनिया
3. उत्तरी कैरोलिना
4. दक्षिणी कैरोलिना
5. जार्जिया

ये सब उपनिवेश इंग्लैण्ड के अधीन होते हुए भी भिन्न-भिन्न शासन प्रणाली से शासित थे। आठ उपनिवेश सम्राट द्वारा प्रत्यक्ष रूप से प्रशासित थे, तीन में स्वाम्याधिकारों का शासन था तथा शेष दो स्वशासित थे। किन्तु, अमेरिकन क्रान्ति के आरम्भ होने तक इन सब की शासन पद्धतियों में विशेष अन्तर नहीं था, क्योंकि एक उपनिवेश की शासन प्रणाली का अनुकरण दूसरे में किया गया था। कुछ उपनिवेशों को सम्राट द्वारा दिये गये आज्ञा पत्र में धर्मपालन की स्वतन्त्रता तथा प्रजातन्त्रीय सिद्धान्तों पर शासन चलाने की स्वतन्त्रता दी गई। लगभग सभी उपनिवेशों ने या तो अपने संविधान बना लिये थे अथवा कुछ प्रतिनिधि संस्थाओं का विकास कर लिया था। उदाहरणार्थ कनेक्टिकट में मूलभूत आज्ञाओं के अनुसार प्रतिनिधि संस्था का गठन किया गया। दक्षिणी व उत्तरी कैरोलिना में ग्राण्ड मॉडल नामक संविधान के अन्तर्गत सबको समान सामाजिक स्तर देने का असफल प्रयास किया गया। पार्केस के अनुसार इस प्रकार की राजनीतिक संस्थाओं और परम्पराओं ने एक विशिष्ट अमेरिकन शासन पद्धति का विकास किया जिसने संयुक्त राज्य अमेरिका के भविष्य को एक बड़ी सीमा तक प्रभावित किया।

इन उपनिवेशों के विभिन्न नगरों एवं ग्रामों में अंग्रेज अन्य यूरोपीय प्रवासियों के साथ शान्ति पूर्ण जीवन व्यतीत कर रहे थे। उन्हें अपने प्रयत्नों में, आरम्भ में कई प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ा था, परन्तु दृढ़ निश्चय और आत्मविश्वास के साथ बाधाओं पर विजय प्राप्त करने में सफलता प्राप्त की थी। उन्होंने अपने साहस व परिश्रम से नयी दुनिया में अंग्रेजों के एक नवीन औपनिवेशक साम्राज्य स्थापित कर लिया था।

(IX) अमेरिकी महाद्वीप में फ्रांस के उपनिवेशों की स्थापना व उनका अंत:

स्पेन, इंग्लैण्ड , हॉलैण्ड के अतिरिक्त फ्रांस ने भी उत्तरी अमेरिका में उपनिवेश स्थापित किए। आरम्भ में फ्रांसीसियों ने न्यू फाउंडलैण्ड के द्वीपों में मछली पकड़ने का कार्य आरम्भ किया था। धीरे-धीरे उन्होंने सैंट लॉरेन्स (Saint Lawarence) नदी के तट पर रहने वाले इण्डियनों के साथ फर का व्यापार करना शुरू कर दिया। 1518 ईसवी और 1542 ईसवी में उन्होंने इन प्रदेशों में उपनिवेश बसाने के असफल प्रयत्न भी किये। इसी प्रकार के प्रयत्न सोलहवीं शताब्दी के अन्तिम दशक में और 1604 ईसवी में भी किये गये, परन्तु ये प्रयत्न भी कई कारणों से असफल रहे। 1608 ईसवी में फ्रांसीसियों को पहली सफलता मिली। इस वर्ष सेम्युअल दे चाम्पलेन (Samuel de Champlain) के कनाडा में सेंट लारेंस के तट पर क्यूबेक (Quabec) नामक स्थान पर एक फ्रांसीसी उपनिवेश बसाया। शीघ्र ही इस प्रदेश में फर के व्यापार की उन्नति

और अमेरिका के मूल निवासियों में धर्म प्रचार की सम्भावनाओं से उत्साहित हो काफी संख्या में फ्रांस से निवासी आने लगे। फ्रांस के इस उपनिवेश की स्थापना से इंग्लैण्ड को ईर्ष्या हुई, क्योंकि इससे अंग्रेजों के फर व्यापार को धक्का पहुँचता था। अत: अंग्रजों व फ्रांसीसियों में आपस में झड़पें होती रहती थीं।

कनाडा में क्यूबेक व उसके निकट के प्रदेशों में फ्रांसीसी बस्तियों की सफलता से उत्साहित होकर फ्रांसीसियों ने अमेरिका में ग्रेट लेक्स (Great Lakes) के तटवर्ती भागों का अन्वेषण किया। इन प्रदेशों से आगे बढ़ते हुए वे मिसीसिप्पी नदी की घाटियां तक पहुँच गये। 1671 ईसवी में फ्रांस ने लेक सुपिरियर (Lake Superior) और हुरोन (Huron) के मध्य के प्रदेशों पर अपना अधिकार घोषित किया। 1623 ईसवी में फ्रांसीसी अरकांसस (Arkansas) नदी के मुहाने तक पहुँच गये। 1682 ईसवी में ला साले (La Salle) ने मिसीसिप्पी नदी के मुहाने की घाटी को फ्रांस के अधिकार में ले लिया। उसने फ्रांस के सम्राट लुई चौंदहवें के नाम पर इस नवीन फ्रांसीसी उपनिवेश का नाम लुईसियाना(Louisiana) रखा।

फ्रांस के अमेरिकन उपनिवेश इंगलैण्ड के उपनिवेशों के समान सफलता नहीं प्राप्त कर सके; इसके कई कारण थे। इंगलैण्ड को अपने औपनिवेशक प्रयत्नों में सरकार, अमीर, व्यापारियों, सुधारकों आर साधारण जनता के सहयोग से सफलता मिली लेकिन फ्रांसीसी उपनिवेशों की स्थापना और विकास में सुधारकों और साधारण जनता का पूर्ण सहयोग प्राप्त नहीं हुआ था। फ्रांसीसी उपनिवेशों में भूमि का स्वामित्व केवल अमीरों को दिया गया था। इसके अतिरिक्त इन उपनिवेशों में धामिक और राजनीतिक स्वतन्त्रता के अधिकारों का अभाव था। अतएव काफी संख्या में फ्रांसीसी ह्यूजोनोट्स (Hugeonots) फ्रांस के अमेरिकन उपनिवेशों में न बस कर इंग्लैण्ड के उपनिवेशों में बस गये थे। इंग्लैण्ड व हॉलैण्ड के विरुद्ध यूरोप में फ्रांस के बार-बार संघर्ष करने का प्रभाव अमेरिका के उपनिवेशों पर भी पड़ा। इंग्लैण्ड व फ्रांसीसी उपनिवेशों के मध्य अमेरिका में भी इस समय संघर्ष होता था जबकि इन राष्ट्रों के बीच यूरोप में संघर्ष होता था। 1750 ईसवी के पहले के तीन युद्धों में अमेरिका में अंग्रेजों व फ्रांसीसियों की स्थिति में विशेष परिवर्तन नहीं आया, लेकिन सप्तवर्षीय युद्ध में इंग्लैण्ड की विजय से अमेरिका में फ्रांस का प्रभुत्व न्यू फाउण्डलैण्ड के दो छोटे-छोटे द्वीपों और कनाडा में न्यू ओरलिंस (New Orleans) के नगर को छोड़ कर समाप्त हो गया। 1763 ईसवी में पेरिस की सन्धि की शर्तों के अनुसार न्यू ओरलिंस को छोड़ कर शेष कनाडा और मिसीसिप्पी के पूर्व के प्रदेश फ्रांस से इंग्लैण्ड को मिले। स्पेन से ब्रिटेन को फ्लोरिडो प्राप्त हुआ। इस प्रकार 1763 ईसवी तक इंग्लैण्ड ने अमेरिका में अपने प्रतिद्वन्द्वियों को परास्त कर अपने पैर जमा लिए थे।

□□□

अध्याय – 2

औपनिवेशिक काल

□ एल. पी. माथुर

(I) प्रवासी अमेरिकनों की आरंभिक कठिनाइयाँ :

जार्जिया के अतिरिक्त अंग्रेजों के शेष बारह उपनिवेश सत्रहवीं शताब्दी के अन्त तक बस चुके थे। आरम्भ में इन उपनिवेशों में अंग्रेज प्रवासियों को कई प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ा था। उन्हें हर समय रेड इंडियनों के आक्रमण का भय रहता था। यद्यपि अमेरिका में भूमि की कोई कमी नहीं थी, परन्तु जंगलों को साफ कर उसे कृषि योग्य बनाने के लिए कठोर परिश्रम की आवश्यकता थी। अमेरिका में बसने के लिए आने वाले मनुष्यों में अधिकांश व्यक्तियों को धनी पुरुषों के बागानों और फार्मों में निम्न वेतन पर कार्य करना पड़ता था। शनैः शनैः इन कठिनाइयों पर विजय प्राप्त कर ली गई। अमेरिका के मूल निवासियों को कई स्थानों पर हरा कर अथवा उनके साथ भाईचारे का व्यवहार कर अमेरिकनों ने अपने नगरों को उनके आक्रमण से सुरक्षित बना लिया था। कुछ ही समय में अमेरिका में आने वाले प्रत्येक श्वेत प्रवासी को यह विश्वास होने लगा कि अगर वह कठोर परिश्रम करेगा तो कुछ ही वर्षों में सम्पन्न हो जायेगा। अमेरिका के कुछ उपनिवेशों, विशेषकर पेनसिलवेनिया, में धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार होने के कारण भी इंग्लैण्ड व यूरोप के अन्य देशों से प्रवासी वहाँ पर आये। अतः सत्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध और अठारहवीं शताब्दी के प्रथम दशकों में अमेरिका की जनसंख्या तेजी के साथ बढ़ने लगी। जहाँ 1689 ईसवी में अंग्रेजों के अधीन उपनिवेशों की जनसंख्या दो लाख बीस हजार के लगभग थी वहाँ 1763 ईसवी में तेरह अंग्रेज उपनिवेशों की जनसंख्या सोलह लाख के लगभग हो गई।

(II) यूरोप के अनेक देशों से आव्रजकों का आगमन :

इन तेरह उपनिवेशों में अंग्रेज प्रवासियों की संख्या सबसे अधिक थी। अंग्रेजों के अतिरिक्त फ्रांसीसी, जर्मन, स्काट, डच, यहूदी, स्विस, पुर्तगाली और स्पेनिश भी इन उपनिवेशों में आकर बस गये थे। लुई चतुर्दश के धार्मिक अत्याचारों और भारी करों से तंग आकर फ्रांसीसी ह्यूजोनोट्स बोस्टन, चार्ल्स टाऊन और न्यूयार्क के प्रदेशों में बस गये थे। जर्मनी और स्विट्जरलैण्ड के भूमिहीन कृषक और बेकार श्रमिकों के साथ प्रोटेस्टेंट धर्म के विभिन्न मतों के अनुयायी भी अपनी मातृभूमि छोड़ कर अमेरिका चले आये थे। आरम्भ में वे उत्तर कैरोलिना, न्यूयार्क और जार्जिया में बसे लेकिन बाद में इनमें से अधिकांश पेनसिलवेनिया में चले गये। उत्तर आयरलैण्ड में रहने

वाले स्कॉच अठारहवीं शताब्दी के आरम्भ में आयरलैंड छोड़ कर अमेरिका में न्यू हैम्पशायर से जार्जिया तक के प्रदेशों में बस गये, बाद में इनमें से अधिकांश मध्य पेनसिलवेनिया में जाकर रहने लगे। मध्य पेनसिलवेनिया से आगे बढ़ते हुए वे पश्चिम वर्जीनिया और कैरोलिना तक चले गये। रोडे द्वीप, न्यूयार्क और दक्षिण कैरोलिना में यहूदियों की संख्या भी काफी थी। न्यू यार्क में डच और डेलोवेयर में स्विस काफी संख्या में थे। डेलावेयर में फिन और इटालियन भी थे। अमेरिका के ब्रिटिश उपनिवेशों में नीग्रो दासों की संख्या भी तेजी के साथ बढ़ती जा रही थी। सत्रहवीं शताब्दी के आरम्भ में अफ्रीका के हब्शियों को दास बना कर लाने की प्रथा आरम्भ हुई। 1700 ईसवी में उनकी संख्या बीस हजार से बढ़कर 1763 ईसवी तक चार लाख तक पहुँच गई थी। इनमें से लगभग एक लाख पचास हजार वर्जीनिया और सत्तर हजार कैरोलिना के बागानों में कार्य करते थे।

(III) नये अमेरिकी समाज का निर्माण :

यूरोप के विभिन्न देशों से आने वाले व्यक्तियों के रहन-सहन, परम्पराओं और सामाजिक मूल्यों में पर्याप्त भिन्नता होने के कारण नयी दुनिया के उपनिवेशों में सामाजिक समस्याएँ उत्पन्न होना स्वाभाविक था। यद्यपि कई स्थानों पर यह प्रबन्ध किया गया था कि एक नगर में एक राष्ट्र के व्यक्ति एक भाग में रहें अथवा उनको एक ही स्थानों पर भूमि दी जाये परन्तु फिर भी उनमें पारस्परिक सम्पर्क स्थापित होना स्वाभाविक था। अमेरिका में आने वाला प्रवासी परम्पराओं व रूढ़ियों को त्यागने के लिये सदैव तत्पर रहता था। अतः यूरोप के विभिन्न देशों से आने वाले मनुष्यों ने अपने आपसी द्वेष और प्रतिस्पर्द्धा को छोड़ कर एक नये समाज का निर्माण किया। उन्होंने अपनी यूरोपियन राष्ट्रीयता की चिंता न करते हुए आपस में विवाह किये। फ्रांसीसी लेखक क्रेवेस्योर (Crevecoeur) ने अमेरिका में पंद्रह साल के आवास के पश्चात् यह मत प्रकट किया कि अमेरिका के निवासियों में रक्त का एक ऐसा अनोखा सम्मिश्रण देखने को मिलता है जो किसी अन्य देश में नहीं मिलता। उसने एक ऐसे व्यक्ति का उदाहरण दिया जिसका पितामह अंग्रेज, दादी डच और माता फ्रांसीसी थी और उसके चारों पुत्रों ने भिन्न-भिन्न यूरोपियन देशों से आने वाले प्रवासियों की कन्याओं से विवाह किया था। 1776 ईसवी में थॉमस पेन (Thomas Paine)ने यह सत्य ही कहा था कि केवल इंग्लैण्ड ही अमेरिका की मातृभूमि होने का दावा नहीं कर सकता। इसका श्रेय समस्त यूरोप को मिलना चाहिए। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् अमेरिका की जनता अपनी यूरोपियन राष्ट्रीयता की भावना को त्याग कर अमेरिकन नागरिक कहलाने में गौरव का अनुभव करने लगी।

नेविन्स़ और कोमेजर के अनुसार,''एक पृथक् और स्पष्ट अमेरिकी राष्ट्रीयता को शक्ल देने वाला दूसरा कारक था प्रदेश, खास कर सीमावर्ती प्रदेश। '' प्रारंभिक अधिवासियों के लिये यह आवश्यक था कि वे अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिये आदिम युग की सी वीरान जंगल की जिन्दगी के साथ अपना सामंजस्य स्थापित करें। उन्होंने इंडियनों से मक्का बोना और उसे खाद देना, तम्बाकू की खेती करना, डोंगियों और बर्फ पर चलने के जूते बनाना, शिकार का पीछा करना, हिरन की खाल को कमाना और लकड़ी की चीजें बनाना सीखा। वे निरन्तर अभ्यास

करके शिकारी, किसान और लड़ाके बन गये। एक नई कृषि पद्धति, एक नई स्थापत्य कला और एक नये घरेलू अर्थशास्त्र का जन्म हुआ। शीघ्र ही वे ऐसे लोग हो गये जिनका साम्य अपने उन पुराने पड़ौसियों से तनिक भी नहीं रहा जिन्हें वे इंग्लैण्ड या यूरोप के अन्य देश में छोड़ आये थे। उनकी आने वाली पीढ़ियों में तो अपने पूर्वजों के देश के निवासियों से साम्यता घटती गई। समय के साथ-साथ आव्रजकों का जीवन के सम्बन्ध में दृष्टिकोण अधिक रूक्ष, अधिक क्रियात्मक और अधिक स्वनिर्मित हो गया।

इस सम्बन्ध में एक फ्रांसीसी भद्रजन सां जां क्रेवेस्योर, जो 1759 ईसवी के लगभग अमेरिका के एक उपनिवेश में कृषक के रूप में बस गया था, के विचार उल्लेखनीय हैं। उसके मत में एक यूरोपीय यहाँ पहुँचने के बाद अपनी पहले की दासता की स्थिति को भूलने लगता है, उसका हृदय बिना चाहे उदार हो जाता है और प्रतिभाषित होने लगता है और उसका पहला पसीना उसमें उन विचारों को जगाता है, जो एक अमेरिकन की विशेषता है। इसका कारण यहाँ के नये कानून, नई जीवन पद्धति तथा नई सामाजिक प्रणाली है जो उनको नये सिरे से गढ़ती है।

यद्यपि एक नवीन अमेरिकन संस्कृति का विकास हो रहा था लेकिन क्रान्ति आरम्भ होने तक उपनिवेशों के बहुत कम अधिवासियों को इस तथ्य की वास्तविक अनुभूति थी। वे सर्वप्रथम स्वयं को वफादार ब्रिटिश प्रजाजन मानते थे और फिर वर्जीनियाई, न्यू यार्कर अथवा रोडे आईलैंडर।

यहाँ पर यह भी बता देना उचित होगा कि काफी समय तक अमेरिकन उपनिवेशों में भी सामाजिक समानता स्थापित नहीं हो पायी थी।

(IV) अमेरिकन समाज के विभिन्न वर्गों की दशा :

इस युग में औपनिवेशक काल में यूरोप में एक मनुष्य का सामाजिक स्तर उसके जन्म के आधार पर निर्धारित होता था। अगर एक व्यक्ति का जन्म उच्च कुल में होता था तो वह उच्च वर्ग का सदस्य बन जाता था। मध्यम और निम्न वर्गों के मनुष्यों को उच्च वर्ग में सम्मिलित होने के अवसर बहुत कम मिलते थे। यद्यपि अमेरिका में निम्न व मध्यम वर्गों के मनुष्य यूरोप से काफी संख्या में सामाजिक असमानता से असंतुष्ट होकर आये थे लेकिन औपनिवेशक काल में उन्हें अमेरिकन समाज में भी वर्गभेद का सामना करना पड़ा। अमेरिकन समाज में वर्गभेद जन्म व उत्तराधिकार के साथ-साथ आर्थिक विषमताओं पर भी आधारित थे।

(1) उच्च वर्ग -समाज के सबसे उच्च वर्ग में प्रशासकों के अतिरिक्त बड़े-बड़े बागानों के स्वामी, धनी व्यापारी, सफल वकील व डाक्टर, बड़े पादरी , न्यायाधीश और प्राध्यापक भी थे। अमेरिका के उपनिवेशों का प्रशासन, खेती, व्यवसाय और व्यापार उनके नियंत्रण में था। इनकी संख्या दक्षिण व मध्य के उपनिवेशों में अधिक थी। धनी व प्रभावशाली होने के कारण इस वर्ग के मनुष्य इंग्लैण्ड के अमीरों की दिनचर्या और आदतों की नकल करते थे।

(2) मध्यम वर्ग -मध्यम वर्ग में छोटे भूमिपति और साधारण व्यापारी व दूकानदार थे। इनकी संख्या उत्तर व मध्य के उपनिवेशों में अधिक थी।

(3) निम्न वर्ग - निम्न वर्ग में श्वेत सेवक थे। श्वेत सेवकों में तीन प्रकार के व्यक्ति होते थे। प्रथम-वे व्यक्ति जिसके पास यूरोप से अमेरिका आने के लिए जहाज का किराया नहीं होता

था और वे किराये के बदले में कुछ समय तक किसी भी धनी व्यापारी अथवा भूमिपति की सेवा करते थे। द्वितीय ऐसे अपराधी, जिन्हें यूरोप में मृत्युदण्ड अथवा आजीवन कारावास दिया गया था तथा उन्हें अमेरिका में भेज दिया गया था। तृतीय श्रेणी में श्वेत दास, अनाथ और भिखारी होते थे। श्वेत दासों की संख्या दक्षिण के उपनिवेशों में अधिक थी। एक श्वेत दास कठोर परिश्रम कर अपने दायित्व से समय के पहले मुक्ति पाकर समाज में अपना अच्छा स्थान बना सकता था।

(4) हब्शी दास - हब्शी दासों की दशा अत्यन्त शोचनीय थी। उन्हें अपने स्वामी के बागानों में अपने परिवार के सदस्यों सहित कठोर परिश्रम करना पड़ता था। अपने श्वेत स्वामी की दासता से मुक्ति पाने की आशा एक नीग्रो दास स्वप्न में भी नहीं कर सकता था। उन्हें किसी भी प्रकार के राजनीतिक अधिकार प्राप्त नहीं थे। दक्षिण के उपनिवेशों में इनकी संख्या बहुत अधिक थी। 1763 ईसवी में तेरह उपनिवेशों में नीग्रो दासों की संख्या लगभग चार लाख थी जिनमें से एक लाख पचास हजार वर्जीनिया और सत्तर हजार दक्षिणी कैरोलिना में थे।

समय के साथ-साथ इन विभिन्न वर्गों में आपसी मतभेद व ईर्ष्या बढ़ने लगी। मध्यम व निम्न वर्ग के सदस्य, उच्च वर्ग के सदस्यों, विशेषकर ऐसे व्यक्तियों जिन्होंने अनेक शहरों में व्यापार अथवा बड़े फार्मों (Farms) के द्वारा धन कमा कर अपना प्रभाव स्थापित करने की चेष्टा कर रहे थे, से ईर्ष्या करने लगे। बर्नार्ड बेलिन के अनुसार नवोदित शिक्षा, धनी व्यक्ति, प्रजाति, सांस्कृतिक प्रवृत्तियों तथा सामाजिक शिष्टाचार में मध्यम वर्ग के सदस्यों से भिन्न नहीं थे। उन्होंने तो केवल धन कमाया था। किन्तु अमेरिका की नव-स्थापित सामाजिक व्यवस्था में उनका उत्कर्ष मध्यम वर्ग के लिए एक समस्या बन गई। बर्नार्ड बेलिन ने लिखा है कि, इस नवोदित उच्च वर्ग का सहसा उदय, जो अभिमानी होने के साथ-साथ परिश्रमी भी था, के साथ मध्यम वर्ग के कुछ सदस्य , जो उनके प्रतिस्पर्द्धी थे, का द्वेष सत्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में अमेरिकन उपनिवेशों में होने वाले विद्रोहों की उग्रता को समझाता है। यद्यपि ये विद्रोह साधारण स्तर के लगते हैं, किन्तु उस काल के अमेरिकी समाज के सम्बन्ध में अपना एक विशेष महत्त्व रखते हैं।

(5) बेकन का विद्रोह (1676 ईसवी) -सत्रहवीं शताब्दी के मध्य में वर्जीनिया के गवर्नर बर्कले ने रेड इंडियनों (Red Indians), जो कि अमेरिका के आदिवासी थे, तथा श्वेत उपनिवेशवादियों के मध्य विवादों को सुलझाने के लिए अपने प्रदेश में भूमि की सीमाएँ निर्धारित करने का कार्य आरम्भ किया। उसका यह कुछ कार्य समय पहले अमेरिका में बसने वाले नाथानियल बेकन (Nathanial Bacon) के हितों के विरुद्ध था। इसके अतिरिक्त बेकन गवर्नर बर्कले से अप्रसन्न भी था, क्योंकि बर्कले ने उसे इंडियन्स के साथ व्यापार करने का एकाधिकार नहीं दिया था। उसका साथ गाईल्स ब्लांड (Giles Bland) ने दिया। 1671 में चूंगी अधिकारी के पद पर नियुक्त होकर ब्लांड वर्जीनिया आया था लेकिन उसके अभिमानी व्यवहार के कारण गवर्नर ने पहले उसे गिरफ्तार किया था तथा कुछ समय बाद पदच्युत कर दिया था। बैंकन व ब्लांड ने गवर्नर बर्कले के विरुद्ध एक आन्दोलन चलाया। उनका साथ कुछ व्यक्तियों ने दिया। वे और भूमि पर अधिकार करना चाहते थे। उन्होंने उच्च पदों पर कार्य करने वाले व्यक्ति तथा उनके कृपापात्रों जो कि जनता का रक्त चूसने वाले थे, के अधिकारों को चुनौती दी। इंडियन्स के विरोध का अंत करने के लिए बेकन ने बड़े पैमाने पर उनसे युद्ध आरम्भ किया तथा उन्हें अनेक युद्धों

में हराया। बर्कले ने इसका विरोध किया। 1676 ईसवी में बेकन व उसके समर्थकों ने सरकार के विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया। बर्कले को हरा कर उन्होंने वर्जीनिया की राजधानी जेम्स टाऊन को विध्वंस कर दिया। कुछ समय बाद बेकन की मृत्यु होने के कारण विद्रोह शांत हो गया। वर्जीनिया की सरकार ने उसके प्रमुख साथियों को फांसी की सजा दी।

6. कुलपेपर (Culpeper) का विद्रोह (1677) ईसवी – उत्तरी कैरोलिना में लगभग तीन हजार प्रवासी वहाँ की दलदली जमीन में अनेक कठिनाइयों के बावजूद भी जीवन-यापन कर रहे थे। अतएव कुछ में उन्होंने तम्बाकू की तस्करी का कार्य करना भी आरम्भ किया। इस कार्य में उन्हें कुछ धनी व्यापारियों का संरक्षण प्राप्त था। इस अनियमित व्यापार को नियंत्रित करने के लिए सरकारी अधिकारियों ने सख्त कदम उठाये। इसके विरोध में जॉन कुलपेपर के नेतृत्व में असंतुष्टों ने विद्रोह किया। जॉन कुलपेपर ने उत्तरी कैरोलिना की सरकार पर अपना नियंत्रण स्थापित किया तथा अनेक सरकारी अधिकारियों को अपदस्थ कर उनके विरुद्ध आरोप पत्र तैयार करके इंग्लैण्ड की सरकार के पास भेज दिया। लेकिन दोनों पक्षों के मध्य संघर्ष चलता रहा। इसमें विद्रोही परास्त हुए तथा उत्तरी कैरोलिना में शांति स्थापित हुई। इस विद्रोह की असफलता का मुख्य कारण एक बड़ी सीमा तक इसके नेतृत्व के प्रति जनता का अविश्वास था। इसके अतिरिक्त इंग्लैण्ड की सरकार ने भी इस मामले को जल्दी नहीं निबटाया।

7. जेकब लेसलेर (Jacob Lieisler) का विद्रोह (1689 ईसवी) – इंग्लैण्ड से रक्तहीन क्रांति के समाचार मिलते ही न्यू यार्क के लेफ्टीनेंट गवर्नर फ्रांसिस निकलसन (Francis Nicholson) ने मनहाटन की छावनी के मिलिशिया (Militia) सैनिकों की संख्या में वृद्धि की। मिलिशिया का एक कप्तान जेकब लेसलर था। शनैः शनैः लेसलर के नेतृत्व में मिलिशिया व निकलसन के सम्बन्ध बिगड़ने लगे। लेसलर ने गवर्नर के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। शीघ्र ही उसने इंग्लैण्ड के नये शासक विलियम व मेरी के नाम पर दुर्ग पर अधिकार कर लिया। निकलसन इंग्लैण्ड चला गया। दिसम्बर 1689 ईसवी में इंग्लैण्ड के सम्राट विलियम तृतीय ने मुख्य सरकारी अधिकारी को भेजे गये एक संदेश में उसे पद पर रहने को कहा। लेसले के अनुसार यह संदेश उसे लेफ्टीनेंट गवर्नर के पद पर काम करते रहने का आदेश भी था। उसने अपने समर्थकों को उच्च पदों पर नियुक्त किया तथा विरोधी तत्त्वों को दबाया। किन्तु दो वर्षों के लगातार दमन व कुशासन के कारण वह अलोकप्रिय हो गया तथा न्यू यार्क के उपनिवेश में राजधानी की चारदीवारी के बाहर उसका नियंत्रण लगभग समाप्त हो गया। 1691 ईसवी में इंग्लैण्ड की सरकार ने हेनरी स्लाटर (Henry Slaughter)को न्यूयार्क का लेफ्टीनेंट गवर्नर बना कर भेजा। उसने लेसलर को आत्मसमर्पण करने के लिए बाध्य किया। लेसलर व उसके दामाद और मुख्य प्रभारी की जायदाद जब्त कर ली गई तथा उन्हें फांसी पर लटका दिया। 1695 ईसवी में इंग्लैण्ड की लोकसभा ने स्लाटर द्वारा दी गई सजाओं को गैर-कानूनी करार दिया। इस बीच न्यूयार्क के उपनिवेश की जनता दो भागों में बँट गई। अनेक आंग्ल व डच परिवारों, जिन्हें भूमि के पट्टे मिले हुए थे, ने लेसलर का विरोध किया। दोनों पक्षों ने एक-दूसरे की शक्ति का अंत करने का भरसक प्रयत्न किया। कुछ समय पश्चात् इस संघर्ष का अंत हुआ।

8. प्रोटेस्टेंट एसोसियेशन (Protestant Association) - मेरीलैंड की काल्वर्ट काऊँटी (Calvert county) में कैथोलिकों के बढ़ते हुए प्रभाव के विरुद्ध 1676 ईसवी से असंतोष बढ़ रहा था। इंग्लैण्ड से रक्तहीन क्रांति के समाचार मिलने पर लगभग दो सौ पचास व्यक्तियों ने मेरीलैंड की सत्ता हस्तगत करने का प्रयत्न किया। प्रोटेस्टेंट एसोसिएशन के नाम पर उन्होंने एक घोषणा जारी की जिसमें उन्होंने सत्तारूढ़ काल्वर्ट परिवार द्वारा मनमाने ढंग से कर वसूल करने तथा इंग्लैण्ड की तत्कालीन सत्ता का विरोध करने की निंदा की। इंग्लैण्ड की सरकार से उन्होंने काल्वर्ट परिवार को अपदस्थ करने की माँग की। इंग्लैण्ड की नयी सरकार ने उनकी माँग स्वीकार की। 1715 में उन्हें फिर से सत्तारूढ़ किया गया। इस समय तक काल्वर्ट परिवार ने प्रोटेस्टेंट मत स्वीकार कर लिया था तथा मेरीलैण्ड में भी औपनिवेशक सरकार का सामान्य ढाँचा लागू हो गया था। वास्तव में इस संघर्ष का मूल कारण कुछ परिवारों का वर्चस्व था। ये परिवार नवोदित प्लान्टर्स (Planters) के उत्कर्ष में बाधा डाल रहे थे, अत: उनका विरोध किया गया।

9. एडमंड एंड्रोस (Admund Andros) के विरुद्ध विद्रोह (1689 ईसवी) – आरम्भ में मैसाचुसेट्स में प्यूरिटन प्रवासियों को वहाँ के गवर्नर और उसके सहायकों को चुनाव करने का अधिकार प्राप्त था। उनके द्वारा चुने गये सदन को कानून बनाने का अधिकार भी प्राप्त था। 1684 ईसवी के चार्टर (Charter) द्वारा इस व्यवस्था में परिवर्तन किया गया तथा इंग्लैण्ड की सरकार ने गवर्नर नियुक्त करना आरम्भ किया। सर एडमंड एंड्रोस को मैसाचुसेट्स, कनेक्टिकट, व रोड़े द्वीप का संयुक्त गवर्नर नियक्त किया गया। मैसाचुसेट्स में एंड्रोस ने मनमाने ढंग पर नये कर लगाये, उस समय तक दिये गये सभी भूमि के पट्टों की वैधता को चुनौती दी तथा वहाँ पर एंग्लिकन चर्च की स्थापना की। इससे वहाँ के प्यूरिटनों में बड़ा असंतोष फैला। 1688 की इंग्लैण्ड की रक्तहीन क्रांति के समाचार मिलते ही मैसाचुसेट्स की राजधानी बोस्टन में एक विद्रोह हुआ। एंड्रोस को अपदस्थ कर पुन: प्यूरिटनों की सत्ता स्थापित की गई। इंग्लैण्ड की सरकार से अपील की गई कि वह इस परिवर्तन को मान्यता प्रदान करे। किन्तु 1691 में इंग्लैण्ड की सरकार ने एक नवीन आज्ञा-पत्र द्वारा मैसाचुसेट्स में गवर्नर की नियुक्ति का अधिकार पुन: अपने पास ले लिया, प्रतिनिधि सभा में मत देने का अधिकार सम्पति के आधार पर निर्धारित किया तथा सभी प्रोटेस्टेंट चर्चों को अपने धर्म के पालन का अधिकार भी दिया। प्लाईमाऊथ को स्थायी रूप से मैसाचुसेट्स का अंग बना दिया गया, किंतु उसने कनक्टिकट और रोडे द्वीप के आज्ञा-पत्रों में कोई परिवर्तन नहीं किया।

बर्नार्ड बेलिन के अनुसार इन विद्रोहों के नेताओं ने अपने प्रदेशों के शासकों के अन्यायपूर्ण कार्यों के विरुद्ध आवाज उठाई। उन्होंने सरकार की प्रकृति, ढाँचे व व्यवस्था पर आपत्ति नहीं की, अपितु उन्होंने उच्च सरकारी पदों पर कार्य करने वाले व्यक्तियों की दमनपूर्ण नीतियों का विरोध किया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि सभी प्रवासियों के साथ समान स्तर पर व्यवहार किया जाय। वास्तव में ये विद्रोह उस समय के विभिन्न सामाजिक वर्गों में अधिकारों के संघर्ष के प्रतीक थे।

अमेरिका के श्वेत समाज के विभिन्न वर्गों में पारस्परिक सहयोग की भावना का विकास औपनिवेशिक काल के अन्त में होने लगा। इस समय में उन्होंने अपने मतभेदों को भुला कर

अमेरिकन उपनिवेशों की स्वतन्त्रता के लिए प्रयत्न करने आरम्भ किये। लेकिन इस समय भी कुछ सुधारवादी नेताओं को छोड़ कर अन्य व्यक्तियों ने दासता की अमानवीय प्रथा को समाप्त करने के लिए आवाज नहीं उठाई। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् उत्तर के उपनिवेशों में दास प्रथा को समाप्त करने के लिये आन्दोलन हुए लेकिन दक्षिण के उपनिवेशों ने इसका विरोध किया। यह वाद-विवाद लगभग एक सौ पचास वर्ष तक चलता रहा।

(V) धार्मिक स्वतंत्रता व उसकी सीमाएँ :

यूरोप के कई देशों के शासकों की धार्मिक असहिष्णुता की नीति से तंग आकर अनेक मनुष्य अमेरिका में आकर बस गये थे। नयी दुनिया में धार्मिक स्वतंत्रता के पूर्ण अधिकार मिलने के सम्बन्ध में उन्हें निराशा ही प्राप्त हुई। इसका प्रमुख कारण यह था कि अमेरिका के कई उपनिवेशों में भी कट्टर पादरी अपने प्रभाव को बनाये रखने के लिए उसी प्रकार का व्यवहार करने लगे जिस प्रकार का व्यवहार मध्यकालीन युग में यूरोप के पादरी करते थे। कई उपनिवेशों में शासक अपने मत के अनुयायियों को ही रहने की सुविधायें प्रदान करते थे। सभी उपनिवेशों में चर्च के अधिष्ठाता यह चाहते थे कि प्रत्येक व्यक्ति उनकी चर्च के नियमों का पालन नियमित रूप से करे। वर्जीनियाई, मेरीलैंड और दक्षिण कैरोलिना में एंग्लिकन चर्च के लिए सभी व्यक्तियों को कर देना पड़ता था। धीरे-धीरे पादरियों के पास धन इकट्ठा होने लगा और वे विलासी एवं भ्रष्ट होते गये। उनमें से अधिकांश राजनीति में भाग लेने लगे। उनका प्रभाव उपनिवेशों की राजनीति पर इतना अधिक हो गया कि न्यू इंग्लैण्ड के उपनिवेशों के शासन का स्वरूप धर्म प्रधान हो गया। कई उपनिवेशों में मताधिकार केवल एक मत के अनुयायियों को ही प्राप्त था। मैसाचुसेट्स में प्यूरिटन ही मत देने के अधिकारी थे। केवल रोडे द्वीप में चर्च व राज्य का कोई सम्बन्ध नहीं माना गया था। ऐसी परिस्थितियों में चर्च की सत्ता के विरुद्ध अमेरिकनों में असंतोष की भावना बढ़ती गई। इसके फलस्वरूप सत्रहवीं शताब्दी के चौथे व पाँचवें दशकों में अमेरिका में कई धार्मिक सुधार आन्दोलन हुए, जिन्हें सम्मिलित रूप से अमेरिकन इतिहास में 'महान् जागरण' (Great Awakening) कहा जाता है। जार्ज ह्वाइटफील्ड (George Whitefield) और जोनाथन एडवर्ड्स (Jonathan Adwards) आदि धार्मिकों सुधारकों ने भावुकता और नैतिकता पर जोर देकर जनता को पोप से दूर रहने का संदेश दिया। वे जनता के सम्मुख समाधिस्थ होकर यह दावा करते थे कि उन्हें दैवी संदेश मिल रहा है और इसलिए वे प्रशासकों और चर्च के अधिष्ठाताओं की अपेक्षा अधिक ज्ञानी हैं। उन्होंने एंग्लिकन चर्च के विशेषाधिकारों का विरोध किया। न्यू इंग्लैण्ड के उपनिवेशों से आरम्भ होकर ये आन्दोलन शीघ्र ही न्यू जर्सी और पेनसिलवेनिया में फैल गये। इन धार्मिक सुधार आन्दोलनों ने नगरों में श्रमिकों को और ग्रामों में साधारण कृषकों को विशेष रूप से प्रभावित किया। फलस्वरूप अमेरिका में चर्च व राज्य की पृथकता, पादरियों के भ्रष्टाचार और प्रभाव का अन्त, धार्मिक कर की समाप्ति और धर्म पालन में पूर्ण स्वतन्त्रता की माँगें जोर पकड़ती गईं। इन आन्दोलन से प्रभावित होकर मेरीलैंड और कई अन्य उपनिवेशों में 'सहिष्णुता कानून' (Toleration Act) लागू किये गये। अमेरिकन क्रान्ति के बाद न्यू इंग्लैण्ड को छोड़ कर अन्य उपनिवेशों में चर्च को राज्य से पृथक् कर दिया गया। वर्जीनिया के धार्मिक स्वतन्त्रता अधिनियम का अनुकरण कई उपनिवेशों में किया गया।

(VI) आर्थिक दशा :

(1) भूमि का वितरण व स्वामित्व - अमेरिका के विभिन्न अंग्रेजी उपनिवेशों में आरम्भ से ही नब्बे प्रतिशत जनता का मुख्य उद्यम कृषि था। यूरोप से आने वाले प्रत्येक आव्रजक के लिए भूमि की कोई कमी नहीं थी। भिन्न-भिन्न उपनिवेशों में भूमि के वितरण और स्वामित्व की भिन्न-भिन्न प्रणालियाँ प्रचलित थीं। वर्जीनिया में प्रत्येक आव्रजक को पचास एकड़ भूमि दी जाती थी। ऐसे मनुष्य को भी, जो कि यूरोप से किसी व्यक्ति को अपनी जेब से जहाज का भाड़ा खर्च कर अमेरिका लाता था, पचास एकड़ भूमि मिल सकती थी। स्वाम्याधिकार अनुदानों के तहत शासित उपनिवेशों में लगान की साधारण दरों पर भूमि खेती के लिए दी जाती थी। न्यू इंग्लैण्ड में भूमि सामान्य मूल्य पर बिना किसी लगान के मिल जाती थी। आम तौर पर यूरोप में आने वाले गरीब व्यक्ति अपनी सामर्थ्य के अनुसार भूमि खरीद लेता था। कुछ ही समय बाद वह कठोर परिश्रम कर इतना सम्पन्न हो जाता था कि कुछ और भूमि खरीद लेता। इस प्रकार कई उपनिवेशों में प्रशासकों और प्रोपराइटरों के अतिरिक्त कृषक भी बड़े-बड़े बागानों के स्वामी बन गये। दक्षिण के उपनिवेशों में अनुकूल जलवायु व उपजाऊ भूमि होने के कारण तम्बाकू, चावल और नील की खेती बड़े-बड़े बागानों में होने लगी। इन बागानों में हब्शी दासों और श्वेत श्रमिकों की मदद से खेती की जाती थी। मध्य के उपनिवेशों में गेहूँ व अन्य किस्म के अनाज, फल व सब्जियाँ उगाई जाती थीं। इन प्रदेशों से खाद्य सामग्री अन्य उपनिवेशों और वेस्ट इंडीज (West Indies) को भेजी जाती थी। खेती के साथ-साथ पशुपालन भी इन उपनिवेशों का एक प्रमुख उद्यम था। न्यू इंग्लैण्ड में भूमि के उपजाऊ न होने के कारण बड़े बागानों का विकास नहीं हो सका।

(2) कृषि से सम्बन्धित समस्याएँ - अठारहबवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में अमेरिका में कृषि से सम्बन्धित कई समस्याएँ उत्पन्न हुई। उपनिवेशों की सरकारों ने अपनी आमदनी बढ़ाने के लिए रिक्त भूमि का अधिकार एक व्यक्ति को न देकर धनी व्यापारियों व भूमिपतियों को देना शुरू कर दिया। भूमि का अधिकार खरीदने के लिए व्यापारिक कम्पनियों का निर्माण शुरू हुआ। इन कम्पनियों ने भूमि की कीमतों में वृद्धि कर दी। पेनसिलवेनिया, वर्जीनिया और कैरोलिना के कृषक उपनिवेशों की पश्चिमी सीमा पर स्थित भूमि को साधारण मूल्य पर प्राप्त कर उसे कृषि योग्य बना कर सम्पन्न होने की आशा करते थे लेकिन सट्टेबाजों ने भूमि की कीमतों में असाधारण वृद्धि कर उनकी आशाओं पर पानी फेर दिया। अत: उन्होंने इसका तीव्र विरोध किया। 1763 ईसवी में इंग्लैण्ड की सरकार द्वारा बनाये गये कानून के अनुसार सम्राट की स्वीकृति के बिना उपनिवेशों की सीमा के बाहर की भूमि को उपनिवेशों की सरकार बेच नहीं सकती थी।

दूसरी प्रमुख समस्या ऋण की थी। कई कृषकों ने भूमि के विकास के लिए व्यापारियों से ब्याज की ऊँची दरों पर ऋण लिया था। अगर वे ऋण की किस्त समय पर अदा नहीं करते थे तो उन पर मुकदमा चला कर उन्हें जेल भेज दिया जाता था अथवा उनकी भूमि जब्त कर ली जाती थी। कृषकों को ऋणदाताओं से बचाने के लिए कई उपनिवेशों में 'भूमि बैंक' स्थापित किये गये। एक कृषक इस प्रकार के बैंकों से ऋण लेकर ऋणदाताओं से बच सकता था।

कई उपनिवेशों में बागानों के स्वामियों और साधारण कृषकों ने प्रतिनिधि सदनों में अपने प्रतिनिधि भेजने के अधिकार प्राप्त करने, भूमिकर की दर कम करने और धार्मिक कर समाप्त करने की भी माँग की। पेट्रिक हेनरी (Patirick Henry), रिचर्ड हेनरी ली (Richard Henry Lee), थामस जेफरसन (Thomas Jefferson) जैसे धनी व उदारवादी भू-स्वामियों ने इन माँगों का समर्थन किया। 1760 ईसवी में उत्तरी कैरोलिना में कृषकों की एक संस्था 'रेग्यूलेटरस्' (Regulators)के सदस्यों ने अधिकारियों को धमकाना और डराना आरम्भ किया। क्रान्ति के बाद इसका दमन किया गया।

यद्यपि दक्षिण के बागानों में कृषि उन्नत दशा में थी, परन्तु वहाँ के अधिकांश बागान-मालिकों की आर्थिक दशा अच्छी नहीं थी। वे अंग्रेज व्यापारियों द्वारा अपना माल इंग्लैण्ड भेजते थे और वहाँ से कच्चा माल मँगाते थे। इंग्लैण्ड से आने वाले माल का भुगतान हुण्डियों द्वारा करते थे। इस प्रकार के व्यापार से इंग्लैण्ड के व्यापारियों को अधिक लाभ और बागानों के मालिकों को नुकसान होता था। फलस्वरूप उन पर अंग्रेज व्यापारियों का ऋण बढ़ता गया।

(3) व्यापार व उद्योग - आर्थिक दृष्टि से कृषि के पश्चात् फर के व्यापार का अधिक महत्त्व था। उपनिवेशों की सीमा पर रहने वाले निवासी रेड इण्डियनों से कम्बल, शराब, शस्त्र और अन्य वस्तुओं के बदले फर ले लेते थे। अमेरिका से फर मँहगे दामों में यूरोप में बेचा जाता था।

इन उपनिवेशों के वनों में अच्छी ईमारती लकड़ी सस्ते मूल्य पर प्राप्त हो जाती थी। अतएव काफी मात्रा में लकड़ी जहाजों द्वारा यूरोप भेजी जाने लगी। शीघ्र ही न्यू इंग्लैण्ड और मध्य के उपनिवेशों के बन्दरगाहों में छोटे व बड़े जहाज बनाने का व्यवसाय प्रगति करने लगा। अमेरिका में बने जहाजों का यूरोप में निर्मित जहाजों की अपेक्षा सस्ते और अच्छे होने के कारण यूरोप के देश वहाँ से जहाज खरीदने लगे।

न्यू इंग्लैण्ड के अंग्रेज उपनिवेशों का एक प्रमुख उद्यम मछली पकड़ना था। यहाँ के मछुए बड़ी-बड़ी नौकाओं में दूर-दूर तक जाकर समुद्र में मछली पकड़ने जाने लगे। शीघ्र ही उनका साहस यहाँ तक बढ़ा कि वे नोवा स्कोशिया (Nova Scotia), सैंट लोरेन्स (Saint Lawrence) की खाड़ी और न्यू फाउण्डलैण्ड के तटों से मछलियाँ पकड़ कर लाने लगे। सत्रहवीं शताब्दी के अन्त में न्यू इंग्लैण्ड के मछुए ह्वेल मछली पकड़ने लगे। अमेरिका से पर्याप्त मात्रा में मछलियों को सुखा कर यूरोप में भेजा जाने लगा। कनाडा के फ्रांसीसियों ने अमेरिकन मछली उद्योग की निरन्तर उन्नति को अपने हितों के विरुद्ध माना। इस सम्बन्ध में अंग्रेजों से उनकी प्रतिद्वन्द्विता सप्तवर्षीय युद्ध के अन्त तक चलती रही।

अमेरिकन उपनिवेशों ने आरम्भ से ही यह प्रयत्न किया कि वे कम से कम कपड़ा यूरोप से मंगायें। अमेरिका के बड़े-बड़े बागानों में ऊन के लिए भेड़ों को काफी संख्या में पाला जाने लगा। रस्सी व घरेलू कपड़ों के लिए सन की खेती की गई। फर का प्रयोग ऊनी कपड़ों के लिए किया जाने लगा। प्रत्येक परिवार अपना कपड़ा स्वयं बुनता था। न्यू इंग्लैण्ड और मध्य के उपनिवेशों में कपड़ा बनाने की अनेक मिलें स्थापित की गई। कुछ ही समय में अमेरिका के उत्तर के राज्यों में वस्त्र इतनी मात्रा में बनने लगे कि वे इसे दक्षिण के उपनिवेशों और वेस्ट इण्डीज को भेजने लगे।

अठारहवीं शताब्दी में अमेरिका में टोप बनाने के व्यवसाय ने असाधारण उन्नति की। अमेरिका से टोपों का निर्यात इंग्लैण्ड और आयरलैण्ड को होने लगा। अमेरिकन उपनिवेशों में टोप-निर्माण और वस्त्र उद्योग की उन्नति से इंग्लैण्ड के मिल मालिकों को ईर्ष्या हुई।

अठारहवीं शताब्दी में वेस्ट इण्डीज से पर्याप्त मात्रा में गुड़ का आयात अमेरिकी उपनिवेशों में अच्छी शराब बनाने के लिए होने लगा। न्यू इंग्लैण्ड के उपनिवेश वेस्ट इण्डीज को गेहूँ, गोश्त तथा कच्चा माल भेज कर वहाँ से गुड़ खरीदते थे। 1733 ईसवी में ब्रिटिश सरकार ने न्यू इंग्लैण्ड के गुड़ व्यापार को नियन्त्रित करने के लिए एक कानून बनाया। उपनिवेशों के व्यापारियों ने इस कानून की व्यापक अवहेलना की।

उत्तर व मध्य के उपनिवेशों में लोहे की वस्तुओं और औजारों के निर्माण का लघु उद्योग शीघ्र ही प्रगति करने लगा। इन उपनिवेशों में घरेलू आवश्यकता के अतिरिक्त औजार, कील, बर्तन तथा लोहे की अन्य वस्तुएँ बनने लगीं और लोहे का माल अन्य उपनिवेशों और वेस्ट इण्डीज को भेजा जाने लगा।

कई ऐसे अन्य लघु उद्योगों का भी विकास अमेरिका में हुआ, जो कि उपनिवेशों को अपनी आवश्यकता की वस्तुओं में आत्म-निर्भर बनाने में सहायक सिद्ध हुए। वास्तव में अठारहवीं शताब्दी के आरम्भ में वस्तुओं के उत्पादन में अमेरिकन उपनिवेश आत्मनिर्भरता प्राप्त कर चुके थे। विलासिता की वस्तुएँ व अन्य सामान वे इंग्लैण्ड से तम्बाकू, नील, चावल, फर, लकड़ी, जहाज व शराब आदि बेच कर प्राप्त कर लेते थे।

विभिन्न उपनिवेशों में समान मुद्रा प्रचलित न होने के कारण व्यापारियों को कठिनाइयों का अनुभव होने लगा। अमेरिका में इंग्लैण्ड के अतिरिक्त स्पेन व पुर्तगाल की मुद्रा भी प्रचलित थी। इसलिए वे विनिमय प्रणाली का प्रयोग करने लगे। दक्षिण के उपनिवेशों में तम्बाकू व चावल और उत्तर के उपनिवेशों में अनाज व पशुओं द्वारा विनिमय होता था। सत्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में कुछ उपनिवेशों में कागज के नोट जारी किये गये लेकिन इन उपनिवेशों की सरकारों के पास पर्याप्त मात्रा में स्वर्ण और चाँदी न होने से ये प्रयोग नहीं हुए।

सत्रहवीं शताब्दी में उपनिवेशों में यातायात का समुचित विकास न होने के कारण आन्तरिक व्यापार, नदियों अथवा समुद्री मार्गों द्वारा जहाजों से होता था। दक्षिण के उपनिवेशों का अधिक व्यापार इंग्लैण्ड के साथ होता था। उत्तर के उपनिवेशों इंग्लैण्ड के अतिरिक्त यूरोप के अन्य देशों से भी व्यापार करते थे। उपनिवेशों से चावल, नील, तम्बाकू, फर, लकड़ी व शराब आदि वस्तुएँ निर्यात होती थीं और आवश्यक वस्तुएँ आयात की जाती थीं। शक्कर और मदिरा के बदले में अफ्रीका से दास खरीदे जाते थे।

(VII) अमेरिकन उपनिवेशों के व्यापार व व्यवसाय पर इंग्लैण्ड का नियन्त्रण:

अमेरिका के प्रथम उपनिवेश वर्जीनिया की स्थापना के समय से ही इंग्लैंड ने अमेरिकन उपनवेशों के व्यापार और व्यवसाय का नियन्त्रण मातृभूमि के उद्योगपतियों और व्यापारियों के हितों को ध्यान में रखते हुए किया। उस समय प्रचलित आर्थिक सिद्धान्तों के आधार पर एक राष्ट्र

की शक्ति व सम्पत्ति उसके पास सोने-चांदी के सुरक्षित भण्डार से आँकी जाती थी। अतएव प्रत्येक राष्ट्र यह प्रयत्न करता था कि वह अपने देश की खदानों से अधिक से अधिक स्वर्ण व चाँदी प्राप्त करे। इन बहुमूल्य धातुओं को प्राप्त करने का दूसरा तरीका आयात से अधिक निर्यात करना था, क्योंकि इंग्लैण्ड के पास सोना व चाँदी के खनिज भण्डार अत्यन्त कम थे, इसलिए राष्ट्र की सम्पत्ति बढ़ाने के लिए निर्यात में वृद्धि करना उसके लिए आवश्यक था। सोलहवीं व सत्रहवीं शताब्दी में इंग्लैण्ड ने आद्यौगिक क्षेत्र में प्रगति कर अपने उत्पादन की क्षमता बढ़ाई। इसके फलस्वरूप आयात की अपेक्षा उसका निर्यात अधिक हो गया। उसकी सदैव यह नीति रहती थी कि उसे सस्ते दामों पर कच्चा माल उपलब्ध हो सके और उत्पादित माल के लिए उसे नये-नये बाजार प्राप्त हों। इस दृष्टि से अमेरिका के उपनिवेश उसके लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण थे। वह इन उपनिवेशों से कच्चा माल कम कीमत पर प्राप्त कर सकता था और उत्पादित माल अधिक कीमत पर बेच सकता था। समुद्र पर इंग्लैण्ड का प्रभुत्व होने के कारण अमेरिका के साथ व्यापार का संचालन सुचारु रूप से हो सकता था। सभी यूरोपियन राष्ट्रों के समान इंग्लैण्ड भी यह मानता था कि उपनिवेश मातृभूमि को सम्पन्न बनाने के लिए होते हैं। अत: इंग्लैण्ड ने भी अपने उपनिवेशों की आर्थिक व्यवस्था का नियन्त्रण इन्हीं सिद्धान्तों के आधार पर किया। उसने नौचालन अधिनियमों (Navigation Acts) व अन्य कानूनों द्वारा अमेरिका की आर्थिक व्यवस्था को नियन्त्रित करने का प्रयास आरम्भ से ही किया।

नौचालन अधिनियम व उनका बढ़ता हुआ विरोध:

1620 ईसवी में इंग्लैण्ड की सरकार ने आदेश दिया कि वर्जीनिया से तम्बाकू केवल इंग्लैण्ड को अंग्रेजी जहाजों में ही भेजा जाये। सम्राट व पार्लियामेंट के मध्य गृह युद्ध के समय इस आदेश का पूर्णतया पालन नहीं कराया जा सका। फलस्वरूप वर्जीनिया के व्यापारियों ने डच जहाजों में तम्बाकू अन्य देशों को भेजी। शीघ्र ही डचों व अंग्रेजों में अमेरिका के व्यापार के लिए प्रतिद्वन्द्विता बढ़ती गई। डच जहाजों में यूरोप के राष्ट्रों और अमेरिका के व्यापार को रोकने के लिए इंग्लैण्ड की संसद ने 1660 ईसवी में नौचालन अधिनियम बनाया। इसके अनुसार अमेरिका के अंग्रेजी उपनिवेशों से माल का आयात व निर्यात केवल इंग्लैण्ड अथवा उसके उपनिवेशों के जहाजों द्वारा ही हो सकता था। 1663 ईसवी के एक कानून के अनुसार जहाजों के अधिकारियों में तीन-चौथाई संख्या अंग्रेजों का होना आवश्यक था। तम्बाकू, शक्कर व कुछ अन्य वस्तुएँ अमेरिका से केवल इंग्लैण्ड को ही भेजी जा सकती थीं। इंग्लैण्ड इन वस्तुओं को सस्ते दामों में खरीद कर यूरोप में बेच कर लाभ उठा सकता था। 1663 ईसवी के स्टेपल एक्ट (Staple Act) के अनुसार अमेरिका के उपनिवेश कुछ वस्तुओं को छोड़ कर इंग्लैण्ड के अतिरिक्त किसी अन्य देश में माल नहीं खरीद सकते थे। अतएव यूरोप से खरीदा हुआ माल पहले इंग्लैण्ड जाने लगा और वहाँ से इंग्लैण्ड के जहाजों में भर कर वह अमेरिका पहुँचाया जाने लगा। इस प्रकार की व्यवस्था से अमेरिका के आयात पर इंग्लैण्ड का पूर्ण नियन्त्रण स्थापित होने के साथ-साथ इंग्लैण्ड के व्यापारियों को कमीशन से भी लाभ होने लगा।

नौचालन अधिनियमों से अमेरिका के व्यापार को धक्का पहुँचा। अतएव मैसाचुसेट्स और न्यू इंग्लैण्ड के उपनिवेशों में उनकी व्यापक अवहेलना की गई। बोस्टन के बन्दरगाह से तम्बाकू

और शक्कर का निर्यात यूरोप के देशों को चोरी-छुपे होने लगा। फलस्वरूप 1684 ईसवी में इंग्लैण्ड की सरकार ने मैसाचुसेट्स कम्पनी को दिए गए आज्ञा पत्र को रद्द करके उसे सम्राट द्वारा शासित उपनिवेश घोषित किया। अंग्रेज गवर्नरों को यह आदेश दिये गये कि वे सख्ती के साथ इन अधिनियमों का पालन करायें। उनको इस सम्बन्ध में असीमित अधिकार भी दिये गये। जहाँ एक ओर अंग्रेज प्रशासकों द्वारा लिये गये कठोर कदम भी अमेरिकनों के तस्कर व्यापार को कम करने में सफल नहीं हुए वहाँ दूसरी ओर अंग्रेज अधिकारियों के व्यवहार के प्रति जनता में रोष बढ़ने लगा।

नौचालन अधिनियमों का सख्ती के साथ पालन कराने के लिए 1696 ईसवी में उपनिवेशों के गवर्नरों को शपथ दिलाई गई। सरकारी अधिकारियों को जहाजों और गोदामों की तलाशी लेने और गैर कानूनी माल को जब्त करने के अधिकार दिये गये। इसी वर्ष अमेरिकन व्यापार को नियन्त्रित करने के लिए इंग्लैण्ड में बोर्ड ऑफ ट्रेड एण्ड प्लान्टेशन्स (Board of Trade and Plantations) बनाया गया। इस संस्था ने उपनिवेशों में प्रचलित ऐसे नियमों को रद्द कर दिया जो कि नौचालन अधिनियमों का उल्लंघन करते थे। 1697 ईसवी में ब्रिटिश सरकार ने तस्कर व्यापार करने वाले व्यापारियों पर मुकदमे चलाने के लिए विशेष न्यायालय स्थापित किये। शनैः-शनैः ऐसी वस्तुओं की सूची में वृद्धि की गई जिन्हें कि उपनिवेश के निवासी केवल इंग्लैण्ड को ही भेज सकते थे। 1699 ईसवी के वुलन एक्ट (Woolen Act) द्वारा अमेरिका से ऊन व ऊन के वस्त्रों के निर्यात पर प्रतिबन्ध लगाया गया। इसी प्रकार का प्रतिबन्ध 1732 ईसवी में टोप के निर्यात पर भी लगाया गया।

अमेरिकन व्यापार पर प्रतिबन्ध लगाने का सबसे अधिक विरोध 1733 ईसवी में पारित किये गये शीरे का अधिनियम (Molasses Act) का हुआ। अमेरिका के व्यापारी फ्रांस व स्पेन के अधीन वेस्ट इण्डीज के प्रदेशों से शक्कर व शराब बनाने के लिए गुड़ मँगाते थे। वेस्ट इण्डीज के गन्ना बागानों के स्वामियों के हितों को दृष्टि में रखते हुए फ्रांस व स्पेन द्वारा शासित प्रदेशों से आयात किये जाने वाले शक्कर व गुड़ पर इतना अधिक कर लगाया गया कि अमेरिकनों के लिए शक्कर व गुड़ का खरीदना लाभदायक नहीं रहा। कई उपनिवेशों, विशेषकर न्यू इंग्लैण्ड, के व्यापारियों को इससे पर्याप्त नुकसान हुआ। उन्होंने इस बात पर भी असन्तोष प्रकट किया कि ब्रिटेन की सरकार ने वेस्ट इण्डीज में रहने वाले अंग्रेजों के हितों को अमेरिका में रहने वाले अंग्रेजों के हितों से अधिक महत्त्व देकर उनके साथ सौतेला व्यवहार किया है। शीरे के अधिनियम की व्यापक रूप से अवहेलना की गई।

यद्यपि नौचालन अधिनियमों एवं अमेरिकन व्यापार को नियन्त्रित करने के लिए बनाये गये कानूनों से अधिक हानि उत्तर के उपनिवेशों को हुई परन्तु दक्षिण के उपनिवेशों के निवासी भी उत्तर के उपनिवेशों के समान ही इंग्लैण्ड की नीति से असन्तुष्ट थे। इंग्लैण्ड के व्यापारी उनसे सस्ती कीमतों पर तम्बाकू, चावल, नील, जहाज-निर्माण का सामान और अन्य वस्तुएँ खरीदते थे और मँहगी दरों पर अपना माल बेचते थे। इससे उनको लाभ कम होता था। दक्षिण के व्यापारी इंग्लैण्ड के साहूकारों से लिये गये ऋण के भार से दबने लगे। क्रान्ति के समय केवल वर्जीनिया

के व्यापारियों पर ही बीस लाख पौण्ड के लगभग ऋण था। ग्रेट ब्रिटेन से अमेरिकन उपनिवेशों को जाने वाले माल पर निर्यात कर में 2.5 प्रतिशत की वृद्धि करने से सभी उपनिवेश के व्यापारियों को हानि हुई।

अमेरिकी जनता के निरन्तर विरोध और व्यापारियों द्वारा बड़े पैमाने पर तस्करी का आश्रय लेने का सामान्य प्रभाव भी इंग्लैण्ड की सरकार पर नहीं पड़ा। 1750 ईसवी में बनाये गये लोहा कानून (Iron Act) के अनुसार लोहे से बनने वाले सभी वस्तुओं के व्यवसाय को नियन्त्रित करने का प्रयत्न किया गया। अमेरिकन उपनिवेशों की जनता को इंग्लैण्ड से कच्चा लोहा आयात करने की स्वतन्त्रता थी लेकिन वे लोहे के ऐसे औजार व सामान का निर्माण नहीं कर सकते थे जिनसे इंग्लैण्ड के लोहा व्यवसाय को आघात पहुँचता हो। अमेरिका के जहाज-निर्माण उद्योग भी सीमित करने के लिए अमेरिका में बड़े-बड़े पेड़ों को काटने पर भी प्रतिबन्ध लगाया गया।

अमेरिकन उपनिवेशों में बढ़ते हुए तस्कर व्यापार को रोकने के लिए भारी संख्या में अधिकारी इंग्लैण्ड से भेजे गये। इन अधिकारियों के वेतन व भत्ते आदि का व्यय भी उपनिवेशों की सरकारों को भुगतान पड़ा। अमेरिकनों का कहना था कि नौचालन अधिनियम व अन्य कानून को इंग्लैण्ड की सरकार ने अपने हित के लिये बनाया है, अतएव इन अधिकारियों पर होने वाले व्यय का भार भी उन्हें सहन करना चाहिए। अमेरिकी जनता अपने प्रदेशों में उद्योग व कृषि के विकास की स्वतन्त्रता चाहती थी। इंग्लैण्ड के राजनीतिज्ञों ने अपनी नीति को उचित व न्यायपूर्ण बताते हुए अनेक तर्क प्रस्तुत किये। उनका कहना था कि उपनिवेशों के विकास में मातृभूमि की पर्याप्त पूँजी व्यय हुई है तथा इससे उनको प्रत्यक्ष लाभ नहीं हुआ है अतएव मातृभूमि को यह अधिकार है कि वह अपने उपनिवेशों से आर्थिक लाभ प्राप्त करे। अमेरिकन उपनिवेशों की रक्षा के लिये इंग्लैण्ड की सरकार द्वारा किये गये व्यय की पूर्ति अमेरिका के उपनिवेशों से करना वे उचित मानते थे, क्योंकि उपनिवेश इस कार्य के लिए धन नहीं देते थे। उनका यह भी मत था कि स्पेन और फ्रांस ने अपने उपनिवेशों में उनकी अपेक्षा कहीं अधिक कठोर प्रतिबंध लगाये हैं। वास्तव में इंग्लैण्ड की नीति फ्रांस व स्पेन के समान कठोर नहीं थी। इंग्लैण्ड की सरकार ने कई ऐसे नियम बनाये थे जिनसे अमेरिकन व्यापार को लाभ होता था। अमेरिका में तम्बाकू के उत्पादन को बढ़ाने के लिए इंग्लैण्ड व आयरलैण्ड में इसकी खेती बन्द की गई थी। नील व कुछ अन्य वस्तुओं के निर्यात को प्रोत्साहन देने के लिए अमेरिकनों को आर्थिक सहायता दी जाती थी। नौ-चालन अधिनियमों के अनुसार व्यापार केवल इंग्लैण्ड या अमेरिकन उपनिवेशों के जहाजों से ही हो सकता था। इसके फलस्वरूप अमेरिका के जहाज-निर्माण व्यवसाय ने असाधारण उन्नति की। अमेरिकनों ने इन अधिनियमों की इतनी व्यापक रूप से अवहेलना की थी कि उन्हें अधिक नुकसान नहीं हुआ। इसके विपरीत इंग्लैण्ड का बहुत अधिक धन इन अधिनियमों की पालना कराने में व्यय हुआ। अतएव निष्पक्ष रूप से जाँच करने पर यह ज्ञात होता है कि इन अधिनियमों से अमेरिकन व्यवसाय और व्यापार को अधिक क्षति नहीं पहुँची। लेकिन इसमें भी कोई सन्देह नहीं कि इंग्लैण्ड की आर्थिक नीति के कारण मातृभूमि व उपनिवेशों के निवासियों में कटुता उत्पन्न हो गई जो समय के साथ बढ़ती गई। उपनिवेशों के निवासी इन कानूनों को अपने मूल अधिकारों पर आघात मानने लगे। उनका यह दृढ़ विचार था कि उपनिवेशों के निवासियों के हितों

का बलिदान इंग्लैण्ड के धनी व प्रभावशाली वर्ग की समृद्धि के लिए किया जा रहा है। 1763 ईसवी के बाद के कुछ वर्षों में जब इंग्लैण्ड के प्रधानमन्त्री लार्ड ग्रेनविल (Lord Granville) ने उपनिवेशों के व्यापार पर नियन्त्रण स्थापित करने के लिए कई और अधिनियम बनाये तो उपनिवेश में इनका तीव्र विरोध किया गया।

(VIII) शासन व्यवस्था :

अमेरिका में अंग्रेज उपनिवेशों की स्थापना की परिस्थितियों का अध्ययन करने से यह ज्ञात होता है कि वहाँ पर इंग्लैण्ड की सरकार के अधीन निम्न प्रकार की सत्ताएँ स्थापित की गईं -

(अ) स्वशासित – रोडे द्वीप और कनेक्टिकट

(ब) स्वाम्याधिकार शासित – मेरीलैण्ड, पेनसिलवेनिया और डेलावेयर,

(स) सम्राट द्वारा शासित - वर्जीनिया, मैसाचुसेट्स, उत्तर कैरोलिना, दक्षिण कैरोलिना, न्यू यार्क, न्यू जर्सी, जार्जिया और न्यू हैम्पशायर।

अमेरिकन क्रान्ति के समय तक इन सभी उपनिवेशों की शासन पद्धति लगभग समान हो गई थी, क्योंकि एक उपनिवेश में प्रचलित पद्धति का अनुकरण दूसरे उपनिवेशों में किया गया था। प्रत्येक उपनिवेश में गवर्नर, परिषद् और प्रतिनिधि सदन द्वारा शासन चलाया जाता था।

स्वशासित उपनिवेशों को छोड़ कर शेष उपनिवेशों में सम्राट या प्रोप्राइटर गवर्नर की नियुक्ति करते थे। रोडे द्वीप और कनेक्टिकट में गवर्नर का चुनाव जनता करती थी। इनमें परिषद् के सदस्यों का चुनाव भी जनता करती थी। सम्राट या प्रोप्राइटर द्वारा नियुक्त गवर्नर को इंग्लैण्ड के सम्राट का प्रतिनिधि होने के नाते असिमित अधिकार प्राप्त थे। वह अपने उपनिवेशों की न्यायपालिका, व्यवस्थापिका और कार्यपालिका का अध्यक्ष होता था। उसे किसी भी कानून बनाने की सिफरिश करने और दोनों सदनों द्वारा पारित किये किसी भी बिल को अन्तिम स्वीकृति देने का अधिकार प्राप्त था। दोनों प्रकार के इन उपनिवेशों में गवर्नर को परिषद् के सदस्यों को मनोनीत करने का अधिकार प्राप्त था। प्रतिनिधि-सभा को बुलाने, स्थगित करने और भंग करने का अधिकार भी उसे था। महत्त्वपूर्ण पदों पर नियुक्तियाँ गवर्नर करता था और वह किसी सरकारी अधिकारी को पद से भी हटा सकता था। वह नये निर्वाचक जिले बना सकता था।

(1) प्रतिनिधि सदनों के अधिकारों में वृद्धि - 1688 ईसवी की इंग्लैण्ड की रक्तहीन क्रान्ति का प्रभाव अमेरिकी जनता पर भी पड़ा। इसके फलस्वरूप इंग्लैण्ड की संसद को प्राप्त होने वाले अधिकारों के समान अधिकारों की माँग के लिए उपनिवेशों के निर्वाचित प्रतिनिधि सदन संघर्ष करने लगे। इस समय तक प्रतिनिधि सदनों को केवल विचार करने की स्वतन्त्रता, स्वयं की प्रक्रिया का नियन्त्रण और विवादपूर्ण निर्वाचनों का निर्णय करने के अधिकार थे। लेकिन अब उन्होंने गवर्नर की शक्तियों को चुनौती देना आरम्भ किया। इसके फलस्वरूप गवर्नर और प्रतिनिधि-सदनों में झड़पें होने लगीं। इंग्लैण्ड के समान अमेरिकन जनता के प्रतिनिधियों ने भी गवर्नर के वित्तीय अधिकारों को सीमित कर अपनी शक्ति में वृद्धि की। प्रतिनिधि सदन द्वारा अनुमोदन करने पर ही एक गवर्नर को वेतन मिल सकता था। अगर कोई गवर्नर मनमानी करने की चेष्टा करता था तो प्रतिनिधि सदन या तो उसके वेतन में कमी कर देता अथवा उसका वेतन

अस्वीकृत कर देता था। सार्वजनिक व्यय भी प्रतिनिधि सदन की इच्छा के अनुसार किया जाने लगा। प्रत्येक वर्ष के आय व व्यय के लिए प्रतिनिधि सदन की स्वीकृति आवश्यक कर दी गई। सदन की सम्मति के बिना गवर्नर कोई भी कर नहीं लगा सकता था। कागज की मुद्रा का प्रचलन भी इस सदन की स्वीकृति के बिना नहीं हो सकता था। इस प्रकार वित्तीय मामलों में निर्वाचित सदनों ने नियन्त्रण स्थापित कर गवर्नर को सदन की इच्छा के अनुसार कार्य करने के लिए बाध्य किया।

पार्केस ने प्रतिनिधि सदनों के अधिकारों में वृद्धि को अमेरिका की शासन प्रणाली के विकास में महत्त्वपूर्ण मानते हुए यह प्रकट किया है कि औपनिवेशिक काल के अन्त तक अमेरिका में वास्तविक प्रजातन्त्र स्थापित नहीं हुआ था। उसके मत में प्रतिनिधि सदनों में सत्ता गवर्नर के हाथ से निकल कर प्रभावशाली वर्ग के हाथ में पहुँच गई थी। इसका विरोध कृषकों और श्रमिकों ने किया। इस प्रकार औपनिवेशिक काल में सत्ता के लिए तीन वर्गों में संघर्ष हुआ। ब्रिटिश साम्राज्य के प्रतिनिधियों के साथ समाज का प्रभावशाली वर्ग संघर्ष कर रहा था। ज्यों-ज्यों उनको सफलता मिलती जाती थी, त्यों-त्यों साधारण जनता अपने अधिकारों के लिए उनसे संघर्ष करती थी। बोस्टन, न्यूयार्क और फिलाडेल्फिया जैसे नगरों में काम करने वाले श्रमिकों ने अपने पृथक् समूह बना कर अधिकारों की माँग की। कृषकों ने भी संगठन अधिकारों के लिए संघर्ष किया। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् भी इस प्रकार के संघर्ष चलते रहे।

अमेरिका में जनता द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधि सदनों की तुलना इंग्लैण्ड की लोक सभा से की जा सकती है। सभी उपनिवेशों में मतदाता का वयस्क होना आवश्यक था। लगभग सभी उपनिवेशों में मताधिकार सम्पत्ति की मात्रा द्वारा सीमित था। दक्षिण के उपनिवेशों में मताधिकार भूमि के स्वामी को दिया जाता था। उत्तर के व्यापारिक क्षेत्रों में मतदाता के पास जायदाद का होना आवश्यक था। उदाहरण के लिए पेनसिलवेनिया में पचास एकड़ भूमि का स्वामी अथवा पचास पौण्ड की कीमत की जायदाद का स्वामी ही मत देने का अधिकारी था। कई उपनिवेशों में मतदाता को ईसा मसीह पर श्रद्धा व्यक्त करने के बाद ही मत देने का अधिकार मिलता था। यद्यपि उस समय अमेरिका में भूमि और जायदाद का स्वामित्व प्राप्त करने में अधिक कठिनाइयों का सामना नहीं करना पड़ता था, परन्तु फिर भी अनेक कृषक और कारीगर इस अधिकार का प्रयोग करने से वंचित रह जाते थे। कई उपनिवेशों में निर्वाचन क्षेत्रों का वितरण भी असमान रूप से किया गया था। इसके फलस्वरूप प्रतिनिधि सदनों में एक विशेष वर्ग का प्रभाव बढ़ जाता था।

(2) स्थानीय संस्थाओं का विकास - औपनिवेशिक काल में नगरों व बड़े ग्रामों में स्थानीय शासन का विकास हो रहा था। नगरों की स्थानीय संस्थाओं के प्रतिनिधियों का चुनाव होता था। दक्षिण के उपनिवेशों में, जहाँ बड़े-बड़े बागान थे, स्थानीय संस्थाओं को एक बड़े क्षेत्र में अधिकार प्राप्त थे। स्थानीय संस्थाओं के सदस्य अपनी सभाओं में अपने क्षेत्र की सभी प्रकार की समस्याओं पर विचार करते थे। कहीं-कहीं पर वे प्रतिनिधि सदन के चुनाव में खड़ा होने वाले प्रतिनिधि का निर्णय भी करते थे।

(3) न्याय व्यवस्था - गवर्नर द्वारा नियुक्त न्यायाधीश साधारण मुकदमों की सुनवाई करता था। उसके फैसले की अपील काऊण्टी (County) के न्यायाधीश सुनते थे। उसके ऊपर गवर्नर और उसकी परिषद् थी। कई उपनिवेशों में काऊण्टी न्यायालयों की अपील सुनने के लिए गवर्नर पर एक परिषद् नियुक्त कर देता था। वह स्वयं इन परिषदों के निर्णयों के विरुद्ध अपील सुनता था। कुछ मामलों में गवर्नर और उसकी परिषद् द्वारा किये गये फैसलों की अपील इंग्लैण्ड के प्रिवी कौंसिल (Privy Council) में की जा सकती थी, क्योंकि प्रिवी कौंसिल में अपील करने में बहुत अधिक धन व समय व्यय होता था। इसलिए बहुत कम मामलों में अपील की जाती थी।

उपनिवेशों के गवर्नरों द्वारा विशेष मामलों की सुनवाई के लिए विशेष न्यायालयों की नियुक्ति के अधिकार को एण्ड्रयू हैमिल्टन (Andrew Hamilton) नामक एक प्रसिद्ध वकील ने जेंगर (Zenger) के मामले में सफलतापूर्वक चुनौती दी। 1734 ईसवी में न्यू यार्क वीकली जनरल (New York Weekly Journal) में प्रकाशित कुछ लेखों में जेंगर ने गवर्नर और प्रतिनिधि-सदन के मध्य वेतन-विवाद पर विचार करने के लिए गवर्नर द्वारा एक विशेष न्यायालय की नियुक्ति को असंगत व गैर-कानूनी बताया था। हैमिल्टन ने न्यायालय में यह सिद्ध कर दिया कि इन लेखों में गवर्नर पर लगाये गये आरोप सही है। उसके मत में जेंगर ने कोई अपराध नहीं किया है, क्योंकि प्रत्येक सम्पादक को यह अधिकार था कि वह सार्वजनिक मामलों में एक सत्य घटना को प्रकाशित करे। न्यायाधीशों ने जेंगर को निर्दोष घोषित किया। उनके इस निर्णय का अमेरिका के समाचार पत्रों की स्वतन्त्रता के इतिहास में अत्यन्त महत्त्व है, क्योंकि इससे उनको किसी भी सार्वजनिक मामले में निर्भीक व निष्पक्ष होकर सत्य घटना प्रकाशित करने का अधिकार न्यायालय द्वारा मिल गया।

बाल्डविन (Baldwin) के अनुसार अमेरिका में न्यायालयों के संगठन सम्बन्धी विवादों ने भी प्रतिनिधि-सदन और प्रशासन के मध्य कटुता उत्पन्न की। उपनिवेशों की सभाओं ने न्यायाधीशों के अधिकारों की रक्षा के लिए कार्यपालिका के हस्तेक्षप का विरोध किया। गवर्नर के न्याय सम्बन्धी अधिकारों को सीमित करने के सफल प्रयास किये गये। न्यायालयों में इंग्लैण्ड की सरकार व उसके प्रतिनिधियों को कानून बनाने के अधिकारों को सफलतापूर्वक चुनौती देने में जेम्स ओटिस (James Otis) और पैट्रिक हेनरी (Patrick Henry) ने विशेष ख्याति प्राप्त की। इंग्लैण्ड की संसद ने फ्रेन्च-इण्डियन युद्ध (French-Indian War) के समय व्यापार को नियन्त्रित रखने के लिए सरकारी अधिकारियों को बिना किसी वारण्ट के किसी भी मकान में तलाशी लेने के अधिकार एक कानून द्वारा दिये थे। ओटिस ने इस कानून को ब्रिटिश जनता के मूल अधिकारों के प्रतिकूल बताया। 1760 ईसवी में पेट्रिक हेनरी ने वर्जीनिया के पादरियों के वेतन के मामले को लेकर सम्राट के इस अधिकार को चुनौती दी कि वह उपनिवेशों में बनाये गये कानूनों में परिवर्तन कर सकता है। उसने गवर्नर के विशेष अधिकारों का विरोध करते हुए यह माँग की कि प्रतिनिधि-सदन द्वारा पारित किये गये क़ानून सम्बन्धी निश्चयों को वह कानून बनने से नहीं रोक सकता है। प्रिवी कौंसिल के न्यायाधीशों द्वारा सिद्धान्त रूप में पैट्रिक के तर्कों को मानने से गवर्नर की न्याय सम्बन्धी शक्तियाँ लगभग समाप्त हो गई।

(IX) इंग्लैण्ड की सरकार तथा अमेरिकनों में सुरक्षा सम्बन्धी समस्याओं पर मतभेदः

इंग्लैण्ड की सरकार और उपनिवेशों की जनता में सुरक्षा सम्बन्धी समस्याओं को लेकर भी तीव्र मतभेद उत्पन्न हुए। औपनिवेशिक काल के आरम्भ में लगभग सभी उपनिवेशों में अमेरिका के मूल निवासियों के आक्रमण होते रहते थे। मिसीसिप्पी के तट पर स्थित स्पेनिश उपनिवेशों से भी खतरा बना रहता था। सबसे अधिक खतरा फ्रांस के उपनिवेशों से था। उस समय फ्रांस व इंग्लैण्ड के बीच विश्व के कई भागों में औपनिवेशिक प्रतिद्वन्द्विता चल रही थी। अमेरिका में फ्रांसीसी और अंग्रेज उपनिवेशों का संघर्ष इस विश्वव्यापी प्रतिद्वन्द्विता का एक अंग था। जब कभी भी इंग्लैण्ड व फ्रांस में यूरोप में युद्ध आरम्भ होता था, अमेरिका में भी इन दोनों देशों के निवासियों में संघर्ष आरम्भ हो जाता था। अमेरिका में दोनों देशों के उपनिवेशों की सीमाएँ निश्चित न होने के कारण भी झड़पें होती थीं। फर के व्यापार में भी दोनों में तीव्र प्रतिस्पर्धा थी। वेस्ट इण्डीज के शक्कर और गुड़ के व्यापार के कारण भी उनमें आपस में ईर्ष्या थी। न्यू फाउण्डलैण्ड के तट पर मछली पकड़ने के अधिकारों के लिए दोनों देशों में मतभेद था। दोनों देश अमेरिका में पश्चिम की ओर विस्तार करना चाहते थे।

फ्रांस व इंग्लैण्ड के बीच अमेरिका में संघर्ष :

अमेरिकन क्रान्ति के पहले फ्रांस और इंग्लैण्ड के मध्य चार युद्ध हुए। यहाँ पर इन चार युद्धों के यूरोपियन नामों के साथ अमेरिकन नाम दिये जा रहे हैं –

क्रमांक	वर्ष	यूरोप में युद्ध का नाम	अमेरिका में युद्ध का नाम
1.	1669–1671	इंग्लैण्ड में उत्तराधिकार का युद्ध	सम्राट विलियम्स का युद्ध
2.	1701–1713	स्पेनिश उत्तराधिकार का युद्ध	साम्राज्ञी ऐन का युद्ध
3.	1740–1748	आस्ट्रियन उत्तराधिकार का युद्ध	सम्राट जार्ज का युद्ध
4.	1756–1763	सप्तवर्षीय युद्ध	महान् फ्रेंच व इंडियन युद्ध

लगभग एक शताब्दी में समय-समय पर हुए इन युद्धों में फ्रांसीसियों की अपेक्षा अंग्रेजों की स्थिति अमेरिका में अधिक मजबूत थी। यद्यपि फ्रांस अपने उपनिवेशों में केन्द्रीय सत्ता संगठित होने के कारण अंग्रेजों की अपेक्षा युद्ध का संचालन अधिक दृढ़ता व एकता के साथ कर सकता था, किन्तु अमेरिका में फ्रांसीसियों की जनसंख्या व साधन अंग्रेजों के मुकाबले में बहुत कम होने के कारण उन्हें सफलता नहीं मिलती थी। 1760 ईसवी में तेरह अंग्रेज उपनिवेशों की जनसंख्या लगभग सोलह लाख थी जब कि फ्रांस के उपनिवेशों की जनसंख्या केवल अस्सी हजार थी। अंग्रेजों ने अपने उपनिवेशों में कृषि व व्यापार में फ्रांसीसियों की अपेक्षा अधिक उन्नति की थी। अंग्रेजों के उपनिवेशों के पास सैनिक व शस्त्र भी अधिक थे। फ्रांसीसियों ने अपनी सीमाओं पर रहने वाले इण्डियन कबीलो के अतिरिक्त सबसे मित्रता के सम्बन्ध स्थापित कर लिये थे। उनके पास सेंट लारेंस नदी के तट पर स्थित क्यूबेक (Qubec) का सुदृढ़ दुर्ग भी था। लेकिन समुद्र पर प्रभुत्व होने के कारण अंग्रेज फ्रांस को अपने उपनिवेशों को सहायता पहुँचाने से रोक सकते थे। ऐसी परिस्थितियों में अन्त में अमेरिका में अंग्रेजों की विजय हुई।

अमेरिका में दोनों देशों में होने वाले पहले युद्ध में दोनों पक्षों की स्थिति बराबर रही। दूसरे युद्ध में इंग्लैण्ड की नोवा स्कोशिया (Nova Scotia) और न्यू फाउण्डलैण्ड के फ्रांसीसी प्रदेश मिले। तीसरा युद्ध निर्णायक सिद्ध नहीं हुआ। लेकिन अन्तिम युद्ध में अंग्रेजों की पूर्ण विजय हुई। यह युद्ध यूरोप में सप्तवर्षीय युद्ध के आरम्भ होने के दो वर्ष पूर्व ही अमेरिका में आरम्भ हो गया था। इसका आकस्मिक कारण ओहियो (Ohio) पर अधिकार का झगड़ा था। फ्रांसीसियों ने 1749 ईसवी में ओहियो के प्रदेश पर अधिकार करने की घोषणा की। इंग्लैण्ड ने इस अधिकार का विरोध किया, क्योंकि कुछ समय पहले ब्रिटेन की सरकार ने वर्जीनिया के प्रमुख पूँजीपतियों को इस प्रदेश में उपनिवेश स्थापित करने के अधिकार प्रदान किये थे। फ्रांस के गवर्नर ने ओहियो पर फ्रांसीसी प्रभुत्व स्थापित करने के लिए सैनिक तैयारियाँ कीं। इस पर इंग्लैण्ड की सरकार ने उपनिवेशों के गवर्नरों को आदेश दिये कि अगर फ्रांसीसी सैनिक उनकी सीमा का उल्लंघन करें तो वह उन्हें खदेड़ दिया जाय। 1753 ईसवी में वर्जीनिया के गवर्नर ने मेजर जार्ज वाशिंगटन (George Washington) के नेतृत्व में एक मिशन फ्रांस के गवर्नर को चेतावनी देने के लिए भेजा। जार्ज वाशिंगटन ने फ्रांस के गवर्नर को स्पष्ट बता दिया कि अगर झगड़े वाले प्रदेशों पर फ्रांस ने अधिकार करने की चेष्टा की तो उसके गम्भीर परिणाम होंगे। लेकिन इस चेतावनी का फ्रांसीसियों पर कोई असर नहीं पड़ा। फ्रांसीसी सैनिक दस्ते आगे बढ़ते रहे। 1754 ईसवी में वाशिंगटन के फौजी दस्ते और फ्रांसीसी सैनिक टुकड़ी के मध्य एक झड़प में वांशिगटन को पीछे हटना पड़ा। शनै:-शनै: फ्रांस ने अन्य स्थानों पर भी अपनी स्थिति मजबूत कर ली। फ्रांस की ओर से बढ़ते हुए खतरों का मुकाबला करने के लिए ब्रिटेन की सरकार द्वारा आयोजित सात उपनिवेशों के प्रतिनिधियों का एक सम्मेलन न्यू यार्क के एलबेनी (Albany) नगर में हुआ। इस सम्मेलन में प्रतिनिधियों ने विचार-विमर्श कर बेन्जामिन फ्रेंकलिन (Benjamin Franklin) द्वारा प्रस्तावित उपनिवेशों के एक संघ की योजना को स्वीकार किया गया लेकिन इन उपनिवेशों के प्रतिनिधि-सदनों ने प्रस्तावित संघ में सम्मिलित होने से इन्कार कर दिया। उनको भय था कि संघ की केन्द्रीय सत्ता उनसे कई अधिकार छीन लेगी। वे सुरक्षा के लिए अधिक व्यय करने को भी तैयार नहीं थे। इंग्लैण्ड की सरकार ने भी इस योजना को स्वीकार नहीं किया, क्योंकि फ्रेंकलिन के प्रस्तावों के अनुसार प्रतिनिधी सदनों के अधिकार बढ़ जाते थे।

फ्रांसीसियों के विरुद्ध युद्ध में अगले दो वर्षों में भी अंग्रेजों को सफलता नहीं मिली, क्योंकि उपनिवेशों की सरकारों के पारस्परिक मतभेदों के कारण युद्ध का संचालन सुचारु रूप से नहीं हो रहा था। उनके पास कुशल नेतृत्व का भी अभाव था। इंग्लैण्ड से भी उन्हें पर्याप्त सहायता नहीं मिल रही थी। 1755 ईसवी में जार्ज वाशिंगटन और जनरल ब्रेडोक (Breddock) की सम्मिलित सेना को फ्रांसीसियों ने ड्यूकेस्ने (Duquesne) में परास्त किया। कई अन्य झड़पों में भी अंग्रेजों की हार हुई। 1757 ईसवी से अंग्रेजों की स्थिति सुधरने लगी। इस वर्ष इंग्लैण्ड का प्रधानमन्त्री बनते ही बड़े पिट (Elder Pitt) ने उपनिवेशों को पर्याप्त सैनिक सहायता भेजी। उसने विभिन्न उपनिवेशों से भी बीस हजार सैनिक भेजने की अपील की। युद्ध में वीरता प्रदर्शन करने वाले उपनिवेश की सेना के अफसरों और सैनिकों को इनाम व पदोन्नति देने का वचन दिया गया। उसने इंग्लैण्ड की संसद से युद्ध का व्यय स्वीकार कराने के लिए प्रयत्न करने का वचन भी दिया।

पिट की घोषणा के बाद उपनिवेशों के प्रतिनिधि-सदनों और जनता ने युद्ध में अपना पूर्ण सहयोग देना आरम्भ किया। 1758 ईसवी में अंग्रेजों ने कई दुर्ग जीत लिये। 1759 ईसवी में अंग्रेज सेनापति वुल्फ (Wolfe) ने फ्रांसीसी जनरल मोंटकॉम (Mountcalm) को परास्त कर क्यूबेक पर अधिकार कर लिया। 1760 ईसवी तक न्यू फ्रांस के उत्तरी प्रदेशों पर अंग्रेजों का अधिकार हो गया। वेस्ट इण्डीज में भी फ्रांस की पराजय हुई। इस वर्ष स्पेन ने युद्ध में फ्रांस का साथ दिया। अंग्रेजों ने स्पेनिशों को हरा कर क्यूबा और फिलीपाइन्स जीत लिये। 1763 ईसवी में पेरिस की सन्धि से यूरोप व अमेरिका में युद्ध का अन्त हुआ।

पेरिस की सन्धि के अनुसार इंग्लैण्ड को अमेरिका में न्यू ओरलिंस (New Orleans) को छोड़ कर मिसीसिप्पी के समस्त फ्रांसीसी प्रदेश और कनाडा प्राप्त हुए। इसने उत्तरी अमेरिका की मुख्य भूमि से फ्रांस की सम्प्रभुता का समाप्त कर दिया। इंग्लैण्ड ने युद्ध में जीते हुए न्यू फाउण्डलैण्ड के दो द्वीप फ्रांस को और क्यूबा व फिलीपाइन्स स्पेन को लौटा दिये। स्पेन से इंग्लैण्ड को फ्लोरिडा प्राप्त हुआ। फ्रांस के पास अब अमेरिका में केवल न्यू फाउण्डलैण्ड के दो द्वीप और न्यू ओरलिंस रह गये।

(X) सप्तवर्षीय युद्ध में इंग्लैण्ड की विजय का उपनिवेशों पर प्रभाव :

अमेरिका में फ्रांस की पराजय के गम्भार परिणाम हुए। यद्यपि इस युद्ध में अंग्रेजों की विजय का प्रमुख कारण इंग्लैण्ड से भेजी गई पर्याप्त सैनिक सहायता और समुद्री शक्ति थी लेकिन इसमें भी कोई सन्देह नहीं था कि उपनिवेशों के सहयोग के बिना इतनी जल्दी सफलता नहीं मिल सकती थी। उपनिवेशों की जनता और सेना में इस सफलता ने आत्मविश्वास की भावना का विकास किया। वे समझ गये कि वे संगठित होकर किसी भी खतरे का मुकाबला कर सकते हैं। फ्रांस व स्पेन के उपनिवेशों के आक्रमणों से सुरक्षित अनुभव करने के कारण वे अब पहले की भाँति मातृभूमि पर आश्रित नहीं रहे। उन्होंने अब आन्तरिक समस्याओं पर पहले की अपेक्षा अधिक ध्यान दिया। इंग्लैण्ड की सरकार व उनके प्रतिनिधियों के साथ अधिकारों का संघर्ष अब पहले की अपेक्षा और तीव्र हो गया। अतएव जब ब्रिटेन के राजनीतिज्ञों ने अमेरिका में बाहरी आक्रमण के भय से मुक्त होकर उपनिवेशों में अपना नियन्त्रण और दृढ़ करने की चेष्टा की तो अमेरिकी जनता ने इन प्रयत्नों का विरोध किया। अमेरिकी जनता ने इंग्लैण्ड के सम्राट जार्ज तृतीय और उसके मन्त्रियों द्वारा इस युद्ध का व्यय अमेरिकन उपनिवेशों से वसूल करने के प्रयत्नों का भी सक्रिय विरोध किया। ऐसी परिस्थितियों में सप्त वर्षीय युद्ध में अमेरिका में फ्रांस की पराजय के पश्चात् अमेरिकी जनता और इंग्लैण्ड की सरकार में मतभेद व कटुता बड़ी तेजी के साथ बढ़ने लगी।

□□□

अध्याय - 3
अमेरिका की क्रान्ति

□ प्रेम नारायण माथुर

अमेरिका की क्रान्ति का आधुनिक विश्व-इतिहास में विशेष महत्त्व है। इस क्रान्ति के परिणामस्वरूप एक नये राष्ट्र का तथा नये सिद्धान्तों का जन्म हुआ। अमेरिका की क्रान्ति मानवीय दृष्टि से और आर्थिक महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि आधुनिक युग में इस क्रान्ति के माध्यम से एक बहुत बड़े मानव समाज ने अपनी स्वाभाविक महत्त्वाकांक्षाओं को तथा मनुष्य के लिए सबसे प्रिय वस्तु स्वतन्त्रता को प्राप्त किया। इसके अतिरिक्त यह भी कहा जा सकता है कि अमेरिका की क्रान्ति ने प्रथम बार सोलहवीं तथा सत्रहवीं शती के यूरोपियन उपनिवेशवाद तथा वाणिज्यवाद को चुनौती दी एवम् उन्हें परास्त किया। अमेरिकी क्रान्ति के सम्बन्ध में यह भी विचारणीय है कि इस क्रान्ति के फलस्वरूप विश्व में प्रथम बार मिश्रित जातियों को, जो एक राज्य-क्षेत्र में रह रही थीं, राष्ट्रीय सूत्र में बाँधा गया तथा स्वशासन का इस प्रकार का अनुभव प्रदान किया गया जिसका दूसरा उदाहरण दुर्लभ है। अमेरिकी क्रान्ति इसलिए भी उल्लेखनीय है कि जिस सर्वांगीण विकास के लक्ष्यों को लेकर तेरह अमेरिकी उपनिवेशों ने विद्रोह किया था, उन्होंने क्रान्ति के पश्चात् उस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए आश्चर्यजनक प्रगति की। अगर अमेरिकी क्रान्ति और उसके आदर्शों को ही अमेरिका की प्रगति का मूल कारण माना जाय तो यह अतिशयोक्ति नहीं होगी।

कारण :

अमेरिका क्रान्ति के कारण तथा स्वरूप को भली-भाँति समझने के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि अमेरिकी उपनिवेशों में निवास करने वाले लोगों के स्वभाव, दृष्टिकोण, महत्त्वाकांक्षाओं, परिस्थितियों तथा कठिनाइयों का अध्ययन किया जाये। इसके साथ-साथ यह भी जानना आवश्यक है कि एक साम्राज्यवादी शक्ति के रूप में इंग्लैण्ड तथा विशेषत: वहाँ के शासक उपनिवेशवाद का क्या अर्थ लगाते थे। उसका वे किस प्रकार से संचालन करना चाहते थे। क्या इससे इंग्लैण्ड और उसके अमेरिकी उपनिवेशों में टकराव अनिवार्य हो जाता था ? और यदि हाँ तो क्यों? क्रान्ति के कारणों का अध्ययन करते समय इंग्लैण्ड उसके तथाकथित रूढ़िवादी वर्गीय समाज एवं अमेरिकी उपनिवेशों में विकसित होने वाले उदारवादी समाज के भेद को भी ध्यान में रखना चाहिए। इस प्रकार अमेरिकी क्रान्ति के कारणों को चार बड़े भागों में विभक्त किया जा सकता है- पहला, अभिवृत्ति तथा सिद्धान्तों का संघर्ष; दूसरा, परिस्थितियों का योगदान; तीसरा, रूढ़िवादी अंग्रेजी समाज तथा उदारवादी अमेरिकी समाज में टकराव व चौथा, दोषपूर्ण

अंग्रेजी प्रशासन, नीतियाँ व निरंकुशता। क्रान्ति के विभिन्न कारणों की समीक्षा इस प्रकार की जा सकती है।

I. अभिवृत्ति तथा सिद्धान्त :

(1) अमेरिकनों में आत्मविश्वास एवं महत्त्वाकांक्षा की उभरती हुई भावनायें - अभिवृत्ति एवं सिद्धान्तों को अमेरिकी क्रान्ति का मूल कारण माना जा सकता है। अमेरिकी उपनिवेशों ने अठारहवीं सदी के अन्तिम दशकों तक सर्वांगीण उन्नति कर ली थी। इस उन्नति के उपरान्त भी अमेरिकीयों में और अधिक उन्नति करने की आकांक्षाएँ थी। उन्हें भौगोलिक परिस्थितियों के कारण और अधिक उन्नति करने की सम्भावनाएँ द्वार पर खड़ी दिखाई देती थीं। इसलिए अमेरिकीयों में एक नया आत्मविश्वास उत्पन्न हो रहा था। उनमें यह मान्यता घर कर रही थी कि उन्हें स्वयं अपने भविष्य का निर्माण करना है तथा वे इसके योग्य हैं। इस प्रकार की मानसिक अवस्था में उपनिवेशवासी शनैः शनैः इस मत के हो रहे थे कि वे चिरकाल तक अंग्रेजी साम्राज्य के अधीन नहीं रह सकते। यहाँ स्पष्ट कर देना उचित होगा कि प्रारम्भ में उपनिवेशवासी अपनी मातृभूमि से राजनीतिक सम्बन्ध को पूर्णत: विच्छेद करने के पक्ष में नहीं थे और न ही मातृभूमि के प्रति अपने उत्तरदायित्व से मुँह मोड़ लेना चाहते थे। मातृभूमि से उपनिवेशवासियों को घनिष्ठ भावात्मक लगाव था और इंग्लैण्ड से अमेरिकी उपनिवेशों के आर्थिक स्वार्थ जुड़े हुए थे। लेकिन यह सब होते हुए भी स्वभाव से स्वतन्त्र प्रवृत्ति के उपनिवेशवासी यह बात सहन नहीं कर सकते थे कि उपनिवेशों को केवल लाभ का साधन बनाया जाये। उपनिवेशवासी समानता और स्वायत्त शासन चाहते थे। इस प्रकार की अमेरिकी भावनाओं का प्रदर्शन समकालीन पत्र, पत्रिकाओं तथा राजनीतिक लेखों में किया गया। यह भावना अमेरिकनों में वास्तव में नई थी।

(2) इन भावनाओं के उत्पन्न होने के कारण व इसमें विभिन्न तत्त्वों का योगदान- अमेरिका में इस नयी भावना के उत्पन्न होने के भी अनेक कारण थे। कुछ वर्ग तो ऐसे थे जो कि अपने उत्साह, महत्त्वाकांक्षा, प्रगति की भावना तथा सिद्धान्तों से प्रेरित थे। दूसरे वर्ग के लोग सिद्धान्तों की अपेक्षा अपने स्वार्थों के कारण नयी भावना से प्रभावित हो रहे थे। उत्तर के व्यापारी भी इस प्रकार की मान्यता रखने लगे थे कि इंग्लैण्ड द्वारा किये जा रहे व्यापार-नियंत्रण के कारण उनकी व्यापारिक क्षमता पर अंकुश लग रहा है। इस प्रकार उत्तर के दूसरे व्यापारी व महाजन इस बात से रुष्ट थे कि उपनिवेशों में नीति के आधार पर उत्पादन करने की सम्भावनाओं का गला घोटा जा रहा है। दक्षिण के राज्यों में अन्य कारणों से नयी भावना का समर्थन किया जा रहा था। वहाँ के प्लान्टर (Planter)अथवा बड़े किसान इंग्लैण्ड के महाजनों के ऋण से दबे हुए थे। उनका विश्वास था कि इंग्लैण्ड के सम्बन्ध विच्छेद होने पर सम्भवत: वे अपने ऋण के भुगतान से बच जायें। इसके अतिरिक्त दक्षिण के उपनिवेशवासी निकटवर्ती उपजाऊ भू-भागों में प्रसार के लिए उत्सुक थे। किन्तु उनको यह भय था कि इस कार्य में गृह सरकार द्वारा केवल बाधा ही डाली जायेगी।

उत्तर व दक्षिण के धनी वर्गों के अतिरिक्त साधारण मध्यमवर्गीय लोगों ने अपने-अपने कारणों से नयी भावना का समर्थन किया। अमेरिका के ये मध्यमवर्गीय लोग, जिनमें नगरों के

व्यवसायी तथा देहातों के छोटे किसान आते थे, अत्यन्त उदार व प्रगतिशील लोग थे। यह वर्ग जागृत था तथा उसमें राजनीतिक चेतना का अभाव नहीं था। यह वर्ग उपनिवेशी शासकों के विशेष अधिकारों और सुविधाओं से घृणा करता था। यह वर्ग उपनिवेशों में आर्थिक, सामाजिक तथा राजनीतिक प्रजातन्त्र की स्थापना चाहता था। इस प्रकार से यह वर्ग सामाजिक समानता के लिए इच्छुक था, अतिरिक्त आर्थिक अवसर की माँग करता था और अपने राजनीतिक अधिकारों को मान्य बनाना चाहता था। इस वर्ग में निराशा व असन्तोष की भावना थी जिसे वह संघर्ष करके मिटाना चाहता था। प्रारम्भ में यह वर्ग भी उपनिवेशों में सच्चे अर्थों में प्रजातन्त्र की स्थापना का लक्ष्य रखता था और मातृराज्य से बिछोह नहीं चाहता था लेकिन इस वर्ग में जब यह चेतना उत्पन्न हुई कि उपनिवेशी शासकों तथा स्वार्थी वर्गों की शक्ति का स्रोत इंग्लैण्ड में है तो इस वर्ग ने सम्पूर्ण उपनिवेशों में स्वायत्त सरकार की स्थापना को लक्ष्य बनाया। इस लक्ष्य की प्राप्ति में इस वर्ग ने उपनिवेशी अधिकारियों, शासकों तथा स्वार्थी वर्गों के विनाश की कल्पना की। अमेरिकी क्रान्ति वास्तव में इसी वर्ग की उपलब्धि थी।

अठारहवीं शती के अन्तिम तीन दशकों में अमेरिका में नई भावना के प्रचार का नेतृत्व मध्यमवर्गीय व्यवसायियों तथा किसानों ने किया। इस वर्ग में नगरों के साधारण तकनीकी कर्मचारियों तथा मिस्त्रियों का विशेष स्थान एवं वर्चस्व रहा। इस वर्ग ने सभी प्रकार की कुलीनवर्गीय सुविधाओं का विरोध किया। स्वयं अमेरिका के उच्च वर्गों के प्रति इस वर्ग की कोई सहानुभूति नहीं थी, क्योंकि वह उन्हें गृह सरकार का पिट्ठू समझता था। अमेरिका के उच्च कुलीन शासक लोग अमेरिका में स्थित अंग्रेज शासकों तथा इंग्लैण्ड की संसद से समर्थन प्राप्त करते थे। उनकी सुविधाएँ एवं विशेषाधिकार इन्हीं स्तोतों से प्राप्त शक्ति पर आधारित थे। अमेरिकी क्रान्ति का श्रेय मध्यम वर्ग के अतिरिक्त केवल उत्तर के व्यापारी तथा दक्षिणी प्लान्टर्स को ही दिया जा सकता है। यह भी स्पष्ट है कि अमेरिका का उच्च वर्ग क्रान्ति विरोधी था। इस प्रकार अमेरिकी क्रान्ति में एक वर्ग-संघर्ष देखा जा सकता है जिसमें एक ओर इंग्लैण्ड का कुलीन शासन वर्ग था जिसके समर्थन में स्वयं अमेरिका का धनी वर्ग था जो प्रजातन्त्र के आगमन और उसकी प्रतिक्रियाओं से भयभीत था। दूसरी ओर अमेरिका के परिश्रमी, मध्यम व उच्च मध्यम वर्ग के लोग थे।

अमेरिकी क्रान्ति के सम्बन्ध में यह भी स्पष्ट कर देना उचित होगा कि विश्व की अन्य आधुनिक क्रान्तियों की भाँति इसमें भी भाग लेने वाले अल्पमत में थे। अधिकांश किसान तथा सभी प्रकार के मध्यम और निम्नवर्ग के लोग क्रान्ति के प्रति उदासीन रहे। इसके अतिरिक्त मातृ राज्य से सम्बन्ध विच्छेद करने का प्रश्न इतना कठिन था कि बड़ी संख्या में उपनिवेशवासी इस पर कोई भी निर्णय लेने के लिए तैयार नहीं थे। ऐसे लोगों की संख्या भी कम नहीं थी जो क्रान्ति के युग में भी इंग्लैण्ड के समर्थक रहे। लेकिन इन परिस्थितियों को क्रान्ति का दोषपूर्ण प्रभाव नहीं कहा जा सकता। उपनिवेशों के विशाल जनसमूह में एकमत नहीं हो सकता था। क्रान्ति का नेतृत्व करने वाले अल्पमत में होते हुए भी सामान्य इच्छा के प्रतीक थे।

(3) इंग्लैण्ड की वाणिज्यवाद की नीति का विरोध- अमेरिका में उत्पन्न नई भावना और उसके परिणामस्वरूप हुई प्रतिक्रियाओं के विवरण के अनन्तर इंग्लैण्ड में प्रचलित अभिवृत्ति एवं उस देश के मान्य सिद्धान्तों के सम्बन्ध में विचार अत्यन्त रुचिकर होगा। सत्रहवीं और

अठारहवीं शती में यूरोप के अन्य देशों की भाँति इंग्लैण्ड की आर्थिक नीतियों का दृष्टिकोण वाणिज्यवाद (Mercantilism) पर आधारित था। यह विचारधारा इंग्लैण्ड में लगभग एक धर्म बन गई थी। इसका कारण यह था कि इसके बल पर साम्राज्यवादी देश न केवल उपनिवेश स्थापित कर सकते थे बल्कि उनसे पूरा लाभ उठा सकते थे। वाणिज्यवादियों की यह मान्यता थी कि विश्व में 'अग्रघर्षण'(Aggression) का युग चल रहा है अत: प्रत्येक राष्ट्र को अपनी सुरक्षा का अधिकार है। इंग्लैण्ड ने इस मान्यता में एक और कड़ी जोड़ दी और यह कहा कि महत्त्वाकांक्षी आक्रमणकारी पड़ोसी देशों के विरुद्ध उसे अपनी सुरक्षा करनी है। इस प्रकार से वाणिज्यवाद तथा उसके अन्तर्गत इंग्लैण्ड विशेष आवश्यकताओं के लिए एक शक्तिशाली सेना और नौ सेना रखना चाहता था जिसका पोषण करना वह न केवल आवश्यक बल्कि न्यायसंगत समझता था। वाणिज्यवाद के सिद्धान्त के अनुसार प्रत्येक राष्ट्र को धनी और शक्तिशाली होने का प्रयास करना चाहिए अन्यथा वह जीवित नहीं रह सकता। इंग्लैण्ड अपनी बढ़ती हुई जनसंख्या के प्रति भी जागरूक था। उसके लिए कृषि के साथ-साथ व्यापार व उद्योगों के विकास की आवश्यकता थी, ताकि बढ़ती हुई जनसंख्या का पोषण किया जा सके। उद्योगों के लिए ऐसे स्थान चाहिए थे जहाँ से पर्याप्त मात्रा में कच्चा माल मिल सके और तैयार माल की खपत के लिए बाजारों की प्राप्ति भी हो सके। इन गतिविधियों को सुरक्षित रूप से चलाने के लिए एक शक्तिशाली नौसेना तथा व्यापारी बेड़े की परम आवश्यकता थी।

उपर्युक्त कार्यक्रम में इंग्लैण्ड अपने उपनिवेशों का उपयोग करना चाहता था। इस उद्देश्य की प्राप्ति हेतु उसने अमेरिकी उपनिवेशों में उत्पादन पर प्रतिबन्ध लगाये ताकि इंग्लैण्ड अपना तैयार माल अमेरिका में बेच सके। उपनिवेशवासियों को कच्चा माल, जिसमें फर तथा लोहा था, तैयार करने के लिए प्रोत्साहन दिया गया। वाणिज्यवाद के अन्तर्गत इंग्लैण्ड ने नौसंचालन कानून (Navigation Law) भी पारित किये जिनके द्वारा 1651 में यह व्यवस्था की गई कि उपनिवेशों में व्यापार केवल इंग्लैण्ड, आयरलैण्ड तथा स्वयं उपनिवेशों के जहाजों के माध्यम से ही हो सकता था। इस समय से इंग्लैण्ड के ही पोत-निर्माण के उद्योग का विकास हुआ। नौसंचालन कानून के अन्तर्गत यह भी व्यवस्था की गई की सभी प्रकार के कच्चे माल को, जिसकी कि इंग्लैण्ड को आवश्यकता होती थी, बिना इंग्लैण्ड के बन्दरगाहों पर लाये उपनिवेशों से दूसरे स्थानों पर निर्यात नहीं किया जा सकता था। इससे इंग्लैण्ड की आवश्यकताएँ पूरी हो जाती थीं। इंग्लैण्ड के व्यापारियों को दलाली का लाभ होता था। इंग्लैण्ड की गृह सरकार को दुबारा निर्यात किये गये माल पर राजस्व की प्राप्ति हो जाती थी। स्पष्ट है कि यह व्यवस्था अत्यन्त अन्यायपूर्ण थी। इससे अमेरिका में असन्तोष उत्पन्न हुआ। इसी प्रकार से 1663 ईसवी के एक कानून के अन्तर्गत यह व्यवस्था की गई थी कि यूरोप से अमेरिकी उपनिवेशों में निर्यात किया जाने वाला माल पहले इंग्लैण्ड के बन्दरगाहों पर लाया जायेगा। इस नियम से भी इंग्लैण्ड के व्यापारियों तथा व्यापारी बेड़ों के मालिकों को अमेरिकी उपभोक्ताओं की कीमत पर लाभ होता था।

वाणिज्यवाद के अन्तर्गत इंग्लैण्ड ने उपनिवेशों से एक और अत्यन्त अन्यायपूर्ण अधिनियम द्वारा लाभ उठाने का प्रयास किया। यह अधिनियम 1733 ईसवी का शीरे का अधिनियम (Molasses Act) था जिसके अन्तर्गत शीरे, शक्कर, रम तथा कुछ और वस्तुओं के अमेरिका

में आयात पर अत्यधिक कर लगा दिया गया। इस अधिनियम से उपनिवेशवासियों का फ्रांसीसी, डच तथा स्पेनिश वेस्ट इण्डीज (Spanish West Indies)से व्यापार ठप्प हो सकता था। अत: उपनिवेशवासियों ने इस अधिनियम का सर्वथा उल्लंघन किया तथा अपने व्यापार को यथावत् जारी रखा। वाणिज्यवाद से प्रेरित हो इंग्लैण्ड क्रान्ति से पूर्व तक अनेक नियम बनाता रहा। उपनिवेशवासी इंग्लैण्ड द्वारा पारित किये गये अधिनियमों को स्वीकार करने में असमर्थ थे और इनका विरोध करते थे। इस प्रकार से संघर्ष का वातावरण बनता रहा जो अन्त में क्रान्ति में परिवर्तित हो गया।

(4) इंग्लैण्ड की पार्लियामेंट के उपनिवेशों पर अधिकार के बारे में मतभेद - वाणिज्यवाद के अतिरिक्त अभिवृत्ति व सिद्धान्तों के क्षेत्र में कुछ अन्य मतभेद थे। इंग्लैण्ड में इस मान्यता पर कोई मतभेद नहीं था कि वहाँ कि संसद की शक्तियों पर किसी प्रकार का कोई भी प्रतिबन्ध हो सकता है। अधिकांश अंग्रेज अधिकारी यह मानते थे कि पार्लियामेंट एक ऐसी शाही संस्था है जो इंग्लैण्ड की तरह उपनिवेशों पर भी अपने अधिकारों को समान रूप से व्यवहार में ला सकती है। उपनिवेशवासी इंग्लैण्ड की इस रूढ़िवादी विचारधारा को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं थे। वे उदारवादी थे। उनकी यह धारणा थी कि संसद की शक्ति भी किसी मौलिक कानून(Fundamental Law) के सामने सीमित हों सकती है। इस प्रकार इंग्लैण्ड और उपनिवेशों में यह एक मौलिक मतभेद था जो झगड़े का एक बहुत बड़ा कारण था। आगे चलकर इंग्लैण्ड की संसद ने उपनिवेशों पर विभिन्न प्रकार के कर लगाने का प्रयास किया जिन्हें उपनिवेशवासियों ने अनाधिकृत समझा। उपनिवेशों में ऐसे करों का विरोध किया गया। इसके साथ-साथ विरोध को लोकप्रिय बनाने के लिए उपनिवेशवासियों ने 'प्रतिनिधित्व नहीं तो कर नहीं'(No Taxation without Representation) का नारा बुलन्द किया।

(5) सुरक्षा के लिए किये गये व्यय के भार पर मतभेद – इंग्लैण्ड के जनसाधारण को भी यह विश्वास था कि उनका देश उपनिवेशों को सुरक्षा प्रदान करता है अत: उपनिवेशों को भी सुरक्षा हेतु किये गये व्यय का बोझ उठाना चाहिए। इंग्लैण्ड के इस विचार और सिद्धान्त के कारण भी उपनिवेशों से संघर्ष की स्थिति बढ़ी। सप्तवर्षीय युद्ध (Seven Years War)में विजय के कारण इंग्लैण्ड ने यूरोप के स्वामी फ्रांस की शक्ति नष्ट कर दी तथा अमेरिका में इंग्लैण्ड के साम्राज्य का विस्तार इससे सुलभ हो गया। इस स्थिति का एक अन्य पक्ष भी था। युद्ध के कारण इंग्लैण्ड की सरकार एक बहुत बड़े युद्ध-ऋण से दबी जा रही थी। युद्ध काल में इंग्लैण्ड का ऋण दुगुना हो गया था। विस्तृत हुए अमेरिका के साम्राज्य की भी समस्याएँ थीं। उपनिवेशों में पिछले पन्द्रह वर्षों में सैनिक तथा असैनिक नियमित प्रशासन-व्यय पाँच गुना हो गया था। इंग्लैण्ड के लिए यह स्थिति अत्यन्त असन्तोषजनक हो गई। भविष्य में उपनिवेशों के प्रशासन को सुचारु रूप से चलाने की समस्या थी। इंग्लैण्ड की संसद में , भूमिपतियों, महाजनों तथा व्यापारियों ने भी यह माँग की कि राजकीय ऋण को चुकाया जाये, जनता पर से कर भार कम किया जाये तथा उपनिवेशों को विवश किया जाये कि वे भी साम्राज्य सम्बन्धी प्रशासन व सुरक्षा के व्यय में हाथ बँटाये। संसद में यह भी शिकायत की गई की युद्ध काल में उपनिवेशों ने अपने आप पर पर्याप्त कर नहीं लगाया और युद्ध अभियान में किसी प्रकार का योग नहीं दिया। संसद में

उपनिवेशों के भविष्य के लिए चेतावनी दी गई। साथ ही साथ यह भी स्मरण दिलाया गया कि युद्ध काल में उपनिवेशवासियों ने व्यापार नियमों का सर्वथा उल्लंघन किया और वे शत्रुओं से व्यापार करते रहे। तस्कर-व्यापार का भी संसद में उल्लेख किया गया और उसकी अविलम्ब समाप्ति की माँग की गई। उपनिवेशवासियों का यह विश्वास था कि इंग्लैण्ड अपनी नीतियों से केवल अपने साम्राज्यवादी हितों की रक्षा कर रहा है। उसे कभी भी उपनिवेशवासियों के मौलिक हितों की चिन्ता नहीं रही इसलिए उपनिवेशवासी नियमों को तोड़कर कोई भी अपराध नहीं करते। उपनिवेशवासी मातृ राज्य में रहने वालों के समान हितों की समान रक्षा चाहते थे। उनका विश्वास था कि गृह सरकार इस दिशा में सदैव स्वार्थपूर्ण नीति अपना रही है।

(6) दार्शनिक विवेचनों का अमेरिकनों पर प्रभाव तथा बौद्धिक चेतना का विकास- अभिवृत्ति और सिद्धान्तों के उल्लेख में इस स्थान पर उन दार्शनिक सिद्धान्त का वर्णन उचित ही होगा जिनसे उपनिवेशवासी प्रभावित हुए। उपनिवेशवासियों ने अपने विचार फ्रांस तथा इंग्लैण्ड से ग्रहण किये थे। मूल रूप से वे 'सामाजिक समझौते' (Social Contract)के सिद्धान्त तथा जॉन लॉक (John Locke)द्वारा रचित 'ट्रीटाइज आफ गवर्नमेंट' (Treatise of Government)से प्रभावित हुए। इस काल में उन ग्रन्थों का अध्ययन अमेरिका की शिक्षण संस्थाओं, विशेषत: कानून पढ़ाये जाने वाली स्कूलों, में होता था। इसके फलस्वरूप स्वयं अमेरिका में प्रबुद्ध स्वार्थों से प्रेरित राजनीति, अर्थ व्यवस्था तथा कानून सम्बन्धी विचारधाराओं का प्रसार हुआ था। यूरोपीय दार्शनिकों से चेतना प्राप्त करके अनेक अमेरिकन बुद्धिजीवी अमेरिकीयों के अधिकारों की बात करने लगे थे। उनमें यह मान्यता बल प्राप्त करने लगी थी कि जो सरकार जनसाधारण हितों की रक्षा नहीं कर सकती उसे बदलने का उन्हें अधिकार होना चाहिए। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि अमेरिकी लॉक के प्रकृत्य अधिकार(Natural Rights) के सिद्धान्त से प्रभावित हुए। इन्हीं अधिकारों की रक्षा हेतु समय-समय पर उपनिवेशों के विधायक सदनों ने जन साधारण के हित में अधिनियम पारित किये थे। यद्यपि इन पारित अधिनियमों को अनेक बार लागू नहीं किया जा सका था, क्योंकि उन्हें उपनिवेश के गवर्नर या इंग्लैण्ड के सम्राट की अनुमति नहीं मिल पाती थी और उपनिवेश के विधायकों के प्रयास असफल हो जाते थे। फिर भी इसमें कोई सन्देह नहीं कि यूरोपीय दार्शनिकों ने अमेरिकी क्रान्ति की पृष्ठभूमि को दृढ़ बनाया।

(7) बौद्धिक चेतना का उदय- अमेरिकन उपनिवेशों में जीवन के स्थायित्व के साथ बौद्धिक चेतना का विकास हुआ। इसमें विचारकों, पत्रकारों एवं शिक्षित व्यक्तियों ने विशेष योगदान दिया। पेनसिलवेनिया में क्वेकर समुदाय ने चर्च की देख-रेख में बालकों के लिये शिक्षण संस्थाएँ स्थापित कीं। 1636 ईसवी में मैसाचुसेट्स के केम्ब्रिज नगर में हार्वर्ड कॉलेज खोला गया। 1693 ईसवी में वर्जीनिया में विलियम एण्ड मेरी कॉलेज शिक्षा का एक प्रमुख केन्द्र था। इन कॉलेजों तथा अन्य कई निजी शिक्षण संस्थाओं में गणित भाषा व विज्ञान की शिक्षा भी दी जाती थी। कई स्थानों पर स्त्रियों की शिक्षा के लिये विशेष प्रबन्ध किये गये। बेंजामिन फ्रेंकलिन द्वारा स्थापित 'अमेरिकन फिलासोफिकल सोसायटी' (Amierican Philosophical Society)उस समय का एक प्रसिद्ध विचार केन्द्र था। सत्रहवीं सदी के अन्त में अमेरिका के केम्ब्रिज नगर में पहला छापाखाना खोला गया। 1704 ईसवी में 'बोस्टन न्यूज लेटर' (Boston

News Letter) नामक अमेरिका का पहला समाचार पत्र निकला। 1765 ईसवी तक अमेरिका में लगभग पच्चीस समाचार पत्र प्रकाशित होने लगे थे। इस प्रकार अमेरिका में उपनिवेशों की स्थापना के लगभग डेढ़ सौ साल बाद शिक्षा एवं पत्रकारिता के माध्यम से जीवन के प्रति नया दृष्टिकोण तथा राष्ट्रीयता की भावना का उदय होने लगा था।

बौद्धिक चेतना के विकास में अनेक बुद्धिजीवियों का योगदान सराहनीय है। टॉमस पेन ने अपनी पुस्तक 'कॉमन सेंस'(Common Sense) में यह प्रतिपादित किया कि अमेरिकनों को इंग्लैण्ड से अपने अधिकारों की रक्षार्थ, सम्बन्ध विच्छेद कर लेना चाहिए। उसके अनुसार यह महाद्वीप एक लम्बे समय तक ऐसी स्थिति में नहीं रह सकता। 1775 से 1783 ईसवी तक 'द अमेरिकन क्राइसिस'(The American Crisis) नामक पत्रिका में प्रकाशित उसके लेखों ने नैतिक बल और देश भक्ति को बढ़ावा दिया। जेम्स ओटिस (James Otis)व पैट्रिक हेनरी (Patrick Henry)ने क्रमश: खोज-वारण्ट अधिनियम एवं स्टाम्प पेपर अधिनियम का विरोध किया। पैट्रिक हेनरी कहता था कि या तो मुझे स्वतन्त्रता दो अथवा मृत्यु। सेम्युल एडम्स (Samuel Adams) ने इंग्लैण्ड की सरकार के अन्यायों का जोरदार विरोध करके क्रान्ति की भावना को प्रबल बनाया।

II. परिस्थितियों का योगदान :

अमेरिका की क्रान्ति निस्सन्देह उपनिवेशों और मातृ राज्य में मौलिक मतभेदों के कारण हुई तथा सम्भवत: यह सदैव के लिए टाली नहीं जा सकती थी। यह आशा कभी भी नहीं हो सकती थी कि अमेरिकी उपनिवेशवासी सदैव के लिए इंग्लैण्ड के अधीन रहते। इस क्रान्ति के कारणों में अनेक घटनाओं और परिस्थितियों का योगदान रहा।

(1) सप्तवर्षीय युद्ध में फ्रांस की हार का प्रभाव - जिन घटनाओं के कारण क्रान्ति की परिस्थितियाँ उत्पन्न हुई उनमें सर्वप्रथम फ्रांसीसी संकट की समाप्ति का उल्लेख किया जा सकता है। सप्तवर्षीय युद्ध के पूर्व कनाडा के क्षेत्र में बसे हुए फ्रांसीसियों से अमेरिकी उपनिवेशवासियों को एक स्थायी संकट था। वे फ्रांसीसियों से अपनी रक्षा करने में भी असमर्थ थे। इसलिए उपनिवेशवासी अपनी रक्षा के लिए मातृ राज्य की ओर ही देखते थे। सप्तवर्षीय युद्ध के पश्चात् इस परिस्थिति में परिवर्तन हुआ। फ्रांस ने अपनी पराजय के कारण भारत एवं अमेरिका में अपने राज्य को खो दिया। कनाडा पर अंग्रेजों का स्वामित्व स्थापित हो गया। इसके साथ ही अमेरिकी उपनिवेशवासी फ्रांसीसी संकट से मुक्त हो गये। अब भविष्य में उन्हे मातृ राज्य से किसी प्रकार के संरक्षण की आवश्यकता नही रही। इस घटना ने निस्सन्देह वह परिस्थिति उत्पन्न कर दी जिसमें अमेरिकी उपनिवेशवासी एक निश्चित वातावरण में अपनी मातृ राज्य द्वारा किये गये आर्थिक व राजनीतिक शोषण पर विचार कर सकते थे। उपनिवेशवासियों के लिए भविष्य में मातृ राज्य द्वारा किए जाने वाले किसी भी अत्याचार को सहन करने का अब कोई कारण शेष नहीं रह गया था। फ्रांसीसी भय की समाप्ति के साथ-साथ इस काल में अमेरिकन आदिवासियों का भय भी समाप्त हो गया था, क्योंकि इसी काल में इन आदिवासियों से अनेक लड़ाइयाँ हो चुकी थीं तथा उनकी शक्ति को कुचल दिया गया था। अब वे उपनिवेशवासियों पर आक्रमण करने की स्थिति में नहीं थे।

(2) पश्चिमी क्षेत्रों में विस्तार पर प्रतिबन्ध - सप्तवर्षीय युद्ध में इंग्लैण्ड ने अमेरिका के कई पश्चिमी क्षेत्रों को जीत कर अपने राज्य में मिला लिया। इन क्षेत्रों के प्रश्न पर उपनिवेशवासियों तथा इंग्लैण्ड की सरकार में झगड़ा उत्पन्न हो गया। इंग्लैण्ड की सरकार इन्हें अपने अधिकार में रखना चाहती थी और इनका प्रशासन चलाने के लिए अनेक नये साधनों का प्रयोग कर रही थी। फिर नये प्रदेशों में अनेक समस्याएँ थीं, जैसे आदिवासियों से सम्बन्ध, फर का व्यापार, भूमि नीति तथा प्रशासन की समस्या। ये प्रदेश अलेघेनी पर्वतमाला (Alleghani Mountains) तथा एपलेसियन जलधारा (Appalachian Watershed) के पार के थे। जब इनसे फ्रांसीसियों को निकाल दिया गया तो निकटवर्ती सभी उपनिवेश इस नई भूमि के प्रति लालायित हुए। वर्जीनिया (Verginia) के राज्य ने विशेष रूप से अपने अधिकार का दावा किया। अनेक भूमि कम्पनियाँ भी खड़ी हो गईं जिन्होंने इस नई भूमि के पट्टे प्राप्त करने के प्रयास किये और इंग्लैण्ड में अपने वकीलों द्वारा दबाव डलवाना प्रारम्भ किया। इधर फर का व्यापार करने वाली अंग्रेजी कम्पनियाँ इन क्षेत्रों को अपने लिए सुरक्षित करना चाहती थीं। वे इस बात का विरोध कर रही थीं कि उस नयी भूमि पर बस्तियाँ बसाई जायें और खेती की जाये। इसी समय आदिवासियों के विद्रोह ने, जिनमें 1763 ईसवी का 'पोन्टीएक'(Pontiac) का उत्कर्ष उल्लेखनीय है, परिस्थिति को और अधिक पेचीदा बना दिया। गृह सरकार के समक्ष विभिन्न प्रकार के दावे थे और आदिवासियों पर भी नियन्त्रण रखना था। अत: 1763 ईसवी की एक घोषणा के अनुसार यह निर्णय किया कि एपलेसियन जलधारा के पार किसी भी प्रकार की बस्तियाँ नहीं बसायी जायेंगी तथा ये बस्तियाँ अलेघेनी पर्वतमाला के शिखर तक ही सीमित रहेंगी 1763 ईसवी की घोषणा से जो रेखा खींची गई उसके कारण सीमान्त पर बसने की इच्छा रखने वाले व्यापारियों में तथा भूमि-कम्पनियों में स्वार्थ रखने वाले लोगों में रोष की भावना उत्पन्न हुई।

1763 ईसवी की घोषणा अस्थायी निर्णय के रूप में की गई थी। इसके पश्चात् ब्रिटिश अधिकारी वर्ग आदिवासी कबीलों से नई सन्धियों की बातें करने लगा ताकि अतिरिक्त क्षेत्र समझौते के आधार पर बसने के लिए खोल दिये जायें। लेकिन ब्रिटिश सरकार नयी उपलब्ध भूमि, जिस पर लोगों के बसने की सम्भावना थी, के बारे में कोई निर्णय नहीं ले पा रही थी। इसका कारण इंग्लैण्ड के फर व्यापारियों का विरोध था जो यह तर्क रख रहे थे कि नये क्षेत्रों में बस्तियों को बसाना इंग्लैण्ड के आर्थिक तथा राजनीतिक स्वार्थों के विरुद्ध होगा। इस कार्य में विलम्ब से उपनिवेशवासियों में यह भावना उत्पन्न हो रही थी कि क्यों नहीं पश्चिम के प्रदेशों का हल उन्हीं पर छोड़ दिया जाये और क्यों इसमें ब्रिटिश अधिकारी वर्ग या सरकार हस्तक्षेप करना चाहती है ? असन्तोष के इस वातावरण में आगे चल कर इंग्लैण्ड की सरकार ने 1774 ईसवी में क्यूबेक एक्ट (Quebec Act) पारित किया। कनाडा के क्यूबेक प्रान्त में बसे फ्रांसीसी लोग भी अपने प्रान्तों की सीमाएँ बढ़ाना चाहते थे। उनकी माँग को स्वीकार कर लिया गया और 1774 ईसवी में क्यूबेक प्रान्त की सीमाओं को दक्षिण में बढ़ाकर ओहियो(Ohio) तथा मिसीसिप्पी (Mississipi)नदी तक कर दिया गया। क्यूबेक एक्ट (Quebec Act)ने अमेरिकन उपनिवेशवासियों पर जले पर नमक का काम किया। वे बारह वर्षों से प्रतीक्षा कर रहे थे कि उनको बसने के लिए नये प्रदेश मिलेंगे। उसके बदले में उन्हें एक ऐसा कानून मिला जिसमें

उनके पश्चिम की ओर प्रसार (Westward Expansion)करने की स्वाभाविक महत्त्वाकांक्षा को कुचलने का प्रयास किया गया। उनके समस्त दावों को ठुकरा दिया गया। क्यूबेक एक्ट ने एक और विवाद पैदा कर दिया। सीमान्त पर बसने की इच्छा रखने वाले अनेक उपनिवेशवासी कानूनी पट्टों की अवहेलना करके पर्वतों के पार केन्टकी-टेनेसी (Kentucky-Tennessee) क्षेत्र तथा ओहियो की घाटी में बस गये थे। ये लोग क्यूबेक एक्ट को मानने के लिए तैयार नहीं थे।

(3) तस्कर-व्यापार को रोकने के प्रयत्न - सप्तवर्षीय युद्ध के पश्चात् इंग्लैण्ड ने उपनिवेशों पर शक्तिशाली नियन्त्रण रखने की आवश्यकता महसूस की। युद्ध-काल में उपनिवेशीय व्यापारियों ने सभी नियमों का उल्लंघन किया था, क्योंकि वे शत्रुओं से भी तस्कर-व्यापार करते रहे थे अत: आवश्यक समझा गया कि भविष्य के लिए तस्कर-व्यापार को रोका जाये ताकि राजस्व की हानि नहीं हो। युद्ध की समाप्ति के पूर्व ही उपनिवेशों के चुंगी अधिकारियों को यह अधिकार प्रदान कर दिया गया था कि वे किसी की भी तलाशी ले सकते थे। जहाजों पर जाकर आने या जाने वाले सामान को देख सकते थे तथा गोदामों का भी निरीक्षण कर सकते थे। यह अधिकार 'सहायता-प्रादेश'(Writs of Assistence) कहलाया। उपनिवेशों में विशेषत: बोस्टन (Boston) के नगर में इसका घोर विरोध किया गया। बोस्टन नगर के एक प्रसिद्ध वकील जेम्स ओटीस(James Otis) ने सहायता प्रादेशों को नागरिकता के मौलिक अधिकारों का उल्लंघन बताया तथा उन्हें गैर- कानूनी घोषित किया। उसने सहायता-प्रादेशों के अन्तर्गत अपराधी माने जाने वाले व्यापारियों की वकालत की और यह तर्क प्रस्तुत किया कि ब्रिटिश सरकार इस नियम को नहीं लागू कर सकती, क्योंकि यह मौलिक कानून का उल्लंघन करता है। सहायता प्रादेशों तथा उनके अनुसार की गई कार्यवाहियों ने उन परिस्थितियों को बढ़ाया, जिनसे आगे चलकर क्रान्ति सम्भव हुई।

(4) फ्रांस द्वारा प्रोत्साहन - सप्तवर्षीय युद्ध में पराजय के पश्चात् फ्रांस को नि:सन्देह बड़ी हानि उठानी पड़ी तथा एक राष्ट्र के रूप में फ्रांस का अपमान भी हुआ। इंग्लैण्ड व फ्रांस की शत्रुता पुरानी थी। फ्रांस अपने द्वेष को भूलने के लिए तैयार नहीं हुआ। फ्रांस की हार्दिक इच्छा यही थी कि वह इंग्लैण्ड के लिए संकट उत्पन्न करें तथा इंग्लैण्ड की कठिनाइयों से लाभ उठाये। 1763 ईसवी के पश्चात् जब इंग्लैण्ड तथा अमेरिकी उपनिवेशवासियों में मतभेद उत्पन्न होने लगे तो फ्रांस ने इन मतभेदों का स्वागत किया। नई परिस्थितियों में फ्रांस के लिए इससे अच्छी बात नहीं हो सकती थी कि अमेरिकी उपनिवेश अपने मातृ राज्य से पृथक् हो जाये। ऐसी परिस्थिति में फ्रांस सम्भवत: नई दुनिया में अपने प्रभाव को बढ़ाने की आशा कर सकता था। फ्रांस कम से कम इंग्लैण्ड का बुरा अवश्य चाहता था अत: वह अमेरिकी उपनिवेशवासियों का समर्थन करने लगा। उन्हें यह भी आश्वासन देने लगा कि फ्रांस उनकी सहायता करने में कभी भी पीछे नहीं रहेगा। विचित्र-सी बात थी कि जिन फ्रांसीसियों के भय से उपनिवेशवासी मातृ राज्य से अब तक लिपटे हुए थे अब उन्हीं फ्रांसीसियों की सहायता की आशा से वे लोग अपना मनोबल बढ़ा रहे थे।

(5) जार्ज तृतीय की स्वेच्छाचारिता - इंग्लैण्ड की आन्तरिक राजनीति ने भी वे परिस्थितियाँ उत्पन्न की जिनके कारण अमेरिकी क्रान्ति को सहायता मिली। 1760 पूर्व इंग्लैण्ड

की वास्तविक सत्ता ऐसे मन्त्रिमण्डलों के हाथ में थी जिनका इंग्लैण्ड की लोक सभा में बहुमत था। 1760 ईसवी में इस परिस्थिति में परिवर्तन आया। इस वर्ष जार्ज तृतीय (George III) इंग्लैण्ड के सिंहासन पर आसीन हुआ। महत्त्वाकांक्षी युवा होने के कारण वह नाम मात्र का सम्राट बना रहने के लिये तैयार नहीं था। वह परिश्रमी तथा अपने स्वच्छ निजी जीवन के कारण लोकप्रिय भी था। लेकिन इसमें उन गुणों का अभाव था जो इतने विशाल राज्य के शासन के लिए आवश्यक थे। इस युवा सम्राट ने इंग्लैण्ड की संसद को अपनी कठपुतली बनाये रखने के लिए सफल प्रयास किये। अपने व्यक्तिगत समर्थकों की संख्या बढ़ाई एवं ह्विग दल की शक्ति को कम किया। अपने राज्य काल के प्रथम वर्ष में जार्ज तृतीय ने अपने आपको उन षड्यन्त्रों में लगाये रखा जिनका लक्ष्य सम्राट की शक्ति को बढ़ाना था। परिणामस्वरूप स्थायित्व रखने वाली कोई भी सरकार नहीं बनने दी गई। इससे न केवल इंग्लैण्ड की राजनीति दलगत बनी वरन् स्थायी सरकार के अभाव में दूरगामी दृष्टि से उपनिवेशों के प्रश्न व भविष्य के बारे में विचार भी नहीं किया जा सका। 1770 ईसवी तक जार्ज तृतीय ने अपने आपको पूर्ण दृढ़ता से स्थापित कर लिया। इंग्लैण्ड में वैधानिक सम्राट के स्थान पर देशभक्त सम्राट का आदर्श लोकप्रिय बनाया जाने लगा। जार्ज तृतीय ने अपने लक्ष्य की प्राप्ति की तथा इंग्लैण्ड की लोकतान्त्रिक व्यवस्था में स्वेच्छा से राज्य क रने लगा। उसने अपना एक दल गठित कर लिया जो सम्राट के मित्र कहलाते थे और इंग्लैण्ड की लोकसभा पर नियन्त्रण रखते थे। प्रधानमन्त्री लार्ड नार्थ (Lord North) भी सम्राट की सलाह से काम करता था। सम्राट ने खुशामदियों, चापलूसों तथा हाँ में हाँ भरने वालों को अपने इर्द-गिर्द इकट्ठा कर लिया। वे लोग उसे स्वेच्छाचार के मार्ग पर इसलिए आगे धकेलते रहे ताकि वे अपना उल्लू सीधा कर सकें। सम्राट के मित्रों में सामन्त, कुलीन वर्ग के लोग तथा अन्य अच्छे परिवार के लोग थे। इनमें से अनेक उपनिवेशों से लाभ उठाने के लिए वहाँ नौकरियों तथा अनेक सेवाएँ प्राप्त करने में सफल हुए। इन लोगों ने अंग्रेज व्यापारियों से भी सांठ-गांठ की जो कि उपनिवेशों में शोषण करते थे। इसलिये जार्ज तृतीय को अनेक उदार अंग्रेजों ने अमेरिकी क्रान्ति के लिए उत्तरदायी ठहराया। यद्यपि कुछ आधुनिक लेखकों ने उसे निर्दोष सिद्ध करने का प्रयत्न भी किया। इसमें कोई सन्देह नहीं कि जार्ज तृतीय के स्वेच्छाचारी शासन तथा 'सम्राट के मित्रों' (King's Friends) ने उन परिस्थितियों के विकास में सहयोग दिया जिनके कारण अमेरिकी क्रान्ति हुई।

(6) अमेरिकी उपनिवेशों की विधायक सभाओं की भूमिका - ब्रिटिश सरकार तथा अमेरिकी उपनिवेशवासियों की अभिवृत्ति तथा सिद्धान्तों में मतभेद था- इसमें कोई सन्देह नहीं है। इस मतभेद की क्रान्ति को मौलिक कारण माना जा सकता है, जिसमें निस्सन्देह परिस्थितियों ने योगदान दिया। अन्य परिस्थितियों के अतिरिक्त एक और परिस्थिति ने भी क्रान्ति की भूमिका बनाने में महत्त्वपूर्ण योग दिया। अमेरिकी उपनिवेशों की विधायक सभाएँ अपनी स्थापना से लेकर अठारहवीं शती के मध्य के पश्चात् तक लगभग स्वायत्त रूप से कार्य कर रही थीं। उन्हें विशेषत: आर्थिक मामलों में सम्पूर्ण अधिकार प्राप्त थे। ये सभाएँ अधिकारियों का वेतन निर्धारित करती थीं और उसमें कमी व वृद्धि कर सकती थीं। सप्तवर्षीय युद्ध के काल में आवश्यकता होने पर भी इन सभाओं में उपनिवेशों की जनता पर अतिरिक्त कर नहीं लगाये। उपनिवेशों ने सम्राज्यवादी युग में किसी प्रकार का योगदान नहीं दिया और न ही तस्कर-व्यापार को रोकने का

प्रयास किया। 1763 ईसवी के पश्चात् इंग्लैण्ड की सरकार द्वारा उपनिवेशों पर जो कड़ा नियन्त्रण करने का प्रयत्न किया गया, उसके विरुद्ध उपनिवेशों में होने वाली प्रतिक्रिया में इन उपनिवेशी विधायक सभाओं ने इस नियन्त्रण का विरोध किया। इस प्रकार ये सभाएँ क्रान्ति की माँग के प्रचार में माध्यम बनीं।

III. रूढ़िवादी अंग्रेजी व उदारवादी अमेरिकी समाज :

अमेरिका की क्रान्ति का सामाजिक कारण भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। इंग्लैण्ड के अधिकांश आप्रवासी अपने देश को छोड़ कर अमेरिका इसलिए चले गये थे कि वे अपने देश में स्टुअर्ट राजाओं के धार्मिक व सामाजिक शोषण को सहन करने में असमर्थ थे। इन आप्रवासियों ने अपने परिश्रम से जीवन को पुनः आरम्भ किया था। इनमें से एक नये प्रकार के समाज को जन्म देने की अभिलाषा जागृत हुई थी। इस प्रकार के समाज की कल्पना आप्रवासियों के तथा इंग्लैण्ड के तथाकथित रूढ़िवादी समाज से भिन्न थीं। अमेरिका में बसे हुए ये लोग कभी भी यह नहीं चाहते थे कि उनका निर्मित होने वाला समाज इंग्लैण्ड व यूरोप के समाज का केवल एक प्रतिरूप हो। अठारहवीं शती के अन्त तक जिस समाज का अमेरिका में निर्माण हुआ वह नया तथा नये विचारों का था। सादगी उसकी एक विशेषता थी। इसके विपरीत इंग्लैण्ड का समाज पुराना था। पेचीदगियाँ, दिखावा तथा अतिव्ययता उसकी विशेषताएँ थीं। आप्रवासियों में सामाजिक समानता की भावना प्रबल थीं जबकि इंग्लैण्ड में वर्ग-भेद था। इस प्रकार इन दो भिन्न समाजों में टकराव होना अनिवार्य था। फिर अमेरिका में कुछ ऐसे तत्त्व भी पहुँ च गये थे जिनको इंग्लैण्ड से उनके द्वारा किये गये अपराधों के लिए देश से निर्वासित किया गया था। इन लोगों में अपनी मातृभूमि के प्रति कोई सद्भावना नहीं थीं। ये लोग इंग्लैण्ड की सामाजिक व्यवस्था के आलोचक थे। इंग्लैण्ड के और अमेरिका के धर्म में बड़ा अन्तर था। इंग्लैण्ड के लोग एंग्लीकन चर्च के अनुयायी थे जबकि उपनिवेशवासी या तो धर्म के मामले में उदार थे या प्यूरिटन धर्मावलम्बी थे। धार्मिक विश्वासों में इंग्लैण्ड के लोगों तथा उपनिवेशों के लोगों की मान्यताओं में बड़ा अन्तर था।

IV. दोषपूर्ण अंग्रेजी प्रशासन तथा नीतियाँ :

अमेरिकी क्रान्ति में दोषपूर्ण अंग्रेजी उपनिवेशी प्रशासन तथा नीतियों ने भी अपना योग दिया। इसमें सन्देह नहीं कि जार्ज तृतीय के निरंकुशवाद के युग में उपनिवेशों की समस्याओं पर लापरवाही बरती गई। सप्तवर्षीय युद्ध की समाप्ति के साथ उपनिवेशों के विरुद्ध एक प्रतिक्रिया हुई। व्यापारियों, महाजनों तथा दूसरे स्वार्थी वर्गों ने अमेरिकी उपनिवेशों से सम्बन्ध और उनके प्रति नीति में परिवर्तन की माँग रखी जिसे स्वीकार भी कर लिया गया। इस प्रकार 1763 ईसवी के पश्चात् मातृ राज्य तथा उपनिवेशों में दूसरे प्रकार के सम्बन्ध स्थापित करने के प्रयास किये गये जो वास्तव में निर्दय तथा कठोर थे। इस प्रकार के परिवर्तनों का विरोध कुछ ब्रिटिश राजनीतिक नेताओं ने भी किया जिनमें एडमण्ड बर्क (Edumund Burke) तथा एर्ल ऑफ चैथम (Earl of Chatham) के नाम उल्लेखनीय हैं। इंग्लैण्ड की सरकार ने बर्क इत्यादि के विरोध की कोई परवाह नहीं कि तथा उपनिवेशों के प्रति अपनी नीति परिवर्तन की, जिसके भंयकर परिणाम हुए।

एक लेखक ने ठीक ही कहा है कि 1760 से 1770 ईसवी तक लन्दन में राजनीतिज्ञता का अभाव रहा और इस कमी ने अमेरिकी क्रान्ति के विस्फोट में अपना योग दिया। अंग्रेजी प्रशासन तथा नीतियों के अमेरिकी क्रान्ति में योगदान का विवरण इस प्रकार दिया जा सकता है।

जार्ज तृतीय और उसके मन्त्री ग्रेनविले (Greenvile) ने अमेरिकी उपनिवेशों को मध्ययुगीन जागीरों के समकक्ष समझा जिन पर उनके अनुसार प्रभावी नियन्त्रण स्थापित किया जाना अनिवार्य था। ग्रेनविले ने अमेरिका में स्थायी सेना की स्थापना, व्यापार के अधिनियमों को लागू कराने तथा करों के माध्यम से राजस्व की वृद्धि करने की नीति की घोषणा की।

1763 ईसवी में ब्रिटिश सरकार ने दस हजार सैनिक उत्तर अमेरिका में भेजे जिन्हें मुख्य रूप से कनाडा, नोवा स्कोटिया (Nova Scotia) तथा न्यू यार्क रखा जाना था। इस सेना के भेजने का उद्देश्य इण्डियनों तथा फ्रांसीसियों के सम्भावित आक्रमण की रोकथाम था। चूँकि यह सेना उपनिवेशों की सुरक्षार्थ भेजी गई अत: निर्णय लिया गया कि इस पर होने वाले व्यय का आंशिक भुगतान उपनिवेश भी करें। इस निर्णय का मुख्य उत्तरदायित्व ग्रेनविले पर था। ग्रेनविले ने इस व्यय-भार को उपनिवेशों पर लादने के लिये विभिन्न व्यापारिक अधिनियम (Trade Acts)घोषित किये। उसने व्यापारिक नियमों को लागू करने के लिये सहायता प्रादेशों को व्यापक प्रयोग किया।

अमेरिकी उपनिवेशवासियों द्वारा जिन व्यापारिक अधिनियमों का उल्लंघन किया जा रहा था उसमें 1733 ईसवी का शीरा अधिनियम (Molasses Act) प्रमुख था। इस अधिनियम के अनुसार फ्रेन्च व स्पेनिश वेस्ट इण्डीज (Spanish West Indies) से आयात किये जाने वाले शीरे के एक गेलन पर छ: पेन्स चुंगी वसूल की जाती थी। इस चुंगी का प्रमुख उद्देश्य यह था कि अमेरिकी उपनिवेशवासी शीरे का क्रय ब्रिटिश प्लान्टर्स से ही करें। ग्रेनविले ने इसे प्रभावी बनाकर लाभ प्राप्त करना चाहा। 1764 ईसवी के 'शुगर अधिनियम' (Sugar Act) ने 1733 के शीरा अधिनियम को संशोधित कर दिया। इस अधिनियम के अनुसार शीरे पर चुंगी छ: पेन्स से घटाकर तीन पेन्स कर दी गई, किन्तु साथ ही उसे वसूल करने की पूर्ण व्यवस्था की गई। शक्कर पर चुंगी की दर में वृद्धि की गई और शराब, रेशम व अन्य प्रकार के वस्त्रों पर कर लगाया गया। कस्टम सेवा का विस्तार किया गया और कस्टम अधिकारियों को विस्तृत क्षेत्राधिकार प्रदान किये गये। 1764 ईसवी में करेन्सी अधिनियम (Currency Act) अंग्रेजी देनदारों को प्रार्थना पर पारित किया गया, जिसके अनुसार भविष्य में उपनिवेशों में पत्र मुद्रा (Paper Money) के प्रचलन पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया। लेनदारों द्वारा मुद्रा के गिरे हुए मूल्य पर ऋणों के भुगतान पर रोक लगा दी गई। 1765 ईसवी में स्टाम्प एक्ट (Stamp Act) पारित किया गया जिसके द्वारा समाचार पत्रों, कानूनी तथा व्यापारिक दस्तावेजों पर स्टाम्प ड्यूटी का भुगतान अनिवार्य कर दिया गया। 1765 ईसवी के क्वार्टरिंग अधिनियम (Quartering Act) के अनुसार उपनिवेशों में स्थित सेना की आपूर्ति कम होने पर उनकी पूर्ति करना अनिवार्य कर दिया गया। यद्यपि इस प्रकार के प्रत्यक्ष कर व्यापारिक कानूनों के अंग थे तथापि यह प्रथम अवसर था जबकि उपनिवेशों पर प्रत्यक्ष कर लगाये गये थे।

स्टाम्प एक्ट का अमेरिकी उपनिवेशवासियों ने विरोध किया। वे सेना की उपस्थिति न तो आवश्यक मानते थे और न ही वंछित। वे मुद्रा की कमी व युद्धोतर मन्दी से पीड़ित थे। यद्यपि

उन्होंने व्यापारिक अधिनियम अन्याय पूर्ण हो हुए स्वीकार किया था, किन्तु प्रत्यक्ष करों को उन्होंने मौलिक कानून तथा प्रकृत्य अधिकारों के विरुद्ध माना। उन्होंने 'बिना प्रतिनिधित्व के कर' को अत्याचार का नारा प्रदान किया। सभी उपनिवेशों ने इसका विरोध किया। अक्टूबर 1765 ईसवी में न्यू यार्क में नौ उपनिवेशों के प्रतिनिधियों ने सामूहिक विरोध प्रकट किया। इतना ही नही, नगरीय मिस्त्रियों आदि ने इनके विरुद्ध हिंसात्मक प्रदर्शन किये और स्टाम्प पेपर कर वसूल करने वाले अधिकारियों का जीवन दु:खद बना दिया। अपने आपको 'स्वतन्त्रता के पुत्र' (Sons of Liberty) कहने वाले इज्जेक सीयर्स (Issac Sears), जान लेम्ब (John Lamb), चार्ल्स थामसन (Charles Thomson) आदि ने आगामी दस वर्षों में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की। स्टाम्प एक्ट के विरोध में अमेरिकी उपनिवेशों में अंग्रेजी माल का बहिष्कार किया गया। इससे अंग्रेजी व्यापारियों को भारी क्षति उठानी पड़ी। अत: उन्होंने सरकार से समझौतापूर्ण नीति को अपनाने की प्रार्थना की। 1766 ईसवी में रोकिंघम (Rockingham) की सरकार ने स्टाम्प एक्ट को वापस ले लिया। 1764 ईसवी में लगाई गई चुंगी को कम कर दिया, किन्तु 1766 ईसवी में 'डेकलेरेटरी अधिनियम' (Declatory Act) पारित किया जिसके अनुसार ब्रिटिश संसद के उपनिवेशों में किसी भी समय कर लगाने के अधिकार को पुन: घोषित किया गया।

रोकिंघम के स्थान पर अर्ल ऑफ चैथम प्रधानमन्त्री बना। उसके काल में वित्तमन्त्री टाउनसेण्ड (Townshend), जो महत्त्वाकांक्षी था, उपनिवेशों के प्रति स्व-निर्धारित नीति का पालन करने लगा। इंग्लैण्ड की संसद ने इंग्लैण्ड में करों को घटा दिया था। अत: इससे होने वाले घाटे को पूरा करने के लिए संसद का ध्यान अमेरिकी उपनिवेशों की ओर गया। उसने व्यापार-अधिनियमों के माध्यम से राजस्व वसूल करने का प्रयास किया। 1767 ईसवी में टाउनसेण्ड ने न्यू यार्क की विधायक सभा को 'क्वार्टरिंग अधिनियम' के उल्लंघन करने पर भंग कर दिया। आगामी वर्षों में मैसाचुसेट्स के जनरल कोर्ट को संयुक्त विरोध का पत्र निकालने के आरोप में भंग कर दिया। टाउनसेण्ड द्वारा लगाये गये इन करों का विरोध उपनिवेशों द्वारा किया गया। इन करों का विरोध पेनसिलवेनिया के अनुदारवादी वकील जान डिकिन्सन (John Dickinson) द्वारा किया गया। उसने व्यापार को नियमित करने के संसद के अधिकार को स्वीकार किया, किन्तु प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष कर लगाने के अधिकार को नहीं। उपनिवेशों से ब्रिटिश माल का बहिष्कार किया गया। अनेक बन्दरगाहों पर अवैध व्यापार करने वालों की कस्टम अधिकारियों से रक्षा 'स्वतन्त्रता के पुत्रों' द्वारा की गई।

1768 ईसवी में बोस्टन में तस्कर व्यापार को रोकने के लिए दो रेजीमेण्ट रखे गये। 'स्वतन्त्रता के पुत्रों' ने इन सैनिकों को छकाया और अन्ततोगत्वा 5 मार्च, 1770 ईसवी को सैनिकों और नगरवासियों में झगड़ा हो गया जिसके फलस्वरूप चार व्यक्ति मारे गये। अमेरिका के इतिहास में यह घटना 'बोस्टन हत्याकाण्ड' (Boston Massacre) के नाम से प्रसिद्ध है। अत: 1770 ईसवी में टाउनसेण्ड अधिनियमों को निरस्त कर दिया गया।

इसके पश्चात् लार्ड नार्थ इंग्लैण्ड का प्रधानमन्त्री बना। उसने 'बोस्टन हत्याकाण्ड' के दिन टाउनसेण्ड अधिनियम को निरस्त करने की सिफारिश की। संसद की सर्वोच्चता के संकेत के रूप में चाय पर चुंगी लगी रही। आरम्भ में लार्ड नार्थ की नीति समझौते की रही। किन्तु उपनिवेश के

लोग अपने राजनीतिक तथा आर्थिक अधिकारों के हनन के विरुद्ध कदम उठाने के लिए तत्पर थे। सेम एडम्स (Sam Adams) ने, जो अंग्रेजों के अधिकारों का विरोधी था, 1722 ईसवी में पत्र व्यवहार समिति (Commitee of Correspondence) की स्थापना की, जिसका मुख्य उद्देश्य उपनिवेशों के अधिकारों को सुरक्षित रखना था।

V. क्रान्ति का सूत्रपात:

1773 ईसवी में ईस्ट इण्डिया कम्पनी को वित्तीय संकट से उबारने के लिए लार्ड नार्थ ने यह निश्चय किया कि कम्पनी प्रत्यक्ष ही अमेरिका में चाय बेच सकती है तथा उसे पहले की भाँति कम्पनी के जहाजों को ब्रिटिश बन्दरगाहों पर आने व चुंगी देने की आवश्यकता नहीं है। इस कदम का स्पष्ट लक्ष्य था कि कम्पनी घाटे से बच जायेगी और अमेरिका के लोगों को कम कीमत पर चाय उपलब्ध हो सकेगी। किन्तु कम्पनी के एकाधिकार ने उपनिवेश के लोगों को अप्रसन्न कर दिया। इसका अर्थ यह था कि अन्य देशों की अपेक्षा ब्रिटिश चाय सस्ती कीमत पर बिकेगी। अत: अनेक व्यापारी 'स्वतन्त्रता के पुत्रों की संस्था' के सदस्य बन गये। चाय की प्रथम खेप बसन्त में पहुँची। अनेक स्थानों पर चुंगी का भुगतान करने से रोका गया। कुछ जहाजों के कप्तान तो चाय को खाली किये बिना लौट गये, किन्तु कुछ के साथ हिंसात्मक घटनाएँ हुईं।

VI. बोस्टन टी पार्टी :

सभी बन्दरगाहों पर लोग उनका विरोध करने के लिए कटिबद्ध थे। फिलाडेल्फिया (Philadelphia) तथा न्यू यार्क से उन जहाजों को वापस कर दिया गया जिनमें चाय लायी गई। बोस्टन में उत्तेजना अत्यधिक थी। 16 दिसम्बर, 1773 ईसवी की रात को करीब पचास व्यक्तियों ने इण्डियन्स का वेश धारण कर सेम ऐडम्स के नेतृत्व में जहाज पर चढ़कर चाय की तीन सौ तैंतालीस पेटियाँ बन्दरगाह में डाल दीं। अमेरिकी इतिहास में यह घटना 'बोस्टन टी पार्टी' (Boston Tea Party) के नाम से प्रसिद्ध है। इस घटना के महत्त्वपूर्ण और दूरगामी परिणाम अवश्यसम्भावी थे। समस्त अमेरिकन उपनिवेशों में हिंसात्मक घटना की प्रशंसा की गई और ब्रिटिश सत्ता को एक चुनौती दी गई।

VII. क्यूबेक अधिनियम एवं दण्डात्मक कानून :

अंग्रेजों ने इसका प्रत्युत्तर 'इनटोलेरेबल अधिनियम' (Intolerable Act) पारित कर दिया। 'बोस्टन पोर्ट बिल' (Boston Port Bill)के अनुसार बोस्टन का बन्दरगाह उस समय तक बन्द कर दिया गया जब तक कि उपनिवेश चाय की क्षति का भुगतान नहीं कर देते। मैसाचुसेट्स सरकारी अधिनियम (Massachusetts Act) को पारित कर गवर्नर की सत्ता को बढ़ाने का प्रयास किया गया। 'न्याय प्रशासन अधिनियम' के अनुसार अंग्रेजी अधिकारियों को यह सुविधा प्रदान की गई कि दंगों के दबाने में हत्या आदि से उत्पन्न मुकदमों को सुनवाई के लिए इंग्लैण्ड भेजा जाये। 'क्वार्टरिंग एक्ट' के अनुसार सैनिकों की आवास-प्रथा को वैधानिक करार दिया गया। 'क्यूबेक अधिनियम' के अनुसार कनाडा में रहने वाले कैथोलिकों को सहिष्णुता प्रदान की गई और क्यूबेक की सीमा ओहियो नदी तक बढ़ा दी गई। पश्चिमी क्षेत्र के शासन प्रबन्ध हेतु एक वायसराय की नियुक्ति की गई। वास्तव में 'क्यूबेक अधिनियम' के द्वारा इंग्लैण्ड

की सरकार ने फ्रेन्च-कनेडियन जनता की इच्छा की पूर्ति की थी, किन्तु औपनिवेशिक प्रचारकों ने इसे लार्ड नार्थ द्वारा उपनिवेशों की स्वतन्त्रता को समाप्त करने और कैथोलिक धर्म की अभिवृद्धि का साधन बताया। इन दण्डात्मक कानूनों (Coercive Acts) से स्पष्ट हो गया कि ब्रिटिश सरकार के मत में अमेरिकनों को ब्रिटिश संसद की इच्छा के विरुद्ध राजनीतिक और कानूनी अधिकार प्राप्त नहीं हैं। उपनिवेशों में इन नवीन कानूनों से सनसनी उत्पन्न हो गई। अमेरिकी प्रोटेस्टेन्टों ने इनकी आलोचना की यद्यपि इस आलोचना के पीछे उनके आर्थिक व धार्मिक स्वार्थ निहित थे। आर्थिक इसलिए कि क्यूबेक के सीमा प्रसार से मैसाचुसेट्स, कनेक्टिकट और वर्जीनिया के पश्चिमी क्षेत्र की भूमि पर अधिकार समाप्त होने की सम्भावना थी, जबकि आज्ञा पत्रों के अनुसार इनका इस भूमि पर अधिकार था। धार्मिक आपत्ति में आप्रवासियों की शासन सम्बन्धी आपत्तियाँ थीं। इनका कहना था कि कैथोलिकों को सहिष्णुता प्रदान करने में राजनीतिक चाल है। जब इंग्लैण्ड और आयरलैण्ड में ही उनको सहिष्णुता प्राप्त नहीं है तो फिर अमेरिका में क्यों प्रदान की जा रही है। क्यूबेक अधिनियम का मुख्य कारण फ्रांसीसियों का सहयोग प्राप्त करना था। इसके अतिरिक्त पादरियों को दशांश वसूल करने का अधिकार दिया गया इसलिए जनता में आक्रोश बढ़ा।

VIII. इंग्लैण्ड की संसद की सर्वोच्चता को चुनौती:

प्रथम महाद्वीपीय कांग्रेस (1774 ईसवी) - जब इन अधिनियमों की सूचना अमेरिका में जा पहुँची तो उपनिवेशवासियों ने इनका विरोध करने का निश्चय किया। इस पर विचार करने के लिए एक महाद्वीपीय सम्मेलन बुलाने का निश्चय किया गया। वर्जीनिया का आमन्त्रण मिलने पर जार्जिया को छोड़ कर अन्य सभी उपनिवेशों ने अपने-अपने प्रतिनिधि भेजे। इनमें कुछ का चयन विधायक सभाओं द्वारा किया गया और कुछ का स्वनिर्मित समितियों द्वारा। 5 सितम्बर, 1774 ईसवी को इन विभिन्न क्षेत्रों के छप्पन प्रतिनिधि फिलाडेल्फिया में एकत्रित हुए। इस प्रथम महाद्वीपीय कांग्रेस (First Continental Congress) के सदस्य दो गुटों में विभक्त हो गये। एक दल उग्रवादियों का था जिसकी मान्यता थी कि अब शक्ति प्रयोग का समय आ गया है। इस दल के प्रमुख सदस्य जान एडम्स, सेम एडम्स, पेट्रिक हेनरी तथा रिचार्ड हेनरी ली थे। दूसरी ओर कुछ उदारवादी थे जिनकी मान्यता थी कि अब भी समझौता हो सकता है। इस काँग्रेस में आरम्भिक सफलता उग्रवादियों को प्राप्त हुई जबकि यह प्रस्ताव पारित किया गया कि दण्डात्मक कानूनों के पालन करने से इनकार कर दिया जाना चाहिये। यह सशस्त्र विरोध की नीति का अनुमोदन था, किन्तु अब भी अधिकांश सदस्यों की मान्यता थी कि युद्ध ही समस्या के समाधान का एकमात्र रास्ता नहीं था। उनके विचार से व्यापारिक बहिष्कार से ब्रिटिश सरकार को झुकाया जा सकता था। अत: यह स्वीकार किया गया कि ब्रिटेन के साथ होने वाले सभी प्रकार के व्यापार को रोक दिया जाये। प्रत्येक नगर में एक सुरक्षा व निरीक्षण समिति (Commitee of Safety and Inspection) का निर्माण यह देखने के लिए किया जाये कि इस निर्णय का पालन हो रहा है तथा व्यापारी उसका उल्लंघन तो नहीं कर रहे हैं। उदारवादियों को प्रसन्न करने के लिए काँग्रेस ने एक 'अधिकारों और शिकायतों का घोषणा पत्र' (Declaration of Rights and

Grievances) भी पारित किया। सम्राट को एक याचना-पत्र भेजा गया जिसमें सम्राट के प्रति शक्ति की अभिव्यक्ति करते हुए उनकी शिकायतों को दूर करने की प्रार्थना की गई। पेनसिलवेनिया के प्रतिनिधि जोसेफ गैलावे (Joseph Galloway) ने एक योजना प्रस्तुत की जिसमें एक संघ निर्माण की व्यवस्था थी जिसका संचालन-सम्राट द्वारा नियुक्त अध्यक्ष को करना था। योजना में एक ग्राण्ड कौन्सिल (Grand Council) की भी व्यवस्था थीं जिसके सदस्य उपनिवेशों की विधायक सभाओं से चुन कर आते थे। इस प्रकार उपनिवेशों की सत्ता का विभाजन ब्रिटिश संसद और कौन्सिल में करने का प्रावधान था किन्तु एक वोट से यह योजना अस्वीकार कर दी गई।

अब अमेरिकियों में यह विचार परिपक्व हो रहा था कि मूल प्रश्न संसद के अधिकारों की सीमितता नहीं है वरन् संसद की उपनिवेशों पर किसी भी प्रकार की सत्ता का है। उन्हें गृह-प्रशासन में पूरी तरह सम्मिलित किया जाये और उनकी भक्ति क्राउन (Crown) के प्रति हो। उपनिवेशों को स्वायत्त शासन का अधिकार होना चाहिये। यह सिद्धान्त बेंजामिन फ्रेन्कलिन द्वारा सुझाया गया था और 1774 तथा 1775 ईसवी में एक लेख द्वारा इस विचार को दृढ़ बनाया गया था। अन्त में महाद्वीपीय काँग्रेस ने इस विचार को स्वीकार कर लिया। इंग्लैण्ड द्वारा इस विचार का स्वीकार करना सम्भव नही था। यहाँ तक कि बर्क और चैथम जैसे उदारवादी भी 'संसद की सर्वोच्चता' के बारे में किसी प्रकार का सन्देह नहीं रखते थे। 1775 ईसवी के प्रारम्भ में लार्ड नार्थ ने यह प्रस्तावित किया कि यदि कोई उपनिवेश साम्राज्यिक सुरक्षा में अनुदान देगा, उसे संसदीय करों से मुक्त कर दिया जायेगा।

प्रथम महाद्वीपीय काँग्रेस की समाप्ति के पश्चात् मैसाचुसेट्स के प्रतिनिधि इस आशा के साथ लौटे थे कि इन दमनकारी कानूनों के विरोध में अन्य उपनिवेशों का समर्थन प्राप्त होगा। जनरल गेज (General Gage) ने बोस्टन पर अधिकार कर लिया। दूसरी ओर जॉन हॉनकॉक (John Honcock) के नेतृत्व में मैसाचुसेट्स की विधायक-सभा का प्रान्तीय काँग्रेस के रूप में पुनःनिर्माण किया गया। इस प्रकार एक क्रान्तिकारी शासन का संगठन हो गया और सैनिक भी इकट्ठे होने लगे। गेज ने बोस्टन से अठारह मील दूर कांकॉर्ड (Concord) में एकत्रित होने वाले शस्त्रों को नष्ट करने के लिए 19 अप्रेल, 1775 ईसवी को सैनिक भेज दिये। साथ ही आदेश दिया कि यदि सम्भव हो सके तो हॉनकॉक (Honcock) तथा सेम एडम्स को गिरफ्तार कर लिया जाये। ब्रिटिश सैनिक लेक्सिंगटन (Lexington) पहुँचे जहाँ उनका विरोध सशस्त्र प्रवासियों द्वारा किया गया। यहाँ पर हुई मुठभेड़ में मैसाचुसेट्स के दो सिपाही मारे गये और अन्य दो घायल हुए। तत्पश्चात् वे कांकॉर्ड में शस्त्र भण्डार को नष्ट करने में सफल हुए, किन्तु वापस लौटते हुए ब्रिटिश सैनिकों पर अमेरिकनों द्वारा आक्रमण किया गया जिसमें दो सौ व्यक्ति मारे गये। इसके पश्चात् बीस हजार लोग केम्ब्रिज (Cambridge) में एकत्रित हुए और बोस्टन में अंग्रेजी सेना एक प्रकार से घिर गई।

IX. द्वितीय महाद्वीपीय काँग्रेस :

मई, 1775 ईसवी में फिलाडेल्फिया के नगर में द्वितीय महाद्वीपीय काँग्रेस (Second Continental Congress) का अधिवेशन प्रारम्भ हुआ। इस सभा में कुछ उल्लेखनीय नये

प्रतिनिधि आये जिनमें बेंजामिन फ्रेन्कलिन तथा थामस जैफरसन (Thomas Jefferson) के नाम प्रमुख हैं। फिलाडेलफिया की यह काँग्रेस प्रथम महाद्वीपीय काँग्रेस की तुलना में अधिक उग्र थी। इसने बिना किसी संकोच के कुछ महत्त्वपूर्ण प्रश्नों पर तत्काल निर्णय लिये। इस काँग्रेस को बेंजामिन फ्रेन्कलिन का अनुभव प्राप्त हुआ जो अठारह वर्ष तक पेनसिलवेनिया विधायक-सभा के प्रतिनिधि के रूप में इंग्लैण्ड में काम कर चुका था। इस सभा ने सबसे महत्त्वपूर्ण निर्णय यह लिया कि मिलिशिया (Militia) को महाद्वीपीय काँग्रेस की सेना का नाभिक (Nucleus) बना दिया जाये। 15 जून, 1775 ईसवी को जॉन एडम्स के सुझाव पर जार्ज वाशिंगटन को इस प्रस्तावित सेना का सेनापति नियुक्त कर दिया गया। काँग्रेस ने मैसाचुसेट्स के राज्य को युद्ध अभियान के हेतु पूर्ण सहयोग प्रदान करने का वचन दिया। यह भी स्वीकार किया कि यह राज्य एक केन्द्रीय सरकार का उत्तरदायित्व ग्रहण कर ले। इस कार्य के लिए इस राज्य को अधिकार एवं समर्थन प्रदान किया गया। द्वितीय महाद्वीपीय काँग्रेस के सम्बन्ध में यह स्मरण रहे कि अमेरिका के अधिकांश उपनिवेशवासी पूर्ण स्वतन्त्रता की कल्पना नहीं कर रहे थे और सम्भवत: यह नहीं चाहते थे कि मातृ राज्य से सभी सम्बन्ध विच्छेद कर दिया जायें लेकिन क्रांति अन्तिम रूप ले चुकी थी एवं स्वाधीनता-संग्राम का श्रीगणेश हो चुका था।

X. ब्रिटिश अधिकारों का प्रशासनिक क्षेत्र में अन्त का आरम्भ :

क्रान्ति के प्रारम्भ होते ही उपनिवेशों से ब्रिटिश अधिकार प्रशासन के क्षेत्र में लुप्त होने लगे तथा अल्प समय में ही उसकी समाप्ति हो गई। ब्रिटिश गवर्नरों को भाग जाना पड़ा। उपनिवेशों की विधायक-सभाओं ने सब अधिकार ग्रहण कर लिये। 'सुरक्षा एवं निरीक्षण समितियाँ' (Committees of Safety and Inspection) भिन्न-भिन्न स्थानों पर स्थापित की गई जिनके माध्यम से कार्यपालिका के कार्य किये गये एवं समस्त अन्य उत्तरदायित्व निभाये गये। ये समितियाँ आवश्यक निर्देश प्रदान करने लगीं। इनके द्वारा आदेशों का पालन कराने के लिए नगरों में तथा काउन्टियों में स्थानीय समितियों को उत्तरदायित्व प्रदान किया गया। ये समितियाँ प्रथम महाद्वीपीय काँग्रेस के आदेश पर स्थापित की गई थीं। द्वितीय महाद्वीपीय काँग्रेस की उपलब्धि इस प्रकार अत्यन्त महत्त्वपूर्ण थी, क्योंकि इसमें सभी तेरह उपनिवेशों में ब्रिटिश प्रशासन के स्थान पर नई सरकारें स्थापित करने में सफलता प्राप्त की थी। उपनिवेशों की सत्ता अब क्रान्तिकारियों के हाथ में आ रही थी। 1775 ईसवी के अन्त में ब्रिटिश सरकार ने उपनिवेशों में बलपूर्वक किये परिवर्तनों को विद्रोह घोषित कर दिया और उपनिवेशों में समस्त व्यापार का विभाजन कर दिया। ब्रिटिश सरकार के इस निर्णय पर अमेरिकी नेता जॉन एडम्स ने घोषणा की कि वे सब स्वतन्त्र हैं तथा अब वे किसी भी प्रकार से इंग्लैण्ड के संरक्षण में नही हैं।

XI. अमेरिका में विभिन्न वर्गों व संघर्ष के प्रति दृष्टिकोण :

इस प्रकार उपनिवेशों से इंग्लैण्ड की राजशाही सत्ता लगभग समाप्त हो गई। स्वाधीनता संग्राम छिड़ गया लेकिन अब भी अधिकांश अमेरिकी नागरिक अपना निर्णय नहीं ले पाये थे। अनेक वर्गों में संकोच था। वे अपने आपको विद्रोहियों में सम्मिलित नहीं करना चाहते थे। उत्तर के उपनिवेशों में अधिकांश लोग अब भी क्रान्तिकारी समितियों की अपेक्षा इंग्लैण्ड के राजशाही

शासन के अधीन ही रहना चाहते थे। इसी प्रकार मध्य के उपनिवेशों के धनी किसानों में इंग्लैण्ड से सम्बन्ध-विच्छेद करने की भावना के विरुद्ध प्रतिक्रिया थी, क्योंकि उनको विश्वास था कि ऐसा करने के लिए कोई कारण नहीं है तथा ऐसा करना न्यायसंगत नहीं होगा। इसी प्रकार से दक्षिण के उपनिवेशी राज्यों के प्लान्टर्स इंग्लैण्ड की राजशाही के पक्ष में थे। उनके कारण दूसरे किसान क्रान्ति का समर्थन नहीं करना चाहते थे। इंग्लैण्ड का समर्थन करने वाले अधिकांश लोग कुलीन वर्ग के थे। ये लोग निष्ठावादी (Loyalist) कहलाते थे। इन लोगों की संख्या अमेरिकी जनता का तिहाई भाग था। इनमें से निस्सन्देह सत्तर से अस्सी हजार लोग तो वास्तव में कट्टर निष्ठावादी थे। क्रान्ति के पश्चात् इन लोगों का उपनिवेशों से निर्वासन किया गया तथा अधिकांश लोग कनाडा चले गये। क्रान्ति के काल में 'सुरक्षा एवं निरीक्षण समिति' के लोगों द्वारा इनका दमन भी किया गया था तथा अनेक लोगों को कारागार की सजा दी गई थी। युद्ध के काल में इस वर्ग पर शंका की गई कि वे ब्रिटिश सेना को सहायता दे रहे हैं। अत: अनेक राज्यों की व्यवस्थापिकाओं ने नियम बनाकर इन लोगों की सम्पत्ति जब्त करली तथा उन्हें राजनीतिक अधिकारों से भी वंचित कर दिया। फिर भी अमेरिका की क्रान्ति में रक्तपात अधिक नहीं हुआ तथा निष्ठावादी लोगों की हत्याओं के कम उदाहरण हैं।

क्रान्ति का समर्थन मुख्य रूप से उत्तर के उपनिवेशों के किसानों, कारीगरों तथा व्यापारियों ने किया। दक्षिण के कुछ प्लान्टर्स ने, जो अंग्रेजी वाणिज्यवाद के विरुद्ध थे, क्रान्तिकारियों का साथ दिया। उत्तर के राज्यों में उपनिवेशों की अधिकांश जनसंख्या रहती थी फिर भी क्रान्ति का उग्र रूप से समर्थन करने वालों का अमेरिका की जनसंख्या का केवल एक-तिहाई भाग था तथा शेष एक-तिहाई लोग अमेरिका में क्रान्ति के अन्त तक अनिश्चित ही रहे। क्रान्ति के समर्थक 'देशभक्त' कहलाये। ये लोग प्रजातान्त्रिक विचार से प्रेरित थे तथा अपने आपको निरंकुशवाद एवं कुलीन तन्त्र के शत्रु मानते थे।

XII. क्रान्ति का लक्ष्य :

(1) स्वाधीनता की घोषणा पर विचार - प्रशासनिक रूप से अमेरिकी उपनिवेश 1775 ईसवी के अन्त तक स्वतन्त्र हो चुके थे लेकिन देशभक्तों, निष्ठावादी लोगों तथा अनिश्चित उपनिवेशवादियों के आपसी मतभेदों के कारण यह स्पष्ट नहीं हो पाया कि क्रान्ति के पश्चात् उपनिवेशों का क्या स्वरूप होगा एवं स्वयं क्रान्ति का लक्ष्य किस प्रकार से और क्या निश्चित् होगा। 1776 ईसवी के प्रारम्भ में यह स्पष्ट हो गया कि ब्रिटिश सरकार उपनिवेशों से किसी प्रकार का समझौता करने के लिए तैयार नहीं है। वह अपनी सैनिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने हेतु विचार कर रही थी। फिर भी उपनिवेशवासी भविष्य के लिए अपना अन्तिम निर्णय लेने में संकोच कर रहे थे। इस कार्य में एक अंग्रेज आप्रवासी टॉम पैन (Tom Paine) ने बड़ा योग दिया। जनवरी 1776 में उसने एक चौपन्ना (Pamphlet) प्रकाशित किया जिसका शीर्षक था 'कॉमन सेन्स' (Commen Sense)। पैन ने सरल व प्रभावशाली भाषा में यह दावा किया कि उपनिवेशवासी ब्रिटिश शासकों की तुलना में अपने प्रशासनों को अच्छी तरह चला सकते हैं और उनके लिए वह स्वर्ण अवसर आ गया है जबकि वे एक ऐसे नये समाज की रचना कर सकते हैं। जिसमें

यूरोपियन पृष्ठभूमि वाला शोषण तथा अत्याचार नहीं हो। पैन ने यह भी स्पष्ट किया कि इस प्रकार से किया गया कार्य अवैध नहीं माना जा सकता, क्योंकि उपनिवेशवासियों को अपने उदार आदर्शवाद तथा प्रबुद्ध स्वार्थों के अनुसार जीवित रहने का अधिकार है। पैन का चौपन्ना लाखों की संख्या में बिकने लगा और सम्भवत: उपनिवेशों के सभी शिक्षित देशभक्तों ने पढ़ा। इससे उनमें यह मान्यता बनी कि पूर्ण स्वाधीनता ही उपनिवेशवासीयों का लक्ष्य होना चाहिये और इस प्रकार लक्ष्य ही 'कॉमन सेन्स' होगा। पैन के समकालीन प्रभाव को शब्दों में व्यक्त करना कठिन है लेकिन यह सभी मानते हैं कि उसके चौपन्ने ने ही उपनिवेशवासियों को अनिश्चितता के मार्ग से हटा कर निश्चित लक्ष्य की दिशा में ला खड़ा किया। यहाँ यह बात बता देना उचित होगा कि 1775 ईसवी के मध्य तक पाँच उपनिवेशों की विधायक सभाएँ पूर्ण स्वाधीनता के विरोध में प्रस्ताव पारित कर चुकी थीं। मध्य के उपनिवेशों में वर्ष के अन्त तक पूर्ण स्वाधीनता के विचार का विरोध किया जा रहा था। पैन के सरल दर्शन से प्रेरणा लेकर द्वितीय महाद्वीपीय काँग्रेस ने 1776 ईसवी के मध्य में सभी उपनिवेशों से स्वतन्त्र सरकारों की स्थापना करने के लिए आह्वान किया। तत्पश्चात् काँग्रेस के समक्ष वर्जीनिया के प्रतिनिधि हेनरी ली ने उपनिवेशों की स्वाधीनता की स्थापना के लिए एक व्यावहारिक प्रस्ताव रखा और यह प्रार्थना की कि काँग्रेस अपने प्राधिकार से प्रस्ताव को मान्य करे। काँग्रेस में ली के पक्ष के सिद्धान्त के अतिरिक्त व्यावहारिक पक्ष पर भी विचार हुआ। सभी ने इस दलील को माना कि पूर्ण स्वाधीनता का लक्ष्य रख कर ही उपनिवेशवासी फ्रांसीसी सहायता प्राप्त कर सकेंगे। ली का प्रस्ताव 2 जुलाई, 1776 ईसवी को स्वीकार किया गया। न्यू यार्क राज्य को छोड़ कर सभी उपनिवेशों ने इसे अपना समर्थन प्रदान किया। ली के प्रस्ताव के पारित होने के पश्चात् काँग्रेस ने एक समिति बनाई जिसने व्यावहारिक रूप से स्वाधीनता की घोषणा का प्रारूप तैयार करने का कार्य किया। इस समिति का अध्यक्ष थामस जैफरसन को बनाया गया।

(2) स्वाधीनता की घोषणा - अमेरिकी क्रान्ति का लक्ष्य उपनिवेशवासियों के लिए प्राकृतिक अधिकारों की प्राप्ति था। अत: जैफरसन का उत्तरदायित्व यह हो गया कि वह प्राकृतिक अधिकारों के सिद्धान्तों की तर्क-सम्मत व्याख्या करे तथा उस काल के अमेरिकीयों की राजनीतिक मान्यताओं तथा दर्शन को स्पष्ट करे। उपनिवेशवासियों ने अपनी राजनीतिक विचारधाराएँ विशेषत: इंग्लैण्ड तथा यूरोप से ग्रहण की थीं। समकालीन राजनीतिक दर्शन प्रबुद्धवाद पर आधारित था तथा उपनिवेशवासी जॉन लॉक के दर्शन से प्रभावित थे, क्योंकि लॉक प्राकृतिक अधिकारों का सबसे बड़ा समर्थक था। प्राकृतिक अधिकारों के अन्तर्गत यह आधार-वाक्य माना जाता था कि ईश्वर द्वारा सभी प्राणियों को कुछ अहरणीय अधिकार प्राप्त हैं जिनका संरक्षण करने के लिए सरकारों की स्थापना की जाती है। अगर किसी सरकार द्वारा उन अधिकारों को नष्ट किया जाता है तो प्राणियों का यह अधिकार है कि वे ऐसी सरकार को परिवर्तित कर दें अथवा मिटा दें। जैफरसन ने अपनी स्वाधीनता की घोषणा में सभी प्राकृतिक अधिकारों का उल्लेख किया तथा लॉक की सूची में उसने थोड़ा-बहुत संशोधन भी किया। उससे सम्पत्ति के अधिकार को संशोधित रूप में रखा और उसे प्रयत्न-सुख का अधिकार कहकर सम्बोधित किया। इस प्रकार से अपनी घोषणा में उसने व्यापक तथा अत्यधिक दृष्टिकोण को स्थान दिया। स्वाधीनता की घोषणा में

उपनिवेशवासियों की व्यथा का उल्लेख किया लेकिन उनके लिए दोष इंग्लैण्ड के सम्राट को दिया गया न कि वहाँ की संसद को। ऐसा करके जैफरसन ने उपनिवेशवासियों की उस मान्यता का आदर किया जिसके आधार पर वे यह मानते थे कि इंग्लैण्ड की संसद को उपनिवेशों पर कोई अधिकार नहीं है।

उपनिवेशवासियों ने यह घोषणा की कि विधाता द्वारा सभी मनुष्य समान बनाये जाते हैं तथा सभी सरकारें अपनी यथोचित शक्तियाँ शासितों की सम्मति से ही प्राप्त करती हैं। इस प्रकार की घोषणा द्वारा मानव-अधिकारों में विश्वास प्रकट किया गया और उनकी अभिपुष्टि की गई। इसके साथ-साथ वंशानुगत अधिकारों, असमानताओं तथा निरंकुश सरकारों का खण्डन किया गया। जैफरसन ने अपनी स्वाधीनता की घोषणा को महाद्वीपीय काँग्रेस के समक्ष रखा। उल्लास व उत्साह के वातावरण में 4 जुलाई, 1776 ईसवी को काँग्रेस ने इस घोषणा को स्वीकार कर लिया।

XIII. स्वाधीनता संग्राम का आरम्भ :

(1) दोनों पक्षों की स्थिति - अमेरिका का स्वाधीनता संग्राम अप्रेल, 1775 ईसवी में लेक्सिंगटन नामक स्थान पर प्रारम्भ हो गया। स्वाधीनता संग्राम 1781 ईसवी तक चला जबकि 19 अक्टूबर, 1781 ईसवी के दिन कार्नवालिस(Cornwallis) ने इंग्लैण्ड की ओर से आत्मसमर्पण किया। स्वाधीनता युद्ध के प्रारम्भिक काल में युद्ध अभिक्रम अंग्रेजी सेनाओं के हाथ में रहा। इसका मुख्य कारण था कि ब्रिटिश नौ-सेना का समुद्र पर स्वामित्व था। वे इच्छानुसार अटलाण्टिक महासागर के तटीय क्षेत्रों पर सैनिक गतिविधियाँ कर सकते थे। अंग्रेजों ने अधिकांश लड़ाइयों में सफलता भी प्राप्त की जिसका कारण यह था कि उनकी सेना सुचारु रूप से सशस्त्र एवं प्रशिक्षित थी। फिर भी 1781 ईसवी तक दोनों ही पक्ष कोई निर्णायक स्थिति उत्पन्न नहीं कर सके, क्योंकि किसी के पास पर्याप्त मात्रा में साधन नहीं थे। अंग्रेजी सेनाएँ अमेरिका के किसी भी बड़े विशेष भू-भाग पर अपना नियन्त्रण रखने में असफल रहीं। वे उपनिवेशों को सेनाओं की क्षति नहीं पहुँचा सकी, जिससे युद्ध का निर्णय उसके पक्ष में हो सके। अमेरिकी सेनापति वाशिंगटन अत्यन्त असंतोषजनक परिस्थितियों में भी उपनिवेशों की सेना को गम्भीर रूप से क्षतिग्रस्त होने से बचाने में सफल रहा।

युद्ध काल में अंग्रेज सरकार ने अपने अयोग्य मन्त्रियों के कारण युद्ध संचालन में दक्षता का अभाव दिखाया। अमेरिका में स्थित अंग्रेज सेनापतियों जनरल हॉव (General Hawe) इत्यादि ने हमेशा संकोच किया तथा वार्तालाप की आशा करते रहे। इंग्लैण्ड में भी युद्ध के प्रति उत्साह नहीं था तथा सम्राट के शत्रु उपनिवेशों की सफलता की प्रार्थना करते रहे। इंग्लैण्ड में युद्ध के लिए कोई विशेष भर्ती नहीं की गई। यूरोप से, विशेषत: जर्मनी से, तीस हजार भाड़े के सैनिक भर्ती किये गये जिनसे कोई विशेष आशा नहीं की जा सकती जो 40 हजार लगभग निष्ठावादी उपनिवेशवासी अंग्रेजी सेना से लड़ रहे थे। उन्हें भी शंका से देखा गया और इस प्रकार युद्ध कार्य के संचालन में अंग्रेजों का पक्ष शक्तिशाली नहीं हो पाया।

उपनिवेशों की सेनाओं की मुख्य समस्या आर्थिक थी। सभी उपनिवेशों के लोग अतिरिक्त कर देने के लिए तैयार नहीं थे। उपनिवेशों में एक शक्तिशाली केन्द्रीय सरकार का अभाव था। यह

कार्य महाद्वीपीय काँग्रेस भलीभाँति नहीं कर पा रही थी, क्योंकि काँग्रेस में आन्तरिक राजनीतिक मतभेद उत्पन्न हो गये थे जिसके कारण युद्ध संचालन में बाधा उत्पन्न हो रही थी। सेनाध्यक्षों के चुनाव के प्रश्न पर भी मतभेद उत्पन्न हो गया था। आर्थिक क्षेत्र में कठिनाइयों का सामना नोट छाप कर किया गया। 1780 ईसवी तक महाद्वीपीय काँग्रेस तथा राज्य सरकारों ने मिलकर पचास करोड़ डालर के नोट छाप दिये थे जिसके कारण डालर का मूल्य बहुत गिर गया था। काँग्रेस ने आन्तरिक ऋण भी लिया तथा फ्रांस, स्पेन और हॉलैण्ड से कर्ज के रूप में सहायता प्राप्त की। काँग्रेस ने राज्यों से धन और माल के रूप में माँग रखी जिनकी सम्पूर्ति नहीं हो पायी। इन सब कठिनाइयों के कारण उपनिवेशों की सैनिक व्यवस्था त्रुटिपूर्ण रही तथा वे आवश्यकता के अनुसार सेना का निर्माण करने में असफल रहे। सैनिकों को अवमूल्यित हुए नोटों में वेतन दिया जाता था। उनके पास आवश्यक वस्त्र एवं शस्त्र तक भी नहीं थे। इतना ही नहीं, सैनिकों को भी पर्याप्त मात्रा में भोजन सामग्री इसलिए नहीं पहुँच पाती थी कि व्यापारी वर्ग अवमूल्यन हुई मुद्रा को लेकर अपना माल बेचना नहीं चाहते थे। 1780 ईसवी के पश्चात् सैनिकों को किसी प्रकार का वेतन तक भी नहीं दिया जा सका। फ्रांस की सहायता प्राप्त होने के पश्चात् परिस्थितियों में अन्तर आया। शस्त्रों की कमी की पूर्ति हुई। किन्तु भोजन व वस्त्रों का अभाव बना रहा जिसके कारण सैनिक वर्ग ने अनेक स्थानों पर फार्मों को लूट भी लिया। सैनिकों की स्थिति प्राय: अच्छी नहीं थी और उन्हें अनेक बार बिना जूतों के मीलों चलना पड़ता था। ऐसी स्थिति भी आई जब सैनिकों के पास इस प्रकार के फटे वस्त्र रहे जिनसे अपना शरीर भी भली-भाँति नहीं ढ़क पाते थे। इन कारणों से अमेरिकी सेना में प्रवेश करने वाले अनेक सैनिक समय-समय पर भाग जाते थे। युद्ध काल में सभी राज्यों से सैनिक सहायता प्रदान करने को कहा गया लेकिन उपर्युक्त कारणों से सैनिकों की संख्या हर समय पर दो लाख से अधिक नहीं होती थी। वांशिगटन की सेना में किसी समय पर पन्द्रह-सोलह हजार से अधिक सैनिक लड़ाई में नहीं होते थे। यह संख्या शीत काल में और भी कम हो जाती थी। ऐसे समय भी आये जबकि वांशिगटन के पास केवल लड़ाई के लिएं तैयार तीन हजार सैनिक ही थे। इसके विपरीत अंग्रेजी सेनाओं की संख्या सदैव तीस हजार के आसपास रही।

(2) उपनिवेशवासियों को विदेशी सहायता - अमेरिकी स्वाधीनता संग्राम में फ्रांसीसी सहायता का विशेष स्थान है। युद्ध के आरम्भ से ही फ्रांस गुप्त रूप से युद्ध सामग्री उपनिवेशवासियों को पहुँचाता रहा। इसके अतिरिक्त अनेक फ्रांसीसी स्वयं सेवकों ने अमेरिकी सेना में आकर सेवा भी की। 1778 ईसवी में फ्रांस खुले रूप से उपनिवेशों के समर्थन में आ गया और उनकी सहायता करने लगा। युद्ध में फ्रांसीसी प्रवेश ने अंग्रेजी नौ-सेना को चुनौती दी जिससे उपनिवेशवासियों का उत्साह बढ़ा। युद्ध के अन्तिम अभियान में फ्रांस ने उपनिवेशवासियों की पूरी शक्ति से सहायता की और अगर यह कहा जाये कि बिना फ्रांसीसी सहायता के उपनिवेशों की विजय सम्भव नहीं थी तो ऐसा कहना अनुचित नहीं होगा। फ्रांस के अतिरिक्त स्पेन ने 1779 ईसवी में तथा हालैण्ड ने 1780 ईसवी में युद्ध में प्रवेश किया, जिसके कारण युद्ध के अन्तिम चरण में अंग्रेजों को विभिन्न स्थानों पर लड़ना पड़ा। वे अपनी शक्ति को वांशिगटन की सेनाओं के विरुद्ध यार्क टाउन (York Town) के सैनिक अभियान में सैनिक जुटाने में असमर्थ रहे।

XIV. प्रमुख घटनायें :

स्वाधीनता–संग्राम की कुछ घटनाएँ उल्लेखनीय है। 1775 ईसवी में वाशिंगटन ने सेनापतित्व ग्रहण किया। उस समय जनरल हाव बोस्टन के नगर में कार्यवाही करने में व्यस्त था। इस काल में वाशिंगटन ने कठिन परिस्थितियों का सामना करते हुए अपनी सेना का संगठन किया। मार्च, 1776 में वाशिंगटन आक्रमण के लिए तैयार हो गया। आश्चर्यचकित होकर तथा गोलाबारी की सम्भावना से डरकर हॉव ने बोस्टन खाली कर दिया तथा अपनी सेनाओं को नोवा स्कोशिया भेज दिया। अंग्रेजी सेनाओं ने अगले कुछ वर्षों तक न्यू यार्क को अपना गढ़ बनाये रखा जिसका मुख्य कारण वहाँ के बन्दरगाह की सुविधा थी। जून, 1776 ईसवी में हॉव एक विशाल जहाजी बेड़े के साथ अपने तीस हजार सैनिक सहित नोवा स्कोशिया से न्यूयार्क पहुँच गया था। वाशिंगटन ने भी अपनी सेनाओं को न्यूयार्क भेजा जिन्होंने मेनहटन (Manhattan) में बुकलिन के स्थान पर मोर्चा बना लिया। लेकिन हॉव ने दोनों ही स्थानों से अमेरिकी सेनाओं को खदेड़ दिया और उनका पीछा करने का आदेश दिया। अमेरिकी सेना न्यूजर्सी की दिशा में हट रही थी और हॉव की सफलता के कारण न्यूजर्सी के अनेक निष्ठावादियों को यह आशा बन गई थी कि युद्ध में विजय मातृ राज्य की हो गई है। लेकिन शीतकाल की शान्ति के पश्चात् वाशिंगटन ने पुनः आक्रमण किया तथा प्रिंसटन (Princeton) एवं ट्रेन्टन (Trenton) के स्थानों पर विजय का झण्डा फहरा दिया। इन सफलताओं से उपनिवेशों का हौंसला बढ़ा। सेनाओं को मनोबल की पुनः प्राप्ति हो गई। 1776 ईसवी में फिलाडेल्फिया के स्थान पर युद्ध हुआ। हॉव ने फिलाडेल्फिया पहुँचने पर निर्णय किया। फिलाडेल्फिया क्रान्तिकारियों की राजधानी थी। हॉव ने वांशिगटन की सेना को ब्रेन्डीवाइन (Brandywine) तथा जर्मन टाउन (German Town) के स्थान पर परास्त किया। फिलाडेल्फिया पर अंग्रेजों का अधिकार हो गया और उनके उत्साह और प्रसन्नता की सीमाएँ इतनी बढ़ गई कि फिलाडेल्फिया में वे ऐय्याशी का इस तरह आनन्द लेने लगे जैस युद्ध समाप्त हो गया हो। वांशिगटन अपनी सेना को शीत ऋतु के लिए फोर्ज घाटी (Forge Valley) ले गया। हॉव फिलाडेल्फिया के आमन्दों में डूबा रहा तथा उसने वाशिंगटन पर हमला करने का एक ऐसा अवसर खो दिया जिसमें वह एक प्रकार से प्रभावशाली विजय प्राप्त कर सकता था। हॉव संकोच से युद्ध कर रहा था और वह सम्भवतः वाशिंगटन से डरता भी था।

1777 ईसवी में ही कनाडा में स्थित अंग्रेजी सेना, जिसका नेतृत्व सेनाध्यक्ष बर्गोयन (General Burgoyne) कर रहा था, को गृह सरकार से आदेश मिला कि वह कनाडा जाकर हडसन घाटी (Hudson Valley) पर अपना अधिकार स्थापित कर ले। बर्गोयन का सामना करने के लिए न्यू यार्क तथा न्यू इंग्लैण्ड में एक विशाल मिलिशिया सेना एकत्रित की गई। इस सेना ने अक्टूबर, 1777 ईसवी में अनेक स्थानों पर बर्गोयन को परास्त किया। उसने अन्त में सेराटोगा (Saratoga) के स्थान पर आत्म-समर्पण कर दिया। उपनिवेशवासियों की यह अब तक की सबसे महान् विजय थी। उसमें अड़तालीस हजार युद्ध बन्दी प्राप्त हुए। इस विजय का श्रेय बेनेडिक्ट अर्नोल्ड (Benedict Arnold) को था जिसने अमेरिकी सेनाओं का वास्तविक नेतृत्व किया था। बर्गोयन की पराजय का मुख्य कारण उसकी आराम की प्रवृत्ति थी। उसने

सैनिक भी अत्यधिक सामान से बोझिल होने के कारण गति से लड़ने में असमर्थ थे। सेराटोगा की विजय का सबसे बड़ा महत्त्व इस बात में है कि इस विजय ने फ्रांस को यह विश्वास दिला दिया कि अब उपनिवेशवासियों के पक्ष का समर्थन किया जा सकता है। इस विजय के उपरान्त ही फ्रांस प्रत्यक्ष रूप से उपवनिवेशों के समर्थन में आ गया जिसके परिणाम स्वरूप इंग्लैण्ड को अपनी योजनाओं में भी संशोधन करना पड़ा।

युद्ध में फ्रांस के प्रवेश के तुरन्त पश्चात् 1778 ईसवी में फॉक के स्थान पर नियुक्त नये सेनापति क्लींटन (Clinton) को यह आदेश दिया कि वह फिलाडेल्फिया को खाली कर दे तथा केवल न्यूयार्क अपना गढ़ बनाये। क्लीन्टन युद्ध के शेष काल में न्यूयार्क में ही जमा रहा। उसके द्वारा कोई उल्लेखनीय सैनिक कार्य नहीं किया गया। इसी काल में वाशिंगटन की समस्या यह रही कि वह अपनी सेना का पोषण किस प्रकार करे। इस काल में उल्लेखनीय सैनिक कार्यवाही वर्जीनिया के राज्य द्वारा की गई जहाँ पर ब्रिटिश अधिकारियों तथा व्यापारियों ने अमेरिकी आदिवासियों को भी युद्ध में प्रवेश के लिए प्रोत्साहित किया। वर्जीनिया में सीमान्त बस्तियों के आदिवासी आक्रमण करने लगे। 1778 ईसवी में जार्ज क्लार्क (George Clark) को इलिनोय के प्रदेश में आक्रमण करने के लिए चुना गया। क्लार्क ने सेना एकत्रित की तथा अंग्रेजों के प्रदेश में तीन चार चौकियाँ जीत लीं। इस प्रकार से अधिकांश पश्चिमी प्रदेश पर अमेरिकनों ने प्रभुत्व प्राप्त कर लिया। युद्ध का अन्तिम अभियान 1780 ईसवी में दक्षिण में आरम्भ हुआ। अंग्रेजी जनरल कार्नवालिस की सेना ने चार्ल्सटन (Charleston) का स्थान जीत कर उत्तर की ओर कूच किया। अगस्त, 1780 ईसवी में कार्नवालिस ने उत्तर कैरोलिना के राज्य में केमडेन (Camden) के स्थान पर अमेरिकी जनरल ग्रीन (General Greene) को परास्त किया। इसके पश्चात् अगले दो वर्षों तक कैरोलिना के राज्यों में गृह युद्ध की स्थिति चलती रही। उत्तर और दक्षिण कैरोलिना में देशभक्तों तथा निष्ठावादियों में परस्पर झड़पें होती रहीं।

कैरोलिना के युद्ध में डांवाडोल स्थिति को सुधारने के लिए दक्षिण में अमेरिकी सेनाओं का नेतृत्व नेथेनियल ग्रीन (Nathanael Greene) को दिया गया। कार्नवालिस ने मार्च, 1781 ईसवी में ग्रीन को गिलफोर्ड कार्ट हाउस (Guilford Court House) की लड़ाई में परास्त किया, किन्तु वह स्वयं इतना क्षतिग्रस्त हुआ कि अपनी सुरक्षा हेतु कैरोलिना को छोड़ कर वर्जीनिया की ओर चला गया। वहाँ से अपनी सेना को यार्क टाउन ले गया। इसी समय फ्रांसीसी सेनाएँ न्यू इंग्लैण्ड के तट पर पहुँच गई। वाशिंगटन ने कार्नवालिस पर एक सम्मिलित आक्रमण करने का निर्णय लिया व कार्यवाही तुरन्त की गई। फ्रांसीसी नौ सेना ने यार्क टाउन बन्दरगाह की समुद्री नाकाबन्दी करने में सफलता प्राप्त की जिससे कार्नवालिस को किसी प्रकार की कुमुक नहीं पहुँचाई जा सकी। इसके साथ-साथ अमेरिकी तथा फ्रांसीसी सेनाएँ यार्क टाउन की ओर बढ़ीं एवं उन्होंने कार्नवालिस को घेर लिया। कार्नवालिस की सेनाएँ संख्या में कम थीं। वह इस प्रकार घिर गया कि उसे 19 अक्टूबर, 1781 ईसवी के दिन आत्मसमर्पण के लिए विवश होना पड़ा। यार्क टाउन ने उपनिवेशों को अन्त में वह विजय प्रदान कर दी जिसके लिए वे छः वर्षों से अत्यन्त कठिन परिस्थितियों से संघर्ष कर रहे थे। इंग्लैण्ड में कार्नवालिस के आत्समर्पण से

व्यापक असन्तोष उत्पन्न हुआ तथा लार्ड नार्थ ने प्रधानमन्त्री पद से त्याग-पत्र दे दिया। सम्राट जार्ज तृतीय के विरुद्ध भी प्रतिक्रिया हुई तथा इंग्लैण्ड की लोक सभा में उसका प्रभुत्व समाप्त हो गया। लार्ड राकिंघम इंग्लैण्ड का नया प्रधान मंत्री बना। उसने शांति वार्ता करने का निर्णय लिया। उपनिवेशों की स्वाधीनता को स्वीकार कर लिया गया। अमेरिकी स्वाधीनता-संग्राम समाप्त हुआ।

XV. शान्ति वार्ता तथा क्रान्ति की पूर्ति :

अमेरिका का स्वाधीनता संग्राम छः वर्षों से भी अधिक इसलिए चलता रहा, क्योंकि 1781 ईसवी तक दोनों के पास इतनी शक्ति और साधन नहीं थे कि वे कोई निर्णायक युद्ध कर सकें। युद्ध की समाप्ति के पश्चात् शान्ति वार्ता के लिए विलम्ब नहीं हुआ तथा इंग्लैण्ड ने अनेक कारणों से इस ओर उत्सुकता दिखाई। इन कारणों में सबसे महत्त्वपूर्ण कारण यह था कि युद्ध काल में अत्यधिक हानि हो रही थी। उन पर निजी रूप से उपनिवेशिवासी अर्द्ध-सैनिक आक्रमण कर रहे थे तथा उनके व्यापार को प्रभावशाली रूप से उपनिवेशवासियों की छोटी-सी नौ-सेना क्षति पहुँचा रही थी। इसके अतिरिक्त इंग्लैण्ड में यह भी भय था कि यदि युद्ध चलता रहा तो सम्भवतः फ्रांस परिस्थिति का लाभ उठाकर अन्य अंग्रेजी उपनिवेशों को, विशेषतः भारत में भी, क्षति पहुँचायेगा।

शान्ति वार्ता के लिए पेरिस का नगर चुना गया। उपनिवेशों की ओर से बेंजामिन फ्रेन्कलिन, जॉन जे (John Jay) तथा जॉन एडम्स प्रतिनिधियों के रूप में पेरिस पहुँचे। इनमें से जॉन जे तथा जॉन एडम्स को फ्रांसीसी सरकार के प्रति विशेष सद्भावना नहीं थी, क्योंकि इन लोगों की यह मान्यता थी कि फ्रांस मिसीसिप्पी की घाटी में अमेरिकी प्रसार के विरुद्ध है। जे और एडम्स की शंकाओं से शान्ति वार्ता में फ्रांस को कोई विशेष भूमिका अदा करने का अवसर प्राप्त नहीं हो सका। इंग्लैण्ड ने भी जे और एडम्स की शंकाओं का लाभ उठाया और इस भय से कि कही फ्रांस व अमेरिका में कोई स्थायी मैत्री नहीं हो जाये, अंग्रेजों ने अमेरिकी प्रतिनिधियों के प्रति उदारता दिखाई। उन्होंने कुछ ऐसे प्रयास किये कि अमेरिका और फ्रांस में मतभेद उत्पन्न हो जायें या कम से कम फ्रांस के प्रति उनकी शंकाएँ यथावत बनी रहें। अमेरिकी प्रतिनिधियों द्वारा किया गया फ्रांस का बहिष्कार उस सन्धि का उल्लंघन था जो फ्रांस और उपनिवेशों में युद्ध काल में की गई थी। उस सन्धि के अन्तर्गत उपनिवेशवासियों ने वचन दिया था कि वे फ्रांस की अनुमति के बिना कोई भी सन्धि नहीं करेंगे। इतना ही नहीं, स्वयं महाद्वीपीय काँग्रेस ने अपने प्रतिनिधियों को फ्रांस भेजते समय यह आदेश दिया था कि वे इस सन्धि का पालन करें। लेकिन पेरिस भेजे गये सभी प्रतिनिधि उपनिवेशों के महान् नेता थे। इसलिए उन्होंने अपने उत्तरदायित्व का स्वतन्त्र रूप से वहन करने में कोई संकोच नहीं किया। पर्याप्त समय तक वार्ता चलती रही और 30 नवम्बर, 1782 ईसवी को एक प्रारम्भिक सन्धि पर हस्ताक्षर किये गये। इसके अन्तर्गत उपनिवेशों को न केवल उनकी स्वाधीनता प्रदान कर दी गई वरन् इंग्लैण्ड ने महान् झीलों के दक्षिण में स्थित सभी पश्चिमी प्रदेशों पर अपने अधिकार समाप्त कर दिए। मिसीसिप्पी नदी उपनिवेशों की पश्चिमी सीमा स्वीकार कर ली गई। इसके अतिरिक्त उपनिवेशवासियों को सेन्ट लॉरेन्स की खाड़ी तथा न्यू फाउन्डलैण्ड में मछली पकड़ने का अधिकार दे दिया गया। अगले वर्ष (1783 ईसवी) में एक

निश्चित सन्धि के आधार पर 1782 ईसवी की सन्धि का अनुमोदन किया गया। संयुक्त राज्य अमेरिका को स्वतन्त्र राज्य के रूप में इंग्लैण्ड के अतिरिक्त अन्य यूरोपीय शक्तियों ने भी मान्यता प्रदान कर दी। मिसीसिप्पी नदी के पश्चिमी क्षेत्रों पर उसके अधिकारों को स्वीकार कर लिया गया और कनाडा की सीमा से लेकर फ्लोरिडा की सीमा तक के क्षेत्र को नये राष्ट्र के अधीन स्वीकार कर लिया गया। फ्लोरिडा स्पेन को लौटा दिया गया। इसी प्रकार मछली पकड़ने के अधिकारों को पुन: स्पष्ट कर दिया गया। सन्धि वार्ता के काल में इंग्लैण्ड की ओर से यह दबाव डाला गया था कि अंग्रेज व्यापारियों के ऋण चुकाये जायें तथा निष्ठावादियों की सम्पत्ति को लौटाया जाये। यह प्रश्न विभिन्न राज्यों तथा कांग्रेस से सम्बन्धित थे अत: अन्तिम पेरिस सन्धि में इन प्रश्नों पर समझौता किया गया जिसके अनुसार यह व्यवस्था की गई कि अंग्रेजी व्यापारियों द्वारा अमेरिकी ऋणियों से ऋण प्राप्ति के मार्ग में किसी भी प्रकार की कानूनी बाधाएँ नहीं डाली जायेंगी। अमेरिकी काँग्रेस सभी राज्यों से यह कहेगी कि वे निष्ठावादियों की जब्त की गई सम्पत्ति लौटा दें। इस सन्धि में मिसीसिप्पी नदी में इंग्लैण्ड के नाविकों को नौ-संचालन की स्वतन्त्रता का प्रावधान भी किया गया। ब्रिटिश व्यापारियों के ऋण के अदायगी की जो व्यवस्था सन्धि में की गई थी उससे समस्या का हल नहीं निकल सका और 1802 ईसवी में जाकर स्वयं संघीय सरकार ने उस ऋण को चुकाया। इससे यह स्पष्ट होता है कि संयुक्त राष्ट्र अमेरिका युद्ध काल की कटुता को समाप्त करना चाहता था। इस प्रकार एक नये राष्ट्र का जन्म सद्‌भावना के वातावरण में हुआ तथा यह स्पष्ट हो गया कि नया राष्ट्र इंग्लैण्ड या यूरोप के किसी भी देश से किसी प्रकार की कटुता नहीं रखना चाहता था। वास्तव में नये राष्ट्र अपने सिद्धान्तों और मान्यताओं पर अपना विस्तार और निर्माण करना चाहता था। अमेरिकावासियों की अपनी समस्याएँ थीं और उनका समाधान वे स्वयं करना चाहते थे। उन्हें यह विश्वास था कि वे अपने भाग्य का निर्माण स्वयं कर सकते हैं।

XVI. उपनिवेशों की सफलता के कारण :

अमेरिका के उपनिवेशों द्वारा स्वाधीनता-संग्राम में प्राप्त सफलता के अनेक कारण थे। इसमें सन्देह नहीं कि इंग्लैण्ड एक शक्तिशाली देश था तथा युद्ध की प्रारम्भिक अवस्थाओं में परिस्थितियाँ उसके पक्ष में थीं। इंग्लैण्ड की सेना की संख्या और साधन भी अधिक थे। इतना ही नहीं, स्वयं उपनिवेशों मे एक-तिहाई लोग निष्ठावादी थे।

(1) उपनिवेशों की वास्तविक शक्ति का सही अनुमान न लगाना - शक्तिशाली होते हुए भी इंग्लैण्ड की पराजय का सबसे बड़ा कारण यही था कि उसने उपनिवेशों की आन्तरिक शक्ति का युद्ध काल में ठीक तरह से अनुमान नहीं लगाया। उसे यह विश्वास रहा कि उसकी शक्ति के आगे उपनिवेशवासी टिक नहीं सकेंगे। इस प्रकार की मान्यता इंग्लैण्ड के शासक वर्ग में थी।

(2) इंग्लैण्ड की जनता की उदासीनता - इसके विपरीत इंग्लैण्ड की जनता युद्ध के प्रति उदासीन थी। सम्राट के शत्रु पराजय के पक्ष में इसलिए थे कि उससे इंग्लैण्ड की राजनीति में निरंकुशवाद का खण्डन होगा। अनेक उदार अंग्रेज सैद्धान्तिक रूप से उपनिवेशों की स्वाधीनता के पक्ष में थे।

(3) अंग्रेज सेनानायकों की भूल - उपनिवेशवासियों की सफलता के कारणों में इंग्लैण्ड के सेनानायकों तथा सैनिकों का बड़ा योगदान रहा। उपनिवेशों में लड़ रही सेना में भर्ती किये गये यूरोप के भाड़े के सिपाहियों से कोई आशा नहीं की जा सकती थी। अंग्रेजी सेनानायकों ने भी अनेक भूलें कीं। हॉव तथा बर्गोयन आरामतलब सेनानायक थे तथा उन्होंने अनेक बार हाथ में आये अवसरों को खोया एवं कभी भी पूरी निष्ठा के साथ अपने कर्त्तव्यों का पालन नहीं किया।

(4) इंग्लैण्ड की सरकार का अनावश्यक रूप से हस्तक्षेप - इसके अतिरिक्त यह भी कहा जा सकता है कि सम्राट जार्ज तृतीय तथा उसके युद्ध मन्त्री ने अनावश्यक रूप से सेनानायकों के काम में हस्तक्षेप किया और इस बात पर ध्यान नहीं दिया कि युद्ध स्थल की दूरी को देखते हुए स्थानीय सेनानायकों को परिस्थितियों के अनुसार निर्णय का अधिकार दिया जाये। इंग्लैण्ड की ओर से युद्ध संचालन कार्य में यह एक मौलिक त्रुटि रही।

(5) युद्ध स्थल की दूरी व विशालता - अंग्रेजी सेना की असफलता का एक कारण यह भी था कि युद्ध स्थल बड़ा विशाल था और लगभग एक हजार मील के क्षेत्र में फैला हुआ था। यातायात की कठिनाइयाँ थीं। घने जंगलों में मार्ग के ज्ञान का अंग्रेजी सेनाओं में अभाव था जबकि उपनिवेशवासी उस भूमि से पूर्णतः परिचित थे। अंग्रेजी सेना कभी भी किसी बड़े भू-भाग पर नियन्त्रण रखने में सफल नहीं रही और उसके पाँव कहीं पर भी जम नहीं सके। युद्ध स्थल इंग्लैण्ड से दूर था और जब इंग्लैण्ड के यूरोपीय शत्रुओं ने उपनिवेशवासियों का पक्ष स्वीकार कर लिया तो युद्ध क्षेत्र और अधिक विस्तृत हो गया। समुद्र में इंग्लैण्ड के स्वामित्व को चुनौती मिलने लगी। इसके कारण रसद तथा कुमुक अंग्रेजी सेना को पहुँचाना कठिन हो गया।

(6) फ्रांस, स्पेन व हालैंड का युद्ध में प्रवेश - अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियों ने उपनिवेशवासियों की सफलता में योग दिया। फ्रांस, स्पेन तथा अन्य देशों ने जो उपनिवेशवासियों की सहायता की वह निस्सन्देह प्रभावकारी व कारगर सिद्ध हुई। फ्रांसीसी सहायता के बिना उपनिवेशवासियों का सफल होना कठिन था। यार्क टाउन की विजय में फ्रान्सीसियों का महत्त्वपूर्ण योगदान था।

(7) वाशिंगटन का नेतृत्व - उपनिवेशवासियों की सफलता के अन्य कारण भी थे। इनमें सबसे उल्लेखनीय कारण वाशिंगटन का नेतृत्व माना जा सकता है। वाशिंगटन उच्च लक्ष्य रखने वाला चरित्रवान नेता था जिसने अत्यन्त कठिन परिस्थितियों में अमेरिकी क्रान्ति का सफल नेतृत्व किया। उपनिवेशवासियों का उसमें दृढ़ विश्वास था और उसने भी अपने अनवरत प्रयासों से देशवासियों का मनोबल बनाये रखा। अपने सैनिक नेतृत्व से राष्ट्र के आत्मविश्वास को सुरक्षित रखा। वाशिंगटन के पीछे अमेरिकीयों की भावनाओं की शक्ति थी जो स्वाधीनता के उच्च आदर्श व लक्ष्य से प्रेरित थी। इसमें सन्देह नहीं कि अनेक बार ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न हुई और ऐसे संकट आये जिनके कारण भविष्य अन्धकारमय दिखने लगा लेकिन उपनिवेशवासियों के हृदय में धधकती हुई स्वाधीनता की ज्वाला ने न केवल धैर्य बंधाया वरन् मार्ग-दर्शन भी किया।

(8) जार्ज तृतीय की भूलें - जार्ज तृतीय को भी अंग्रेजी सेनाओं की हार के लिये उत्तरदायी ठहराया जा सकता है। वस्तुतः 1760 ईसवी से लेकर संघर्ष के अन्त तक जितने भी

निर्णय लिये गये उनके पीछे उसका ही हाथ था। अपने सेनापतियों एवं मन्त्रियों के समान उसने भी यह मान कर भूल की कि लड़ाई जल्द समाप्त हो जायेगी और उन्हें विजयश्री प्राप्त होगी। उसने यह भी गलत अनुमान लगाया कि फ्रांस के आर्थिक साधनों के जवाब देने के पहले ही इंगलैण्ड की स्थिति लड़खड़ा जायेगी। वास्तव में उसने कोई सैनिक योजना नहीं बनाई थी तथा अयोग्य सेनापतियों की नियुक्तियों के बारे में विचार नहीं किया था। उसकी अलोकप्रियता तथा ब्रिटिश अधिकारियों की अयोग्यता ने उपनिवेशवासियों के लिए विजय सरल कर दी।

(9) अमेरिकी सैनिकों का बलिदान - स्वाधीनता-संग्राम में उपनिवेशवासियों की सफलता का श्रेय वहाँ के सैनिकों को भी दिया जा सकता है। वाशिंगटन व अन्य सेनापतियों के नेतृत्व में उन्होंने कभी भी हिम्मत नहीं हारी। अनेक बार जाड़ों में कपड़े व जूते का अभाव होता था, वे अस्वास्थ्यकारी खाइयों में रहने को मजबूर होते थे तथा उन्हें रद्दी खाना मिलता था किन्तु उनका विश्वास इतना दृढ़ था कि उनके पाँव अन्तिम समय तक नहीं डगमगाये।

XVII. क्रान्ति का स्वरूप :

निःसन्देह अमेरिका की क्रान्ति विश्व इतिहास की एक महान् घटना थी, किन्तु फिर भी इतिहासकारों में इसके स्वरूप के बारे में मतभेद है। स्वयं अमेरिकनों ने इस विषय पर भिन्न-भिन्न विचार प्रकट किये हैं। कतिपय विद्वानों के अनुसार यद्यपि अमेरिकन अंग्रेजों के विरुद्ध काफी हद तक संगठित थे अन्यथा वे सन्तुष्ट लोग थे। उनकी माँगें रूढ़िवादी तथा सुरक्षात्मक थीं। इसके विपरीत अन्य विद्वानों की राय में क्रान्ति उग्र सुधारवादी थीं। इसने लोगों को देशभक्त तथा वफादार, दो पक्षों में बाँट दिया और युद्ध काल में भी वे विभक्त रहे। क्रान्ति के उद्देश्य उतने ही प्रगतिशील थे जितने कि कुछ वर्षों बाद होने वाली फ्रांसीसी क्रान्ति के थे।

जार्ज बान्क्रोफ्ट (George Bronfroft) ने अपने ग्रन्थ 'हिस्ट्री ऑफ दी यूनाइटेड स्टेट्स' में भी लिखा है कि यह तो एक ऐसी क्रान्ति थी जिसमें सफलता इतनी सुखद शान्ति के साथ प्राप्त कर ली गई कि परिवर्तन विरोधी भी इसकी निन्दा करने में हिचके। कुछ इतिहासकारों के मत में यह लोकतन्त्र का संघर्ष ही नहीं था, क्योंकि अमेरिका में इसके पहले भी प्रजातन्त्र विद्यमान था। उदाहरणार्थ मैसाचुसेट्स में पिचानवें प्रतिशत पुरुष मत देने के अधिकारी थे। अतएव जे.ए.जेमसन ने इसे एक सामाजिक आन्दोलन बताया है। 1880 ईसवी में फ्रेडरिक जेनटेन (Fredrick Jenten) ने बर्लिन से प्रकाशित अपनी एक पत्रिका में लिखा था कि अमेरिका का विद्रोह तो केवल अंग्रेजों द्वारा उनके स्वीकृत अधिकारों पर किये जाने वाले अतिक्रमण के विरुद्ध एक संघर्ष मात्र था। इससे वहाँ की राजनीति में विशेष परिवर्तन नहीं हुआ। जो विद्वान् इसे स्वतन्त्रता संघर्ष नहीं मानते उनका कहना है कि उपनिवेशवासियों ने आरम्भ में स्वतन्त्रता की माँग नहीं की थी। उन्होंने तो केवल इंगलैण्ड की संसद द्वारा आरोपित अधिनियमों का विरोध किया था। वे तो चाहते थे कि उनके व्यापारिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं किया जाये एवं उन पर कोई कर न लगाये जायें। बोस्टन टी पार्टी की घटना ने उनको उत्तेजित किया तथा इसके बाद वे स्वतन्त्रता की बात सोचने लगे। यह भी सत्य है कि आरम्भ में उपनिवेशों के सैनिकों में अधिक उत्साह नहीं था तथा वहाँ की जनता का एक बड़ा भाग इंगलैण्ड के विरुद्ध युद्ध करने को तैयार

नहीं था। यहाँ तक कि 1787 ईसवी में संविधान के निर्माण हेतु फिलाडेल्फिया सम्मेलन में एकत्र पैंतालिस सदस्यों में से अधिकांश सदस्य केवल सरकार की सुरक्षा, गुलामों के व्यापार व भूमि की प्राप्ति में रुचि रखते थे। उन्हें स्वतन्त्रता से विशेष लगाव नहीं था।

फ्रांस और अन्य यूरोपीय देशों की सहायता के सन्दर्भ में यह कहा जाता है कि अपने देशवासियों में संघर्ष के प्रति उदासीनता देखकर ही उपनिवेशवासियों ने विदेशी सहायता लेने की बात सोची थी। यदि फ्रांस उसे सहायता का आश्वासन नहीं देता तो सम्भव है कि अमेरिका इस संघर्ष के लिये तैयार ही नहीं होता और यदि संघर्ष आरम्भ होने के बाद स्पेन का रुख इंगलैण्ड विरोधी नहीं होता तथा 1780 ईसवी में तटस्थ राष्ट्रों के संघ की स्थापना नहीं होती तो युद्ध बीच में समाप्त हो जाता। अतः यह संघर्ष शुद्धतः अमेरिकनों का नहीं था अपितु इंग्लैण्ड से शत्रुता रखने वाले राष्ट्रों का था जो इस बहाने इंग्लैण्ड से बदला लेना चाहते थे। इसलिये यह युद्ध अमेरिका का स्वतन्त्रता संग्राम न होकर यूरोप की महान् शक्तियों का इंग्लैण्ड के विरुद्ध युद्ध था। इसके समर्थन में 1763 ईसवी की पेरिस की सन्धि में इंगलैण्ड द्वारा फ्रांस और स्पेन को कुछ दे कर सन्तुष्ट करने का प्रयत्न एक तर्क के रूप में दिया जाता है। इंगलैण्ड के महान् राजनीतिज्ञ एवं वक्ता एडमण्ड बर्क (1729-97) एवं इतिहासकार चार्ल्स ए. बियर्ड ने भी इस संघर्ष को स्वाधीनता-संग्राम नहीं माना है।

लेकिन परिणाम की दृष्टि से इसे एक स्वाधीनता-संग्राम माना जा सकता है। एच.डब्ल्यू.एल्सन (H.W.Elsen) के अनुसार यदि अमेरिकन क्रांति को परिणाम की दृष्टि से देखा जाये तो यह मानना इतिहास के महान् आन्दोलनों में से एक था। आम तौर पर एक स्वतन्त्रता-संग्राम में अल्पमत ही भाग लेता है और अमेरिका में भी ऐसा ही हुआ था, किन्तु उनके इस संघर्ष ने ही अमेरिका को स्वतन्त्रता दिलाई। इसका प्रभाव उस देश तक सीमित नहीं रहा अपितु यूरोप के अन्य देशों पर भी पड़ा। यूरोप के कई देशों को इसने लम्बे समय तक स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिये प्रेरित किया। इस संघर्ष ने आधुनिक युग में गणतन्त्र को जन्म दिया। इसके अतिरिक्त इसके बाद ही विश्व में लिखित संविधानों की परम्परा का प्रचलन हुआ। इसने साम्राज्यवाद को प्रथम पराजय दी तथा राष्ट्रीयता एवं धर्म निरपेक्षता के सिद्धान्तों को मानव समाज के समक्ष रखा।

यह भी देखने योग्य है कि जिस सर्वांगीण विकास के लक्ष्यों को लेकर इन उपनिवेशों ने संघर्ष आरम्भ किया था, उन्होंने स्वतन्त्रता के पश्चात् इनकी प्राप्ति के लिये आश्चर्यजनक प्रगति की। अतएव इसे एक सामान्य विद्रोह मानना गलत होगा।

अमेरिकी क्रान्ति में मध्यम वर्ग ने मुख्य योगदान दिया। उन्होंने इस संग्राम का पथ प्रदर्शन किया। स्वतन्त्रता के घोषणा-पत्र पर हस्ताक्षर करने वालों में अधिकांश मध्यम वर्ग के थे। संविधान परिषद् में भी उनका बोलबाला था। यद्यपि संविधान में जन साधारण को मताधिकार से वंचित रखा गया लेकिन जिस चेतना का उदय मध्यम वर्ग में हुआ वह समय के साथ विकसित होती गई और अन्त में वह समय भी आ गया जबकि जन साधारण को यह अधिकार मिल गये। इस दृष्टि से भी इस संघर्ष का अपना एक ही महत्त्व है।

XVIII. क्रान्ति का महत्त्व एवं प्रभाव :

(1) विश्व पर प्रभाव व उसका महत्त्व - अमेरिका की क्रान्ति आधुनिक विश्व इतिहास की एक महत्त्वपूर्ण घटना है, इस क्रान्ति के अनेक महत्त्वपूर्ण प्रभाव थे जो अन्य देशों पर भी पड़े। आधुनिक मानव की प्रगति में अमेरिका की क्रान्ति एक महत्त्वपूर्ण मोड़ माना जा सकता है। इस क्रान्ति के फलस्वरूप नई दुनिया में न केवल एक नये राष्ट्र का जन्म हुआ वरन् मानवजाति की दृष्टि से एक नये युग का प्रारम्भ हुआ। कार्ल एल.बेकर (Carl L. Baker) के अनुसार "अमेरिका की यह क्रान्ति एक नहीं अपितु दो क्रांतियों का सम्मिलन थी। प्रथम 'बाह्य क्रान्ति' थी जिसके अन्तर्गत उपनिवेशों में ब्रिटेन के विरुद्ध विद्रोह किया गया तथा जिसका कारण उपनिवेशों व ब्रिटेन के मध्य आर्थिक हितों का संघर्ष था। द्वितीय, 'आन्तरिक क्रान्ति' थी, जिसका प्रयोजन स्वतंत्रता के पश्चात् अमेरिका के भविष्य की रूपरेखा तैयार करना था।"

इस क्रांति ने राज्य के दैवी सिद्धान्तों का खण्डन किया तथा कुलीनतन्त्रीय अधिकारों को समाप्त किया। इतना ही नहीं, इस क्रान्ति के परिणामस्वरूप विश्व में जनतन्त्र तथा मनुष्य के मौलिक अधिकारों का सम्मान करने वाला शासन प्रथम बार स्थापित हुआ। अमेरिकी क्रान्ति को आधुनिक युग में गणतन्त्र की जननी कहा जा सकता है। इसके अतिरिक्त इस क्रान्ति के पश्चात् ही विश्व में लिखित संविधानों की परम्पराओं का प्रचलन हुआ। संघीय शासन व्यवस्था का प्रयोग किया गया। धर्मनिरपेक्ष राज्य के रूप में अमेरिका आधुनिक युग का प्रथम देश था। इस क्रान्ति ने साम्राज्यवाद को प्रथम पराजय दी तथा राष्ट्रीयता के सिद्धान्त को मानव समाज के समक्ष रखा।

अमेरिकी क्रान्ति का विश्व में व्यापक प्रभाव पड़ा। स्वयं अमेरिका में इस क्रान्ति के परिणामस्वरूप व्यक्तिगत स्वतन्त्रता तथा प्रजातान्त्रिक शासन प्रणाली का विकास हुआ। इंग्लैण्ड पर भी इस क्रान्ति का प्रभाव पड़ा। वहाँ की राजनीति में परिवर्तन हुआ। इंग्लैण्ड में निरंकुशवाद को आघात पहुँचा तथा सम्राट के अधिकारों को सीमित करने के प्रयास किये गये ताकि भविष्य में व्यक्तिगत शासन की सम्भावनाएँ नही हों। इंग्लैण्ड की अमेरिकी उपनिवेशों से हुई क्षति की पूर्ति हेतु आस्ट्रेलिया व न्यूजीलैण्ड में बस्तियाँ स्थापित की गईं, किन्तु अमेरिका के कटु अनुभव को ध्यान में रखते हुए नये उपनिवेशों को ब्रिटिश कामनवेल्थ ऑफ नेशन्स की स्थापना कर समान स्थान प्रदान किया गया।

(2) अमेरिका पर प्रभाव - क्रान्ति ने संयुक्त राज्य अमेरिका के राजनीतिक जीवन को एक नया मोड़ तो दिया ही, इसके अतिरिक्त वहाँ के सामाजिक जीवन की कायापलट कर दी। क्रांति के द्वारा अमेरिकी जनता को एक परिवर्तित सामाजिक व्यवस्था प्राप्त हुई जिसमें परम्परा, धन और विशेषाधिकारों का महत्त्व कम था और मानवीय समानता का महत्त्व अधिक। क्रान्ति के पश्चात् अमेरिकी समाज ने पहले से अधिक शिक्षा का महत्त्व समझा। यह तत्काल अनुभव किया गया कि प्रजातंत्रीय स्वराज्य में शिक्षित मतदाताओं का होना आवश्यक है। अतः अमेरिका में शिक्षा का व्यापक प्रसार हुआ।

अमेरिकी क्रान्ति के आर्थिक परिणाम भी इसके सामाजिक एवं राजनीतिक परिणामों की भाँति अत्यन्त महत्त्वपूर्ण थे। आर्थिक क्षेत्र में क्रान्ति ने मूलतः पूँजीवादी अर्थ-व्यवस्था के मार्ग की सभी बाधाओं को समाप्त कर इसके विकास को प्रोत्साहित किया। इससे अमेरिकी उपनिवेशों में पूँजीवाद के विकास को बहुत प्रोत्साहन मिला।

क्रान्ति से कृषि के विकास को भी प्रोत्साहन मिला। क्रान्ति की अवधि में बड़े-बड़े भूमिपति उपनिवेशों को छोड़ कर कनाड़ा आदि देशों में चले गये जिससे उनकी बड़ी-बड़ी भू-सम्पदाओं को तोड़ कर छोटे-छोटे टुकड़ो में इनका वितरण निम्न तथा मध्यम वर्गों के हाथ में किया गया। उन्होंने लगन व परिश्रम के साथ खेती की। इससे कृषि उत्पादन में वृद्धि हुई। कृषि की अपेक्षा उद्योग-धंधों पर क्रान्ति का प्रभाव अधिक पड़ा। इससे अमेरिका के उपनिवेश दो तरह से लाभान्वित हुए – प्रथम, अमेरिकी उद्योग अंग्रेजों द्वारा लगाये गये व्यापारवादी प्रतिबन्धों से मुक्त हो गये। द्वितीय, युद्ध काल में इंग्लैण्ड से वस्तुओं का आयात बंद हो जाने के कारण उपनिवेशों में उद्योग के विकास को प्रोत्साहन मिला।

(3) फ्रांस पर प्रभाव - फ्रांस पर अमेरिकी स्वतन्त्रता संग्राम का गहरा प्रभाव पड़ा। पेरिस की सन्धि के द्वारा फ्रांस को कुछ प्रादेशिक लाभ भी हुए। सप्तवर्षीय युद्ध में खोये हुए कुछ प्रदेश फ्रांस ने पुन: प्राप्त किये। लेकिन इस लाभ के अतिरिक्त अमेरिका क्रान्ति ने फ्रांस में एक नयी चेतना उत्पन्न कर दी। फ्रांस के लोग स्वयं निरंकुशवाद के शोषण की चक्की में पिस रहे थे। जब फ्रांसीसी सैनिकों ने, जो उपनिवेशों में लड़ने भेजे गये थे, यह देखा कि उपनिवेशवासी अपनी स्वाधीनता के लिए लड़ रहे हैं जिनका लक्ष्य निरंकुशवाद तथा अन्याय समाप्त करना है, तो उनमें भी यह भावना जागी कि क्यों नहीं वे स्वयं अपनी दरिद्रता को मिटाने का प्रयास करें। फ्रांसीसी सैनिक उपनिवेशों से अपने मस्तिष्क में क्रान्ति के बीज लेकर लौटे। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि अमेरिकी स्वाधीनता-संग्राम में योगदान देने के कारण फ्रांस जो पहले ही आर्थिक संकट में था, आर्थिक दृष्टि से और अधिक क्षतिग्रस्त हुआ जिसके कारण उसकी कठिनाइयाँ बढ़ीं। इन कठिनाइयों के कारण ही फ्रांस में क्रान्ति का वातावरण उत्पन्न हुआ।

(4) आयरलैण्ड पर प्रभाव - अमेरिकी क्रान्ति का आयरलैण्ड पर भी प्रभाव पड़ा। इस क्रान्ति ने आयरलैंड के निवासियों को प्रत्यक्ष रूप से प्रेरणा प्रदान की और उनमें साम्राज्यवाद के विरुद्ध संघर्ष करने की भावना को प्रबल बनाया। उस समय आयरलैण्ड के लोग भी इंग्लैण्ड के विरुद्ध अपनी स्वतन्त्रता के लिए लड़ रहे थे। वे इंग्लैण्ड द्वारा किये जा रहे आर्थिक शोषण से रुष्ट थे। अमेरिकीयों का यह नारा था कि 'बिना प्रतिनिधित्व के कर नहीं लगाये जा सकते' आयरलैण्ड में लोकप्रिय हुआ तथा आयरिश जनता में यह भावना उत्पन्न हुई कि उन पर कर लगाने का अधिकार स्वयं उनको ही होना चाहिए। आयरिश नागरिकों ने अमेरिकी क्रान्ति से प्रेरणा लेकर संघर्ष की गतिविधियों को बढ़ाया व सफलता प्राप्त की।

(5) भारत पर प्रभाव - भारत पर अमेरिकी क्रान्ति का तत्कालीन प्रभाव कुछ उल्टा पड़ा। अमेरिकी स्वतन्त्रता-संग्राम के काल में जब फ्रांस ने युद्ध में प्रवेश किया तो भारत में अंग्रेज-फ्रांसीसियों से युद्ध की परिस्थिति उत्पन्न हो गई जिससे लाभ उठाकर अंग्रेजों ने फ्रांसीसियों की शक्ति को भारत में क्षति पहुँचायी तथा अपने साम्राज्य-विस्तार के मार्ग को सुलभ बना लिया। यह भी माना जाता है कि बीसवीं शताब्दी में आगे चलकर भारत में राष्ट्रीय भावनाओं का जन्म हुआ तो अनेक भारतीय राष्ट्रवादियों ने इस क्रान्ति से प्रेरणा ली।

□□□

अध्याय - 4

परिसंघ का काल (1781-1789 ई.) एवं संविधान का निर्माण एवं महत्त्व

□ प्रेम नारायण माथुर

(I) स्वतन्त्रता प्राप्ति के समय संयुक्त राज्य अमेरिका की स्थिति :

क्रान्तिकारी युग में इस प्रकार की शंकाएँ रखने वालों की कमी नहीं थी कि उपनिवेशवासी अपने आपको एक राष्ट्र के रूप में संगठित कर पायेंगे या नहीं। उनके मत में क्रान्ति का परिणाम अराजकता होगा। क्रान्ति के कारण अमेरिकी समाज में ऐसे परिवर्तन हुए थे जिनके फलस्वरूप राष्ट्र के भविष्य के सम्बन्ध में मतभेद उत्पन्न होना अनिवार्य था। अमेरिका में बसे साढ़े सैंतीस लाख लोगों में बहुमत किसानों का था तथा जनसंख्या का अधिकांश भाग अटलाण्टिक के तटवर्ती क्षेत्रों में बसा हुआ था। क्रान्ति काल में कुछ वर्ग विशेष सट्टे, मुनाफाखोरी तथा ठेकेदारी से धनी हो गये थे। व्यापार तथा उद्योग पर उपनिवेशी प्रतिबन्ध हट जाने से व्यापारी वर्ग धनी बन गया। क्रान्ति के पश्चात् बड़े-बड़े फार्मों के स्थान पर छोटी खेती भी पनपने लगी। उत्तराधिकार के नियमों में परिवर्तन किये गये। क्रान्ति ने अमेरिका में धार्मिक सहनशीलता स्थापित की।

उपर्युक्त सामाजिक परिवर्तनों के कारण ही अमेरिकी समाज में स्वार्थों की भिन्नता स्थापित हुई। यह भी भय उत्पन्न हुआ कि भविष्य में राष्ट्रीय एकता सुदृढ़ बनी रहेगी अथवा नहीं। वास्तव में क्रांति में प्रजातान्त्रिक सिद्धान्तों की विजय के उपरान्त भी कुलीनतान्त्रिक स्वार्थ अमेरिका में एक शक्ति थे। इसलिए अमेरिका में प्रजातान्त्रिक तथा कुलीनतान्त्रिक स्वार्थों में; उदार, प्रगतिशील एवं रूढ़िवादी वर्गों में और कृषक तथा वाणिज्यवाद सम्बन्धी स्वार्थों में क्रान्ति के परिवर्ती काल में टकराव हुआ। पार्केस के अनुसार यह टकराव कुछ समय तक बना रहा।

(II) अमेरिका में आदर्शों का मतभेद :

(1) **आर्थिक विवाद** - अमेरिकी क्रान्ति के काल में उग्र रूप से क्रान्ति का समर्थन करने वाले 'स्वतन्त्रता के पुत्रों' ने इस अमेरिका में प्रजातन्त्र की परम्परा स्थापित की। क्रान्ति के पश्चात् इस परम्परा में विश्वास करने वाले लोग यह मान्यता रखने लगे कि सरकार का कार्य क्षेत्र एवं शक्ति सीमित होनी चाहिए तथा उसे धनी वर्गों की अपेक्षा साधारण नागरिकों के आर्थिक हितों का अधिक ध्यान रखना चाहिए। सरकार पर जन साधारण का ही नियन्त्रण रखना चाहिए। यह वर्ग अठारहवीं शती के यूरोप के दार्शनिकों से प्रभावित था तथा यह विश्वास रखता था कि साधारण मानव स्वतन्त्रता का उपभोग कर सकता है और एक अच्छे समाज की स्थापना कर

सकता है अत: उस पर विश्वास किया जाना चाहिए। यह वर्ग एक छोटे स्वतन्त्र साधारण सम्पत्ति रखने वाले नागरिकों को एक आदर्श नागरिक मानता था। इस वर्ग की यह मान्यता थी कि ये आदर्श नागरिक अपनी राजनीतिक स्वतन्त्रता का उपभोग बिना आर्थिक स्वतन्त्रता के नहीं कर सकते हैं। इस वर्ग का यह भी विश्वास था कि अगर समाज में अधिकांश लोग सम्पत्तिहीन हैं तो ऐसे समाज में स्वतन्त्रता कभी भी स्थापित नहीं हो सकती। इस प्रजातान्त्रिक विचारधारा का अमेरिका में सबसे शक्तिशाली समर्थक थामस जैफरसन (Thomas Jefferson) था। उसके पश्चात् उन्नीसवीं शती के दूसरे दशक में एन्ड्रयू जैक्सन (Andrew Jackson) ने एक ऐसे दल का नेतृत्व किया जो इस विचारधारा को अपना आदर्श मानता था।

अमेरिकी क्रान्ति के काल में ही भूमिपतियों, व्यापारियों एवं महाजनों द्वारा कुलीनतान्त्रिक स्वार्थों का प्रश्न उठाया गया था। क्रान्ति के पश्चात् भी यह वर्ग शक्तिशाली रहा। इस वर्ग की यह मान्यता थी कि केवल बहुमत पर आधारित शासन से व्यक्तिगत अधिकारों का खण्डन होगा। यह शासन ऐसी स्थिति को जन्म देने वाला होगा जिसमें निर्धन वर्ग धनी वर्ग की सम्पत्ति छीन सकेगा तथा सभ्य व्यवहार का अन्त हो जायेगा। इस वर्ग का विश्वास था कि अज्ञानी तथा अनुशासनहीन जन साधारण को राजनीतिक शक्ति का प्रदान करना एक भूल होगो, क्योंकि सिद्धान्तों एवं सम्पत्ति वाले वर्ग ही अपने उच्च जन्म तथा बुद्धि के कारण सरकार चलाने में समर्थ हो सकते हैं। इस प्रकार यह वर्ग स्पष्ट रूप से यह चाहता था कि सरकार उच्च वर्ग के हाथ में होनी चाहिए तथा उनकी सम्पत्ति की रक्षा करने के लिए शक्तिशाली सरकार होनी चाहिए। नि:सन्देह यह वर्ग यूरोप की भाँति एक परम्परागत समाज की स्थापना चाहता था। इस वर्ग का मुख्य प्रवक्ता एलेक्जेण्डर हेमिल्टन था।

नये राष्ट्र में कुलीन वर्ग तथा प्रजातान्त्रिक वर्ग में आर्थिक नीति के प्रश्न पर मौलिक मतभेद एवं विवाद थे। अमेरिकी कुलीन वर्ग व्यापारियों के सम्पत्ति-अधिकार की रक्षा चाहता था तथा सरकार द्वारा एक ऐसी नीति चाहता था जो व्यापार के क्षेत्र में किये गये सौदों के उत्तरदायित्व को माने एवं ऋण देने वालों को सुरक्षा प्रदान करे। इतना ही नहीं, वे यह भी चाहते थे कि सरकार व्यापारियों, महाजनों तथा अन्य पूँजी लगाने वालों की सहायता करे तथा इस प्रकार के नियम बनाये जिनसे व्यापार का विस्तार हो सके। ये लोग व्यापार के क्षेत्र में एकाधिकारों का समर्थन करते थे और यह चाहते थे कि सरकार इस प्रकार के एकाधिकारों की भी रक्षा करे। अमेरिकी कुलीन वर्ग पश्चिम के क्षेत्र की भूमि के सम्बन्ध में भी भूमि का सट्टा करने वाले धनिक वर्ग के स्वार्थों की रक्षा चाहता था।

अमेरिकी कुलीन वर्ग एवं जनसाधारण के प्रजातान्त्रिक वर्ग में स्वार्थों का टकराव था। प्रजातान्त्रिक वर्ग भी निजी सम्पत्ति की रक्षा में विश्वास रखता था लेकिन वह सम्पत्ति का कुछ ही लोगों के हाथों में संचय होने देना नहीं चाहता था। अत: यह वर्ग बड़े-बड़े फार्मों का समर्थक था एवं पश्चिमी क्षेत्र की भूमि का वितरण अलग-अलग ऐसे परिवारों में चाहता था जो कि इन क्षेत्रों में बस सकें और स्वयं खेती करें। यह वर्ग इस क्षेत्र की भूमि को धनी सटोरियों की पहुँच के बाहर रखना चाहता था। इसी प्रकार से यह वर्ग व्यापारियों और पूँजीपतियों को विशेष अधिकार एवं सुविधाएँ प्रदान किये जाने के विरुद्ध था तथा यह चाहता था कि सरकार किसानों तथा ऋणियों को सहायता दे।

(2) राजनीतिक विवाद - आर्थिक क्षेत्र के वाद-विवाद के साथ-साथ अमेरिका के इन दोनों वर्गों में राजनीतिक मतभेद भी शक्तिशाली थे। कुलीनवर्गीय लोग एक शक्तिशाली केन्द्रीय सरकार चाहते थे, क्योंकि उनका विश्वास था कि शक्तिशाली केन्द्रीय सरकार ही औद्योगिक तथा व्यापारिक हितों की रक्षा कर सकेगी तथा ऐसी सरकार पर कृषक तथा ऋणी वर्ग अपना प्रभाव स्थापित नहीं कर सकेंगे। यह वर्ग इसलिए एक शक्तिशाली राष्ट्रीय सरकार का समर्थक था। इसके विपरीत प्रजान्त्रिक वर्ग राज्यों की शक्ति एवं अधिकारों का समर्थक था तथा एक शक्तिशाली केन्द्र के विरुद्ध था। यह वर्ग सरकार को कम से कम शक्ति देना चाहता था तथा शक्ति के केन्द्रीयकरण के प्रस्ताव को शंका व भय से देखता था।

विचारों के इस वाद-विवाद ने अमेरिकी विधान के निर्माण में वास्तव में सहायता दी। अगर प्रजातान्त्रिक आन्दोलन ने अमेरिकी राष्ट्र को एक आदर्श प्रदान किया तो कुलीनवर्गीय आन्दोलन ने एक ऐसी शक्तिशाली सरकार प्रदान की जिसके कारण ही नये राष्ट्र की शक्ति एवं समृद्धि में वृद्धि हुई। अगर प्रजातान्त्रिक आन्दोलन ने अमेरिका में वर्गहीन तथा सामाजिक समानता वाले स्वतन्त्र समाज का आदर्श रखा तो कुलीनवर्गीय नेताओं की नीतियों के कारण ही अमेरिका में पूँजी का संग्रह तथा वृद्धि हुई जिसके कारण उत्पादन बढ़ा और अमेरिका विश्व का सबसे धनी राष्ट्र बन सका। अमेरिका में हुई प्रगति तथा अमेरिकी समाज में स्थापित स्वतन्त्रता तथा सामाजिक समानता इन्हीं दो विचारधाराओं की मिली-जुली उपलब्धि है।

(III) परिसंघ का काल (The Confederation Period):

(1) परिसंघ का धाराएँ - मई, 1776 ईसवी में महद्वीपीय काँग्रेस ने उपनिवेशों में सरकार के नये ढाँचे को स्थापित करने की सिफारिश की। न्यू हैम्पशायर तथा दक्षिण कैरोलिना ने नये संविधान को स्वीकार कर लिया। इन प्रपत्रों में इस काल के प्राकृतिक अधिकारों (Natural Rights) के दर्शन को प्रमुख स्थान प्रदान किया गया। साथ ही शासितों के अधिकारों से सम्बन्धित विस्तृत अधिकारों को बिल ऑफ राइट्स (Bill of Rights) में व्यक्त किया गया। शक्ति पृथक्करण के सिद्धान्त के आधार पर सत्ता को व्यवस्थापिका, कार्यपालिका तथा न्यायपालिका में विभक्त किया गया। तथापि सरकार पर नियन्त्रण अब भी सम्पत्तिधारियों के हाथ में रहा।

वास्तव में अमेरिका में प्रथम केन्द्रीय सरकार की स्थापना 'परिसंघ की धाराओं' (Articles of Confederation) के द्वारा की गई। इसी धाराओं को मुख्य रूप से डिकिन्सन (Dickinson) ने बनाया था तथा 1777 ईसवी में महाद्विपीय काँग्रेस द्वारा इनमें संशोधन किया गया था। परिसंघ की धाराओं के अन्तर्गत परिसंघ को विदेश नीति, सुरक्षा तथा कुछ अन्य मामलों में नियन्त्रण प्रदान किया गया था, किन्तु कर लगाने तथा व्यापार को नियमित करने का अधिकार नहीं था। परिसंघ की सभी सत्ता काँग्रेस में निहित थी। कार्यपालिका तथा न्यायपालिका को पृथक् करने की कोई व्यवस्था नहीं थी। परिसंघ में प्रत्येक सदस्य राज्य को एक वोट का अधिकार था तथा महत्त्वपूर्ण मामलों पर निर्णय के लिये नौ मत आवश्यक थे। संविधान में संशोधन सर्व-सम्मति से ही किया जा सकता था। परिसंघ की धाराओं के समर्थन में अनेक कठिनाइयाँ थीं, क्योंकि विभिन्न राज्य इस सम्बन्ध में एकमत नहीं थे। वर्जीनिया और अन्य राज्य

पश्चिम की भूमि की मांग कर रहे थे जबकि पेनसिलवेनिया तथा मध्य के राज्य इसे परिसंघ के अधीन रखना चाहते थे। अन्त में यह निश्चय किया गया कि ओहियो नदी के उत्तर की भूमि परिसंघ के प्रत्यक्ष नियन्त्रण में रहेगी और यह किसी भी राज्य को न दी जाकर स्वतन्त्र राज्य के रूप में परिवर्तित कर दी जायेगी। इस प्रकार इस निर्णय से राज्यों की विस्तारवादी भावना पर रोक लग गई। विभिन्न राज्यों द्वारा समर्थित कर दिये जाने पर 1 मार्च, 1781 ईसवी को परिसंघ की धाराओं को प्रभावी घोषित कर दिया गया।

(IV) परिसंघ का शासन :

(1) आन्तरिक नीति - 1781-89 ईसवी का काल परिसंघ के काल के नाम से जाना जाता है और सामान्यतया इसे आर्थिक संकट, आन्तरिक मतभेद तथा रचनात्मक नेतृत्व के अभाव का काल कहा जाता है; किन्तु वास्तव में यह आलोचना शक्तिशाली केन्द्रीय सरकार के पक्षपातियों के प्रचार का परिणाम थी जिसे यथावत स्वीकार कर लिया गया। वास्तव में परिसंघ का काल शीघ्रगामी आर्थिक विकास का काल है।

क्रान्ति की समाप्ति के तुरंत बाद अमेरिका में आर्थिक अव्यवस्था उत्पन्न हुई। इसका कारण यह था कि ब्रिटेन तथा अन्य स्थानों से अमेरिका में अधिक माल आने लगा जिससे अमेरिकी मुद्रा विदेशों में जाने लगी। मुद्रा की कमी से 1784 व 1785 ईसवी में सामान्यतया मन्दी रही, किन्तु शीघ्र ही उस पर काबू पा लिया गया। अमेरिका के साहसी लोगों ने व्यापार के क्षेत्र को खोज निकाला। अनेक देशों ने अमेरिकी जहाजों के लिए अपने बन्दरगाह खोल दिये। केवल ब्रिटेन ने ब्रिटिश-वेस्ट इण्डीज में अमेरिकी जहाजों के प्रवेश की अनुमति नहीं दी। किन्तु तस्कर-व्यापार द्वारा इस कमी को पूरा किया जाने लगा और एक दशाब्दी के भीतर अमेरिका का विदेशी व्यापार गतिशील हो गया। 1784 ईसवी में प्रथम बार चीन तथा ईस्ट इण्डीज से व्यापार के लिए 'एम्प्रेस ऑफ चीन' (Empress of China) नामक जहाजी बेड़े ने प्रस्थान किया। आगामी अर्द्ध शताब्दी में अमेरिकी व्यापारियों ने अनेक नये व्यापारिक मार्गों की खोज कर लाभ कमाना प्रारम्भ किया। स्वयं अमेरिका में उत्पादन को प्रोत्साहन प्राप्त हुआ। विभिन्न राज्यों ने विदेशी माल पर तटकरों की दरों को बढ़ा कर उन्हें हतोत्साहित किया और अंतर्राज्यीय व्यापार को तटकरों से मुक्त कर दिया। अनेक कम्पनियों ने सड़कों व पुलों का निर्माण करना प्रारम्भ किया। नये व्यापारिक बैंकों की स्थापना की जाने लगी इससे आर्थिक प्रगति का पथ प्रशस्त हुआ।

क्रान्ति की समाप्ति के पश्चात् पश्चिम की ओर विस्तार हुआ। काँग्रेस द्वारा इस सम्बन्ध में किसी प्रकार की नीति के निर्धारण के पूर्व ही पेनसिलवेनिया तथा वर्जीनिया आदि से लोग यहाँ आकर बसने लगे। इस क्षेत्र के सम्बन्ध में यह तो निश्चित कर लिया गया था कि पश्चिम के क्षेत्र को भिन्न स्वतन्त्र राज्यों के रूप में संगठित किया जायेगा, किन्तु यह निश्चय नहीं किया जा सका था कि भूमि का वितरण किस प्रकार होगा। इस भूमि पर बसने की इच्छा रखने वाले लोगों में तथा भूमि के धनिक सटोरियों के स्वार्थों में टकराव था। 1784 ईसवी में जेफरसन ने उत्तर-पश्चिम को दस नये राज्यों में विभक्त करने तथा इसे स्वतन्त्र व मुक्त भूमि बनाने का प्रस्ताव किया, किन्तु

1785 ईसवी में कांग्रेस ने 'लैण्ड आर्डिनेंस' (Land Ordinance) द्वारा भूमि के निरीक्षण के पश्चात् छत्तीस कस्बों में बाँटने तथा उनमें से इक्कतीस का विक्रय करने का निश्चय किया। निरीक्षण का कार्य धीमी गति से हुआ। अत: सटोरियों के दबाव तथा मुद्रा की शीघ्र आवश्यकता के कारण 1787 ईसवी में पन्द्रह लाख एकड़ भूमि बेच दी गई। इस विक्रय से वहाँ पर शीघ्र ही सरकार की स्थापना की आवश्यकता अनुभव की गई। अत: 1787 ईसवी में नार्थ वेस्ट अध्यादेश (North West Ordinance) के द्वारा पश्चिमी क्षेत्र के राज्यों में कांग्रेस द्वारा नियुक्त गवर्नर व न्यायाधीशों की व्यवस्था की गई तथा पाँच हजार पुरुषों के होने पर क्षेत्रीय विधायक-सभा के निर्माण का अधिकार दिया गया। इस अध्यादेश में यह व्यवस्था की गई कि कम से कम तीन व अधिक से अधिक पाँच राज्यों में इसका विभाजन होगा और साठ हजार की जनसंख्या होने पर समानता के आधार पर राज्य का दर्जा प्रदान कर उस क्षेत्र को परिसंघ में सम्मिलित कर लिया जायेगा। ये दो अध्यादेश परिसंघ की प्रमुख उपलब्धियाँ थीं। इसके अनुसार एक उपनिवेश को राष्ट्र का दर्जा प्रदान कर उसे समानता के आधार पर परिसंघ में शामिल किया जाना था। इस नीति ने आगामी समय में महाद्वीप से भी परे अमेरिका के विस्तार के मार्ग को प्रशस्त किया।

इसी प्रकार वेरमोन्ट (Vermont) तथा केन्टकी-टेनेसी (Kentucky-Tenessee) के क्षेत्र ने भी राज्य के दर्जे की माँग की। वेरमोन्ट के एटहन एलन (Ethan Allen) व उसके भाई ने स्वत: संविधान का निर्माण कर लिया तथा राज्य के अधिकार ग्रहण कर लिये। किन्तु न्यूयार्क वेरमोन्ट के भाग से अपना अधिकार छोड़ने के लिए तत्पर नहीं था। अत: वेरमोन्ट को 1781 ईसवी तक राज्य के रूप में न तो मान्यता दी गई और न ही संघ में शामिल किया गया। केन्टकी व टेनेसी में भी सटोरियों ने इसी प्रकार के आन्दोलन को प्रोत्साहित किया। ये प्रदेश क्रमश: वर्जीनिया तथा उत्तरी कैरोलीना के थे, किन्तु वहाँ की सरकारें इन दूरस्थ क्षेत्रों पर प्रभावी नियन्त्रण रखने में असमर्थ थीं। अत: शान्ति व व्यवस्था तथा इण्डियनों के आक्रमण के विरुद्ध रक्षा का दायित्व नये बसने वालों का ही था। परिसंघ ने उन्हें पृथक् राज्य के रूप में संगठित करने का असफल प्रयास किया और अन्त में वर्जीनिया तथा उत्तरी कैरोलिना के राज्यों का अधिकार इन क्षेत्रों पर पुन: स्थापित कर दिया गया।

(2) विदेशी नीति - परिसंघ को सबसे अधिक खतरा ब्रिटेन व स्पेन की विस्तारवादी नीति से था। 1783 ईसवी के पश्चात् ब्रिटेन के मन्त्रिमण्डल की धारणा थी कि अमेरिका से जो सन्धि की गई वह अत्यधिक उदार थी। ब्रिटेन ने डेट्रायट (Detroit) तथा महान् झील (Great lake) के दक्षिण से सेना को हटाने से इस बहाने पर इन्कार कर दिया कि अमेरिका ने निष्ठावादियों तथा ऋणों के सम्बन्ध में अपने वचन को पूरा नहीं किया है। इस क्षेत्र पर अधिकार से ब्रिटेन अमेरिकी आदिवासयियों के साथ अपने सम्बन्धों के कारण फर के व्यापार तथा उत्तर पश्चिम की भूमि पर नियन्त्रण रखने में समर्थ हो सकता था। स्पेन भी न्यू आर्लिन्स के इण्डियनों में अपने प्रभाव को बढ़ा रहा था। इतना ही नहीं, स्पेन ने पश्चिमी क्षेत्रों में नये बसने वालों को मिसीसिप्पी में नौ परिचालन व व्यापार से भी वंचित कर दिया जो उसके आर्थिक विकास के लिये आवश्यक था।

परिसंघ की सरकार इन विदेशी शक्तियों का सामना करने में असमर्थ थी। अत: विदेशी मामलों के अध्यक्ष न्यू यार्क के जॉन जे (John Jay) ने 1786 ईसवी में स्पेन के साथ सन्धि कर ली जिसमें मिसीसिप्पी को व्यापार के लिए बन्द कर दिया। बदले में अमेरिकी व्यापारियों को स्पेन में व्यापार की सुविधाएँ प्रदान करने की व्यवस्था की गई। जॉन जे द्वारा इस सन्धि को करने का कारण यह था कि पश्चिम में नये बसने वालों के प्रति उसको कोई सहानुभूमि नहीं थी। किन्तु इस सन्धि से दक्षिण व पश्चिम में गहन असन्तोष उत्पन्न हुआ और पश्चिम के राज्यों ने तो न केवल परिसंघ से ही पृथक् होने वरन् स्पेनिश साम्राज्य में सम्मिलित होने तक के लिए गुप्त वार्ताएँ विलीकन्सन (Willikanson) नाम के एक अमेरिकी व्यक्ति के माध्यम से प्रारम्भ कर दी। वह एक स्वतन्त्र षड्यन्त्रकारी था अत: यह संधी कभी भी कांग्रेस के समक्ष अनुसमर्थन के लिए प्रस्तुत नहीं की गई। स्पष्ट था कि ऐसे समय में एक ऐसी केन्द्रीय सरकार की आवश्यकता थी जो राष्ट्रीय हितों की रक्षा करने में समर्थ हो।

(3) नई सरकार की मांग - अमेरिका के बड़े भूमिपति तथा व्यापारी वर्ग परिसंघ काल से ही एक शक्तिशाली संघीय सरकार की आवश्यकता के लिए प्रचार कर रहे थे। इन लोगों के आन्दोलन का विरोध कुछ ऐसे नेता कर रहे थे जो कि अपने आपको किसानों तथा उनके स्वार्थों का प्रतिनिधित्व करने वाला कहते थे। शक्तिशाली संघीय सरकार के समर्थक 'परिसंघ की धाराओं' को ही एक शक्तिशाली संघ का आधार बनाने की आशा रखते थे। 1781 ईसवी में इन लोगों का कांग्रेस में प्रभुत्व था लेकिन परिसंघ की धाराओं में ये लोग इसलिए संशोधन नहीं करा पाये, क्योंकि सभी राज्यों का इन्हें कभी भी समर्थन प्राप्त नहीं हो सका। इंगलैण्ड से शान्ति-सन्धि हो जाने के पश्चात् अमेरिका में यह भावना उत्पन्न हुई कि अब शक्तिशाली केन्द्रीय सरकार की आवश्यकता ही नहीं रही है। इसलिए शान्ति-सन्धि के पश्चात् संघवादी (Federalists) गुट का प्रभुत्व कांग्रेस में कम होने लगा। अत: इन लोगों ने एक नयी सरकार की माँग का समर्थन करना प्रारम्भ कर दिया। निस्सन्देह यह नयी केन्द्रीय सरकार एक शक्तिशाली सरकार होनी चाहिए थी। अपने पक्ष के समर्थन में संघवादियों ने यह तर्क रखा कि एक नई शक्तिशाली सरकार ही अमेरिका के बढ़ते हुए उत्पादन, व्यापार तथा जहाजरानी को सुरक्षा प्रदान कर सकती है। इसी प्रकार अन्तर्राज्यीय विवादों तथा पश्चिमी क्षेत्रों की सुरक्षा के प्रश्न भी उठाये गये। सार्वजनिक ऋण एवं मुद्रा के प्रश्न पर चिन्ता प्रकट की गई। उपर्युक्त सभी प्रश्न गम्भीर एवं महत्त्वपूर्ण थे और इनका समाधान परिसंघ के सीमित अधिकारों के अन्तर्गत नहीं हो सकता था।

नई सरकार की माँग को सबसे अधिक बल उस समय की वित्तीय समस्याओं से मिला। महाद्वीपीय सेना के सिपाहियों को क्रान्ति काल में वेतन नहीं दिया गया था। उन्हें केवल सरकारी ऋण-पत्र देकर घर भेज दिया गया। इस ऋण-पत्रों को महाजनों तथा सटोरियों ने उनके वास्तविक मूल्य से कम दामों में खरीद लिया था। परिसंघ के लिए यह बात अशोभनीय थी। परिसंघ स्वयं आन्तरिक व बाह्य ऋणों से दबा हुआ था, जिसके ब्याज तक को भी वह नहीं चुका पाया था। क्योंकि उसे स्वयं किसी भी प्रकार के कर लगाने के अधिकार नहीं था। यह स्थिति अधिक समय तक नहीं चल सकती थी। व्यापारी वर्ग-महाजन तथा वे लोग जिन्होंने परिसंघ को ऋण दिया था

यह प्रचार करने लगे कि केन्द्र में एक ऐसी सरकार होनी चाहिए जो अपने उत्तरदायित्वों को पूरा कर सके। संघवादी विचार के लोग इसका समर्थन करने लगे तथा इसका प्रभाव अमेरिका के जन साधारण पर भी पड़ा। यह प्रचार सुनियोजित रूप से लेनदार लोग तथा संघवादी लोग करने लगे जिन्होंने अपने पक्ष के लिए दबाव डालने हेतु एक गुट बना लिया।

सार्वजनिक ऋण के अतिरिक्त मुद्रा की स्थिति ने भी जन साधारण में चिन्ता उत्पन्न कर दी। परिसंघ की मुद्रा निर्मूल्य हो चुकी थी। केवल सोने व चाँदी के सिक्कों का विनिमय हो पाता था। इस कारण 1784 व 1785 ईसवी में बड़ी मन्दी रही। इस मन्दी से किसानों को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, क्योंकि उन्हें ऋण देने वाला कोई नहीं था। सात राज्यों ने पत्र-मुद्रा जारी कर उन किसानों को ऋण दिये जो कि अपनी भूमि गिरवी रखने के लिए तैयार थे। इस पत्र-मुद्रा का भी मूल्य घटने लगा और निजी देनदारों ने उसे स्वीकार करने से इन्कार कर दिया। कुछ राज्यों ने विवश होकर ऐसे नियम लागू किये कि जिसके अन्तर्गत भुगतान न किये गये ऋणों के लिए गिरवी रखी गई सम्पत्ति को नीलाम नहीं किया जा सकता था। इन नियमों ने देनदारों में असन्तोष उत्पन्न कर दिया। वे प्रचार करने लगे कि उनके सम्पत्ति के अधिकरों पर प्रहार किया गया है तथा संविदागत दायित्व को नहीं माना जा रहा है। इसमें सन्देह नहीं कि मुद्रा की स्थिति ने तथा 1784-85 ईसवी की मन्दी ने यह स्पष्ट कर दिया था कि परिसंघ एवं परिसंघ की धाराओं से नये राष्ट्र कीं समस्याओं का सामना नहीं किया जा सकता।

नैई सरकार की आवश्यकता अमेरिकी राष्ट्र के समक्ष उस समय आई जब 1786 ईसवी में कनेक्टिकट की घाटी के किसानों ने डेनियल सेस (Daniel Shays) नामक व्यक्ति के नेतृत्व में सरकार तथा न्यायालयों के विरुद्ध विद्रोह कर दिया जिसके भविष्य में एक प्रकार के गृह युद्ध की शंका उत्पन्न होने लगी। मैसाचुसेट्स का राज्य वाणिज्य सम्बन्धी वर्गों के हाथ में था इसीलिए इस राज्य ने अपने सार्वजनिक ऋण को चुकाना आरम्भ किया और इसके लिए किसानों से फसल का 1/3 हिस्सा लगान के रूप में वसूल करना प्रारम्भ किया। लेकिन स्वयं किसानों को अपना ऋण आसानी से चुका पाने के लिए राज्य से कोई सुविधा प्राप्त नहीं हुई। अनेक किसानों के घर व उनकी भूमि कुर्की में चली गई तथा न्यायालयों द्वारा ऋण भुगतान न करने पर किसानों को कारागृह की सजा भी दी गई। डेनियल सेस् ने इस प्रकार के अन्याय के विरुद्ध ही विद्रोह किया तथा न्यायालयों पर धावा बोल दिया। इस विद्रोह ने अमेरिका में धनी वर्गों तथा जन साधारण में समान रूप से चिन्ता उत्पन्न की तथा एक नई शक्तिशाली केन्द्रीय सरकार की आवश्यकता का विचार प्रबल होने लगा। संघवादियों ने परिस्थिति का लाभ उठाया।

(V) फिलाडेल्फिया सम्मेलन :

(1) आयोजन - इस विद्रोह के पश्चात् प्रमुख संघवादी नेताओं ने, जिनमें हैमिल्टन, जेम्स मेडीसन(James Madison), वेब्स्टर (Webstor) तथा जार्ज वाशिंगटन प्रमुख थे, विभिन्न साधनों से प्रचार करना शुरू किया। इन नेताओं में से मेडीसन ने वर्जीनिया राज्य की विधायक-सभा से सभी राज्यों को निमन्त्रण भिजवाये तथा यह प्रार्थना की कि वे अपने प्रतिनिधियों के रूप में एनापोलिस (Annapolis) स्थान पर कमिश्नर भेजे ताकि एक सम्मिलित बैठक में राज्यों के बीच अन्तर्राज्यीय व्यापार के प्रश्नों तथा समस्याओं पर विचार किया जा सके।

एनापोलिस का यह सम्मेलन 11 सितम्बर, 1786 ईसवी के दिन प्रारम्भ हुआ और इसमें केवल पाँच राज्यों ने अपने कमिश्नर भेजे। इस कारण से सम्मेलन ने स्वयं कोई निर्णय नहीं लेकर सभी राज्यों से यह प्रार्थना की कि वे अपने-अपने प्रतिनिधि नियुक्त करके मई, 1787 के दूसरे सोमवार के दिन फिलाडेल्फिया के नगर में एक अधिवेशन में भेजे। प्रस्तावित अधिवेशन के लिए यह लक्ष्य रखा गया कि वह जैसा उचित समझे उसी प्रकार की व्यवस्था एक संघीय सरकार के विधायन के लिए करे ताकि संघ को परिस्थितियों के अनुसार उपयुक्त बनाया जा सके।

एनोपोलिस का निमन्त्रण सर्वप्रथम वर्जीनिया के राज्य ने ही स्वीकार किया तथा वर्जीनिया ने अपने सात प्रतिनिधियों के नामों की घोषणा भी कर दी। इसका प्रभाव दूसरे राज्यों पर भी पड़ा जिसके कारण काँग्रेस ने भी यह निर्णय लिया कि वे भी अपना एक अधिवेशन उसी समय फिलाडेल्फिया में करेगी और इस सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य परिसंघ की धाराओं में संशोधन करना होगा। कांग्रेस ने इस सम्बन्ध में 21 फरवरी, 1787 ईसवी को एक प्रस्ताव पारित किया जिसमें यह आशा प्रकट की गई कि एनापोलिस के निमन्त्रण पर होने वाला अधिवेशन अपने प्रस्तावित संशोधनों की सूचना कांग्रेस तथा राज्यों की विधानसभाओं को देगा ताकि उन्हें स्वीकार अथवा अस्वीकार किया जा सके। वर्जीनिया के उदाहरण पर न्यू हैम्पशायर तथा रोड द्वीप के राज्यों को छोड़ कर सभी अन्य राज्यों ने कार्यवाही की तथा अपने प्रतिनिधि नियुक्त कर दिये। सम्मेलन निर्धारित तिथि को प्रारम्भ न होकर 25 मई, 1787 ईसवी को प्रारम्भ हुआ, क्योंकि उस दिन ही सात राज्यों के प्रतिनिधि फिलाडेल्फिया पहुँचे और कोरम (Quorum) पूरा हुआ। न्यू हैम्पशायर ने जून, 1787 ईसवी में अपने प्रतिनिधि नियुक्त किये जो कि 23 जुलाई, 1787 ईसवी के दिन फिलाडेल्फिया पहुँचे। उस समय तक सभी विवादग्रस्त प्रश्नों पर समझौता हो चुका था। रोडे द्वीप के प्रतिनिधियों ने सम्मेलन में भाग नहीं लिया। अधिवेशन में कुल चौहत्तर प्रतिनिधि विभिन्न राज्यों से नियुक्ति किये गये, किन्तु केवल पचपन प्रतिनिधि उपस्थित हुए जिनमें से भी अनेक सदस्य अधिवेशन की कार्यवाही से अनुपस्थित रहे। जब विधान बनकर तैयार हो गया तब उस पर हस्ताक्षर करने वाले केवल उन्तालिस प्रतिनिधि उपस्थित थे।

(2) प्रतिनिधि व उनके विचार - फिलाडेल्फिया सम्मेलन में चुने गये प्रतिनिधियों में अधिकांश ऐसे थे जिनका सम्बन्ध रूढ़िवादी एवं धनी वर्गों से था। लेकिन ये लोग शिक्षित थे तथा अमेरिकी महाविद्यालयों की उपज थे। कुछ ऐसे भी प्रतिनिधि थे जिन्होंने अपने आपको महाविद्यालयों से बाहर रह कर शिक्षित किया था। इन प्रतिनिधियों में अधिकतर लोगों को प्रशासन और सरकारी कामकाज का अनुभव था तथा इनमें से अनेक कांग्रेस अथवा राज्य विधायक सभाओं के सदस्य रह चुके थे। ये प्रतिनिधि अमेरिकी राष्ट्र के ख्याति प्राप्त नेता थे। अत: यह कहा जा सकता है कि अधिवेशन के लिए विभिन्न राज्यों ने अपने महान् सपूतों का चुना। यहाँ यह भी उल्लेखनीय होगा कि पैट्रिक हेनरी (Patrick Henry) छोड़कर दूसरे उग्र एवं परिवर्तनवादी नेता अधिवेशन के लिए प्रतिनिधियों के रूप में नहीं चुने जा सकते थे। कुछ ऐसे प्रमुख राष्ट्र नेता थे जिनकी अधिवेशन से अनुपस्थिति उल्लेखनीय है। जेफरसन इस समय में फ्रान्स में अमेरिकी राजदूत था तथा जॉन एडम्स (John Adams) इंग्लैण्ड में अमेरिका का प्रतिनिधि था। इस प्रकार जॉन जे विदेश सचिव होने के कारण सम्मेलन की कार्यवाही में भाग नहीं ले सका।

फिलाडेल्फिया सम्मेलन (Philadelphia Convention)में भाग लेने वाले सभी प्रतिनिधि१ अपने कार्य के प्रति सजग थे। अत: ये लोग केवल उदात्त विचार एवं भावनाओं में नही उलझे और विधान-निर्माण के कार्य को उन्होंने व्यावहारिक तथा क्रियात्मक दृष्टि से करने का प्रयास किया। इसका एक कारण यह भी था कि सम्मेलन में एकत्रित हुए प्रतिनिधियों में अधिकांश प्रतिनिधि आयु में बहुत बड़े नहीं थे। प्रतिनिधियों की औसत आयु केवल बयालीस वर्ष की थी। लेकिन आश्चर्य की बात यह है कि कम आयु के होते हुए भी ये लोग रूढ़िवादी थे। इसका कारण यह था कि ये लोग कुलीन तथा सम्पत्तिशाली वर्गों से सम्बन्धित थे। इन लोगों का राजनीतिक दृष्टिकोण यह था कि सरकार का प्रथम कर्त्तव्य सम्पत्तिगत अधिकारों की रक्षा करना है। इन प्रतिनिधियों में बहुत से ऐसे थे जिनके पास परिसंघ एवं राज्य सरकारों द्वारा जारी किये ऋण-पत्र (Bonds) थे जिनका भुगतान अभी बाकी था तथा जिनका मूल्य गिर रहा था। स्पष्ट था कि एक शक्तिशाली सरकार की स्थापना होने पर इन ऋण-पत्रों के मूल्य में वृद्धि हो सकती थी। इसी प्रकार शक्तिशाली सरकार की स्थापना से व्यापार एवं वाणिज्य को आवश्यक प्रोत्साहन मिल सकता था और इसमें भी धनी वर्गों का ही हित था। सम्मेलन में एकत्रित होने वाले प्रतिनिधियों में उद्देश्य के प्रश्न पर पर्याप्त मतैक्य था। प्रतिनिधियों का उद्देश्य यह था कि एक शक्तिशाली केन्द्रीय सरकार बनाई जाये जो कानून एवं व्यवस्था स्थापित कर सके, आर्थिक प्रगति को प्रोत्साहन दे सके, अपने ऋणों का भुगतान कर सके तथा विदेशों में अमेरिकी स्वार्थों की रक्षा भी कर सके । इस प्रकार से अधिवेशन का लक्ष्य स्वतन्त्रता एवं सम्पत्ति की रक्षा करना था। यह कहना कठिन है कि सम्पत्ति की रक्षा का आदर्श रख कर क्या अमेरिकी विधान के निर्माता केवल अपने निजी तथा वर्ग के स्वार्थों की रक्षा कर रहे थे। सम्भवत: रूढ़िवादी विचारों के उपरान्त भी प्रतिनिधियों का यह विश्वास था कि व्यापार और वाणिज्य की प्रगति से धनी वर्गों के साथ-साथ जन साधारण का भी कल्याण होगा। अमेरिकी विधान-निर्माताओं की यह आशा निस्सन्देह फलीभूत हुई।

फ़िलाडेल्फ़िया अधिवेशन में प्रतिनिधियों द्वारा राज्यों के अधिकारों के पक्ष में व्यापक लोक-भावना को स्वीकार किया गया। सभी प्रतिनिधिगण इस बात को जानते थे कि अगर राज्यों के अधिकारों का ध्यान नहीं रखा गया तो उनका निर्मित विधान अमेरिकी जन साधारण को स्वीकार्य नहीं होगा। सम्मेलन में हैमिल्टन ने यह तर्क दिया कि राज्यों के अधिकारों को समाप्त किये बिना अमेरिका में एक सुदृढ़ सरकार की स्थापना नहीं की जा सकती लेकिन उसके इस तर्क को अस्वीकार किया गया एवं एक इस प्रकार की संघीय व्यवस्था स्थापित करने का प्रयास किया गया जिसमें प्रभुसत्ता का विभाजन केन्द्र एवं राज्यों में किया गया हो। यह कार्य अत्यन्त कठिन था लेकिन प्रतिनिधियों ने एक ऐसे प्रयोग की व्यवस्था की जिसे वास्तव में एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि कहा जा सकता है। सम्मेलन में एकत्रित हुए सभी प्रतिनिधि केवल बहुमत के शासन से डरते थे। उनका भय था कि इस प्रकार का शासन सम्पत्ति के अधिकार की रक्षा नहीं कर सकेगा तथा स्वयं में अयोग्य होगा। यहाँ यह उल्लेखनीय होगा कि सम्मेलन की बैठकें गुप्त थीं और उसकी कार्यवाही के बारे में कोई भी जानकारी नहीं दी गई, इसलिए अनेक प्रतिनिधियों ने खुल्लमखुल्ला प्रजातन्त्र के सिद्धान्त की निन्दा की तथा यह माँग की कि प्रस्तावित विधान में निजी अधिकारों की, जिससे तात्पर्य सम्पत्ति के अधिकार से था, रक्षा की जाये। मेडीसन ने, जो इस

अधिवेशन का एक प्रमुख सदस्य था, यहाँ तक कहा कि उनका लक्ष्य अत्यधिक धनिक वर्ग जो अल्प संख्या में है उसकी रक्षा करना है। निस्सन्देह यह वर्ग निर्धनों के बहुमत से डरता था।

फिलाडेल्फिया सम्मेलन में केवल बहुमत की सरकार के सम्बन्ध में भय अवश्य था लेकिन अधिवेशन प्रजातन्त्र के भौतिक सिद्धान्त को नष्ट नहीं करना चाहता था; क्योंकि सम्मेलन में एकतन्त्रवाद का कोई भी समर्थक नहीं था फिर भी प्रतिनिधि लोग यह चाहते थे कि केवल अपने बहुमत के कारण कोई भी वर्ग विशेष भविष्य में अपना आधिपत्य न जमा ले तथा निजी एवं अल्पसंख्यकों के अधिकारों को क्षति न पहुँचे। इसलिए यह लक्ष्य रखा गया कि विधान में एक ऐसी व्यवस्था की जाये कि कोई एक वर्ग सरकारी यन्त्र पर कब्जा करके दूसरे वर्गों का दमन नहीं कर पाये। इसके लिए यह आवश्यक था कि सरकार में शक्तियों का ऐसा सन्तुलन हो जिनसे न तो धनी वर्गों की सम्पत्ति छीनी जा सके और न ही निर्धनों के निजी अधिकार समाप्त हों तथा न ही उनका शोषण किया जा सके। विधान में इस प्रकार सम्पत्ति की रक्षा के प्रश्न पर तथा बहुमत के महत्त्वपूर्ण प्रश्न पर आपसी गतिरोध को समाप्त करने का प्रयास किया गया। इस काल में प्रतिनिधियों ने सर आइजेक न्यूटन से प्रेरणा ली जिसने यह तथ्य सामने रखा था कि 'विधाता स्वयं प्रकृति में सन्तुलन रखता है।' इस नियम से प्रेरित होकर प्रतिनिधियों ने निष्कर्ष निकाला कि राजनीतिज्ञों को राज्य मर्मज्ञता का ध्यान रखते हुए वर्ग-भावना से ऊपर उठ कर कार्य करना चाहिए तथा किसी भी सरकार पर केवल वर्गीय नियन्त्रण को अस्वीकार किया जाना चाहिए। इस बात का भी समर्थन किया गया कि राजनीतिक नेताओं को वर्गीय एवं दूसरे स्वार्थों के स्थान पर समस्त जाति के हितों की रक्षा करनी चाहिए। सभी प्रतिनिधि यह चाहते थे कि अमेरिका में प्रत्येक नागरिक के साथ न्याय होना चाहिए।

अमेरिकी विधान-निर्माता विधान-निर्माण का कार्य करते समय अपने उपनिवेशी अनुभव के साथ फ्रांसीसी दार्शनिक मोन्टेस्क्यू के विचारों से भी प्रभावित हुए थे। ये लोग विश्वास करते थे कि सरकार के तीन अंग हैं- व्यवस्थापिका, कार्यपालिका तथा न्यायपालिका। मोन्टेस्क्यू की शक्ति-पृथक्करण की विचारधारा के अनुसार प्रतिनिधिगण अमेरिकी विधान में एक ऐसी व्यवस्था करना चाहते थे जिससे सरकार के तीनों अंग एक-दूसरे से स्वतन्त्र हों। औपनिवेशिक काल में भी राज्यों के प्रशासन में शक्ति-पृथक्करण के सिद्धान्त पर ही शासन व्यवस्था आधारित थी। विधान-निर्माता इसलिए एक शक्तिशाली न्यायालय के पक्ष में थे जो कार्यपालिका के प्रभाव में न हो और इसके साथ-साथ एक शक्तिशाली सरकार की स्थापना के लिए एक शक्तिशाली कार्यपालिका भी वे चाहते थे। इतना ही नहीं, वे व्यवस्थापिका के अधिकारों की भी रक्षा करना चाहते थे।

फिलाडेल्फिया सम्मेलन में भाग लेने के लिए सभी राज्यों ने उच्च कोटि के प्रतिनिधि भेजे थे। इस दिशा में मार्ग दर्शन वर्जीनिया के राज्य ने किया जिसने अपने सात सर्वश्रेष्ठ नेताओं को चुना। सम्मेलन में सबसे प्रमुख व्यक्ति वर्जीनिया के प्रतिनिधि-मण्डल का नेता था जो वास्तव में अमेरिकी राष्ट्र का नेता बन चुका था। यह व्यक्ति जार्ज वाशिंगटन था। प्रारम्भ में वह सम्मेलन की गतिविधियों में भाग लेने में संकोच कर रहा था लेकिन लोगों के आग्रह को ठुकरा भी नहीं सकता था। उसे सम्मेलनों का अध्यक्ष नियुक्त किया गया। इसलिए वाशिंगटन ने सम्मेलन में हुए वाद-विवादों पर नियन्त्रण रखा।

लेकिन स्वयं वह एक दो-बार ही बोला। फिर समस्त प्रतिनिधिगण वाशिंगटन के दृष्टिकोण से, जो मौन रहते हुए भी स्पष्ट हो जाता था, प्रभावित हुए। सम्मेलन की कार्यवाही में वाशिंगटन ने पूरी रुचि ली और उसे हर प्रकार से सफल बनाने का प्रयास किया। वर्जीनिया के राज्य से जेम्स मेडीसन आया जिसने छत्तीस वर्ष की आयु में अनेक अनुभव प्राप्त कर लिये थे। इसके अतिरिक्त इस व्यक्ति ने विश्व के प्राचीन देशों के विधानों का गहन अध्ययन किया था और यह जानता था कि यूनानी संघीय सरकार किस प्रकार से काम करती थी। वह रूढ़िवादी था। प्रारम्भ में उसने एक शक्तिशाली संघीय सरकार का समर्थन किया। मेडीसन कोई महान वक्ता नहीं था लेकिन उसके विचार स्पष्ट थे तथा उसका तर्क प्रभावशाली था। सम्मेलन में पेनसिलवेनिया के राज्य से जेम्स विल्सन (James Wilson) प्रतिनिधि के रूप में आया था जो उस समय में अमेरिका का एक प्रमुख वकील था। विल्सन के कानून-ज्ञान ने और महाद्वीपीय कांग्रेस (Continental Congress) के सदस्य के रूप में उसके अनुभव ने उसे सम्मेलन का एक प्रमुख प्रतिनिधि बना दिया था। पेनिसिलवेनिया के राज्य से ही मोरिस (Morris) नाम का व्यक्ति आया था। वह कुलीन वर्गीय था। उसने सम्मेलन में धनिक वर्गों के स्वार्थों का पुरजोर समर्थन किया। इसके साथ-साथ वह शक्तिशाली संघीय सरकार का समर्थक भी था। शक्तिशाली सरकार के समर्थकों में मैसाचुसेट्स राज्य का रुफस किंग (Rufus King) था जिसने अपनी वाद-विवाद शक्ति का पूरा परिचय दिया। इसी सम्बन्ध में दक्षिण कैरोलिना के चार्ल्स पिन्कने (Charles Pinckney) का नाम उल्लेखनीय है जो केवल उन्तीस वर्ष का था। इसी प्रकार शक्तिशाली सरकार का समर्थन एडमण्ड रेंडोल्फ (Edmund Randolph) तथा जार्ज मेसन (George Mason) ने भी किया। ये लोग सब हैमिल्टन के समर्थक थे। हैमिल्टन कट्टर राष्ट्रवादी था और एक इतनी शक्तिशाली केन्द्रीय सरकार बनाना चाहता था कि उसे स्वीकार करना सम्मेलन के लिए कठिन था। वह न्यू यार्क के प्रतिनिधि मण्डल का नेतृत्व कर रहा था। स्वयं उसके साथ आये प्रतिनिधि उसके विचारों से सहमत नहीं थे, अत: हैमिल्टन ने सम्मेलन से अनुपस्थित रहना शुरू कर दिया था।

सम्मेलन में भाग लेने वाले लोगों में से जिन लोगों ने राज्यों के अधिकारों का समर्थन किया उनमें प्रमुख स्थान रोजर शर्मन (Roger Sherman) तथा विलियम पेटरसन (William Patterson) को दिया जा सकता है। ये दोनों योग्य व अनुभवी राजनीतिज्ञ थे तथा वाद-विवाद के क्षेत्र में दक्षता रखते थे। शर्मन तथा पेटरसन के समर्थकों ने राज्यों के अधिकारों की, रक्षा की माँग की एवं आवश्यकता से अधिक शक्तियों के केन्द्रीयकरण का विरोध किया। इस प्रकार से इन नेताओं ने सम्मेलन की कार्यवाही में बाधा न डालकर एक समझौते की बात रखी जिस के बिना सम्भवत: अमेरिकी विधान बनता ही नहीं। इस प्रकार से इन लोगों ने अमेरिकी राष्ट्र की बड़ी सेवा की। सम्मेलन में उपस्थित होने वालों में बेंजामिन फ्रेन्कलिन (Benjamin Franklin) का उल्लेख आवश्यक है। फ्रेन्कलिन अमेरिका का एक बड़ा राष्ट्रीय नेता था और वृद्ध होने के कारण सम्मेलन के वाद-विवादों में सक्रिय भाग नहीं ले सका। फ्रेन्कलिन का उत्तरदायित्व हमेशा यही रहा कि वह विरोधी पक्षों को मनाने का कार्य करे। ऐसे अनेक अवसर आये जबकि फ्रेन्कलिन को अपने प्रभाव का उपयोग कर लोगों को शान्त करना पड़ा। इस प्रकार उसने भी महान् सेवा की।

(3) सम्मेलन की कार्यवाही - सम्मेलन की निर्धारित तिथि पर कुछ ही प्रतिनिधि पहुँच पाये अत: उसकी कार्यवाही में ग्यारह दिन का विलम्ब हो गया। वाशिंगटन का चुनाव सर्वसम्मति से अध्यक्ष पद पर हुआ और उसके पश्चात् कार्यवाही के नियमों पर विचार-विमर्श किया गया और उन्हें स्वीकार किया गया। सबसे उल्लेखनीय नियम था कि सभी प्रतिनिधि कार्यवाही को गुप्त रखेंगे। प्रत्येक राज्य को एक मत प्रदान किया गया तथा राज्य के मत का निर्णय राज्य के प्रतिनिधियों के बहुमत से माना जाता था। सम्मेलन ने कार्यवाही को लाभदायक बनाने के लिए यह भी निर्णय लिया कि जहाँ तक हो सके वाद-विवाद के आधार पर विचारों के गतिरोध को समाप्त किया जाये। सम्मेलन की कार्यवाही गुप्त थी और सम्मेलन इतना छोटा था कि प्रतिनिधियों ने अनावश्यक भाषणबाजी का लोभ नहीं किया। फलत: सार्थक वाद-विवाद तथा तर्क की सम्मेलन की कार्यवाही में प्रधानता रही। सम्मेलन की कार्यवाही का लेखा रखने का कार्य एक सचिव को दिया गया। इसके अतिरिक्त सदस्यों ने भी अपने-अपने नोट्स (Notes) लिये और सम्मेलन की कार्यवाही के बारे में इनके आधार पर जानकारी उपलब्ध अब भी है। स्वयं सम्मेलन केसचिव ने कार्यवाही का विवरण पर्याप्त रूप से नहीं रखा। सम्मेलन के बारे में सबसे अधिक जानकारी मेडीसन के नोट्स से मिलती है। वह सम्मेलन में एक ऐसे स्थान पर बैठता था जो सदस्यों के बीच में था अत: उसने सम्मेलन में कही गई प्रत्येक बात को सुना। इतना ही नहीं, मेडीसन ने अपने विवरण को व्यापक व विकसित रूप से लिखा। इस प्रकार से सम्मेलन की कार्यवाही के बारे में उसने सबसे अधिक विश्वसनीय हस्तलिखित ग्रन्थ तैयार कर लिया। उसका यह ग्रन्थ सम्मेलन की समाप्ति के कुछ दिनों में पूरा हो गया। मेडीसन के विवरण के अतिरिक्त सम्मेलन की कार्यवाही का उल्लेख राबर्ट येट्स (Robert Yates) तथा जॉन लेन्सिग (John Lansing) द्वारा लिये गये विवरण में भी मिलता है। इनके अतिरिक्त अन्य प्रतिनिधियों ने भी सम्मेलन की कार्यवाही के सम्बन्ध में संक्षिप्त विवरण छोड़ा। इस सम्बन्ध में पेटरसन (Paterson), हैमिल्टन (Hamilton), मेसन (Mason), किंग (King), पियर्स (Pierce), पिंकने (Pinckney) के नाम उल्लेखनीय हैं।

(4) संविधान-निर्माण की प्रक्रिया - फिलाडेल्फिया सम्मेलन में वर्जीनिया का प्रतिनिधि मण्डल सर्वप्रथम पहुँच गया था अतएव सम्मेलन की कार्यवाही प्रारम्भ होने के पूर्व इस प्रतिनिधि मण्डल की कई दिनों तक प्रतीक्षा करनी पड़ी। इन्हीं दिनों में इस प्रतिनिधिमण्डल ने यह निर्णय लिया कि वह नये विधान का आधार बनाने के लिए कुछ प्रस्तावों पर विचार करे और जब सम्मेलन प्रारम्भ हो तो उन्हें स्वीकृति के लिए रख दें। ये प्रस्ताव सम्भवत: मेडीसन ने बनाये थे तथा इन पर विचार करने के लिए वर्जीनिया के प्रतिनिधियों ने बैठकें की तथा उन्हें स्वीकार किया। इन प्रस्तावों को सम्मेलन के समक्ष रेन्डोल्फ (Randolph) ने रखा और उसने एक शक्तिशाली सरकार की माँग की जो इन प्रस्तावों की आत्मा थी। ये प्रस्ताव रेन्डोल्फ एवं वर्जीनिया योजना (Virginia Plan) कहलाने लगी। वर्जीनिया-योजना में शक्तिशाली सरकार के अतिरिक्त प्रस्तावित संघ की व्यवस्थापिका के लिए दो भवन रखे गये और इन दोनों में ही जनसंख्या के आधार पर प्रतिनिधित्व की व्यवस्था की गई। इस योजना का बड़े राज्यों ने स्वागत किया। इसलिए इस योजना को बड़े राज्यों की योजना भी कहते हैं। वर्जीनिया की योजना से छोटे राज्यों में चिन्ता

उत्पन्न होने लगी और वे यह शंका रखने लगे कि एक शक्तिशाली सरकार की स्थापना के पश्चात् तथा जनसंख्या के आधार पर संघीय व्यवस्था में प्रतिनिधित्व होने के कारण प्रस्तावित संघीय सरकार बड़े राज्यों के हाथ में आ जायेगी। अतः छोटे राज्यों ने वर्जीनिया योजना का विरोध किया। इन राज्यों ने मिलकर एक दूसरी योजना बनाई और उसके लिए सम्मेलन में प्रस्ताव रखे। इन प्रस्तावों को सम्मेलन में न्यू जर्सी राज्य के विलियम पेटरसन (William Paterson) ने रखा। अतः इस दूसरी योजना को पेटरसन या न्यू जर्सी योजना (New Jersey Plan) कहा जाता है। इस योजना के अन्तर्गत परिसंघ की धाराओं में संशोधन की बात कही गई तथा कांग्रेस की शक्तियों में वृद्धि की व्यवस्था की गई लेकिन कांग्रेस को कर लगाने का अधिकार नहीं दिया गया और उसे राज्यों से ही रुपया वसूल करने के लिए अतिरिक्त शक्ति दे दी गई। इस योजना में संघीय सरकार को कोई महत्त्व नहीं दिया गया तथा उसे प्रभुसत्ता हीन ही रखा गया। इस योजना के अन्तर्गत संघीय सन्धियों तथा कांग्रेस के कानूनों को सर्वोच्च मानने की व्यवस्था की गई और सभी राज्य-न्यायालयों को इन्हें मान्य समझने का आदेश दिया गया। योजना में यह भी व्यवस्था की गई कि संयुक्त राज्य के कानूनों व सन्धियों को न मानने पर राज्यों के विरुद्ध बल का भी प्रयोग किया जा सकता था।

वर्जीनिया तथा न्यू जर्सी योजनाएँ सम्मेलन की कार्यवाही में वाद-विवाद का विषय बनी। जून-जुलाई के महीनों में इन योजनाओं पर वाद-विवाद चलता रहा तथा ऋतु के समान सम्मेलन में भी गर्मागर्मी बढ़ने लगी। वर्जीनिया योजना में कुछ संशोधन स्वीकार कर लिये गये लेकिन विवाद यह था कि क्या संशोधन वर्जीनिया योजना के उपरान्त भी न्यू जर्सी योजना पर विचार किया जाये। बड़े राज्य न्यू जर्सी योजना का विरोध इसलिए कर रहे थे कि वे शक्तिशाली संघीय सरकार की स्थापना चाहते थे। इसके अतिरिक्त वे संघीय व्यवस्थापिका में जनसंख्या के आधार पर प्रतिनिधित्व के पक्ष में थे। शक्तिशाली सरकार का समर्थन करने वाले बड़े राज्यों का सम्मेलन में बहुमत था। अतः न्यू जर्सी योजना को स्वीकार किये जाने का प्रश्न ही नहीं उठता था फिर भी छोटे राज्यों के पक्ष का पूर्णतः खण्डन भी नहीं किया जा सकता था, इसलिए समझौता समय की आवश्यकता थी। राज्यों के अधिकारों का समर्थन करने वाले प्रतिनिधि वास्तव में संघीय सरकार को आवश्यकता से अधिक शक्तिशाली नहीं बनने देना चाहते थे। इस प्रकार के दृष्टिकोणों में ही समझौते की भावना निहित थी। इसी प्रकार छोटे राज्य संघीय व्यवस्थापिका में राज्यों के व्यक्तित्व को बनाये रखना चाहते थे, इस प्रश्न पर भी समझौता हो सकता था। न्यू जर्सी तथा वर्जीनिया योजनाओं में गतिरोध को समाप्त करने के लिए कनेक्टिकट के प्रतिनिधियों ने एक तीसरी योजना रखी जिसको समझौते के रूप में स्वीकार किया गया। इस समझौते के अन्तर्गत यह मान लिया गया कि संघीय व्यवस्थापिका के निम्न भवन हाउस ऑफ रिप्रेजेन्टेटिवस् (House of Representatives) में प्रतिनिधित्व जनसंख्या के आधार पर हो लेकिन उच्च भवन (Senate) में सब राज्यों का प्रतिनिधित्व समान हो। यह कहना कठिन है कि यह समझौते छोटे और बड़े राज्यों में से किसी एक की विजय थी। वास्तव में यह एक समझौता था।

सम्मेलन के समक्ष अन्य दूसरे ऐसे प्रश्न और भी थे जिन पर मतभेद था एवं समझौते करना आवश्यक था। उत्तर के राज्य अमेरिकी जहाजरानी को संरक्षण प्रदान करने के पक्ष में तथा

दक्षिण के राज्य जो कृषि-प्रधान थे, अपने निर्यात पर जो वे यूरोप के देशों को करते थे, किसी प्रकार का प्रतिबन्ध नहीं चाहते थे। स्वार्थों के इस विरोध को भी समाप्त किया गया। एक ओर तो संघीय सरकार को नौ-परिवहन नियम बनाने का अधिकार दिया गया और दूसरी ओर निर्यात कर निषेध कर दिये गये तथा दासों के आयात को बीस वर्षों के लिए स्वीकृति प्रदान की गई। इसी प्रकार इस विवाद को भी मिटाया गया कि दक्षिण के राज्यों का प्रतिनिधित्व निर्धारित करते समय नीग्रो लोगों को जनसंख्या में नहीं गिना जायेगा। समझौते के रूप में नीग्रो की जनसंख्या का 3/5 भाग प्रतिनिधित्व निर्धारित करते समय दक्षिण के राज्यों की जनसंख्या में जोड़ दिया गया। सम्मेलन के दौरान ही समझौते होने से पूर्व तेरह सदस्यों ने अपने आपको सम्मेलन से अलग कर लिया। सितम्बर, 1787 ईसवी के मध्य तक सम्मेलन ने अपना कार्य पूरा कर लिया और बयालीस उपस्थित सदस्यों में से उन्तालिस सदस्यों ने 17 दिसम्बर, 1787 ईसवी के दिन विधान पर अपने हस्ताक्षर कर दिये। तीन सदस्यों ने मतभेद के कारण हस्ताक्षर नहीं किये। निर्मित विधान के सम्बन्ध में इस प्रकार मतभेद शेष रह गया, इसलिए सम्मेलन में यह निर्णय किया गया कि विधान का अनुसमर्थन राज्यों में अलग से चुने गये प्रतिनिधियों के सम्मेलन में किया जाये तथा नौ राज्यों द्वारा विधान को अनुसमर्थित किये जाने पर उसे मान्य समझा जाये। इस प्रकार की व्यवस्था इसलिए की गई कि विधान के स्वरूप पर मतभेद था अत: उसे राज्यों को विधायक-सभाओं द्वारा अनुसमर्थित कराया जाना उचित ही समझा गया तथा लोकप्रिय जनमत का सहारा लिया गया। सम्मेलन ने यह भी ध्यान रखा कि सभी राज्यों की सर्व सम्मति से विधान को अनुसमर्थित नहीं कराया जाये क्योंकि वे सब जानते थे कि रोड़े द्वीप का छोटा सा राज्य विधान के अनुसमर्थन के मार्ग में बाधा डालेगा। इस प्रकार से विधान के अनुसमर्थन के प्रश्न पर सम्मेलन में समझौते की भावना तथा राष्ट्रीय हित को ध्यान में रखते हुए कार्य किया।

(VI) अमेरिकी संविधान के स्त्रोत :

अमेरिका का संविधान फिलाडेल्फिया सम्मेलन में एकत्रित हुए प्रतिनिधियों की अपनी कोई नवीन कृति नहीं थी। इस विधान की धाराएँ भिन्न-भिन्न स्त्रोतों से ली गई थीं। जिन सिद्धान्तों पर इस विधान का निर्माण किया गया वे भी कोई नये नहीं थे वरन् इधर-उधर से लिये गये थे। इसका अर्थ यह नहीं है कि अमेरिकी विधान निर्माताओं ने विधान-निर्माण में अपना कोई योग नहीं दिया हो। वास्तव में स्त्रोत और सिद्धान्त चाहे कहीं से भी लिये गये हों लेकिन विधान के अन्तिम रूप पर अमेरिकनों के अपने अनुभव की छाप थी। विधान के विभिन्न स्त्रोतों का उल्लेख इस प्रकार से किया जा सकता है। सर्वप्रथम, परिसंघ की धाराओं से ही विधान की नई धाराएँ बनाई गईं और अनुभव के आधार पर उनमें दूसरी धाराएँ जोड़ दी गईं। परिसंघ की धाराओं को नये विधान में संशोधित रूप से स्थानान्तरित किया गया। इस प्रकार अमेरिकी विधान को परिसंघ की धाराओं का संशोधित एवं विकसित रूप कहा जा सकता है। दूसरे, अमेरिकी विधान में राज्यों के विधान से अनेक बातें यथावत ले ली गईं। यहाँ पर राज्यों के विधान के अन्तर्गत प्राप्त अनुभव से लाभ उठाया गया और राज्यों के विधान में जो अच्छी बात थी, उन्हें नये विधान में स्थान दिया गया। तीसरे, यह भी कहा जा सकता है कि राज्य सरकारें स्वयं उपनिवेशी प्रशासन का संशोधित रूप थीं और अनेक उपनिवेशी परम्पराएँ अमेरिकी जीवन का अंग बन चुकी थीं। इन परम्पराओं को नये विधान में

उचित स्थान दिया गया। उदाहरणत: यह परम्परा कि वित्तीय विधेयक सर्वप्रथम निम्न सदन में रखा जाये, एक उपनिवेशी परम्परा थी। इसी प्रकार से यह भी एक उपनिवेशी परम्परा थी कि न्यायालयों को विधायक सभा द्वारा पारित किये गये कानूनों की जाँच करने का अधिकार है। चौथा, अमेरिकी विधान में उस राजनीतिक दर्शन और विचारधाराओं को स्वीकार किया गया जिनकी उत्पत्ति इंग्लैण्ड तथा फ्रांस में हुई थी। अन्त में यह कहा जा सकता है कि विधान-निर्माताओं ने विधान का निर्माण करते समय इंग्लैण्ड के विधान को अपने समक्ष रखा तथा अनेक बातें इंग्लैण्ड के विधान से ली।

(VII) विधान की रूपरेखा :

अमेरिकी विधान की सबसे बड़ी विशेपता यह थी कि वह एक संघीय विधान था। इस विधान से संघीय व राज्य सरकारों में शक्ति व अधिकारों का विभाजन किया था। अपने अधिकार क्षेत्र में संघ को समस्त प्रभुसत्तावादी अधिकार प्रदान किये गये। संघीय कानूनों तथा सन्धियों को राज्य मानने के लिए बाध्य थे तथा किसी भी राज्य का अधिकारी तथा न्यायालय इस प्रकार के कानूनों व सन्धियों का उल्लंघन नहीं कर सकता था। इतना ही नहीं, संघीय सरकार को यह भी अधिकार था कि वह अपनी शक्ति स्थापित करने के लिए राज्यों से उनके मिलिशिया (Militia) तक मंगवा सके। अगर कोई भी राज्य संघ के आदेश या कानून को नहीं मानता तो उस राज्य के अधिकारियों को व्यक्तिगत रूप से उत्तरदायी ठहराया जा सकता था। विधान से संघीय सरकार के अधिकार व कार्य क्षेत्रों को स्पष्ट कर दिया गया। इनमें विदेशी मामले तथा राष्ट्रीय सुरक्षा शामिल थे। इसके अतिरिक्त विदेशी तथा अन्तर्राज्यीय व्यापार के नियन्त्रण का अधिकार दिया गया, किन्तु साथ ही यह भी नियम बनाया गया कि जो प्रत्यक्ष कर संघीय सरकार लगायेगी उसमें से जनसंख्या के आधार पर धन राशि को राज्यों में वितरण करना पड़ेगा।

सम्मेलन के समक्ष सर्वाधिक कठिन समस्या संघीय कार्यपालिका के स्वरूप की थी। एक समय सम्मेलन में बहुल कार्यपालिका (Plural Executive) का प्रस्ताव किया गया था, किन्तु सामान्य धारणा एकल स्वतन्त्र कार्यपालिका की स्थापना के पक्ष में थी। अन्त में यह निश्चय किया गया कि कार्यपालिका के मुख्य अधिकारी के रूप में राष्ट्रपति हो। वह कार्यपालिका के अध्यक्ष के होने के साथ सेना व नौ सेना का प्रधान सेनापति भी हो। सीनेट 2/3 सदस्यों के परामर्श व अनुमति से अन्य देशों से सन्धि करने तथा सीनेट के साधारण बहुमत के परामर्श व अनुमति से संघीय न्यायालय के न्यायाधीशों, राजदूतों, सचिवों तथा अन्य महत्त्वपूर्ण पदाधिकारियों की नियुक्ति करने का अधिकार हो। उसे यथेष्ट विधायी शक्तियाँ भी प्रदान की गई। संघ की स्थिति के सम्बन्ध में वह कांग्रेस को समय-समय पर सूचना देता रहेगा और संघ के आय-व्यय के साधनों की कांग्रेस को सिफारिश करेगा। विधेयक को निषेध करने का भी अधिकार प्रदान किया गया, किन्तु कांग्रेस द्वारा दुबारा 2/3 बहुमत से पारित कर दिये जाने पर उस पर पुन: विचार करना आवश्यक रखा गया।

राष्ट्रपति पद के निर्वाचन की प्रक्रिया निर्धारित करना एक दुष्कर कार्य था। यदि राष्ट्रपति की नियुक्ति कांग्रेस द्वारा की जाती तो निश्चय ही वह कांग्रेस के नियन्त्रण में रहता और इससे शक्ति

पृथक्करण के सिद्धान्त की अवहेलना होती। किन्तु सम्मेलन में उपस्थित प्रतिनिधि राष्ट्रपति पद के प्रत्यक्ष निर्वाचन के पक्ष में भी नहीं थे। यहाँ तक कि मेडीसन जैसा उदार व्यक्ति भी जनता द्वारा प्रत्यक्ष निर्वाचन के पक्ष में भी नहीं था। अन्त में यह निश्चय किया गया कि राष्ट्रपति का निर्वाचन निर्वाचक-मण्डल द्वारा हो तथा निर्वाचक-मण्डल का स्वरूप राज्य की विधान-सभाओं को निश्चित किया जाये। प्रत्येक राज्य सीनेट व प्रतिनिधि सभा के अपने सदस्यों की संख्या के आधार पर उतने ही निर्वाचक-मण्डल में सदस्य नियुक्त कर सकता था, ये निर्वाचक मण्डल सदस्य अपने-अपने राज्य में एकत्रित होते तथा राष्ट्रपति पद के लिए मत देते। ये मत-पत्र लिफाफे में सीनेट के अध्यक्ष को भेजे जाते जिन्हें दोनों सदनों के संयुक्त अधिवेशन में खोला जाता और जिसे सर्वाधिक मत तथा डाले गये मतों का बहुमत प्राप्त होता उसे राष्ट्रपति पद पर निर्वाचित घोषित कर दिया जाता तथा जिसे उससे कम मत प्राप्त होते उसे उपराष्ट्रपति पद के लिए। किन्तु यदि किसी भी व्यक्ति को साधारण बहुमत भी प्राप्त नहीं हो तो प्रतिनिधि-सभा द्वारा अधिक मत प्राप्त करने वाले 5 व्यक्तियों में से किसी भी व्यक्ति को राष्ट्रपति पद पर चुनने की व्यवस्था थी। राष्ट्रपति के निर्वाचन के सम्बन्ध में भी बड़े और छोटे राज्यों ने समझौते की नीति का पालन किया। निर्वाचक मण्डल में अपने प्रभुत्व के कारण बड़े राज्य राष्ट्रपति का निर्वाचन इच्छानुसार कर सकते थे, किन्तु यदि प्रतिनिधि-सभा द्वारा निर्णय का अवसर आता तो छोटे राज्य अपने अतिशय प्रतिनिधित्व के कारण प्रभावशाली आवाज रखते थे। किन्तु जिस भावना से राष्ट्रपति के निर्वाचन की व्यवस्था की गई वह कालान्तर में नही बनी रह सकी। निर्वाचक मण्डल स्वतन्त्र रूप से निर्वाचन नहीं कर अपने-अपने दल की इच्छा का अनुगामी हो गया। कालान्तर में बारहवें संशोधन के द्वारा इस निर्वाचन व्यवस्था में परिवर्तन किया गया।

संघ की व्यवस्थापिका के सम्बन्ध में निर्णय किया गया कि दो विधायक सदन होंगे। एक प्रतिनिधि-सभा और दूसरा सीनेट (Senate)। प्रतिनिधि सभा के सदस्यों का निर्वाचन जनसंख्या के अनुपात में होगा। इनकी कार्यावधि दो वर्ष की होगी। जबकि सीनेट में प्रत्येक राज्य की विधायक सभाओं द्वारा दो सदस्यों को चुनकर भेजे जाने की व्यवस्था की गई। उनकी कार्यावधि छः वर्ष की निर्धारित की गई और इनमें से 1/3 सदस्यों को दो वर्ष पश्चात् हटना पड़ता था। सीनेट की सन्धियों को मान्यता प्रदान करने, राष्ट्रपति द्वारा की गई नियुक्ति को पुष्ट करने का अधिकार प्रदान किया गया। इस प्रकार सीनेट में समान प्रतिनिधित्व देकर छोटे राज्यों को प्रसन्न करने का प्रयास किया गया। वित्त पर नियन्त्रण का अधिकार निम्न सदन को प्रदान किया गया। संविधान में यह व्यवस्था की गई कि धनसम्बन्धी समस्त विधेयक सर्वप्रथम प्रतिनिधि-सभा में ही प्रस्तुत किये जायेंगे।

परिसंघ की धाराओं में स्वतन्त्र शक्तिशाली न्यायालय का अभाव स्पष्ट था अतः विधान-निर्माता इस बात पर सहमत थे कि एक शक्तिशाली न्यायपालिका की स्थापना की जानी चाहिए। सर्वोच्च न्यायालय के क्षेत्राधिकार के सम्बन्ध में भी किसी प्रकार का मतभेद नहीं था। किन्तु संघीय न्यायालयों (Federal Courts) की स्थापना के प्रश्न को लेकर विवाद अवश्य था। कुछ प्रतिनिधि राज्यों में भी ऐसे न्यायालयों की स्थापना के पक्ष में थे। जबकि कुछ का कहना था कि राज्यों में स्थित न्यायालय ही पर्याप्त हैं और उनके निर्णयों के विरुद्ध सर्वोच्च न्यायालय में अपील

की जा सकती है। सम्मेलन में इस सम्बन्ध में यह निर्णय किया गया कि संयुक्त राज्य के समस्त न्यायिक अधिकार सर्वोच्च न्यायालय में निहित होंगे तथा अन्य निम्न न्यायालयों की स्थापना के सम्बन्ध में कांग्रेस समय-समय पर आदेश दे सकती है तथा उनकी स्थापना कर सकती है। सर्वोच्च न्यायालय को राजदूतों, सचिवों, नौ सेनापति से सम्बन्धित मामलों में क्षेत्राधिकार प्रदान किया गया। सर्वोच्च न्यायालय को राज्य व संघ के मध्य, विभिन्न राज्यों के मध्य अथवा राज्य व नागरिकों के बीच होने वाले विवादों की सुनवाई का अधिकार प्रदान किया गया। विदेशी राज्य, नागरिक व प्रजा से सम्बन्धित विवादों पर भी उसे क्षेत्राधिकार प्रदान किया गया।

अमेरिकी संविधान में संशोधन की दो विधियाँ रखी गई। प्रथम तो कांग्रेस के दोनों सदनों के 2/3 बहुमत के द्वारा अथवा कांग्रेस के निमन्त्रण पर बुलाये जाने पर राष्ट्रीय कन्वेंशन (National Convention) द्वारा। किन्तु कांग्रेस राष्ट्रीय कन्वेंशन को तभी निमन्त्रित कर सकती थी जबकि 2/3 राज्य उसे ऐसा करने के लिए प्रार्थना करें। संशोधन प्रस्तावित हो जाने पर 3/4 राज्यों या राज्यों के कन्वेंशनों द्वारा उसका अनुसमर्थन करना आवश्यक था। अनुसमर्थन की विधि के निर्धारण का अधिकार कांग्रेस को ही प्रदान किया गया।

संघ व राज्यों के बीच अधिकारों की वास्तविक विभाजक रेखा खींचना एक दुष्कर कार्य था। अमेरिकी संविधान के अन्तर्गत दो सरकारों की स्थापना की गई थी, एक संघीय सरकार व दूसरी राज्य सरकार। मुख्य समस्या यह थी कि एक ओर तो संघ को इतना शक्तिशाली बनाना था कि वह सामान्य हितों की रक्षा कर सके और दूसरी ओर राज्य सरकारों को भी इतने अधिकार दिये जाने थे कि वे स्थानीय स्वार्थों की सुरक्षा कर सकें। अतः संघ व राज्य में अधिकारों का विभाजन किया गया।

राज्य सरकारों को अनेक ऐसे कार्य करने से मनाही कर दी गई जिससे संघीय सत्ता अथवा राष्ट्रीय एकता को किसी प्रकार की क्षति पहुँचे। राज्य सरकार मुद्रा अथवा पत्र-मुद्रा का प्रचलन नहीं कर सकती थी। उन्हें ऐसे कानून पारित करने से रोक दिया जिनसे संविदागत वायदों को पूरा करने में रुकावट पड़ती हो। ये प्रतिबन्ध सम्पत्ति अधिकारों की सुरक्षा के लिए लगाये थे। इन व्यवस्थाओं से लेनदारों के ऋणों को कम करने अथवा गिरे हुए मूल्य की मुद्रा में भुगतान करने के विरुद्ध सुरक्षा प्रदान की गई थी। संविधान-निर्माण के पूर्व के सभी ऋणों को वैध मान लिया गया था। व्यवस्था के अन्तर्गत अमेरिकी ऋण-पत्रों के पूरी कीमत में भुगतान का आश्वासन था। बिना कांग्रेस की अनुमति कोई भी राज्य न तो टनेज कर लगा सकता था और न ही किसी अन्य राष्ट्र से समझौता अथवा इकरार कर सकता था। इन अनुबन्धों के बदले में राज्यों को सुरक्षा का आश्वासन दिया गया और संविधान में यह स्पष्ट कर दिया गया कि संयुक्त राज्य प्रत्येक राज्य में गणतन्त्ररूपी शासन स्थापन का उत्तरदायित्व स्वीकार करेगा और प्रत्येक राज्य को आक्रमण से सुरक्षित रखेगा।

प्रारम्भ में संविधान में बिल ऑफ राइट्स (Bill of Rights) की व्यवस्था नहीं थी; किन्तु व्यक्तिगत अधिकारों की सरकारी हस्तक्षेप के विरुद्ध सुरक्षा की गई थी। बन्दी प्रत्यक्षीकरण के अधिकार को समाप्त नहीं किया गया। केवल विद्रोह करने अथवा नागरिक सुरक्षा पर आघात होने पर इस अधिकार को स्थगित किया जा सकता था। 'बिल ऑफ अटेनर' (Bill of Attainer) संघ व राज्य की विधान-सभाओं द्वारा पारित नहीं किया जा सकता था। 1791 ईसवी में दस

संशोधनों के माध्यम से बिल ऑफ राइट्स सम्मिलित किया गया। अधिकार-पत्र को स्वीकार करते समय सामाजिक समझौता-सिद्धान्त को ध्यान में रखा गया और यह माना गया कि सम्प्रभुता जनता से पृथक् नहीं की जा सकती एवं सरकार केवल उन्हीं अधिकारों का उपभोग कर सकती जो उसे जनता द्वारा प्रदान किये जाते हैं। अधिकार-पत्र बनाते समय दमनकारी अंग्रेजी व अमेरिकी सरकारों के काल में हुए अनुभवों को ध्यान में रखा गया था। कांग्रेस मुख्य रूप से धर्म, भाषण और विचारों की अभिव्यक्ति के अधिकारों को किसी प्रकार से कम नहीं कर सकती थी। इसी प्रकार किसी भी व्यक्ति को जीवन, सम्पत्ति व स्वतन्त्रता से बिना कानूनी कार्यवाही के वंचित नहीं किया जा सकता था। प्रत्येक नागरिक को ज्यूरी (Jury) का अधिकार प्रदान किया गया। इस प्रकार अधिकार-पत्र निर्माता नागरिक स्वतन्त्रता के वर्तमान अर्थ में नहीं सोच रहे थे, उनका उद्देश्य तो अल्पसंख्यकों से बहुसंख्यकों की रक्षा करना था।

निर्मित संविधान एक आलोच्य विषय रहा और उसमें अनेक प्रकार की कमियाँ थीं। संविधान मुख्य रूप से शक्ति पृथक्करण के सिद्धान्त पर आधारित था। किन्तु यह सिद्धान्त पूर्ण रूप से लागू नहीं किया गया था। राष्ट्रपति को विधेयकों पर सीमित निषेधाधिकार प्राप्त था। सीनेट को सभी कार्यकारी अधिकारियों की नियुक्ति तथा सन्धियों को स्वीकृत अथवा अस्वीकृत का अधिकार प्रदान किया गया था। कांग्रेस अपने वित्त सम्बन्धी अधिकारों के कारण कार्यपालिका पर दबाव डाल सकती थी। व्यवस्थापिका तथा कार्यपालिका के मध्य विवाद को तुरन्त निपटाने की कोई व्यवस्था नहीं थी। राष्ट्रपति और कांग्रेस के मध्य विवाद से नीतियों को प्रभावी संचालन सम्भव नहीं हो सकता था जो अमेरिकी संविधान की सबसे बड़ी कमजोरी है।

एक अन्य कमी यह थी कि संघ को नयी भूमि प्राप्त करने अथवा उत्पादन को नियमित करने के सम्बन्ध में कोई निश्चित अधिकार प्रदान नहीं किये गये। उस समय व्यापार, उद्योग की अपेक्षा अधिक महत्त्वपूर्ण था। कालान्तर में उत्पन्न अव्यवस्था से स्पष्ट हो गया था कि सरकार को विदेशी तथा अन्त:राज्य व्यापार को नियमित करने का अधिकार होना चाहिए। किन्तु उस समय यह सोचा भी नहीं गया था कि उद्योग भी व्यापार की भाँति महत्त्वपूर्ण हो जायेगा और उसे नियमित करने की आवश्यकता होगी। संविधान की कुछ व्यवस्थाएँ संविधान-निर्माताओं की भावना के अनुकूल कार्य नहीं कर सकीं। विशेषत: निर्वाचक-मण्डल शीघ्र ही अपने दल का अनुगामी बन गया। निर्वाचक-मण्डल के सदस्य दो दलों में विभक्त हो गये तथा 1796 ईसवी में उन्होंने यह निर्णय ले लिया कि वे अपने-अपने दल के प्रत्याशी को मत देंगे। इससे उनकी स्वतन्त्र महत्ता समाप्त हो गई। एक अन्य दोष यह था कि सम्मेलन ने संघीय सरकार को एक ऐसा अधिकार देने से इन्कार कर दिया जो संघ का सबसे उचित कार्य समझा जाता था। फ्रेंकलिन ने यह प्रस्तावित किया था कि कांग्रेस को नहर-निर्माण का अधिकार होना चाहिए। मेडीसन ने भी यह सुझाव रखा था कि संघीय सरकार को आन्तरिक सुधारों को बढ़ावा देने के लिए चार्टर ऑफ इनकारपोरेशन (Charter of Incorporation) जारी करने की अनुमति दी जानी चाहिए, किन्तु सम्मेलन ने इन प्रस्तावों को ठुकरा दिया।

इस प्रकार अमेरिका के मूल संविधान की अप्रजातान्त्रिक विशेषताओं की आलोचना की जाती है और यह कहा जाता है कि संविधान के निर्माता कुलीन वर्ग से सम्बन्धित थे। ये लोग जन

साधारण के गुण और बुद्धि पर किसी प्रकार का विश्वास नहीं रखते थे। किन्तु दूसरी ओर मतदान के अधिकारों के निर्माण की व्यवस्था राज्यों पर छोड़ दी गई और इस अधिकार को सीमित करने का कोई भी प्रयास नहीं किया गया। इससे भी अधिक लोगों का सरकार की सभी शाखाओं पर प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष नियन्त्रण था।

(VIII) संविधान का अनुसमर्थन :

17 सितम्बर, 1787 ईसवी को सम्मेलन ने प्रस्तावित संविधान को स्वीकार कर लिया। उन्तालीस प्रतिनिधियों ने इस पर हस्ताक्षर किये। तीन प्रतिनिधियों ने गम्भीर आपत्ति व्यक्त की और शेष तेरह प्रतिनिधि पहले से ही सम्मेलन की कार्यवाही से अलग हो गये। सम्मेलन में यह स्वीकार किया गया कि विभिन्न राज्यों में संविधान के अनुसमर्थन के लिए विशेष कन्वेंशन आमन्त्रित किये जायें तथा नौ राज्यों द्वारा यदि संविधान का अनुसमर्थन कर दिया जाये तो इसे अनुसमर्थन करने वाले राज्यों में तुरन्त लागू कर दिया जाये।

इस प्रकार संविधान के निरूपण के पश्चात् विभिन्न राज्यों की कांग्रेसों को संविधान इस प्रार्थना के साथ भेजा गया कि वे इसे राज्य के सम्मेलन के समक्ष स्वीकृति अथवा अस्वीकृति के लिए प्रस्तुत करें। अब संविधान जनता के समक्ष स्वीकृति अथवा अस्वीकृति के लिए प्रस्तुत था, किन्तु शीघ्रता से निर्मित दो राजनीतिक दलों में इस पर विवाद उत्पन्न हो गया। अनुसमर्थन के समर्थक अपने आपको संघवादी (Federalists) कहते थे यद्यपि यह नाम उचित नहीं था, क्योंकि अधिकांश संघवादी संघ के पक्ष में नहीं थे वरन् वे, एक शक्तिशाली केन्द्रीय सरकार की स्थापना चाहते थे। दूसरा वर्ग संविधान के अनुसमर्थन का विरोधी था, वे संघवाद विरोधी (Anti Federalists) कहलाये। वे संविधान के अनुसमर्थन का विरोध इसलिए कर रहे थे कि इसमें संघीय सरकार को बहुत अधिक शक्तियाँ प्रदान कर दी गईं जबकि राज्य के लिए मामूली शक्तियाँ शेष रहीं। उनकी मान्यता थी कि इस संविधान द्वारा राष्ट्रपति और कांग्रेस को ब्रिटिश राजा व संसद से भी अधिक अधिकार प्राप्त हो जायेंगे। इतना ही नहीं, संघवाद के विरोधियों ने संविधान की कुछ कमियों की ओर भी संकेत किया। समग्र देश में सभी इस बात पर सहमत थे कि संविधान में मानव-अधिकारों का अभाव इसकी सबसे बड़ी कमी थी। संविधान में मानव-अधिकारों की व्यवस्था न होने से धर्म, विचार तथा व्यक्तिगत स्वतन्त्रता के प्रकृत्य अधिकारों के सम्बन्ध में लोग शंकित थे। विरोध करने वालों में देनदार लोग भी सम्मिलित थे। ये लोग इसका विरोध इसलिए कर रहे थे कि राज्यों के पत्र मुद्रा-प्रचलन तथा संविदागत वायदों (Contractual Promises) को पूरा करने के सम्बन्ध में कानून बनाने के अधिकारों को समाप्त कर दिया था। इसके अतिरिक्त वर्ग-संघर्ष भी नये संविधान के विरोध का कारण था। भूमि में सट्टा करने वाले व्यापारी, उत्पादक, प्रबुद्ध एवं सम्पत्ति वाले नये संविधान का समर्थन कर रहे थे, किन्तु छोटे किसान और निर्धन वर्ग जो सम्पन्न वर्ग से घृणा करते थे संविधान के अनुसमर्थन का विरोध केवल इसलिए कर रहे थे कि धनी वर्ग उसका समर्थन कर रहा था।

अनुसमर्थन के विरोध में पैट्रिक हेनरी, रिचर्ड हेनरी ली (Richard Henry Lee), जॉर्ज मेसन तथा जार्ज क्लिन्टन (George Clinton) सम्मिलित थे। उनका कहना था कि नई व्यवस्था उन थोड़े से महत्त्वाकांक्षी व्यक्तियों के एक दल द्वारा निर्मित की गई योजना है जो उन साधारण का

शोषण करना चाहते थे और उन्हें शंका थी कि इससे देश में शीघ्र ही कुलीनतन्त्र तथा तानाशाही की स्थापना हो जायेगी। इसके विपरित संघवादियों के प्रमुख नेता मेडीसन, हैमिल्टन तथा जॉन जे थे। उन्होंने विरोधियों की आपत्तियों का खण्डन किया और कहा कि नई व्यवस्था विभिन्न राज्यों के संघ और सुसंगठित शक्तिशाली राष्ट्र का मध्य मार्ग है जिसमें सभी के हितों की रक्षा समान रूप से की गई है।

विभिन्न छोटे-छोटे राज्यों द्वारा किसी विरोध के संविधान का अनुसमर्थन कर दिया गया। 12 दिसम्बर, 1787 ईसवी को पेनसिलवेनिया जैसे बड़े राज्य ने भी इसे स्वीकार कर लिया। जनवरी, 1788 ईसवी तक डेलावेयर, न्यू जर्सी, जार्जिया और कनेक्टिकट ने भी उसे स्वीकार कर लिया। इसके पश्चात् मैसाचुसेट्स, मेरीलैण्ड, दक्षिण कैरोलिना तथा न्यू हैम्पशायर ने नये संविधान को स्वीकार कर लिया। 21 जून, 1788 ईसवी को न्यू हैम्पशायर द्वारा स्वीकार करने के साथ ही नौ राज्यों की स्वीकृति प्राप्त हो गई और नये संघ के निर्माण का मार्ग प्रशस्त हो गया।

संघ के विरोधीयों ने मैसाचुसेट्स, न्यू यार्क और वर्जीनिया में जबरदस्त विरोध किया। मैसाचुसेट्स में डेनियल शेस् के विद्रोह की भावना विद्यमान थी और छोटे किसान तथा निर्धन वर्ग इसका विरोध इसलिए कर रहे थे कि सम्पन्न वर्ग उसका समर्थन कर रहा था। फिर वर्जीनिया में हानकाक (Hancock) तथा सेम्युअल एडम्स (Samuel Adams) ने अनुसमर्थन के पक्ष में पुरजोर प्रयास नहीं किया। हानकाक वस्तु-स्थिति का अध्ययन कर रहा था। सेम्युअल एडम्स भी प्रारम्भ में अनुसमर्थन का विरोधी था किन्तु बोस्टन के मिस्त्रियों तथा पोत-निर्माताओं द्वारा स्वीकार कर लिए जाने पर उसने भी विरोध करना छोड़ दिया और अन्त में एक सौ अड़सठ मतों के विरुद्ध एक सौ सत्तासी मतों से संविधान को स्वीकार कर लिया गया।

वर्जीनिया में जार्ज मेसन तथा पैट्रिक हेनरी संविधान के अनुसमर्थन का विरोध कर रहे थे जबकि मेडीसन तथा जॉन मार्शल (John Marshall) जैसे संघवादी समर्थन। जहाँ एक ओर हेनरी ने प्रभावपूर्ण तरीके से अपना पक्ष प्रस्तुत किया वहाँ दूसरी ओर मेडीसन ने भी अपना पक्ष तर्कों के आधार पर रखा। वांशिगटन ने भी कन्वेंशन को भेजे एक पत्र में संविधान की स्वीकृति के लिए अपील की। अन्त में पर्याप्त वाद-विवाद के पश्चात् 79 के विरुद्ध 89 मतों से वर्जीनिया राज्य ने भी स्वीकृति प्रदान कर दी।

न्यूयार्क में क्लींटन की अध्यक्षता में सम्मेलन हुआ। वह संघ का प्रबल विरोधी था। संघ के विरोधी अनुसमर्थन के पक्ष में नहीं थे किन्तु वे उसे अस्वीकार करने के उत्तरदायित्व को लेने में संकोच कर रहे थे और उन्होंने उस पर विचार-विमर्श पर बहुत अधिक समय गंवा दिया। वर्जीनिया ओर न्यू हैम्पशायर द्वारा संविधान को स्वीकार कर लिये जाने पर जब संघ का निर्माण निश्चित हो गया तब न्यू यार्क ने भी संविधान का अनुसमर्थन कर दिया। उत्तरी कैरोलिना का सम्मेलन बिना संविधान को स्वीकृत किये स्थगित हो गया और रोडे द्वीप ने तो सम्मेलन बुलाने से इन्कार कर दिया था। अत: प्रारम्भ में संघ में तेरह में से ग्यारह राज्य ही रहे। उत्तर कैरोलिना ने आगे चलकर 21 नवम्बर, 1789 ईसवी के दिन तथा रोडे द्वीप ने 29 मई, 1790 ईसवी के दिन संविधान को स्वीकार कर लिया।

(IX) संविधान का महत्त्व :

अमेरिकी संविधान के अनुसमर्थन का कार्य अनेक कठिनाइयों के पश्चात् ही सम्पन्न हो सका। अनेक राज्यों के अधिवेशनों में अनुसमर्थन के पक्ष में बहुत अधिक मत नहीं आये, उदाहरणत: मैसाचुसेट्स के राज्य में अनुसमर्थन के पक्ष में एक सौ सत्तासी तथा विपक्ष में एक सौ अड़सठ मत पड़े। इसी प्रकार वर्जीनिया में इसके पक्ष में नवासी तथा विपक्ष में उन्नासी एवं न्यू यार्क के राज्य में पक्ष में तीस तथा विपक्ष में सत्ताइस मत पड़े। उत्तर कैरोलिना तथा रोड आईलैण्ड के राज्यों ने भी विवश होकर ही विधान को स्वीकार किया था। इसमें भी सन्देह नहीं कि अमेरिकी विधान के निर्माण में जन साधारण ने प्रत्यक्ष रूप से कोई भाग नहीं लिया था और न ही जन साधारण का अनुसमर्थन के कार्य में कोई स्थान था। वास्तव में अमेरिकी विधान विभिन्न राज्यों की कृति था। अनुसमर्थन के लिए अनेक राज्यों में अधिवेशनों के प्रतिनिधियों के चुनाव में भी 1/4 से अधिक मतदाताओं ने मत का प्रयोग नहीं किया। इस प्रकार यह स्वीकार किया जा सकता है कि अमेरिकी विधान किसी भारी बहुमत से नहीं बनाया गया था। इतना होने पर भी विधान के महत्त्व को कम नहीं ठहराया जा सकता।

(1) प्रजातांत्रिक विचारों की विजय - अमेरिकी विधान को आधुनिक युग में प्रजातांत्रिक विचारों की सबसे बड़ी और महत्त्वपूर्ण विजय तथा सफलता कहा जा सकता है। यह विधान चाहे भारी बहुमत से स्वीकार नहीं हुआ था फिर भी एक नये राष्ट्र ने इसे एक पवित्र निधि के रूप में स्वीकार किया तथा उसका सम्मान किया। अमेरिकी विधान के अनुसमर्थन के विरोधी लोग भी उतने ही बड़े देशभक्त थे जितने कि विधान के समर्थक। विधान के अनुसमर्थन के विरोधियों में पैट्रिक हेनरी, रिचर्ड हेनरी ली तथा जार्ज क्लिंटन प्रमुख थे। ये लोग यह विश्वास रखते थे कि उनका देश समृद्ध था और उस समय की विधान के पूर्व की व्यवस्था में समृद्ध रह सकता था। ये सभी व्यक्ति स्वतन्त्रता-प्रेमी थे और इन्हें इस बात से शिकायत थी कि विधान में सर्वसाधारण की स्वाधीनता की रक्षा करने हेतु कोई अधिकार-पत्र नहीं था। इन लोगों को यह शंका थी कि कहीं उनके देश में अल्पसंख्यक महत्त्वकांक्षी लोग कोई कुलीनतान्त्रिक अधिनायकवाद अथवा तानाशाही स्थापित नहीं कर लें। इसके अतिरिक्त इन लोगों में जन साधारण के आर्थिक स्वार्थों की भी चिन्ता थी। उपर्युक्त शंकाओं के उपरान्त भी विधान के पक्ष में बहुत कुछ कहा जा सकता है और यह कार्य संघवादियों और उनके नेताओं ने जिनसे मेडीसन, हैमिल्टन तथा जॉन जे प्रमुख थे, बड़े प्रभावशाली रूप से किया। ये लोग वास्तव में राजनीति शास्त्र व सिद्धान्तों के पण्डित थे और इन्होंने अक्टूबर, 1787 ईसवी से लेकर अगस्त, 1788 ईसवी तक न्यूयार्क के अखबारों में एक छद्म नाम प्यूबीलस (Pubilus) ग्रहण करके अनेक शक्तिशाली निबन्ध लिखे जिससे साधारण जनमत पर प्रभाव पड़ा। इसके अतिरिक्त संघवादियों ने ओजस्वी भाषणों तथा कुशल राजनीतिक प्रबन्धों से संविधान में पक्ष में समर्थन प्राप्त करने में सफलता पा ली। लेकिन इतना सब होने पर भी यह कहना अधिक उपयुक्त होगा कि अमेरिका का निर्मित संविधान स्वयं में प्रतिभायुक्त कार्य था। यह ऐसा कार्य था जो लगभग असम्भव सा दिखता था, क्योंकि प्रभुसत्तावादी राज्यों के प्रभुसत्ता-सम्पन्न संघ की कल्पना करना कठिन था। अमेरिकी विधान ने उपर्युक्त लक्ष्य को साकार कर दिखाया।

(2) राजनीतिक परिपक्वता का प्रमाण - अमेरिकी संविधान प्रजातान्त्रिक विचारों की विजय के साथ-साथ अमेरिकनों की राजनीतिक परिपक्वता का भी प्रमाण है। विधान के पक्ष में जब अनुसमर्थन प्राप्त हो गया तो उसे अमेरिकन राष्ट्र ने स्वीकार किया। अनुसमर्थन के विरोधियों ने अपने विरोध को समाप्त कर दिया। उन लोगों ने ऐसा करके यह सिद्ध कर दिया कि राजनीतिक रूप से परिपक्व समाज में कानूनी रूप से लिये गये निर्णय का सभी वर्गों द्वारा बिना किसी मतभेद के सम्मान किया जाना चाहिए। इस प्रकार से एक ओर तो अमेरिकी संविधान की अपनी अन्तर्निहित श्रेष्ठता थी और दूसरी ओर विधान को सफल बनाने के पीछे अमेरिकन राष्ट्र का अपना चरित्र था जिसका निर्माण राष्ट्रीय अनुभव के आधार पर हुआ था। उपनिवेशी काल और उसके पूर्व भी अमेरिकी लोगों ने इस प्रकार के अनुभव कर लिये थे कि वे लोग स्वशासित सरकार के योग्य बन गये थे। इन लोगों ने मतभेदों का हल वाद-विवाद से निकालना सीख लिया था और इनकी प्रवृत्ति में दूसरे के पक्ष का सम्मान दृढ़मूल हो गया था। अमेरिकी जन साधारण अपने अधिकारों के प्रति जागरूक थे किन्तु साथ-साथ वे ही अधिकार वे अपने विरोधियों को भी देने के लिए तैयार थे। इस प्रकार से विवादों का हल लड़ाई-झगड़े और हिंसा के स्थान पर बहुमत से किया जाने लगा और ऐसी स्थिति में सभी अमेरिकी व्यवस्था तथा कानून के पक्ष में हो गये थे। संविधान उन्हें एक मूल कानून के रूप में मिल रहा था जिसके अन्तर्गत वे अपने राजनीतिक एवं आर्थिक स्वार्थ की रक्षा का अवसर देख रहे थे। उनकी राजनीतिक बुद्धिमानी, सृजनात्मक शक्ति तथा स्वविवेक ने उन्हें वह प्रेरणा प्रदान की जिससे उन्होंने समस्त पुराने विवाद को भूल कर संविधान को स्वीकार किया। इस प्रकार से अमेरिकी संविधान का महत्त्व इस बात में भी है कि विधान राजनीतिक रूप में एक प्रौढ़ राष्ट्र, जो एक नवराष्ट्र में जन्म ले रहा था, की जननी था।

(3) नये राष्ट्र का निर्माण- अमेरिकी संविधान के कारण ही आधुनिक युग में गणतन्त्र के सिद्धान्त और स्वाभिमान के आधार पर विभिन्न प्रकार के लोगों ने एकता को महत्त्वपूर्ण मानकर मतभेदों, पक्षपात तथा फूट को दूर करके एक नये राष्ट्र का निर्माण किया। 1789 ईसवी में इस प्रकार के किये जाने वाले प्रयोग को जोखिम भरा माना जा सकता था, क्योंकि विश्व के अन्य देशों में राजतन्त्र को ही साधारण तथा प्रभावी प्रकार की सरकार माना जाता था। इतिहास के ज्ञान के आधार पर यह भी माना जाता था कि गणतन्त्र के अधीन एकता स्थापित नहीं की जा सकती तथा इसके कारण शान्ति और प्रगति की सम्भावनाएँ गणतन्त्र में नहीं हो सकतीं। गणतान्त्रिक सरकारों का इतिहास बताता था कि वे छोटे-छोटे क्षेत्रों में भी सफल नहीं हो सकी थी और इसलिए अमेरिका जैसे विशाल देश में क्या गणतन्त्र सफल हो सकता था। अमेरिकी संविधान ने यह सिद्ध कर दिया कि गणतन्त्र और उसकी स्वतन्त्र संस्थाएँ राष्ट्रीय एकता एवं शक्ति की स्थापना के मार्ग में बाधक नहीं है एवं गणतन्त्र के अधीन शक्तिशाली एवं कुशल प्रशासन की स्थापना की जा सकती है। अठारहवीं शती के अमेरिकी लोग दूसरे देशों के लोगों की भाँति ही अपने निजी स्वार्थों के लिए सक्रिय थे और इस बात को सभी अमेरिकन नेता जानते थे और स्वीकार करते थे लेकिन इसके साथ-साथ यह भी मान्यता प्रबल थी कि निजी स्वार्थों के ऊपर जाति तथा सार्वजनिक हित हो सकते थे तथा राष्ट्रीय हित में निजी स्वार्थों पर नियन्त्रण किया जाना चाहिए। ऐसा करने से ही समाज समृद्ध होता है और गणतन्त्र सफल। गणतन्त्र की सफलता नि:स्वार्थ रूप से स्वशासी

संस्थाओं के संचालन द्वारा हो सकती है और इसके लिए राजनीतिक बुद्धि का परिचय देकर तथा व्यक्तियों द्वारा स्वयं पर नियन्त्रण रखकर ही किया जा सकता है। अमेरिकी संविधान ने वातावरण को इन परिस्थितियों के अनुकूल बनाया।

(4) विधि शासन की स्थापना - अमेरिकी संविधान ने उपनिवेशों में विधि-शासन की स्थापना की। प्रारम्भ में विधान में कोई अधिकार-पत्र सम्मिलित नहीं किया गया था। संघ विरोधियों ने इस दिशा में विधान की कटु आलोचना भी की थी। पाँच राज्यों ने संविधान का अनुसमर्थन इस आशय पर किया था कि विधान में तुरन्त ही एक अधिकार-पत्र सम्मिलित कर लिया जायेगा। अनेक संघवादियों ने पाँच राज्यों की इस माँग का समर्थन किया था। 1791 ईसवी में विधान में दस संशोधन जोड़ कर अधिकार-पत्र सम्मिलित किया गया और अमेरिकी लोगों को वे अधिकार प्रदान कर दिये गये जिनके कारण अब वह भय नहीं रहा कि किसी भी सरकार द्वारा उनका दमन होगा या उनके नागरिक अधिकारों का उल्लंघन किया जा सकेगा। इस प्रकार न केवल एक विधि-शासन की स्थापना की गई वरन् यह भी स्वीकार किया गया कि जन साधारण ही सार्वभौम है तथा सरकार अपनी प्रभुसत्ता के अन्तर्गत उन्हीं अधिकारों का प्रयोग कर सकती है जो जनता द्वारा उसे प्रदान किये जाते हैं। अमेरिकी अधिकार-पत्र इस प्रकार सामाजिक समझौते के सिद्धान्त पर आधारित था तथा इसका निर्माण अमेरिकीयों और अंग्रेज़ों के उस अनुभव के आधार पर किया गया जो कि उन्हें भूतकाल में दमनकारी सरकारों से प्राप्त हुआ था। अधिकार-पत्र के अन्तर्गत यह स्पष्ट कर दिया गया कि अमेरिकी कांग्रेस धर्म, विचारों की अभिव्यक्ति तथा प्रेस की स्वतन्त्रता के अधिकार से जन साधारण को वंचित नहीं कर सकती। इसी प्रकार सम्मेलन करने (Right of Assembly) तथा याचिका प्रस्तुत करने (Right of Petition) के अधिकारों को भी सुरक्षित कर दिया गया। अधिकार-पत्र के अन्तर्गत यह भी स्पष्ट कर दिया गया कि किसी भी व्यक्ति को बिना कानूनी अधिकार के उसकी जीवन-स्वतन्त्रता तथा सम्पत्ति से वंचित नहीं किया जा सकता तथा उस पर चलाये गये किसी भी मुकदमे का फैसला उसकी सलाह बिना नहीं किया जा सकता। इन सभी अधिकारों के कारण अमेरिका में विधि-शासन प्रबल हुआ तथा नागरिक अधिकारों की सुरक्षा स्थापित हो गई। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि अमेरिकी विधान की उपर्युक्त उपलब्धि अत्यन्त महत्त्वपूर्ण रही।

(5) अन्य विशेषताऐं - अमेरिकी विधान का महत्त्व उसकी कुछ अन्य विशेषताओं में भी है। इन विशेषताओं में उसका संघीय स्वरूप, शक्ति पृथक्करण के सिद्धान्त पर उसका आधारित होना और एक शक्तिशाली कार्यपालिका का अस्तित्व प्रमुख है। अमेरिका जैसे विशाल देश में संघीय व्यवस्था अनिवार्य ही थी। लेकिन विधान-निर्माताओं ने एक प्रभावशाली केन्द्र के साथ-साथ राज्यों के अस्तित्व के सम्मान को सुरक्षित रखकर राजनीतिक बुद्धिमानी व पाण्डित्य का परिचय दिया। जो संघीय स्वरूप अमेरिकी विधान-निर्माताओं ने अन्तिम रूप से स्वीकार किया वह आधुनिक युग में विधान-निर्माण के इतिहास में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कहा जा सकता है। जिस प्रकार से आज तक अमेरिकी विधान के अन्तर्गत कार्य हुआ उसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि अमेरिकी संघीय व्यवस्था दोषरहित है। अमेरिकी विधान में शक्ति-पृथक्करण के

सिद्धान्त का समावेश भी अत्यन्त सुन्दरता से किया गया है। किसी भी प्रजातान्त्रिक व्यवस्था में शक्ति-पृथक्करण के महत्त्व को कम नहीं किया जा सकता। अमेरिकी संविधान में 'नियन्त्रण और सन्तुलन' (Checks and Balance) की प्रक्रिया का समावेश इतनी कुशलता से किया गया है कि सरकार के तीनों अंग अपना कार्य करने के साथ-साथ दूसरे अंगों पर नियन्त्रण रख सकते हैं एवं दूसरे अंगों के नियन्त्रण में भी रहते हैं। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि न्यायपालिका की जो स्वतन्त्रता अमेरिकी विधान में रखी गई है वह स्वयं में महत्त्वपूर्ण है। अमेरिकी विधान-निर्माताओं ने अपने अनुभव के आधार पर संसदात्मक कार्यपालिका के स्थान पर अध्यक्षात्मक कार्यपालिका का चयन किया, इसका कारण स्पष्ट है। सभी अमेरिकी लोग किसी न किसी रूप में प्रभावशाली कार्यपालिका के पक्ष में थे, क्योंकि अमेरिकी जनजीवन में उस काल में सबसे बड़ी आवश्यकता स्थायित्व की थी। इसमें सन्देह नही कि अमेरिकी विधान ने आधुनिक युग में विश्व में सबसे शक्तिशाली कार्यकारी अधिकारी के रूप में अपने राष्ट्रपति को जन्म दिया।

अमेरिकी विधान ने अमेरिका की तत्कालीन समस्याओं को हल किया तथा अमेरिकी विधान के कारण ही अन्तर्राष्ट्रीय परिवार में उपनिवेशों की साख स्थापित हुई एवं विदेशी व्यापार को प्रोत्साहन मिला, परिणामत: अमेरिका की समृद्धि बढ़ी। विधान के पूर्व की स्थिति में परिसंघ की धाराओं के अन्तर्गत विश्व में अमेरिका की अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिभा सम्मानजनक नहीं थी तथा यूरोप की शक्तियाँ विशेषत: उपनिवेशों से सुदृढ़ सम्बन्ध बनाने में संकोच रखती थीं। 1783 ईसवी में इंग्लैण्ड में स्थित अमेरिकी राजदूत जॉन एडम्स (John Adams) ने वहाँ की सरकार से जब अनेक आपसी समस्याओं का हल निकालने के लिए वार्तालाप करने का प्रयास किया तो इंग्लैण्ड की सरकार ने संकोच किया एवं व्यंग्यात्मक रूप से उत्तर दिया कि क्या आपसी प्रश्नों का हल ढूँढ़ने के लिए सभी तेरह उपनिवेशों से बातचीत करना आवश्यक नहीं होगा और क्या परिसंघ की, की गई सन्धियों को लागू कर सकेगा? निस्सन्देह यह स्थिति अत्यन्त दयनीय थी। इससे यह स्पष्ट हो गया था कि अमेरिकी उपनिवेशों की कोई भी अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा नहीं थी। इसमें कोई भी सन्देह नहीं कि विधान के पूर्व की स्थिति में अमेरिकी उपनिवेशों की साख नहीं थी। जिसके कारण विदेशी व्यापार को क्षति पहुँच रही थी और जितना व्यापार मिलकर अमेरिकी उपनिवेश कर सकते थे उतना व्यापार नहीं हो पा रहा था। इसका एक कारण यह भी था कि अलग-अलग उपनिवेशों में अपनी अकेली इतनी क्षमता नहीं थी कि वे अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकें। यहाँ यह भी स्पष्ट कर देना उचित होगा कि अमेरिकी परिसंघ की अपनी साख भी अन्तर्राष्ट्रीय जगत् में निम्न स्तर पर थी जिसके कारण भी यूरोपीय परिवार में अमेरिकी स्वार्थों को क्षति उठानी पड़ रही थी। अमेरिकी संविधान का महत्त्व इस बात में भी है कि इसके कारण उपर्युक्त सभी समस्याओं का समाधान हो गया तथा अन्तर्राष्ट्रीय परिवार में अमेरिका की साख बढ़ने लगी।

(6) अमेरिका की प्रतिष्ठा में वृद्धि - अमेरिकी संविधान के कारण विदेशों में तो अमेरिका की प्रतिष्ठा बढ़ी। इसके साथ-साथ इस नवोदित राष्ट में वह शक्ति स्वत: उत्पन्न हुई, जिसके कारण थोड़े समय अमेरिका विश्व का शक्तिशाली तथा सम्पन्न राष्ट्र बन गया। जो

उपलब्धि यूरोप के राष्ट्रों ने शताब्दियों में की थी वही उपलब्धि अमेरिका ने दशकों में कर ली। इस उन्नति के पीछे अगर कोई शक्ति थी तो वह केवल अमेरिकी संविधान की थी। अमेरिका के संविधान में सर्वप्रथम उपनिवेशों में उस राष्ट्रीय एकता की स्थापना की, जिसके बिना कोई भी राष्ट्र उन्नति नहीं कर सकता था। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि अमेरिकी विधान में विभिन्न देशों से आये विभिन्न प्रकार के लोगों को एक सूत्र में बाँध दिया तथा उनमें विश्वास उत्पन्न करके एक ऐसी मैत्री स्थापित कर दी जिसके कारण बड़ी मात्रा में एक राष्ट्रीय शक्ति उत्पन्न हुई। इस राष्ट्रीय शक्ति की उत्पत्ति के पश्चात् अमेरिकी लोग स्थायी सुरक्षा, स्वतन्त्रता तथा शान्ति की कामना करने लगे ताकि वे लोग अपने भविष्य को उज्जवल बना सकें। उन्हें अपने लक्ष्य की प्राप्ति में जो सफलता मिली उसका विश्व के इतिहास में कोई दूसरा उदाहरण नहीं है। अल्पकाल में ही अमेरिका में व्यापार, वाणिज्य तथा उद्योगों का आश्चर्यजनक गति से विकास हुआ और अमेरिका विश्व का सबसे धनी देश बन गया और वहाँ के लोगों को रहन-सहन का वह स्तर प्राप्त हो गया जिसकी दूसरे देश के लोग केवल कल्पना ही कर सकते थे। स्पष्ट है कि यह प्रगति अमेरिकी संविधान के कारण ही सम्भव हो सकी।

(7) आधुनिक गणतांत्रिक विधान का आदर्श - अमेरिकी विधान का सबसे अधिक महत्त्व इस बात में है कि इस विधान में आधुनिक युग में एक गणतान्त्रिक विधान का आदर्श रखा जिसका अनुकरण किया जा सकता है। यदि इंग्लैण्ड की क्रान्ति ने प्रतिनिधि सत्तात्मक प्रथा को जन्म दिया था तो अमेरिकन संविधान ने प्रजातन्त्रात्मक प्रथा को जन्म दिया जिसमें पहली बार सर्व साधारण को मताधिकार प्राप्त हुआ। इसमें सन्देह नहीं कि अमेरिकी विधान-निर्माताओं ने विधान-निर्माण के समय अगर अपने अनुभव को सामने रखा तो इसके साथ-साथ उन्होंने इंग्लैण्ड और यूरोप से भी विचार लिये। फिर भी निर्मित अमेरिकी विधान निर्माताओं की अपनी कृति थी, जो अनुकरणीय कही जा सकती है। विश्व के सभी परवर्ती आधुनिक विधानों में अमेरिकी विधान के आदर्शों की झलक देखी जा सकती है। इस प्रकार एक ओर तो अमेरिकी क्रान्ति से विश्व के अनेक देशों ने जिनमें भारत और एशिया के अन्य देश भी हैं, प्रेरणा ली तो दूसरी ओर अनेक देशों में राष्ट्रीय क्रान्ति की पूर्ति के पश्चात् अमेरिकी विधान के आदर्शों को राष्ट्रीय आवश्यकताओं के अनुसार अपने विधानों में स्थान दिया।

अमेरिकी संविधान के निर्माण को आधुनिक युग में प्रजातान्त्रिक प्रणाली की सबसे बड़ी सफलता कहा जा सकता है। विश्व के अनेक देशों ने इस प्रकार से किये गये निर्माण कार्य से प्रेरणा ली जिनमें एशिया और अफ्रीका के अनेक देश हैं और भारत भी इन देशों में प्रमुख स्थान रखता है। इसी प्रकार यह भी कहा जा सकता है कि अगर इंग्लैण्ड की संसद विश्व में संसद-जननी कही जा सकती है, तो इसके साथ-साथ यह भी कहा जा सकता है कि नागरिकों को अधिकार देने वाले लिखित विधानों में अमेरिका का विधान सबसे प्रमुख स्रोत है।

□□□

अध्याय - 5

संघीय शासन का आरम्भिक युग – वांशिगटन से एडम्स तक (1789-1801 ई.)

☐ एल.पी.माथुर

1787 ईसवी में अमेरिकन प्रतिनिधि सभा ने राज्यों के प्रतिनिधियों की एक संविधान-निर्मात्री सभा का निर्माण किया। इस सभा ने परिसंघ के संविधान में संशोधन करने के स्थान पर संघीय संविधान का एक नया प्रारूप तैयार किया। 1788 ईसवी के अन्त तक उत्तर कैरोलिना और रोडे द्वीप को छोड़ कर सब राज्यों ने संघीय संविधान को स्वीकार कर लिया। ये राज्य भी इसके लागू होने के कुछ समय बाद संघ में सम्मिलित हो गये। संघीय सरकार के प्रथम राष्ट्रपति के चुनाव के लिए विभिन्न राज्यों के प्रतिनिधियों का एक निर्वाचक-मण्डल बनाया गया, क्योंकि उत्तरी कैरोलिना और रोडे द्वीप इस समय तक संघ में शामिल नहीं हुए थे, अतएव इन दो राज्यों ने इस चुनाव में भाग नहीं लिया। इसके अतिरिक्त न्यू यार्क भी इसमें भाग नही ले सका, क्योंकि वहाँ की व्यवस्थापिका सभा में कुछ अनियमितताओं के कारण निर्वाचकों का चुनाव नहीं हो सका था। शेष दस राज्यों के निर्वाचक मण्डलों ने सर्वसम्मति से जार्ज वाशिंगटन को प्रथम राष्ट्रपति चुना। जॉन एडम्स चौंतीस मतों से उपराष्ट्रपति चुना गया। नयी संघीय सरकार की राजधानी न्यूयार्क रखी गयी।

(I) वाशिंगटन का शासन (1789-1797 ई.) :

(1) वाशिंगटन के सम्मुख समस्यायें - वाशिंगटन ने वर्जीनिया में अपने नगर माउण्ट वेरनोन (Mount Vernon) से रवाना होते समय यह मत प्रकट किया था कि वह इतने जिम्मेवार पद के लिए योग्य नहीं है। उसने अपनी भावनाओं की तुलना एक ऐसे अपराधी की भावनाओं से की जो कि फाँसी के तख्ते की ओर ले जाया जा रहा हो। इसमें कोई सन्देह नहीं कि वाशिंगटन के सामने अनेक गम्भीर समस्याएँ थीं। नयी सरकार की वित्तीय स्थिति अत्यन्त दुर्बल थी। क्रान्ति के समय और बाद में परिसंघ ने जनता से काफी मात्रा में ऋण लिये थे। धन की कमी के कारण सरकार द्वारा अपने अधिकारियों को वेतन के बदले ऋण-पत्र दिये गये थे। पूर्ण वेतन न मिलने के कारण सैनिक असन्तुष्ट थे। परिसंघ के शासन काल में राज्यों में अराजकाता फैल गई थी। वाशिंगटन जानता था कि प्रत्येक राज्य में ऐसे विस्फोटक तत्त्व विद्यमान थे जो एक ही

चिनगारी से धधक सकते थे। केन्द्र में शक्तिशाली सरकार की स्थापना से विभिन्न राज्यों के इन उपद्रवी तत्त्वों को दबाया जा सकता था। राज्यों के आपसी झगड़ों को सुलझाने के लिए भी शक्तिशाली राष्ट्रीय सरकार की स्थापना आवश्यक थी। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के क्षेत्र में अमेरिकी प्रतिष्ठा में वृद्धि करना भी वाशिंगटन की सरकार के लिए एक अत्यन्त महत्त्वपूण कार्य था। वाशिंगटन को एक नवीन संविधान के अन्तर्गत व्यवस्थापिका, न्यायपालिका और प्रतिनिधि-सदनों में सौहार्द्रपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करना था। उसे अपनी कार्यकारिणी के सदस्यों के पद, कार्य और आपसी सम्बन्ध के विषय में निश्चय करना था। ऐसी परिस्थितियों में शान्तिपूर्ण जीवन छोड़ कर 'कठिनाइयों के समुद्र' का भार उठाने की अनिच्छा वाशिंगटन में होना स्वाभाविक था। परन्तु राष्ट्र के सामने भी दूसरा कोई उपाय नहीं था। वाशिंगटन के अतिरिक्त वह किसी अन्य व्यक्ति पर पूर्ण भरोसा नहीं कर सकता था। अमेरिकी क्रान्ति के युद्धों में उसने दृढ़ता व लगन के साथ कार्य कर सफलता प्राप्त की थी। उसने यह सिद्ध कर दिया था कि वह अपने अन्तिम लक्ष्य की प्राप्ति के लिए योजनाबद्ध कार्य कर सकता था। एक बार निर्णय करने के पश्चात् लक्ष्य की ओर बढ़ने से उसे नहीं रोका जा सकता है। उसने अपना व्यवहार सदैव अपने पद और प्रतिष्ठा के अनुकूल बनाये रखा था। अमेरिकी जनता में वह इतना लोकप्रिय था कि उसे ही सब पक्षों का समर्थन प्राप्त हो सकता था। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण जनता द्वारा किये स्वागत से शीघ्र ही राष्ट्र को मिल गया।

(2) वाशिंगटन के प्रशासनिक कार्य - 23 अप्रेल, 1789 ईसवी को वाशिंगटन न्यू यार्क पहुँचा। उसने अपने उद्घाटन भाषण में अमेरिकी जनता को बताया कि समस्त विश्व की आँखें उन पर लगी हुई है, क्योंकि अमेरिकी राष्ट्र पर ही स्वतन्त्रता की पवित्र अग्नि को प्रज्वलित रखने की एवं लोकतन्त्रीय पद्धति के प्रयोग को सफल बनाने का भार है।

प्रशासनिक कार्यों में राष्ट्रपति को सहायता देने के लिए कांग्रेस ने अनेक प्रशासनिक विभागों का निर्माण किया। वाशिंगटन ने इन विभागों के अध्यक्ष पदों पर योग्य व्यक्तियों की नियुक्ति की। वर्जीनिया के थॉमस जेफ़रसन को सेक्रेटरी ऑफ स्टेट (Secretary of State) के पद पर नियुक्त कर उसे विदेश सचिव बनाया। न्यूयार्क के हैमिल्टन को वित्त-मन्त्री (Secretary of Treasury) बनाया गया। मैसाचुसेट्स के एक अनुभवी सेनापति जनरल हेनरी नॉक्स (Henry Knox) को युद्ध सचिव और वर्जीनिया के एक प्रसिद्ध कानून-वेत्ता एडमण्ड रेन्डाल्फ को प्रथम एटार्नी जनरल (Attorney General) नियुक्त किया गया। आरम्भ में वाशिंगटन विभागीय अध्यक्षों से महत्त्वपूर्ण मामलों पर निर्णय लेने के पहले अलग-अलग परामर्श करता था, किन्तु कुछ वर्षों के बाद वह उनके सामूहिक रूप से परामर्श लेने लगा। इस प्रकार वाशिंगटन के प्रथम शासन काल के अन्त तक विभागीय अध्यक्षों की सामूहिक सभाओं ने केबिनेट (Cabinet) का रूप धारण कर लिया। संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति की केबिनेट के सदस्यों को इंग्लैण्ड की केबिनेट के सदस्यों के समान किसी एक सदन का सदस्य होना आवश्यक नहीं था और न ही उन्हें प्रत्यक्ष रूप से सदनों के प्रति उत्तरादायी ठहराया जाता था।

संघ के संविधान में न्यायपालिका के संगठन के विषय में स्पष्ट आदेश नहीं थे। अतएव 1789 ईसवी में बनाये गये न्यायपालिका अधिनियम के अन्तर्गत न्याय-विभाग का पुनर्गठन किया गया। सर्वोच्च न्यायालय में एक प्रमुख न्यायाधीश और पाँच सहायक न्यायाधीशों की नियुक्ति की व्यवस्था की गई। तेरह राज्यों के लिए पृथक् जिला-न्यायालय बनाये गये। विभिन्न राज्यों को तीन सर्किटों (Circuits) पूर्वी, मध्य और दक्षिण- में विभाजित कर प्रत्येक में एक सर्किट न्यायालय स्थापित किया गया। सर्किट न्यायालयों का कार्य स्थानीय जिला न्यायाधीशों द्वारा किया जाना निश्चित हुआ। इनकी अध्यक्षता सर्वोच्च न्यायालय का एक न्यायाधीश करता था। न्यायपालिका-अधिनियम का सबसे महत्त्वपूर्ण प्रावधान सर्वोच्च न्यायालय के अधिकारों से सम्बन्धित था। इसके अनुसार सर्वोच्च न्यायालय को संविधान, संघीय कानून और विदेशों से की गई संधियों पर प्रभाव डालने वाले जिला व सर्किट न्यायाधीशों के फैसलों पर अन्तिम निर्णय देने का अधिकार भी मिल गया। 1791 ईसवी में सर्वोच्च और सर्किट न्यायालयों ने राज्यों के अनेक अधिनियमों को संविधान के विरुद्ध होने के कारण अवैध घोषित कर दिया। सर्वोच्च न्यायालय के पुनरीक्षा के अधिकार का विरोध प्रतिनिधि सभाओं ने किया। 1803 ईसवी के मारबरी (Marbury) और मेडीसन मुकदमे में मुख्य न्यायाधीश ने फैसला देते हुए सर्वोच्च न्यायालय को संविधान का संरक्षक घोषित किया। इस मुकदमे का संक्षिप्त विवरण अगले अध्याय में किया गया है।

(3) हैमिल्टन के वित्तीय सुधार - संघीय सरकार की गम्भीर वित्तीय समस्याओं को सुलझाने के लिए एलेक्जेण्डर हैमिल्टन ने चार प्रतिवेदन तैयार किये। हैमिल्टन के प्रतिवेदनों से उसके विचारों व कार्यक्रम स्पष्ट हो जाते हैं। निर्धन परिवार में जन्म लेकर भी हैमिल्टन ने प्रतिभा का प्रदर्शन कर उन्नति की थी। युवावस्था से ही उसने अमेरिकी स्वतन्त्रता का समर्थन किया था। स्वतन्त्रता-प्राप्ति के युद्धों में सक्रिय भाग लेने के बाद वह न्यू यार्क में कानून-वेत्ता का कार्य करने लगा था। परिसंघ के संविधान में संशोधन करने के लिए किये गये आन्दोलनों को उसने पूर्ण समर्थन दिया था। संघीय संविधान की राज्यों द्वारा स्वीकृति के पक्ष में उसने मेडीसन व जे के साथ 'फेडरेलिस्ट' (Federalists) नामक शीर्षक के अन्तर्गत अनेक लेख लिखे थे। लोकतन्त्रीय पद्धति का समर्थक होते हुए भी हैमिल्टन भीड़तन्त्र का विरोधी था। वह जनता को शासन के लिए अयोग्य मानता हुआ उसे 'महान् ज़ंगली' कहता था। वह कुलीनतन्त्र के सहयोग से केन्द्रीय सरकार की शक्ति को दृढ़ कर शान्ति व व्यवस्था स्थापित करने के पक्ष में था। हैमिल्टन का व्यक्तित्व प्रभावशाली व आकर्षक था। वह अपने विचारों को व्यक्त करने में तनिक भी नहीं हिचकता था। उसका सबसे बड़ा गुण यह था कि वह अत्यन्त ईमानदार था। उसमें देशभक्ति कूट-कूट कर भरी हुई थी।

हैमिल्टन ने अपने प्रतिवेदनों में कांग्रेस के सामने देश की वित्तीय स्थिति का वास्तविक चित्र खींचते हुए सम्बन्धित समस्याओं के समाधान हेतु अपने सुझाव प्रस्तुत किये। यद्यपि वाशिंगटन और प्रतिनिधि-सभा ने उसके सुझावों में पर्याप्त संशोधन किये किन्तु इससे हैमिल्टन के कार्यक्रमों के सैद्धान्तिक पक्ष में सामान्य परिवर्तन भी नहीं हुआ। अतः वाशिंगटन के शासन-काल में किये गये वित्तीय सुधारों का श्रेय हैमिल्टन को है।

वाशिंगटन की सरकार को परिसंघ से उत्तराधिकार में पाँच करोड़ साठ लाख डालर का ऋण मिला था। इसमें लगभग एक करोड़ बीस लाख विदेशों से ऋण लिया गया था। राज्यों को दो करोड़ से अधिक ऋण जनता को अदा करना था। हैमिल्टन इन दोनों ऋणों की अदायगी संघीय सरकार से कराना चाहता था। उसका विश्वास था कि इसके लिये पर्याप्त धन करारोपण से मिल सकता है। विदेशों से लिये गये ऋण के भुगतान से संयुक्त राज्य अमेरिका की साख विश्व में बढ़ जायेगी। जनता से लिये गये ऋण के शीघ्र भुगतान से केन्द्रीय सरकार को सरकारी ऋणदाताओं का समर्थन प्राप्त हो जायेगा। राष्ट्र के धनी व्यक्तियों की पूँजी में वृद्धि होने से उद्योगों का विकास होगा जिससे राज्य को अधिक आमदनी होगी। हैमिल्टन के प्रस्तावों का पर्याप्त विरोध हुआ। उसके विरोधियों का कहना था कि इसमें केवल कुछ व्यक्तियों को लाभ होगा। परिसंघ के शासन-काल में सरकार की साख कम होने के कारण अनेक व्यक्तियों ने अपने ऋण-पत्र बीस प्रतिशत की दर पर दलालों को बेच दिये थे। अगर इनका भुगतान किया गया तो इसका लाभ जनता को न मिलकर इनके वर्तमान स्वामियों को अस्सी प्रतिशत की दर से मिलता। उसके विरोधियों के मत में पहले से ही धनी मनुष्यों को अधिक धनी बनाने के लिए जनता पर भारी कर लगाना अन्याय था। हैमिल्टन ने इसके उत्तर में यह तर्क प्रस्तुत किया कि जब धन सारे देश में फैलता है तो उसे साधारण उपभोग की वस्तुओं को क्रय करने में व्यय किया जाता है और अगर धन एक वर्ग के पास आ जाता है तो वह उसे उद्योगों के विकास पर व्यय करता है। राज्यों के ऋण का केन्द्रीय सत्ता द्वारा भुगतान के प्रस्ताव का विरोध दक्षिण के अनेक राज्यों ने किया। इनमें से कुछ राज्यों ने कम ऋण लिया था। कुछ राज्यों ने ऋण की काफी रकम ब्याज सहित चुका दी थी। अतएव उन्हें उत्तर के राज्यों के मुकाबले में बहुत कम ऋण अदा करना था। उन्होंने हैमिल्टन पर यह आरोप लगाया कि वह उत्तर के राज्यों के प्रति पक्षपात की नीति अपना रहा है। उनके मत में उत्तर के राज्यों को अपनी वित्तीय स्थिति को अव्यवस्थित रखने की लापरवाही का दण्ड मिलना चाहिए। दक्षिण के राज्यों के विरोध का एक ओर कारण था, अधिकांश ऋण-पत्र उत्तर के राज्यों के व्यापारियों के पास थे अत: उनके भुगतान से उन्हें लाभ होता था।

दक्षिण के राज्यों के विरोध को समाप्त करने के लिए हैमिल्टन ने जेफरसन से बातचीत की। दक्षिण के राज्य यह चाहते थे कि संघीय सरकार की स्थायी राजधानी उत्तर में न होकर दक्षिण में बने। इस समय तक जेफरसन अपने सहयोगी की नीतियों का विरोध करने का पूर्ण निश्चय नहीं कर पाया था। इसलिए उसने हैमिल्टन के साथ एक समझौता किया। जेफरसन ने अपने राज्य वर्जीनिया के कुछ प्रतिनिधियों को इस शर्त पर हैमिल्टन के प्रस्ताव का समर्थन कांग्रेस में करने के लिए राजी कर लिया कि हैमिल्टन दक्षिण में राजधानी बनाने के लिए अपने प्रभाव का उपयोग करेगा। 1790 ईसवी में दस वर्ष के लिए संघीय सरकार की राजधानी फिलाडेल्फिया बनायी गयी। इस अवधि में इसके निकट एक नयी राजधानी का निर्माण किये जाने का निश्चय किया गया।

हैमिल्टन के वित्त सम्बन्धी प्रस्तावों में सबसे अधिक विरोध राष्ट्रीय बैंक की स्थापना के बिल पर हुआ। बैंक ऑफ इंग्लैण्ड के समान संयुक्त राज्य अमेरिका का प्रस्तावित राष्ट्रीय बैंक

भी सरकारी कोष रखने और आवश्यकता पड़ने पर सरकार को ऋण देने का कार्य कर सकता था। मुद्रा की स्थिरता के लिए राष्ट्रीय बैंक कागजी मुद्रा प्रचलित कर सकता था। उद्योगों के विकास के लिए बड़े-बड़े उद्योगपतियों को ऋण दे सकता था। इसकी पूँजी का 1/5 भाग सरकार द्वारा और 4/5 भाग निजी निवेशकर्त्ताओं द्वारा किया जाना था ताकि राष्ट्रीय बैंक पर निजी क्षेत्र का नियंत्रण रहे। यद्यपि जेफरसन ने संघ व राज्यों के ऋण के भुगतान के हैमिल्टन के प्रस्तावों को अन्त में समर्थन प्रदान किया था, किन्तु राष्ट्रीय बैंक के प्रस्ताव पर उसने अपनी असहमति प्रकट की। 1791 ईसवी के आरम्भ में जेफरसन व मेडीसन यह निश्चय कर चुके थे कि उन्हें हैमिल्टन की नीतियों का विरोध करना है, क्योंकि ये नीतियाँ उनके मत में राष्ट्र को विनाश की ओर ले जाने वाली थीं। राष्ट्रीय बैंक की स्थापना के प्रस्ताव के विरोध में दक्षिण के राज्यों ने उनका साथ दिया। हैमिल्टन पर पुन: यह आरोप लगाया गया कि वह उत्तर के राज्यों के व्यापारियों को लाभ पहुँचाना चाहता है और दक्षिण के भू-स्वामियों के हितों की उसे चिन्ता नहीं है। जेफरसन का यह मत था कि राष्ट्रीय बैंक की स्थापना से उत्तर के निजी निवेशकर्ताओं के एक छोटे समूह का नियन्त्रण राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था पर स्थापित हो जायेगा। इसके फलस्वरूप वे अत्यधिक लाभ उठाने में समर्थ हो जायेंगे। जेफरसन ने इसे नये संविधान के विरुद्ध भी बताया। वास्तव में संघीय संविधान में इसके लिए कोई स्पष्ट प्रावधान नहीं था। इसके उत्तर में हैमिल्टन ने ' निहित शक्तियों ' (Implied Powers) के सिद्धान्त को प्रतिपादित किया। उसके अनुसार संविधान में ऋण लेने और मुद्रा को नियन्त्रित करने के अधिकार कांग्रेस को दिये गये थे और कांग्रेस इन अधिकारों का प्रयोग राष्ट्रीय बैंक की स्थापना के लिए कर सकता था। जेफरसन ने संविधान के शब्दों का कठोरतापूर्वक पालन करने की आवश्यकता पर बल दिया। उसके मतानुसार अगर ऐसा नहीं किया गया तो सरकार धीरे-धीरे असीमित शक्तियाँ प्राप्त कर लेगी और लोकतन्त्र खतरे में पड़ जायेगा। इस विचार के कारण जेफरसन को 'Strict Constitutionalist' और 'निहित शक्तियों' के सिद्धान्त के प्रतिपादन के कारण हैमिल्टन को 'Loose Constitutionalist' कहा गया। हैमिल्टन व जेफरसन के मध्य बैंक की स्थापना के प्रश्न पर वाद-विवाद इतना अधिक बढ़ गया कि वाशिंगटन ने केबिनेट के सदस्यों से लिखित मत माँगे। फरवरी, 1791 ईसवी में वाशिंगटन ने हैमिल्टन के तर्कों को मानते हुए बिल को पेश करने की स्वीकृति दे दी।

संघ की आमदनी बढ़ाने के लिए हैमिल्टन ने एक प्रतिवेदन में व्हिस्की (Whisky) पर आबकारी कर लगाने की सिफारिश की। अनेक कृषक निजी आवश्यकताओं से अधिक उत्पादित अनाज की शराब बनाकर जीवन-निर्वाह करते थे। हैमिल्टन के विचार में व्हिस्की पर आबकारी कर लगाने से ये कृषक अन्य उत्पादक उद्यमों को करने पर विवश हो जायेंगे। उसके प्रस्ताव का विरोध दक्षिण के राज्यों – विशेषकर पश्चिमी पेनसिलवेनिया और उत्तरी कैरोलिना के मध्य भागों ने किया। अगस्त, 1792 ईसवी में पिट्सबर्ग (Pittsburgh) में आयोजित एक सम्मेलन में इन प्रदेशों के प्रतिनिधियों ने आबकारी कर का सक्रिय विरोध करने का निश्चय किया। वाशिंगटन ने अवैध तरीकों से आबकारी शुल्क का विरोध करने वालों के विरुद्ध सख्त कार्यवाही करने की चेतावनी दी। 1794 ईसवी में पश्चिमी पेनसिलवेनिया के कृषकों ने आबकारी

कर के विरोध में उपद्रव किये। व्हिस्की उपद्रवों का दमन करने के लिए वाशिंगटन ने वर्जीनिया, मेरीलैण्ड, न्यू जर्सी और पेनसिलवेनिया से चार सेनाएँ जनरल हेनरी ली के नेतृत्व में भेजी। उपद्रवों के सफलतापूर्वक दमन से संघ सरकार की प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई। संयुक्त राज्य अमेरिका की जनता को यह ज्ञात हुआ कि संघीय सरकार अपने निर्णयों को मनवाने की शक्ति रखती है।

हैमिल्टन स्वतन्त्र व्यापार के सिद्धान्त का विरोधी था। उसके मत में अमेरिकी उद्योग इस स्थिति में नहीं थे कि वे यूरोप के राष्ट्रों के विकसित उद्योगों से प्रतिस्पर्द्धा कर सकें। अतएव उसने एक प्रतिवेदन में रक्षात्मक शुल्कों की सिफारिश की। संरक्षण की नीति को अपनाने से राष्ट्र की सम्पत्ति के साथ-साथ रोजगार के साधनों में भी वृद्धि होने की सम्भावना थी, किन्तु हैमिल्टन रक्षात्मक शुल्कों को लगाने की स्वीकृति प्राप्त नहीं कर सका। फ्रांसीसी क्रान्ति के युद्धों के कारण संयुक्त राज्य अमेरिका की जनता को व्यावसायिक उत्पादन की अपेक्षा कृषि और व्यापार अधिक लाभप्रद सिद्ध हो रहे थे। अत: इसका विरोध उत्तर के व्यापारियों और दक्षिण के धनी भू-स्वामियों ने किया। उन्होंने इसकी संवैधानिकता पर भी सन्देह व्यक्त किया। हैमिल्टन के समर्थकों में उत्तर के राज्यों के प्रतिनिधियों की संख्या अधिक थी। उनके विरोधी दृष्टिकोण के कारण हैमिल्टन के अनुयायियों में फूट पड़ने की सम्भावना थी। अत: हैमिल्टन ने इस वाद-विवाद को आगे नहीं बढ़ाया। यद्यपि अपने कार्यकाल में हैमिल्टन संरक्षण की नीति लागू नहीं कर सका, किन्तु कुछ वर्षों के पश्चात् उसके सुझावों को स्वीकार कर लिया गया। 1812 ईसवी के युद्ध के बाद अनेक निर्मित वस्तुओं को सरकारी संरक्षण प्रदान किया गया।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भी संयुक्त राज्य अमेरिका में अनेक यूरापीय देशों के सिक्कों का प्रचलन था। प्रचलित सिक्कों की संख्या में कमी होने के कारण व्यापारियों को कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। हैमिल्टन ने मुद्रा-प्रणाली को व्यवस्थित करने के लिए एक विस्तृत योजना बनाई। उसने दशमलव पद्धति को अपनाने की सिफारिश की। 1792 ईसवी के मिंट एक्ट (Mint Act) के अनुसार एक टकसाल बनाई गई। इस टकसाल में स्वर्ण, चाँदी व कांसे के सिक्के बनाये जाने लगे। स्वर्ण के तीन सिक्के – ईगल, अर्द्ध-ईगल और चौथाई ईगल-क्रमश: दस डालर, पाँच डालर और ढाई डालर के मूल्य के होते थे। चाँदी के विभिन्न सिक्कों का मूल्य एक डालर, आधा डालर, चौथाई डालर और 1/10 डालर होता था। दस सेंट का कांसे का सिक्का एक डालर के मूल्य का होता था। राष्ट्रीय बैंक द्वारा प्रचलित किये गये नोट और राष्ट्रीय टकसाल द्वारा बनाये गये सिक्कों से अमेरिकी मुद्रा का स्थिरीकरण हो गया।

हैमिल्टन को अपने आर्थिक कार्यक्रमों में सफलता मिली। विदेशी ऋण के भुगतान से अमेरिकी सरकार की साख विदेशों में स्थापित हुई। अमेरिकी सरकार के ऋण पत्र यूरोप में अधिक कीमतों पर बिकने लगे। विभिन्न राज्यों की सीमा पर लगने वाले शुल्कों की समाप्ति से अंतर्देशीय व्यापार में वृद्धि हुई। विदेशों के साथ होने वाले व्यापार में भी असाधारण वृद्धि हुई। 1791 से 1794 ईसवी तक के तीन वर्षों में अमेरिका का निर्यात दुगुना हो गया। इसका एक कारण यूरोप में फ्रांसीसी क्रान्ति के फलस्वरूप होने वाले युद्ध भी थे। राष्ट्रीय बैंक ने उद्योगपतियों को ऋण देकर उन्हें उद्योगों के विकास के लिए प्रोत्साहित किया। अब संयुक्त राज्य अमेरिका में

विदेशी पूँजी भी लगायी जाने लगी। तीन धातुओं की मुद्राएँ और नोट के प्रचलन से मुद्रा का स्थिरीकरण हुआ। यद्यपि हैमिल्टन रक्षात्मक शुल्क नहीं लगा सका परन्तु उसने इसके लिए मार्ग प्रशस्त कर दिया। वास्तव में हैमिल्टन ने संघ के शैशव काल में वित्तीय समस्याओं को सुलझाकर उसकी साख स्थापित की तथा व्यापार व व्यवसाय की उन्नति की ओर केन्द्र की शक्ति को बढ़ाया। यद्यपि हैमिल्टन को अपने आर्थिक कार्यक्रमों में सफलता मिली परन्तु उसके विचारों और नीतियों के कारण उसके विरोधियों की संख्या बढ़ती गई। राष्ट्रीय बैंक की स्थापना कें प्रस्ताव का तीव्र विरोध जेफरसन ने किया। मई-जून, 1791 ईसवी में उसने मेडीसन के साथ न्यू यार्क व न्यू इंग्लैण्ड के राज्यों की यात्रा की। अपने भाषणों में जेफरसन व मेडीसन ने हैमिल्टन पर यह आरोप लगाया कि वह किसानों तथा बागानों के स्वामियों की अपेक्षा व्यापारियों और उत्पादकों को अधिक लाभ पहुँचाना चाहता है। कुलीनतन्त्र के प्रभाव को बढ़ाने के लिए हैमिल्टन के प्रयासों का भी उन्होंने विरोध किया। हैमिल्टन द्वारा प्रतिपादित निहित शक्तियों के सिद्धान्त की उन्होंने कटु आलोचना की। हैमिल्टन की नीतियों का विरोध करने के लिए जेफरसन ने रिपब्लिकन (Republican) दल की स्थापना की। हैमिल्टन के दल को फेडरेलिस्ट (Federalists) कहा जाने लगा।

(II) हैमिल्टन व जेफरसन के मतभेद तथा दो राजनीतिक दलों का गठन :

जेफरसन का जन्म वर्जीनिया के एक सम्पन्न घराने में हुआ था। उच्च शिक्षा प्राप्त करके वह कानून-वेत्ता बन गया। उसने शीघ्र ही अपने क्षेत्र में ख्याति प्राप्त कर ली। स्वतन्त्रता की घोषणा की रूपरेखा बनाने में उसने मुख्य भूमिका अदा की थी। 1776 से 1781 ईसवी में जेफरसन वर्जीनिया के प्रतिनिधि सदन का सदस्य और राज्य का गवर्नर रहा। 1748 से 1789 तक उसने फ्रांस के राजदूत के पद पर कार्य किया। वाशिंगटन ने उसे संघीय सरकार का प्रथम सेक्रेटरी ऑफ स्टेट नियुक्त किया। थोड़े समय बाद जेफरसन ने यह अनुभव किया कि उसके और हैमिल्टन के विचारों में तीव्र सैद्धांतिक मतभेद हैं। वास्तव में जेफरसन और हैमिल्टन का व्यक्तित्व पूर्ण रूप से विरोधी था। एक ओर जेफरसन मौलिक और दार्शनिक विचारों वाला व्यक्ति था, दूसरी ओर हैमिल्टन के विचार व कार्यक्रमों पर ब्रिटिश राजतन्त्र का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता था। कुलीनतन्त्र का समर्थन करते हुए हैमिल्टन जनता को अयोग्य मानता था लेकिन जेफरसन को उनकी क्षमता में पूर्ण विश्वास था। हैमिल्टन का मुख्य उद्देश्य व्यवस्था स्थापित कर केन्द्रीय सरकार को शक्तिशाली बनाना था। लेकिन जेफरसन के मत में शक्तिशाली केन्द्रीय सरकार से अमेरिका में स्वतन्त्रता खतरे में पड़ सकती है। जेफरसन संविधान की धाराओं का पालन उसके शब्दों के अनुसार कठोरता के साथ करना चाहता था। हैमिल्टन संघीय सरकार की शक्ति को बढ़ाने के उद्देश्य से निहित शक्तियों का उपयोग करने के पक्ष में था। एल्सन के अनुसार दोनों व्यक्ति सुव्यवस्थित शासन के समर्थक थे, किन्तु इसके लिए अपनाए जाने वाले प्रशासनिक तरीकों के बारे में उनके मतभेद थे।

जेफरसन व हैमिल्टन के नेतृत्व में स्थापित राजनीतिक दलों को उनके विचारों और कार्यक्रमों के अनुसार जनता के विभिन्न वर्गों का समर्थन मिला। फेडरेलिस्ट दल का समर्थन

कुलीन लोगों और रिपब्लिकन दल का समर्थन निम्न व मध्य वर्ग के मनुष्यों ने किया। हैमिल्टन का प्रभाव उत्तर के राज्यों में विशेष रूप से था, क्योंकि वहाँ पर पूँजीपति, व्यापारी और उत्पादक अधिक संख्या में रहते थे। दक्षिण के राज्यों में उसे केवल धनी व्यक्तियों का समर्थन प्राप्त हुआ। दक्षिण के राज्यों के साधारण कृषकों ने जेफरसन का साथ दिया। वर्जीनिया और न्यू यार्क के प्रभावशाली नेताओं ने उसको सहयोग प्रदान किया। न्यू यार्क का गवर्नर जॉन क्लिन्टन और वहाँ एक प्रतिभाशाली कानून वेत्ता एरन बर (Auran Barr) रिपब्लिकन दल के प्रमुख प्रवक्ता थे। न्यू इंग्लैण्ड के उत्साही समर्थकों ने जेफरसन के कार्यक्रमों का समर्थन किया।

संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रथम बार राजनीतिक दलों का संगठन हुआ। जेफरसन द्वारा स्थापित रिपब्लिकन दल, जो कि डेमोक्रेटिक रिपब्लिकन (Democratic Republician) दल भी कहलाता था, मौलिक रूप से आज के डेमोक्रेटिक दल से समानता रखता है। इसका नाम राष्ट्रपति जेक्सन के काल (1829-1837) में बदल गया। आधुनिक रिपब्लिकन दल की स्थापना 1854 ईसवी में हुई।

1791 ईसवी में रिपब्लिकन और फेडरेलिस्ट दल के संगठन के थोड़े समय में ही प्रतिनिधि-सभा एवं राज्य-व्यवस्थापिकाओं के सदस्य किसी एक दल के साथ सम्बद्ध हो गये। दोनों दलों की सभाओं में दल की नीतियों और प्रत्याशियों के विषय में विचार-विमर्श कर निर्णय करने की प्रथा आरम्भ हुई। दोनों दलों ने अपनी नीतियों को जनता के सामने प्रस्तुत करने के लिए समाचार पत्र प्रकाशित किये। नेशनल गजट (National Gazette) और गजट ऑफ दी यूनाईटेड स्टेट्स (Gazette of the United States) क्रमश: रिपब्लिकन और फेडरेलिस्ट दल के प्रमुख समाचार पत्र थे। इन दलों के उग्र समर्थकों में कभी-कभी मतभेद इतना तीव्र हो जाता था कि वे एक-दूसरे के साथ सामजिक सम्पर्क भी नहीं रखते थे। फिलाडेल्फिया और न्यू यार्क के धनी परिवार के सदस्य अपने प्रदेशों में रहने वाले रिपब्लिकन दल के समर्थकों से बात करने में अपमान का अनुभव करते थे। स्वयं हैमिल्टन और जेफरसन में व्यक्तिगत शत्रुता उत्पन्न हो गई थी।

(III) वाशिंगटन का दूसरी बार राष्ट्रपति बनना :

फेडरेलिस्ट दल के साथ सहानुभूति होने पर भी वाशिंगटन दलबन्दी को प्रोत्साहन नहीं देना चाहता था। इसलिए उसने जेफरसन व हैमिल्टन को अपने मन्त्रिमण्डल का सदस्य बना रहने दिया। उसने एक दल का प्रभाव इतना अधिक बढ़ने नहीं दिया कि सरकार उस दल के नियन्त्रण में कार्य करने पर बाध्य हो जाये। 1792 ईसवी में दलों की स्थिति इतनी सुदृढ़ नहीं थी कि वे विश्वास के साथ चुनाव लड़ सकते। अत: हैमिल्टन व जेफरसन ने वाशिंगटन को राष्ट्रपति पद के लिए खड़ा होने का आग्रह किया। उनके द्वारा वाशिंगटन को लिखे गये पत्रों से दोनों नेताओं के मध्य कटुता की भावना का पता चलता है। उनके मत में तत्कालीन परिस्थिति में वाशिंगटन ही एक मात्र व्यक्ति था, जिसे राष्ट्र का पूर्ण विश्वास प्राप्त था। उसके राष्ट्रपति न बनने से देश में अराजकता फैलने का डर था। वाशिंगटन दूसरी बार सर्व-सम्मति से राष्ट्रपति चुना

गया। फेडरेलिस्ट दल का प्रत्याशी जॉन एडम्स उपराष्ट्रपति के चुनाव में सफल हुआ। प्रतिनिधि सभा के चुनाव में रिपब्लिकन दल को अधिक सीटें प्राप्त हुईं। 1794 ईसवी के अन्त में जेफरसन और उसके एक वर्ष बाद हैमिल्टन ने मन्त्रिमण्डल से त्याग पत्र देकर अपने दलों के कार्यों में अपना समय व्यतीत करना शुरू कर दिया।

अपने द्वितीय कार्यकाल की समाप्ति पर 1797 ईसवीं में वाशिंगटन ने राष्ट्रपति पद से निवृत्त होने का निश्चय किया। उस समय वह पैंसठ वर्ष का था। दीर्घकाल से राष्ट्र की सेवा में संलग्न रहने और आठ साल तक राष्ट्रपति के पद पर कार्य करने के बाद वह थकान का अनुभव कर रहा था। फैडरेलिस्ट और रिपब्लिकन दल के सदस्यों में बढ़ती हुई कटुता उस पसन्द नहीं थी। अपने ऊपर किये जाने वाले आक्षेपों से उसे दु:ख होता था। वह ऐसी परम्परा डालना चाहता था कि एक व्यक्ति दो बार से अधिक राष्ट्रपति पद पर कार्य न करें। उसने अपने विदाई भाषण में राष्ट्र को दलीय ईर्ष्या के बुरे परिणामों से सचेत करते हुए उनसे दूर रहने की सलाह दी। संयुक्त राज्य अमेरिका की विदेश नीति की व्याख्या करते हुए उनसे दूर रहने की सलाह दी। संयुक्त राज्य अमेरिका की विदेश नीति की व्याख्या करते हुए उसने कहा कि यूरोप के कुछ प्रमुख हित हैं जिनसे हमारा कोई सम्बन्ध नहीं अथवा बहुत दूर के सम्बन्ध हैं। इसलिए संयुक्त राज्य अमेरिका को विदेशों के साथ स्थायी सम्बन्धों की नीति का पालन कर संकटकालीन स्थिति में विदेशों से अस्थाई समझौते करने की नीति अपनानी चाहिए। अपने विदाई भाषण में उसने कहा कि यूरोप के कुछ प्रमुख हित हैं जिनसे हमारा कोई सम्बन्ध नहीं अथवा बहुत दूर का है। इसलिये हमें विदेशों के साथ स्थाई सम्बन्ध नहीं बनाने चाहिए। राष्ट्रपति पद से हटने के दो वर्ष पश्चात् वाशिंगटन की मृत्यु वर्जीनिया में अपने निवास स्थान पर हो गई।

मार्कस कनलिफ्फे (Marcus Cunliffe) ने जार्ज वाशिंगटन के चरित्र व व्यक्तित्व का मूल्यांकन करते हुए लिखा है, ''एक भला आदमी साधु नहीं; एक योग्य सैनिक महान् नहीं, एक ईमानदार प्रशासन, अपूर्व बुद्धिवाला राजनीतिज्ञ नहीं; एक विवेकी स्थितिपालक, प्रतिभाशाली सुधारक नहीं। लेकिन सबको मिला कर एक असाधारण व्यक्ति''।

(IV) फ्रांसीसी क्रान्ति के प्रति अमेरिकनों का दृष्टिकोण :

1789 ईसवी में फ्रांस की राज्य क्रान्ति की पहली महत्त्वपूर्ण घटना बेस्टील (Bastille) के पतन का अमेरिकी जनता ने अभूतपूर्व स्वागत किया। जॉन मार्शल (John Marshall) के अनुसार विश्व के किसी भी भाग में फ्रांसीसी क्रान्ति का इतना प्रसन्नतापूर्वक स्वागत नहीं किया गया जितना कि उस समय में अमेरिका में किया गया था। किन्तु शीघ्र ही फ्रांस की हिंसात्मक घटनाओं और अराजकता की स्थिति के कारण अमेरिकी राजनीतिज्ञ और जनता के दृष्टिकोण में परिवर्तन होने लगा। कुलीनतन्त्री व्यवस्था के समर्थक हैमिल्टन ने फ्रांस की अव्यवस्था को विश्व में लोकतन्त्र के लिए खतरनाक माना। सम्राट लुई सोलहवें की गिरफ्तारी और फाँसी के समाचार सुनकर फेडरेलिस्ट दल के उदारवादी अनुयायियों की सहानुभूति भी फ्रांसीसी क्रान्ति के प्रति समाप्त होने लगी। क्योंकि इसके समान प्रतिक्रियाएँ इंग्लैण्ड में हुई थीं, अत: हैमिल्टन व उसके

समर्थकों को 'अंग्रेजी पक्ष' कहा गया। स्वतन्त्रता के समर्थक जेफरसन ने फ्रांस में जेकोबिन दल के आतंकवादी शासन और व्यापक हिंसा की निन्दा करते हुए इनको क्रान्ति का अस्थायी चरण माना जिसे कि टाला नहीं जा सकता था। रिपब्लिकन दल के समर्थकों ने फ्रांस के राजनीतिक क्लबों के समान अमेरिका के अनेक नगरों में संस्थाएँ खोलीं। यह आशा की जाने लगी कि शीघ्र ही फ्रांस में व्यवस्था स्थापित हो जायेगी। जेफरसन व उसके अनुयायियों को फ्रांसीसी क्रान्ति का समर्थन करने के कारण 'फ्रांसीसी पक्ष' कहा गया। जेफरसन यह भी आशा करता था कि अमेरिका में शान्तिपूर्ण तरीके से फ्रांसीसी क्रान्ति के आदर्शों की स्थापना हो जायेगी।

1793 ईसवी में फ्रांस व कई प्रमुख यूरोपीय देशों में युद्ध छिड़ गया। 1778 ईसवी की सन्धि के अनुसार अमेरिका को फ्रांस के अधीन वेस्ट इण्डीज के प्रदेशों पर आक्रमण की स्थिति में सहायता प्रदान करता था और अमेरिकी बन्दरगाहों में फ्रांस के जहाजों को विशेष सुविधाएँ प्रदान करनी थीं। फ्रांस के राजदूत 'नागरिक जेनट' (Citizen Genet) के अमेरिका आने पर वाशिंगटन ने फ्रांस की नई सरकार के साथ सम्बन्ध और फ्रान्सीसी क्रान्ति के प्रति नीति निश्चित करने के लिए केबिनेट की एक सभा बुलाई। हैमिल्टन ने 1778 ईसवी की सन्धि को रद्द करने और कुछ समय के लिए निष्पक्ष रहने की सलाह दी। यद्यपि जेफरसन अमेरिका को युद्ध से अलग रखना चाहता था लेकिन यह फ्रांस के साथ की गई सन्धि के दायित्वों का पालन करने के पक्ष में था। उसके अनुसार पूर्ण निष्पक्षता ग्रेट ब्रिटेन के लिए अप्रत्यक्ष रूप से सहायक सिद्ध होगी। वाशिंगटन ने इन विरोधी मतों पर विचार करने के पश्चात् अप्रेल, 1793 ईसवी में तटस्थता की नीति अपनाने का निश्चय किया। उसके अनुसार समय आ गया था जबकि संयुक्त राज्य अमेरिका को यह स्पष्ट कर देना चाहिए कि वह किसी एक यूरोपीय शक्ति के संकेत पर अपनी नीति निर्धारित न कर अपने हितों को दृष्टि में रख कर अपनी नीतियाँ निश्चित करता है। उसके मत में अमेरिका को अपनी शक्ति को दृढ़ करने के लिए शान्ति के एक लम्बे युग की आवश्यकता थी। अगर इसके लिए अमेरिका को अपने कुछ अस्थायी व साधारण हितों को भी बलि देना पड़ा तो इसके लिए राष्ट्र को तैयार रहना चाहिए। 22 अप्रेल, 1793 ईसवी को अमेरिका को तटस्थ घोषित करते हुए वाशिंगटन ने अमेरिकी नागरिकों की चेतावनी दी कि वे कोई ऐसा कार्य न करें जो किसी भी युद्ध-रत राष्ट्र द्वारा शत्रुतापूर्ण समझा जाये।

जेनेट का चार्ल्सटन (Charleston) के बन्दरगाह पर भव्य स्वागत किया गया। चार्ल्सटन से फिलाडेल्फिया तक के मार्ग में सभी स्थानों पर रिपब्लिकन दल के अनुयायियों ने जेनेट का स्वागत करते हुए फ्रांसीसी क्रान्ति के प्रति अपना उत्साह प्रकट किया। फिलाडेल्फिया पहुँचने के पहले ही जेनेट ने उत्तरी अमेरिका के स्पेनिश प्रदेशों पर आक्रमण करने के लिए अमेरिकी बन्दरगाहों में फ्रांसीसी स्वयं-सेवकों की टुकड़ियों का संगठन, ब्रिटिश व्यापार पर आघात करने के उद्देश्य से, करना आरम्भ किया।

जेनेट का राजधानी पहुँचने पर वाशिंगटन ने रस्मी तौर पर स्वागत किया। इस पर जेनेट ने यह मत प्रकट किया कि वाशिंगटन अमेरिकी राष्ट्र का सही प्रतिनिधित्व नहीं करता। जेनेट का विश्वास था कि फ्रांस व अमेरिका की सरकारों के मध्य मतभेद होने की स्थिति में अमेरिकी

जनता फ्रांसीसी क्रान्ति का समर्थन करेगी। रिपब्लिकन दल के समाचार पत्रों ने भी वाशिंगटन की नीति की आलोचना की। वाशिंगटन द्वारा तटस्थता की घोषणा के पश्चात् जेनेट ने अमेरिका की आन्तरिक राजनीति में दखल देना बन्द नहीं किया। जेनेट की हलचलों पर अप्रसन्नता प्रकट करते हुए वाशिंगटन ने स्पष्ट शब्दों में अपने मन्त्रिमण्डल को यह बताया कि तत्कालीन स्थिति की अपेक्षा वह कब्र में रहना अच्छा समझता है। जेफरसन ने भी हैमिल्टन के इस प्रस्ताव का समर्थन किया कि फ्रांस की सरकार से जेनेट को वापस बुलाने के लिए कहा जाये। जेनेट ने फ्रांस लौटने के बदले अमेरिका में व्यक्तिगत रूप में रहना उचित समझा।

(V) ब्रिटेन के साथ सम्बन्ध एवं जे सन्धि :

1793 ईसवी में ग्रेट ब्रिटेन और संयुक्त राज्य अमेरिका के सम्बन्ध बिगड़ने लगे। 1783 ईसवी की सन्धि की शर्तों के अनुसार ब्रिटेन ने ग्रेट लेक्स के तट पर स्थित फर के व्यापार के लिए स्थापित की गई चौकियों से अपनी सैनिक टुकड़ियों को नहीं हटाया था। ब्रिटेन ने संयुक्त राज्य अमेरिका के उत्तर पश्चिमी प्रदेशों में रहने वाले आदिवासियों को शस्त्र व अन्य सामग्री देकर अमेरिका के विरुद्ध उकसाया था। ब्रिटेन के सैनिकों द्वारा छीने गये अमेरिका के नीग्रो दासों का हर्जाना भी इंग्लैण्ड ने अदा नहीं किया था। ब्रिटिश नौ-सेना की हलचलों से अमेरिकी तटस्थता को खतरा पहुँचने की सम्भावना थी। ब्रिटेन के जहाजों ने फ्रांस और उसके समस्त उपनिवेश की नाकाबन्दी कर दी। इसके फलस्वरूप फ्रांस के अधीन वेस्ट इण्डीज के द्वीपों का सम्पर्क फ्रांस से टूट गया था। फ्रांस ने इन द्वीपों को आवश्यक सामग्री प्राप्त करने में सुविधाएँ देने के लिए इनके बन्दरगाहों को निष्पक्ष देशों से व्यापार के लिए खुला छोड़ दिया। अमेरिकी व्यापारी फ्रांस के अधीन द्वीपों के व्यापार से अधिक लाभ उठाने लगे। अतः 1793 ईसवी में ब्रिटेन ने फ्रांस अथवा उसके उपनिवेशों से व्यापार करने वाले सभी जहाजों को पकड़ना आरम्भ कर दिया। अंग्रेजों ने सैकड़ों की संख्या में अमेरिकी जहाज और उनके माल को जब्त कर लिया। उन्होंने अमेरिकी जहाजों पर काम करने वाले अंग्रेजों को भी अपने जहाजों पर काम करने के लिए बाध्य किया। इसके लिए उन्होंने ब्रिटेन में जन्में प्रत्येक व्यक्ति को ब्रिटेन का नागरिक माना। थॉमस जेफरसन ने प्रतिवाद करते हुए अंग्रेजी नौ-सेना की गतिविधियों की ओर ब्रिटेन का ध्यान आकर्षित किया। रिपब्लिकन दल व जेफरसन ने वाशिंगटन पर ब्रिटेन के विरुद्ध कठोर कार्यवाही करने के लिए दबाव डाला। फेडरेलिस्ट इंग्लैण्ड के साथ समझौते करने के पक्ष में थे। उनके मत में एक लम्बा युद्ध का खर्चा चलाना राष्ट्र की सामर्थ्य के बाहर था। अंग्रेजों ने संयुक्त राज्य अमेरिका के ऋण पत्र पर्याप्त मात्रा में खरीद कर अमेरिकी व्यवसाय व व्यापार को उन्नत करने में सहयोग दिया था। अमेरिका का नब्बे प्रतिशत निर्यात ब्रिटेन को होता था। ब्रिटेन से आयात की गई वस्तुओं पर लगाये गये करों से संघीय सरकार को पर्याप्त आमदनी होती थी। ब्रिटेन की नाकाबन्दी से बच कर अमेरिकी व्यापारी ब्रिटेन के साथ लाभप्रद व्यापार में लगे हुए थे। ऐसी परिस्थितियों में ब्रिटेन के साथ शत्रुता अमेरिका के आर्थिक विकास के लिए हानिकारक सिद्ध हो सकती थी। वाशिंगटन ने फेडरेलिस्ट दल के तर्कों को मानते हुए समझौते की वार्ता के लिए प्रमुख न्यायाधीश जॉन जे को विशेष राजदूत बनाकर इंग्लैण्ड भेजा। जॉन जे जून, 1794 में लन्दन पहुँचा। नवम्बर, 1794 में

उसने ब्रिटेन के साथ एक सन्धि की। जून, 1796 ईसवी तक संयुक्त राज्य अमेरिका के उत्तर पश्चिमी सीमा-प्रदेशों से अपनी टुकड़ियाँ हटाने का वचन ग्रेट ब्रिटेन ने दिया। इन प्रदेशों में सीमाओं के निर्धारण के लिए एक संयुक्त आयोग के निर्माण का निश्चय किया गया तथा दोनों पक्षों ने इस आयोग की सिफारिशों को मानना स्वीकार किया। ब्रिटेन के जहाजों की कार्यवाही से हुए अमेरिकी हानियों की पूर्ति करने की जिम्मेदारी ब्रिटेन ने मान ली। संयुक्त राज्य अमेरिका की सरकार ने ब्रिटिश ऋणदाताओं के ऋण की अदायगी करने का वायदा किया। ब्रिटिश जहाजों को अमेरिकी बन्दरगाहों को विशेष अधिकार दिये गये।

मार्च, 1795 ईसवी में राष्ट्रपति के सम्मुख अनुमोदन के लिए सन्धि के प्रस्तुत होने के पहले ही रिपब्लिकन दल इसकी कटु आलोचना कर चुका था। जे पर यह आरोप लगाया गया कि उसने ब्रिटिश स्वर्ण के लिए स्वयं को बेच दिया है। उसके द्वारा लन्दन में महारानी के हाथ में चुम्बन लेने को रिपब्लिकनों ने देश की सम्प्रभुता ब्रिटिश ताज के कदमों में रख देना बताया। जे के पुतले कई नगरों में जलाये गये। न्यू यार्क में हैमिल्टन पर एक सभा में पत्थर फेंके गये। वाशिंगटन में युद्ध की अपेक्षा सन्धि को तत्कालिन परिस्थितियों में श्रेष्ठ मानते हुए इसे स्वीकार करने की सिफारिश सीनेट से की। उसके व्यक्तिगत प्रभाव के कारण 1795 में सीनेट ने दो तिहाई बहुमत से इस सन्धि को स्वीकृति प्रदान की।

पार्केस के अनुसार जे सन्धि संयुक्त राज्य अमेरिका की एक कुटनीतिक हार थी। तटस्थ राज्यों के व्यापार के अधिकारों को जे ब्रिटेन से स्वीकार कराने में असफल रहा था। वह ब्रिटेन से अधिक व्यापारिक रियायतें भी प्राप्त नहीं कर सका था। इस सन्धि में ब्रिटेन के सैनिकों द्वारा छीने गये दासों के हरजाने के सम्बन्ध में कोई समझौता नहीं हुआ था। इन असफलताओं के लिए जे को पूर्णतया दोषी नहीं ठहराया जा सकता है, क्योंकि हैमिल्टन ने सन्धि की वार्ता के समय ही फिलाडेल्फिया में ब्रिटिश राजदूत को यह आवश्वासन दिया था कि संयुक्त राज्य अमेरिका किसी भी परिस्थिति में ब्रिटेन विरोधी राष्ट्र का साथ नहीं देगा। यद्यपि यह सन्धि अमेरिका के हितों की दृष्टि से सन्तोषजनक नहीं थी। किन्तु इसने संयुक्त राज्य अमेरिका और ग्रेट ब्रिटेन के मध्य संकटकालीन स्थिति में शांति बनाये रखने में सहायता दी। अत: यह एक बुद्धिमतापूर्ण निर्णय कहा जा सकता है।

(VI) पिन्कने सन्धि :

जे सन्धि ने संयुक्त राज्य अमेरिका व स्पेन के मध्य लम्बे समय से चले आये सीमा सम्बन्धी विवाद में समझौते के कार्य को सुगम कर दिया। स्पेन को यह आशंका होने लगी कि अमेरिका ब्रिटेन के साथ विवादों से मुक्त होकर उसके उपनिवेशों के सीमा-प्रदेशों पर झगड़ा करेगा। किन्तु उनकी यह धारणा निर्मूल थी। 1795 ईसवी में वाशिंगटन ने थॉमस पिन्कने (Thomas Pinckeney) को स्पेन के साथ संधि करने के लिए मेड्रिड भेजा। पिन्कने ने सन्धि में संयुक्त राज्य अमेरिका और स्पेनिश फ्लोरिडा की सीमा निर्धारित की गई। स्पेन ने सीमा पर रहने वाले आदिवासियों को अमेरिकी प्रदेशों पर आक्रमण करने से रोकने का वचन दिया। अमेरिका को मिसिसिप्पी के प्रयोग करने के अधिकार दिये गये। स्पेन ने संयुक्त राज्य अमेरिका के माल को

नदी से नावों द्वारा न्यू आरलिन्स के बन्दरगाह में खड़े जहाजों में बिना किसी कर की अदायगी के भरने और ठहरने के अधिकार प्रदान किये। जे सन्धि की असफलता के बाद पिन्कने सन्धि की सफलता वाशिंगटन सरकार की प्रतिष्ठा को पुन: स्थापित करने में सहायक सिद्ध हुई।

पिन्कने सन्धि ने पश्चिम की ओर प्रसार सुगम कर दिया। 1787 ईसवी के नार्थ वेस्ट आर्डिनेन्स (North West Ordinance) के बाद अमेरिकीयों के पश्चिम दिशा में स्पेन के उपनिवेशों की ओर विस्तार के प्रयत्न आदिवासियों के विरोध के कारण पर्याप्त प्रगति नहीं कर पाये थे। 1794 ईसवी में अमेरिकी सेना से बुरी तरह परास्त होने पर आदिवासियों ने संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ समझौते किये। इन समझौते के फलस्वरूप पश्चिम के नये प्रदेश यूरोप से आने वाले प्रवासियों के लिये खुल गये। 1796 ईसवी तक वर्मोंट, केन्टकी और टेनेसी संयुक्त राज्य अमेरिका संघ के सदस्य बन चुके थे।

(VII) 1796 ईसवी का चुनाव :

1796 ईसवी के चुनावों में फेडरेलिस्ट और रिपब्लिकन दल की प्रतिस्पर्धा और भी तीव्र हो गई। फेडरेलिस्ट दल ने जॉन एडम्स को राष्ट्रपति और थॉमस पिन्कने को उपराष्ट्रपति पद के लिए मनोनीत किया। रिपब्लिकन दल ने क्रमश: जेफरसन और एरन बर को राष्ट्रपति व उपराष्ट्रपति पद के लिए चयनित किया। हैमिल्टन ने अपने दल के सदस्यों द्वारा जॉन एडम्स को मनोनीत करने के प्रस्ताव को पसन्द नहीं किया, क्योंकि उसका एडम्स से विवाद हो चुका था। उसने यह प्रयत्न किया कि एडम्स के स्थान पर पिन्कने राष्ट्रपति चुना जाये। उसका यह अनुमान था कि दक्षिण के रिपब्लिकन एडम्स से घृणा करने के कारण उसे मत न देकर पिन्कने को मत देंगे और इस प्रकार पिन्कने को अधिक मत प्राप्त हो जायेंगे। किन्तु न्यू इंग्लैण्ड के मतदाताओं ने इस प्रकार मतदान किया कि पिन्कने एडम्स से अधिक मत प्राप्त न कर सके। इसके फलस्वरूप एडम्स राष्ट्रपति और जेफरसन उपराष्ट्रपति चुना गया।

(VIII) एडम्स का शासन काल (1797-1801) :

जॉन एडम्स एक योग्य कानून वेत्ता और राजनीति शास्त्र का विद्वान् था। यद्यपि हैमिल्टन के समान उसे भी बहुसंख्यकों की बुद्धिमता में विश्वास नहीं था, किन्तु वह केवल कुलीनों को ही बुद्धिमान ओर योग्य नहीं मानता था। गरीबों को अमीरों के शोषण से बचाने के साथ-साथ वह सरकार के विशेषाधिकारों को कुलीनतन्त्र के आक्रमणों से सुरिक्षत रखना चाहता था। यद्यपि एडम्स एक अत्यन्त ईमानदार व परिश्रमी व्यक्ति था, किन्तु हठीला और झक्की प्रकृति का होने के कारण वह लोकप्रिय नहीं हो सका। उसमें व्यावहारिकता की कमी थी। उसका पहला कार्य वाशिंगटन के मन्त्रिमण्डल के सदस्यों को यथावत रखना था। इस मन्त्रिमण्डल के सदस्य हैमिल्टन को अपना नेता मानते थे। अत: 1799 ईसवी तक एडम्स की नीतियों और कार्यक्रमों का निर्देशन हैमिल्टन द्वारा अप्रत्यक्ष रूप से होता रहा। इसका विरोध रिपब्लिकन दल ने किया।

(1) फ्रांस के साथ मतभेद - एडम्स के प्रशासन के प्रथम दो वर्षों की मुख्य समस्या फ्रांस के साथ संघर्ष की सम्भावना थी। फ्रांस ने जे सन्धि को फ्रांस व अमेरिका के मध्य 1778 ईसवी

में की गई सन्धि का उल्लंघन माना। अतएव फ्रांसीसी नौ सेना ने अंग्रेजी माल ले जाने वाले अमेरिकी जहाजों को पकड़ना आरम्भ किया। 1797 ईसवी के ग्रीष्म तक फ्रांसीसियों ने तीन सौ के लगभग अमेरिकी व्यापारी जहाज पकड़ लिये। एडम्स ने बातचीत के लिए चार्ल्स पिन्कने को फ्रांस भेजा। फ्रांस की तत्कालीन सरकार ने उससे बातचीत करने से इन्कार कर दिया व उसे गिरफ्तार करने की धमकी दी। अपमानित होकर अमेरिका का राजदूत स्वेदश लौटने की तैयारी करने लगा। फेडरेलिस्ट दल के उग्र सदस्यों ने इस अपमान का बदला लेने के लिए फ्रांस के विरुद्ध युद्ध की घोषणा की माँग की। एडम्स ने समझौते के प्रयत्नों को न त्यागते हुए जॉन मार्शल और एलब्रिज गैरी (Elbridge Gerry) को पिन्कने की सहायता के लिए फ्रांस भेजा। फ्रांस के विदेश मन्त्री टैलीराँ (Talleyrand) ने उसके साथ सरकारी तौर पर बातचीत करने से मना कर दिया।

अमेरिका के तीन कमिश्नरों की बातचीत केवल तीन अनामी फ्रांसीसियों से हुई। जॉन मार्शल ने अपनी रिपोर्ट में इन्हें क, ख,ग के नाम से उल्लेखित किया है। क, ख, ग ने स्वयं को फ्रांस की सरकार का प्रतिनिधि बताते हुए अमेरिका के दूतों से फ्रांस के लिए ऋण और विदेशी मन्त्री के लिए रिश्वत की माँग की। उन्होंने यह भी धमकी दी कि अगर अमेरिका की सरकार फ्रांस की शर्तों को नहीं मानेगी तो अमेरिका में क्रान्ति द्वारा स्थापित सरकार को हटा दिया जायेगा। मार्शल व उसके साथियों ने इन शर्तों पर बातचीत करने से मना कर दिया। 1798 ईसवी में क, ख, ग घटना के विवरण के प्रकाशित होने पर रिपब्लिकन दल के अनेक सदस्यों ने भी फ्रांस के विरुद्ध संघर्ष का समर्थन किया। जनता ने भी यह नारा लगाया गया कि रक्षा के लिए लाखों, किन्तु रिश्वत के लिए एक पायी भी नहीं। अमेरिका में युद्ध की तैयारियाँ होने लगीं। वेस्ट इण्डीज के समुद्रों में अमेरिका व फ्रांस के जहाजों के मध्य अघोषित युद्ध में अमेरिकीयों ने एक वर्ष में चौरासी फ्रांसीसी व्यापारिक जहाजों को पकड़ लिया।

(2) विदेशी व देशद्रोह कानून - फेडरेलिस्टों ने अमेरिका में फ्रांस विरोधी भावना की वृद्धि का लाभ उठाकर अपने दल की शक्ति बढ़ाने का प्रयत्न किया। 1798 ईसवी में कांग्रेस ने चार 'विदेशी और देशद्रोह कानून' (Alien and Sedition Acts) पारित किए। 'विदेशी कानूनी' के अन्तर्गत किसी भी विदेशी को देश में निष्कासित करने तथा युद्ध की अवधि में उसे कैद करने के अधिकार राष्ट्रपति को दिये गये। किसी विदेशी व्यक्ति का अमेरिका का नागरिक बनने से पूर्व पाँच वर्ष के स्थान पर चौदह वर्ष की अवधि तक रहना अनिवार्य कर दिया गया। देशद्रोह कानून के अन्तर्गत सरकार के विरुद्ध षड्यन्त्र करने अथवा किसी सार्वजनिक अधिकारी के कार्य में अवरोध उत्पन्न करने के अपराध में किसी भी व्यक्ति को सजा दी जा सकती थी अथवा उस पर जुर्माना किया जा सकता था। सरकार, कांग्रेस और राष्ट्रपति के विरुद्ध झूठा और अपवादक प्रचार करने अथवा देशद्रोह की भावनाओं को उकसाने वाले व्यक्ति के विरुद्ध कार्यवाही की जा सकती थी। इन कानूनों की अवधि तीन वर्ष की थी।

विदेशी व देशद्रोह कानूनों के पारित होने के साथ सरकार ने एक नवीन नियमित सेना के तुरंत गठन के आदेश दिये। इसमें बारह हजार सैनिक भर्ती किये जाने थे। इसके साथ-साथ अनेक अस्थायी सेनाओं के गठन की योजनाएँ भी बनाई गई। नवगठित नियमित सेना का

सेनापतित्व जार्ज वाशिंगटन को सौंपा गया किंतु इसका वास्तविक सेनापति हैमिल्टन को बनाया गया। ऐसा प्रतीत होता है कि फ्रांस की ओर से खतरे का मुकाबला करने के लिए इसका गठन किया गया था लेकिन कुछ व्यक्तियों के विचार में संयुक्त राज्य के प्रदेशों में उपद्रवों का दमन करने के लिए इसका गठन किया गया था। कुछ समय पश्चात् जब संघीय सेना ने पेनसिलवेनिया के उत्तर पश्चिम क्षेत्र में जॉन फ्राईस (John Fries) के नेतृत्व में हुए सशस्त्र विद्रोह का सफलतापूर्वक दमन किया तब संघ की केन्द्रीय शक्ति को सुदृढ़ करने की आवश्यकता के बारे में जनता के विचारों में परिवर्तन हुआ जॉन फ्राईस ने यह विद्रोह संघीय सरकार द्वारा मकानों, भूमि और दासों पर लगाये गये नये करों के विरोध में किया था।

रिपब्लिकन दल ने विदेशी व देशद्रोह कानूनों का सख्त विरोध किया। जेफरसन व उसके अनुयायी भाषण व प्रेस की स्वतंत्रता को सीमित करने वाले कानूनों को संविधान की प्रथम धारा का स्पष्ट उल्लंघन मानते थे। अनेक समाचार पत्रों के सम्पादकों और व्यक्तियों को देशद्रोह कानूनों के उल्लंघन करने के अपराध में सर्वोच्च न्यायालय द्वारा जुर्माना करने अथवा सजा देने से रिपब्लिकन दल का असन्तोष और बढ़ गया। सर्वोच्च न्यायालय से निराश होने पर उन्होंने राज्य की व्यवस्थापिका सभाओं में इसे चुनौती दी। वर्जीनिया और केन्टकी की व्यस्थापिका सभाओं ने क्रमशः मेडीसन और जेफरसन द्वारा लिखित दो प्रस्ताव पास किये। इन प्रस्तावों में यह कहा गया कि अगर संघीय सरकार अपने किसी अधिनियम द्वारा संविधन में दिये गये अधिकारों का उल्लंघन करती है तो राज्य संगठित होकर संघीय सरकार द्वारा पारित किसी अवैधानिक कानून पर निषेधाधिकार का प्रयोग कर सकता है और चाहे तो संघ से पृथक् हो सकता है। इन दोनों राज्यों के अतिरिक्त किसी अन्य राज्य की व्यवस्थापिकाओं ने इस प्रकार के प्रस्ताव पारित नहीं किये। अतः जेफरसन और मेडीसन ने केन्टकी और वर्जीनिया को संघ से पृथक् होने की सलाह नहीं दी।

(3) फ्रांस के साथ समझौता - यद्यपि क, ख, ग घटना के कारण फ्रांस के विरुद्ध अमेरिका में बड़ी उत्तेजना फैली थी, किन्तु सौभाग्यवश दोनों देशों के बीच युद्ध नहीं छिड़ा। अमेरिका को धमकियों से न दबते देख फ्रांस ने समझौते की इच्छा प्रकट की। फ्रांस की सरकार ने यह वचन दिया कि इस बार अमेरिकी राजदूत का उचित स्वागत पेरिस में किया जायेगा। फेडरेलिस्टों के विरोध करने पर भी एडम्स ने फ्रांस के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। इस पर पिकरिंग (Pickering)ने सेक्रेटरी ऑफ स्टेट के पद से त्यागपत्र दे दिया। प्रथम बार एडम्स ने एक स्वतंत्र निर्णय लेकर यह सिद्ध कर दिया कि वह अपने व्यक्तिगत लाभ की अपेक्षा राष्ट्र के हितों को अधिक महत्त्व देता है। उसे यह भलीभाँति ज्ञात था कि इस नीति के पालन करने के फलस्वरूप दूसरी बार राष्ट्रपति बनने की सम्भावनाएँ उसके लिए कम हो सकती हैं, किन्तु अपने व अपने दल के हितों की चिन्ता न करते हुए उसने अपने कर्त्तव्य का पालन किया। 1799 ईसवी में दूसरी बार उसने अमेरिका के राजदूत फ्रांस भेजे। नेपोलियन ने उनका उचित स्वागत किया। 1800 ईसवी में किये गये समझौते से दोनों देशों में पुनः सद्भावना स्थापित हुई।

(4) न्यायिक सुधार - जॉन एडम्स ने अपने शासन के अन्तिम दिनों में न्यायपालिका अधिनियम के अनुसार जिला एवं सर्किट न्यायालयों में सोलह नये न्यायाधीश नियुक्त किये थे।

इनके साथ ही अनेक सरकारी वकील न्यायालय के दफ्तर के अधिकारी व मार्शल नियुक्त किये गये। इनमें से अधिकांश पदों पर उसने अपने दल को समर्थकों की नियुक्ति करके न्यायपालिका पर अपने दल का प्रभाव स्थापित कर लिया। वर्जीनिया के जॉन मार्शल की सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश के रूप में नियुक्ति अमेरिकी इतिहास में अधिक महत्त्व रखती है। उसके नेतृत्व में सर्वोच्च न्यायालय ने संविधान की व्याख्या इस प्रकार से की कि राज्यों की अपेक्षा संघ की शक्तियाँ अधिक व्यापक हो गईं। यद्यपि फेडरेलिस्ट दल को चुनावों में 1800 ईसवी के बाद कभी सफलता नहीं मिली, किन्तु यह दल न्यायपालिका के माध्यम से अमेरिकी संस्थाओं को प्रभावित करता रहा।

(5)1800 ईसवी का चुनाव - 1800 ईसवी में फेडरेलिस्ट दल ने जॉन एडम्स और चार्ल्स पिन्कने को क्रमशः राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपति पद के लिए मनोनीत किया। रिपब्लिकन दल की ओर से जेफरसन राष्ट्रपति और एरन बर उपराष्ट्रपति पद के लिए खड़े हुए। फेडरेलिस्ट दल ने जेफरसन पर यह आरोप लगाया कि उसने फ्रांस के जेकोबिनों के साथ गठबन्धन कर लिया है और सफल होने के पश्चात् शायद वह भी अमेरिका में आतंकवादी शासन स्थापित करने और धर्म व विवाह-संस्कार की पवित्रता को समाप्त करने के विचार रखता है। रिपब्लिकनों ने फेडरेलिस्ट दल की आर्थिक नीतियों, केन्द्र के लिए असीमित शक्तियाँ हस्तगत करने के प्रयत्नों और विदेशी व देशद्रोही कानूनों की आलोचना की। उसके अनुसार फेडरेलिस्ट दल की नीतियों से केवल एक विशेष वर्ग को लाभ हुआ था। जेफरसन ने छोटे किसानों व दूकानदारों का समर्थन प्राप्त कर लिया। एडम्स के साथ मतभेद होने के कारण हैमिल्टन ने पुनः यह प्रयत्न किया कि पिन्कने राष्ट्रपति चुना जाये। चुनाव में जेफरसन और बर को तिहत्तर मत और एडम्स व पिन्कने को क्रमशः पैंसठ और चौंसठ मत मिले। क्योंकि जेफरसन व बर को निर्वाचित मण्डल के सदस्यों से बराबर मत मिले थे इसलिए संविधान के अनुसार अन्तिम निर्णय प्रतिनिधि सभा द्वारा किया गया। फेडरेलिस्ट दल जेफरसन की अपेक्षा बर को राष्ट्रपति बनाना चाहता था, क्योंकि बर पर रिपब्लिकन दल उतना विश्वास नहीं कर सकता था जितना कि वह जेफरसन पर कर सकता था। लेकिन जेफरसन से सैद्धान्तिक और व्यक्तिगत मतभेद होते हुए भी हैमिल्टन ने उसको बर से अधिक योग्य और कम क्रान्तिकारी मानते हुए दल के तीन सदस्यों को जेफरसन का समर्थन करने को कहा। फलस्वरूप जेफरसन राष्ट्रपति व बर उपराष्ट्रपति चुना गया। इस प्रकार बारह वर्ष बाद फेडरेलिस्ट दल के प्रशासन का अन्त हुआ।

(IX) फेडरेलिस्ट दल के प्रथम बारह वर्ष के शासन का मूल्यांकन :

फेडरेलिस्ट दल ने संघीय शासन के प्रथम बारह वर्ष तक संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रशासन का संचालन किया। 1789 ईसवी में संघीय संविधान की सफलता में अनेक लोगों को सन्देह था किन्तु 1800 ईसवी के अन्त तक इस संविधान के प्रति जनता का विश्वास दृढ़ हो चुका था। प्रशासकीय ढाँचे का संगठन सुव्यस्थित हो गया था। संघीय सरकार की वित्तीय स्थिति सुदृढ़ हो गयी थी। यद्यपि फेडरेलिस्ट केन्द्रीय सरकार को राज्यों से अधिक शक्तिशाली बनाने के प्रयत्नों के कारण लोकप्रियता खो बैठे थे, किन्तु उन्होंने अपने उद्देश्य में सफलता प्राप्त कर ली थी। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के क्षेत्र में उन्होंने सभी राष्ट्रों से मित्रतापूर्ण सम्बन्ध स्थापित कर लिये थे।

□□□

अध्याय - 6

जेफरसन का शासन काल (1801-1809 ई.)

□ एल. पी. माथुर

जेफरसन ने अपने पद की शपथ संयुक्त राज्य अमेरिका की नवनिर्मित राजधानी वाशिंगटन में ली। शपथ समारोह में पहले के समान शान-शौकत का प्रदर्शन नहीं किया गया। रिपब्लिकन दल की विजय को अमेरिकी इतिहास में 1800 ईसवी की क्रान्ति की संज्ञा देते हुए जेफरसन ने कहा कि हमारी सरकार के सिद्धांतों के दृष्टिकोण से यह क्रान्ति उतनी ही वास्तविक क्रान्ति है जितनी कि 1776 ईसवी की क्रांति उसके स्वरूप के बारे में थी। उसने केन्द्रीय सरकार की गतिविधियों की रक्षा विदेशी नीति और राष्ट्रव्यापी आन्तरिक समस्याओं तक ही सीमित रखने का वचन दिया। वह सभी व्यक्तियों को अधिकार सम्पन्न मानता था और उनके अधिकारों की रक्षा करना एक सरकार का कर्त्तव्य मानता था। वह शहरों के धनी निवासियों के मुकाबले में श्रमिकों को अधिक ईमानदार मानता था। धर्म व शिक्षा के विषय में उसके विचार क्रान्तिकारी माने जाते थे। जेफरसन के अनुसार उस समय देश को बुद्धिमान और मितव्ययी सरकार की आवश्यकता थी। जेफरसन उद्योग-धन्धे का विकास करने के पक्ष में था। किन्तु इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए किये गये प्रयत्नों से अगर जनता के एक वर्ग के मुँह से रोटी छिनती हो तो वह उसका विरोध करता था। दूसरे राष्ट्रों के साथ मित्रतापूर्ण सम्बन्ध रखना वांछनीय मानते हुए वह इन सम्बन्धों को उलझनों से दूर रखना चाहता था। अपने प्रथम भाषण में जेफरसन ने अपने आदर्शवादी विचारों के अनुसार क्रान्तिकारी कदम उठाने का वचन दिया। शीघ्र ही यह ज्ञात हो गया कि जेफरसन आदर्शवादी होने के साथ-साथ एक व्यावहारिक राजनीतिज्ञ भी है। अपने विरोधियों का शत्रु बनाने की अपेक्षा "उनकी सद्भावना प्राप्त करना" अधिक लाभदायक मान कर जेफरसन ने समझौते की भावना से काम लिया। उसने राष्ट्रीय हितों को दलीय हितों पर प्राथमिकता दी। इसलिए उसकी नीतियों को उसके विचारों की अपेक्षा अधिक उदारवादी माना जाता है।

(I) प्रशासनिक कार्य :

सर्वप्रथम जेफरसन ने ऐसी प्रथाओं को समाप्त किया जिन्हें वह लोकतंत्र के विरुद्ध मानता था। वाशिंगटन स्वयं उपस्थित होकर कांग्रेस को सन्देश देता था। जेफरसन ने इसको इंग्लैण्ड की कुलीनतन्त्रीय पद्धति की नकल बताते हुए बन्द कर दिया। अब वह सरकारी समारोहों में पहले राष्ट्रपतियों की अपेक्षा कम व्यय करने लगा। राष्ट्रपति अपने निवास स्थल पर अतिथियों का स्वागत भी समान रूप से करने लगा।

फेडरेलिस्टों द्वारा महत्त्वपूर्ण सरकारी पदों पर अपने समर्थकों की नियुक्ति से प्रशासनिक विभागों में फेडरेलिस्ट दल का नियंत्रण स्थापित हो गया था। उनके प्रभाव को समाप्त करने के लिए जेफरसन ने धीरे-धीरे अपने दल के समर्थकों की इन पदों पर नियुक्ति की। उसके प्रथम प्रशासन के अन्त तक लगभग पचास प्रतिशत पदों पर रिपब्लिकनों की नियुक्ति हो चुकी थी। उसकी इस नीति का रिपब्लिकनों ने विरोध किया, किन्तु उसने एक दम आमूल परिवर्तन करना प्रशासनिक दृष्टि से उचित नहीं समझा।

1801 ईसवी में जेफरसन के राष्ट्रपति बनने के पहले ही विदेशी और देशद्रोह कानूनों की अवधि समाप्त हो गई थी। जेफरसन ने इनका नवीनीकरण नहीं किया। इसके स्थान पर एक नया कानून पारित किया गया जो अधिक उदारवादी था।

वाशिंगटन व एडम्स के समय में निर्मित केन्द्रीय सरकार का ढाँचा पूर्ण रूप से विकसित नहीं हुआ था। उदारहण के तौर पर युद्ध विभाग में केवल एक सचिव, एक अंकेक्षक, चौदह बाबू व दो संदेशवाहक थे तथा एटार्नी जनरल के अधीन कोई बाबू नहीं था, किन्तु जेफरसन की दृष्टि में लघु संघीय नौकरशाही की यह व्यवस्था अत्यन्त पेचीदा और खर्चीली थी। वास्तव में उसका लक्ष्य सार्वजनिक व्यय में कमी करना था। अत: उसने संघ के कार्यालय के अधिकारियों में भारी कमी की। ब्रिटेन, फ्रांस व स्पेन को छोड़कर शेष देशों में दूतावास बंद कर दिये गये। उसने रक्षा के बजट में भी कमी की। इससे उस समय यूरोप के देशों के समान आधुनिक स्थल व जल सेना के निर्माण की सम्भावनाओं का अंत हो गया। अमेरिका के पश्चिमी प्रदेशों में तैनात सेना में केवल तीन हजार सैनिक व एक सौ बहत्तर अधिकारियों को अपने-अपने पदों पर रहने दिया गया। उसने एक सैनिक अकादमी भी स्थापित की। संघीय सरकार की सत्ता के बढ़ते हुए प्रभाव का आभास कराने के लिए हैमिल्टन ने अनेक आबकारी कर लगाये थे। जेफरसन ने इन सब करों की वसूली समाप्त कर दी। इनमें व्हिस्की कर भी था।

यद्यपि जेफरसन के योग्य वित्त सचिव एलबर्ट गैलाटिन (Albert Gallatin) ने उसे हैमिल्टन द्वारा स्थापित संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रीय बैंक को हटाने से रोका, किन्तु जेफरसन ने इस बैंक के बढ़ते हुए प्रभाव को कम करने का निश्चय किया। उसने देखा कि राज्यों के बैंक राष्ट्रीय बैंक के नियंत्रण को पसंद नहीं करते हैं। अतएव उसने राष्ट्रीय बैंक के अधिकारों में कमी की। 1811 इसवी में विभिन्न राज्यों में स्थापित इक्कीस बैंकों को अधिक अधिकार दिये गये। राज्यों द्वारा संचालित इन बैंकों को कागजी मुद्रा चलाने का अधिकार दिया गया। यह कार्य अमेरिका के संविधान की एक धारा के अनुकूल नहीं था।

जेफरसन सार्वजनिक ऋण का भुगतान भी शीघ्र करना चाहता था। ऐसा करने में उसका उद्देश्य न केवल सरकार को ऋण के भार से मुक्त कराना था अपितु इससे उत्पन्न होने वाले राजनीतिक प्रभाव का अंत भी करना था। सार्वजनिक व्यय में कटौती करके उसने इसमें कमी की। 1801 ईसवी में उसके राष्ट्रपति पद पर आसीन होते समय सरकार पर ऋण अस्सी मिलियन डालर था। किंतु 1810 ईसवी में इसकी मात्रा आधी रह गई थी।

1800 ईसवी के चुनावों में जेफरसन व बर को समान मत मिलने के कारण प्रतिनिधि सभा ने उसका चयन किया था। इस प्रकार की परिस्थिति से बचने के लिए 1804 ईसवी में संविधान के बारहवें संशोधन द्वारा उपराष्ट्रपति के निर्वाचन की व्यवस्था मे परिवर्तन किया गया। इसके अनुसार निर्वाचन मण्डल का प्रत्येक मतदाता राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपति के लिए पृथक् मतपत्रों पर मतदान करने लगा। किसी उम्मीदवार को स्पष्ट बहुमत प्राप्त न होने की स्थिति में प्रतिनिधि सभा को यह अधिकार दिये गये कि वह अधिकतम मत पाने वाले तीन उम्मीदवारों में से एक का चयन करे।

(II) न्यायपालिका के साथ जेफरसन के मतभेद :

जेफरसेन ने 1801 ईसवी के न्यायपालिका अधिनियम को भंग कर दिया। इससे उन न्यायधीशों और अधिकारियों को पद से हटा दिया गया जिनकी नियुक्ति एडम्स ने अपने शासन काल के अन्तिम दिनों में की थी। इसके पश्चात् रिपब्लिकन दल ने न्यायपालिका में फेडरेलिस्ट दल का प्रभाव समाप्त कराने के लिए प्रयत्न किये। जेफरसन के समर्थकों ने सर्वोच्च न्यायालय के अनेक न्यायाधीशों के विरुद्ध महाअभियोग लगाये और वे एक न्यायाधीश को हटाने में भी सफल हुए। किन्तु न्यायाधीश चेस (Chase) के मामले में सीनेट से दो तिहाई मत प्राप्त न होने के कारण उन्हें सफलता न मिली। रिपब्लिकन दल और सर्वोच्च न्यायालय के बीच संघर्ष की सबसे महत्त्वपूर्ण घटना मारबरी (Marbury) व मेडीसन का मुकदमा है। मारबरी की नियुक्ति एडम्स ने अपने कार्य काल की अन्तिम रात्रि में की थी, किन्तु रिपब्लिकन सरकार ने उसे नियुक्ति पत्र देने से मना कर दिया। इस पर मारबरी ने सर्वोच्च न्यायालय में अपील की। 1803 ईसवी में मुख्य न्यायाधीश जान मार्शल ने अपने फैसले में यह सिद्धान्त प्रतिपादित किया कि सर्वोच्च न्यायालय संघ व राज्यों की व्यवस्थापिका सभा द्वारा बनाये कानूनों की संवैधानिकता के सम्बन्ध में अन्तिम निर्णय लेने का अधिकार रखता है। इस निर्णय से सर्वोच्च न्यायालय को सरकार के अन्य दो अंगों कार्यपालिका और व्यवस्थापिका से अधिक शक्ति प्राप्त हो गई। न्यायपालिका के फेडरेलिस्टों के प्रभाव को कम करने का एक मात्र उपाय जेफरसन के पास किसी फेडरेलिस्ट न्यायाधीश के सेवानिवृत्त होने पर उसके स्थान पर रिपब्लिकन न्यायाधीश नियुक्त करना रह गया। किन्तु सर्वोच्च न्यायालय के अनेक न्यायाधीशों की आयु दीर्घ होने के कारण जेफरसन को रिपब्लिकन न्यायाधिशों को नियुक्त करने का अवसर नहीं मिला। 1835 ईसवी तक मार्शल मुख्य न्यायाधीश के पद पर कार्य करता रहा। इस लम्बी अवधि में उसने अपने व्यक्तित्व से रिपब्लिकन न्यायाधीशों को प्रभावित किया। यद्यपि जेफरसन को अपने उद्देश्य में सफलता नहीं मिली, किन्तु न्यायाधीश इन घटनाओं के पश्चात् राजनीतिक वाद-विवादों से दूर रहने लगे और अपने निर्णयों में भी निष्पक्ष रहने का प्रयत्न करने लगे।

(III) लुईसियाना की खरीद :

कूटनीतिक क्षेत्र में जेफरसन की मुख्य उपलब्धि लुईसियाना (Louisiana) की खरीद थी। 1800 ईसवी में नेपोलियन ने स्पेन के साथ सेन इलडिफोन्सो (San Ildefonso) की गुप्त सन्धि

की। इसके अनुसार स्पेन ने मिसीसिप्पी नदी के पश्चिम में स्थित लुईसियाना के प्रदेश के अधिकार फ्रांस को दिये। इस शर्त को गुप्त रखने के लिए स्पेन के अधिकारी लुईसियाना पर शासन करते रहे। संयुक्त राज्य अमेरिका को शीघ्र ही इसके विषय में ज्ञात हो गया। दो वर्ष पश्चात् स्पेन ने न्यू आरलिन्स में सुंयक्त राज्य अमेरिका को दिये गये अधिकारों को समाप्त कर दिया। इसके फलस्वरूप मिसीसिप्पी नदी द्वारा समुद्र से हाने वाला अमेरिका का चालीस प्रतिशत निर्यात लगभग बन्द हो गया। जेफरसन को यह भय होने लगा कि नेपोलियन न्यू आरलिंस को शीघ्र ही हस्तगत कर अमेरिका में पुन: फ्रांसीसी साम्राज्य स्थापित करने का प्रयत्न करेगा। अत: उसने फ्रांस में अमेरिका के राजदूत लिविंगस्टन (Livingstone)को लिखा कि जिस दिन न्यू आरलिंस पर फ्रांस का अधिकार हो जायेगा उस दिन से हममें ब्रिटिश जहाजी बेड़े और राष्ट्र से गठबन्धन कर लेना पड़ेगा। लुईसियाना को सीमा पर रहने वाले निवासी जेफरसन पर यह दबाव डाल रहे थे कि वह फ्रांस से युद्ध आरम्भ कर दे। ऐसी परिस्थितियों में भी जेफरसन ने फ्रांस से बिगाड़ना उचित न समझा। न्यू आरलिन्स को खरीदने के लिए उसने कांग्रेस से बीस लाख डॉलर की रकम प्राप्त की। फ्रांसीसी सरकार से वार्ता में लिविंगस्टन की सहायता के लिए जेम्स मुनरो (James Munro) को पेरिस भेज गया। सौभाग्य से मुनरो के पेरिस तक पहुचँने के पहले ही स्थिति में आमूल परिवर्तन हो गया। हेटी के विद्रोह को दबाने के लिए नेपोलियन द्वारा भेजी गई फ्रांसीसी सेना के अनेक सैनिक पीले बुखार से मर गये और कुछ को विद्रोहियों ने मार डाला। 1791 ईसवी में ब्रिटेन के साथ की गई सन्धि से स्थापित होने वाली अस्थायी शान्ति के अन्त के असार दिखाई दे रहे थे। समुद्र पर इंग्लैण्ड का प्रभुत्व होने के कारण युद्ध की स्थिति में नेपालियन लुईसियाना की रक्षा करने में फ्रांस को असमर्थ पाता था। अत: फ्रांस ने लिविंगस्टन के सम्मुख लुईसियाना को अमेरिका को बेचने का प्रस्ताव रखा। लिविंगस्टन और मुनरो ने इस प्रस्ताव को स्वीकार किया।

जब जेफरसन को यह समाचार ज्ञात हुआ तो वह एक दुविधा में पड़ गया। हैमिल्टन की वित्तीय नीतियों का विरोध करते हुए उसने सदैव सार्वजनिक ऋण को राष्ट्र के लिए हानिकारक बताया था। लुईसियाना की खरीद से एक ही बार में सार्वजनिक ऋण में एक करोड़ पचास लाख डालर की वृद्धि होती थी। संविधान में इस प्रकार के क्रय के लिए कोई प्रावधान न था। जेफरसन ने पहले संविधान में संशोधन कराने की सोची, किन्तु लिविंगस्टन के यह बताने पर कि किसी भी समय नेपोलियन के विचार में परिवर्तन हो सकता है, उसने संशोधन कराने का प्रयत्न नहीं किया। संविधान में संघीय सरकार को संधि करने के अधिकारों के अन्तर्गत इसको न्यायपूर्ण व उचित मानते हुए जेफरसन ने कांग्रेस को इसको स्वीकार करने की सिफारिश की। इस प्रकार हैमिल्टन द्वारा प्रतिपादित 'निहित शक्तियों' के सिद्धान्त का विरोधी होते हुए भी जेफरसन ने उसे अपनाया। फेडरेलिस्टों ने जेफरसन के प्रस्ताव का विरोध किया। वे जानते थे कि इन नये प्रदेशों के निवासी प्रतिनिधि सभा में उनके दल का समर्थन नहीं करेंगे और उनका दल कमजोर पड़ जायेगा। जेफरसन संघीय सरकार का कार्यक्षेत्र सीमित रखने के पक्ष में था, किन्तु इस खरीद से संघीय सरकार के नियंत्रण में एक इतना बड़ा क्षेत्र आ ज़ाता था जिसका क्षेत्रफल

संयुक्त राज्य अमेरिका के समस्त राज्यों से कहीं अधिक था। जेफरसन ने यह स्वीकार करते हुए कि शायद उसने अपने अधिकारों की सीमा का अतिक्रमण किया है, इस सौदे को संयुक्त राज्य अमेरिका की जनता के हित में मानते हुए इसके लिए अनुमति दे दी।

1803 ईसवी में लुईसियाना की प्राप्ति से न्यू आरलिन्स सहित दस लाख वर्ग मील के प्रदेश अमेरिका को प्राप्त हो गये। इससे संयुक्त राज्य अमेरिका का क्षेत्रफल दुगुने से कुछ अधिक हो गया। यह क्षेत्र शीघ्र ही विश्व में गेहूँ के उत्पादन का एक मुख्य केन्द्र बन गया। रिपब्लिकन सरकार को सीमान्त प्रदेशों के निवासियों का पूर्ण समर्थन भी प्राप्त हो गया। फ्रांस के साथ किये गये सौदे के फलस्वरूप स्पेन व संयुक्त राज्य अमेरिका में लुईसियाना की सीमा के विषय में मतभेद उत्पन्न हो गया। स्पेन का यह कहना था कि लुईसियाना फ्रांस को सौंपते समय उसमें पश्चिमी फ्लोरिडा और टेक्सास (Texas) सम्मिलित नहीं थे। अतएव स्पेन ने अमेरिका को इन प्रदेशों का अधिकार नहीं सौंपा। स्पेन व अमेरिका के मध्य यह वाद-विवाद काफी समय तक चलता रहा। 1810 ईसवी में मेडीसन के शासन काल में स्पेनिश सरकार के विरुद्ध जनता के एक विद्रोह के समय पश्चिमी फ्लोरिडा के लगभग आधे प्रदेश पर संयुक्त राज्य अमेरिका ने अधिकार कर लिया। शेष प्रदेशों पर 1813 ईसवी में अधिकार कर लिया गया।

जेफरसन ने कांग्रेस से स्वीकृति लेकर लेविस (Lewis) और क्लार्क (Clarke) को लुईसियाना की पश्चिमी सीमा का अन्वेषण करने के लिए भेजा। वे मिसूरी (Missouri) नदी से होते हुए प्रशान्त के तट पर पहुँच गये। 1805-06 ईसवी में जेबुलोन पाईक (Zebulone Pike) ने कोलारैडो (Colarado) तक के प्रदेशों का अन्वेषण किया। इन अन्वेषणों से पश्चिम में ओरेगन (Oregon) की ओर अमेरिका का प्रसार सम्भव हो सका।

(IV) 1800 ईसवी का चुनाव व जेफरसन की विजय :

जेफरसन को अपने प्रथम प्रशासन में सफलता मिली थी। यद्यपि लुईसियाना को खरीदने के लिए पर्याप्त धन व्यय किया गया था, किन्तु फिर भी राष्ट्रीय ऋण की मात्रा में कमी हो गई थी। लुईसियाना की खरीद ने उसकी लोकप्रियता में वृद्धि कर दी थी। इन चार वर्षों में फेडरेलिस्ट दल की लोकप्रियता घटने लगी थी। इस दल के कुछ प्रमुख सदस्यों का न्यू इंग्लैण्ड, न्यूयार्क व अन्य राज्यों को वर्तमान संघ से पृथक् एक नया संघ स्थापित कराने के लिए किया गया आन्दोलन जनता ने पसन्द नहीं किया। हैमिल्टन ने जेफरसन की नीतियों को राष्ट्र के लिए हानिकारक मानते हुए भी फेडरेलिस्ट पृथक् संघ के प्रस्ताव का सदैव विरोध किया। फलस्वरूप उसके दल में फूट पड़ गई। इन परिस्थितियों में फेडरेलिस्ट दल को अगले चुनाव में सफलता मिलने की कम आशा थी। उन्होंने इसलिए रिपब्लिकन दल में फूट डालने के प्रयत्न किये। फेडरेलिस्ट दल के पृथकतावादियों ने रिपब्लिकन दल के उपराष्ट्रपति एरेन बर को अपनी ओर मिला लिया। 1800 ईसवी के चुनाव में राष्ट्रपति पद प्राप्त करने के लिए फेडरेलिस्ट दल के साथ सांठ-गांठ करने के कारण बर अपने दल का विश्वास खो बैठा था। जेफरसन ने उसे संघीय स्तर पर कोई महत्त्वपूर्ण

कार्य नहीं दिया था। 1804 ईसवी में बर न्यूयार्क के गवर्नर के पद के लिए इस आशा से खड़ा हुआ कि वह उत्तरी राज्यों के पृथक् संघ के आन्दोलनों का नेतृत्व कर अन्त में नये संघ का राष्ट्रपति बन जायेगा। हैमिल्टन ने उसके विरुद्ध प्रचार किया और बर हार गया। अपनी पराजय से क्षुब्ध हो बर हैमिल्टन का घातक श‍त्रु बन गया। उसने हैमिल्टन को द्वन्द्व युद्ध के लिए ललकारा। हडसन नदी के जर्सी तट पर जुलाई, 1804 ईसवी में हुए द्वन्द्व युद्ध में हैमिल्टन घायल हुआ और उसकी मृत्यु हो गई। राष्ट्र ने बर को एक प्रतिभावान व ईमानदार व्यक्ति की हत्या के लिए क्षमा नहीं किया। अत: वह पश्चिम की ओर चला गया। महत्त्वाकांक्षी व पदलोलुप बर ने पश्चिम में न्यू आरलिंस व लुईसियाना पर अधिकार करने के लिए एक सेना एकत्रित की। इस षड्यन्त्र का पता चलने पर उसे गिरफ्तार किया गया। मार्च, 1807 ईसवी में उस पर सर्वोच्च न्यायालय में महाअभियोग चलाया गया। मार्शल का झुकाव बर की ओर था और जेफरसन उसे सजा दिलाना चाहता था। इस मुकदमे में मार्शल ने राष्ट्रपति को गवाही के लिए न्यायालय में प्रस्तुत होने को बुलाया, किन्तु राष्ट्रपति ने आने से मना कर दिया। अन्त में मार्शल ने बर को स्पष्ट प्रमाणों के अभाव में छोड़ दिया। इसके बाद बर राजनीतिक गतिविधियों में भाग नहीं ले सका।

1804 ईसवी के चुनाव में राष्ट्रपति के पद के लिए फेडरेलिस्ट दल के प्रत्याशी चार्ल्स पिन्कने को केवल दो राज्योंकनेक्टिकट और डेलावेयर –का समर्थन मिला, शेष राज्यों ने जेफरसन को मत दिये। जेफरसन को 162 और पिन्कने को केवल 14 मत मिले। रिपब्लिकन दल का उम्मीदवार चार्ल्स क्लिंटन (Charles Clinton) उपराष्ट्रपति बना।

(V) दूसरे राष्ट्रपति काल की पर-राष्ट्रनीति :

जेफरसेन को अपने द्वितीय शासन काल में विदेशी नीति के समस्याओं को सुलझाने में अधिक व्यस्त रहना पड़ा। अनेक वर्षों से भूमध्य सागर में समुद्री लुटेरे अमेरिकी जहाजों को लूट लेते थे। त्रिपोली, ट्यूनिशिया, अल्जीरिया, फेज और मोरक्को आदि बारबरी (Barbary) राज्यों के शासन इन्हें प्रोत्साहन देते थे। वाशिंगटन और एडम्स के शासन काल में अमेरिका की नौ सैनिक शक्ति दुर्बल होने के कारण अमेरिका ने भी यूरोपीय राष्ट्रों के समान उत्तरी अफ्रीका के इन राज्यों को नजराने देने की नीति अपनाई थी। 1789 से 1800 ईसवी तक अमेरिका ने इन राज्यों को बीस लाख डालर नजराने के रूप में दिये थे। जेफरसन ने इसे व्यर्थ का व्यय माना। उसने 1801 ईसवी में एक छोटा समुद्री बेड़ा अमेरिकी व्यापारिक जहाजों की रक्षा के लिये भू मध्य सागर भेजा। त्रिपोली के शासक ने इससे अप्रसन्न होकर युद्ध आरम्भ कर दिया। जेफरसन ने भू मध्य सागर में अमेरिका नौ सेना की सहायता के लिए कई अन्य जहाज भेजे। चार वर्ष के संघर्ष के पश्चात् त्रिपोली ने समझौता किया। इस संघर्ष में अमेरिकी नौ सैना ने अपनी धाक जमा दी।

1803 ईसवी में फ्रांस व इंग्लैण्ड के मध्य फिर युद्ध छिड़ गया। नेपोलियन ने यूरोप के अधिकांश देशों को विजय करके स्वयं को स्थल में अजेय बना लिया था। इंग्लैण्ड ने ट्रेफालगार (Trafalagar) में विजय प्राप्त कर समुद्र में अपना पूर्ण प्रभुत्व स्थापित कर लिया था। 1806 ईसवी

में नेपोलियन ने महाद्वीपीय व्यवस्था (Continental System) द्वारा इंग्लैण्ड की आर्थिक व्यवस्था को नष्ट करने के लिए प्रयत्न आरम्भ किय। इंग्लैण्ड ने इसके उत्तर में 'आर्डर्स इन कौंसिल' (Orders in Council) निकाले। ब्रिटेन ने पुन: उन अमेरिकी जहाजों को पकड़ना आरम्भ किया जो फ्रांसीसी वेस्ट इण्डीज से व्यापार करते थे। ब्रिटेन की अनुमति के बिना कोई भी निष्पक्ष देश नेपोलियन के अधीन किसी भी यूरोपीय देश से व्यापार नहीं कर सकता था। ब्रिटेन व फ्रांस की इन नीतियों के फलस्वरूप अमेरिका के व्यापार को सबसे अधिक क्षति पहुँची। फ्रांसीसी क्रान्ति के युद्धों के समय यूरोप में अमेरिकी माल की माँग बहुत बढ़ गई थी। 1793 ईसवी व 1794 ईसवी में ब्रिटेन द्वारा अनेक अमेरिकी जहाज पकड़ लेने पर भी अमेरिकी व्यापारियों को अत्यधिक लाभ हुआ था। इसलिए अमेरिकी व्यापारी चाहते थे कि राज्य उनके जहाजों को संरक्षण प्रदान करें। व्यापार में अत्यधिक वृद्धि के कारण जहाजों की संख्या बढ़ गई थी। अत: अमेरिकी व्यापारियों को बड़ी संख्या में अपने जहाजों में नौ-सैनिक अधिकारियों की आवश्यकता प्रतीत होने लगी। उन्होंने ब्रिटिश मल्लाहों को अधिक वेतन का लाभ देकर अपनी नौकरी में रख लिया। इसको रोकने के लिए ब्रिटेन ने अमेरिका के प्रत्येक जहाज की तलाशी लेना आरम्भ किया। पहले कि भाँति उन्होंने इंग्लैण्ड में जन्मे प्रत्येक व्यक्ति को ब्रिटिश नागरिक मान कर उन्हें अपने जहाजों में कार्य करने के लिए बाध्य किया। 1807 ईसवी में वर्जीनिया की तटीय सीमा पर युद्ध पोत लियोपार्ड (Leopard) के कप्तान ने अमेरिका व्यापारिक जहाज चेशापीक (Chesapeake) की तलाशी लेनी चाही। चेशापीक के कप्तान ने तलाशी देने से मना किया और कहा कि उसके जहाज पर कोई भी ऐसा अंग्रेज मल्लाह नहीं है जिसने ब्रिटेन की नौकरी छोड़ी हो। ब्रिटिश युद्ध पोत ने चेशापीक पर बिना चेतावनी के गोलाबारी कर चार व्यक्तियों को गिरफ्तार कर लिया। यद्यपि ब्रिटिश सरकार ने चेशापीक की हानि की पूर्ति की, किन्तु उन्होंने अमेरिकी मल्लाहों की गिरफ्तारी पर बातचीत कने से मना कर दिया। चेशापीक घटना से राष्ट्र में बड़ी उत्तेजना फैली। ऐसी परिस्थिति में भी जेफरसन ने ब्रिटेन से युद्ध करना उचित नहीं समझा, क्योंकि इससे अमेरिका के एक लम्बे संघर्ष में उलझने की सम्भावना थी। अत: उसने अमेरिका की तटस्थता बनाये रखने के लिए युद्धरत देशों के साथ व्यापार बन्द करने का निश्चय किया।

फ्रांस व इंग्लैण्ड पर आर्थिक दबाव डालने के लिए 1807 ईसवी में कांग्रेस ने 'अधिरोध कानून' (Embargo Act)पास किया। इसके अनुसार कोई भी अमेरिकी जहाज माल लेकर अमेरिकी बन्दरगाह से नहीं जा सकता था। इस अधिनियम के फलस्वरूप अमेरिका का विदेशी व्यापार पूर्णतया बन्द हो गया और जहाजरानी व्यवसाय भी लगभग समाप्त हो गया। आयात व निर्यात में कमी होने के कारण राज्य की आमदनी कम हो गई। कृषकों को भी इससे नुकसान पहुँचा। न्यू इंग्लैण्ड व न्यूयार्क के व्यापारियों में असन्तोष बढ़ गया और वे संघ से पृथक् होने के विचार का समर्थन करने लगे। ब्रिटेन और फ्रांस ने इस अधिनियम की अधिक परवाह नहीं की। अधिरोध कानून की असफलता को देख कर मार्च, 1809 ईसवी में जेफरसन ने इसे रद्द कर दिया।

इसके स्थान पर उसने असंसर्ग विधेयक (Non-Intercourse Act) पारित किया। इसके अनुसार केवल फ्रांस व ग्रेट ब्रिटेन के साथ व्यापार करने पर प्रतिबंध लगाया गया। इन दोनों देशों में से किसी एक देश द्वारा अमेरिकी जहाजों की नाकेबंदी को अंत करने की स्थिति में दूसरे देश के साथ अमेरिकी व्यापार पर प्रतिबंध जारी रहेगा।

वाशिंगटन के समान जेफरसन ने भी तीसरी बार चुनाव नहीं लड़ने का निश्चय किया। राष्ट्रपति पद से निवृत्त होन के बाद जेफरसन ने अपना समय वर्जीनिया की सेवा करने में व्यतीत किया। उसने कला, साहित्य, विज्ञान और दर्शन में अब अधिक रुचि ली। अपनी वृद्धावस्था में उसने वर्जीनिया के विश्वविद्यालय की स्थापना की। 1826 ईसवी में उसकी मृत्यु तक मेडीसन और मुनरो उससे राजनीतिक समस्याओं पर सलाह लेते रहे। यद्यपि जेफरसन की आशा के अनुकूल सफलता नहीं मिली, किन्तु अमेरिकी राजनीतिज्ञों में उसका स्थान अद्वितीय है। लोकतन्त्रीय प्रणाली में आस्था और विचारों की स्वतंत्रता के दृढ़ समर्थन के कारण उसे अमेरिका में प्रजातंत्र का एक प्रमुख संस्थापक माना जाता है।



अध्याय - 7

जेम्स मेडीसन का शासन (1809-1816 ईसवी)

□ जबर सिंह

सन् 1808 में राष्ट्राध्यक्ष का चुनाव हुआ जिसमें जेफरसन ने भाग लेने से इन्कार कर दिया। इस समय जेफरसन अमेरिका की जनता में बहुत लोकप्रिय था और यदि वह चुनाव में भाग लेता तो उसकी विजय सुनिश्चित ही थी। तीसरी बार राष्ट्राध्यक्ष का चुनाव न लड़ने का निर्णय उसने इसलिए भी लिया कि जिससे राष्ट्र में स्वस्थ परम्पराओं की रक्षा हो सके। चुनाव में रिपब्लिकन दल की ओर से जेम्स मेडीसन और फेडरेलिस्ट दल की ओर से सी.सी. पिन्कने चुनाव मैदान में आये। इस चुनाव में मेडीसन की भारी बहुमत से विजय हुई।

(I) मेडीसन का शासन

(1) ब्रिटेन के साथ सम्बन्ध - जेम्स मेडीसन अमेरिका का चतुर्थ राष्ट्राध्यक्ष निर्वाचित हुआ था। प्रिन्सटन विश्वविद्यालय में शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् उसने अमेरिका के स्वतंत्रता-संग्राम में सक्रिय रूप से भाग लेना आरम्भ कर दिया। उसने वर्जीनिया राज्य तथा संयुक्त राज्य अमेरिका के संविधान निर्माण में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया था। प्रतिनिधि-सभा के सदस्य के रूप में तथा जेफरसन के विदेश मन्त्री और विश्वसनीय सलाहकार के रूप में उसने आठ वर्ष तक कार्य किया था। इस प्रकार मेडीसन ने राष्ट्राध्यक्ष पद की जिम्मेदारियों को निभाने के लिए पर्याप्त योग्यता ओर राजनीतिक अनुभव पहले ही प्राप्त कर लिया था। अधिरोध कानून के स्थान पर मेडीसन ने एक नये कानून असंसर्ग विधेयक (Non-Intercourse Act) को अनुमति प्रदान कर दी। इसके अनुसार अमेरिका के बन्दरगाहों को इंग्लैण्ड और फ्रांस के जहाजों के लिए बन्द कर दिया गया तथा इन देशों में आयात किये जाने वाले सामान पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया। अमेरिका से जो जहाज विदेशों को समान लेकर जाते थे उन पर भी प्रतिबन्ध लगा दिया गया कि वे ग्रेट ब्रिटेन और फ्रांस के लिए कोई सामान नहीं ले जायेंगे। इस कानून में यह भी व्यवस्था थी कि यदि इंग्लैण्ड की प्रशासकीय परिषद् (Council) अपने आदेश और नेपोलियन अपनी घोषणाएँ वापस ले ले तो अमेरिका भी अपने असंसर्ग विधेयक को समाप्त कर देगा। अमेरिका के इस व्यापारावरोध और असंसर्ग विधेयक का प्रभाव ग्रेट ब्रिटेन पर पर्याप्त रूप से पड़ा और इसके फलस्वरूप ग्रेट ब्रिटेन अमेरिका से अपने सम्बन्ध सुधारने के प्रयास करने लगा। इस दिशा में अमेरिका में ग्रेट ब्रिटेन के राजदूत डेविड एस. इरस्काइन (David S. Erskine) और मेडीसन में

एक समझौता हो गया। मेडीसन ने ग्रेट ब्रिटेन से अपने व्यपारिक सम्बन्धों की पुन: स्थापना की घोषणा जारी कर दी। ऐसा प्रतीत होने लगा मानो दोनों ही देशों के सम्बन्ध मधुर होते जा रहे थे और तनावपूर्ण स्थिति का अन्त हो रहा था। किन्तु इसी समय इंग्लैण्ड के विदेश मन्त्र केनिंग ने इस समझौते को निरस्त कर दिया और समझौतावादी राजदूत इरस्काइन को वापस इंग्लैण्ड लौटना पड़ा। इन परिस्थितियों से मजबूर होकर मेडीसन ने एक अन्य घोषणा द्वारा ग्रेट ब्रिटेन के साथ व्यापारिक सम्बन्धों को पुन: बन्द कर दिया।

(2) मेकोन बिल - असंसर्ग विधेयक में सबसे बड़ी कमी यह थी कि जो जहाज एक बार अमेरिका से रवाना हो जाते थे, उन पर नियंत्रण रखना कठिन था। यदि जहाज इंग्लैण्ड और फ्रांस के बन्दरगाहों पर माल उतार भी देते तो इसका पता नहीं लग सकता था। इसी कमी को दूर करने के लिए मई, 1810 ईसवी में मेकोन बिल पास किया गया। इस बिल के अनुसार असंसर्ग विधेयक को रद्द कर दिया गया औ नये विधेयक में इंग्लैण्ड तथा फ्रांस से सौदेबाजी की व्यवस्था हो गई, जिसके अन्तर्गत यदि ग्रेट ब्रिटेन अपने प्रशासकीय परिषद् आदेश (Orders in Council) को समाप्त करने के लिए सहमत हो जाता तो अमेरिका फ्रांस के विरुद्ध असंसर्ग विधेयक पुन: लागू कर देने को तैयार था। इसी पेकार फ्रांस यदि अपनी बर्लिन और मिलान घोषणाएँ निरस्त करने को सहमत हो जाता तो अमेरिका को इंग्लैण्ड के विरुद्ध भी असंसर्ग विधेयक लागू करने में कोई आपत्ति नहीं थी। नेपोलियन ने भावी परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए 1 नवम्बर, 1810 ईसवी से बर्लिन तथा मिलान की घोषणाओं को समाप्त करने की सहमति प्रकट कर दी। समझौते के अनुसार मेडीसन ने इंग्लैण्ड के विरुद्ध असंसर्ग विधेयक लागू कर दिया। यह समझौता आगे चलकर मेडीसन के लिए एक भूल ही सिद्ध हुआ, क्योंकि अब नेपोलियन ने अमेरिका के जहाजों पर कुछ प्रतिबन्ध लगा दिये जो अमेरिका के लिए असह्य थे। इसका परिणाम यह निकला कि एक ओर फ्रांस और अमेरिका के सम्बन्ध बिगड़े तो दूसरी ओर असंसर्ग विधेयक के लागू होने से ब्रिटेन से भी द्वेष भाव बढ़ा।

परिणामत: अमेरिका और ग्रेट ब्रिटेन के सम्बन्धों में तनाव और भी बढ़ने लगा। इंग्लैण्ड ने अपने राजदूत जैक्सन को वापस बुला लिया और उसके स्थान पर किसी भी अन्य की नियुक्ति नहीं की। इसी के प्रतिकारस्वरूप अमेरिका ने भी अपने राजदूत को इंग्लैण्ड से वापस बुला लिया तथा 16 मई, 1811 ईसवी को अमेरिकी नौ-सेना के प्रेसिडेन्ट (President) नाम के जहाज ने अंग्रेजी जहाज लिटिल बैल्ट (Little Belt) पर आक्रमण कर उसे पराजित कर दिया। इस घटना से अमेरिकी जनता मे एक हर्षोल्लास की लहर दौड़ गई। इंग्लैण्ड को अपने भविष्य की चिन्ता हुई और ग्रेट ब्रिटेन की नीति में परिवर्तन आने लगा। इंग्लैण्ड ने यह भी निश्चित ही मान लिया कि, यदि प्रशासकीय परिषद् आदेश को रद्द न किया गया तो परिणाम दोनों देशों में युद्ध की भयंकरता तक पहुँच सकता है। ऐसे समय जबकि ग्रेट ब्रिटेन नेपोलियन के विरुद्ध जीवन और मृत्यु के संघर्ष में उलझा हुआ था, अमेरिका से युद्ध मोल लेना उसके लिए एक विकट स्थिति को असामयिक निमन्त्रण देना था। इन परिस्थितियों में उसने अमेरिका से सम्बन्ध सुधारने का प्रयत्न किया। इंग्लैण्ड ने ऑगस्टन जे.फोस्टर (Augusten J. Foster) को अमेरिका में अपना राजदूत

नियुक्त किया और अन्ततः ब्रिटेन ने 16 जून, 1812 ईसवी को प्रशासकीय परिषद्-आदेश (Orders in Council) रद्द करने की खुली घोषण कर दी।

दुर्भाग्यवश इंग्लैण्ड ने यह निर्णय बहुत ही विलम्ब से लिया, क्योंकि अमेरिका में इंग्लैण्ड के विरुद्ध युद्ध का बिगुल बजा देने की संसदीय कार्यवाही प्रारम्भ हो चुकी थी। 18 जून, 1812 ईसवी को (अर्थात् ग्रेट ब्रिटेन की घोषणा के ठीक दो दिन पश्चात् ही) अमेरका की सीनेट ने राष्ट्रपति के युद्ध की घोषणा के प्रस्ताव को वैधानिक स्वीकृति प्रदान कर दी थी।

(II) इंग्लैण्ड के साथ युद्ध (1812 ई.)

(1) कारण - इस युद्ध के कुछ अन्य कारण भी थे जिन्हें सम्झने के लिए यह आवश्यक है कि अमेरिका के पशिचम भाग में होने वाली घटनाओं का सिंहावलोकन किया जाये। पिछले वर्षों से उत्तर पशिचम और दक्षिण पशिचम में अमेरिकीयों के निरन्तर आगे बढ़ने से सीमान्त की रेड इण्डियन जन जातियों को मजबूर होकर लगातार पीछे हटना पड़ गया। संगठन और नेतृत्व के अभाव में वे इस दबाव का विरोध करने की स्थिति में नहीं थे, परन्तु अब उन्हें टेकुमशेह (Tecumsheh) के रूप में एक योग्य नेता मिल गया था। उसने इण्डियन लोगों को संगठित करने का प्रयत्न किया। उसका उद्देश्य अमेरिका के इण्डियन लोगों को अपनी भूमि और बस्तियों से वंचित कराने के प्रयत्नों का विरोध करना था।

सन् 1811 ईसवी में टेकुमशेह दक्षिण की जन-जातियों से सहयोग प्रास करने के लिए गया। टेकुमशाह की गतिविधियों से इण्डियाना प्रदेश का गवर्नर हेरीसन बहुत क्रुद्ध हुआ। उसने मिलिशिया की शक्तिशाली सैनिक टुकड़ी अपने साथ लेकर टेकुमशेह तथा उसके इण्डियन समर्थकों की शक्ति को नष्ट करने के लिए प्रस्थान किया। मार्ग में हेरीसन की सेना पर 6 नवम्बर, 1811 ईसवी को इण्डियन लोगों ने अचानक धावा बोल दिया। दोनों पक्षों में घमासान युद्ध हुआ और अन्त में इण्डियनों को पीछे खदेड़ दिया गया। यह युद्ध टिपेकेनो (Tippecanoe) के नाम से प्रसिद्ध है। इसमें हेरीसन के इकसठ सिपाही मारे गये तथा एक सौ सत्ताईस गम्भीर रूप से घायल हुए।

गवर्नर हेरीसन ने अपनी सरकार से यह शिकायत की कि टेकुमशेह को बन्दूकें और लड़ाई का अन्य सामान कनाडा से अंग्रेज लोग दे रहे थे। पश्चिमी सीमान्त के निवासियों की यह घारणा थी कि कनाडा के फर व्यापारी इण्डियन लोगों के साथ मिलकर षड्यन्त्र कर रहे हैं। ऐसी स्थिति में इन लोगों द्वारा अमेरिका और ब्रिटेन के युद्ध का समर्थन करना स्वाभाविक था। 1811 ईसवी में ही उन्हें स्पष्ट हो गया था कि निकट भविष्य में इण्डियनों से एक बड़ा युद्ध होना अवश्यम्भावी है। अब वे चाहते थे कि यदि ग्रेट ब्रिटेन और अमेरिका में परस्पर युद्ध हो तो कनाड़ा पर आक्रमण करके उस पर अधिकार कर लेना सम्भव हो सकता है। युद्ध के लिए यह समय भी अत्यन्त उपयुक्त था, क्योंकि उन दिनों ग्रेट ब्रिटेन नेपोलियन से युद्ध में उलझा हुआ था और कनाडा को पर्यास सहायता देने की स्थिति में नहीं था।

दक्षिण-पशिचमी लोगों की दृष्टि में स्पेन अमेरिका का पारस्परिक शत्रु तथा इण्डियन लोगों का स्वाभाविक मित्र था तथा उसके साथ सीमा विवाद भी चल रहा था। अतः वे लोग भी इंग्लैण्ड

के विरुद्ध सम्भावित युद्ध के पक्ष में थे क्योंकि ऐसी परिस्थिति में उन्हें इंग्लैण्ड के मित्र स्पेन के विरुद्ध भी युद्ध छेड़ने का सुअवसर मिलने की आशा थी। वे उत्तर-पश्चिम वासियों को कनाड़ा पर अधिकार करने के प्रयत्न में सहायता देने को तैयार थे और उन्हें आशा थी कि वे भी उन्हें स्पेन से फ्लोरिडा छीनने में मदद करेंगे। इस प्रकार इंग्लैण्ड के विरुद्ध केन्द्रीय प्रशासन द्वारा उठाये गये प्रत्येक कठोर कदम का उत्तर-पश्चिम और दक्षिण पश्चिम के निवासियों द्वारा उत्साहपूर्वक स्वागत किया गया तथा प्रत्येक निर्बलता के चिह्न की भर्त्सना की गई। 1810 ईसवी और 1811 ईसवी के चुनावों के फलस्वरूप एक नई राजनीतिक पीढ़ी का उदय हुआ। इनमें प्रमुख थे- टैनेसी के जॉन सेवियर (John Sevier) और फैलिक्स ग्रुण्डी (Felix Grundy), दक्षिण कैरोलिना के जॉन सी. कैलहुन (John C.Calhoun) तथा केन्टकी के हेनरी क्ले (Henry Clay)। ये युवा देश भक्त अैर इनके अनुयायी इंग्लैण्ड के विरुद्ध युद्ध छेड़ने को अत्यन्त आतुर थे, अत: इन्हें युद्ध लिप्सुओं (War Hawks) के नाम से पुकारा जाने लगा। इस वर्ग के लोगों ने अमेरिका के अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के अधिकारों और अमेरिकी नाविकों के अधिकारों का दृढ़ता से पक्ष लिया और ग्रेट ब्रिटेन द्वारा उठाये गये अपात्तिजनक कदमों की कड़े शब्दों में भर्त्सना की। इसी प्रकार उन्होंने कनाडा में रहने वाले अंग्रेजों द्वारा रेड इण्डियनों की सहायता करने का भी कड़ा विरोध किया। युद्ध के पक्ष में अपने विचारों को शक्तिशाली शब्दों में रखते हुए उन्होंने इस बात पर विशेष बल दिया कि इंग्लैण्ड से युद्ध छेड़ने का अर्थ होगा कि अमेरिका कनाडा पर आसानी से अधिकार कर लेगा। इस प्रकार वे युद्ध के पक्ष में जनमत तैयार करने में सफल हो गये और अन्तत: राष्ट्राध्यक्ष मेडीसन को इस वर्ग से प्रभावित होकर कांग्रेस से युद्ध की घोषण का प्रस्ताव पास करवाना पड़ा।

(2) युद्ध के प्रश्न पर 1812 ई. का चुनाव - 1812 ईसवी में राष्ट्राध्यक्ष के चुनाव एक प्रकार से युद्ध की घोषणा के बारे में जनमत संग्रह था। चुनाव में एक ओर युद्ध के पक्षधरों का नेता मेडिसन था तो दूसरी तरफ उसके विरुद्ध शान्ति के पक्षधरों का नेता डैविट क्लिंटन (Dewitt Clinton) था। यह पूर्णरूपेण स्पष्ट हो गया था कि मेडीसन को वोट देने का अर्थ युद्ध का समर्थन करना है तथा क्लिन्टन को वोट देने का अर्थ शान्ति के लिए वोट देना है। इस चुनाव में मेडीसन एक सौ अठाईस के मुकाबले 89 वोट से विजय हुआ। उसकी विजय पश्चिम और दक्षिण राज्यों के समर्थन से हुई थी। इस चुनाव के परिणामस्वरूप 'युद्ध लिप्सुओं' (War Hawks)की प्रतिष्ठा और प्रभाव में वृद्धि हुई तथा अमेरिका पूरी तरह से इंग्लैण्ड के विरुद्ध युद्ध में उलझ गया।

(3) युद्ध के आरम्भ होने के समय की स्थिति - 1812 ईसवी का युद्ध कई रूपों में अमेरिकी इतिहास की एक दुर्भाग्यपूर्ण घटना थी। वास्तव में देखा जाये तो यह युद्ध अनावश्यक ही था, क्योंकि ब्रिटिश प्रशासकीय परिषद् आदेश, जो तनाव का प्रमुख कारण थे, उस समय रद्द किये जा रहे थे, जबकि कांग्रेस युद्ध की घोषणा कर रही थी। इसके अतिरिक्त युद्ध के प्रश्न पर अमेरिकावासियों में गम्भीर मतभेद थे, क्योंकि सैनिक और आर्थिक दोनों ही दृष्टियों से अमेरिका युद्ध के लिए तैयार नहीं था। संयुक्त राज्य अमेरिका के बैंक का चार्टर 1811 ईसवी में समाप्त हो गया था और उसकी अवधि को आगे नहीं बढ़ाया गया था। अत: युद्ध के समय अमेरिका उसकी सेवाओं से वंचित रहा। आन्तरिक करों में वृद्धि के प्रस्तावों को रिपब्लिकन विचारों का विरोधी

माना गया था और प्रारम्भ में इनका विरोध भी किया गया। 1813 ईसवी में राज्यों से सीधी उगाही करने के प्रयत्न में भी विशेष सफलता नहीं मिली। अत: युद्ध का अधिकांश व्यय कर्ज लेकर चलाया गया। इसके लिए सरकार को बहुत ऊँची दर पर ब्याज देना पड़ा। न्यू इंग्लैण्ड के पूँजीपतियों ने किसी प्रकार का सहयोग प्रदान नहीं किया। इस प्रकार युद्ध समाप्ति के समय तक सरकार वित्तीय दृष्टि से लगभग दिवालिया हो गई थी।

सैनिक दृष्टि से अमेरिका की दशा चिन्ताजनक ही थी। नियमित सैनिकों की संख्या लगभग सात हजार थी। उनकी सहायता के लिए अभ्यासहीन और अनुशासनरहित नागरिक सेना (मिलिशिया) थी। केन्द्रीय सरकार ने राज्यों से मिलिशिया-सैनिकों की प्राप्ति के जो भी प्रयत्न किये उनमें विशेष सफलता नहीं मिली। राज्यों के हार्दिक सहयोग का सर्वथा अभाव रहा। नियमित सैनिकों में अनुशासन की कमी थी और उनके अधिकारी भी उच्च कोटि के नहीं थे। वर्जीनिया वासी युवक विनफील्ड स्काट (Winfield Scot) के अनुसार जिसने कुछ वर्ष पूर्व ही अपना ओजस्वी सैनिक जीवन प्रारम्भ किया था, कमाण्डरों के दो मुख्य समूह थे। पुराने अधिकारी प्राय: सुस्त, अज्ञानी या शराब के नशे में धुत्त रहने के अभ्यस्त थे। नये अधिकारी भी अधिकांशत: राजनीतिक कारणों से भर्ती किये गये थे। इनमें से कुछ योग्य थे परन्तु अधिकतर अयोग्य और अशिक्षित ही थे। यदि कुछ प्रशिक्षण प्राप्त भी थे तो अहंकारी, परावलम्बी और पतित थे। शेष लोग किसी भी अन्य काम के योग्य नहीं थे। इसी प्रकार अमेरिकी नौ सेना में केवल सोलह फ्रिजेट तथा अपर्याप्त संख्या में छोटे पोत थे जबकि ग्रेट ब्रिटेन के पास लगभग एक हजार बड़े युद्ध पोत थे जिनमें से एक सौ तो पश्चिमी अटलांटिक महासागर में तैनात थे। अत: स्पष्ट है कि अमेरिका किसी भी दृष्टि से इस युद्ध के लिए तैयार नहीं था।

(4) युद्ध की घटनायें – इन परिस्थितियों के बावजूद कनाडा पर आक्रमण की योजना पूर्ण विश्वास और सफलता की आशा से बनाई गई थी। इस योजना के अनुसार कनाडा पर तीन ओर से आक्रमण करने की व्यवस्था की गई। 2 जुलाई, 1812 ईसवी को विलियम हल (William Hull) के नेतृत्व में अमेरिकी सेना ने डेट्रोयट नदी को पार किया, परन्तु जब अंग्रेज सेना और टेकुमशेह की इण्डियन सैनिकों की संयुक्त शक्ति का उसे समाचार मिला तो हल घबरा गया और वापस डेट्रोयट को लौट आया। यहाँ पर उसे अंग्रेज और इण्डियन सैनिकों ने घेर लिया। जिसके फलस्वरूप 16 अगस्त को उसने अपनी सेना सहित आत्मसमर्पण कर दिया। इसके एक दिन पहले डियरबोर्न के किले (Fort Dearborn) की रक्षक सेना के इण्डियन सैनिकों ने मौत के घाट उतार दिया था। नियाग्रा क्षेत्र में कुछ आपसी मुठभेड़े भी हुई परन्तु कोई सफलता नहीं मिल सकी। इसी प्रकार सीनियर मेजर जनरल हेनरी डीयरबोर्न (Henary Dearborn) के नेतृत्व में अमेरिकी सेना मोन्ट्रियल (Montreal) की ओर कूच न कर सकी और कनाडा की सीमा से बीस मील दूरी पर ही रूक गई। तत्पश्चात् सीमा पार किये बिना ही डीयरबोर्न अपनी सेना सहित अपने मुख्य कार्यालय प्लेट्सबर्ग (Platsburg) को लौट आया। डीयरबोर्न एक अयोग्य और बूढ़ा सेनापति था जो साठ वर्ष की उम्र पार कर चुका था। इससे पहले उसने रणक्षेत्र में एक रेजीमेन्ट से अधिक बड़ी सैनिक टुकड़ी का कभी संचालन नहीं किया था।

अमेरिकी मनोबल के लिए यह सौभाग्य की बात थी कि समुद्री युद्ध में उन्हें कुछ सफलता और यश अवश्य प्राप्त हुआ। इसका कारण यह था कि अमेरिकी नौ सेना में कमाण्डर तथा सैनिक उच्च कोटि के थे तथा उनके युद्ध पोतो में तोपों और पालों की संख्या यूरोपीय जहाजों की अपेक्षा अधिक थी। उनकी क्षमता भी अधिक थी जिससे उन्हें निरन्तर एक के बाद एक अनेक स्थानों पर विस्मयकारी सफलता मिली। जुलाई में एसेक्स (Essex) जहाज ने मिनर्वा (Minerva) और एलर्ट जहाजों पर अधिकार कर लिया। 19 अगस्त को कोन्स्टीट्यूशन (Constitution) नामक पोत ने इस युद्ध में अंग्रेजों के शक्तिशाली जहाज गुरिऐर (Guerriere) को परास्त कर महत्त्वपूर्ण सफलता प्राप्त की। इसी प्रकार अन्य मुठभेड़ में युनाइटेड स्टेट्स नामक जहाज ने मैसिडोनियन (Macidonian) पोत पर अधिकार कर लिया और उसे अमेरिकी बन्दरगाह में लाया गया। अन्य कई स्थानों पर भी अमेरिकी नौ सैनिकों को विजयश्री मिली। इसके अतिरिक्त, अमेरिकी नाविकों ने व्यक्तिगत रूप से भी कार्यवाही कर के अंग्रेजों के व्यापार को गम्भीर धक्का पहुँचाया, परन्तु 1813 ईसवी की बसन्त ऋतु के बाद स्थिति में परिवर्तन आया और अंग्रेजों का पलड़ा भारी होने लगा। उन्होंने अमेरिकी तट की कड़ी नाकेबन्दी कर दी जिसके फलस्वरूप अमेरिकी नौ सेना के छक्के छूट गये और कनाड़ा में अमेरिका की समस्त गतिविधियाँ लगभग समाप्त हो गईं।

कनाड़ा पर आक्रमण की नई योजना बनाने से पहले अमेरिकी अधिकारियों ने ग्रेट लेक्स (Great Lakes) पर अधिकार करने का निश्चय किया। इसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए कप्तान ओलिवर हैजार्ड पैरी (Oliver Hazard Perry) के नेतृत्व में एक सौ सैनिक बेड़े ने लेक ऐरी (Lake Arie) के क्षेत्र में सैनिक कार्यवाही प्रारम्भ कर 10 सितम्बर, 1813 ईसवी को एक महत्त्वपूर्ण विजय प्राप्त की। इस घटना के बाद अंग्रेजों को डेट्रोयट और मालडेन (Malden) से पीछे हटना पड़ा तो उनका पीछा विलियम हेनरी हेरिसन (William Henry Harrison) ने किया। 15 अक्टूबर, 1813 ईसवी को थेम्स (Thames) का प्रसिद्ध युद्ध हुआ जिसमें हेरीसन की विजय हुई और टेकुमशेह मारा गया तथा अंग्रेजों को यह क्षेत्र खाली करना पड़ा। तत्पश्चात् कनाड़ा के क्षेत्र में अमेरिका को कोई विशेष सफलता नहीं मिली परन्तु इतना अवश्य हुआ कि युद्ध समाप्ति के समय उत्तर-पूर्वी क्षेत्र पर उनका अधिकर हो गया तथा इण्डियन लोगों को युद्ध में नीचा दिखा दिया गया।

1814 ईसवी में योग्य युवा कमाण्डर विनफील्ड स्काट के नेतृत्व में अमेरिकी सेना को नियाग्रा (Niagra) क्षेत्र में अनेक मोर्चों पर सफलता मिली, परन्तु इस समय तक यूरोप में नेपोलियन को परास्त कर दिया गया था और कनाड़ा की सुरक्षा के लिए भारी संख्या में अंग्रेज सैनिक यूरोप में आ गये थे। अत: कनाड़ा को विजय करने की अमेरिकी आशाओं पर पानी फिर गया था। अंग्रेजों ने चाम्पलेन मार्ग से न्यू यार्क पर आक्रमण का प्रयत्न किया परन्तु इसे अमरिकी नौ सेना के बेड़े ने विफल कर दिया तथा अंग्रेजी सेना वापस कनाड़ा चली गई।

1814 ईसवी के ग्रीष्म काल में अंग्रेजों ने चेसापीक की खाड़ी के किनारे पर स्थल सेना को उतार दिया। इस सेना ने अमेरिकी सुरक्षा व्यवस्था को तोड़कर वाशिंगटन की ओर कूच किया तथा नगर पर अधिकार कर लिया। अंग्रेज सैनिकों ने नगर के प्रमुख भवनों को आग लगा दी तथा

राष्ट्राध्यक्ष मेडीसन भी उनके कब्जे में आने से बाल-बाल बचा। ब्रिटिश सैनिकों ने अमेरिकी संसद भवन और राष्ट्रपति भवन पर भी गोले बरसाये। किन्तु जब ब्रिटिश बेड़े ने बाल्टिमोर (Baltimore) के पास फोर्ट मैक हेनरी (Fort Mac Henry) पर रात को दूर से गोलीबारी की, क्योंकि कम गहरे पानी के कारण नजदीक से गोलाबारी सम्भव नहीं थी। उनको कोई सफलता नहीं मिली। वाशिंगटन के एक युवक एटर्नी फ्रांसीसी स्कॉट (Francis Scott) को, जो युद्ध बन्दी के रूप में एक ब्रिटिश युद्ध पोत पर था, प्रातःकालीन बेला के मन्द समीर में अमेरिकी राष्ट्रीय ध्वज को फहराते हुए देख कर उसे ऐसी प्रेरणा मिली कि उसने 'द स्टार स्पैंगल्ड बैनर' (The Star Spangled Banner) नामक राष्ट्र गीत की रचना कर डाली। अमेरिकी लोग नगर की सुरक्षा करने में सफल रहे तत्पश्चात् ब्रिटिश सेना वापस चली गई। चेसापीक का सम्पूर्ण अभियान यद्यपि अमेरिकीयों के लिए अपमानजनक था, परन्तु इससे अंग्रेजों को भी कोई विशेष महत्त्वपूर्ण सैनिक लाभ नहीं हुआ।

युद्ध अपने अन्तिम दौर में दक्षिण-पश्चिम में लड़ा गया जहाँ अमेरिकावासियों को सन्तोषजनक सफलता मिली। इसका प्रमुख श्रेय एन्ड्रयू जैक्सन (Andrue Jackson)के उदीयमान नेतृत्व को था। वह अपने प्रभावशाली व्यक्तित्व के कारण मिलिशिया सैनिकों को अनुशासन में रख कर आज्ञा पालन करवा सकता था तथा अपने साहस और दृढ़ निर्णय से उन्हें प्रेरणा प्रदान कर सकता था।

13 अगस्त, 1813 ईसवी को क्रीक इण्डियनों (Creeck Indians) ने फोर्ट मिम्स (Fort Mims) पर आक्रमण करके अमेरिकी सैनिकों का सफाया करना आरम्भ कर दिया था तथा वे निकटवर्ती क्षेत्र पर आक्रमण करने लगे थे। इस समय जैक्सन टेनेसी राज्य की मिलिशिया का कमाण्डर था और एक रिवाल्वर की गोली से घायल हो जाने के कारण स्वास्थ्य लाभ के लिए आराम कर रहा था। यह चोट उसे एक निजी झगड़े में लगी थी। ज्योंही इण्डियनों के आक्रमण का समाचार जैक्सन को मिला उसने तुरन्त ही मिलिशिया सैनिकों को एकत्र करके युद्ध प्रारम्भ कर दिया। जैक्सन के शक्तिशाली अभियान के फलस्वरूप उसे महत्त्वपूर्ण सफलता मिली तथा इसी अभियान के द्वारा उसने इण्डियन लोगों से फोर्ट मिम्स की हार का बदला पूरी तरह चुका लिया। अन्ततः 9 अगस्त को इण्डियनों को करारी हार देते हुए उन्हें सन्धि पर हस्ताक्षर करने को मजबूर कर दिया जिसके अनुसार अपनी भूमि का एक बहुत बड़ा भू-भाग उन्हें अमेरिका वालों को देना पड़ा। इसके तुरन्त बाद जैक्सन को दक्षिण-पश्चिम की सेना का कमाण्डर नियुक्त किया गया। अमेरिका के लिए यह सौभग्य की बात थी कि जैक्सन जैसे-योग्य सैनिक नेता का उदय हुआ और उसे ठीक उस समय दक्षिण की सेना का नेतृत्व सौंपा गया जबकि उस क्षेत्र में एक भारी ब्रिटिश आक्रमण होने वाला था।

1814 ईसवी के पतझड़ के समय में एक विशाल ब्रिटिश सेना को न्यू ओर्लिन्स (New Orlins) के पास उतारा गया। इस सेना में नेपोलियनीय युद्धों (Nepolianic Wars)में अनुभव प्राप्त दस हजार सैनिक थे जिनका नेतृत्व वेलिंगटन का साहसी लेफ्टीनेन्ट एडवर्ड पेकनहम (Edward Pakenham) कर रहा था। 1 जनवरी, 1815 ईसवी को न्यू आर्लिन्स के प्रसिद्ध युद्ध

में ब्रिटिश सेना की करारी हार हुई तथा उसे युद्ध क्षेत्र छोड़ कर अपने जहाजों के साथ वापस लौटने को बाध्य कर दिया गया। इस युद्ध में दो हजार ब्रिटिश सैनिक मारे गये, जबकि जैक्सन को केवल तेरह सैनिकों की हानि हुई। इस विजय से देश में प्रसन्नता की लहर दौड़ गई। हेनरी पार्केस के अनुसार ''अमेरिका को भावी राष्ट्राध्यक्ष प्रदान करने के अतिरिक्त न्यू आर्लिन्स के युद्ध ने उनके लिए मनोबल को तथा मेडिसन के प्रशासन की प्रतिष्ठा को पुनर्स्थापित किया।'' किन्तु इस युद्ध की शान्ति सन्धि की शर्तों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा, क्योंकि इस युद्ध के पन्द्रह दिन पहले ही यूरोप में शान्ति सन्धि हो चुकी थी जिसका पता बाद में चला। इसका कारण यह भी था कि उन दिनों संचार साधन इतने विकसित नहीं थे और यूरोप के समाचार अमेरिका तक पहुँचने में देरी लगती थी। खैर जो भी हो उस समय अमेरिकावासियों का विश्वास तो यही था कि न्यू ओर्लिन्स की विजय के फलस्वरूप ही शान्ति सन्धि हुई है।

(5) घैन्ट की संधि - रूस के जार की मध्यस्थता के प्रयत्नों के फलस्वरूप अगस्त, 1814 ईसवी में बेल्जियम में घैन्ट (Ghent) के स्थान पर शान्ति वार्ताएँ प्रारम्भ हो गईं, जिसमें भाग लेने वाले अमेरिका के प्रतिनिधि-मण्डल में जेम्स बेयर्ड (James Bayard), एल्बर्ट गैलेटिन, जॉन क्विन्सी एडम्स (John Quincy Adams), हेनरी क्ले (Henery Clay) और जोनाथन रसैल (Jonathan Russel) थे। ये सभी सर्वोत्तम योग्यता वाले चोटी के मनुष्य थे। इसके विपरीत ग्रेट ब्रिटेन ने अपने सर्वश्रेष्ठ योग्यता वाले नेताओं को वियना कांग्रेस में भाग लेने के लिए भेज दिया था अत: उसकी ओर से प्रतिनिधि-मण्डल में द्वितीय श्रेणी के व्यक्ति ही सम्मिलित हुए। सम्भवत: यही कारण था कि इस शान्ति वार्ता में अमेरिकी प्रतिनिधि-मण्डल को अपर्याप्त कूटनीतिक सफलता मिली तथा ग्रेट ब्रिटेन अपनी शक्ति के बावजूद भी सन्धि में कोई कठोर शर्त सम्मिलित नहीं करवा सका। वार्ताओं के अन्त में जो समझौता हुआ उसके अनुसार दोनों पक्ष यथापूर्व स्थिति स्थापित करने पर सहमत हो गये। प्रशासकीय परिषद् आदेश जिनको लेकर सारा विवाद खड़ा हुआ था युद्ध समाप्ति के बाद स्वत: ही समाप्त हो गये और उन पर विवाद करना अर्थहीन समझा गया। अन्य विवादों को सुलझाने के इरादे भी स्थगित कर दिये गये ओर यह निश्चय किया गया कि इन विवादों को सुलझाने के लिए संयुक्त आयोगों का निर्माण किया जाये। घैन्ट की सन्धि पर दोनों प्रतिनिधि-मण्डलों के हस्ताक्षर 24 दिसम्बर, 1814 ईसवी को हुए। इस सन्धि में मोटे तौर से यही घोषणा की गई कि युद्ध समाप्त हो गया है और किसी भी पक्ष को कोई लाभ नहीं हुआ है। एडम्स के अनुसार, ''यह शान्ति सन्धि की अपेक्षा एक युद्ध विराम सन्धि थी। किसी भी पक्ष ने कोई क्षेत्र छोड़ा नहीं था, बल्कि सभी युद्धोत्तर विवाद ज्यों के त्यों छोड़ दिये गये थे। किसी समस्या का समाधान नहीं किया जा सकता था और किसी भी विवाद पर समझौता नहीं हो पाया था। केवल एक अनिश्चित काल तक युद्ध रोकने के लिए दोनों पक्ष सहमत हो गये थे।'' सम्भवत: इन्हीं कारणों से यह सन्धि एक उपयोगी सन्धि मानी गई थी, क्योंकि इसने दोनों पक्षों में कटु भावनाओं को बढ़ने से रोक दिया था जिससे भविष्य में दोनों देशों में समझौते की भावना के विकास का मार्ग खुला।

घैन्ट की सन्धि में भविष्य में दोनों देशों के विवादों को सुलझाने के बारे में व्यवस्था की गई थी। इस व्यवस्था तथा समझौते की भावना के विकास के परिणामस्वरूप दोनों देशों के बीच कई महत्त्वपूर्ण समझौते हुए। 3 जुलाई, 1815 ईसवी को एक व्यापारिक समझौते पर हस्ताक्षर हुए। 28 अप्रैल, 1817 को प्रसिद्ध रश-बैगोट समझौता (Rush-Bagot Agreement) हुआ जिसके अनुसार दोनों देश ग्रेट लेक्स को सम्पूर्ण रूप से सैन्य रहित रखने पर सहमत हो गये। केवल पुलिस कार्य के लिए कुछ तोप-नोकाएँ हीं यहाँ रखी जा सकती थीं। इस समझौते को दोनों पक्ष छः मास की अग्रिम सूचना देकर समाप्त कर सकते थे। 1818 ईसवी में अमेरिकी नागरिकों द्वारा न्यू-फाउण्डलैण्ड (New Foundland) और लेब्रेडोर के किनारों पर मछली पकड़ने के बारे में भी एक समझौता हो गया जिससे यह दीर्घ अवधि से चलता आया विवाद समाप्त हो गया। इसी वर्ष एक अन्य समझौते द्वारा 49° अक्षांश रेखा को कनाडा और संयुक्त राज्य अमेरिका के मध्य सीमा विभाजक रेखा मान लिया गया। किन्तु पश्चिम में पर्वतीय क्षेत्र की सीमा निर्धारण पर कोई सहमति नहीं हो सकी। इसी प्रकार युद्ध की अवधि में ग्रेट ब्रिटेन द्वारा पकड़े गये दासों को अमेरिका को लौटाने के विषय में भी दोनों पक्षों में बड़ा मतभेद था। परन्तु यह मामला रूस के जार को पंच निर्णय के लिए सौंप दिया गया और दोनों पक्ष जार के निर्णय का आदर करने पर सहमत हो गये। जार ने निर्णय दिया कि ग्रेट ब्रिटेन दासों को लौटा दे तथा अमेरिका इनके बदले में उचित मुआवजा दे। इस प्रकार यह विवाद भी सुलझ गया। ग्रेट ब्रिटेन ने दासों को लौटा दिया और अमेरिका ने दस लाख डालर मुआवजे के रूप में इंग्लैण्ड को अदा कर दिये। इस प्रकार घैन्ट की सन्धि के फलस्वरूप अमेरिका और ग्रेट ब्रिटेन के मध्य समझौते की भावना का विकास हुआ जिसके परिणामस्वरूप दोनों देशों में शान्ति और सहयोग के काल का सूत्रपात हुआ। इसलिए घैन्ट की सन्धि का अमेरिका के कूटनीतिक इतिहास में बड़ा महत्त्व समझा जाता है।

(6) युद्ध के परिणाम - गोर्डन एस. वुड के अनुसार यद्यपि इस युद्ध से किसी भी समस्या का समाधान होता दिखाई नहीं दिया किंतु इसने सभी समस्याओं का समाधान कर दिया। 1817 ईसवी में जॉन एडम्स ने जेफरसन को कहा कि सहस्त्र दोषों और भूलों के होते हुए भी मेडीसन के प्रशासन ने अपने तीन पूर्वजों-वाशिंगटन, एडम्स और जेफरसन-को मिला कर उनसे अधिक प्रसिद्धि प्राप्त की है तथा अधिक एकता स्थापित की है। आधी शताब्दी पूर्व आरम्भ हुई क्रांति समाप्त होती दिखाई देती है और सफल हुई है।

वास्तव में राष्ट्रीय दृष्टि से यह युद्ध लाभदायक रहा। देशवासियों को पहली बार राष्ट्रीय चेतना की अनुभूति हुई। राष्ट्रीय एकता और देशभक्ति की भावनाएँ सुदृढ़ हुई। अमेरिकी राजनीति में से फ्रांसीसी और अंग्रेजी गुटबंदियाँ निकल गयी। एल्बर्ट गेलेटिन के अनुसार जनता अब अधिक अमेरिकी है, अपने को एक राष्ट्र के नागरिक के रूप में अधिक मानने लगे हैं और राष्ट्रीय कार्यों में उनकी अधिक रुचि हो गई है।

यह युद्ध अमेरिका के लिए महंगा होते हुए भी उपयोगी और लाभदायक रहा। इसमें उसके दस करोड़ डालर खर्च हुए तथा तीस हजार सैनिकों ने जान गँवाई। देश की आर्थिक स्थिति पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। किंतु अमेरिका को लाभ यह रहा कि उसके निवासियों को व्यापारिक

स्वतंत्रता मिल गई। अभी तक यूरोप के निवासी अमेरिकी गणतंत्र के असफल होने की प्रतीक्षा कर रहे थे किंतु जब उसने विश्व की महान नौ-सैनिक शक्ति के विरुद्ध रक्षा की तो वे आश्चर्यचकित रह गये। अब संयुक्त राज्य अमेरिका को प्रथम स्तर की शक्ति माना जाने लगा।

दूसरी ओर 1812 ईसवी का युद्ध ग्रेट ब्रिटेन के लिए एक गंभीर और महंगा अभियान सिद्ध हुआ। उसे न एक फुट जमीन मिली, न कोई उसका मित्र बना और न कोई सिद्धान्त स्थापित हुआ। समुद्र पर से उसका एकाधिकार मिट गया। हजारों व्यक्तियों ने जान गँवाई। उसका इतना अधिक धन व्यय हुआ कि उसे नाविकों को वेतन देना कठिन हो गया।

1812 ईसवी के युद्ध को द्वितिय स्वतन्त्रता-संग्राम बताया किंतु वास्तविकता से कहीं दूर है। इतिहासकार हिक्स और मौवरी के अनुसार, ''राजनीतिकदृष्टि से 1812 ईसवी के युद्ध को द्वितिय स्वतन्त्रता-संग्राम कहना बेकापन है क्योंकि राजनीतिक स्वतन्त्रता तो अमेरिकी क्रान्ति से प्राप्त हो चुकी थी, हाँ, आर्थिक दृष्टि से इस युद्ध ने अमेरिका को इंग्लैण्ड के प्रभाव से अवश्य मुक्ति प्रदान की। इस युद्ध ने अमेरिका को नये आर्थिक अवसर प्रदान किये तथा सारे देश को एक नई राष्ट्रीय चेतना में सूत्रबद्ध करने में महत्त्वपूर्ण योगदान किया। ''

(III) युद्ध के बाद पुनर्निर्माण के कार्यक्रम :

(1) द्वितीय अमेरिकी राष्ट्रीय बैंक की स्थापना - 1812 ईसवी के युद्ध के फलस्वरूप देश की वित्तीय स्थिति दयनीय हो गई थी। सरकार की आर्थिक स्थिति भी डांवाडोल हो गई थी, अत: उसको सुधारना आवश्यक था। इसके लिए एक अमेरिकी राष्ट्रीय बैंक को बीस वर्षीय अधिकार पत्र दिया गया। इसकी कुल पूँजी 3 करोड़ 50 लाख डालर थी। सरकार ने सत्तर लाख डालर दिये तथा शेष राशि निगमों व व्यक्तियों से प्राप्त की गई। बैंक ने शीघ्र ही विश्वास प्राप्त कर लिया, थोड़े ही समय में राष्ट्रीय ऋण घटने लगा तथा जनता की सम्पन्नता बढ़ने लगी।

(2) उद्योगों का विकास - युद्ध से पूर्व दैनिक उपयोग की जो वस्तुएँ इंग्लैण्ड से मंगाई जाती थीं अब वे देश में ही बनने लगी। कृषि एवं व्यापार के अतिरिक्त निर्माता उद्योग का भी विकास हुआ।

(3) 1816 का प्रशुल्क अधिनियम - युद्ध के बारे में अमेरिका में ब्रिटिश माल की बाढ़ आ गई थी। इस नवस्थापित उद्योगों को खतरा पैदा हो गया। अत: 1816 ईसवी में प्रशुल्क कर में औसतन बीस प्रतिशत की वृद्धि कर स्थानीय उद्योगों को संरक्षण प्रदान किया गया।

(IV) संघवादी दल का पतन एवं 1816 ई. का राष्ट्राध्यक्ष का चुनाव :

1812 ईसवी के युद्ध के फलस्वरूप संघवादी दल का पतन हो गया। जिस समय यूरोप में घैन्ट की सन्धि वर्ताएँ हो रही थीं और अमेरिका में युद्ध चल रहा था उसी समय 14 दिसम्बर, 1814 ईसवी को कनेक्टिकट राज्य के हार्टफोर्ड (Hart Ford) में न्यू इंग्लैण्ड राज्यों के प्रतिनिधियों का सम्मेलन प्रारम्भ हुआ। इस सम्मेलन का उद्देश्य इन राज्यों को संयुक्त राज्य अमेरिका से पृथक् करने की सम्भावनाओं पर विचार करना था। इन राज्यों के लोग इस युद्ध के पक्ष में नहीं थे, क्योंकि इससे उनके आर्थिक हितों को हानि पहुँच रही थी। उनकी धारणा थी कि युद्ध दक्षिण और

पश्चिमी कृषि प्रधान राज्यों के हितों के लिए लड़ा जा रहा था। इसी कारण इन राज्यों में संघवादी दल का प्रभाव बहुत अधिक था जो इस युद्ध का विरोधी था। युद्ध की अवधि में इन राज्यों ने केन्द्र को लेशमात्र भी सहयोग नहीं दिया। इन राज्यों ने अपनी मिलिशिया सेना को केन्द्र के अधिकार में देना अस्वीकार कर दिया। इन राज्यों में पृथकतावादी सरगर्मियाँ बढ़ रही थीं। जिस समय हार्टफोर्ड सम्मेलन प्रारम्भ हुआ तब तक युद्ध लगभग समाप्त हो चुका था और सम्मेलन में उग्र विचार के लोगों का प्रभाव कम हो गया था। अतएव इस सम्मलन में राज्यों के पृथक् होने का प्रस्ताव पारित नहीं हो सका। इस सम्मेलन ने केन्द्रीय प्रशासन के कुछ कार्यों की निन्दा की गई तथा संविधान में अनेक संशोधन करने के प्रस्ताव रखे गये। किन्तु जब सम्मेलन की रिपोर्ट केन्द्रीय सरकार के पास पहुँची उस समय तक न्यू ओर्लिन्स के युद्ध की विजय और घैन्ट की सन्धि के समाचार बिजली की भाँति चारों ओर फैल गये थे जिससे मेडीसन के प्रशासन को शक्ति तथा प्रतिष्ठा मिली और हार्टफोर्ड सम्मेलन के प्रस्तावों की उपेक्षा कर दी गयी। किन्तु राजनीतिक दृष्टि से इनका महत्त्व ज्यों का त्यों बना रहा और अन्त में अपनी पृथकतावादी नीति के परिणामस्वरूप संघवादी दल का प्रभाव अमेरिका में समाप्त हो गया।

युद्धोत्तर काल में जो राष्ट्रीय चेतना की लहर अमेरिका में आई थी उसी ने संघवादी दल को समाप्त कर दिया। परिणाम यह निकला कि 1816 ईसवी में राष्ट्राध्यक्ष पद के लिए जो चुनाव हुआ उसमें रिपब्लिकन दल के उम्मीदवार जेम्स मुनरो (James Munroe) की भारी बहुमत से विजय हुई तथा संघवादी उम्मीदवार रुफस किंग को केवल तीन राज्यों का समर्थन ही मिला। मुनरो अब अमेरिका के राष्ट्रपति हुए। मुनरो शरीर से लम्बे, दुबले तथा बैडोल और व्यवहार में विनम्र तथा शिष्ट थे। वाशिंगटन, जेफरसन तथा मेडीसन की भाँति वे भी वर्जीनिया राज्य के निवासी थे। उनमें साधारण व्यक्तित्व और सार्वजनिक पदों की योग्यता का निराला संयोग था। विचार और प्रभावशाली व्यक्तित्व की दृष्टि से वे अमेरिका के पूर्ववर्ती आठों राष्ट्राध्यक्षों में सबसे कमजोर थे। किन्तु तत्कालीन युग की माँग ओजस्वी व्यक्तित्व के बदले एक सौम्य प्रशासक की थी और मुनरो में इसके लिए पर्याप्त योग्यता विद्यमान थी। राष्ट्राध्यक्ष के पद को सम्भालने से पहले वे वर्जीनिया की एसेम्बली, कन्फेडेरेशन कांग्रेस (राज्य-मण्डल कांग्रेस) तथा सीनेट के सदस्य रह चुके थे। उन्होंने अपने देश का प्रतिनिधित्व अनेक महत्त्वपूर्ण कूटनीतिक सम्मेलनों में किया था तथा वे फ्रांस और इंगलैण्ड में अमेरिका के राजदूत भी रह चुके थे। वर्जीनिया के गवर्नर पद के अतिरिक्त वे अमेरिका के विदेश मन्त्री पद पर भी काम कर चुके थे, अतः उन्हें पर्याप्त राजनीतिक एवं प्रशासनिक अनुभव प्राप्त था।

□□□

अध्याय - 8

थामस मुनरो व जान क्विंसी एडम्स का प्रशासन (1817-1829 ईसवी)

☐ पुखराज आर्य

1812 ईसवी के युद्ध का सबसे प्रभावशाली परिणाम अमेरिका में एक नई राष्ट्रीय चेतना की लहर का आगमन था। यद्यपि युद्ध काल में देश में एकता की कमी रही थी परन्तु युद्ध समाप्ति के पश्चात् एक अमेरिकी राष्ट्र का आविर्भाव हुआ। राष्ट्रवाद की इस लहर को और शक्ति प्रदान करने की दृष्टि से मुनरो ने सम्पूर्ण राष्ट्र का दौरा किया तथा सुरक्षा संस्थानों का निरीक्षण किया। सभी स्थानों पर, यहाँ तक कि फेडरेलिस्ट दल के गढ़ न्यू इंग्लैण्ड में भी उसका बड़े उत्साह से हार्दिक स्वागत किया गया। इसी से प्रभावित होकर बोस्टन के एक समाचार पत्र ने घोषणा की कि देश में एक 'सद्भावना का काल' प्रारम्भ हो रहा है। कालान्तर में मुनरो के प्रशासन काल को 'सद्भावना का काल' पुकारा जाने लगा, किन्तु वास्तव में देख जाये तो यह इस काल के लिए उपयुक्त नाम नहीं ठहरता है। यद्यपि मुनरो प्रशासन के प्रारम्भिक काल में शान्ति, समृद्धि और सद्भावना रही परन्तु बाद में देश में प्रान्तीयता और वर्गभेद की भावना को लेकर अनेक विवाद उत्पन्न हो गये। दास प्रथा की समस्या गम्भीर होने लगी। अत: मुनरो प्रशासन सही रूप में एक 'सद्भावना का काल' नहीं था। इसके अतिरिक्त रिपब्लिकन दल में आपसी गुटबन्दियाँ प्रारम्भ हो गईं तथा दल के प्रमुख नेता अपनी-अपनी शक्ति बढ़ाने के प्रयत्न करने लगे। यह स्थिति अमेरिका के लिए दुर्भाग्यपूर्ण ही थी।

I. मुनरो का प्रशासन :

(1) आर्थिक समस्याएँ - 1819 ईसवी में भारी मन्दी के परिणामस्वरूप देश में गम्भीर आर्थिक संकट की स्थिति उत्पन्न हो गई। देश में यह अपने प्रकार का पहला आर्थिक संकट था। मुद्रा संकट उत्पन्न हो गया तथा वस्तुओं और ऋणाधारों (सिक्योरिटीयों) के दाम गिरने लगे। व्यासायिक प्रतिष्ठान और कारखाने बन्द होने लगे। लाखों लोग बेरोजगार हो गये। अनेक बैंकों का दिवाला निकल गया। भारी संख्या में लोगों को कर्ज का भुगतान न करने के कारण जेल जाना पड़ा।

इस आर्थिक संकट से राष्ट्रवाद की भावना को गहरा धक्का लगा और प्रान्तीयता की भावना को प्रश्रय मिला। आर्थिक मन्दी का विशेष प्रभाव पश्चिम के राज्यों पर पड़ा। यहाँ के लोगों को संयुक्त राज्य बैंक की कार्य प्रणाली से भी गहरा असन्तोष था, क्योंकि इस बैंक ने वहाँ के सट्टे करन वाले बैंकों पर कठोर अंकुश लगा दिया था। तथापि इस आर्थिक संकट का एक लाभ तो यह हुआ कि 1820 ईसवी में एक नया भूमि कानून बनाया गया जिसके अनुसार कोई भी व्यक्ति अस्सी एकड़ कभी न जोती गई भूमि (कुमारी धरती) खरीद सकता था जिसकी कुल कीमत एक सौ डालर तक थी और इस राशि का आर्थिक भुगतान नकद में करना अनिवार्य था। इस कानून द्वारा अब तक प्रचलित कानूनों की त्रुटियों को दूर किया गया था तथा भूमि की सट्टाखोरी को भी रोकने का प्रयत्न किया गया जिससे पश्चिम के लोगों को पर्याप्त राहत मिली।

(2) राष्ट्रवाद और प्रान्तीयता - युद्धोत्तर काल में फेडरेलिस्ट दल तो प्रभावहीन हो गया परन्तु रिपब्लिकन दल ने अब फेडरेलिस्ट दल के कार्यक्रम और सिद्धान्तों को अपना लिया। अब वे संघीय सरकार के लिए अधिक अधिकारों की माँग करने लगे और चाहने लगे कि केन्द्रीय सरकार के क्रियाकलापों में वृद्धि हो। यद्यपि इस दल ने राष्ट्रीय बैंक का सदैव विरोध किया था और इसके आज्ञा-पत्र को 1811 ईसवी में समाप्त करवा दिया था फिर भी अब बदली हुई परिस्थितियों में इसी दल के लोगों ने 1816 ईसवी में राष्ट्रीय बैंक को पुनर्स्थापित करवाया। राष्ट्रीय चेतना के इस काल में रिपब्लिकन दल के युवा वर्ग ने विशेष उत्साह दिखाया जिसमें उन्हें भूतपूर्व फेडरेलिस्ट लोगों का भी सहयोग और समर्थन प्राप्त हुआ। ये लोग एक ऐसा राष्ट्रीय कार्यक्रम चाहते थे जिसमें राष्ट्र को शक्तिशाली बनाने तथा विभिन्न भागों को एक दूसरे के निकट लाकर देश में एकता स्थापित करने की व्यवस्था हो। उनके विचार में उद्योग और कृषि के हितों मे कोई संघर्ष नहीं है बल्कि दोनों हितों में गहरा सम्बन्ध है, ये लोग एक राष्ट्रीय बैंक की स्थापना, राष्ट्रीय उद्योगों को संरक्षण देने के लिए ऊँचे तट कर की व्यवस्था तथा केन्द्रीय सरकार द्वारा भवन, नहरें और सड़कें बनाने के एक राष्ट्रीय कार्यक्रम के पक्ष में थे। इस राष्ट्रीय कार्यक्रम को 'अमेरिकी व्यवस्था' का नाम दिया गया। इस व्यवस्था के प्रमुख प्रवक्ता और नेता थे हेनरी क्ले और जॉन कैलहुन (John Calhoun)। इन राष्ट्रीय कार्यक्रमों का विरोध न्यू इंग्लैण्ड का धनिक व्यापारिक वर्ग कर रहा था, जिनका नेता डेनियल वेब्स्टर (Daniel Webster) था। इस विरोध के बावजूद भी देश को सुदृढ़ और विश्वसनीय मुद्रा प्रदान करने के लिए कांग्रेस ने 1816 ईसवी में संयुक्त राज्य बैंक की स्थापना के लिए आज्ञा-पत्र जारी किया। इसके अनुसार इस बैंक को बीस वर्ष तक कार्य करने की आज्ञा मिल गई। यह बैंक हैमिल्टन द्वारा स्थापित किये गये बैंक से अधिक बड़ा तथा अधिक व्यवस्थित था तथा इसमें तीन करोड़ पचास लाख डालर की पूँजी लगाई गई थी। इसी वर्ष राष्ट्रीय कार्यक्रम के अन्तर्गत कांग्रेस ने एक तट कर कानून भी बनाया, जिसके द्वारा अमेरिका के उद्योगों को संरक्षण देने की व्यवस्था की गई। केन्द्रीय सरकार के विशाल पैमाने पर सड़कें और नहरें बनवाने के कार्यक्रम में पश्चिम के राज्यों की विशेष रुचि थी; क्योंकि इससे उनका सम्पर्क देश के अन्य भागों से तथा समुद्र तट से स्थापित होता था जिससे कि उनकी यातायात सम्बन्धी समस्याओं का समाधान हो सकता था। राष्ट्रवादियों ने और विशेष करके पश्चिम के नेताओं ने इस कार्यक्रम पर

विशेष बल दिया, जिसके परिणामस्वरूप पहले से बनी हुई सड़कों को ओहियों (Ohio), इण्डियाना (Indiana), इलिनोय (Illinois) राज्यों से जोड़ दिया गया। यह कार्य केन्द्रीय सरकार द्वारा किया गया था, परन्तु मुनरो इस दिशा में केन्द्रीय सरकार द्वारा विशेष रुचि लेने और कार्य करने के पक्ष में था। उसने विशाल पैमाने पर केन्द्रीय सरकार द्वारा खर्च करने के प्रस्तावों पर अपने विशेषाधिकारों का प्रयोग किया। मुनरो के अनुसार यह प्रस्ताव असंवैधानिक थे, अत: भवन, सड़कों और नहरों का निर्माण-कार्य मुख्यत: राज्य सरकारों पर ही छोड़ दिया गया।

(3) दास प्रथा पर विवाद तथा मिसूरी समझौता - दास प्रथा की ओर अब तक अमेरिकी लोगों का ध्यान बहुत कम आकर्षित हुआ था, किन्तु 1819 ईसवी में इस समस्या का गम्भीर स्वरूप राष्ट्र के सामने स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होने लगा। 1807 ईसवी में जब दास व्यापार पर रोक लगाई थी, तब असंख्य दक्षिणी लोगों की यह धारणा थी कि यह प्रथा केवल एक अस्थायी बुराई ही प्रमाणित होगी, किन्तु आगामी पीढ़ी में दक्षिण के विचारों में परिवर्तन हो गया। अब दक्षिणवासी दास प्रथा को इतना हितकर समझने लगे कि वे इसकी रक्षा के लिए एक दृढ़ समुदाय के रूप में संगठित हो गये। इस परिवर्तन के अनेक कारण थे, किन्तु नेविन्स और कौमेजर के अनुसार "सबसे बड़ी बात यह थी कि कुछ नये आर्थिक पहलुओं ने दास प्रथा को 1790 ईसवी के पहले की अपेक्षा आर्थिक दृष्टि से अधिक लाभकर बना दिया था। जिसे आवश्यक बुराई समझा जाता था उसे अब इतना आवश्यक समझा जाने लगा कि वह बुराई ही नहीं रही।" इस आर्थिक परिवर्तन का प्रमुख कारण रुई, गन्ना और तम्बाकू सम्बन्धी विशाल उद्योगों का तेजी से विकसित होना था। इस प्रकार संयुक्त राज्य अमेरिका में दास प्रथा को लेकर उत्तर और दक्षिण के राज्यों में एक गहरा मतभेद उत्पन्न हो गया। उत्तर राज्यों के लोग स्वतंत्र समाज के पक्ष में तथा दास प्रथा के कट्टर विरोधी हो गये, जबकि दक्षिणी राज्यों के लोग दास प्रथा समर्थक समाज के पक्ष में थे और दास प्रथा की रक्षा करने के लिए कटिबद्ध थे।

प्रान्तीय तनाव की स्थिति का गम्भीर स्वरूप राष्ट्र के सामने उस समय प्रस्तुत हुआ जब मिसूरी (Missouri) ने 1819 ईसवी में संयुक्त राज्य की सदस्यता के लिए आवेदन पत्र दिया। मिसूरी एक दास प्रथा समर्थक राज्य के रूप में प्रवेश चाहता था, किन्तु "ज्यों-ज्यों उत्तर का स्वतंत्र समाज और दास-समर्थक समाज पश्चिम की ओर बढ़ता गया, यह वांछनीय लगा कि दोनों के मध्य बराबरी-सी रखी जाये।" 1818 ईसवी में दस दास प्रथा वाले और ग्यारह मुक्त राज्य थे। अलाबामा (Alabama) राज्य को दास प्रथा वाले राज्य के रूप में प्रवेश देने पर पहले ही सहमति हो चुकी थी। इस प्रकार दास प्रथा वाले राज्यों और मुक्त राज्यों की संख्या ग्यारह-ग्यारह थी, जिससे दोनों पक्षों में सन्तुलन बना हुआ था। इस स्थिति में मिसूरी के प्रवेश का प्रश्न अत्यन्त महत्त्वपूर्ण बन गया। क्योंकि इसका प्रवेश होने पर प्रान्तीय सन्तुलन समाप्त हो जाता और विशेषकर सीनेट में एक पक्ष अधिक शक्तिशाली बन जाता। दक्षिण के लिए इस सन्तुलन को बनाये रखना अत्यन्त महत्त्वपूर्ण बन गया, क्योंकि प्रतिनिधि सभा में उत्तर का बहुमत पहले से ही बना हुआ था। इसका प्रमुख कारण यह था कि उत्तर में जनसंख्या वृद्धि दक्षिण की अपेक्षा अधिक तीव्र गति से हुई थी। भारी संख्या में दक्षिण के लोग उत्तर में जाकर बसते रहे थे। इस

प्रकार 1820 ईसवी में प्रतिनिधि सभा में मुक्त राज्यों के एक सौ तेईस और दास प्रथा वाले राज्यों के निवासी प्रतिनिधि थे। ऐसी स्थिति में दास प्रथा वाले दक्षिणी राज्यों को भय था कि यदि प्रान्तीय सन्तुलन बिगड़ गया और मुक्त राज्यों की संख्या बढ़ गई तो सीनेट में भी उनका बहुमत हो जायेगा, क्योंकि इस सदन में प्रत्येक राज्य के प्रतिनिधि समान संख्या में लिये जाते थे। इस प्रकार उत्तर के मुक्त राज्यों का प्रभाव केन्द्रीय सरकार पर पूर्ण रूप से स्थापित हो जायेगा और वे कांग्रेस से अपनी इचछानुसार कानून बनवा सकेंगे। उनको यह भय था कि दास प्रथा को समाप्त कराने के लिए भी कानून बनाये जायेंगे। अत: वे ऐसी स्थिति को रोकने के लिए कटिबद्ध थे।

देश में जब ऐसी प्रान्तीय तनाव की स्थिति बनी हुई थी, उसी समय मिसूरी को संघ में सम्मिलित करने का प्रश्न उत्पन्न हुआ। इसी समय प्रतिनिधि सभा में न्यू यार्क के प्रतिनिधि जेम्स टालमेज (James Talmadge) ने संशोधन प्रस्तुत किया जिसके अनुसार मिसूरी को संघ राज्य में प्रवेश इस शर्त पर दिया जा सकता था कि वहाँ क्रमिक रूप से दास प्रथा को समाप्त किया जाये। इस संशोधन की दक्षिण के राज्यों में तीव्र प्रतिक्रिया हुई और शीघ्र ही देश में एक प्रबल तूफान खड़ा हो गया। कांग्रेस में बड़ी गर्मागर्म बहस हुई तथा अन्त में प्रतिनिधि सभा में अल्प बहुमत से यह संशोधन स्वीकृत हो गया परन्तु सीनेट ने उसे अस्वीकृत कर दिया। मिसूरी के प्रवेश के प्रश्न पर गतिरोध बना रहा और देश में प्रान्तीय तनाव की स्थिति दिन-पर-दिन इतनी गम्भीर होती गई कि रक्तपात और संघर्ष का भय उत्पन्न हो गया।

अन्तत: 1820 ईसवी में इस गतिरोध को एक समझौते द्वारा समाप्त किया गया। इसमें हेनरी क्ले ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। वास्तव में क्ले एक निपुण समाधान-कर्ता था। 1820 ईसवी का यह मिसूरी समझौता अमेरिका के इतिहास की महत्त्वपूर्ण घटना मानी जाती है। इसके अनुसार मिसूरी को दास-प्रथा समर्थक राज्य के रूप में प्रवेश दिया गया, किन्तु उसी समय मैन को भी एक स्वतंत्र राज्य के रूप में प्रवेश दिया गया। इस समय तक मैन मैसाचुसेट्स राज्य का हीं अंग था। इस प्रकार दास प्रथा समर्थक राज्यों और मुक्त राज्यों की संख्या समान रूपेण बारह-बारह हो गई और प्रान्तीय सन्तुलन स्थापित हो गया जो कि लगभग अगले पन्द्रह वर्षों तक बना रहा। यद्यपि मिसूरी को दास प्रथा बनाये रखने की अनुमति दे दी गई थी, फिर भी यह निश्चय किया गया कि लुसियाना खरीद द्वारा प्राप्त बाकी प्रदेश में 36°30' समानान्तर रेखा के उत्तर क्षेत्र को भविष्य में दास प्रथा से मुक्त रखने की व्यवस्था का पालन किया जायेगा। वास्तव में यह समान्तर रेखा मिसूरी की दक्षिणी सीमा थी।

तत्कालीन परिस्थितियों के सन्दर्भ में यह समझौता सभी पक्षों के लिए समान ढंग से न्यायपूर्ण था, किन्तु दोनों पक्षों के उग्रवादियों ने इसे एक गन्दा सौदा (Dirty Bargain) बताया तथा इसकी तीव्र आलोचना की। यद्यपि दोनों पक्ष पूर्णतया सन्तुष्ट नहीं थे फिर भी कोई विशेष असन्तोष भी नहीं था। दक्षिण इस बात से प्रसन्न था कि मिसूरी को दास-प्रथा समर्थक राज्य के रूप में प्रवेश मिल गया था। उत्तर की प्रसन्नता का कारण यह था कि 36°30' समानान्तर रेखा के उत्तर के विशाल क्षेत्र में सदा के लिए रोक लगा दी गई थी। यही कारण था कि मिसूरी समझौते

की व्यवस्था चौंतीस वर्ष तक बनी रही, किन्तु थॉमस ए. बैले के अनुसार, ''दास प्रथा समबन्धी यह कटु विवाद संघ के विभाजन का अग्रदूत था''। इसी प्रकर जे.क्यू.एडम्स (J.Q. Adams) ने लिखा है कि, ''यह विवाद एक महान् दु:खान्त की प्रस्तावना मात्र है।'' वयोवृद्ध नेता जेफरसन अत्यन्त चिंतित हो गया और उसने लिखा कि, ''इस महत्त्वपूर्ण प्रश्न ने जैसे आधी रात में आग लगने की सूचना देने वाली खतरे की घण्टी के सदृश मुझे जगा दिया और भयाक्रान्त कर दिया। अल्पकालीन शान्ति स्थाति हो गई है, किन्तु यह अन्तिम निर्णय नहीं है।''

मिसूरी विवाद से राष्ट्रवाद को गहरा धक्का लगा तथा उत्तर, पश्चिम और दक्षिण में प्रान्तीयता की भावनाओं को प्रोत्साहन मिला जिसके परिणामस्वरूप दक्षिण में एक प्रकार के प्रान्तीय-राष्ट्रवाद का विकास हुआ।

मिसूरी समझौते और 1819 ईसवी की मन्दी का राष्ट्राध्यक्ष मुनरो के राजनीतिक भविष्य पर कोई विशेष अनिष्टकारी प्रभाव नहीं पड़ा। इसका कारण मधुरभापी मुनरो की अत्यन्त लोकप्रियता तथा विरोधी दल की शक्तिहीनता थी। संघवादी दल इतना शक्तिहीन हो गया था कि 1820 ईसवी में राष्ट्राध्यक्ष के चुनाव में मुनरो को केवल एक के अतिरिक्त सभी इलेक्टोरल वोट प्राप्त हुए। एक व्यक्ति ने भी केवल इसलिए मुनरो को वोट नहीं दिया, क्योंकि वह उसे सर्व सम्मति से निर्वाचित होने का विशेष सम्मान देने के पक्ष में नहीं था। उसके अनुसार यह विशेष सम्मान केवल वाशिंगटन के लिए ही सुरक्षित था।

II. मुनरो की विदेश नीति :

राष्ट्राध्यक्ष मुनरो के प्रशासन काल में उसकी विदेश नीति का विशेष महत्त्व है। इस काल में विदेश नीति सम्बन्धी अनेक निर्णय लिये गये जिनका अमेरिका के इतिहास पर दूरगामी प्रभाव पड़ा। इसका प्रमुख श्रेय मुनरो के विदेश मन्त्री जॉन क्विन्सी एडम्स को है जिसकी गणना अमेरिका के सर्वश्रेष्ठ विदेश मन्त्रियों में की जाती है। अपनी उच्च शिक्षा और दीर्घकालीन कूटनीतिक अनुभव के कारण एडम्स में इस महत्त्वपूर्ण पद के अनुरूप पर्याप्त योग्यता विद्यमान थी।

(1) ग्रेट ब्रिटेन के साथ सम्बन्ध - घैन्ट की सन्धि में ग्रेट ब्रिटेन और अमेरिका के आपसी विवादों को परस्पर वार्ताओं द्वारा सुलझाने की जो व्यवस्था की गई थी उसके अनुसार मुनरो प्रशासन ने तत्परता से कार्य किया। इसके परिणामस्वरूप ग्रेट ब्रिटेन के साथ अनेक समझौतों पर सहमति हो गई। इन समझौतों का वर्णन पूर्व पृष्ठों में किया जा चुका है।

(2) फ्लोरिडा के सम्बन्ध में स्पेन से विवाद - मुनरो प्रशासन को फ्लोरिडा सम्बन्धी कूटनीतिक समस्या का सामना करना पड़ा। दक्षिण में फ्लोरिडा पर स्पेन का अधिकार था, परन्तु अमेरिका इस स्थिति से असन्तुष्ट था और उसे अपने अधिकृत क्षेत्र के अन्तर्गत सम्मिलित करने का इच्छुक था। 1817 ईसवी में स्पेन ने दक्षिणी अमेरिकी उपनिवेशों में जब क्रान्तियों का एक

दौर सा प्रारम्भ हो गया तो स्पेन को बाध्य होकर फ्लोरिडा से भारी संख्या में सैनिकों को वहाँ भेजना पड़ा। परिणामत: फ्लोरिडा में स्पेन की स्थिति अधिक कमजोर हो गई तथा वहाँ पर अव्यवस्था की स्थिति बनने लगी। फ्लोरिडा अमेरिका के भगोड़े नीग्रो दासों के लिए एक शरण-स्थल बन गया था। इसके अतिरिक्त फ्लोरिडा के क्रीक्स जाति के सेमीनॉल आदिवासियों ने सीमा पार करके अमेरिकी बस्तियों पर आक्रमण करना प्रारम्भ कर दिया था। ये लोग इन बस्तियों में लूट-पाट, तोड़-फोड़ और आगजनी करके वापस फ्लोरिडा की सीमा के अन्दर लौट जाते थे, जहाँ वे पूर्ण रूप से सुरक्षित थे।

इस परिस्थिति से निपटने का कार्य मुनरो ने जनरल एन्ड्रयू जैक्सन (Andrew Jackson) को सौंप दिया तथा सेमीनोली को दण्ड देने का आदेश दिया। जैक्सन को यह गुप्त निर्देश भी था कि आवश्यकता पड़ने पर वह आक्रमणकारियों का पीछा स्पेन अधिकृत प्रदेश में भी कर सकता था।

1818 ईसवी के प्रारम्भ में जैक्सन ने अपना अभियान आरम्भ किया। वह तीव्र गति से बढ़ता हुआ फ्लोरिडा की सीमा के भीतर तक प्रवेश कर गया था तथा इण्डियन लोगों को दण्डित करने में उसने कोई कसर नहीं उठा रखी थी। उसने दो इण्डियन नेताओं को फाँसी पर चढ़ा दिया तथा उनके दो अंग्रेज सहायकों को भी मरवा दिया। उसने स्पेन की दो महत्त्वूर्ण सैनिक चौकियों सेण्ट मार्क्स (Saint Marks) तथा पैन्साकोला (Pensacola) पर अधिकार कर लिया और एक स्पेनी गवर्नर को अपदस्थ कर दिया।

जैक्सन के अभियान के परिणामस्वरूप एक विकट स्थिति उत्पन्न हो गई तथा ग्रेट ब्रिटेन और स्पेन से युद्ध होने का खतरा उत्पन्न हो गया। यह बात तो स्पष्ट थी कि जैक्सन ने अपने उत्साह में सरकारी निर्देश की सीमा को पार करके कार्यवाही की थी। मुनरो इस स्थिति में अत्यन्त चिन्तित हो उठा और उसने अपने मन्त्रिमण्डलीय सहयोगियों से गम्भीर विचार-विमर्श किया। एडम्स को छोड़ कर सभी जैक्सन को अनुशासित करने के लिए उसके विरुद्ध सख्त कार्यवाही करने तथा स्पेन से क्षमा माँगने के पक्ष में थे, किन्तु एडम्स ने असीम दृढ़ता का परिचय दिया और अपने सहयोगियों का कड़ा विरोध किया। एडम्स के प्रभावपूर्ण व्यक्तित्व के कारण मुनरो उससे सहमत हो गया। अत: एडम्स ने स्पेन को स्पष्ट और कड़ा विरोध पत्र भेजा जिसमें उसे 1795 ईसवी की सन्धि के उल्लंघन का दोषी ठहराया गया, क्योंकि वह फ्लोरिडाके नागरिकों की गैर कानूनी हरकतों को रोकने में असमर्थ रहा था। इस बात पर भी बल दिया कि या तो स्पेन अपने अधिकृत क्षेत्र पर ठीक से नियन्त्रण रखे अन्यथा इसे अमेरिका को हस्तान्तरित कर दे।

स्पेन इस समय अपने आन्तरिक और औपनिवेशिक संकट में फंसा हुआ था और अमेरिका का विरोध करने की स्थिति में नहीं था। अत: उसने यथार्थवादी दृष्टिकोण अपनाया और फ्लोरिडा का सौदा करने के लिए सहमत हो गया। 1819 ईसवी में फ्लोरिडा खरीद सन्धि (Florida Purchase Treaty) हुई। इस सन्धि के अनुसार स्पेन ने फ्लोरिडा अमेरिका को बेच दिया। अमेरिका इसके लिए पचास लाख डालर देने को सहमत हो गया, परन्तु इस शर्त पर कि इस राशि

का भुगतान स्पेन सरकार अमेरिकावासियों की अभियाचनाओं का भुगतान करने में उपयोग करेगी। अमेरिका ने टेक्सास के अपने दावे को वापस ले लिया। सन्धि के अनुसार अमेरिका और स्पेन के अधिकृत क्षेत्र के मध्य सीमा भी निर्धारित कर दी गई। अत: इस सन्धि के परिणामस्वरूप अमेरिका और स्पेन के सम्बन्धों में सुधार हुआ, अमेरिका के क्षेत्र का विस्तार हुआ तथा उसकी राष्ट्रीय प्रतिभा में वृद्धि हुई।

(3) मुनरो सिद्धान्त - मुनरो प्रशासन काल में विदेश नीति सम्बन्धी एक महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त प्रतिपादित किया गया जो कि मुनरो सिद्धान्त के नाम से विख्यात है। यह सिद्धान्त एक दीर्घ काल तक अमेरिका की विदेश नीति का आधार बना रहा।

मुनरो सिद्धान्त की कूटनीतिक पृष्ठभूमि में तत्कालीन यूरोप और अमेरिका में होने वाली गतिविधियाँ थीं। यूरोप में जब नेपोलियन ने स्पेन और पुर्तगाल को परास्त करके अपने अधिकार में ले लिया तो इन राज्यों के अमेरिकी उपनिवेशों में विद्रोह भड़क उठे। प्रारम्भ में विद्रोहियों ने स्पेन के शासक फर्डीनेण्ड द्वितीय (Ferdinand II)के प्रति निष्ठा का दावा किया। किन्तु नेपोलियन के परास्त हो जाने के बाद जब फर्डीनेण्ड द्वितीय स्पेन की गद्दी पर पुन: स्थापित कर दिया गया तब दक्षिण अमेरिकी उपनिवेशों के लोगों ने अपनी स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष प्रारम्भ कर दिया। उनके इस प्रयत्न में ग्रेट ब्रिटेन ने पूरा सहयोग और समर्थन प्रदान किया। संयुक्त राज्य अमेरिका की सहानुभूति भी उनके साथ थी। इस स्वतंत्रता संग्राम में उपनिवेशवासियों को भारी सफलता मिली और एक के बाद एक उपनिवेश स्वतन्त्र हो गये और वहाँ गणराज्य स्थापित कर दिये गये। इस प्रकार 1822 ईसवी तक ला प्लाटा (La Plata), चिली, पेरू, कोलम्बिया तथा मैक्सिको के स्वतन्त्र गणराज्यों की स्थापना हो गई और इन उपनिवशों में स्पेन का प्रभुत्व समाप्त हो गया। इसी वर्ष ब्राजील (Brazil) भी पुर्तगाली उपनिवेशवाद से मुक्त हो गया। नई दुनिया में अब स्पेन का प्रभुत्व केवल क्यूबा (Cuba) और प्यूरेटा रिको (Pureto Rico) तक ही सीमित रह गया।

संयुक्त राज्य अमेरिका का राष्ट्रीय हित इन राज्यों की स्वतन्त्रता में ही था, किन्तु कई कारणों से वह कोई सक्रिय कदम उठाने की स्थिति में नहीं था। 1812 ईसवी से 1816 ईसवी तक तो वह स्वयं ग्रेट ब्रिटेन के साथ युद्ध में उलझा हुआ था। तत्पश्चात् वह फ्लोरिडा खरीद के समझौते का निश्चित रूप से पुष्टिकरण होने तक स्पेन से अपने सम्बन्ध नहीं बिगाड़ना चाहता था। किन्तु अमेरिका का जनमत पूर्ण रूप से नये गणतन्त्रों की स्थापना का उत्साह से समर्थन कर रहा था और मुनरो प्रशासन पर दबाब डाल रहा था कि इन नये गणतन्त्रों को मान्यता प्रदान की जाये। अन्तत: 1822 ईसवी में संयुक्त राष्ट्र अमेरिका ने दक्षिण अमेरिका के इन पाँचों गणराज्यों को मान्यता प्रदान कर दी।

नेपोलियन की पराजय के पश्चात् यूरोप में आस्ट्रिया, प्रशा, फ्रांस और रूस के शासकों का एक प्रबल गठबन्धन बना जिसे पवित्र सन्धि (Holy Alliance) का नाम दिया गया। इसका प्रमुख उद्देश्य यूरोप में प्रगतिवादी और क्रान्तिकारी आन्दोलनों को कुचल कर राजतन्त्रीय व्यवस्था को सुरक्षित रखना था। यह प्रतिक्रियावादी शासकों का संघ था। इसका प्रमुख उद्देश्य विश्व को

राजतन्त्रीय शासकों के लिए सुरक्षित बनाना था। इसी नीति के अन्तर्गत 1821 ईसवी में आस्ट्रिया द्वारा इटली तथा वेरोना में क्रान्तियों को कुचल दिया गया। इसी प्रकार स्पेन में क्रान्तिकारी संघर्ष को कुचलने का कार्य फ्रांस को सौंपा गया तथा वहाँ पर पुनानी राजतन्त्रीय व्यवस्था शक्ति के बल पर पुनर्स्थापित की गई। यद्यपि यह हस्तक्षेप की नीति केवल यूरोपीय देशों तक ही सीमित थी, फिर भी इससे यह आशंका होने लगी कि स्पेन के भूतपूर्व अमेरिकी उपनिवेशों में स्थापित नये गणराज्यों के विरुद्ध भी फ्रांस हस्तक्षेप कर सकता है। यदि फ्रांस इन गणराज्यों को समाप्त करके स्पेन के प्रभुत्व को पुनः स्थापित करने के उद्देश्य से हस्तक्षेप करेगा तो इसके बदले में कुछ व्यापारिक विशेषाधिकार या उपनिवेश उसे दिये जायेंगे।

यद्यपि इन आशंकाओं का कोई ठोस आधार नहीं था फिर भी इनके कारण ग्रेट ब्रिटेन और सयुंक्त राज्य अमेरिका में तीव्र प्रतिक्रिया हुई। ग्रेट ब्रिटेन अपने व्यापारिक हितों के लिए खतरा अनुभव करने लगा। संयुक्त राज्य अमेरिका नवस्थापित गणराज्यों को समाप्त होते और फ्रांस के एक नये साम्राज्य को दक्षिण अमेरिका में स्थापित होते नहीं देख सकता था, क्योंकि इससे उसके राष्ट्रीय हितों को हानि पहुँचती थी, देश की सुरक्षा को खतरा उत्पन्न हो जाता और इस स्थिति मे वह यूरोप के कूटनीतिक जंजाल और झगड़ों से मुक्त भी नहीं रह सकता था। अतः ग्रेट ब्रिटेन और संयुक्त राज्य अमेरिका फ्रांस द्वारा हस्तक्षेप की सम्भावना से चिन्तित थे और इसका विरोध करना दोनों देशों के हित में था।

अतः दोनों देशों के समान हितों की रक्षा की दृष्टि से ग्रेट ब्रिटेन के विदेश मन्त्री जॉर्ज केंनिग (George Canning) ने अगस्त, 1823 ईसवी में अमेरिकी राजदूत रिचार्ड रश (Richard Rush) के सामने यह प्रस्ताव रखा कि ग्रेट ब्रिटेन और संयुक्त राज्य अमेरिका एक संयुक्त घोषणा जारी करे जिसमें फ्रांस के सम्भावित हस्तक्षेप का कड़ा विरोध किया जाये तथा उसे चेतावनी दी जाये। तुरन्त निर्णय ले सकने की स्थिति में न होने के कारण अमेरिकी राजदूत ने अपनी सरकार के पास निर्देश के लिए इस प्रस्ताव को भेज दिया।

वाशिंगटन ने केनिंग प्रस्ताव पर बड़ी गम्भीरता से विचार-विमर्श किया गया। अपने मन्त्रि मण्डल सहयोगियों के अतिरिक्त भूतपूर्व राष्ट्राध्यक्ष जेफरसन तथा मेडीसन की राय थी कि केनिंग का प्रस्ताव मान लिया जाये। उनका विचार था कि ऐसा करने से अमेरिका को ग्रेट ब्रिटने की शक्तिशाली नौ सेना का सहयोग प्राप्त हो जायेगा और उसे किसी भी राष्ट्र का भय नहीं रहेगा। इसके विपरीत विदेश मन्त्री जे.क्यू. एडम्स का मत था कि केनिंग प्रस्ताव को अस्वीकार कर देना अधिक उचित होगा, क्योंकि संयुक्त घोषणा में सम्मिलित होने से अमेरिका ग्रेट ब्रिटेन का पिछलग्गू दिखाई देगा और उसकी प्रतिष्ठा को धक्का लगेगा। एडम्स का विश्वास था कि यूरोपीय देशों के विरुद्ध अमेरिका को अकेले ही घोषणा करनी चाहिए। अन्ततः एडम्स के विचारों से मुनरो सहमत हो गया। सम्भवतः इसका एक कारण केनिंग की ओर से दर्शायी गई उदासीनता भी थी। केनिंग ने रश के सामने संयुक्त घोषणा के प्रस्ताव को प्रस्तुत करने के पश्चात् फ्रांस के राजदूत पोलिगनेक (Polignec) से वार्ता की। इस वार्ता में फ्रांस के राजदूत ने केनिंग को लिखित

आश्वासन दे दिया कि फ्रांस का दक्षिण अमेरिका में हस्तक्षेप करने का कोई उद्देश्य नहीं था। अत: केनिंग अब निश्चिन्त हो गया। किन्तु उसने इसकी सूचना अमेरिका को नहीं दी। अमेरिका में फ्रांस के हस्तक्षेप की आशंका अभी बनी हुई थी और केनिंग प्रस्ताव पर विचार-विमर्श हो रहा था। अन्तत: मुनरो ने संयुक्त राज्य द्वारा स्पष्ट शब्दों में दृढ़ घोषणा जारी करने का निश्चय किया।

2 दिसम्बर, 1823 ईसवी को कांग्रेस को दिये गये अपने वार्षिक सन्देश में मुनरो ने कहा "मित्र राष्ट्रों (पवित्र सन्धि से आबद्ध यूरोपीय देशों) और अमेरिका की राजनीतिक व्यवस्था एक-दूसरे से सर्वथा भिन्न हैं.... अत: हम घोषणा करते हैं कि इन शक्तियों द्वारा अपनी राजनीतिक व्यवस्था को इस गोलार्द्ध के किसी भी भाग पर फैलाने के किसी भी प्रयत्न को हम अपनी शान्ति और सुरक्षा के लिए खतरा समझेंगे।" विनम्रतापूर्वक किन्तु निर्भय होकर मुनरो ने यह भी स्पष्ट कर दिया कि अमेरिका में जिन देशों ने स्वतन्त्रता प्राप्त कर ली है उनकी स्थिति को बदलने के किसी भी प्रयत्न का अमेरिका के प्रति अमैत्री-पूर्ण कार्यवाही समझा जायेगा।

अमेरिका में रूस के उपनिवेशवाद के प्रसार पर रोक लगाने की दृष्टि से मुनरो ने अपने सुविख्यात सन्देश में यह बात भी स्पष्ट कर दी कि अमेरिकी महाद्वीपों में विकसित स्वतन्त्र स्थिति को बनाये रखने में संयुक्त राज्य अमेरिका के हित और अधिकार निहित हैं। अत: यूरोप के देशों को चेतानवी दी गई कि भविष्य में वे पश्चिमी गोलार्द्ध में अपने उपनिवेश बनाने का प्रयत्न न करें। इस सिद्धान्त का उद्‌भव प्रथमत: अलास्का के दक्षिण के क्षेत्र में 51^0 अक्षांश तक रूस द्वारा दावा करने के कारण हुआ था। 1821 ईसवी में जार ने एक घोषणा द्वारा यह अधिकार घोषित किया था तथा विदेशी जहाजों पर रोक लगा दी थी कि वे समुद्र तट से एक सौ मील अन्दर प्रवेश न करें। जार की घोषणा का एडम्स ने तीव्र विरोधा किया तथा उसने अपने गैर-उपनिवेशवादी सिद्धान्त का ऐलान किया। एडम्स के इसी सिद्धान्त को मुनरो ने अपने सन्देश में स्पष्ट रूप से व्यक्त कर दिया।

इन सिद्धान्तों का प्रतिपादन करते समय मुनरो ने यह भी घोषणा की कि संयुक्त राज्य अमेरिका तत्कालीन यूरोपीय उपनिवेशों और आश्रित प्रदेशों में न तो कोई हस्तक्षेप करेगा और न यूरोपीय शक्तियों के आपसी युद्धों में भाग लेगा। इन नकारात्मक सिद्धान्तों की घोषणा यूरोपीय शक्तियों को आश्वस्त करने के लिए की गई कि अमेरिका का कोई आक्रामक रवैया नहीं था। मुनरो के इस सन्देश द्वारा विदेश नीति सम्बन्धी जो सिद्धान्त प्रतिपादित हुए वे मुनरो सिद्धान्त (Monroe Doctrine) के नाम से विख्यात हैं।

(4) मुनरो सिद्धान्त का परिणाम - मुनरो सिद्धान्त की घोषणा का तत्कालीन घटनाओं पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा। लैटिन अमेरिका के देशों ं इस घोषणा को कोई विशेष उत्साह से स्वागत भी नहीं किया गया, क्योंकि उन्हें अपने स्वतन्त्रता के संघर्ष में ग्रेट ब्रिटेन से बहुमूल्य सहायता मिली थी तथा उनके राजनीतिक और आर्थिक हित भी उसी देश में जुड़े हुए थे। इसका एक कारण यह भी था कि लैटिन अमेरिका के देश यह भली-भाँति जानते थे कि उनकी

स्वतन्त्रता की रक्षा ग्रेट ब्रिटेन की शक्तिशाली नौ-सेना ही कर सकती थी। अत: इन देशों में ग्रेट ब्रिटेन का प्रभाव एक लम्बे समय तक बना रहा।

संयुक्त राज्य अमेरिका में भी मुनरो की घोषणा को कोई महत्त्व नहीं दिया गया। 1845 ईसवी में जब राष्ट्राध्यक्ष पोलक ने इस सिद्धान्त के महत्त्व पर विशेष बल दिया तब से इसका महत्त्व बढ़ने लगा और मुनरो सिद्धान्त अमेरिका की विदेश नीति का महत्त्वपूर्ण आधार माने जाने लगा। मुनरो सिद्धान्त के प्रतिपादन का श्रेय मुनरो और एडम्स को दिया जाता है, किन्तु वास्तविकता यह है कि इसके बुनियादी सिद्धान्त तो वाशिंगटन (Washington), जेफरसन (Jafferson) और हैमिल्टन द्वारा पहले से ही स्थापित किये जा चुके थे। मुनरो और एडम्स ने केवल उन्हीं विचारों को एकत्रित करके नये शब्दों में एक सुव्यवस्थित भाषा में प्रस्तुत किया तथा इन विचारों को एक नया महत्त्व प्रदान किया। बेली (Bailly) के अनुसार ''कुंदरू (Ivy) के वृक्ष के समान मुनरो सिद्धान्त का विकास अमेरिका के विकास के साथ-साथ होता गया।''

III. 1824 ईसवी का राष्ट्राध्यक्ष का चुनाव :

1812 ईसवी के बाद उत्पन्न राष्ट्रीय भावना की लहर में शिथिलता आना आरम्भ हो गई और देश के तीन भागों में वर्गीय हितों के प्रति विशेष रुचि उत्पन्न होने लगी। उत्तर-पूर्व, पश्चिम और दक्षिण में उत्पन्न प्रान्तीय भावनाएँ 1824 ईसवी के राष्ट्राध्यक्ष के चुनाव के समय स्पष्ट रूप से प्रकट हुई। इस समय तक संघीय दल लगभग समाप्त हो गया था तथा चुनाव में जो चार प्रत्याशी खड़े हुए थे वे सभी रिपब्लिकन ही थे। इसका कारण यह था कि कांग्रेस के सम्मेलन (Caucus) द्वारा प्रत्याशी चुनने की परम्परा टूट चुकी थी। इस बार प्रत्याशियों का निर्णय राज्यों की विधान-सभाओं द्वारा किया गया। अत: चुनाव में जॉर्जिया के एच.क्राफोर्ड (H.Crawford), मैसाचुसेट्स के जे.क्यू. एडम्स, केन्टकी के हेनरी क्ले तथा टेनेसी के एन्ड्रयू जैक्सन प्रमुख प्रत्याशी थे। इनमें से प्रथम तीनों व्यक्ति महत्त्वूर्ण राजनीतिक और प्रशासनिक पद पर रह चुके थे। किन्तु निर्विवाद रूप से सबसे लोकप्रिय उम्मीदवार एन्ड्रयू जैक्सन था। न्यू ओर्लिन्स युद्ध को विजेता तथा फ्लोरिडाअभियान में कीर्ति-प्राप्त जैक्सन को उसके प्रशंसक अपने काल का महानतम सैनिक मानते थे और उसकी तुलना नेपोलियन से करते थे। किन्तु जेफरसन तथा अनेक विचारशील व्यक्तियों का मत था कि जैक्सन ने फ्लोरिडा में अपने उग्र स्वभाव का ही परिचय दिया था तथा उसमें राष्ट्राध्यक्ष पद की योग्यता नहीं थी। फ्लोरिडा में जैक्सन ने दो ब्रिटिश नागरिकों को फाँसी दे दी थी। एडम्स के विचार में, ''जैक्सन एक आदर्श उप-राष्ट्राध्यक्ष बनने योग्य थे। वही पद उनके लिए गौरवपूर्ण होता, उनकी कीर्ति पुन: दीप्त हो उठती और यह खतरा भी नहीं रहता कि वे किसी को फाँसी पर चढ़ा देंगे।''

1824 ईसवी का राष्ट्राध्यक्ष का चुनाव अमेरिका की राजनीति में महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। चुनाव में जैक्सन को निर्वाचक निकाय (Electoral Vote) के निन्यानवें, एडम्स को चौरासी, क्राफोर्ड को इकतालीस तथा क्ले को सैंतीस वोट प्राप्त हुए। यद्यपि जैक्सन को सबसे अधिक लोकप्रिय वोट भी प्रात हुए किन्तु निर्वाचक निकाय में किसी को भी बहुमत प्राप्त नहीं हो सका

अत: संविधान के बारहवें संशोधन के अनुसार चुनाव का अन्तिम निर्णय प्रतिनिधि-सदन के हाथ में चला गया। इस सदन को सर्वाधिक निर्वाचक वोट प्राप्त करने वाले प्रथम तीन उम्मीदवारों में से एक को चुनना था। क्ले ने अपने समर्थकों सहित एडम्स के पक्ष में वोट देने का निर्णय किया। इस प्रकार की सहायता से एडम्स सदन द्वारा निर्वाचित होने में सफल हो गया।

IV. एडम्स का प्रशासन (1825-29) :

(1) एडम्स का व्यक्तित्व - एडम्स ने अपने निर्वाचन के कुछ ही दिन पश्चात् क्ले को विदेश मन्त्री बना लिया। जैक्सन के समर्थकों में, जिनमें अधिकतर साधारण लोग थे, इसी की तीव्र प्रतिक्रिया हुई और वे क्रोधित हो उठे। उनके अनुसार एडम्स का निर्वाचन एक भ्रष्ट सौदे का परिणाम था जो कि एडम्स ने क्ले के साथ किया था और जिसके अनुसार उसे विदेश मन्त्री का महत्त्वपूर्ण पद दिया गया था। यह भावना अगले चार वर्षों तक विद्यमान रही। कुछ भी हो, वास्तविकता यह थी कि जन साधारण का लोकप्रिय उम्मीदार जैक्सन जिसे सर्वाधिक इलेक्टोरल वोट तथा लोकप्रिय वोट मिले थे, राष्ट्राध्यक्ष बनने से वंचित रह गया था। किन्तु इस प्रकार का कोई ठोस प्रमाण अभी तक प्रज्ञात नहीं हो सका है कि क्ले और एडम्स में बाकायदा कोई समझौता हुआ था। यदि कोई समझौता हुआ भी था तो वह राजनीतिक दृष्टि से भ्रष्ट नहीं कहा जा सकता, क्योंकि इस प्रकार के समझौते राजनीति में हुआ करते थे। इसका बुरा पक्ष यही था, इसके परिणमस्वरूप लोकमत की अवहेलना की गई तथा इसमें बुराई की झलक स्पष्ट थी।

निर्वाचन की इस पृष्ठभूमि के साथ एडम्स ने राष्ट्राध्यक्ष का पद सम्भाला। वह अमेरिका के द्वितीय राष्ट्राध्यक्ष जॉन एडम्स(John Admas) का पुत्र था तथा योग्यता में अपने पिता से कम नहीं था। अमेरिका और यूरोप में उत्तम शिक्षा प्राप्त करने का उसे सुअवसर मिला था। सत्ताइस वर्ष की आयु में ही उसने अपना कूटनीतिक जीवन आरम्भ कर लिया था। उसने इंगलैण्ड, हालैण्ड,,रूस और स्वीडन में महत्त्वपूर्ण कूटनीतिक शिष्टमण्डलों में भाग लिया था। 1803 ईसवी में वह सीनेट का सदस्य चुना गया। राष्ट्राध्यक्ष मुनरो के प्रशासन काल में उसने विदेश मन्त्री के रूप में अपनी विलक्षण योग्यता का परिचय दिया। मुनरो सिद्धान्त के निर्धारण में तथा 1819 ईसवी में स्पेन से सन्धि करके फ्लोरिडा पर अधिकार करने में एडम्स का ही प्रमुख योगदान रहा था। इन दो महान् राष्ट्रीय सफलताओं में उसकी प्रतिष्ठा में बढ़ोतरी हुई थी। किन्तु एडम्स एक राजनीतिज्ञ न होकर विचारक था। असाधारण बुद्धिमान, सौम्य, चरित्रवान और जनसेवी होते हुए भी अति मितव्ययता, रूखे व्यवहार तथा तीव्र पूर्वाग्रह के कारण वह एक सफल राष्ट्राध्यक्ष नहीं बन सका। फिर भी एडम्स के समान प्रशासकीय तथा कूटनीतिज्ञ योग्यता तथा अनुभव प्राप्त गिने चुने व्यक्ति ही राष्ट्राध्यक्ष पद पर आरूढ़ हुए हैं। जेम्स बेले के अनुसार ''एडम्स का स्थान अमेरिका के सर्वाधिक सफल विदेश मन्त्रियों में तथा न्यूनतम सफल राष्ट्राध्यक्षों में माना जाता है।''

एक चरित्रवान तथा उच्च आदर्शों वाला व्यक्ति होने के कारण वह राज्य के पदों को राजनीतिज्ञों में बाँटने की परम्परा को नहीं मान सकता था। उसने अपने समर्थकों को ऊँचे पद

देकर अधिकारियों को सेवानिवृत्त करने से इन्कार कर दिया जिससे वे नाराज हो गये। एडम्स का यह रुख राजनीतिक दृष्टि से ठीक नहीं था, क्योंकि इससे वह अपने समर्थकों की सहायता से वंचित हो गया। इसी प्रकार एडम्स अपने राष्ट्रीय विचारों के कारण भी अलोकप्रिय हो गया। एडम्स ने सड़कों तथा नहरें बनाने का कार्यक्रम संसद के सामने रखा। उसने एक राष्ट्रीय विश्वविद्यालय तथा विशाल खगोल वेधशाला बनाने की योजना पर भी बल दिया। जनता में इसकी तुरन्त विपरीत प्रतिक्रिया हुई। अधिकांश लोगों की दृष्टि में यह फिजूलखर्ची तथा राजकोष का अपव्यय था। दक्षिण में इसका विशेष विरोध इसलिए किया गया कि विशाल पैमाने पर राष्ट्रीय योजनाओं पर खर्च करने के लिए सरकार आयात कर में वृद्धि करेगी जो कि दक्षिण के हित में नहीं था। इसके अतिरिक्त यह आशंका भी व्यक्त की गई कि यदि केन्द्रीय सरकार शिक्षा तथा सड़क निर्माण जैसे स्थानीय कार्यों में हस्तक्षेप कर सकती है तो भविष्य में वह दास प्रथा के मामले में भी हस्तक्षेप करेगी।

(2) एडम्स की विदेश नीति - एडम्स से विदेश नीति के क्षेत्र में महान् सफलता की आशा की गई थी। किन्तु अपने राष्ट्रपति काल में उसे विदेश नीति में भी कोई विशेष सफलता नहीं मिली। अपने प्रशासन काल के आरम्भ में ही एडम्स ने ब्रिटिश पश्चिमी द्वीपों से व्यापार-सम्बन्ध पुन: स्थापित करने के लिए ग्रेट ब्रिटेन से कूटनीतिक वार्ता प्रारम्भ की। ब्रिटिश विदेश मन्त्री केनिंग ने एडम्स के प्रस्ताव को ठुकरा दिया। इसका कारण यह था कि वह एडम्स द्वारा मुनरो सिद्धान्त सम्बन्धी नीति से क्षुब्ध था। अत: उसने एडम्स का विरोध किया।

इसी प्रकार एडम्स को पनामा कांग्रेस में भी विफलता ही मिली जिससे उसकी प्रतिष्ठा को ठेस लगी। पनामा कांग्रेस का आयोजन 1826 ईसवी में साइमन बोलीवर (Simon Boliwer) ने किया था। बोलिवर दक्षिण अमेरिका के स्वतन्त्रता संग्राम का ख्याति प्राप्त लोकप्रिय नेता था। पनामा कांग्रेस अमेरिकी गणतन्त्रों का सम्मेलन था जिसका उद्देश्य इन राज्यों की सुरक्षा की समस्यओं पर विचार-विमर्श करना तथा आपसी एकता स्थापित करना था। विदेश मन्त्री क्ले पेन-अमेरिकनवाद (Pan-Americanism)का घोर समर्थक था। उसने सम्मेलन में भाग लेने का निमन्त्रण सहर्ष स्वीकर कर लिया। एडम्स ने दो प्रतिनिधि भेजने का निर्णय लिया तथ इसका पुष्टिकरण सीनेट से कराना चाहा। प्रतिनिधिमण्डल पर खर्च होने वाली राशि के लिए संसद की स्वीकृति माँगी गई। वास्तव में इसकी कोई आवश्यकता नहीं थी। संसद में इस बात को लेकर लम्बी तथा गरमागरम बहस हुई। एडम्स और क्ले के विरोधियों ने प्रतिनिधिमण्डल भेजने का कड़ा विरोध किया। अन्तत: कांग्रेस की स्वीकृति तो मिल गई परन्तु इसमें बहुत विलम्ब हो गया। प्रतिनिधिमण्डल के एक सदस्य का मार्ग में ही देहान्त हो गया तथा दूसरा सदस्य जब पनामा तक पहुँचा तब तक सम्मेलन स्थगित हो चुका था। इस पूरी घटना से एडम्स की प्रतिष्ठा को गहरा आघात लगा तथा पेन-अमेरिकी आन्दोलन को नेतृत्व प्राप्त करने का सुअवसर अमेरिका ने खो दिया।

(3) सीमा शुल्क समस्या - सीमा-शुल्क के प्रश्न पर अमेरिका के प्रान्तीय हितों में टकराव था। उत्तर के राज्यों का हित सीमा-शुल्क की दर ऊँची रखने में था जो दक्षिण के राज्यों का हित

इसके विपरीत था। 1824 ईसवी में राष्ट्राध्यक्ष मुनरो न सीमा-शुल्क की दर बढ़ा कर तीस प्रतिशत कर दी थी। किन्तु उत्तर के उद्योगपति, विशेषकर ऊनी वस्त्रों के निर्माता, सीमा-शुल्क को और अधिक बढ़ाने के लिए आतुर थे तथा वे राजनीतिक दबाव डाल रहे थे।

सीमा-शुल्क के प्रश्न को लेकर जैक्सन के समर्थकों ने एक राजनीतिक चाल खेलने का प्रयत्न किया। उन्होंने एक बिल पेश किया जिसके अनुसार सीमा-शुल्क की दर को बढ़ा कर पैंतालीस प्रतिशत करने की व्यवस्था थी, किन्तु साथ ही कच्चे माल जैसे ऊन इत्यादि के आयात पर भी कर की दरों में भारी वृद्धि करने का प्रस्ताव रखा। जैक्सन समर्थकों को आशा थी कि उत्तर के ऊनी वस्त्रों के उद्योगपति इस बिल का विरोध करेंगे और इस प्रकार बिल संसद में पास नहीं हो सकेगा। ऐसा करने का उद्देश्य यह था कि सीमा-शुल्क की बहुत ऊँची दर प्रस्तावित करके वे उत्तर का समर्थन प्राप्त कर लेंगे तथा बिल को अस्वीकृत करा कर दक्षिण को प्रसन्न कर लेंगे। जॉन रेन्डोल्फ के शब्दों में "इस बिल का सम्बन्ध किसी प्रकार के औद्योगिक उत्पादन से नहीं बल्कि भावी राष्ट्राध्यक्ष के निर्माण से था।" किन्तु उत्तर के निर्माताओं ने ऊँचे सीमा शुल्क सिद्धान्त को ध्यान में रख कर इस बिल का समर्थन किया जिससे बिल स्वीकृत हो गया तथा जैक्सन समर्थकों की चाल विफल हो गई।

इतनी ऊँची दर के सीमा-शुल्क कानून के स्वीकृत होने से दक्षिण के राज्यों में तीव्र प्रतिक्रिया हुई तथा इसे 'काला सीमा-शुल्क' का नाम दिया गया। कई राज्यों ने इसके विरोध में प्रस्ताव पारित किये। दक्षिण कैरोलिना में तो शोक मनाया गया और झण्डे आधे झुकाये गये। 1828 ईसवी में इस राज्य की विधान-सभा ने उस सीमा-शुल्क के विरोध में एक पैम्फलेट भी प्रकाशित किया जिसका आलेख, गुप्त रूप से जॉन सी कैलहुन ने तैयार किया था।

इससे एडम्स की लोकप्रियता में भारी कमी हुई। राष्ट्राध्यक्ष के रूप में एडम्स की असफलता भी स्पष्ट हो गई थी। 1828 ईसवी में राष्ट्राध्यक्ष के पद के चुनाव हुए जिसमें जैक्सन की भारी बहुमत से विजय हुई।

□□□

अध्याय - 9

जैक्सोनियन गणतन्त्र (1829-1841 ईसवी)

□ पुखराज आर्य

I. 1828 ईसवी का चुनाव :

एडम्स के शासन काल में नये दल बन गये। एडम्स के अनुयायियों ने अपने दल का नाम नेशनल रिपब्लिक (National Republic) रख लिया जिसके सदस्य बाद में व्हिग (Whig)कहलाये। जैक्सन के अनुयायियों ने डेमोक्रेटिक पार्टी को नया रूप दिया।

1824 ईसवी के निर्वाचन में जैक्सन की असफलता वास्तव में उसकी असफलता नहीं थी। वह भावी नेता बन चुका था और लोग उसे अमेरिका के नये प्रजातन्त्र का प्रतीक समझने लगे थे। उसके बारे में लोगों की यह धारणा थी कि वह सभी वर्गों का मित्र है और केवल स्वार्थी वर्गों का शत्रु है।

1828 ईसवी का चुनाव भूकम्प के समान आया। उसमें जैक्सन के प्रबल समर्थन ने एडम्स और उसके सहयोगियों को गिरा दिया। चुनाव अभियान में दोनों पक्षों ने एक दूसरे पर आरोप प्रत्यारोप की झड़ी लगा दी। राष्ट्रपति पर सौदेबाजी और भ्रष्टाचार का आरोप लगाया गया। जैकसन के विपक्षियों ने भी उसे अपमानित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी । परन्तु इस होड़ के पीछे यह सिद्धान्त निहित था कि वास्तव में सत्ता कुलीन लोगों के हाथ में रहे अथवा जनता के हाथों में। जैक्सन जन अधिकारों का पोषक और समर्थक था जबकि एडम्स कुलीन वर्ग का प्रतीक था। चुनाव की सरगर्मी इतनी तेज थी कि मतदाता भारी संख्या में मतदान के लिए आये। जैक्सन को छः लाख सैंतालीस हजार लोकप्रिय मत प्राप्त हुए जबकि एडम्स को केवल पाँच लाख आठ हजार।

1828 ईसवी के निर्वाचन में जैक्सन की विजय के कुछ स्पष्ट कारण थे। जैक्सन को स्थानीय नेताओं का समर्थन प्राप्त था। उन्होंने उसके चुनाव अभियान का संचालन किया तथा एडम्स की प्रतिष्ठा को धक्का पहुँचाया। दूसरा, इस चुनाव में विभिन्न क्षेत्रों ने पृथक्-पृथक् कारणों से जैक्सन का समर्थन किया। पश्चिमी राज्यों ने एडम्स को कुलीन वर्ग का प्रतीक माना और उसकी नीतियों तथा सिद्धान्तों का विरोध किया। वहाँ के मत जैक्सन को प्राप्त हुए। दक्षिण के राज्यों ने राज्य के अधिकारों की रक्षा के लिए एडम्स का विरोध और जैक्सन को अपना समर्थन प्रदान किया। पूर्वी राज्यों में वेतनभोगी वर्ग ने जैक्सन को अपना स्वाभाविक नेता समझा। इस प्रकार जैक्सन की विजय अमेरिकी जन साधारण की विजय थी।

1832 ईसवी के चुनाव में जैक्सन की फिर विजय हुई। इससे उसकी लोकप्रियता का अनुमान लगाया जा सकता है। इस चुनाव के सम्बन्ध में इसी अध्याय में आगे विवरण दिया गया है।

II. जैक्सन के निर्वाचन का महत्त्व :

राष्ट्रपति पद पर एण्ड्रयू जैक्सन का निर्वाचन अमेरिकी राजनीतिक इतिहास में एक युगान्तकारी घटना थी। वह लोकतन्त्र समर्थक, नवीन पश्चिम की देन और सीमा-प्रदेश की स्फूर्ति और शक्ति का प्रतीक था। 1814 ईसवी में घैन्ट की सन्धि से अमेरिका को व्यापार की स्वतन्त्रता प्राप्त हुई थी। इस सन्धि से विदेशी हस्तक्षेप समाप्त हो गया और अमेरिका को अपना राजनीतिक, सामाजिक तथा आर्थिक जीवन पुनर्गठित करने का अवसर मिला। जैक्सन का शासन काल इस पुनर्गठन का परिचायक है। इस काल में अमेरिकी संविधान पूर्ववत् रहा, किन्तु प्रथाओं और संसाधनों द्वारा नई व्यवस्थाओं का समावेश हुआ। प्रशासकीय संगठन अपरिवर्तित रहा, किन्तु उसे सुचारु रूप से बनाने के लिए नई भावना उत्पन्न की गई। राष्ट्रीय साधनों और सम्मान में पूर्ववत् विश्वास बना रहा, किन्तु यह विश्वास अधिक दृढ़ता के साथ व्यक्त किया जाने लगा। सामाजिक जीवन में कोई परिवर्तन नहीं हुआ, किन्तु उसकी अजीब व आश्चर्यजनक अभिव्यक्ति (Strange and Startling Manifestations) हुई। 1840 ईसवी का अमेरिका अपने अतीत में पूर्णत: भिन्न था लेकिन यह भिन्नता केवल एक दशक की गतिविधियों (1830-40 ई.) का परिणाम थी। उसका समग्र श्रेय राष्ट्रपति जैक्सन को है।

जैक्सन का जन्म निपट दरिद्रावस्था में हुआ था। उसके पिता का देहान्त उसके जन्म से पूर्व ही हो गया था। कठिनाइयों में पलने के कारण पीड़ित लोगों के प्रति उसके हृदय में तीव्र सहानुभूति थी। उसने निरी बाल्यावस्था में क्रान्ति के युद्ध में भाग लिया था। उसके दो भाई भी उसी युद्ध में काम आये और वह संसार में अकेला रह गया था। नितान्त विपन्न परिस्थिति में भी उसके मन में उद्दात राष्ट्रीय भवना बनी रही। उसने अपना बाल्यकाल कैरोलिना की सीमाओं पर व्यतीत किया था। तत्पश्चात् वह टैनेसी चला गया। वहाँ उसने कानून का अध्ययन किया। उसके उपरान्त उसने कई स्थानीय पदों पर कार्य भी किया। वह राष्ट्र के विधायक सदनों का सदस्य भी रहा। न्यू आर्लिन्स के संरक्षण के फलस्वरूप पश्चिमी क्षेत्र में उसकी कीर्ति बढ़ी।

III. जैक्सन का उद्घाटन भाषण व उसके विचार :

जैक्सन का सत्तारूढ़ होना एक नये युग का द्योतक था। वह एक ऐसा शुभारम्भ था, जैसा देश ने पहले कभी नहीं देखा था। 4 मार्च, 1829 ईसवी के दिन राष्ट्रपति जैक्सन ने शपथ ग्रहण की। शपथ ग्रहण समारोह में विशाल जनसमूह ने भाग लिया। उस समय के दृश्य के सम्बन्ध में एक समकालीन लेखक ने लिखा, ''मानो रोम पर बर्बर जातियों ने आक्रमण कर दिया हो।'' वेबस्टर ने इस दृश्य को देख कर लिखा कि नगर दर्शकों, पद के इच्छुक लोगों, विजयी राजनीतिज्ञों और सरल हृदय पश्चिम और पूर्व के निवासियों से भरा पड़ा है। लोग पाँच-पाँच सौ मील की दूरी से अपने नायक को राष्ट्राध्यक्ष का पद ग्रहण करते देखने आये थे और ऐसी बातचीत कर रहे थे मानों देश को किसी भारी संकट से मुक्त कर दिया हो। अमेरिका के सर्वोच्च न्यायालय के

न्यायाधीश स्टोरी (Storey) ने लिखा है कि मैंने इस प्रकार का मिश्रित जनसमूह कभी नहीं देखा। भीड़ की सत्ता से ही विजय लग रही थी। किन्तु विशेष दृश्य समारोह के पश्चात् उपस्थित हुआ। उत्साह से परिपूर्ण जनसमूह 'ह्वाइट हाउस' (White House) की ओर उमड़ पड़ा। वहाँ जलपान का आयोजन किया गया था। प्रत्येक व्यक्ति राष्ट्राध्यक्ष को निकट से देखने और हाथ मिलाने का उत्सुक था। अत: सारा प्रबन्ध अस्त व्यस्त हो गया और लोगों को खिड़कियों से कूदकर बाहर आना पड़ा। इस घटना पर टिप्पणी करते हुए एक लेखक ने लिखा, ''लोकतन्त्र अभी तक स्वागत-कक्ष शिष्टाचार में प्रवीण नहीं था और न ही वह भोजन के अच्छे आचरण को समझा पाया था।'' परन्तु जैक्सन के समग्र काल में इस प्रकार की भीड़तन्त्र की पुनरावृत्ति नहीं हुई। यह तो जनता के प्रथम उद्गार की अभिव्यक्ति थी। तदुपरान्त स्वयं जैक्सन भी अन्य राष्ट्रपतियों के समान भव्य हो गया।

जैक्सन, कतिपय उन राष्ट्राध्यक्षों में एक था, जिनका मन और मस्तिष्क जन साधारण के साथ था। जन साधारण के प्रति वह सहानुभूति और विश्वास रखता था, क्योंकि वह स्वयं उनमें से एक था। अपना जीवन सीमा प्रदेश के वकील, प्लान्टर और व्यापारी के रूप में बिताते हुए उसके मन में पूर्वी आर्थिक संगठनों के प्रति गहरा विश्वास उत्पन्न हो चुका था, क्योंकि पश्चिमी व्यापार पर उनका भारी प्रभाव था। इसके अतिरिक्त जैक्सन को असाधारण कार्य करने के लिए साधारण मनुष्य की योग्यता पर विश्वास था। उसके राजनीतिक सिद्धान्त सरल और व्यापक थे। राजनीतिक समानता और सबके लिए समान आर्थिक अवसरों में उसका विश्वास था। उसे एकाधिकार और विशेष सुविधाओं से घृणा थी। उसने इन विचारों तथा अपनी राष्ट्रीय नीति की झलक अपने उद्घाटन भाषण में प्रस्तुत की। उसका उद्घाटन भाषण लेविस, हैनरी ली और स्वयं उसके प्रयासों की उपज था। ली ने उसे साहित्यिक शब्दों से संवारा था।

उसने यह घोषित किया था कि कांग्रेस द्वारा पारित कानूनों को कार्य रूप प्रदान करने में वह अपने अधिशाषी अधिकारों की सीमा और क्षेत्र को ध्यान में रखेगा। राज्यों के साथ सम्बन्धों के बारे में उसने कहा था कि वह संघ के सम्माननीय सदस्य राज्यों का उचित आदर करेगा और यह ध्यान रखेगा कि परिसंघ राज्यों के संरचित अधिकारों पर किसी प्रकार का अतिक्रमण नहीं करे। उसने एक दृढ़ और निष्ठावान अर्थव्यवस्था का वचन दिया। राष्ट्रीय ऋणों के पूर्ण भुगतान पर उसने बल दिया। तट करों के सम्बन्ध में उसके विचार अस्पष्ट थे। इस सम्बन्ध में उसने कृषकों, उत्पादकों तथा व्यवसायियों के साथ विधान के अनुसार समदृष्टि, सतर्कता और समझौते की भावना पर बल दिया। केवल राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए आवश्यक वस्तुओं के उत्पादन को प्रोत्साहन देने के लिए नियम अपवाद स्वरूप हो सकता था। सैनिक राष्ट्रपति के निर्वाचन से जो लोग आशंकित हुए थे उन्हें आश्वस्त करते हुए उसने कहा कि वह विदेशी राष्ट्रों के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों की स्थापना करने का प्रयास करेगा। उसने इण्डियनों के प्रति न्याय व उदारता की नीति का भी वचन दिया।

उसने सभी लोगों को सार्वजनिक पदों के लिये समान रूप से योग्य माना। उसका विश्वास था कि सार्वजनिक पदों के उत्तरदायित्व का कार्य सरल और स्पष्ट है। कोई भी साधारण बुद्धि रखने वाला व्यक्ति इस कार्य को कर सकता है। इसलिए सार्वजनिक पदों पर किसी वर्ग विशेष का

अधिकार नहीं होना चाहिए। उसके विचार में किसी शिकारी को भी उतना ही अधिकार प्राप्त है जितना हार्वर्ड के एक ग्रेजुएट को। जैक्सन की इस घोषणा से उसके समर्थकों को प्रसन्नता हुई, क्योंकि वे अपने नेता की सफलता के साथ स्वयं का कल्याण चाहते थे और सार्वजनिक पदों की प्राप्ति के लिए उत्सुक थे।

उसके उद्घाटन भाषण पर टिप्पणी करते हुए बैन्टन (Benton) ने लिखा है कि उद्घाटन भाषण में मुख्य प्रश्नों की, जो उस समय प्रशासन का ध्यान आकर्पित कर रहे थे, इतनी अधिक स्पष्ट अभिव्यक्ति सम्भवत: कभी नहीं हुई। उसका उद्घाटन-भाषण लोकतान्त्रिक सिद्धान्तों का सामान्य घोषण-पत्र था। जैक्सन के मुख्य सिद्धान्तों को थोड़े से शब्दों में कहा जा सकता है- जनसाधारण में विश्वास, राजनीतिक समानता में आस्था, समान आर्थिक अवसर प्रदान करने में विश्वास, विशेषाधिकारों और पूँजीवादी वित्त की जटिलताओं से घृणा।

IV. जैक्सन का प्रशासन (1829-1837 ई.) :

(1) किचन केबिनेट की प्रथा का आरम्भ - उसके शासन काल में किचन कैबिनेट (Kitchen Cabinet) की परम्परा का सूत्रपात हुआ। इनामी पद्धति का विस्तार हुआ। तीव्र आर्थिक गतिविधियाँ हुईं। मताधिकार के विस्तार के साथ अन्य लोकतान्त्रिक प्रवृत्तियों का विकास हुआ। विदेशों के सम्बन्धों के मामलों में आशा से अधिक सफलता प्राप्त हुई। इस प्रकार उसका काल लोकतान्त्रिक अभ्युत्थान का काल था।

ह्वाइट हाउस में प्रवेश के साथ उसे मन्त्रिमण्डल के निर्माण की विकट समस्या का सामना करना पड़ा। उसने अपने मन्त्रिमण्डल का निर्माण करते समय विभिन्न वर्गों के दावों को मान्यता प्रदान की। उसने अपने दो मित्रों जॉन एच. इटन (John H. Eton), विलियम एम. बेरी (Villiam M. Berry) को क्रमश: युद्ध सचिव और पोस्ट मास्टर जनरल बनाया। क्राफोर्ड (Crawford) के गुट के वान ब्यूरेन (Van Buren) को राष्ट्र सचिव के पद पर नियुक्त किया। उसकी केबिनेट में वान ब्यूरेन ही सबसे अधिक योग्य व्यक्ति था। शेष सदस्य साधारण प्रतिभा के व्यक्ति थे। जैक्सन इन लोगों पर अधिक भरोसा नहीं कर सकता था। इसलिए उसने वान ब्यूरेन को छोड़ कर किसी अन्य सदस्य को किसी प्रकार का महत्त्व नहीं दिया और न ही उसने कांग्रेस से विशेष सम्पर्क रखा।

इस कमी को पूरा करने के लिए वह अपने मित्रों पर निर्भर था, जिन्होंने मिल कर एक घेरासा डाल रखा था। ये ही लोग नीतियों के निर्धारक और प्रमुख परामर्शदाता बन गये। यह मण्डल किचन केबिनेट के नाम से जाना जाने लगा। जैक्सन के किचन केबिनेट में विलियम बी. लेविस (William Bee Levis), एमोस केण्डल (Amos Kendal), डफ ग्रीन (Duff Green), आइजाक हिल (Issac Hill), एण्ड्र्यू जे. डोनेल्सन (Andrew J. Donelson)। वह न्यूयार्क के कोरियर एण्ड एन्कवायरर (Courier and Enquirer) नामक पत्र के सम्पादक जैम्स वाटसन वेब्ब (James Watson Webb) पर भी निर्भर था। ईटन भी इस गुप्त मण्डल से सम्बन्धित था। वॉन ब्यूरेन ने इसका विरोध नहीं किया जबकि बेरी इसका अनुसेवी था। किचन केबिनेट द्वारा

सत्ता का उपभोग वास्तव में राजनीतिक परिस्थिति का परिणाम नहीं होकर जैक्सन की व्यक्तिगत विशेषताओं का परिणाम था। एक बार उसने कहा था कि वह राष्ट्रपति पद के लिए उम्मीदवार स्वयं की इच्छा से नहीं वरन् मित्रों की इच्छा से बना था। जैक्सन ने अपने विचारों की अभिव्यक्ति मुख्य रूप से किचन केबिनेट और विशेषत: एमोस कैण्डल के द्वारा की। लोकप्रिय सरकार के विचारों को किचन केबिनेट ने सफलतापूर्वक जनता के समक्ष रखा। परन्तु किचन केबिनेट के कारण उसके दल में मतभेद हो गये और विशेष रूप से उपराष्ट्रपति कैलुहन के साथ उसके सम्बन्ध बिगड़ गये। विवाद उस समय उत्पन्न हुआ जबकि कैलुहन की पत्नी ने सामाजिक स्तर पर युद्ध सचिव ईटन की पत्नी का अपमान किया। प्रतिक्रिया में कैलुहन के विरोधियों और विशेषत: किचन केबिनेट के सदस्यों ने जैक्सन को भड़काया और उसे यह याद दिलाया कि 1818 ईसवी में युद्ध सचिव के रूप में कैलुहन ने फ्लोरिडा पर आक्रमण करने के लिए जैक्सन पर सैनिक मुकदमा चलाने का सुझाव दिया था। जैक्सन और कैलुहन में मतभेद इतना अधिक बढ़ गया था कि जैक्सन ने 1831 ईसवी में अपने मन्त्रिमण्डल का पुनर्गठन किया जिसमें कैलुहन के समर्थक चार सदस्यों को मंत्रिमण्डल से निकाल दिया। स्वयं कैलहुन को भी पद त्याग करने के लिए बाध्य किया गया। इस प्रकार जैक्सन के काल से किचन केबिनेट की प्रथा प्रारम्भ हुई जो अमेरिकी शासन व्यवस्था का प्रमुख अंग बन गई।

(2) सार्वजनिक पदों पर समर्थकों की नियुक्ति – जैक्सन से पूर्व राज्यों विशेषत: न्यू यार्क तथा पेनसिलेवानिया में सार्वजनिक पदों पर नियुक्ति योग्यता के आधार पर नहीं की अपितु राजनीतिक सम्बन्धों के आधार पर की। "विजेता को लूट का अधिकार है," (Spoils System)का सिद्धान्त इस व्यवस्था का मुख्य आधार था। इसलिए जब कोई दल किसी राज्य में विजय प्राप्त करता तो अपने दल के अनुयायियों को इनाम स्वरूप सार्वजनिक पदों पर नियुक्त करता तथा विरोधी दल से सम्बन्ध रखने वाले लोगों को उनके पदों से हटा दिया जाता। यह प्रणाली इनामी पद्धति के नाम से जानी जाती है।

जैक्सन ने अपने उद्घाटन भाषण में संघीय सार्वजनिक सेवा में सुधार की आवश्यकता पर बल दिया था। सीनेट की अनुमति के बिना अधिकारी को उसके पद से अलग करने के राष्ट्रपति के अधिकार को 1789 ईसवी में स्वीकार किया जा चुका था, किन्तु अभी तक इस अधिकार का उपभोग नहीं किया गया था। 1805 ईसवी में जेफरसन ने इस अधिकार का उपयोग किया था जबकि उसने 1801 ईसवी में कार्यरत आधे से अधिक अधिकारियों को उनके पदों से अलग कर दिया, किन्तु उसके द्वारा किये गये परिवर्तनों के पीछे राजनीतिक कारण नहीं थे। अत: यह सिद्धान्त बन चुका था कि सभी उच्च पदों पर सत्ता-प्राप्त दल के सदस्यों की नियुक्ति की जानी चाहिए, किन्तु निम्न पदों पर कार्यरत अधिकारियों को राजनीतिक दल के सम्बन्धों के आधार पर पद से अलग नहीं किया जाना चाहिए। किन्तु 1820 ईसवी में पारित नियम से उस व्यवस्था में परिवर्तन कर दिया जबकि डिस्ट्रिक्ट एटोर्नी (District Attorney), कस्टम कलैक्टर (Custom Collector) आदि के पदों की कालावधि चार वर्ष निश्चित कर दी गई। किन्तु स्वयं जैक्सन राजनीतिक आधार पर नियुक्ति के पक्ष में नहीं था। यहाँ तक कि 2 मार्च को वेबस्टर ने लिखा कि

नियुक्तियों में कोई खास परिवर्तन होने वाला नहीं है। परन्तु यह कथन असत्य सिद्ध हुआ। जैक्सन के विचारों में परिवर्तन हुआ, इस परिवर्तन के लिए उसके समर्थक उत्तरदायी थे। वे अपने विरोधियों को दण्डित करने की माँग कर रहे थे। समाचार पत्र भी सार्वजनिक पदों में परिवर्तन की आशा व्यक्त कर रहे थे। जैक्सन का राष्ट्रपति पद के लिए दूसरी बार प्रत्याशी होना निश्चित नहीं था, अत: उसके समर्थकों ने उस पर परिवर्तन के लिए दबाव डाला।

जैक्सन ने इस प्रथा के पक्ष में अनेक तर्क प्रस्तुत किये। प्रथम, नागरिक का सरकारी नौकरी पर समान अधिकार है। दूसरा, यदि इनामी पद्धति के अनुसार कुछ अनुभवी कर्मचारी पदच्युत हो जाते हैं तो उनके स्थान पर नवीन उत्साही व्यक्ति नियुक्ति हो जाते हैं। तीसरा, परिवर्तन पद्धति के द्वारा बहुत से व्यक्तियों का सरकारी कार्य को अनुभव हो जाता है और हम सरकार की नीति का यथोचित मूल्यांकन करने में समर्थ हो जाते हैं। लोकतन्त्र के लिए ऐसा अनुभव बहुत हितकारी होगा। इन्हीं तर्कों के आधार पर जैक्सन ने अपने कर्मचारियों को पदच्युत किया और उनके स्थान पर अपने दल वालों को नियुक्त किया।

17 मार्च, 1829 ईसवी में सीनेट के स्थगन के पश्चात् जैक्सन ने अपने कार्य को आरम्भ किया। विरोधी दल से सम्बन्धित लोगों को पदों से हटाया जाने लगा। ऐसा करते समय आयु, सेवा की अवधि, सन्तोषजनक सेवा आदि किसी का भी ध्यान नहीं रखा गया। पदों से हटाते समय कोई कारण भी नहीं बताया गया। शारीरिक स्वस्थता को भी ध्यान में नहीं रखा गया। ऐसा करते समय केवल जैक्सन के प्रति वफादारी ही एक मात्र जाँच का आधार था। इससे सभी अधिशाषी विभाग, कस्टम हाउस तथा पोस्ट ऑफिस प्रभावित हुए। पोस्ट-आफिस विभाग में चार सौ इक्यानवें पोस्ट मास्टर तथा डिप्टी पोस्ट मास्टरों को पदों से वंचित कर दिया गया। अधीनस्थ कर्मचारियों को भी उनके पदों से हटा दिया गया।

विचारणीय प्रश्न यह है कि क्या इस सम्बन्ध में जैक्सन की जितनी आलोचना की गई वह उचित है? यह सही है कि उसने अन्य राष्ट्रपतियों की अपेक्षा कहीं अधिक कर्मचारियों को पदच्युत किया, परन्तु उनकी संख्या ज्यादा नहीं थी। केन्डल ने जैक्सन के शासन के प्रारम्भिक तीन वर्षों की समीक्षा करते हुए लिखा कि वाशिंगटन से केवल 1/7, पोस्ट आफिस 1/16 और समग्र देश में 1/11 सरकारी अधिकारियों को उनके पदों से अलग किया गया था। बेन्टन ने इस परिवर्तन को अपरिहार्य बतलाया। उसका कारण यह था कि कुछ कर्मचारियों ने स्वत: पद त्याग कर दिया था और कुछ लोगों के अवकाश ग्रहण करने का समय निकट आ गया था। बेन्टन ने लिखा कि केवल एक जज को छोड़कर अन्य जजों को नहीं छेड़ा गया, सत्रह में से केवल चार विदेश स्थित राजदूतों को बुलाया गया और वाशिंगटन के विभागों में जैक्सन के विरोधी भी यथावत् अपने पदों पर बने रहे। यदि कैण्डल तथा बेन्टन के व्यक्तियों को स्वीकार किया जाये तो यह कहा जा सकता है कि केवल कुछ लोग इनामी पद्धति से प्रभावित हुए थे, किन्तु जिस प्रकार से उन्हें पदों से वंचित किया गया और जितनी संख्या में किया गया था उन्होंने जनमत पर प्रभाव डाला। 1830 ईसवी के पश्चात् इस सम्बन्ध में अधिक आवाज सुनाई नहीं दी।

वास्तव में जैक्सन इनामी पद्धति का प्रवर्तक नहीं था, परन्तु इस पद्धति को राज्य स्तर से राष्ट्रीय स्तर तक पहुँचाने का श्रेय उसे तथा उसके परामर्शदाताओं को ही है। पद लोलुप लोगों की श्रेणी का विकास उसी के काल से प्रारम्भ हुआ। उन लोगों ने जो दल के कर्णधार बन गये थे स्वार्थ के आधार पर लोगों को अपना अनुयायी बनाया। उन्होंने सार्वजनिक पद दिलाने में अपनी राजनीतिक शक्ति का दुरुपयोग करना प्रारम्भ किया। परवर्ती राष्ट्रपतियों के शासन काल में इनामी पद्धति ने और अधिक जोर पकड़ा। प्रत्येक नये राष्ट्रपति को अपना प्रारम्भिक समय पद लोलुप राजनीतिज्ञों को पटाने में लगाना पड़ता था। 1881 ईसवी में जब इसी प्रकार एक पद लोलुप व्यक्ति ने राष्ट्रपति गारफील्ड की हत्या कर दी तब ही सार्वजनक सेवा में सुधार की माँग ने जोर पकड़ा।

(3) मतदाता सूचियों का विस्तार - जैक्सन की विजय अमेरिका के इतिहास में जन साधारण की विजय थी। अमेरिका की राजनीति में पश्चिमी राज्यों का प्रभाव बढ़ रहा था। इन नये राज्यों में सामाजिक समानता थी और वहाँ के लोग अमेरिका की राष्ट्रीय राजनीति में एकाधिकारों, स्वार्थों, सुविधाओं का अन्त करना चाहते थे। संघ में सम्मिलित होने के समय भी इन राज्यों में प्रत्यक्ष चुनाव की व्यवस्था थीं तथा इनके विधानों में मतदाताओं के लिए किसी प्रकार की धार्मिक और सम्पत्ति सम्बन्धी अर्हताएँ नहीं थी। इन नये राज्यों में केवल कार्यपालिका पर ही नहीं वरन् न्यायपालिकाओं पर भी लोक नियंत्रण की व्यवस्था थी। पश्चिम के इन राज्यों का प्रभाव निश्चित रूप से पूर्वी राज्यों पर भी पड़ा और पश्चिम के सीमावर्ती प्रजातन्त्र का पूर्वी राज्यों ने अनुसरण करना आरम्भ किया। पूर्वी राज्यों में अब कुलीनतन्त्र समाप्त हो रहा था। एक के पश्चात् दूसरे राज्य ने अपने विधान एवं कानूनों में लोकतन्त्रीकरण की दृष्टि से संशोधन करना आरम्भ किया। इन सभी के पीछे जैक्सोनियन लोकतन्त्र की भावना कार्य कर रही थी। 1830 ईसवी में न्यूयार्क राज्य ने अपनी मतदाता सूची का विस्तार किया। यही कार्य 1821 ईसवी में डेलावेयर तथा 1833 ईसवी में जॉर्जिया ने किया। इस प्रकार अमेरिका में सम्पत्ति तथा धार्मिक प्रतिबन्धों के हट जाने से वयस्क मताधिकार स्वीकृत हो गया।

उत्तरी राज्यों के औद्योगिक केन्द्रों के श्रमिकों के राजनीति में प्रवेश से अमेरिकी राजनीति में प्रजातन्त्रीकरण के क्रम में एक महत्त्वपूर्ण परिवर्तन आया। 1825 ईसवी तक रोडे आईलैण्ड को छोड़ कर उत्तर के सभी राज्यों में पुरुषों के वयस्क मताधिकार को स्वीकार कर लिया गया था अतः श्रमिकों को भी मताधिकार प्राप्त हो गया। 1824 ईसवी में राष्ट्राध्यक्ष के चुनाव में कुल तीन लाख छप्पन हजार मतदाताओं ने मत दिये। जबकि 1836 ईसवी में यह संख्या बढ़ कर पाँच लाख तक पहुँची और 1840 ईसवी में चौबीस लाख तक मत दिये गये। यद्यपि यह वृद्धि आंशिक रूप से जन संख्या की वृद्धि के कारण थी फिर भी इसका प्रमुख कारण मतदान सम्बन्धी प्रतिबन्धों का हटना था। मताधिकार के साथ अमेरिका में अन्य लोकतान्त्रिक प्रवृत्तियों का विकास और विस्तार हुआ। राज्य के विधान-मण्डलों पर नियंत्रण, संघीय संविधान का लोकतन्त्रीकरण तथा न्यायालय और राजनीतिक दलों की गतिविधियों ने लोकतन्त्र के विकास में योग दिया।

(4) राज्यों में नये विधानों का निर्माण एवं लोकतंत्र की भावना का विकास - 1830 से 1850 ईसवी के मध्य विधान मण्डलों पर नियंन्त्रण की माँग में वृद्धि हुई। 1837 ईसवी के आर्थिक संकट के बाद इस माँग ने और अधिक जोर पकड़ा। फलस्वरूप 1840 ईसवी में राज्यों ने नये विधानों का निर्माण किया। नये विधानों से राज्य विधान-मण्डलों के स्वच्छन्दतापूर्ण कार्यों पर नियंत्रण स्थापित किया गया। विधान-मण्डलों के व्यय को कम करने की व्यवस्था कर दी गई। उनके द्वारा किसी व्यक्ति विशेष या निगम के हित में नियम बनाने पर रोक लगा दी गई। इसी प्रकार नये बैंक अथवा निर्माण कार्य के लिए विधान मण्डल के दो तिहाई सदस्यों अथवा लोकप्रिय जनमत की सहमति आवश्यक कर दी गई। इन सभी प्रतिबन्धों के उद्देश्य विधान मण्डलों की स्वच्छन्दता पर रोक लगा कर जनसाधारण का नियंत्रण स्थापित करना था।

नये विधानों द्वारा कार्यपालिका और प्रशासन पर लोक नियंत्रण स्थापित किया गया। सभी नये विधानों में राज्य के लगभग सभी प्रशासकीय अधिकारियों के निर्वाचन की व्यवस्था की गई। इस व्यवस्था का स्पष्ट उद्देश्य राज्य के छोटे से छोटे अधिकारी को जनता के प्रति उत्तरदायी बनाना था। इतना ही नहीं, अनेक राज्यों के विधानों में निम्न न्यायालयों के न्यायाधीशों के प्रत्यक्ष निर्वाचन की व्यवस्था की गई। 1832 ईसवी में मिसीसिप्पी राज्य ने तो सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश के निर्वाचन की व्यवस्था भी की। इतना ही नहीं, न्यायालयों पर जन नियंत्रण की दृष्टि से नये विधानों में राज्य विधान-मण्डलों को साधारण बहुमत के द्वारा न्यायाधीशों को पदच्युत करने का अधिकार प्रदान किया गया। प्रजातन्त्र के विकास में इन निर्वाचित न्यायालयों की भूमिका का मूल्यांकन करना कठिन है, किन्तु इतना निश्चित है कि ये न्यायालय कानून के समक्ष समानता और न्याय के मुख्य आधार थे। इन न्यायालयों ने अमेरिकी जनता को न्याय, समानता और सुरक्षा प्रदान की।

इस काल में व्याप्त उदारवाद के प्रभाव के परिणामस्वरूप अनेक सामाजिक कानूनों का निर्माण किया गया, जिनका उद्देश्य लोकतन्त्र का वास्तविक विस्तार करना था। ऐसे नियमों में ऋण सम्बन्धी नियम प्रमुख था। पहले साधारण से कर्ज के लिए व्यक्ति को कारावास की सजा दे दी जाती थी। फिलाडेल्फिया राज्य में दो सौ पचास ऐसे कर्जदारों को कारावास की सजा दी गई जिनका ऋण पाँच डालर से कम था ओर तीस लोगों का तो एक डालर से भी कम। इसी प्रकार अपंग, पागल और विकलांग लोगों के जीवन यापन की सुरक्षा प्रदान करने के लिए कानूनों का निर्माण किया गया। जेलों में अपराधियों के जीवन को सुधारने और उन्हें समुचित सुविधाएँ प्रदान करने की भी व्यवस्थाएँ की गई। सम्पत्ति सम्बन्धी नियमों को पारित कर नागरिकों के मूल अधिकारों की रक्षा की गई।

लोकतन्त्र के इस क्रमिक विकास का संघीय वैधानिक व्यवस्था पर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था। जन साधारण इस बात के लिए दृढ़ निश्चयी था कि राष्ट्रीय सरकार उनके अपने ही निर्वाचित प्रतिनिधियों के माध्यम से उनके हित के लिए शासन करे। लोगों की यह धारणा थी कि संघीय अधिकारी जनता के प्रति उत्तरदायी नहीं हैं और उनसे सम्पर्क भी दूर की बात है अतः संघीय

सेवाओं के लोकतन्त्रीकरण की माँग ने बल पकड़ा। इस सम्बन्ध में अनेक प्रस्ताव प्रस्तुत किये गये। इतना ही नहीं, सीनेटरों के प्रत्यक्ष निर्वाचन का प्रस्ताव भी रखा गया, किन्तु उसे सफलता प्राप्त नहीं हुई।

इस सम्बन्ध में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण बिल राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपति के प्रत्यक्ष निर्वाचन के सम्बन्ध में था। अनेक लोगों का यह विचार था कि निर्वाचक मण्डलों द्वारा इनका निर्वाचन लोकतान्त्रिक सिद्धान्तों के प्रतिकूल है। 1825 ईसवी में प्रतिनिधि सभा में जैक्सन की पराजय के पश्चात् इस माँग ने जोर पकड़ा। 1829 ईसवी में अपने निर्वाचन के पश्चात् राष्ट्रपति जैक्सन ने कांग्रेस के समक्ष प्रत्यक्ष निर्वाचन के सम्बन्ध में अनेक बार सुझाव प्रस्तुत किये, किन्तु उसे सफलता प्राप्त नहीं हो सकी। इसी प्रकार उसने विधान में एक और संशोधन का सुझाव प्रस्तुत किया जिसके द्वारा ऐसी व्यवस्था प्रस्तावित थी कि कांग्रेस साधारण बहुमत से राष्ट्रपति के निषेधाधिकार अधिकार को स्वयं रद्द कर दे, परन्तु यह प्रस्ताव स्वीकृत नहीं हो सका।

(5) सर्वोच्च न्यायालय के स्वरूप में परिवर्तन – जैक्सनकालीन लोकतन्त्र की भावना से न्यायालय भी वंचित नहीं रहा। 1836 ईसवी में सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश के पद पर मार्शल के उत्तराधिकारी के रूप में रोजर बी.टेनी (Roger B. Taney) को नियुक्त किया गया। जैक्सन ने मार्शल को अपने युग का सबसे महान् व्यक्ति कहकर सम्बोधित किया था। किन्तु वह उसके विधान सम्बन्धी दृष्टिकोणों से सहमत नहीं था, क्योंकि मार्शल सम्पन्न वर्ग का समर्थक था।

टेनी, जैक्सन के युग की उदार सामाजिक भावनाओं में विश्वास रखता था। सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश के रूप में उसकी नियुक्ति से रूढ़िवादी लोगों में चिन्ता व्याप्त होना स्वाभाविक था। न्यायाधीश स्टोरी (Storey) ने उसकी नियुक्ति के सम्बन्ध में कहा कि नये विचार और नये लोग सफल हो गये हैं। टेनी सम्पन्न वर्गों की अपेक्षा बहुमत के अधिकारों की रक्षा के प्रति उदार था। संघ और राज्य के अधिकारों के बारे में उसकी स्पष्ट धारणा थी कि दोनों पृथक्-पृथक् क्षेत्राधिकार हैं और अपने-अपने क्षेत्राधिकारों में दोनों ही सर्वोच्च हैं। किन्तु अवसर आने पर उसने राष्ट्रीय सर्वोच्चता को स्वीकार किया और कहा कि संघीय न्यायालय को राज्य के नियंत्रण और संविधान की व्याख्या का अधिकार है। 1837 ईसवी में न्यायाधीशों की संख्या सात से बढ़ा कर नौ कर दी गई। इस प्रकार न्यायपालिका के क्षेत्र में क्रान्ति के पश्चात् के रूढ़िगत विचारों को समाप्त कर नये विचारों का समावेश होने लगा।

(6) राष्ट्रपति के नामांकन की पद्धति में परिवर्तन – जैक्सन के काल में राजतांत्रिक दलों ने निश्चित स्वरूप ग्रहण किया और उन्होंने लोकतन्त्र के विकास में योग दिया। जैक्सन और उसके समर्थकों ने उन्नीसवीं शती के दूसरे दशक में अपने दल का राष्ट्रव्यापी संगठन किया। 1825 ईसवी में जैक्सन की पराजय के पश्चात् उसके दल ने निर्वाचन व्यवस्था को अधिक लोकतान्त्रिक बनाने का प्रयास किया। इस उद्देश्य की सफलता के लिए वैधानिक उपायों के अतिरिक्त अन्य उपायों का भी अवलम्बन किया गया। डेमोक्रेटिक दल ने राष्ट्रपति के प्रत्यक्ष निर्वाचन पर बल दिया। डेमोक्रेटिक दल ने राष्ट्रपति पद के प्रत्याशी के नामांकन के लिए 1832 ईसवी में प्रथम बार नामांकन कन्वेन्शन (Nominating Convention) आमंत्रित कर एक

प्रजातांत्रिक प्रथा का शुभारम्भ किया। कालान्तर में अमेरिकी राष्ट्रपति के नामांकन के लिए इस प्रथा ने स्थायी रूप ग्रहण कर लिया। इस प्रकार राष्ट्रपति के पद के प्रत्याशी का नामांकन अब कुछ पेशेवर लोगों के हाथ से निकलकर जन साधारण के हाथ में आ गया।

(7) मजदूर आन्दोलन का सूत्रपात - उदार राजनीतिक आन्दोलन के साथ-साथ मजदूर संगठनों का गठन भी आरम्भ हो रहा था। 1836 ईसवी तक उत्तरी समुद्र तट के नगरों में मजदूर यूनियनों की सदस्य संख्या लगभग तीन लाख हो गई थी। पूर्व के कुछ राज्यों में श्रमिकों के दलों ने सामाजिक सुधारों की माँग की। परन्तु इसके लिए राष्ट्रीय स्तर पर कोई भी प्रयास नहीं किया गया। श्रमिकों की माँगे वेतन और काम के घण्टों के सम्बन्ध में थी। वे सामाजिक सम्मान, सुविधाएँ और सुरक्षा चाहते थे। इन्होंने सार्वजनिक शिक्षा को नि:शुल्क करने, श्रमिक संघों को मान्यता प्रदान करने, बेईमान मालिकों और ठेकेदारों के विरुद्ध कार्यवाही करने तथा श्रम कानूनों में परिवर्तन करने की माँग की। 1835 ईसवी में मजदूरों को फिलाडेल्फिया में अपना सर्वाधिक प्रिय सुधार अर्थात् प्रभात से संध्या तक के दिन के स्थान पर दस घण्टे का दिन कराने में सफलता प्राप्त हो गई। यह इस प्रकार के सुधारों का प्रारम्भ मात्र था।

मजदूर आन्दोलन और मानवी सुधारों के लिए मजदूरों का उत्साह इस समय के प्रगतिशील आन्दोलन का अनिवार्य अंग था। वयस्क मताधिकार ने शिक्षण में समानता सम्बन्धी नवीन विचारों को जन्म दिया। दूरदर्शी राजनीतिज्ञों ने यह अनुभव किया कि व्यापक अज्ञान के रहते हुए मनुष्य मात्र को यदि मताधिकार दिया गया तो उसका परिणाम भयंकर होगा। न्यू यार्क के डीविट किलण्टन (Dewitt Clinton) , इलिनोय के अब्राहम लिंकन (Abraham Lincen)तथा मैसाचुसेट्स के होरे समान (Hore Saman) आदि के प्रयत्नों से नगरों के संगठित मजदूरों के निरन्तर और प्रबल आन्दोलन को बल प्राप्त हुआ। मजदूर नेताओं ने माँग की कि शिक्षा सब बालकों के लिए नि:शुल्क हो और स्कूलों को सरकारी खर्चे द्वारा चलाया जाये। 1830 ईसवी में फिलाडेल्फिया के श्रमिकों ने एक प्रस्ताव में कहा, ''समझने की वास्तविक शक्ति का व्यापक प्रसार किये बिना वास्तविक स्वतन्त्रता नहीं हो सकती। जब तक सबके लिए शिक्षा के समान अवसर सुलभ न किये जायेंगे तब तक स्वतन्त्रता एक अर्थहीन शब्द और समानता छायामात्र रहेगी।'' धीरे-धीरे एक के बाद दूसरे राज्य में कानून द्वारा यह व्यवस्था होती गई। 1840-49 ईसवी तक उत्तर में सर्वत्र सार्वजनिक स्कूलों की पद्धति सामान्य हो गई।

इस प्रकार जैक्सन के नेतृत्व में राष्ट्र में एक ऐसा वातावरण बना जिसमें लोग उदारवादी विचारों का समर्थन करने लगे। मताधिकारों के विस्तार, सामाजिक कानूनों के निर्माण, प्रत्यक्ष निर्वाचन की व्यवस्था, उदारवादी न्यायालय और राजनीतिक दलों के निश्चित स्वरूप ने अमेरिका में लोकतन्त्र की भावना को पुष्ट किया जो जैक्सन की महत्त्वपूर्ण देन है।

जैक्सन को अपने शासन के प्रारम्भ में ही आर्थिक और राजनीतिक समस्याओं का सामना करना पड़ा। उसकी यह नीति थी कि अनावश्यक व्यय को रोका जाये, राष्ट्रीय ऋण का भुगतान किया जाये और इन सबके साथ अमेरिकी संघ की रक्षा की जाये। अनावश्यक व्यय में कमी करने का अर्थ यह था कि आन्तरिक सुधारों के लिए हो रहे व्यर्थ के व्यय को रोका जाये।

(8) राष्ट्रीय निर्माण कार्यों के प्रति नीति - राज्यों में किये जा रहे सुधार कार्यों में संघीय सरकार द्वारा अनुदान प्रदान करना आन्तरिकसुधारों की श्रेणी में आता था। 1796 ईसवी में एबेनेजर जेन (Ebenezer Zane) को व्हिलिंग-वर्जीनिया (Wheeling- Virginia) से मेजविले केन्टकी (Maysiville Kentucky) तक सड़क निर्माण के लिए भूमि का अनुदान दिया गया। काम्बरलैण्ड रोड (Camberland Road) के निर्माण के कार्य को 1806 ईसवी में कांग्रेस द्वारा स्वीकृति प्रदान की गई और समय-समय पर उसके विस्तार के लिए अनुदान दिया जाता रहा। इस प्रकार के अनुदान राज्यों को भी प्रदान किये गये। 1817 ईसवी में आन्तरिक सुधारों की इस व्यवस्था को धक्का लगा। कैलुहन ने इसे प्रस्तावित किया परन्तु मेडीसन ने उस पर वीटो (Veto) कर दिया। एडम्स के काल में आन्तरिक सुधारों पर अत्यधिक धन व्यय किया जाने लगा। 20 सितम्बर, 1830 ईसवी को राजकोप-सचिव द्वारा प्रस्तुत प्रतिवेदन के अनुसार आन्तरिक सुधार की योजनाओं पर लगभग अड़सठ करोड़ डालर व्यय किया जा चुका था।

जैक्सन इस व्यवस्था को समाप्त करना चाहता था। यद्यपि जब वह सीनेटर था तब उसने अनेक बार आन्तरिक सुधारों के पक्ष में मतदान किया था परन्तु क्ले और एडम्स के प्रति अपने व्यवहार से अब वह दृढ़ संरचनावादी (Strict Constructionist) बन गया था। अपने उद्घाटन-भाषण में भी उसने इस ओर संकेत किया था, किन्तु साथ में यह भी कहा था कि राष्ट्रीय महत्ता के निर्माण कार्यों में संघ पूँजी लगायेगा। दिसम्बर, 1829 ईसवी में कांग्रेस को भेजे गये अपने प्रथम सन्देश में उसने अपनी नीति को अधिक स्पष्ट किया। उसने कहा कि संघ का प्रत्येक सदस्य राज्य नहरों और सड़कों के निर्माण कार्य से लाभान्वित होगा। उसने संघीय अधिशेप को कांग्रेस में उनके प्रतिनिधित्व के अनुपात में राज्यों में बांटने का सुझाव दिया ताकि राज्य इन कार्यों को सम्पन्न कर सके। उसने यह भी घोपित किया कि संघ की सफलता इसी में है कि वह राज्यों की गतिविधियों पर नजर रखे एवं उनका सहायक बने। संघ के निर्माताओं की भी यही इच्छा थी कि राज्यों की सर्वोच्चता की रक्षा करनी है। इस प्रकार जैक्सन ने आन्तरिक सुधारों को राज्यों के क्षेत्राधिकार के अन्तर्गत माना और वह उन पर अनावश्यक व्यय में कमी करना चाहता था।

मई, 1830 ईसवी में कांग्रेस ने विधेयक पारित कर संघीय सरकार को यह निर्देश दिया कि वह उस कम्पनी के मूल धन को प्राप्त कर ले जो कि केंटकी में मेजबिले से लेक्सिंगटन तक एक टर्न पाइक्स अथवा चौकियों वाली सड़क का निर्माण कर रही थी। इस अध्यादेश के समर्थकों ने अपना पक्ष में यह तर्क प्रस्तुत किया कि यह राष्ट्रीय मार्ग है और उसकी अनेक शाखाओं द्वारा अनेक नगरों से सम्पर्क स्थापित हो जायेगा। इसके विपरीत विरोधियों ने यह तर्क रखा कि यदि यह सड़क राष्ट्रीय महत्ता की है तो कोई भी सड़क राष्ट्रीय महत्ता की हो सकती है। विरोध करने वालों में पोल्क (Polk) सबसे अधिक उग्र था। टिलर (Tiller) ने भी इस विधेयक का विरोध किया। परन्तु विधेयक के पक्ष में निन्नानवें तथा विरोध में इकरानवें मत आये।

जैक्सन ने 27 मई, 1830 ईसवी को इस सुझाव को अपने विशेषाधिकार के द्वारा रद्द कर दिया। जैक्सन का निर्णय आंशिक रूप से संवैधानिक और आंशिक रूप से इस विचार पर आधारित था कि यह एक स्थानीय कार्य है न कि राष्ट्रीय। उसने यह घोषणा की कि पहले वह

राष्ट्रीय ऋण के भुगतान के लिए वचनबद्ध है। राष्ट्रपति द्वारा निषेधाधिकार के प्रयोग ने कांग्रेस में विवाद उत्पन्न कर दिया। केंटकी के सदस्य डेनियल (Daniel) ने अपने राज्य में व्याप्त निराशा के प्रति दु:ख व्यक्त किया, किन्तु साथ ही जनता की राय प्रकट होने तक राष्ट्रपति का समर्थन करना उचित समझा। पोल्क, बारबर (Barbar) तथा बेल (Bell) ने जोरदार शब्दों में राष्ट्रपति के इस कदम को उचित ठहराया। किन्तु ओहायो के स्टेनबेरी (Stanbery) ने राष्ट्रपति के इस कदम की कटु आलोचना की और कहा कि यह जैक्सन का कार्य नही है यद्यपि इसमें जैक्सन की आवाज है, किन्तु यह कार्य वास्तविक में छोटे जादूगर वान ब्यूरेन का है।

जैक्सन द्वारा मेजबिले-लैक्सिंगटन रोड विधेयक पर निषेधाधिकार के प्रयोग से यह निष्कर्ष नहीं ग्रहण करना चाहिए कि यह सदैव आन्तरिक सुधारों के विरोध में था। उसने काम्बरलैण्ड (Camberland) मार्ग के प्रसार को स्वीकार किया तथा अलाबामा में सड़क निर्माण के लिए धन दिलवाया। सत्य तो यह है कि जितना धन नदियों, बन्दरगाहों और सड़कों के निर्माण कार्य में एडम्स के काल में व्यय हुआ उससे अधिक धन ऐसे कार्यों में जैक्सन के काल में हुआ परन्तु उसका मुख्य उद्देश्य यह था कि केवल राष्ट्रीय निर्माण कार्यों को संघीय सहायता प्राप्त होनी चाहिए अन्य कार्यों को नहीं। ऐसा करके उसने यातायात के साधनों के प्रसार का भार राज्यों पर डाल दिया। यही उसका उद्देश्य था।

(9) पश्चिमी राज्यों में भूमि के विक्रय की समस्या एवं निरस्त्रीकरण (निष्फलीकरण) का सिद्धान्त - पश्चिम के राज्यों में भूमि का प्रश्न प्रमुख था। पश्चिमी क्षेत्र के लोग भूमि के मूल्य में कमी के पक्षपाती थे। पश्चिमी में ऐसे अनेक भू -भाग थे जिन्हें सवा डालर प्रति एकड़ की न्यूनतम कीमत पर भी कोई खरीदना नहीं चाहता था। इसी कारण लोग बीच-बीच में बस गये और स्थान-स्थान पर वीरान और बंजर भूमि दिखाई देती थी। इसके अतिरिक्त एक समस्या यह थी कि कुछ भूमि पर सीमावर्ती लोगों ने बलात् अधिकार कर लिया था। वे यह चाहते थे कि सरकार उन्हें न्यूनतम मूल्य पर भूमि का अधिकार दे दे।

भूमि के प्रश्न ने अमेरिका की राजनीति को प्रभावित किया। जैक्सन के विरोधी क्ले ने यह सुझाव प्रस्तुत किया कि भूमि की बिक्री से प्राप्त होने वाली धन राशि को राज्यों में सार्वजनिक कार्य और शिक्षा के लिए बाँट दिया जाये तथा भूमि से सम्बन्धित राज्यों को विशेष अनुदान दिया जाये। इस सुझाव से अमेरिकी राजनीति में नया मोड़ आया। दक्षिण के राज्य पश्चिम के राज्यों को भूमि बेचने का अधिकार देना चाहते थे। किन्तु साथ ही वे तट करों के प्रश्न पर उनका समर्थन भी चाहते थे। उत्तर के राज्य संरक्षण के पक्ष में थे और वे अपने हित में दक्षिण का समर्थन चाहते थे।

1829 ईसवी में कनेक्टिकट के सीनेटर फुट (Foot) ने सार्वजनिक भूमि के विक्रय की जाँच करने और उसकी बिक्री को रोकने की माँग की। बेन्टन ने फुट का विरोध किया। उसने 1830 ईसवी में कांग्रेस के समक्ष प्रस्ताव रखा कि जो भूमि बेचने के लिए रखी गई हो और निर्धारित समय में नहीं बिक पायी हो तो उसके मूल्य में कमी कर दी जानी चाहिए। 7 मई, 1830 ईसवी को अमेरिकी सीनेट ने इस प्रस्ताव को स्वीकार कर उदार भूमि-नीति का शुभारम्भ किया। अभी

इस प्रश्न का उचित व अन्तिम समाधान नहीं हुआ था। आखिर 1841 ईसवी में कांग्रेस ने एक कानून पास किया जिसके अन्तर्गत कोई परिवार का मुखिया अपने परिवार को एक सौ साठ करोड़ एकड़ भूमि पर बसा सकता था और बाद में उसे बिना नीलामी के न्यूनतम कीमत पर खरीद सकता था।

निरस्तीकरण का सिद्धान्त अमेरिकी इण्डियनों के प्रश्न से आरम्भ हुआ और तटकर प्रश्न को लेकर अपनी चरम स्थिति पर जा पहुँचा।

अमेरिकी इण्डियनों का प्रश्न जैक्सन के काल में एक मुख्य समस्या के रूप में था। अमेरिकी इण्डियन जार्जिया और दक्षिण पश्चिम के मुख्य भूमिधर थे और उनकी संख्या लगभग तिरेपन हजार थी। अमेरिकी संविधान में इनकी स्थिति स्पष्ट नहीं थी। उन्हें न तो अमेरिकी नागरिकता प्रदान की गई थी और न ही उन पर किसी प्रकार का कर लगता था। अमेरिकी कांग्रेस को इन इण्डियनों के साथ व्यापार को नियमित करने का अधिकार था। प्रारम्भ से ही संघीय सरकार इनके निष्कासन की नीति का पालन कर रही थी।

जब जार्जिया ने अपना पश्चिमी क्षेत्र संघ को समर्पित किया था तब उस राज्य की यह स्पष्ट धारणा थी कि इन आदिवासीयों को पूर्णरूप से उन्मूलित कर दिया जायेगा। जार्जिया के क्षेत्र में रहने वाले अमेरिकी इण्डियन सभ्य थे। वे अपनी भूमि का परित्याग करने के लिए तत्पर नहीं थे। अत: संघ सरकार इस दिशा में धीमी गति से कार्य कर सकी। जार्जिया संघ-सरकार की इस धीमी नीति से असन्तुष्ट था। वह आदिवासियों का शीघ्र निष्कासन चाहती थी। 1826 ईसवी में संघीय सरकार ने चिरोकी कबीलों को राज्य के पश्चिमी सीमा की एक पट्टी को छोड़ कर शेष सभी भूमि का त्याग करने के लिए राजी कर लिया। किन्तु जार्जिया इससे सन्तुष्ट नहीं था। 1826 ईसवी में जार्जिया के गवर्नर जार्ज एम. ट्रूप (George M. Troup) ने संघीय सरकार पर वचन भंग करने का आरोप लगाया और इण्डियनों को भूमि का सर्वेक्षण का आदेश दिया। तत्कालीन राष्ट्रपति एडम्स ने जार्जिया के विरुद्ध सेना के प्रयोग की धमकी दी तो जार्जिया के गवर्नर ने उसे स्वीकार कर लिया और गृह युद्ध की आशंका हो गई। किन्तु चेरोकियों कबीले के मिसिसीपी से परे हट जाने से यह संकट टल गया।

कुछ समय पश्चात् चेरोकियों ने जार्जिया में एक स्वतन्त्र राज्य के रूप में अपने को संगठित करने का प्रयास किया। 1827 ईसवीं में उन्होंने एक संविधान को स्वीकार कर अपने आपको स्वतन्त्र घोषित किया। जार्जिया ने शीघ्र चेरोकियों के विरुद्ध कदम उठाये और जार्जिया के कानूनों की सीमा को चेरोकियों तक बढ़ा दिया।

चेरोकियों के समर्थकों ने यह मामला सर्वोच्च न्यायालय में उठाया। सर्वोच्च न्यायालय ने जार्जिया को निर्देश दिया कि वह अपने कानूनों को चेरोकियों पर लागू न करे और न ही उनकी भूमि का अपहरण करे। सर्वोच्च न्यायालय ने चेरोकियों के भूमि सम्बन्धी अधिकार को स्वीकार किया और कहा कि केवल उनकी इच्छा से ही भूमि ली जा सकती है। एक अन्य मामले में सर्वोच्च न्यायालय ने यह निर्देश दिया कि जार्जिया के किसी भी व्यक्ति को चेरोकियों की भूमि में

प्रवेश करने का अधिकार नहीं है। जार्जिया ने सर्वोच्च न्यायालय के इस आदेश का उल्लंघन किया और न्यायालय के समक्ष उपस्थित होने से इन्कार कर दिया।

राष्ट्रपति जैक्सन ने इन मामलों में न्यायालय के निर्णयों को लागू करने के लिए कदम उठाने से इन्कार कर दिया और यह कहा कि न्यायाधीश मार्शल ने निर्णय दिया है और वही उसको लागू भी करायें।

जार्जिया का यह कदम संघीय सत्ता के निरस्तीकरण का एक पूर्वोदाहरण था। किन्तु इस विवाद ने कभी राष्ट्रीय रूप धारण नहीं किया। सभी लोग चेरोकियों का निष्कासन अनिवार्य मानते थे और इसलिए जार्जिया के प्रति उनकी सहानुभूति थी। यद्यपि वे जार्जिया द्वारा अपनाये जाने वाले साधनों से सहमत नहीं थे। अमेरिकी इण्डियन विभिन्न राज्यों में अनावश्यक समस्याएँ उत्पन्न करते थे अतः अन्य राज्य भी इन्हें निष्कासित करने के लिए प्रयत्नशील थे। जैक्सन इस मामले को अस्थायी मामला समझता था और उसे राष्ट्रीय प्रश्न बनाने के पक्ष में नहीं था। अतः जार्जिया की संघीय सत्ता को सफलतापूर्वक चुनौती देने का अवसर प्राप्त हुआ। फलस्वरूप चेरोकियों को अपनी भूमि से हटना पड़ा। जैक्सन ने इण्डियनों के साथ सन्धियाँ कर अपने देशवासियों के लिये भूमि उपलब्ध कराई। चेरोकियों ने पचास लाख डालर के बदले में अपनी समग्र भूमि का समर्पण कर दिया। परन्तु सैक (Sac) और फॉक्स (Fox) के आदिवासियों ने न केवल अपनी भूमि त्यागने से इन्कार किया वरन् अपने नेता ब्लेक हाल (Black Hall) के नेतृत्व में संघर्ष भी किया। 1832 ईसवी में हुए युद्ध में बहुत लोग मारे गये। इस हत्याकाण्ड के पश्चात् भी सेमिनोल जाति के इण्डियनों के साथ सात वर्ष तक संघर्ष चलता रहा और उसकी समाप्ति 1842 ईसवी में उस जाति के सर्वनाश के साथ ही हुई।

(10) तट करों के सम्बन्ध में निरस्तीकरण का सिद्धान्त – निरस्तीकरण का सिद्धान्त तट करों के प्रश्न के सन्दर्भ में अपनी चरम सीमा तक जा पहुँचा। तट करों के विवाद में दलगत राजनीति और व्यक्तिगत कारणों का भी समावेश था। राष्ट्रपति जैक्सन और कैलुहन दोनों के पारस्परिक सम्बन्ध सुमधुर नहीं थे और तटकरों के प्रश्न तथा अमेरिकी संघ के स्वरूप को लेकर दोनों में मौलिक मतभेद उत्पन्न हो गये। दक्षिण के राज्य ऊँचे तट करों के विरोधी थे और यही नहीं चाहते थे कि संरक्षण देने की इच्छा से अनावश्यक रूप से तट करों में वृद्धि की जाये। कैलुहन दक्षिणी लोगों का नेता था और उनके स्वार्थों के प्रश्न पर जैक्सन के साथ समझौता करने के लिए तत्पर नहीं था।

1816 ईसवी में संरक्षण प्रदान करने की दृष्टि से जब तट कर लगाये गये थे तो स्वयं कैलुहन ने उनका समर्थन किया था। उस समय उसका विश्वास था कि अन्य राज्यों की भाँति दक्षिण के राज्यों का भी औद्योगिक विकास हो जायेगा परन्तु दक्षिण कैरोलिना का मुख्य व्यवसाय दक्षिण के अन्य राज्यों की भाँति अब भी कपास की खेती ही था। कपास की खेती की वृद्धि से उसकी कीमते गिरने लगीं जिससे दक्षिण कैरोलिना की बढ़ती हुई जनसंख्या निर्धन होने लगी। परिणामस्वरूप दास और अन्य लोग पश्चिम की ओर जाने लगे। जनसंख्या की इस कमी ने आर्थिक पतन में और अधिक योग दिया। अतः दक्षिण कैरोलिना ने तट करों का विरोध करना आरम्भ किया।

संरक्षण के सब लाभ उत्तर के निर्माता कारखानेदारों को पहुँच रहे थे। परन्तु ऊँचे मूल्य का बोझ दक्षिण के प्लाण्टरों पर पड़ता था। ज्यों-ज्यों कांग्रेस कानूनों द्वारा संरक्षण-करों की दरें ऊँची करती जाती थी त्यों-त्यों समस्त देश तो सम्पन्न होता जाता था, किन्तु दक्षिण कैरोलिना की समृद्धि घटती जाती थी। अत: दक्षिण कैरोलिना में तट करों का विरोध स्वाभाविक था।

एक ओर दक्षिण कैरोलिना दक्षिण के राज्यों का ऊँचे तट करों के विरुद्ध नेतृत्व कर रहा था वहाँ दूसरी और पश्चिमी, पूर्वी और मध्य राज्यों के उद्योगपतियों के संरक्षण के पक्ष में भावना बढ़ रही थी। वे एक आन्दोलन कर रहे थे जो संरक्षणात्मक आन्दोलन के नाम से प्रसिद्ध है। यह आन्दोलन 1816 से 1830 ईसवी तक चला। इस काल में पूर्वी राज्यों ने पश्चिम और मध्य के राज्यों के साथ मिल कर क्ले ने अमेरिकन व्यवस्था का समर्थन किया। 1824 ईसवी में तट कर अधिनियम स्वीकार किया गया जिसके अन्तर्गत तट करों की दरों में वृद्धि की गई। 1827 ईसवी में हेरिसबर्ग (Harisburg) में हुए सम्मेलन में तट करों को और अधिक ऊँचा करने की माँग की गई।

1828 ईसवी में राष्ट्रपति के चुनाव के समय जैक्सन के समर्थकों ने तट करों के सम्बन्ध में दुहरी नीति का अवलम्बन किया। उत्तर के मतदाताओं के समक्ष उन्होंने जैक्सन को ऊँचे तट करों का समर्थक बताया जबकि दक्षिण में यह प्रचार किया कि जैक्सन ऐसी नीति का विरोधी है।

1828 ईसवी में पुन: तट कर की दर में वृद्धि की गई। इस वृद्धि के द्वारा न केवल उद्योगपतियों को ही संरक्षण प्रदान किया गया वरन् पश्चिमी क्षेत्र में उत्पादित वस्तुओं ऊन व सन को भी संरक्षण प्रदान किया गया। इस अधिनियम के पारित होने से शुल्क दर इतनी अधिक बढ़ गई कि उसको घृण्य शुल्क (Tariff of Abomination)की संज्ञा प्रदान की गई। इस विधेयक पर टिप्पणी करते हुए एक सदस्य ने व्यंग्य में कहा कि इस विधेयक में किसी प्रकार से भी उत्पादकों का उल्लेख नहीं हैं बल्कि केवल अमेरिका के राष्ट्रपति का उत्पादन बढ़ाने का प्रयत्न है।

1828 ईसवी के तट कर सम्बन्धी अधिनियम के विरुद्ध दक्षिण के राज्यों में विशेषकर दक्षिण कैरोलिना में तीव्र प्रतिक्रिया हुई। दिसम्बर, 1828 ईसवी में वहाँ के विधायक सदनों मे कैलहुन रचित व्याख्या और प्रतिरोध का समर्थन करते हुए अपने निरस्तीकरण के अधिकार की घोषणा की, किन्तु वह अधिकार शीघ्र ही कार्यान्वित नहीं हो पाया। इसका कारण यह था कि दक्षिण कैरोलिना नये शासन की नीति की प्रतीक्षा कर रहा था। उसको यह आशा थी कि कैलुहन ही इस नीति का निर्धारण करेगा और जैक्सन के पश्चात् वही राष्ट्रपति बनेगा। परन्तु ऐसा नहीं हो सका और दक्षिण के लोगों की आशाओं पर तुषारापात हो गया। अब वे कैलुहन पर दबाव डालने लगे और संघ से पृथक् होने की माँग करने लगे। कैलुहन ने इस स्थिति का सामना करने के लिए निरस्तीकरण का सिद्धान्त प्रस्तुत किया।

(11) कैलुहन द्वारा निरस्तीकरण के सिद्धान्त के समर्थन में दिये गये तर्क – निरस्तीकरण सम्बन्धी सिद्धान्त प्रस्तुत करते समय उसने यह स्वीकार किया कि संघीय शासन व्यवस्था में राजकीय शक्तियाँ स्थानीय तथा संघीय सरकार के बीच विभाजित होती हैं, किन्तु वास्तविक

सम्प्रभुता एक में ही निहित होती है। इस तर्क के आधार पर उसने यह सिद्धान्त रखा कि अन्तिम सार्वभौमिकता अलग-अलग राज्यों में निहित है न कि संघ में। अपने मन्तव्य के पक्ष में उसने ऐतिहासिक और विश्लेषणात्मक तर्क प्रस्तुत किये। उसने तर्क दिया कि अमेरिकी उपनिवेश सदैव पृथक् राजनीतिक इकाई के रूप में रहे। क्रान्ति के परिणामस्वरूप वे स्वतन्त्र व सार्वभौम राज्यों में बदल गये। परिसंघ की धाराओं के द्वारा वे एक संघ में आबद्ध हो गये। संविधान का निर्माण भी इन्हीं राज्यों के द्वारा किया गया और पृथक्-पृथक् राज्यों ने संविधान का अनुसमर्थन किया। इन राज्यों ने अपने कार्यों के कुछ अंशों को संघीय सरकार को सौंपा न कि सम्प्रभुता को।

इसी प्रकार विश्लेषणात्मक तर्क प्रस्तुत करते हुए उसने यह कहा कि संविधान वास्तव में सर्वोच्च कानून नहीं है। यह तो एक समान स्तर के विविध राज्यों के बीच एक अनुबन्ध मात्र है। उसने कहा कि संविधान के अन्तर्गत निर्मित केन्द्रीय सरकार में सार्वभौमिकता निहित नहीं हो सकती है। वास्तव में वह तो विभिन्न सार्वभौम राज्यों का प्रतिनिधि है। अमेरिका का एक राष्ट्र के रूप में कोई अस्तित्व नहीं है।

सरकार के उद्देश्यों और मौलिक प्रकृति के आधार पर भी उसने अपने सिद्धान्त को पुष्ट करने का प्रयास किया। उसने कहा "स्वतन्त्र सरकार का उद्देश्य अपने सभी नागरिकों को स्वतन्त्रता और न्याय प्रदान करना है।" परन्तु अब उसे इस निष्कर्ष पर पहुँच जाना पड़ा कि सरकारी नीति का आधार शक्तिशाली लोगों का समर्थन करना है न कि निर्बलों की रक्षा। जो सत्ता में हैं वे अपनी सत्ता और विशेषाधिकारों को सुरक्षित रखने के लिए और अधिक प्रयत्नशील हैं। इस प्रकार सांख्यिक बहुमत अत्याचारी हो जायेगा और अल्पसंख्यकों को कुचलने के लिए संविधान का उल्लंघन भी करने लगेगा। अत: वह इस बात से सन्तुष्ट था कि अल्पसंख्यकों के हितों की रक्षा निरस्तीकरण के सिद्धान्त का पालन करने और वास्तविक सम्प्रभुता राज्य के हाथों में निहित होने से ही हो सकती थी।

इस प्रकार कैलुहन ने यह प्रस्तावित किया कि संघ प्रभुसत्ता-सम्पन्न राज्यों का एक परिवार है। संविधान की व्याख्या करने की अन्तिम सत्ता राज्यों में निहित है। अत: प्रत्येक राज्य को यह अधिकार है कि कांग्रेस द्वारा पारित कानून को यदि वह संविधान के विरुद्ध समझता है तो अपनी राज्य सीमाओं के अन्तर्गत उसे गैर कानूनी घोषित कर दे। कैलुहन की इस योजना को निरस्तीकरण की संज्ञा दी गई।

कैलुहन के इस सिद्धान्त में ऐतिहासिक, सैद्धान्तिक व व्यावहारिक दृष्टि से अनेक कमियाँ विद्यमान थीं। ऐतिहासिक आधार पर यह सिद्धान्त अत्यधिक कमजोर था। क्रान्ति काल में उपनिवेशों ने कभी भी सार्वभौम इकाई के रूप में कार्य नहीं किया था। यद्यपि परिसंघ की धाराओं (Articles of Confederation) में प्रत्येक राज्य को सार्वभौम राज्य स्वीकार किया गया था किन्तु परिसंघ की धाराओं में कुछ ऐसे कार्य जैसे युद्ध, सन्धि और शान्ति की स्थापना कांग्रेस को दिये गये थे, राज्यों को नहीं। इन कार्यों के बिना कोई भी राज्य पूर्ण रूप से सार्वभौम नहीं हो सकता था।

कैलुहन ने इस बात को विस्मृत कर दिया कि संवैधानिक कन्वेंशन के द्वारा एक ऐसी सरकार की स्थाना की गई थी जिसका वास्तविक स्वरूप राष्ट्रीय था। संघ को राज्य के हस्तक्षेप के बिना कार्य करने का अधिकार दिया गया था और सभी संघीय व्यवस्थाओं को राज्यों के कानूनों से ऊपर माना गया था।

स्वयं निरस्तीकरण के सिद्धान्त के अनुपालन में अनेक व्यावहारिक कठिनाइयाँ उत्पन्न हो सकती थीं। व्यवहार में लाने पर समग्र संवैधानिक व्यवस्था अस्त-व्यस्त हो सकती थीं। इससे राज्यों को संघीय कानून को चाहे वह कितना ही महत्त्वपूर्ण क्यों न हो, अस्वीकार करने का अधिकार प्राप्त हो जाता। इससे संघीय सत्ता के समाप्त होने या टूट जाने की स्थिति उत्पन्न हो सकती थी।

इस सिद्धान्त में इस तथ्य को भी भुला दिया गया कि चालीस वर्षों के संवैधानिक विकास ने संवैधानिक विवादों को समाप्त करने के तरीकों को जन्म दिया है। अमेरिकी सर्वोच्च न्यायालय को सभी प्रकार के विवादों के समाधान का अधिकार दिया गया था और संघीय कानूनों को राज्य के कानूनों स ऊपर माना गया था। यह व्यवस्था सुचारु रूप से कार्य कर रही थी। निरस्तीकरण के सिद्धान्त को स्वीकार करने का अर्थ यह था कि इस व्यावहारिक व्यवस्था को अस्वीकार कर दिया जाता जो उचित नहीं था। संक्षेप में कैलुहन और उसके समर्थक 1787 ईसवी से अब तक विकसित हुई व्यवस्था से एक भिन्न व्यवस्था चाहते थे जिसके अनुसार सार्वभौमिकता राज्यों में निहित हो और राज्यों को संघ द्वारा पारित किसी भी नियम को निरस्त करने का अधिकार हो।

कैलुहन के इस सिद्धान्त को तत्कालीन राजनीतिक व आर्थिक व्यवस्था के परिप्रेक्ष्य में भी देखा जाना चाहिए। वह स्वयं अमेरिका का राष्ट्रपति बनना चाहता था और यह तभी सम्भव था जबकि वह दक्षिण राज्यों के स्वार्थों के लिए संघर्ष करे। उसने यह स्पष्ट किया कि आयात पर लगाये जाने वाले कर दक्षिणी राज्यों के लिए भारी पड़ते हैं, क्योंकि उत्तर के राज्यों के उत्पादक संरक्षण के कारण अपना माल अच्छी कीमतों पर बेचकर क्षतिपूर्ति कर लेते हैं। दक्षिण के राज्यों की समस्या यह था कि वे निर्यात अधिक करते थे। यूरोप के बाजारों में अमेरिकी तट करों के प्रत्युत्तर में उनके निर्यात माल पर भारी तट कर लगाये जाते थे जिससे यूरोप के बाजारों में उनको बेचना कठिन हो जाता था। इस प्रकार दक्षिण के राज्यों का हर स्थिति में नुकसान था। यूरोप से जो माल दक्षिण में जाता था उसे उत्तर का व्यापारी लाता था। वह अपने इस कार्य में अनुचित लाभ कमाता था। यूरोप में आने वाले माल पर चुँगी उत्तर में लगती थी और इस प्रकार प्राप्त होने वाली धनराशि उत्तर के राज्यों पर ही खर्च की जाती थी। कैलुहन का विचार था कि दक्षिण के किसी राज्य में यदि पृथक् चुंगी घर होता तो उससे बड़ी मात्रा में आय हो सकती थी और यदि उत्तर से आने वाले माल पर भी कर लगाया जाता तो यह धन राशि और अधिक बढ़ सकती थी। इस प्रकार कैलुहन ने दक्षिण के मामलों को गम्भीर रूप दे दिया और इसी सन्दर्भ में अपने निरस्तीकरण के सिद्धान्त को प्रस्तुत किया।

निरस्तीकरण की चर्चा के साथ अमेरिका के वास्तविक विधान की चर्चा होने लगी। दक्षिण कैरोलिना के सीनेटर हैन (Hyne) ने कैलुहन के सिद्धान्त का समर्थन किया। हैन ने दक्षिण और

पश्चिम राज्यों से यह कहा कि वे सब मिल कर न केवल भूमि नीति का विरोध करें वरन् प्रशुल्क नीति का भी विरोध करें। उसने निरस्तीकरण के सिद्धान्त के समर्थन की पुरजोर माँग की। हैन द्वारा निरस्तीकरण को जो समर्थन किया गया था उसका उत्तर सीनेट में मैसाचुसेट्स राज्य के सीनेटर वेब्स्टर ने दिया। जनवरी, 1830 ईसवी के उसने अपने भाषण में यह स्पष्ट किया कि अमेरिकी विधान राज्य सरकारों की देन नहीं है। विधान-निर्माताओं का उद्देश्य अमेरिकी सरकार को राज्यों के मतों पर आधारित करने का कदापि नहीं था। अमेरिका का विधान जनता द्वारा जनता के लिए था और उसी के प्रति उत्तरदायी था। उसने अपने भाषण में स्वतन्त्रता की अपेक्षा संघ को महत्ता प्रदान की, किन्तु साथ ही यह भी कहा कि स्वतन्त्रता और संघ और सदैव एक रहेंगे, उन्हें कभी अलग नहीं किया जा सकता।

इस सम्बन्ध में अभी तक राष्ट्रपति जैक्सन के विचार स्पष्ट नहीं थे। केवल उसके निकट रहने वाले लोगों को ही उसके विचारों की जानकारी थी। अमेरिका जनता को उसके विचारों की जानकारी 13 अप्रैल, 1830 ईसवी के दिन हुई। उस दिन जेफरसन के जन्म दिवस के अवसर पर एक भोज का आयोजन किया गया था। जिसमें जैक्सन की शुभकामना के जाम (Toast) प्रस्तुत किये गये। निरस्तीकरण के पक्ष में भी जाम प्रस्तुत किये गये, किन्तु चौबीस टोस्ट प्रस्तावित हो जाने के पश्चात् संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति के रूप में जैक्सन खड़ा हुआ और अपना टोस्ट प्रस्तावित करते हुए उसने घोषणा की, "हमारा संघ इसे सुरक्षित रखना है।" जैक्सन के तुरन्त पश्चात् कैलुहन ने अपना टोस्ट प्रस्तुत किया और कहा "संघ स्वतन्त्रता के बाद सबसे प्रिय है।" इस प्रकार दोनों में मतभेद स्पष्ट हो गये और साथ ही इस प्रश्न पर अमेरिकी जनता राष्ट्रपति के उद्गारों को भी जान चुकी थी।

जैक्सन ने अब यह निश्चय किया कि संघ के वैधानिक अधिकारों का पोषण ही संघ की एकता के लिए हितकर होगा। अत: उसने दिसम्बर, 1831 में कांग्रेस से एक सन्देश द्वारा प्रशुल्क में परिवर्तन की सिफारिश की। उसके समर्थन में यह कहा कि व्यय की अपेक्षा आय अब अधिक है और राष्ट्रीय ऋण का भी भुगतान हो रहा है। अमेरिकी कांग्रेस ने 1832 ईसवी में तटकरों का नया कानून पारित कर दिया जिस पर राष्ट्रपति जैक्सन ने नि:संकोच स्वीकृति प्रदान कर दी। इस विधेयक से यद्यपि तट करों की दर में कमी की गई थी, किन्तु अब भी वे दक्षिण कैरोलिना के हित में नहीं थे।

(12) निष्प्रभावन संकट (Nullification Crisis) - दक्षिण कैरोलिना में निरस्तीकरण के समर्थकों ने अब इस सिद्धान्त को रचनात्मक रूप देने का निश्चय किया। दक्षिण कैरोलिना के लोगों ने राज्याधिकार रक्षक दल (State Rights Party) संगठित किया। यह दल उन लोगों का प्रतिनिधि था जो निरस्तीकरण के सिद्धान्त में विश्वास करता था। नवम्बर, 1832 ईसवी में राज्य के प्रतिनिधियों का कन्वेन्शन हुआ जिसमें एक सौ छब्बीस के विरुद्ध एक सौ छत्तीस मतों से निरस्तीकरण के सिद्धान्त को स्वीकार करते हुए एक अध्यादेश स्वीकार कर लिया गया। इस अध्यादेश द्वारा 1828 और 1832 ईसवी के प्रशुल्क सम्बन्धी कानूनों को राज्य की सीमा में असंवैधानिक घोषित किया गया। अत: वे राज्य की सीमा के अन्तर्गत लागू नहीं किये जा सकते

थे। राज्य के सभी अधिकारियों को आज्ञा दी कि गई वे इस अध्यादेश के पालन करने की शपथ लें। राज्य ने यह भी धमकी दी कि यदि कांग्रेस ने उसके विरुद्ध बल प्रयोग का कोई कानून पारित किया तो वह संघ से अलग हो जायेगा।

दक्षिण कैरोलिना के इस कदम के पश्चात् समग्र राष्ट्र की आँखें जैक्सन पर टिकी थी। 10 दिसम्बर, 1832 ईसवी को उसने दक्षिण कैरोलिना के लोगों के प्रति घोषणा की जिसमें उसने निरस्तीकरण के सिद्धान्त को अस्वीकार किया और सभी प्रबुद्ध और देशभक्त लोगों को राष्ट्रीय संकट उत्पन्न करने वाले इस सिद्धान्त का विरोध करने की अपील की। उसने अपनी घोषणा में कहा कि राज्य के संघ से पृथक् होने के अधिकार को स्वीकार करने का अर्थ संयुक्त राज्य अमेरिका के अस्तित्व को अस्वीकार करना होगा। उसने यह भी घोषित किया कि किसी भी राज्य को संघ द्वारा निर्मित कानून को अवैध घोषित करने का अधिकार नहीं है। राज्य के इस अधिकार को स्वीकार करने का अर्थ उन सभी नियमों और उद्देश्यों का उल्लंघन करना होगा जिनके आधार पर संघ का निर्माण किया गया था। उसने निरस्तीकरण का अर्थ विद्रोह और युद्ध से लिया और यह विचार व्यक्त किया कि संघ और दूसरे राज्यों को भी अधिकार होगा कि वे उसे दबा दें। इस प्रकार जैक्सन दक्षिण कैरोलिना की चुनौती का सामाना करने के लिए पूर्ण रूप से तत्पर हो गया।

राष्ट्रपति जैक्सन ने 16 जनवरी, 1833 ईसवी को दक्षिण कैरोलिना के कदम की विधिवत् सूचना कांग्रेस को दी और ऐसे कदम उठाने की प्रार्थना की जिससे कि संविधान की सर्वोच्चता और संघ की अविभाज्यता बनी रह सके। उसने प्रशुल्क कानून के समर्थन में कांग्रेस से अतिरिक्त अधिकारों की माँग की ताकि आवश्यकता पड़ने पर सेना और नौ सेना का प्रयोग कर संघीय कानूनों को लागू किया जा सके।

अमेरिकी कांग्रेस ने राष्ट्रपति को अतिरिक्त साधनों से सुसज्जित करने के लिए शक्ति विधेयक (Force Bill) पारित किया। इस विधेयक के अन्तर्गत राष्ट्रपति को यह अधिकार दिया गया कि यदि केन्द्रीय कस्टम अधिकारियों को कार्य करने में किसी राज्य के द्वारा रोका जाये तो वह राष्ट्रीय सेना का उपयोग कर सकता है। इस प्रकार इस विधेयक ने राष्ट्रीय सरकार की सार्वभौमिकता को स्वीकार किया। संघीय सरकार के कानूनों की किसी भी राज्य द्वारा अवज्ञा करने पर उसके विरुद्ध शक्ति प्रयोग के अधिकारों को भी कांग्रेस ने स्वीकार किया। इस प्रकार कांग्रेस ने कैलुहन के सिद्धान्त को ठुकरा दिया।

राष्ट्रपति जैक्सन ने शक्ति विधेयक द्वारा प्राप्त अधिकारों के अन्तर्गत तुरन्त कार्यवाही की। नवम्बर, 1832 ईसवी में उसने सात छोटे जहाज और एक युद्ध पोत चार्ल्सटन भेजकर उन्हें आज्ञा दी कि वे आदेश मिलते ही कार्यवाही के लिए तत्पर रहें।

जब संघीय सरकार शक्ति के द्वारा दक्षिण कैरोलिना से निपटने के लिए कदम उठा रही थी तब दूसरी ओर उसकी स्थिति कमजोर हो रही थी। कैरोलिना के निरस्तीकरण के समर्थकों को यह आशा थी कि दक्षिण के अन्य राज्य भी उनका समर्थन करेंगे परन्तु दक्षिण के अन्य राज्यों ने दक्षिण कैरोलिना की कार्यवाही को अदूरदर्शितापूर्ण और असंवैधानिक बताया। फलस्वरूप राज्याधिकार दल ने जनवरी में एक सार्वजनिक सभा में यह घोषणा की कि कांग्रेस की आगामी

कार्यवाही तक निरस्तीकरण पर अमल नहीं किया जायेगा। मार्च, 1833 ईसवी में दक्षिण कैरोलिना के एक कन्वेन्शन में निरस्तीकरण सम्बन्धी अध्यादेश को विधिपूर्वक रद्द कर दिया गया।

इसी बीच कांग्रेस ने समझौतावादी नीति का पालन किया। शक्ति विधेयक पारित होने के साथ हेनरी क्ले ने मध्यमवर्गीय प्रशुल्क बिल (Compromising Tariff Bill) प्रस्तुत किया जो शीघ्र पारित हो गया। इस बिल के अनुसार आयात माल पर उसके मूल्य के बीस प्रतिशत से अधिक लगने वाला तट कर क्रमश: घटा कर हल्के करों के समान कर दिया जाता था। इस प्रकार क्ले के बीच-बचाव से समझौता हो गया और उसने लोगों के हृदय में अपना स्थान बना लिया। वह महान् शान्ति दूत बन गया। अमरिकी राष्ट्र एक महान् संकट से बच गया।

इस घटना क्रम के पश्चात् दोनों पक्षों ने विजयी होने का दवा किया। केन्द्रीय शासन बिना शर्त संघ की प्रभुता के सिद्धान्त के लिए प्रतिज्ञाबद्ध हो गया। जैक्सन को हर दृष्टि से लाभ हुआ। न्यू इंग्लैण्ड के लोग जो जैक्सन के विरोधी थे अब उसके पक्ष में हो गये। जैक्सन का विश्वास था कि उसने निरस्तीकरण की प्रवृत्ति को सदैव के लिए समाप्त कर दिया है लेकिन दक्षिण कैरोलिना में लोगों का अब भी विश्वास था कि उन्होंने विरोध करके अपनी बहुत सी माँगों को मनवा लिया है। दक्षिण के नेताओं ने देख लिया कि व्यवहार में निरस्तीकरण का प्रभाव कुछ नहीं होता इसलिए आगामी तीस वर्षों में वे इस बात पर बल देते रहे कि शिकायत होने पर किसी भी राज्य को संघ से पृथक् होने का अधिकार है।

(13) 1832 ईसवी का चुनाव एवं राष्ट्रीय बैंक का मुद्दा - 1832 ईसवी का चुनाव दो विशेषताओं के लिए प्रसिद्ध है। प्रथम तो इस चुनाव में मेसोनिक विरोधी दल (Anti Masonic Party) ने तीसरे दल के रूप में चुनाव में भाग लिया। दूसरा, इस चुनाव में जैक्सन विरोधी दलों ने बैंक ऑफ यूनाइटेड स्टेट्स को पुन: पट्टा देने के प्रश्न को मुख्य मुद्दा बनाकर चुनाव लड़ा।

एण्टी-मेसोनिक दल का उद्भव एक विचित्र स्थिति में हुआ था। न्यूयार्क के पश्चिम भाग में मेसन्स तथा अन्य लोगों की गुप्त संस्थाओं का निर्माण हुआ था। 1826 ईसवी में विलियम मोरगन (William Morgan) ने एक पुस्तक प्रकाशित कर इसका रहस्य खोल दिया। फलस्वरूप अमेरिका में इन गुप्त संस्थाओं के विरुद्ध प्रतिक्रिया हुई और अनेक युवकों ने मिलकर 1826 ईसवी में एक एण्टी-मेसोनिक दल का निर्माण किया जिनमें सीवर्ड (Seward), थुरलों (Thurlon)व वीड (Weed) प्रमुख थे। इस दल के प्रत्याशियों ने दो राज्यों में गवर्नर पद प्राप्त करने में भी सफलता प्राप्त की। 1832 ईसवी के राष्ट्रपति के निर्वाचन में दक्षिण के प्रमुख वकील विलियम विर्ट (William Wirt) को राष्ट्रीय अधिवेशन के द्वारा राष्ट्रपति पद के प्रत्याशी के रूप में चुना गया। इस दल के चुनाव में भाग लेने से राष्ट्रीय गणतन्त्र दल के मतों में कमी हुई। चुनाव के पश्चात् इस दल की भी समाप्ति हो गई।

परन्तु 1832 ईसवी के चुनावों में मुख्य निर्णायक प्रश्न बैंक ऑफ दी यूनाइटेड स्टेट्स का था। 1832 ईसवी में इस बैंक को पुन: पट्टा देने के प्रश्न पर एक संघर्ष प्रारम्भ हो गया। जैक्सन के नेतृत्व के लिए यह कठिन परीक्षा का अवसर था। 1791 ईसवी में यूनाइटेड स्टेट्स का प्रथम

बैंक हैमिल्टन के नेतृत्व में स्थापित हुआ था। उसे बीस वर्ष का पट्टा दिया गया था। यद्यपि इसकी कुछ पूँजी सरकार की थी परन्तु यह सरकारी बैंक नहीं था वरन् यह एक निजी बैंक था जिसका लाभांश उसके अंशधारियों में बंटता था। इसका उद्देश्य देश की मुद्रा का मूल्य स्थिर करने और व्यापार को प्रोत्साहन देने का होते हुए भी कुछ लोगों की यह धारणा थी कि सरकार कुछ सम्पन्न लोगों को विशेष रियायतें प्रदान कर रही है। 1811 ईसवी में जब बैंक का पट्टा समाप्त हुआ तब कांग्रेस ने उसे फिर जारी नहीं किया। आगामी कुछ वर्षों में बैंकिंग का रोजगार राज्यों द्वारा पट्टा प्राप्त बैंकों के हाथ में रहा। इन बैंकों द्वारा मुद्रा का अत्यधिक प्रसार किया गया। अत: उसका मूल्य अदा करना उनकी सामर्थ्य के बाहर हो गया। यह स्पष्ट हो गया था कि राज्यों के बैंक देश में सर्वत्र एक सी मुद्रा जारी करने में असमर्थ है। अत: 1816 ईसवी में पहले बैंक के समान अमेरिका के दूसरे बैंक को बीस वर्ष का पट्टा दिया गया।

यह बैंक अपनी स्थापना के आरम्भ से ही देश के नये भागों और कम सम्पन्न लोगों में अप्रिय रहा। इस बैंक के विरुद्ध यह तर्क प्रस्तुत किया गया कि देश की मुद्रा प्रणाली और साख पर बैंक का व्यवहारत: एकाधिकार है और वह देश के कुछ सम्पन्न लोगों के स्वार्थों का प्रतिनिधित्व करता है। बैंक का अध्यक्ष निकॉलस बिडल (Nicholus Biddle) अभिमानी और उग्र प्रवृत्ति का व्यक्ति था। वह अपने आपको एक सर्वोच्च संस्था के अध्यक्ष से कम नहीं समझता था। बैंक की स्वायत्तता के सम्बन्ध में इसके विचार अत्यधिक उग्र थे। वह उस पर किसी प्रकार के जन नियंत्रण को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं था। उसका विचार था कि अमेरिका के राष्ट्रपति का कार्य देश का प्रशासन चलाना है और बैंक का अध्यक्ष होने के नाते वित्तीय प्रशासन का संचालन उसके हाथ में है। उसके व्यवहार से छोटे बैंकों में भी सदैव आशंका व्याप्त रहती थी, क्योंकि वह किसी समय में राज्य के किसी भी छोटे और कमजोर बैंक का गला घोंट सकता था।

राष्ट्रपति जैक्सन भी आरम्भ से ही उस बैंक का विरोधी था। उसने अपने विचारों को 1829 और 1830 ईसवी में कांग्रेस को भेज गये सन्देशों में स्पष्ट रूप से प्रकट किया था। जैक्सन का उद्देश्य राष्ट्र की वित्तीय व्यवस्था पर नियंत्रण स्थापित करना था। उसकी मान्यता थी कि वास्तविक प्रजातन्त्र की स्थापना तभी हो सकती है जबकि देश की वित्त व्यवस्था जन साधारण के हित में हो। यह बैंक उद्योगपतियों और धनी वर्गों का हितकारी था तथा कुलीनतन्त्र; एकाधिकार और पूँजीवाद का प्रतीक था। जैक्सन इन प्रवृत्तियों के विरुद्ध था। जैक्सन के समर्थक केन्डल ने भी बैंक को कुलीन वर्ग के मस्तिष्क की संज्ञा दी। जैक्सन के अन्य समर्थक रोंजर टेनी ने कहा कि इस बैंक ने कुछ व्यक्तियों के हाथ में समस्त शक्ति को केन्द्रित कर दिया है जिसका वे लोग इस प्रकार उपयोग करते हैं कि जिसे कोई देख नहीं सकता, परन्तु अनुभव कर सकता है। स्पष्टत: जैक्सन और उसके समर्थक बैंक विरोधी भावनाएँ रखते थे।

जैक्सन की बैंक विरोधी भावना का कारण वित्तीय होने के साथ-साथ राजनीतिक भी था। 1832 ईसवी के निर्वाचन में बैंक का प्रश्न निर्णायक था। चुनाव के समय बैंक ने अपने पट्टे की अवधि बढ़ाने की प्रार्थना की। वास्तव में यह एक राजनीतिक चाल थी। बैंक के पट्टे की अवधि

की समाप्ति में अभी चार वर्ष शेष थे। इस समय प्रार्थना पत्र देने की आवश्यकता नहीं थी। चुनाव के अवसर पर यह प्रश्न राष्ट्रीय गणतन्त्र दल के नेता क्ले ने जान बूझ कर खड़ा किया था। उसका विश्वास था कि बैंक के प्रश्न को लेकर वह चुनाव जीत जायेगा। चुनाव में क्ले को बैंक और उसके साधनों का पूर्ण समर्थन प्राप्त हुआ। उस समय अमेरिका के दो तिहाई अखबारों पर भी बैंक का प्रभाव था, क्योंकि उन्हें बैंक से विज्ञापन प्राप्त होते थे। इसके अतिरिक्त दूसरे धनी वर्ग और सम्पत्ति के मालिक भी क्ले का समर्थन कर रहे थे। इस प्रकार पूँजी और अखबार दोनों ही जैक्सन के विरुद्ध थे, किन्तु जैक्सन के प्रजातन्त्रीय दल के साथ साधारण जनता विपुल संख्या में थी, किन्तु सम्पन्नता की दृष्टि से उनकी स्थिति कमजोर थी। चुनाव अभियान काल में जैक्सन के विरोधियों ने एक व्यंग्य चित्र प्रकाशित किया जिसमें एक शक्तिशाली और अटूट बैंक का दृश्य चित्रित किया गया था और जैक्सन, बेन्टन और वान ब्यूरेन को चोरों के रूप में प्रदर्शित किया गया था। ऐसा लगता था कि अमेरिका की जनता के अतिरिक्त सभी जैक्सन के विरुद्ध थे।

जैक्सन बैंक की गतिविधियों को गम्भीरतापूर्वक देख रहा था। उसने वान ब्यूरेन से कहा कि बैंक उसके राजनीतिक जीवन को समाप्त करना चाहता है मगर वह उसे ही समाप्त कर देगा। कांग्रेस के दोनों सदनों ने बैंक की प्रार्थना पर विचार करने के पश्चात् एक विधेयक पारित किया जिसमें बैंक की अवधि बढ़ाने की सिफारिश की गई। 3 जुलाई, 1832 ईसवी को स्वीकृत विधेयक राष्ट्रपति जैक्सन के पास अनुमति के लिए भेजा गया। जैक्सन ने इस विधेयक पर अपने निषेधाधिकार का प्रयोग किया। कांग्रेस को भेजे गये सन्देश में अपने निर्णय के पक्ष में उसने जो तर्क प्रस्तुत किये, वे इस प्रकार थे –

1. बैंक अवैधानिक है और इस सम्बन्ध में सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय को स्वीकार करना मान्य नहीं है। यद्यपि न्यायाधीश मार्शल ने मेकुलोच वर्सेस मेरीलैण्ड (Mc Culloch Versus Maryland) के मामले में बैंक की वैधानिकता को स्वीकार किया था, किन्तु प्रत्येक सरकारी कर्मचारी संविधान के पालन की शपथ यही कह कर लेता है कि वह उसका समर्थन अपनी समझ के अनुसार ही करेगा न कि दूसरों के विचारों के अनुसार। न्यायाधीशों की राय कांग्रेस के लिए बाध्य नहीं है और कांग्रेस की राय न्यायाधीशों के लिए बाध्य नहीं है। इस विषय में राष्ट्रपति का पद दोनों से ऊपर है।

2. आर्थिक दृष्टि से बैंक का बहुत अधिक स्टाक (मूल धन) यूरोप के लोगों के हाथ में है और शेष में से अधिकांश मूल धन पूर्व के पूँजीपतियों के हाथ में है। इससे जनता को कोई लाभ नहीं है। इसके माध्यम से लाखों डालर विदेशी अंशधारियों को लाभांश के रूप में दिये जाते है। युद्ध के समय वे शत्रु की नौ सैनिक और सैनिक शक्ति से भी अधिक शक्तिशाली हो सकते हैं।

3. बैंक राज्यों के अधिकारों और जनता की स्वाधीनता के विपरीत है और राज्यों के बैंकों की साख उसकी सहनशीलता पर ही निर्भर है। कुछ ऐसे लोगों के हाथ में सत्ता का केन्द्रित होना उचित नहीं है जो जनता के प्रति किसी प्रकार से उत्तरदायी नहीं हैं।

इस प्रकार जैक्सन ने अपने सन्देश में बैंक को न केवल अवैध बताया वरन् यह आरोप भी लगाया कि बैंक के अंश (Shares) पूर्वी राज्यों के मुट्ठी भर उद्योगपतियों तथा विदेशी पूँजीपतियों के हाथों में है और उसकी नीतियाँ पश्चिम के राज्यों के छोटे बैंकों के विरुद्ध है। उसने यह घोषणा की कि वह निर्धन वर्ग के हितों की रक्षा करना चाहता है। उसने यह भी स्पष्ट किया कि यदि ऐसे कानून बनाये जाते हैं जो धनी को और अधिक धनी और शक्तिशाली को और अधिक शक्तिशाली बनाते हों तो सरकार का यह कर्त्तव्य है कि वह कमजोर वर्ग की रक्षा करे।

इस प्रकार जैक्सन ने बैंक के प्रति दृढ़ रुख अपनाया। उसके विरोधियों में इसकी तीव्र प्रतिक्रिया हुई। वेब्स्टर ने कहा कि निषेधाधिकार के प्रयोग से स्पष्ट है कि राष्ट्रपति बैंक के विरुद्ध है। इतना ही नहीं, वह इस देश अथवा अन्य देशों के इसी प्रकार से संगठित बैंकों के भी विरुद्ध है। इस बैंक को समाप्त करने का पूर्ण उत्तरदायित्व राष्ट्रपति का होगा। क्ले ने निषेधाधिकार के प्रयोग को अनुचित बताया और बिडल को लिखा कि निषेधाधिकारी बन्द चीते का सा पूरा आक्रोश है जो अपने पिंजरें की सलाखों को ही काट रहा है।

किन्तु 1832 ईसवी के निर्वाचन ने बैंक के भाग्य का निर्णय कर दिया। क्ले को आशा थी कि वह बैंक के प्रश्न को लेकर चुनाव जीत सकेगा। उसकी आशा फलीभूत नहीं हुई। चुनाव में जैक्सन को 6,87,000 लोकमत प्राप्त हुए और निर्वाचक मण्डल के दो सौ सत्रह मत जबकि क्ले को निर्वाचक-मण्डल के केवल उनचास मत प्राप्त हो सके ओर तीसरे प्रत्याशी विलियम विर्ट को केवल ग्यारह मत ही प्राप्त हो सके। इस प्रकार जैक्सन की शानदार विजय हुई। निर्वाचन में जनता ने यह स्पष्ट कर दिया था कि वह जैक्सन के साथ थी।

(14) चुनाव में सफलता के बाद बैंक के प्रति जैक्सन की नीति – जैक्सन ने अपने पुन: निर्वाचन का यह अर्थ लगाया कि जनता ने उसे बैंक को कुचल देने का अधिकार दे दिया है। निर्वाचन के पश्चात् बैंक ने स्वयं को पुन: राजनीतिक विवाद में उलझा दिया। बैंक के अध्यक्ष विडल ने ऋणदाताओं पर अनावश्यक दबाव डालना प्रारम्भ किया। उसका उद्देश्य देश में संकट उत्पन्न करना था, किन्तु जैक्सन ने विडल की योजना को सफल नहीं होने दिया और ऐसे कदम उठाये जिसमें स्वयं बैंक का अस्तित्व संकट में पड़ गया। अब उसने बैंक के कार्य क्षेत्र को सीमित किया और अपने इस कार्य के लिए उसने वित्त सचिव लिविंग्स्टन को फ्रांस में राजदूत बनाकर भेज दिया और बैंक के हितचिन्तक मेकलेन (Mcllane) को वित्त विभाग से हटाकर केबिनेट के प्रमुख पद पर नियुक्त कर दिया। नये वित्त-सचिव विलियम ड्यूएना (William Duana) ने भी बैंक के सम्बन्ध में आवश्यक निर्देश जारी करने से इन्कार कर दिया तो उसे भी पद से अलग कर दिया गया और उसके स्थान पर रोजर बी. टेनी को वित्त-सचिव नियुक्त किया गया।

सितम्बर, 1833 ईसवी के अन्त में यह आज्ञा जारी की गई कि इस बैंक में और अधिक सरकारी धन नहीं रखा जाये, जो धन पहले से रखा हुआ है उसे धीरे-धीर साधारण असरकारी खर्चों के लिए निकाल लिया जाये। दिसम्बर, 1833 ईसवी में वित्त-सचिव ने इस निर्णय की सूचना कांग्रेस के दोनों सदनों को दी। जैक्सन ने एक सन्देश में अपनी इस कार्यवाही के समर्थन

में कहा कि बैंक ने धन के बल पर सार्वजनिक सेवाओं को प्रभावित करना आरम्भ कर दिया है और राजनीतिक गतिविधियों में संलग्न हो गया है, अत: उसकी राजनीतिक शक्ति को कम करने के लिए यह कदम आवश्यक है। टेनी ने कांग्रेस के समक्ष घोषणा करते हुए एक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया जिसमें उन क गों का उल्लेख किया जिनकी वजह से यह कदम उठाया गया था। उनमें से अधिकांश कारण राजनीतिक थे।

सीनेट में राष्ट्रपति के इस कदम का जोरदार विरोध हुआ। मार्च, 1834 ईसवी में क्ले ने इस आशय के प्रस्ताव पारित करवाने कि बैंक से निधि को हटाने के सम्बन्ध में वित्त-सचिव द्वारा प्रस्तुत तर्क असन्तोषजनक और अपर्याप्त हैं तथा राष्ट्रपति का बैंक से राष्ट्रीय निधि का हटाना एक ऐसे अधिकार को ग्रहण करने के तुल्य है, जो कि संविधान में उसको प्राप्त नहीं है, वरन् उससे विधान का उल्लंघन भी होता है। जैक्सन ने कांग्रेस के इन प्रस्तावों का विरोध किया और उन्हें कांग्रेस की कार्यवाही से निकालने की प्रार्थना की। बेन्टन ने राष्ट्रपति का जोरदार समर्थन किया और 1835 व 1836 ईसवी में इस सम्बन्ध में प्रस्ताव प्रस्तुत किये, किन्तु उसे सफलता प्राप्त नहीं हो सकी। अन्त में 16 जनवरी, 1836 ईसवी को वह अपने प्रस्ताव को पारित करवाने में सफल रहा जिसके अनुसार क्ले प्रस्तावों को सीनेट की कार्यवाही से निकालना स्वीकार कर लिया गया। यह जनभावना की विजय थी।

जहाँ तक बैंक का प्रश्न था वह अपने प्रमाण पत्र की अवधि तक कार्य करता रहा। 1836 ईसवी के पश्चात् भी पेनिसिलवेनिया राज्य द्वारा दिये गये प्रमाण-पत्र के अन्तर्गत वह अपना अस्तित्व बनाये रखने में सफल रहा लेकिन एक आर्थिक शक्ति के रूप में उसका प्रभाव समाप्त हो चुका था। दुर्भाग्य से विडल भी सट्टेबाजी के प्रवाह में बहने लगा और उसने बहुत-सा धन नष्ट कर डाला, अत: 1843 ईसवी में उसका दिवाला निकल गया।

इस प्रकार बैंक के अस्तित्व की समाप्ति जैक्सन के काल की प्रमुख घटना थी। यह सही है कि ऐसा करते समय जैक्सन ने बैंकिंग और आर्थिक सिद्धान्तों के प्रति अनभिज्ञता प्रकट की थी। बैंक एक सुदृढ़ आर्थिक संस्था थी और अनियंत्रित साख के प्रसार को रोकने में सहायक सिद्ध हो सकती थी, किन्तु विडल की अधिनायकवादी प्रवृत्ति तथा बैंक द्वारा अमेरिका के राजनीतिक जीवन में अनावश्यक हस्तक्षेप के कारण जैक्सन उसे स्वीकार करने के लिए तत्पर नहीं था। इस सम्बन्ध में जनसमर्थन भी उसे प्राप्त हुआ जिससे वह बैंक के अस्तित्व को समाप्त करने में सफल रहा।

(15) 1837 ईसवी का आर्थिक संकट – 1837 ईसवी में अमेरिका को आर्थिक संकट का सामना करना पड़ा। इस संकट के अनेक कारण थे – प्रथम, अमेरिका की जन संख्या की वृद्धि के साथ भूमि की माँग बढ़ने लगी थी। बड़ी मात्रा में भूमि खरीदी जाने लगी। भूमि क्रय के कारण सरकार की आय, जो 1829 ईसवी में बीस लाख डालर थी वह 1837 ईसवी में बढ़ कर 25 करोड़ डालर हो गई। तुरन्त लाभ की आशा में लोग भूमि-व्यवसाय में पूँजी का विनियोजन कर रहे थे। इससे इस धन्धे में सट्टा होने लगा था। दूसरा, इसी प्रकार आन्तरिक यातायात सुधार की दृष्टि से अनेक कम्पनियों ने सड़कों, नहरों और रेलों का निर्माण करना प्रारम्भ किया। ये

निर्माण कार्य अमेरिका की भावी आवश्यकताओं को ध्यान में रख कर किये जा रहे थे। लाभ की आशा में लोगों ने इन कम्पनियों के शेयरों के क्रय में पैसा लगाया और इससे भी सट्टा होने लगा। राज्य सरकारें भी प्रतिस्पर्द्धा में इन कम्पनियों से पीछे नहीं रही। उन्होंने नई सड़कों का जिन्हें टर्न पाइक्स (Turn Pikes) कहते हैं, निर्माण करना प्रारम्भ किया। इससे मुद्रा का प्रसार हुआ। तीसरा, इन आर्थिक गतिविधियों को पेट बैंकों (Pet Banks)ने और अधिक प्रोत्साहन दिया। इन बैंकों ने अपने ऋणों को अनावश्यक रूप देकर विस्तार किया। उन्होंने भूमि के सौदों और आन्तरिक सुधारों के लिये आसान शर्तों पर ऋण दिया। बैंक यह पूँजी नोटों के रूप में देता था जो सर्वथा सुरक्षित नहीं होती थी। चौथा, विदेशी लोगों ने भी अमेरिका की समृद्धि देख कर इन निर्माण कार्यों में अपनी पूँजी लगाई थी।

इन सबका परिणाम यह हुआ कि अमेरिका में अत्यधिक मात्रा में पूँजी का प्रसार हुआ और कृत्रिम समृद्धि होने लगी। वास्तविकता यह थी कि पूँजी का विनियोग ऐसे कार्यों में हो रहा था जिनसे तुरन्त प्रतिफल मिलने वाला नहीं था। पूँजी ऐसे भूखण्डों में लगाई गई थी जिन पर अभी खेती होना बाकी था, उन नहरों के निर्माण कार्य में लगाई गई, जिनका शुरू होना अभी बाकी था और उन रेल कम्पनियों में लगा दी गई, जिनकी रेलें अभी चली नहीं थी। इससे रोकड़ पूँजी में घाटे की व्यवस्था उत्पन्न हो गई।

जैक्सन ने मुद्रा के इस अनावश्यक प्रसार को आशंका की दृष्टि से देखा और इस पर नियंत्रण लगाने की दृष्टि से कदम उठाये। 1836 ईसवी में उसने एक गश्ती पत्र जारी किया। इस पत्र के द्वारा सभी राजस्व अधिकारियों को यह आदेश दिया गया कि वे सरकारी भूमि के विक्रय से प्राप्त धन कागज के नोटों के स्थान पर केवल सोने और चाँदी के सिक्कों में ही लें। इस आदेश का लक्ष्य भूमि की सट्टेबाजी को रोकना था। 1836 ईसवी में उसने वितरण अधिनियम (Distribution Act) पारित किया, जिसके अनुसार राजकोष की पचास लाख डालर से अधिक धन राशि को राज्यों में उनकी जनसंख्या के अनुपात में तीन किश्तों में बाँट देने की व्यवस्था की गई। किन्तु अभी दो ही किश्तों का भुगतान किया गया था कि संकट आरम्भ हो गया।

जैक्सन के 'स्पेसी सरक्यूलर'(Specie Circular) के कारण अमेरिका की साख-व्यवस्था पर प्रभाव पड़ा और वह लगभग ठप्प हो गई। अमेरिका की अर्थ व्यवस्था इंग्लैण्ड और यूरोप के अन्य देशों की अर्थ व्यवस्था से जुड़ी हुई थी। इसी समय यूरोप के बैंकों पर संकट आया। यूरोप की बैंकों ने इंग्लैण्ड से अपनी पूँजी लौटाने की माँग की और इंग्लैण्ड ने अमेरिकी बैंकों पर अपनी पूँजी के भुगतान पर दबाव डाला। यूरोप के उन लोगों ने जिन्होंने अमेरिका में अपनी पूँजी लगाई थी, खुले बाजार में अपने शेयरों को बेचना प्रारम्भ किया। इस प्रकार पूर्वी राज्यों के बैंकों पर भुगतान का दबाव बढ़ने लगा। पूर्व के बैंकों ने दबाव पड़ने पर पश्चिम और दक्षिण के बैंकों से अपने द्वारा लिये गये ऋणों को वापस माँगा।

1837 ईसवी की आर्थिक मंदी के सम्बन्ध में यह उल्लेखनीय है कि जैक्सन की नीतियों के कारण मन्दी को प्रोत्साहन मिला, किन्तु अमेरिका का जनसाधारण इसके लिए उसे उत्तरदायी नहीं मानता था। वास्तव में जैक्सन एक ऐसा भाग्यशाली व्यक्ति था जिसकी सफलता की ओर

सभी देखते थे, किन्तु उसकी असफलता की ओर कोई नहीं देखता था। वे लोग यह मानने के लिए तत्पर नहीं थे कि यह संकट बैंक ऑफ दी यूनाइटेड स्टेट्स की समाप्ति के कारण उत्पन्न हुआ, क्योंकि उसके विरुद्ध जैक्सन की विजय को वे अपनी विजय मानते थे।

V. जैक्सन के काल में विदेशी सम्बन्ध :

जैक्सन ने अपने उद्घाटन-भाषण में विदेशों से सम्बन्धों के बारे में अपनी नीति की ओर संकेत करते हुए कहा था कि उसका उद्देश्य शान्ति तथा उचित और सम्मानजनक शर्तों के आधार पर मित्रता बनाये रखना है। साथ ही उसने विवादों के उत्पन्न होने पर समझौतों द्वारा उन्हें सुलझाने का भी वचन दिया। इसी प्रकार के विचार उसने कांग्रेस को भेजे गये अपने प्रथम सन्देश में भी व्यक्त किये।

कूटनीति के क्षेत्र में राष्ट्रपति जैक्सन की जानकारी अपने अनुभवी पूर्वाधिकारियों की अपेक्षा नगण्य थी। इनामी पद्धति के कारण विदेशी सेवा में रत अधिकारी अभी नये थे और उन्हें अन्तर्राष्ट्रीय प्रथाओं की जानकारी भी नहीं थी। यद्यपि उसने 'शर्ट स्लीव डिप्लोमेसी' (Shirt Sleeve Diplomacy)का पालन किया तथापि विदेश मामलों में उसे अधिक सफलता प्राप्त हुई। उसने अपने प्रशासन काल में इंगलैण्ड के साथ समझौता किया जिसके अन्तर्गत अमेरिकी व्यापारिक जहाजों को वेस्ट इण्डीज के द्वीपों के साथ व्यापार करने की सुविधा प्राप्त हुई। इसी प्रकार उसने फ्रांस के साथ समझौता किया और नेपोलियन के समय से चले आ रहे विवादों को समाप्त कर दिया। अमेरिका के नागरिकों के व्यापार को जो क्षति हुई, उसकी क्षतिपूर्ति का वचन ले लिया।

(1) वेस्ट इंडीज के साथ व्यापार का खुलना - राष्ट्रपति जैक्सन की सबसे बड़ी सफलता ब्रिटिश वेस्ट इण्डीज के बन्दरगाहों को अमेरिकी जहाजों के व्यापार के लिए खुलवाना था। क्रान्ति काल में ब्रिटेन द्वारा अमेरिकी जहाजों पर प्रतिबन्ध लगाये जाने से अमेरिकी माल के बाहर जाने पर रोक सी लग गई। अमेरिका ने स्वतन्त्रता प्राप्ति से लेकर जैक्सन के आगमन तक ब्रिटिश सरकार के साथ समझौता करने का प्रयास किया, किन्तु उसे सफलता प्राप्त नही हुई। एडम्स ने वेस्ट इण्डीज के व्यापार के सम्बन्ध में कठोर रुख अपनाया, किन्तु वान ब्यूरेन ने परिस्थिति को बदल दिया और उसने इंगलैण्ड की सरकार को इस बात के लिए राजी कर लिया कि वेस्ट इण्डीज में अमेरिका के माल और जहाजों पर से सभी प्रतिबन्ध समाप्त कर दें और केवल नाम मात्र का कर लगायें जिससे वेस्ट इण्डीज पर इंगलैण्ड की प्रभुसत्ता का कानूनी रूप से आदर किया जा सके। इंगलैण्ड इस प्रकार का कर लगाया करता था जिसे इम्पीरियल प्रिफेरेन्स (Imperial Preference) कहा जाता था। इस प्रकार वान ब्यूरेन ने इस समस्या का स्थायी हल निकाल लिया। इस समझौते के परिणामस्वरूप अमेरिका के आयात और निर्यात दोनों में अत्यधिक वृद्धि हुई। 1831 ईसवी में वेस्ट इण्डीज से आयात होने वाले माल में आठ गुना वृद्धि हुई। 1830 ईसवी में वेस्ट इण्डीज को केवल एक सौ चालीस डालर का निर्यात किया जाता था, वह 1831 में 14,39,593 डालर हो गया।

(2) फ्रांस के साथ सम्बन्ध – जैक्सन ने फ्रांस के साथ पूर्ण कूटनीति के आधार पर विवादों को हल निकालने का प्रयत्न किया और समय आने पर दबाव डालने की नीति का भी अवलम्बन किया। नेपोलियन की व्यापारनिषेध नीति के परिणामस्वरूप अमेरिकी व्यापारियों को हुई क्षति के दावे अभी तक पड़े थे। यद्यपि 1815 ईसवी से इस विवाद को सुलझाने का प्रयास किया जा रहा था, किन्तु जैक्सन के आगमन तक उसका समाधान नहीं हुआ था। 1831 ईसवी में लुई फिलिफ (Louis Phillipe) की सरकार ने अमेरिकी दावों को स्वीकार करते हुए पचास लाख डालर देने का वचन दिया। इसके बदले में अमेरिका ने यह वचन दिया कि वह फ्रांस से आने वाली शराब पर लगने वाले कर को कम कर देगा। दुर्भाग्य से फ्रांस में व्यवस्थापिका का अधिवेशन इस धन राशि के स्वीकार किये जाने से पूर्व स्थगित हो गया जबकि अमेरिकी कांग्रेस ने फ्रांसीसी शराब पर से कर में कमी करने के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया, इससे अमेरिका में रोष उत्पन्न हुआ। जैक्सन ने फ्रांस पर सन्धि की शर्तों को भंग करने का आरोप लगाया। उसने अमेरिकी व्यापारियों को फ्रांस के साथ व्यापार न करने की चेतावनी दी और फ्रांस को अपमानित करने के लिए जल सेना को भी तैयार रहने का आदेश दिया। उसने अमेरिकी कांग्रेस को अमेरिका में स्थित फ्रांसीसी सम्पत्ति को जब्त करने की कार्यवाही की सिफारिश की।

जैक्सन के इन कदमों की फ्रांस में शीघ्र प्रतिक्रिया हुई। फ्रांस की व्यवस्थापिका ने शीघ्र धन राशि को स्वीकार कर दिया, किन्तु साथ ही जैक्सन को उसके व्यवहार के लिए क्षमा याचना करने को कहा। जैक्सन ने क्षमा याचना करने से इन्कार कर दिया, अत: इंग्लैण्ड की सरकार ने मध्यस्थता की। जैक्सन ने क्षमा याचना तो नहीं की, किन्तु इतना अवश्यक कहा कि वह फ्रांस का अपमान नहीं करना चाहता था। फ्रांस ने उसके इस कथन को स्वीकार कर लिया, अत: सन्धि पूर्णत: लागू हो गई।

(3) टैक्सास की समस्या – लैटिन अमेरिका क्षेत्र में राष्ट्रपति जैक्सन की सफलता सीमित रही। 1803 ईसवी में जब लुसियाना का क्रय किया गया तो अमेरिकी नेताओं की धारणा थी कि टैक्सास का प्रदेश भी उसमें सम्मिलित है। परन्तु 1819 ईसवी में जब स्पेन ने फ्लोरिडा का समर्पण किया तब उसकी सीमा सैबाइन नदी तक मानी गई। 1821 ईसवी में मैक्सिको स्वतन्त्र हो गया तो टैक्सास उसी का भाग बन गया। टैक्सास को खरीदने क लिए क्ले और वान ब्यूरेन ने प्रयास किये किन्तु उन्हें सफलता प्राप्त नहीं हुई। जैक्सन मैक्सिको से टैक्सास को खरीदना चाहता था। उसने कर्नल एन्थनी बटलर (Anthony Butler)को मैक्सिको में अपना राजदूत नियुक्त किया। बटलर अभिमानी और बेईमान था। उसमें कूटनीतिक गुणों का अभाव था। उसकी मान्यता थी कि घूस देकर टैक्सास को खरीदा जा सकता है, लेकिन बटलर ने अपने कार्यों से अमेरिका को बदनाम कर दिया। फलस्वरूप 1835 ईसवी में उसे वापस बुलाना पड़ा। उसके उत्तराधिकारी के रूप में सेम ह्यूस्टन (Sam Houston) की नियुक्ति की गई। उसे यह आदेश दिया गया कि वह मैक्सिको की सरकार पर टैक्सास के राज्य में अमेरिका के नागरिकों के अधिकार के प्रश्न पर बल दे। इसी समय मैक्सिको में क्रान्ति हो गई। सेम ह्यूस्टन ने युद्ध किया और मैक्सिको के राष्ट्रपति को बन्दी बना लिया। टैक्सास स्वतन्त्र राज्य बन गया और 1837 ईसवी में अमेरिका ने उसकी स्वतन्त्रता को मान्यता प्रदान कर दी।

इस प्रकार जैक्सन ने इंग्लैण्ड और फ्रांस के साथ दीर्घकाल से चले आ रहे विवादों को समाप्त कर दिया। इससे राजनीतिक वातावरण में तो सुधार हुआ, किन्तु साथ ही अमेरिका को अधिक लाभ भी प्राप्त हुए। लेकिन मैक्सिको के प्रति उसके व्यवहार को प्रशंसनीय नहीं कहा जा सकता।

VI. वान ब्यूरेन का शासन (1837-41 ई.) :

राष्ट्रपति जैक्सन के कार्यक्रम की समाप्ति के पश्चात् उसके द्वारा समर्थित मार्टिन वान ब्यूरने अमेरिका का राष्ट्रपति बना। उसने 1836 ईसवी में व्हिग दल के हेरीसन (Harison) को परास्त कर यह सफलता प्राप्त की। कुशल राजनीतिज्ञ होने के कारण लोग उसे 'रेड फॉक्स'(Red Fox) और छोटा जादूगर कहकर सम्बोधित करते थे। वह राष्ट्रपति जैक्सन के उद्देश्यों और नीतियों का समर्थक था, परन्तु उसकी योग्यताओं को उसके कार्य काल की आर्थिक मन्दी और उसके पूर्ववर्ती राष्ट्रपति के प्रभावशाली व्यक्तित्व ने छिपा दिया।

(1) आन्तरिक नीति - उसे अपने राष्ट्रपति काल में आर्थिक मन्दी से जूझना पड़ा। आर्थिक मन्दी के कारणों का उल्लेख पहले किया जा चुका है। इस मन्दी का परिणाम यह हुआ कि कारखाने बन्द होने लगे। लगभग तीन हजार तीन सौ उद्योगधन्धे ठप्प हो गये। बेरोजगारों की भीड़ बढ़ने लगी। न्यूयार्क में आटे के लिए होने वाले दंगों को शान्त करने के लिए पुलिस का सहारा लेना पड़ा। स्वयं सरकार के नब्बे लाख डालर कृपा पात्र बैंकों में डूब गये। 1837 ईसवी के मई माह तक सभी बैंकों ने सोने चाँदी के भुगतान को बन्द कर दिया। श्रमिकों की अवस्था गिरने लगी और उनका संगठन समाप्त हो गया।

बाध्य होकर राष्ट्रपति को कांग्रेस का विशेष अधिवेशन आमंत्रित करना पड़ा। राष्ट्रपति की सिफारिश पर कांग्रेस ने राज्यों को वितरित किये जान वाले धन पर रोक लगा दी और यह प्रस्ताव भी स्वीकार किया कि कोषागार अस्थायी रूप से नये नोट जारी कर दे जिससे राष्ट्रीय ऋण फिर से जारी हो सके।

इसी अधिवेशन में वान ब्यूरेन ने स्वतंत्र कोषागार का प्रस्ताव रखा। उसका विचार था कि सरकारी धन के रक्षक के रूप में राज्य व राष्ट्रीय बैंक दोनों ही अनुपयोगी सिद्ध हुए हैं और वे इस धन के माध्यम से साख (Credit) का अत्यधिक विस्तार करते रहे हैं। अत: सरकारी धन स्वयं सरकारी खजानों में रहना चाहिए। ब्यूरेन द्वारा प्रस्तावित इस योजना का व्हिग दल ने विरोध किया। क्ले का यह कहना था कि इसका परिणाम यह होगा कि देश की वित्तीय व्यवस्था सोने और चाँदी पर निर्भर हो जायेगी और धातु-मुद्रा के पूर्णत: उपयोग से कीमतों में कमी होगी जिसका प्रभाव देनदारों पर पड़ेगा। इतना ही नहीं, कुछ अनुदारवादी डेमोक्रेटों ने भी ब्यूरेन के प्रस्ताव का विरोध किया। अन्त में 1840 ईसवी में यह योजना स्वीकार की जा सकी। इस योजना के अनुसार अब सरकारी धन वाशिंगटन स्थित कोषागार में और बोस्टन, न्यू यार्क, फिलाडेल्फिया, सेण्ट लुइस तथा न्यू आर्लिन्स के उपकोषागारों में रखा जाना था। इस विधेयक में यह भी व्यवस्था की गई कि 1 जुलाई, 1843 ईसवी के पश्चात् सरकारी देयों का भुगतान केवल, सोने और चाँदी में ही स्वीकार किया जायेगा।

1840 ईसवी में यह विधेयक विवाद का विषय बना रहा और 1841 ईसवी में जब व्हिग दल सत्तारूढ़ हुआ तो यह अधिनियम निरस्त कर दिया गया, किन्तु जब पुन: डेमोक्रेटिक दल को सत्ता प्राप्त हुई तो पुन: इस व्यवस्था को लागू किया जो 1913 ईसवी तक चलती रही।

(2) विदेश नीति - वान ब्यूरेन को न केवल देश में आर्थिक संकट का समाना करना पड़ा वरन् विदेशी मामलों में भी एक गम्भीर समस्या का सामना करना पड़ा जिसके परिणामस्वरूप इंग्लैण्ड और अमेरिका के सम्बन्ध कटु हो गये। 1837 ईसवी में कनाड़ा ने अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह किया और स्वायत्त शासन की माँग की। वान ब्यूरेन ने यह जानते हुए भी कि आगामी चुनाव में सीमान्त प्रदेश के मत उसके हाथ से निकल जायेंगे, तटस्थता की नीति का अवलम्बन किया। किन्तु कैरोलिने (Caroline) नामक एक अमेरिकी पोत गुप्त रूप से विद्रोहियों की सहायता करता रहा। जब अंग्रेजों का एक अभियान नियागरा (Niagra) पहुँचा तो उसको इसका रहस्य ज्ञात हुआ। अंग्रेजी सैनिकों ने पोत के लंगर को काट दिया और उसमें आग लगा दी। इस घटना में डरफ्रयू नाम का एक अमेरिकी नागरिक मारा गया। इस घटना से दोनों देशों में तनाव उत्पन्न हो गया। इसी घटना में मैकलियोड काण्ड (Mclleod Affair) ने और अधिक तनाव उत्पन्न किया। मैकलियोड एक कनाडियन था और 1840 ईसवी में न्यूयार्क आते समय उसने यह गर्वोक्ति की कि वह डरफ्रयू का हत्यारा है । अत: नवम्बर, 1840 ईसवी को उसे गिरफ्तार कर लिया गया तथा न्यूयार्क के न्यायालय में उस पर मुकदमा चलाया गया। इंग्लैण्ड की सरकार ने मैकलियोड की गिरफ्तारी का विरोध किया। अमेरिकी सरकार भी उसे मुक्त करने के पक्ष में थी, किन्तु न्यायालय ने मुकदमे के अन्तिम फैसले के बिना मुक्त करने से इन्कार कर दिया, यद्यपि बाद में न्यूयार्क राज्य के न्यायालय ने उसे निर्दोष पाया और बरी कर दिया। कैरोलिने सम्बन्धी विवाद का अन्त वान ब्यूरेन के काल में न होकर 1842 ईसवी में ही हो पाया।

इस प्रकार वान ब्यूरेन को आन्तरिक क्षेत्र में आर्थिक मन्दी का सामाना करना पड़ा। यह उपका दुर्भाग्य था कि उसे उन कठिनाइयों से जूझना पड़ा जिसके लिए उसका कोई उत्तरदायित्व नहीं था। आर्थिक मन्दी के दुष्परिणामों के कारण वह अपनी योग्यता का उचित परिचय नहीं दे पाया और उसे अपना समग्र शासन-काल आर्थिक व्यवस्था को संवारने में लगाना पड़ा। बाह्य नीति के क्षेत्र में उसे बदनामी का सामना करना पड़ा और तटस्थता की नीति के कारण सीमान्त प्रदेश के मतों से भी हाथ धोना पड़ा। परिणाम यह हुआ कि 1840 ईसवी के निर्वाचन में व्हिग दल का हेरीसन विजयी हुआ।

□□□

अध्याय - 10

जॉन टिलर से जेम्स बुचानन तक का काल (1841-1861 ईसवी)

□ पुखराज आर्य

1. व्हिग दल का उत्कर्ष तथा 1840 ई. के चुनाव में उसकी विजय :

उन्नीसवीं शती के तीसरे दशक में अमेरिकी राजनीति में व्हिग दल का प्रादुर्भाव हुआ । इस दल में क्ले तथा एडम्स के नेतृत्व को मानने वाले राष्ट्रीय गणतंत्रवादी लोग थे। अनेक ऐसे रूढ़िवादी अमेरिकी, जो जैक्सन की नीतियों और राजनीति के विरुद्ध थे, भी इस दल में आ गये। ये लोग जैक्सन द्वारा एकाधिकारों तथा बैंकों पर किये गये आक्रमणों से चिन्तित थे। इसी प्रकार जन्मजात अमेरिकी भी इस दल में इसलिए आ गये, क्योंकि उन्हें विश्वास था कि विदेशों से आये देशीकृत अमेरिकन नागरिक, जिनके वे विरुद्ध हैं, डेमोक्रेटिक दल के समर्थक हैं। इसी प्रकार कुछ ऐसे लोग भी इस दल में आये जिन्होंने अपना सम्बन्ध डेमोक्रेटिक दल से इसलिए तोड़ दिया था, क्योंकि वे राज्यों के अधिकारों के समर्थक थे और निष्प्रभावन संकट में जैक्सन द्वारा अपनाई गई नीति के कारण असन्तुष्ट थे। इस प्रकार दल की उत्पत्ति ऐण्ड्रयू जैक्सन तथा उसकी नीतियों के विरुद्ध शत्रुता की भावना के कारण हुई। व्हिग रूढ़िवादी का उत्कर्ष अमेरिकी राजनीति में एक प्रतिक्रिया थी। व्हिग लोगों का कोई सिद्धान्त या कार्यक्रम नहीं था। जैक्सनवादियों की कटु आलोचना उनकी राजनीतिक गतिविधियों का मुख्य आधार था।

1836 ईसवी के निर्वाचन के समय जैक्सन की शक्ति और प्रभाव इतना था कि उसके दल का प्रतिनिधि वान ब्यूरेन राष्ट्रपति के चुनाव में विजयी हुआ। सत्तारूढ़ होते ही नये राष्ट्रपति को 1837 ईसवी के आन्तरिक आर्थिक संकट का सामना करना पड़ा। वान ब्यूरेन का काल, मन्दी का काल रहा। इससे 1840 ईसवी के चुनाव में व्हिग दल ने लाभ उठाया तथा यह तर्क रखा कि अमेरिका में मन्दी तथा वित्तीय संकट वान ब्यूरेन की नीतियों का परिणाम था।

इस समय व्हिग दल का वास्तविक नेता हेनरी क्ले था, लेकिन दल के सदस्यों ने क्ले तथा अन्य नेताओं के स्थान पर विलियम हेनरी हेरीसन (William Henry Harrison)को राष्ट्रपति पद के लिए अपना प्रत्याशी चुना। इसका मुख्य कारण यह था कि व्हिग दल के कार्यकर्त्ताओं का यह निष्कर्ष था कि चुनाव जीतने के लिए ऐसा प्रत्याशी खड़ा किया जाना चाहिए जो कि साधारण

लोगों का प्रतिनिधि हो तथा युद्ध नायक भी रहा हो। व्हिगों ने यह बात जैक्सनवादियों (Jacksonians)से ही सीखी थी और वे जैक्सनवाद को उसी के राजनीतिक हथकण्डों से परास्त करना चाहते थे। 1840 ईसवी के राष्ट्रपति चुनाव में व्हिग दल के चुनाव अभियान का उत्तरदायित्व थरलोवीड (Therloved) नामक व्यक्ति को दिया गया जो कि न्यूयार्क के व्हिग-संगठन का प्रमुख तथा एक अच्छा राजनीतिक संगठनकर्त्ता था।

व्हिग दल का कार्यक्रम जैक्सन की नीतियों के विरोध से ही प्रेरित था। इसलिए वीड तथा अन्य व्हिग नेताओं ने चुनाव कार्यक्रम में ऊँचे संरक्षण करने वाले प्रशुल्क, आन्तरिक सुधारों के लिए संघीय सहायता तथा संयुक्त राष्ट्र में एक तीसरे बैंक की स्थापना को अपना लक्ष्य बनाया, लेकिन इन लक्ष्यों की अपेक्षा व्हिगों ने हेरिसन के बिम्ब को जन साधारण के समक्ष बढ़ा-चढ़ा कर प्रस्तुत करने को अधिक राजनीत्तिक बुद्धिमानी समझा। यहाँ पर भी व्हिग लोग जैक्सन की राजनीतिक कला की ही नकल कर रहे थे। हेरिसन 1812 ईसवी के युद्ध के पश्चात् जनजीवन से अलग हो गया था और लोग उसे भूल भी गये थे। व्हिगों ने उसकी पुरानी युद्ध सफलताओं का स्मरण कराया तथा उसे एक अत्यन्त सादा जीवन व्यतीत करने वाले व्यक्ति के रूप में जन साधारण के समक्ष रखा। अमेरिकी जनता के समक्ष यह बात कही गई कि हेरिसन लट्ठों की झोपड़ी में रहने वाला एक साधारण व्यक्ति है जो साइजर (मदिरा का नाम) पीने वाला है। उसे विशाल भवनों तथा विदेशों से आयात की गई कीमती मदिराओं से कोई लगाव नहीं है। हेरिसन के विरुद्ध डेमोक्रेटिक दल ने वान ब्यूरेन को पुनः खड़ा किया था, किन्तु जनता में हेरिसन की लोकप्रियता बढ़ने लगी। 1840 ईसवी के चुनाव में व्हिगों ने उपराष्ट्रपति पद के लिए वर्जीनिया राज्य के जॉन टिलर को नामांकित किया। टिलर दक्षिणी था। व्हिग दल ने उसे उपराष्ट्रपति पद पर इसलिए खड़ा किया कि वह भी जैक्सन की नीतियों के विरुद्ध था। चुनाव-अभियान में स्थान-स्थान पर लट्ठों की झौपड़ियाँ बनाई गईं। व्हिगों ने लोगों को साइजर पिला-पिलाकर अपने चुनाव अभियान को गति प्रदान की। वान ब्यूरेन को व्हिगों द्वारा कुलीन वर्ग के प्रतिनिधि के रूप में अमेरिकी मतदाताओं के समक्ष प्रस्तुत किया।

1840 ईसवी के चुनाव में हेरिसन की विजय हुई। टिलर उपराष्ट्रपति पद के लिए निर्वाचित हुआ। यह चुनाव महत्त्वपूर्ण रहा, क्योंकि इसने यह सिद्ध कर दिया कि चुनाव में सफलता लोकप्रियता के आधार पर ही प्राप्त हो सकती है। इस चुनाव से अमेरिका की राजनीति में प्रजातांत्रिक प्रवृत्तियों को बल प्राप्त हुआ। इस चुनाव ने यह भी सिद्ध कर दिया कि लोकप्रिय राजनीतिक सरकारों की स्थापना लोकप्रिय नीति के आधार पर ही की जा सकती है। इस प्रकार अमेरिकी चुनाव ने जनता के महत्त्व को बढ़ा दिया। भविष्य में राजनीतिज्ञों के लिए आवश्यक हो गया कि चाहे उनके व्यक्तिगत विचार कुछ भी हों, उन्हें लोकतन्त्र का समर्थन करना पड़ेगा। 1840 ईसवी में एक और प्रवृत्ति भी सामने आई। राष्ट्रपति पद के लिए ऐसे व्यक्तियों का नामांकन उचित माना जाने लगा जिसकी किसी से शत्रुता नहीं हो ताकि चुनाव काल में सुविधानुसार उसकी प्रतिमा अथवा बिम्ब जनता के स्वभाव के अनुसार बना कर प्रस्तुत किया जा सके।

II. टिलर का शासन (1841-45 ई.) :

(1) आन्तरिक नीति - 1840 ईसवी के चुनाव में व्हिग दल की विजय हुई। वास्तव में यह विजय अल्पकालीन रही। हेरिसन 69 वर्ष का था। पद सम्भालने के पश्चात् अभी वह पद इच्छुकों से निपटने ही नहीं पाया था कि अकस्मात् 4 अप्रैल, 1841 ईसवी को उसकी मृत्यु हो गई। हेरीसन के स्थान पर टिलर अमेरिका का राष्ट्रपति बना। टिलर दक्षिणवासी था, अतः उत्तर के दल के ठेकेदारों से उसका विचार साम्य होना सम्भव नहीं था। व्हिग दल में उत्तर के प्रभावशाली व्यक्तियों ने टिलर को उपराष्ट्रपति पद के लिए इसलिए चुना था कि वह दक्षिण का निवासी था। वह राज्यों के अधिकारों का समर्थक होने से जैक्सन की नीतियों से घृणा करता था। टिलर को उपराष्ट्रपति के पद पर नामांकित करते समय व्हिग दल के उत्तर में रहने वाले ठेकेदारों ने उसके राष्ट्रपति बनने की कल्पना भी नहीं की थी। स्वयं टिलर, क्ले, बीड तथा वेब्स्टर जैसे व्हिग दल के नेताओं की नीतियों में विश्वास नहीं करता था। फिर व्हिग दल ने जैक्सन की नीतियों के खंडन के अतिरिक्त 1840 ईसवी के चुनावों में कोई निश्चित कार्यक्रम भी नहीं रखा था।

1840 ईसवी में चुनाव में निश्चित व्हिग-कार्यक्रम के अभाव की पूर्ति करने हेतु क्ले ने 1841 ईसवी में जब कांग्रेस का अधिवेशन बुलाया, उसके समक्ष कुछ प्रस्ताव रखे जिन्हें उसने व्हिगों के सिद्धान्त कहकर सम्बोधित किया। क्ले निश्चित रूप से व्हिग दल में महत्त्वपूर्ण प्रभाव रखता था। उसने दल के अनुयायियों के स्वार्थों को ध्यान में रख कर ही अपना कार्यक्रम कांग्रेस के समक्ष रखा। क्ले के प्रस्तावों में निम्नलिखित बातें थीं जो 7 जून, 1841 ईसवी के दिन उसने अलग-अलग 6 प्रस्तावों में कही थी। इस कार्यक्रम में स्वतन्त्र कोष सम्बन्धी अधिनियम का निरस्तकीरण(Repeal of Independent Treasury Act), राष्ट्रीय बैंक की स्थापना, सरकारी आय में वृद्धि के अतिरिक्त आयात कर व सरकारी भूमि विक्रय द्वारा प्राप्त आय का राज्यों में वितरण सुरक्षा प्रदान करने वाला प्रशुल्क व आन्तरिक सुधार प्रमुख थे। यह कार्यक्रम राष्ट्रीय गणतन्त्रवादियों के 1825 ईसवी के कार्यक्रम से साम्य रखता था। टिलर ने स्वतन्त्र कोष सम्बन्धी निरस्तीकरण प्रस्ताव स्वीकार कर लिया, परन्तु राष्ट्रीय बैंक सम्बन्धी प्रस्ताव दोनों सदनों से पारित होकर जब उसके समक्ष आया तो उसने अनुमति प्रदान नहीं की, क्योंकि उसकी मान्यता थी कि किसी भी राष्ट्रीय संस्था का अगर निर्माण किया जाता है तो यह राष्ट्रपति का वैधानिक उत्तरदायित्व है कि वह इस सम्बन्ध में अपना निर्णय स्वतन्त्र रूप से ले। टिलर ने कांग्रेस के दोनों सदनों द्वारा पारित किये गये राष्ट्रीय बैंक सम्बन्धी विधेयक पर दो बार निषेधाधिकार का प्रयोग किया। अन्त में कांग्रेस को अपना संघर्ष त्यागना पड़ा। उल्लेखनीय बात यह है कि कांग्रेस के जिन प्रस्तावों पर निषेधाधिकार का प्रयोग किया गया वे प्रस्ताव स्वयं उसके दल के सदस्यों द्वारा कांग्रेस में रखे गये थे। अतः क्ले और टिलर में प्रत्यक्ष रूप से झगड़ा होने लगा। इसी प्रकार प्रशुल्क के प्रश्न पर भी टिलर व क्ले में संघर्ष होता रहा। टिलर साधारण प्रशुल्क के विरुद्ध नहीं था लेकिन जब कांग्रेस ने 1841 ईसवी के प्रशुल्क अधिनियम के अन्तर्गत प्रशुल्क की दर में बीस प्रतिशत की वृद्धि की तो टिलर ने कांग्रेस के प्रस्तावों को स्वीकार नहीं किया। इससे स्वार्थी वर्गों में हलचल मच गई। उत्तर के व्यापारी, महाजन तथा अन्य उद्योगपति जो व्हिग दल के सदस्य थे, टिलर की कटु

आलोचना करने लगे। टिलर राष्ट्रपति के रूप में प्राप्त अधिकार पर दृढ़ रहा। अन्त में कांग्रेस को ही हार माननी पड़ी। 1842 ईसवी में कांग्रेस ने एक साधारण प्रशुल्क अधिनियम पारित किया जिसे टिलर ने स्वीकार कर लिया लेकिन उसने पारित किये गये प्रशुल्क को उस समय तक लागू करने से इन्कार कर दिया जब तक कि क्ले ने सरकारी भूमि क्रय द्वारा आय के वितरण के प्रश्न पर समझौता नहीं किया। क्ले और टिलर का झगड़ा फिर भी समाप्त नहीं हुआ। क्ले के समर्थकों ने, जो मन्त्रिमण्डल में थे, त्याग पत्र दे दिया। टिलर ने रिक्त स्थानों पर अपने समर्थकों को नियुक्त किया। केवल डेनियल वेब्स्टर, जो राज्य सचिव अथवा विदेशमन्त्री तथा क्ले का समर्थक था, अपना पद पर बना रहा, क्योंकि वह इंग्लैण्ड से महत्त्वपूर्ण कूटनीतिक वार्तालापों में संलग्न था। इस प्रकार टिलर ने कांग्रेस द्वारा प्रस्तावित सभी सुझावों को ठुकरा दिया। यहाँ तक कि आन्तरिक सुधारों के हेतु पारित किये गये सभी विधेयकों पर निषेधाधिकार का प्रयोग किया। उसने एक ऐसी परिस्थिति उत्पन्न कर दी जिससे व्हिग दल में उसका रहना असम्भव हो गया। मन्त्रिपरिषद् में जो नये व्यक्ति उसने लिये उनमें से अनेक विरोधी डेमोक्रेटिक दल के थे। यह एक विचित्र सी परिस्थिति थी। टिलर ने वास्तविक रूप में अपने प्रशासन के अन्त तक व्हिग दल से सभी सम्बन्ध विच्छेद कर दिये। यह कहना कठिन है कि क्या वह डेमोक्रेटिक दल का अनुयायी हो गया था। वह एक ऐसा राष्ट्रपति था जो किसी भी दल का नहीं था। वास्तव में टिलर बिना किसी दल का राष्ट्रपति हो गया।

(2) टैक्सास के विलय की समस्या - 1843 ईसवी के पश्चात् अमेरिकी राजनीति का मुख्य लक्ष्य पश्चिम की ओर प्रसार से सम्बद्ध प्रश्नों से जुड़ा रहा। टैक्सास के राज्य को जो पहिले मैक्सिको का एक प्रान्त था, संयुक्त राज्य अमेरिका से गये आप्रवासियों ने बसाया था। 2 मार्च, 1836 ईसवी के दिन टैक्सास के निवासियों ने अपनी स्वाधीनता की घोषणा की। 1819 ईसवी में स्पेन से की गई सन्धि के अन्तर्गत संयुक्त अमेरिका ने यह स्वीकार किया था कि टैक्सास पर संयुक्त राज्य अमेरिका के कोई भी अधिकार नहीं हैं। फिर भी अधिकांश अमेरिकावासियों की यही मान्यता थी कि टैक्सास उन्हीं के देश का एक भाग है तथा वह संयुक्त राज्य अमेरिका में कभी न कभी अवश्य मिल जायेगा। अपनी इस विस्तारवादी भावना को एक सम्मानित रूप देने के लिए टैक्सास के प्रश्न को उन्होंने पुनर्विलय की समस्या कहकर सम्बोधित किया। इसमें कोई सन्देह नहीं कि टैक्सास के लोग संयुक्त राज्य अमेरिका में मिलना चाहते थे, अत: 1827 ईसवी में एडम्स ने तथा 1829 व 1835 ईसवी में जैक्सन ने टैक्सास को मैक्सिको से खरीदने के प्रयास किये थे। 1837 ईसवी में अमेरिका ने टैक्सास की स्वाधीनता को मान्यता प्रदान की।

टैक्सास की स्वाधीनता के प्रति अमेरिका की सहानुभूति स्वाभाविक थी, लेकिन जब टैक्सास का अमेरिका में विलय का प्रश्न आया तो अमेरिका में कुछ शंकाएँ उत्पन्न हुईं। सबसे बड़ा भय यह था कि टैक्सास के विलय का समर्थन दक्षिण के दास स्वामी इसलिए कर रहे थे कि वे विशाल भू-भाग में अनेक दास-राज्यों की स्थापना करके अमेरिका की संघीय सरकार पर दक्षिणी दास राज्यों का प्रभुत्व जमाने का लक्ष्य रखते थे। राष्ट्रपति टिलर सम्भवत: विलय के पक्ष में भी था लेकिन दो बार उसने टैक्सास की याचना को स्वीकार नहीं किया क्योंकि उसे भय था कि

उसके विरोधी कहीं उसके निर्णय को अस्वीकार न कर दें। स्वयं डेनियल वेब्स्टर विलय के पक्ष में नहीं था, टैक्सास के विलय के पक्ष में अमेरिका में भारी जनमत था। विस्तारवादी इसे नये राष्ट्र की नियति-अभिव्यक्ति(Manifest Destiny) समझते थे, क्योंकि उन्हें विश्वास था कि उन्हें समस्त अमेरिकी महाद्वीप पर अपनी प्रजातान्त्रिक सत्ता स्थापित करने का अधिकार है। इस प्रकार दक्षिण के दास स्वामी अपने आर्थिक एवं राजनीतिक स्वार्थों के कारण विलय के पक्षपाती थे। भूमि में सट्टा करने वाले लोग भी विलय का विशेष रूप से समर्थन कर रहे थे। इन कारणों के अतिरिक्त विलय के पक्ष में एक और महत्त्वपूर्ण कारण था। संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा टैक्सास की विलय की याचना ठुकराये जाने के पश्चात् टैक्सास के लोग इंग्लैण्ड से सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयास कर रहे थे, अत: अमेरिका में यह भय उत्पन्न हो गया है कि टैक्सास के निवासियों की स्वाभाविक महत्त्वाकांक्षाओं का आदर नहीं किया गया तो वे इंग्लैण्ड के नियन्त्रण में चले जायेंगे और वे अवांछनीय पड़ोसी बन जायेंगे। स्वयं टिलर इस विचार से चिन्तित था। जब वेबस्टर ने जो टैक्सास विलय का विरोधी था, अपना पद त्याग दिया तो टिलर ने उसके स्थान पर ऐबेल अपशर (Abel Upshur) को राज्य सचिव नियुक्त किया जो टैक्सास के विषय में टिलर जैसी मान्यताएँ रखता था। दुर्भाग्यवश अपशर का निधन 28 फरवरी, 1844 ईसवी को हो गया। उसके स्थान पर जॉन केलहुन को नियुक्त किया गया जो दक्षिण के स्वार्थों का पहले से ही समर्थक था। केलहुन की नियुक्ति के कारण टिलर प्रशासन का सबसे बड़ा उद्देश्य टैक्सास का विलय पूरा करना हो गया। इसी समय टैक्सास के राज्य की आर्थिक दशा इतनी बिगड़ गयी कि वह स्वतन्त्र अस्तित्व बनाये रखने में असमर्थ था। इंग्लैण्ड इस स्थिति को लाभ उठाना चाहता था। वह टैक्सास को आर्थिक सहायता देने को उत्सुक था। इंग्लैण्ड के भय से टैक्सास के विलय का प्रश्न गम्भीर बन गया। दक्षिण के राज्यों में यह स्वाभाविक शंका उत्पन्न हुई कि यदि टैक्सास इंग्लैण्ड के प्रभुत्व में चला गया तो दास व्यवस्था का अन्त हो जायेगा। इस पंकार की स्थिति दक्षिण के राज्य कभी भी नहीं चाहते थे, क्योंकि दास व्यवस्था पर ही उनकी समृद्धि आधारित थी। उनका विश्वास था कि अगर इस व्यवस्था में कहीं मतभेद हो गया तो समस्त दक्षिण की अर्थ व्यवस्था टूट जायेगी। टिलर ने केलहुन को टैक्सास के विलय पर वार्ता करने का आदेश दिया। केलहुन ने 1844 ईसवी में विलय सन्धि तैयार कर ली लेकिन जून, 1844 ईसवी में सीनेट ने निश्चित बहुमत से सन्धि को अस्वीकार कर दिया। टैक्सास का विलय का प्रश्न जीवित रहा और 1844 ईसवी के चुनाव में यह प्रश्न प्रमुख बना गया।

(3) इंग्लैण्ड से सम्बन्ध - टिलर के शासन काल में इंग्लैण्ड के साथ सम्बन्ध नाजुक स्थिति पर पहुँच चुके थे। दोनों देशों के मध्य मैन तथा न्यू ब्रुन्स्विक का सीमा विवाद तथा ओरेगन के संयुक्त स्वामित्व के प्रश्न पर मुख्य रूप से मतभेद था। किन्तु साथ ही कुछ अन्य कारण भी विद्यमान थे। प्रथम तो 1837 के झगड़ों में कनाडियन ने अमेरिका के जहाज केरोलीन (Caroline) को नष्ट कर दिया, क्योंकि उनका विश्वास था कि इसमें तस्कर व्यापारी जा रहे थे। मतभेद का दूसरा कारण क्रिओल (Creole)से सम्बन्धित था। क्रिओल एक अमेरिकी जहाज था जो दासों को लेकर जा रहा था। रास्ते में कुछ दासों ने विद्रोह कर दिया तथा उन्होंने जहाज के अधिकारियों

को ब्रिटिश बन्दरगाह नसाऊ (Nassau) में उतरने के लिए बाध्य किया। बहामा (Bahama) के ब्रिटिश अधिकारियों ने इन दासों को मुक्त कर दिया था। तृतीय, अंग्रेजी अधिकारियों द्वारा अमेरिका के अफ्रीकी समुद्री तट से व्यापार करने वाले जहाजों की तलाशी यह देखने के लिए ली जाती थी कि उनमें दास तो नही हैं। अमेरिका इसे अनुचित समझता था। अन्त में दोनों मतभेदों का एक कारण यह भी था कि कुछ अमेरिकी राज्यों ने ब्रिटिश देनदारों के ऋण को देने से इन्कार कर दिया था जिससे अंग्रेजी देनदारों को भारी क्षति का सामना करना पड़ा।

1841 ई. में मेलबार्न (Melbourne)की सरकार ने अमेरिका के साथ चल रहे दीर्घकालीन विवादों का समाधान करने का निश्चय किया। 1842 ईसवी में उसने एशबर्टन (Ashburton)को विशेष दूत बना कर इन विवादों के निदान के लिए भेजा। एशबर्टन तथा वेब्स्टर के मध्य हुई वार्ताओं के परिणामस्वरूप दोनों देशों में सन्धि हो गई जो ''वेब्स्टर एशबर्टन सन्धि'' (Webster-Ashburton Treaty)के नाम से प्रसिद्ध है।

इस सन्धि के अन्तर्गत 1783 ईसवी की सन्धि को भंग कर दिया गया। उत्तर पूर्वी सीमा विवाद का समाधान कर लिया गया। इस सन्धि से अमेरिका को विवादग्रस्त क्षेत्र के बारह हजार मीलों में से सात हजार मील का क्षेत्र प्राप्त हुआ। कालान्तर में प्राप्त साक्ष्य के अनुसार अमेरिका को प्राप्त भूमि उसके द्वारा 1782 ईसवी में माँग की गई भूमि के बराबर थी। किन्तु अमेरिका को अनजाने में कुछ भूमि का बलिदान भी करना पड़ा था। जहाजों की तलाशी के विरुद्ध अमेरिका में व्याप्त भावना के कारण वेब्स्टर एशबर्टन की योजना से सहमत नहीं हो सका। अत: यह निश्चय किया गया कि तलाशी जहाजों को अफ्रीकी तट से हटा दिया जाये। साथ ही दास व्यापार को रोकने के लिए एक रचनात्मक योजना स्वीकार की गई जिसमें विभिन्न राष्ट्रों को जहाजी बेड़े रखने तथा दास व्यापार को समाप्त करने के लिए कानून निर्माण के प्रस्ताव कों स्वीकार किया गया। क्रिओल (Creol)तथा ओरेगन के प्रश्नों का समाधान इस सन्धि में नहीं किया गया, किन्तु एशबर्टन ने कैरोलीन पर हुए आक्रमण के लिए क्षमा याचना की। इस प्रकार टिलर ने दोनों देशों के मध्य विवादों के समाधान में सफलता प्राप्त की जिस पर वह गर्व कर सकता था। अमेरिकी कूटनीतिक इतिहास में यह सन्धि एक महत्त्वपूर्ण अध्याय थी, क्योंकि इससे दोनों देशों के सम्बन्धों में पर्याप्त सुधार हुए।

टिलर का प्रशासन काल तथा उसके समय की राजनीति के महत्त्व को उन्नीसवीं शती के अमेरिकी इतिहास में कम नहीं किया जा सकता। 1840 ईसवी के चुनावों में अमेरिका में प्रजातन्त्र को दृढ़ बना दिया था जिससे अमेरिकी जनजीवन मानवता के सिद्धान्तों के दृष्टिकोण तथा बौद्धिक दृष्टि से समृद्ध हुआ। टिलर ने राष्ट्रपति के अधिकारों की सुरक्षा करके एक परम्परा स्थापित की। 1840 ईसवी के पश्चात् जैक्सन का काल समाप्त होने लगा। अमेरिका के औद्योगिक समाज में कृषि प्रधान आर्थिक दृष्टिकोण का महत्त्व घटने लगा। मध्यवर्गीय नागरिकों के हितों का महत्त्व बढ़ा। एकाधिकारों एवं कुलीनवर्गीय अधिकारों के प्रति अमेरिका में सहानुभूति कम हुई। साधारण जन हित, देश हित माना जाने लगा। टिलर ने अपने आपको अपनी दृष्टि से जन कल्याण के कार्यों में लगाये रखा। उसने अपने दल के सदस्यों तक की जो कांग्रेस में थे, परवाह

नहीं की। उसने 1837 ईसवी की मन्दी और आर्थिक संकट के परिणामों का सामना किया। अपने प्रशासन के दो वर्षों में आर्थिक स्थिति का सुधार किया तथा उसमें विश्वास उत्पन्न किया। 1842 ईसवी में सरकारी ऋण-पत्रों का सामान्य मूल्य पर विक्रय होने लगा जिससे राजकीय आय में वृद्धि हुई।

III. पोल्क का प्रशासन (1845-49 ईसवी) :

(1) 1844 का चुनाव - 1844 ईसवी के चुनाव में व्हिग दल ने अपने नेता हेनरी क्ले को राष्ट्रपति पद के प्रत्याशी के रूप में नामांकित किया। व्हिगों ने यह आशा की थी कि डेमोक्रेटिक लोग वान ब्यूरेन को अपना प्रत्याशी बनायेंगे। वान ब्यूरेन विलीनीकरण की नीति का विरोधी था। क्ले ने विलीनीकरण की नीति के अन्तर्गत टैक्सास के प्रश्न को चुनाव से अलग रखने का निश्चय किया। उसने इस सम्बन्ध में अपना एक प्रसिद्ध पत्र भी लिखा जिसमें टैक्सास की प्राप्ति के विरुद्ध अपने मत को प्रकट किया। क्ले का उद्देश्य स्पष्ट था। वह वान ब्यूरेन से टैक्सास के प्रश्न पर चुनाव नहीं लड़ना चाहता था लेकिन वह यह भूल गया कि यह प्रश्न उस समय अशिकांश अमेरिकीयों के मस्तिष्क को आदोलित कर रहा था। वान ब्यूरेन टैक्सास के प्रश्न पर अपने विश्वासों के कारण डेमोक्रेटिक दल का उम्मीदवार बनने में असमर्थ रहा। डेमोक्रेटिक दल ने जेम्स पोल्क (James Polk)को अपना प्रत्याशी बनाया। पोल्क एक कट्टर विस्तारवादी था। वह अमेरिकीयों की नियति-अभिव्यक्ति में विश्वास रखता था। उसने अपने चुनाव प्लेटफार्म या कार्यक्रम में टैक्सास के पुनर्विलय को तथा ओरेगन के क्षेत्र की पुन: अधिभाग को प्रधानता दी। ओरेगन क्षेत्र के प्रश्न का टैक्सास के साथ जोड़ कर पोल्क ने बड़ी बुद्धिमता का परिचय दिया, क्योंकि उत्तर के लोग ओरेगन की प्राप्ति के पक्ष में थे। इसलिए वे टैक्सास की उलझनों को भूल कर पोल्क के पक्ष में हो गये। इसी प्रकार व्हिग दल के वे लोग जो दास प्रथा के विरुद्ध थे, क्ले की टैक्सास पर अनिश्चित नीति के कारण अप्रसन्न हो गये। निराश होकर उन लोगों ने उदार दल के प्रत्याशी जेम्स बिरने (James Birney)को अपने मत प्रदान कर दिये जिसके कारण पोल्क की सफलता सरल हो गई।

(2) टैक्सास का विलय - पोल्क के चुनाव ने टैक्सास के प्रश्न पर अपना निर्णय दे दिया। टिलर ने इसे अपनी ही विस्तारवादी नीति का अनुमोदन माना। उसने राष्ट्रपति पद के त्याग से पूर्व पोल्क के चुनाव के सन्दर्भ में कांग्रेस के दोनों भवनों के समक्ष टैक्सास के समामेलन का प्रस्ताव रखा। काँग्रेस ने इस प्रस्ताव को टिलर द्वारा पद त्याग के तीन दिन पूर्व स्वीकार कर लिया। टैक्सास ने समामेलन की शर्तों को स्वीकार कर लिया। दिसम्बर, 1845 ईसवी में अपने राज्य का विधान बना कर टैक्सास ने अमेरिकी संघ में प्रवेश किया। टैक्सास का समामेलन 'नियति अभिव्यक्ति' के सिद्धान्त की विजय थी। जिन शर्तों पर टैक्सास का विलय हुआ उनमें से प्रमुख इस प्रकार थीं -- प्रथम, टैक्सास केवल एक राज्य के रूप में प्रवेश करेगा और अगर भविष्य में उसके क्षेत्र में अन्य राज्य बनाये जायेंगे तो उनकी संख्या 4 से अधिक नहीं होगी। दूसरा, टैक्सास के जो क्षेत्र अतिरिक्त राज्य बनेंगे उनके सम्बन्ध में एक अक्षरेखा निर्धारित कर दी गई तथा यह निश्चय किया गया कि जो राज्य इस रेखा के उत्तर में होंगे उनमें दास प्रथा नहीं होगी, किन्तु रेखा के

दक्षिणी राज्यों को अपनी इच्छानुसार दास रखने या न रखने का अधिकार होगा। तीसरा, यह राज्य अपने ऋणों के सम्बन्ध में स्वयं उत्तरदायी होगा। समामेलन के पूर्व टैक्सास ने इन सभी शर्तों को स्वीकार कर लिया। टैक्सास के विलेय पर मैक्सिको ने यह घोषणा की कि टैक्सास का अमेरिका में विलय युद्ध का कारण होगा। मैक्सिको ने इंग्लैण्ड और फ्रांस के परामर्श पर टैक्सास की स्वाधीनता को इस शर्त पर स्वीकारा था कि भविष्य में भी टैक्सास एक स्वतन्त्र राज्य रहेगा। टैक्सास के विलय के पश्चात् मैक्सिको ने अमेरिका से सम्बन्ध-विच्छेद कर लिये।

(3) ओरेगन का प्रश्न - ओरेगन का क्षेत्र अमेरिकी महाद्वीप में रॉकी पर्वत (Rocky Mountain) के पश्चिम में स्पेनिश भू भागों से रूसी अलास्का तक फैला हुआ था। वह विशाल पश्चिमी क्षेत्र संयुक्त राज्य अमेरिका के लिए बड़े महत्त्व का था। पोल्क ने अपने चुनाव कार्यक्रम के इस क्षेत्र के विलीनीकरण को महत्त्व दिया। प्रारम्भ में इस क्षेत्र के अनेक दावेदार थे, लेकिन 1819 तथा 1824 ईसवी में स्पेन तथा रूस ने अपने अधिकार त्याग दिये। 1818 ईसवी में इंग्लैण्ड से एक सन्धि हुई जिसके अनुसार इस क्षेत्र पर दस वर्ष के लिए इंग्लैण्ड व अमेरिका के संयुक्त अधिकार को स्वीकार किया गया। 1827 में इस सन्धि की पुनरावृत्ति की गई और यह निश्चय किया गया कि कोई भी पक्ष एक वर्ष पहले सूचना देकर इसे समाप्त कर सकेगा। सन्धि की पुनरावृत्ति के पश्चात् पश्चिम के लोग बड़ी मात्रा इस क्षेत्र में जाकर बसने लगे। इन अमेरिकी आवासियों ने 1843 ईसवी में एक अस्थायी प्रशासन की स्थापना की तथा संयुक्त राज्य से संरक्षण प्राप्त करने की याचना की। पोल्क ओरेगन के प्रश्न को हल करना चाहता था अत: उसने इंग्लैण्ड के राजदूत से वार्ता प्रारम्भ की। किन्तु कोई सन्तोषजनक हल नहीं निकला। उसने 1845 ईसवी में अपने वार्षिक सन्देश में कांग्रेस के समक्ष ''ओरेगन व्यवस्था'' सम्बन्धी सन्धि की समाप्ति के लिए इंग्लैण्ड को सूचना देने तथा ओरेगन क्षेत्र को संयुक्त राज्य अमेरिका के विधान में संरक्षण प्रदान करने का सुझाव दिया। साथ ही ओरेगन क्षेत्र में किलेबन्दी का सुझाव दिया। कांग्रेस ने राष्ट्रपति के सुझावों को स्वीकार कर लिया। अत: 1846 ईसवी में इंग्लैण्ड को सन्धि की समाप्ति की सूचना दे दी गई। राष्ट्रपति पोल्क के ये निंश्चय लोकप्रिय निश्चय थे और उनके कारण पश्चिमी क्षेत्रों में पोल्क की लोकप्रियता बढ़ी। पोल्क द्वारा कांग्रेस को दिये गये सन्देश को अमेरिका में मुनरो सिद्धान्त की पुनरावृत्ति के रूप में देखा गया। पोल्क ने स्पष्ट किया कि टैक्सास की भाँति ओरेगन में भी विदेशी गतिविधियों को सहन नहीं किया जायेगा।

ओरेगन के प्रश्न पर कूटनीतिक वार्तालाप का क्रम कुछ समय तक चलता रहा, लेकिन अन्त में इंग्लैण्ड की सरकार ने यह स्वीकार कर लिया कि अमेरिका के विरोध के कारण वे इस पश्चिमी क्षेत्र में नहीं रह सकते। इंग्लैण्ड की सरकार समझौते के लिए तैयार हो गई। इसका कारण यह भी था कि फर का व्यापार अधिक लाभदायक नहीं रहा था। इस क्षेत्र में काम करने वाली अंग्रेजी हडसन कम्पनी अपने कारोबार को उठा लेने के लिए तैयार थी। अत: ब्रिटिश सरकार ने सुझाव रखा था कि 49वीं अक्ष रेखा को सीमा मान लिया जाये। पोल्क ने सुझाव को स्वीकार कर लिया और इस प्रकार संयुक्त राज्य अमेरिका तथा कनाड़ा में सीमाओं का निर्धारण अटलाण्टिक से लेकर प्रशान्त महासागर तक हो गया। इस विशाल भू-भाग पर अमेरिकी

अधिकार हुआ तथा प्रभुसत्ता स्थापित हुई। इस क्षेत्र में आज ओरेगन के अतिरिक्त वाशिंगटन तथा इडाहो (Idaoho) के राज्य मिलते हैं। पोल्क ने इस प्रकार अपने चुनाव आश्वासन को पूरा किया।

(4) वाकर्स अधिनियम - पोल्क ने अपने चुनाव कार्यक्रम में प्रशुल्क दर तथा स्वतन्त्र कोषालय के प्रश्न पर जैक्सोनियन मान्यताओं का समर्थन किया था। पद की प्राप्ति के पश्चात् उसने इन आश्वासनों को भी पूरा किया। उसे अपने कार्य में काँग्रेस का समर्थन मिला, क्योंकि काँग्रेस के दोनों ही सदनों में डेमोक्रेट्स की प्रधानता थी। उसने एक स्वतन्त्र कोषालय की पुन: स्थापना की। यह भी व्यवस्था की कि सरकार अपनी अदायगी के लिए नकद मुद्रा देने के लिए बाध्य नहीं हो। इस प्रकार उसने जैक्सन के विचारों की पुनरावृत्ति की। प्रशुल्क के प्रश्न पर भी पोल्क के काल में, 1846 ईसवी में एक ''वाकर्स एक्ट'' (Walkers Act) पारित किया गया। वाकर पोल्क के मन्त्रिमण्डल में कोषालय मन्त्री था। इस अधिनियम के अन्तर्गत प्रशुल्क की दर को कम किया गया।

(5) मैक्सिको से सम्बन्ध तथा मैक्सिकन युद्ध - ओरेगन के प्रश्न पर पोल्क ने ब्रिटिश सुझाव को सम्भवत: इसलिए तुरन्त स्वीकार कर लिया था, क्योंकि संयुक्त राज्य अमेरिका के मैक्सिको से सम्बन्ध बिगड़ रहे थे तथा युद्ध तक की सम्भावना थी। टैक्सास के विलय के पूर्व मैक्सिको ने यह धमकी दी थी कि यदि विलय हुआ तो वह युद्ध का कारण हो सकता है। मैक्सिको से टैक्सास के विलय के पश्चात् कूटनीतिक सम्बन्ध-विच्छेद कर लिये तथा विलय को मान्यता नहीं दी। पोल्क मैक्सिको के प्रति मेल मिलाप तथा निपटाने की नीति अपनाना चाहता था। टैक्सास विलय के विवाद को समाप्त करने तथा कैलीफोर्निया का प्रांत अमेरिका के लिए क्रय करना चाहता था। मैक्सिको दोनों ही बातें मानने के लिए तैयार नहीं था।

1845 ईसवी में पोल्क ने जान स्लीडेल (John Slidell) को अपने विशेष प्रतिनिधि के रूप में मैक्सिको भेजा। पोल्क ने कुछ निश्चित प्रस्ताव ''स्लीडेल मिशन''(Slidell Mission) के साथ भेजे। ये प्रस्ताव थे-प्रथम, यह कि अगर मैक्सिको की सरकार न्यूसेस (Nueces) के स्थान पर रियो ग्रेन्डो को टैक्सास के दक्षिण सीमा मान ले तो अमेरिकी सरकार स्वयं अपने नागरिकों के उन दावों का उत्तरदायित्व ले लेगी जो कि मैक्सिको में शेष थे। द्वितीय, अमेरिकी सरकार न्यू मैक्सिको क्षेत्र के लिए प्रस्तावित धन राशि के अतिरिक्त पाँच लाख डालर और देगी। तीसरा, कैलीफोर्निया के क्षेत्र के लिए भी पच्चीस लाख डालर अतिरिक्त देने का आश्वासन भी स्लीडेल के माध्यम से भेजा गया। स्लीडेल मिशन को यह आदेश दिया गया था कि वह वार्तालाप मैत्री व सद्भावना के वातावरण में करने का प्रयास करे ताकि मैक्सिको से अच्छे सम्बन्ध स्थापित किये जा सकें। लेकिन मैक्सिको में स्लीडेल का स्वागत नहीं किया गया, क्योंकि उस समय मैक्सिको में संयुक्त राज्य अमेरिका के प्रति केवल रोष की भावना ही नहीं थी वरन् सभी देशभक्त मैक्सिकनों का यह विश्वास था कि संयुक्त राज्य ने टैक्सास के क्षेत्र को चुरा लिया है। अब वह उनके शेष राष्ट्रीय सम्मान को भी चकनाचूर करना चाहता है। मैक्सिकन नागरिक इस समय उन नेताओं का

समर्थन कर रहे थे जो कि अन्तर्राष्ट्रीय थे, संयुक्त राज्य को अपना शत्रु समझते थे तथा उससे युद्ध के पक्ष में थे। स्लेडेल मिशन की असफलता के पश्चात् पोल्क ने मैक्सिको पर दबाव डालने का निर्णय किया।

1846 ईसवी में पोल्क ने अमेरिकी सेनापति जनरल टेलर (General Taylor)को यह आदेश दिया कि वह न्यूसेस से बढ़कर रियो ग्रेन्डो जाकर अपने आपको स्थापित कर ले। टेलर द्वारा आदेश का पालन किए जाने पर मैक्सिको के सेनापति ने जो अपनी सेनाओं के साथ रियो ग्रेन्डो नदी के दूसरे तट पर था, चेतावनी दी कि अगर टेलर न्यूसेस (Nueces) और उसकी नदी तक पीछे नहीं हटा तो युद्ध छिड़ जायेगा। मैक्सिको ने टैक्सास को अभी तक संयुक्त राज्य अमेरिका के अधीन नहीं माना था, इसलिए उसकी मान्यता थी कि टेलर का रियो ग्रेन्डो आ जाना स्पष्टत: मैक्सिको पर आक्रामक कार्यवाही थी। मैक्सिको रक्षात्मक कार्यवाही के लिए स्वयं को स्वतन्त्र समझता था। 9 मई, 1846 ईसवी को जब टेलर नहीं हटा तो मैक्सिकन सेनाओं ने रियोग्रेन्डो पर आक्रमण कर दिया और अमेरिकी सैनिकों को हताहत कर दिया। पोल्क ने तुरन्त काँग्रेस को सूचना दी कि स्वयं मैक्सिको की कार्यवाही से युद्ध छिड़ गया।

अमेरिकी कांग्रेस ने पोल्क के इस सन्देश को स्वीकार किया कि मैक्सिको ने युद्ध छेड़ा है और राष्ट्रपति को यह अधिकार दिया कि वह पचास हजार सैनिकों के अतिरिक्त परिस्थिति को देखते हुए सेना खड़ी करे। तदर्थ एक करोड़ डालर की धन राशि स्वीकृत की। मैक्सिकन युद्ध के प्रारम्भ होने से दक्षिण पश्चिम के राज्यों में उत्साह की लहर फूट पड़ी, क्योंकि इससे विस्तार की सम्भावनायें स्पष्ट हो गयी थी। न्यू इंग्लैण्ड के दास विरोधी लोगों ने युद्ध का स्वागत नहीं किया और वह प्रशासन की कटु आलोचना करने लगे। मैक्सिको के युद्ध अभियान का उत्तरदायित्व जकारी टेलर (Zachary Taylor) को सौंपा गया। टेलर ने सैनिक दृष्टि से अनेक त्रुटियाँ की, किन्तु फिर भी उसे लगातार सफलता मिलती रही। पालो आल्टो (Palo Alto) तथा पालमा (Palma) के स्थानों पर विजय प्राप्त कर वह मई, 1846 ईसवी में मेटामोरोज (Metamorose) पहुँच गया। वर्ष के अन्त तक उसने अनेक स्थानों पर आधिपत्य स्थापित कर लिया। इसी समय पोल्क ने यह निर्णय लिया कि मैक्सिको नगर पर अलग से वीराक्रुज (Veracruz) मार्ग से आक्रमण किया जाये, इसके लिए पोल्क ने जनरल स्काट (General Scott) को उत्तरदायित्व सौंपा। स्काट की सेना में टेलर की कुछ सेना का भाग भी मिलाया गया। यह सूचना जब मैक्सिकन सेनापति सेन्टा ऐना (Santa Anna)को मिली तो उसने ब्यूनाइस्टा (Buenavista) के स्थान पर आक्रमण कर दिया। टेलर अपनी छोटी सी सेना की शक्ति पर ही अपने आपको सुरक्षित रखने में सफल हुआ। टेलर ने मैक्सिकन सेनाओं को उनके प्रत्येक लक्ष्य की प्राप्ति से वंचित रखा। उधर स्काट की सेना का घोर विरोध किया गया। मैक्सिको की सेना ने प्रबल प्रतिरोध किया। स्काट ने अप्रेल 17-18, 1847 ईसवी को शीरो ग्रोडो (Cerro Grodo) के स्थान पर मैक्सिकन सेनाओं को परास्त कर तितर बितर कर दिया। तत्पश्चात् अमेरिकन सेनाओं ने मैक्सिकन राजधानी में प्रवेश किया। मैक्सिको ने अपनी पराजय को स्वीकार कर लिया।

(6) गुडाल्यूप हिडालेहो (Guadalupe Hidaleho) की सन्धि, 1848 - राष्ट्रपति पोल्क ने यह आशा की थी कि अमेरिकी शक्ति के आगे जब मैक्सिकनवासी नहीं टिक पायेंगे तब वे शान्ति वार्ता के लिए तैयार हो जायेंगे। स्काट की सेना के साथ विदेश विभाग के एक अधिकारी निकोलस ट्रीस्ट (Nicholas Trist) को भी भेजा गया। उसे यह आदेश दिया गया कि वह मैक्सिको से उन क्षेत्रों को खरीदने का प्रयास करे जिनकी संयुक्त राज्य अमेरिका को आवश्यकता थी। ट्रीस्ट ने मैक्सिकन सरकार से वार्तालाप किया जिसके आधार पर 2 फरवरी, 1848 ईसवी को "गुडाल्यूप हिडालेहो" की सन्धि पर हस्ताक्षर किये गये। इस सन्धि के अन्तर्गत प्रथम तो मैक्सिको की सरकार ने टैक्सास के विलय को स्वीकार किया तथा रियो ग्रेन्डो की सीमा मान लिया। द्वितीय, न्यू मैक्सिको, कैलीफोर्निया तथा अन्य पश्चिम की भूमि अमेरिका को प्रदान कर दी। तृतीय, अमेरिकी सरकार ने यह स्वीकार किया कि वे मैक्सिको को डेढ़ करोड़ डालर देगी और वह स्वयं मैक्सिको में अमेरिकी नागरिकों के दावों की रकम चुकायेगी जो कि उस साढ़े बत्तीस लाख डालर थी। इस प्रकार अमेरिका से सन्धि की शर्तें उदार ही थी। अमेरिका चाहता तो समस्त मैक्सिको को अधिकृत कर सकता था, किन्तु ऐसा न कर उसने बुद्धिमानी की, क्योंकि मैक्सिको के अन्य भागों में रहने वाले नागरिक अपनी राष्ट्रीय भावनाएँ रखते थे। उनका अमेरिकी समाज में विलय होना कठिन हो सकता था। 1848 ईसवी में अमेरिका की सीमाएँ लगभग सम्पूर्ण हो गई। गुडाल्यूप हिडालेहो की सन्धि को सीनेट ने अल्प बहुमत से 10 मार्च, 1848 ईसवी को स्वीकार कर लिया।

IV. 1848 का चुनाव :

पोल्क का राष्ट्रपति काल उपलिब्धयों और प्रतिष्ठा का रहा। अमेरिकी राजनीति ने पोल्क के प्रशासन काल में ही एक ऐसा मोड़ लिया कि आगामी वर्षों से अमेरिकी राजनीति में एक गम्भीर संघर्ष उत्पन्न हुआ जो अमेरिका के गृह युद्ध का मूल कारण बना। जिस प्रश्न पर विवाद उत्पन्न हुआ वह दास प्रथा थी। 1845 ईसवी में स्लीडेल मिशन के मैक्सिको भेजने के पश्चात् अमेरिकी कांग्रेस में एक विधयेक रखा गया था। जिसमें राष्ट्रपति को वीस लाख डालर की धन राशि इस अभिप्राय से देने का प्रस्ताव था कि वह मैक्सिको के साथ भू-क्षेत्रों की खरीद की बातचीत कर सके तथा उस धन राशि को खर्च कर सके। जब यह विधेयक कांग्रेस के समक्ष आया तो पेनसिलवेनिया राज्य के एक प्रतिनिधि डेविड विलमौट (David Vilmot) ने यह संशोधन रखा कि मैक्सिको से प्राप्त सभी भू-भागों में दास प्रथा को निषेध कर दिया जाये। डेविड का संशोधन कांग्रेस ने पारित नहीं किया, फिर भी वह अमेरिकी राजनीति में एक तीव्र विवाद का विषय बन गया। नई प्रास भूमियों में दास प्रथा के प्रसार के सम्बन्ध में अमेरिका में एक राष्ट्रीय विवाद खड़ा हो गया और इसका परवर्ती अमेरिकी राजनीति में महत्त्वपूर्ण स्थान बन गया। इस प्रश्न को लेकर उत्तर और दक्षिण के राज्यों में एक द्वन्द्व खड़ा हो गया जिसने ही आगे चलकर गृह युद्ध का रूप ले लिया।

उत्तर के राज्यों को यह भय था कि नये दास राज्यों की स्थापना से अमेरिकी संघ में शक्ति सन्तुलन बिगड़ जायेगा। 1848 ईसवी में राष्ट्रपति के पद के चुनाव में दास प्रथा के प्रश्न को लेकर डेमोक्रेटिक दल में मतभेद उत्पन्न हो गया। इसके विपरीत व्हिग दल ने अपने आपको संगठित

रखा और पूर्व की भाँति कोई निश्चित कार्यक्रम नहीं अपनाया। व्हिगों ने मैक्सिकन युद्ध की आलोचना की थी फिर भी इस युद्ध के नायक जनरल टेलर को दल ने अपना प्रत्याशी चुना। व्हिग दल टेलर की लोकप्रियता से लाभान्वित होना चाहता था तथा जनता के समक्ष यह प्रस्तुत करना चाहता था कि डेमाक्रेटिक प्रशासन में इस नायक के साथ जो एक प्रसिद्ध राष्ट्रीय योद्धा था, दुर्व्यवहार किया गया था। टेलर को ब्यूनाविस्टा का नायक (Hero of Buenavista) कहकर सम्बोधित किया गया और उसकी लोकप्रियता को बढ़ाया गया। डेमोक्रेटिक दल ने भी मिशिगन के सीनेटर लेविस काश (Lewis Cass) को अपना प्रत्याशी बनाया जो स्वयं एक सेनापति रह चुका था। डेमोक्रेटो ने अपने कार्यक्रम में स्पष्ट रूप से मैक्सिकन युद्ध का समर्थन किया, लेकिन यह दल अपने आन्तरिक मतभेदों को दूर नहीं कर पाया।

डेमोक्रेटिक दल का अधिवेशन बाल्टिमोर में हुआ। न्यू यार्क के बड़े राज्य से दो अलग-अलग प्रतिनिधि मण्डल आने से सम्मेलन में अव्यवस्थता हुई। न्यू यार्क का एक प्रतिनिधि मण्डल बार्न बर्नस (Barn Burness) का था जिन्हें 'सोफ्ट्स' (Softs) कह कर पुकारा जाता था। यह प्रशासन का विरोधी तथा दास प्रथा के विरुद्ध था एवं राजनीतिक सुधार चाहता था। दूसरा प्रतिनिधि मण्डल हन्कर्स (Hunkers) का था जो 'हाईस लेविस' कहलाते थे। सम्मेलन में पोल्क ने प्रत्याशी बनने से इन्कार कर दिया। अतः काश को नामांकित किया गया, किन्तु बार्नबर्नस ने लेविस काश का समर्थन करने से इन्कार कर दिया तथा वान ब्यूरेन को अपना उम्मीदवार बनाया। ब्यूरेन के लिए पुरानी उदार पार्टी तथा स्वतंत्र सैनिकों के एक दल का समर्थन भी प्राप्त किया। ये सब लोग नव प्राप्त भूमियों में दास प्रथा को नहीं चाहते थे इसलिए यह नया दल 'फ्री सोइल पार्टी' (Free Soil Party) कहलाता था।

न्यू यार्क राज्य में डेमोक्रेटिक दल से अलग हुए बार्नबर्नस तथा उसके समर्थकों ने इतनी क्षति पहुँचाई कि वान ब्यूरेन चुनाव में काश से आगे रहा, किन्तु इससे लाभ व्हिगों को हुआ और टेलर अल्प बहुमत से चुनाव में विजयी रहा।

टेलर एक ईमानदार, सिद्धान्तवादी तथा उच्च नैतिक आचरण का व्यक्ति था। वह अपने विचारों का पक्का था लेकिन राजनीति का उसे अनुभव नहीं था, न ही उसने पहले किसी चुनाव में भाग लिया था। आरम्भ में टेलर दास प्रथा का समर्थक था, क्योंकि वह स्वयं बहुत बड़ा प्लान्टर था। उसके प्लान्टेशन में सैकड़ों दास कार्य करते थे। कालान्तर में टेलर व्हिग नेता विलियम हेनरी सीवार्ड (William Henry Seward) के प्रभाव से दास प्रथा का विरोधी हो गया। सीवार्ड ने दास प्रथा का पुरजोर विरोध किया। सीवार्ड के प्रभाव से टेलर संघ का शक्तिशाली समर्थक बन गया। वह संघ से सम्बन्ध विच्छेद के विचार तक को सहन नहीं कर सकता था।

V. टेलर का प्रशासन (1849-50 ईसवी) :

(1) कैलीफोर्निया की विजय - न्यू मैक्सिको तथा कैलीफोर्निया के क्षेत्र पर मैक्सिको का नियन्त्रण नाम मात्र का था। कैलीफोर्निया के प्रान्त से अमेरिका का सम्पर्क वाशिंगटन के काल में ही स्थापित हो चुका था। 1827 ईसवी में ईर्विंग यंग (Erwing Young) ने लॉस एंजेल्स (Las

Angeles) तक का मार्ग खोज लिया था और अमेरिकी उन्नीसवीं शती के पूर्वार्द्ध में सान फ्रांसिस्को (San Francisco) की खाड़ी पर बस गये। मैक्सिकन युद्ध के काल में अमेरिकी नौ सेना की प्रशान्त टुकड़ी के नौ सेनापति स्लोट (Slot) तथा स्टोकटन (Stockton) के नेतृत्व में सान फ्रांसिस्को, मोन्टेरी (Monterey) तथा लास एंजेल्स के नगरों पर अधिकार कर लिया गया। अनेक अमेरिकी आप्रवासियों ने सोनोमा (Sonoma) के नगर में जॉन फ्रेमाण्ट (John Fremont) के नेतृत्व में अमेरिका का झंडा फहरा दिया गया। जून, 1846 ईसवी में कर्नल कीयरनी (Kearny) ने कैलीफोर्निया में प्रवेश किया। स्टोकटन तथा फ्रेमाण्ट की सहायता से कीयरनी ने कैलीफोर्निया से मैक्सिको की शक्ति तथा अधिकारों को पूर्णत: समाप्त कर दिया। इस प्रकार 1848 ईसवी तक कैलीफोर्निया पर अमेरिका का पूर्ण अधिकार स्थापित हो गया।

1848 ई. में कैलीफोर्निया में स्थित सेक्रेमेन्टो की घाटी (Valley of Sacramento) में सोने की खानें प्राप्त हुईं जिसके कारण हजारों की संख्या में इस स्वर्ण धातु की तृष्णा रखने वाले फावड़े, कुदालियाँ, गेंतियाँ व तगारियाँ ले लेकर सेक्रेमेन्टो की घाटी की ओर चल पड़े। अनेक लोग स्थल मार्ग से गाड़ियों में गये और उनमें से मार्ग में आने वाले मरुस्थल में भूख व प्यास से मर गये। दूसरे लोग समुद्री मार्ग से गये तथा कुछ लोग पनामा के क्षेत्र से होकर कैलीफोर्निया पहुँचे। दो वर्ष के काल में कैलीफोर्निया की जनसंख्या में नब्बे हजार आप्रवासी सम्मिलित हो गये। स्वर्ण की तृष्णा रखने वाले लोग "फोर्टी नाइनर्स"(Forty Niners) कहलाने लगे, क्योंकि 1849 ईसवी में ये लोग वहाँ पहुँचे थे। इस क्षेत्र में अमेरिका के सभी भागों से लोग आये तथा कुछ लोग चीन व आस्ट्रेलिया से भी पहुँचे। "गोल्ड रश"(Gold Rush) ने इस क्षेत्र के महत्त्व को बढ़ा दिया। एक कमरे का किराया एक हजार डालर प्रति मास तथा दस डालर में एक दर्जन अंडे बिकने लगे। पहुँचने वाले लोगों में अपराधी लोग भी थे तथा ऐसी स्त्रियाँ थीं जिनके आचरण बहुत अच्छे नहीं थे। फिर भी कैलीफोर्निया में नये बसने वाले लोगों ने स्थायित्व के महत्त्व को समझा तथा 1849 ईसवी के अन्त तक अपना विधान बना लिया, गवर्नर तथा विधायक सभा के सदस्यों का चुनाव कर लिया तथा अमेरिकी कांग्रेस से कैलीफोर्निया को राज्य के रूप में सम्मिलित करने की प्रार्थना की।

(2) यूटा के राज्य क्षेत्र का विकास – कैलीफोर्निया के 'गोल्ड रश' से यूटा के राज्य क्षेत्र का भी विकास हुआ क्योंकि यह क्षेत्र कैलीफोर्निया के स्थल मार्ग के बीच में आता था। इस क्षेत्र में एक विशेष धार्मिक सम्प्रदाय के लोग, जो मोरमान (Morman) कहलाते थे, 1847 ईसवी के लगभग पहुँच गए थे। उस समय तक वे इस क्षेत्र को अपना समझते थे। मोरमान सम्प्रदाय के नेता ब्रिघम यंग (Brigham Young) ने इस क्षेत्र को बसाया। 1850 ईसवी में इस क्षेत्र को राज्य-क्षेत्र (Territory) का दर्जा प्रदान कर दिया गया तथा यंग को इस राज्य-क्षेत्र का प्रथम गवर्नर नियुक्त किया गया।

(3) नई राजनीतिक समस्याएँ -विवाद व समझौता – मैक्सिकन युद्ध के पश्चात् प्राप्त भू-भागों के कारण संयुक्त राज्य अमेरिका में दो प्रमुख समस्याएँ उत्पन्न हुईं। प्रथम समस्या तो यह थी कि कैलीफोर्निया तथा प्रशान्त सागर के तटवर्ती क्षेत्रों पर पहुँचने के लिए एक ऐसे मार्ग का

निर्माण आवश्यक था जिससे उन क्षेत्रों के लिए यातायात की सुविधा हो जाये। सेक्रोमेन्टो की घाटी में बसे हुए 'फोर्टी नाइनर्स' यह माँग कर रहे थे कि केन्द्रीय अमेरिका के राज्य से पनामा के मार्ग से प्रशान्त तक पहुँचने के लिए या तो कोई नहर बनाई जाये अथवा रेल लाइन का निर्माण किया जाये। इस प्रकार प्रशान्त और अटलाण्टिक सागर को पनामा के क्षेत्र से एक जलडमरुमध्य से जोड़ने की बात जोर पकड़ने लगी। 1846 ईसवी में संयुक्त राज्य अमेरिका ने न्यू ग्रेनेडा (New Granada) के राज्य से एक सन्धि की। दो वर्ष पश्चात् अमेरिकी पूँजीपति उस क्षेत्र में स्थित संकीर्ण मार्ग पर रेल निर्माण का कार्य करने लगे थे। लेकिन संयुक्त राज्य अमेरिका तथा इंग्लैण्ड दोनों ही निकारागुआ (Nicaragua) के स्थान पर जलडमरु मार्ग बनाना चाहते थे। इंग्लैण्ड का इस क्षेत्र में अभी तक प्रभाव था जो उसने स्पेन की शक्ति लुप्त होने के पश्चात् स्थापित किया था। 1850 ईसवी में इंग्लैण्ड और अमेरिका ने इस प्रश्न पर एक सन्धि की जो कि क्लेटन-बुलवर सन्धि (Clayton-Bulwer Treaty) कहलाती है। इस सन्धि में दोनों ने निश्चय किया कि इस क्षेत्र में संयुक्त रूप से नहर निर्माण किया जायेगा तथा कोई भी शक्ति किलेबन्दी नहीं करेगी। वे इस क्षेत्र में उपनिवेशीकरण नहीं करेंगे तथा निर्मित नहर को तटस्थ रखा जायेगा। इस सन्धि के पश्चात् भी नहर का निर्माण नहीं हो सका एवं यह सन्धि आगे चल कर 1901 ईसवी में समाप्त कर दी गई।

कैलीफोर्निया से सम्पर्क स्थापित करने का दूसरा उपाय रेल लाइन का निर्माण हो सकता था लेकिन इतनी लम्बी रेल लाइन डालने के लिए सरकारी सहायता आवश्यक थी। इसके साथ-साथ अमेरिका में यह विवाद उत्पन्न हुआ कि रेल लाइन उत्तरी क्षेत्र में बनाई जाये या दक्षिण क्षेत्र में। 1853 ईसवी में इस दिशा में प्रगति करने के लिए दक्षिण कैरोलिना की एक कम्पनी के अध्यक्ष जेम्स गेड्सडेन (James Gadsdan) ने मैक्सिको के राज्य से बातचीत की। गीला घाटी (Gila Valley) के पचास हजार वर्ग मील के क्षेत्र को मैक्सिको से खरीद लिया गया, क्योंकि दक्षिण के इस क्षेत्र से प्रशान्त तक रेल लाइन डाली जा सकती थी।

(4) दास प्रथा पर गम्भीर मतभेद - नये राज्य-क्षेत्रों की प्राप्ति के कारण जो गम्भीर समस्या उत्पन्न हुई वह यह कि नये क्षेत्रों में दास प्रथा मान्य हो अथवा निषिद्ध। इस प्रश्न पर विवाद 1846 ईसवी में ही डेविड विलमोट (David Wilmot) द्वारा उत्पन्न किया गया था। इसी विवाद ने आगे चलकर गृह युद्ध का रूप धारण कर लिया। अमेरिका के इतिहास में यह विवाद अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है और इसके कारण अनेक तथा गहन थे। अमेरिका का यह संघर्ष साधारण नहीं था।

इस संघर्ष में आर्थिक स्वार्थों का विशेष महत्त्व रहा। इसमें सन्देह नहीं कि उत्तर और दक्षिण के राज्यों की अर्थ व्यवस्था एक दूसरे से भिन्न थी और उनके आर्थिक स्वार्थों में अमेरिकी संघ की स्थापना के समय से ही बड़ा अन्तर था। दक्षिण की अर्थ व्यवस्था कृषि प्रधान थी और वह नहीं चाहता था कि संघ बड़े उद्योगों के स्वार्थों के लिए कोई केन्द्रीय बैंकिंग व्यवस्था करें या प्रशुल्क लगाये और न ही वह संघ द्वारा आन्तरिक सुधारों के लिए सार्वजनिक धन राशि जुटाने के पक्ष में था। इसके विपरीत उत्तर तथा उत्तर पूर्व के पूँजीपति व उद्योगपति ये सब बात चाहते थे। गृह युद्ध के पूर्व के काल में संघीय सरकार में एक लम्बे समय तक दक्षिणी प्रभाव रहा, लेकिन दास प्रथा

के प्रश्न को लेकर पश्चिमी के किसानों ने उत्तर पूर्व के व्यापारियों का साथ देना प्रारम्भ कर दिया। इससे संघीय सरकार में दक्षिण के राज्यों का प्रभाव समाप्त हो गया। शक्ति का यह स्थानान्तरण भी गृह युद्ध का एक राजनीतिक कारण बना।

दास प्रथा को ही इस विवाद और संघर्ष का मुख्य कारण माना जाता है और यह बात कही जाती है कि उत्तर और दक्षिण के भिन्न-भिन्न स्वार्थों के अतिरिक्त दास प्रथा को लेकर उत्तर और दक्षिण में सामाजिक दृष्टिकोण तथा नैतिक मान्यताओं को संघर्ष था। दक्षिण के लोग दास प्रथा में कोई बुराई नहीं समझते थे जबकि उत्तर के लोग उसे राष्ट्रीय लज्जा मानते थे। उन्नीसवीं शती के दूसरे दशक में अमेरिका में इस प्रकार की संस्थाएँ बन गई थी जो दास प्रथा की समाप्ति को अपना लक्ष्य मानती थी। प्रारम्भ में यह आशा की गई कि दास स्वामी अपने दासों को मुक्त कर देंगें लेकिन जब यह आशा पूरी होती दिखाई नहीं दी तब इस पर और अधिक प्रहार किया गया। इसे ईसाई धर्म के सिद्धान्तों और आदर्शों के विरुद्ध बताया गया । यह माँग की गई कि इसे शीघ्र समाप्त किया जाये। यह आन्दोलन अमेरिका में दास उन्मूलन आन्दोलन (Abolitionist Movement) कहलाता है। इस आन्दोलन ने विवाद को और अधिक गम्भीर बना दिया।

'एबोलिशनिस्ट आंदोलन' को दक्षिण के लोग अपने मामले में अनुचित हस्तक्षेप समझते थे। इस आन्दोलन को लेकर दक्षिण के दास स्वामियों की नैतिकता पर जो प्रहार किये जाते थे उससे केवल कटुता ही उत्पन्न हुई। फिर दक्षिण के दास स्वामियों को यह भय था कि इस आन्दोलन के कारण कहीं दक्षिण के दास विद्रोह नहीं कर दें। दक्षिण के राज्यों ने अपने अधिकार-क्षेत्रों में आंदोलन के साहित्य को निषिद्ध रखा। दास प्रथा के प्रश्न पर भाषण की स्वतन्त्रता का उपयोग नहीं होने दिया। इसी प्रकार अमेरिकी कांग्रेस में दक्षिण के विधायकों ने आन्दोलन की संस्थाओं द्वारा दी गई याचनाओं पर विचार नहीं होने दिया जिससे राजनीति में उत्तेजना उत्पन्न हुई। जॉन क्विन्सी एडम्स ने याचनाएँ देने के वैधानिक अधिकार का समर्थन किया।

1848 ईसवी के पश्चात् विवाद ने नया रूप ले लिया। प्रश्न यह था कि क्या दास प्रथा नव प्राप्त भू भागों में स्वीकार की जाये? इस प्रश्न पर अमेरिकी राजनीति में और अधिक गर्मागर्मी आई। उत्तर के अधिकांश लोग दक्षिण में प्रचालित दास प्रथा में हस्तक्षेप नहीं करना चाहते थे, लेकिन 1848 ईसवी में उत्तर के अधिकांश लोग इस प्रश्न पर दृढ़ थे कि इस कुप्रथा को नये क्षेत्रों में फैलने से रोका जाना चाहिए। दास प्रथा पर इस प्रकार प्रहार होते देखकर दक्षिण में यह मान्यता बढ़ी कि संघीय सरकार को इस प्रथा में हस्तक्षेप करने को कोई अधिकार नहीं है। दास उनकी सम्पत्ति है और संघीय सरकार का यह उत्तरदायित्व है कि वह इस सम्पत्ति के अधिकार को संरक्षण प्रदान करे। दक्षिण के लोगों को यह भी भय था कि नये क्षेत्रों में दास प्रथा को निषिद्ध कर दिया गया तो भविष्य में इस प्रथा को उनके क्षेत्रों से अवश्य ही समाप्त कर दिया जायेगा। अत: वे चाहते थे कि नये क्षेत्रों में उत्तर व दक्षिण के लोगों के समान अधिकार प्रदान किये जायें। इसका तात्पर्य यह था कि दक्षिण के बड़े प्लान्टर्स नये क्षेत्रों में भी दासों के आधार पर बड़े-बड़े प्लान्टेशन स्थापित करने की इच्छा रखते थे। इस बात से पश्चिम के किसान बहुत डरते थे

क्योंकि वे जानते थे कि अगर नये क्षेत्रों में दास प्रथा को स्वीकार कर लिया गया तो वे वहाँ जाकर बस नहीं सकेंगे, क्योंकि उन्हें वहाँ दक्षिण के बड़े प्लान्टर्स का सामना करना पड़ेगा और उनसे वे प्रतिस्पर्द्धा नहीं कर सकेंगे। फिर दास प्रथा के प्रश्न को लेकर यह भी एक राजनीतिक समस्या खड़ी हो गई थी कि यदि नये क्षेत्रों में स्वतन्त्र राज्य स्थापित हुए तो संघ में दक्षिण के राज्य अल्पमत में हो जायेंगे और भविष्य के लिए उन्हें उत्तर के राज्यों के प्राबल्य के अधीन रहना पड़ेगा।

अमेरिका की राजनीति में नये प्रदेशों की प्राप्ति के साथ दास प्रथा के प्रश्न को लेकर महत्त्वपूर्ण परिवर्तन आया। व्हिग दल में, जो अब तक डेमोक्रेटिक दल की अपेक्षा अधिक सुदृढ़ एवं संगठित था, पारस्परिक मतभेद उत्पन्न हो गये। व्हिग दल के अनेक समर्थक डेमोक्रेटिक दल में चले गये। उत्तर में व्हिग दल दो गुटों में विभक्त हो गया। इनमें से एक 'कोन्शियन्स व्हिग्स' (Concience Whigs) कहलाने लगा जो अपनी आत्मा की आवाज से दास प्रथा का दृढ़ शत्रु था। दूसरा गुट 'काटन व्हिग्स' (Cotton Whigs) कहलाने लगा जिसका स्वार्थ दक्षिण के रुई उत्पादन में था, जो संघ की सुरक्षा इस शर्त पर चाहता था कि दक्षिण में दास प्रथा को जीवित रहने दिया जाये। इसी कारण से दक्षिण के अनेक प्लान्टर्स व्हिग दल का समर्थन करते रहे, किन्तु जब उन्होंने इस दल में कान्शियन्स दल का प्रभुत्व बढ़ते देखा तो उनमें से अनेक डेमोक्रेटिक दल में चले गये।

व्हिग दल के विपरीत डेमोक्रेटिक दल इस काल में स्पष्टत: दक्षिण के बड़े भू स्वामियों अथवा प्लान्टर्स का दल बन गया। फिर भी इस दल को उत्तर के राष्ट्रवादियों तथा जैक्सोनियनों का भी समर्थन प्राप्त था। इस प्रकार से व्हिग दल की अपेक्षा यह दल अधिक संगठित था। उत्तर के डेमोक्रेट दल दक्षिण के लोगों के नियंत्रण से चिन्तित रहे और इसी कारणवश आगे चल कर ये लोग कान्शियन्स व्हिग से मिल गये। जिसके परिणामस्वरूप 1854 ईसवी में एक नये दल की स्थापना हुई जिसने रिपब्लिकन दल के नाम से अमेरिकी राजनीति में प्रवेश किया।

दक्षिण के डेमोक्रेटों में भी मतभेद उत्पन्न हुआ। दास प्रथा के प्रश्न पर सभी दक्षिण के डेमोक्रेट सहमत थे और दल में ऐसे लोगों का बहुमत था जो अमेरिकी संघ को सुरक्षित रखना चाहते थे। शर्त इतनी ही थी कि संघ दक्षिण के स्वार्थों एवं अधिकारों की रक्षा करे, लेकिन दक्षिण के डेमोक्रेटों में एक छोटासा गुट ऐसा भी था जो यह विश्वास करता था कि दक्षिण के राज्यों के स्वार्थों तथा संस्थाओं की रक्षा संघ से अलग होकर ही की जा सकती है। यह गुट अत्यन्त सक्रिय था एवं राजनीतिक कारणों से इस काल में उत्पन्न हुई अमेरिकन राजनीति में विवाद और संघर्ष का स्वागत करता था। यह गुट किसी प्रकार के समझौते के विरुद्ध था। इस गुट के प्रमुख नेताओं में राबर्ट बार्नवेल रेट (Robert Barnwell Rhett), जो दक्षिण के एक बहुत बड़े समाचार पत्र चार्ल्सटन मर्करी (Charleston Mercury) का प्रकाशक था, विलियम येन्सी (William Yencey) जो अलाबामा (Alabama) का प्रतिष्ठित वकील व शक्तिशाली प्रवक्ता था तथा एडमण्ड रफ्फिन (Edmund Ruffin) थे। इस समय में अमेरिकी राजनीति की मुख्य समस्या नये प्रदेशों में दास

प्रथा से सम्बन्धित थी। 1820 ईसवी में मिसूरी समझौता (Missouri Compromise) हुआ था जिसके अन्तर्गत दक्षिण और उत्तर के राज्यों में दास तथा स्वतन्त्र राज्यों में सन्तुलन रखने का प्रयास किया गया था। इसके पश्चात् पोल्क के काल में ओरेगन को तो एक ऐसे भू-क्षेत्र के रूप में स्वीकार किया गया था जिसमें दास प्रथा न हो लेकिन दूसरे भू-क्षेत्रों के सम्बन्ध में कोई भी निर्णय नहीं हो सका।

1848 ईसवी के चुनाव में भी दास प्रथा के प्रश्न को व्हिगों तथा डेमाक्रेटों, दोनों ने ही टालने का प्रयास किया था, लेकिन इस चुनाव में 'फ्री सोइल पार्टी' का जन्म हुआ जिसने बीस लाख मत प्राप्त किए थे। राष्ट्रपति टेलर ने मध्यम मार्ग अपनाया और यह प्रस्ताव रखा था कि कैलीफोर्निया तथा न्यू मैक्सिको को राज्य के रूप में संघ में प्रवेश दिया जाये, लेकिन दास प्रथा के प्रश्न पर वे ही अपना निर्णय करें। कैलीफोर्निया तथा न्यू मैक्सिको के राज्यों ने दास प्रथा के विरुद्ध निर्णय किया। मिसूरी समझौते के अन्तर्गत दास व स्वतन्त्र राज्यों को संघ में बारी-बारी से प्रवेश देने की व्यवस्था थी ताकि सीनेट में दोनों प्रकार के राज्यों में सन्तुलन बना रह सके। टेलर के सुझाव से दक्षिण में यह अभिप्राय निकाला गया कि भविष्य में यह समझौता नहीं माना जायेगा और सीनेट में स्वतन्त्र राज्यों का बहुमत हो जायेगा। प्रतिनिधि सभा में पहले से ही उत्तर के स्वतन्त्र राज्यों का बहुमत था। दक्षिण के नेताओं ने इसलिए तुरन्त निर्णय किया कि वे उत्तर के प्राबल्य को कभी सहन नहीं करेंगे। यदि उनके स्वार्थों की रक्षा नहीं की गई तो वे संघ को छोड़ देंगे। दक्षिण के नेताओं के इस निर्णय ने अमेरिकी राजनीति में उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में सनसनी उत्पन्न कर दी।

दास प्रथा का प्रश्न अमेरिकी राजनीति में गम्भीर रूप ले रहा था। इससे अमेरिकी संघ का भविष्य संकट में पड़ गया। जनवरी, 1850 ईसवी में हेनरी क्ले, ने जो अब वृद्ध था, इसे सुलझाने का बीड़ा उठाया तथा समझौते का प्रयास किया। उसने सुझाव रखा कि कैलीफोर्निया को एक स्वतन्त्र राज्य के रूप में स्वीकार कर लिया जाए, किन्तु मैक्सिको से प्राप्त अन्य भू-भागों में यह स्वतन्त्रता दी जाये कि वहाँ के राज्य अपनी इच्छा से अपने क्षेत्रों में चाहे तो दास प्रथा रखें अथवा नहीं। क्ले ने अपने सुझाव के साथ यह भी कहा कि इन क्षेत्रों की जलवायु व भूमि ऐसी है कि वहाँ पर बड़े पैमाने पर खेती नहीं हो सकती, अत: इन क्षेत्रों में दास प्रथा की आवश्यकता नहीं रहेगी। इसलिए क्ले ने उत्तर के राज्यों से अपील की कि वे अकारण ही दक्षिण के राज्यों को अप्रसन्न न करें। क्ले ने समझौते के रूप में यह भी सुझाव रखा कि टैक्सास का राज्य न्यू मैक्सिको के क्षेत्र के भू-भागों से अपने दावे वापस ले ले और इसके बदले में टैक्सास के विलय के पूर्व के सार्वजनिक ऋण का उत्तरदायित्व, जो विलय के समय उसी राज्य को दिया गया था, अब संघीय सरकार वहन करे। क्ले ने अपने प्रस्तावों में यह सुझाव भी रखा कि कोलम्बिया के जिले में, जहाँ अमेरिकी राजधानी स्थित है, दास व्यापार को निषिद्ध रखा जाये। दक्षिण के राज्यों को सन्तुष्ट करने के लिए क्ले ने भाग जाने वाले दासों से सम्बन्धित कानून (Fugitive Slave Law) को कठोरता के साथ लागू करने का सुझाव दिया। फिर भी दोनों पक्ष क्ले के सुझावों से सन्तुष्ट नहीं हो सकते थे।

दिसम्बर, 1849 ईसवी में कांग्रेस के अधिवेशन में अमेरिकी राजनीतिक इतिहास में एक गम्भीर वाद-विवाद आरम्भ हो गया। क्ले के सुझावों पर लम्बे समय तक विचार-विमर्श होता रहा। दक्शिण के लोगों ने कैलिफोर्निया का एक स्वतन्त्र राज्य के रूप में विरोध किया । यह माँग की कि सभी नव-प्राप्त क्षेत्रों में या तो दास प्रथा स्वीकार की जाये अथवा मिसूरी समझौते की धारा को प्रशान्त तक ले जाया जाये। इस प्रकार दक्षिण के लोग चाहते थे कि संघ में मिसूरी सिद्धान्त के आधार पर दास व स्वतन्त्र राज्यों का सन्तुलन तो अवश्य ही रहे। उत्तर के राज्यों में भागे हुए दासों के सम्बन्ध में कानूनी कठोरता के सुझाव पर, जो कि क्ले ने दिया था, प्रतिक्रिया हुई और उसका विरोध किया गया। इस विवाद के दौरान डेनियल वेब्स्टर ने क्ले का समर्थन करते हुए एक ओजपूर्ण भाषण में अमेरिका में वर्गीय सद्भावना तथा संघ की सुरक्षा के लिए अपील की। लेकिन उत्तर के लोगों ने वेब्स्टर को सिद्धान्तहीन व देशद्रोही कहा। उस पर आरोप लगाया गया कि वह दक्षिण के मत प्राप्त करके राष्ट्रपति बनना चाहता था।

दास प्रथा का सबसे शक्तिशाली विरोध न्यूयार्क के विलियम सीवर्ड ने किया जो सीनेट में कोन्शियन्स व्हिग का नेता था। उसने स्पष्ट शब्दों में कहा कि यह एक कुप्रथा है और इसे मिटाना चाहिए। इस प्रश्न पर कांग्रेस को उस उच्च नियम का पालन करना चाहिए जो विधान से भी उच्च है। सीवर्ड का संकेत मानवता के नियमों की ओर था। अमेरिकी राजनीति में उत्पन्न हुए वाद विवाद तथा संघर्ष के उपरान्त भी दोनों ही पक्षों में संयत दृष्टिकोण रखने वाले लोगों का अभाव नहीं था। इस प्रकार के लोग किसी न किसी प्रकार के समझौते के पक्ष में थे। राष्ट्रपति टेलर का 9 जुलाई, 1850 ईसवी के दिन अकस्मात् निधन हो गया।

VI. फिलमोर का शासन (1850-53 ई.) :

(1) दास प्रथा पर समझौता (1850 ई.) - उसका उत्तराधिकारी मिलार्ड फिल्मोर समझौते के पक्ष में था। वह क्ले तथा वेब्स्टर का साथ देने लगा। उधर उत्तर के राज्यों में अनेक व्यापारी वर्गों ने भी क्ले व वेब्स्टर का समर्थन किया। दक्षिण में भी समझौते के पक्ष में प्रयास किया गया।

समझौते की भावनाओं का प्रारूप देने के लिए अलग-अलग सुझावों को लेकर पाँच विधेयक प्रस्तावित किये गये जिन्हें कांग्रेस ने अगस्त-दिसम्बर, 1850 ईसवी में स्वीकार किया। सभी विधेयकों का कांग्रेस के समस्त सदस्यों ने समर्थन नहीं किया। कुछ का समर्थन अत्यधिक उत्तर वालों ने किया तथा शेष को समर्थन दक्षिण के विधायकों से प्राप्त हुआ। इस प्रकार क्ले को सफलता मिली और उसके इस कार्य में इलिनोयज के एक युवा डेमोक्रेटिक सीनेटर स्टीफन डगलेस (Stephen Douglas) ने विशेष सहयोग दिया।

1850 ईसवी के समझौते की सबसे महत्त्वपूर्ण धाराएँ नये राज्य-क्षेत्रों से भाग जाने वाले दासों की गिरफ्तारी से सम्बन्धित थी। कैलीफोर्निया को छोड़कर सभी नये क्षेत्रों के सम्बन्ध में यह व्यवस्था की गई कि उनके राज्य बनने पर दास प्रथा के प्रश्न पर वे स्वयं अपना निर्णय लेंगे। राज्य क्षेत्र की अवस्था में अपने निवासियों की इच्छानुसार दास प्रथा को रख सकते थे। इस प्रकार

समझौते ने ''लोकप्रिय प्रभुसत्ता'' को माना। उत्तर के राज्यों ने भी भागे हुए दासों से सम्बन्धित नियमों के नये प्रारूप को स्वीकार कर लिया। भागे हुए किसी भी दास को गिरफ्तारी के पश्चात् अपने मुकद्दमे में जूरी का अधिकार नहीं था। इसी प्रकार उन कमिश्नरों को जो भागे दासों का मुकद्दमा सुनते थे, प्रत्येक दास को उसके स्वामी को लौटाने पर दस डालर की फीस मिलती थी। जबकि दास को स्वतन्त्र करने की फीस केवल पाँच डालर थी। इसी प्रकार से संघीय मार्शलों (पुलिस अधिकारियों) तथा उनके अधीन सहयोगियों को भी दासों को न पकड़ पाने पर दंड दिया जा सकता था। साधारण नागरिकों को भी दासों को मुक्त होने में सहायता देने पर अपराधी ठहराया जा सकता था।

1850 ईसवी के समझोते के परिणामस्वरूप अमेरिका में यह भावना उत्पन्न हुई कि संकट टल गया तथा उत्तर व दक्षिण का विवाद स्थायी रूप से निपट गया है। फिर भी उत्तर के मानवतावादी वर्गों में भागे हुए दासों से सम्बन्धित नियमों के प्रति यह धारणा रही कि उनके द्वारा अमेरिकी आदर्शों पर एक लांछन है। अनेक उत्तर के मानवतावादियों और बुद्धिजीवियों का यह विश्वास बना रहा कि सिद्धान्तवादी अमेरिकनों को इन नियमों को मान्यता नहीं प्रदान करनी चाहिए। उनका यह कर्त्तव्य है कि अपने नैतिक विश्वासों के आधार पर इन नियमों का विरोध करें। उत्तर में कुछ ऐसी घटनाएँ हुई जहाँ गिरफ्तार हुए दासों को भीड़ ने संघीय मार्शलों से छीन कर उन्हें मुक्त कर दिया। दक्षिण में भी समझौते के विरुद्ध प्रतिक्रिया हुई एवं पृथक्ता की बात चलती रही लेकिन दक्षिण के लोगों ने भी निर्णय लिया कि समझौते पर उस समय तक अमल किया जाये तब तक कि उत्तर के राज्य उसके उल्लंघन का प्रयास न करें। उत्तर के राज्य भी इस समझौते को इस आशा के साथ मानने लगे कि कि इस समझौते से दक्षिण के विवाद का स्थायी समाधान हो गया है।

(2) होमस्टेड कानून - 1850 ईसवी के समझौते के पश्चात् अमेरिकी समाज में अनेक प्रकार के सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तन हुए। इस काल में जनसंख्या में आश्चर्यजनक वृद्धि हुई। जिसमें सबसे अधिक वृद्धि मध्य पश्चिम के राज्यों में हुई। 1850 से 1860 ईसवी के काल में मध्य पश्चिम के क्षेत्रों में तीस लाख अतिरिक्त लोग बस गये जबकि देश में कुल जनसंख्या में वृद्धि अस्सी लाख की हुई। रेल लाइनों के निर्माण ने मध्य पश्चिम के क्षेत्रों में उत्तर पूर्व के राज्यों को जोड़ दिया जिसके कारण मध्य पश्चिम के क्षेत्र उत्तर पूर्वी क्षेत्रों में व्यापार करने लगे और उनका लगाव दक्षिण की अपेक्षा उत्तर पूर्व के क्षेत्रों से अधिक हो गया। मध्य पश्चिम के प्रारम्भिक निवासियों की सहानुभूति दक्षिण से थी किन्तु अब वे दास प्रथा के विरोधी हो गये। मध्य पश्चिम के राज्यों में सामाजिक व आर्थिक विकास ने अमेरिकी राजनीति को महत्त्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया। पश्चिमी क्षेत्रों के लोग नि:शुल्क सार्वजनिक भूखण्डों की माँग करने लगे। उत्तर पूर्व के राज्य इसलिए इस माँग का समर्थन करने लगे कि इस माँग की पूर्ति से क्षेत्र में जनसंख्या बढ़ेगी तथा उनके बाजारों का विस्तार होगा। फिर यह भी स्पष्ट था कि इस क्षेत्र के सभी राज्य स्वतन्त्र राज्य होंगे। उत्तर पूर्व के राज्यों ने ओर पश्चिमी के राज्यों ने संयुक्त रूप से सार्वजनिक सुधारों की माँग की। 1850 ईसवी के पश्चात् दक्षिण के विधायक इन सभी माँगों का विरोध करने

लगे। उन्होंने विशेषत: ''सार्वजनिक भूमि नीति'' को उदार बनाये जाने पर घोर विरोध किया। फिर भी इस सम्बन्ध में कांग्रेस के दोनों सदनों ने 1860 ईसवी में एक ''होम्सटेड एक्ट'' (Homestead Act) पारित किया जिसके अन्तर्गत प्रत्येक परिवार को एक सौ साठ एकड़ भूमि नि:शुल्क देने की व्यवस्था की। 22 जून, 1860 ईसवी के तत्कालीन राष्ट्रपति बुचानन (Buchanan) द्वारा निषेध कर दिया गया। फिर भी होम्सटेड का प्रश्न अमेरिकी राजनीति में मुख्य स्थान पर रहा। 1860 ईसवी के राष्ट्रपति के चुनाव में रिपब्लिकन दल ने इस प्रश्न को अपने कार्यक्रम का प्रमुख अंग बनाया।

VII. पियर्स का प्रशासन (1853-57 ईसवी) :

1850 ईसवी के समझौते के पश्चात् अधिकांश लोगों ने दास प्रथा के प्रश्न को विस्मृत कर दिया तथा 1852 ईसवी के निर्वाचन में सौहार्द्रता स्पष्ट दृष्टिगोचर हुई। समझौते के पक्षपाती डेमोक्रेटो ने न्यू हैम्पशायर के फ्रेन्कलिन पीयर्स (Frankline Pierce) को अपना प्रत्याशी बनाया जबकि व्हिगों ने विन्फील्ड स्काट (Winfield Scott) को। व्हिग दल यद्यपि समझोते के विरुद्ध नहीं था, किन्तु डेमोक्रेटों की भाँति अधिक उत्साही भी नहीं था। इस निर्वाचन में पियर्स (Pierce) की विजय हुई। ''फ्री सोइल पार्टी'' को पूर्व की अपेक्षा पचास प्रतिशत मत कम मिले। स्पष्ट था कि दास प्रथा विरोधी भावना में गिरावट आई।

पियर्स के मन्त्रिमण्डल के अधिकांश सदस्य दक्षिण तथा दक्षिणवासियों के प्रति सहानुभूति रखने वाले थे, अत: उनका उद्देश्य दक्षिण के हितों के लिए आक्रामक व विस्तारवादी विदेश नीति अपनाना था। वे क्यूबा को हस्तगत करना चाहते थे जहाँ दास प्रथा अब भी वैध थी। वे लोग मैक्सिको और मध्य अमेरिका में भी रुचि रखते थे ताकि नये दास-राज्यों का निर्माण किया जा सके। दक्षिण के साहसी लोगों ने 1848 ईसवी के पश्चात् स्पेनिश अधिकारियों को तंग करना प्रारम्भ किया। 1852 ईसवी में 'ओस्टेण्ड मैनीफेस्टो' (Ostend Manilfesto) के द्वारा स्पेन की सरकार से क्यूबा को संयुक्त राज्य अमेरिका को बेचने की माँग की अन्यथा शक्ति द्वारा हथियाने की धमकी दी गई। टैनेसी के विलयम वाकर (William Walker) ने 1853 ईसवी में मैक्सिको का कुछ भाग तथा 1855 ईसवी में निकारागुआ के क्षेत्रों पर अधिकार किया, किन्तु 1860 ईसवी में उसकी हत्या कर दी गई।

1852 ईसवी तक कैलहुन, क्ले तथा वेब्स्टर आदि की मृत्यु से अमेरिकी राजनीति की बागडोर अपेक्षाकृत युवा वर्ग के हाथ में आ गई जिनमें सर्वाधिक प्रभावशाली इलिनोय का स्टीफन ए. डगलस (Stephen A. Douglas) था। उसका राष्ट्र प्रेम प्रश्नातीत था। वह राष्ट्र की एकता तथा महानता में विश्वास करता था। वह एक प्रभावशाली वक्ता भी था। दास प्रथा के सम्बन्ध में उसकी कोई निश्चित मान्यताएँ नहीं थीं।

(1) कैन्सास-नेब्रास्का बिल (1854 ईसवी) - क्यूबा पर आधिपत्य की माँग, न्यू मैक्सिको तथा मध्य अमेरिका में नये दास राज्यों के निर्माण, दक्षिणवासियों की रुचि तथा विलियम वाकर की गतिविधियों के उपरान्त भी समझौते के पश्चात् हुआ विराम जारी रहा। किन्तु

डगलस द्वारा रखे गये मिसूरी समझौते को निरस्त करते हुए कैन्सास-नेब्रास्का विधेयक ने शान्ति को भंग कर दिया। इसके मूल में अन्त: महाद्वीपीय रेल लाइन के निर्माण के लिए अपनाया जाने वाला मार्ग था। उत्तरवासी शिकागो अथवा सेण्ट लुईस को इस लाइन का पूर्व में समाप्य स्थल बनाना चाहते थे जबकि दक्षिण के लोग न्यू आर्लिन्स से मैक्सिको होते हुए लॉस एंजिल्स तक रेल मार्ग निर्माण करवाना चाहते थे। दक्षिण के लोगों का तर्क था कि न्यू मैक्सिको के क्षेत्र में न केवल सरकार है वरन् कुछ गोरे लागों की आबादी भी है जबकि उत्तर वालों द्वारा प्रस्तावित क्षेत्र में अभी लोग बसे नहीं है।

डगलस भी यह चाहता था कि रेल लाइन का निर्माण शिकागो से किया जाये, अत: उसने प्रस्ताव रखा कि जिन क्षेत्रों से रेलवे लाइन गुजरे वहाँ पर क्षेत्रीय सरकार की स्थापना की जानी चाहिए। अत: 1854 ईसवी के एक विधेयक द्वारा दो ''नये क्षेत्र राज्य'' कैन्सास (Kansas) तथा नेब्रास्का (Nebraska) की स्थापना का प्रस्ताव किया गया। ये क्षेत्र यद्यपि मिसूरी के उत्तर में थे तथापि यह प्रस्तावित किया गया कि दास प्रथा अलग करने के स्थान पर लोकप्रिय सर्वोच्चता के सिद्धान्त को स्वीकार लिया जाये। इसी विधेयक में ''मिसूरी समझौते'' को निरस्त करने की व्यवस्था की गई।

प्रस्तावित विधेयक के उद्देश्यों के सन्दर्भ में डगलस पर आरोप जाता है कि उसने आगमी राष्ट्रपति पद के चुनाव में अपने नामांकन के अवसरों को सदृढ़ बनाने के लिए दक्षिणवासियों का पक्ष लिया, किन्तु डगलस के निर्णय को प्रभावित करने वाले अन्य प्रेरक तत्त्व भी इस प्रकार थे- प्रथम, एचिसन (Achison) के नेतृत्व में मिसूरी के प्लान्टर्स इस बात की माँग कर रहे थे कि उनके राज्य पश्चिमी क्षेत्र को बिना दास प्रथा पर प्रतिबन्ध लगाये बसने के लिए खोल दिया जाना चाहिए। द्वितीय, डगलस की मान्यता थी कि ''लोकप्रिय सार्वभौमिकता का सिद्धान्त'' दास स्वामियों की इस माँग का कि लुसियाना क्रय उनके लिये खोल दिया जाये, सर्वोत्तम समाधान है। तृतीय, नेब्रास्का के अवस्थापन से उत्तर पश्चिम के विकास को गति प्राप्त होगी। चतुर्थ, दक्षिण के लोग उत्तरी रेल-लाइन के विरोधी थे, अत: वे नये राज्य क्षेत्र के निर्माण का विरोध करते, यदि उन क्षेत्रों में दास प्रथा का विस्तार नहीं किया जाता।

कैन्सास-नेब्रास्का विधेयक के दूरगामी राजनीति परिणाम हुए अमेरिकी इतिहास में यह एक भयंकर भूल सिद्ध हुई। इस विधेयक ने न केवल राजनीतिक दलों को परस्पर विभक्त किया वरन् कैन्सास में गृह युद्ध को भी उत्पन्न किया।

कैन्सास के निकट मिसूरी में दास प्रथा दृढ़ता से स्थापित थी अत: मिसूरी के दास स्वामी कैन्सास में भी दास प्रथा को वैधानिकता प्रदान करवाने के लिए उत्सुक थे। उनको यह भी भय था कि निकटवर्ती क्षेत्र के स्वतन्त्र भूमि होने पर दासों को भागने का स्थल मिल जायेगा। दक्षिण के लोगों ने भी मिसूरी के दास स्वामियों का समर्थन किया। इसके विपरीत दास प्रथा विरोधी उत्तर के लोगों ने उत्तर के ''फ्री सोइलरों'' को कैन्सास जाने व मत देने के लिए सहायता समिति (Emigrant Aid Society) का संगठन किया व सहायता प्रदान की। कैन्सास-नेब्रास्का विधेयक के परित होने के पश्चात् कैन्सास में बसने वाले अधिकांश लोग मिसिसिप्पी घाटी के साधारण

किसान थे। वे दास स्वामियों से प्रतिस्पर्द्धा करना नहीं चाहते थे, किन्तु नीग्रो के विरोधी थे ओर एबोलिशनिस्टो (Abolitionists) के प्रति उनकी कोई सहानुभूति नहीं थी। मार्च, 1855 ईसवी में होने वाले निर्वाचनों में दास प्रथा के समर्थकों ने विभिन्न उपायों का अवलम्बन कर बहुमत प्राप्त कर लिया तथा शाब्नी मिशन में सरकार की स्थापन की। दूसरी ओर ''फ्री सोल्जरों'' ने टोपेका (Topeka) में अपना सम्मेलन किया तथा मुक्त राज्य का विधान अपनाया। इस प्रकार कैन्सास में दो समानान्तर सरकारें बन गईं। पियर्स ने शाब्नी सरकार का समर्थन किया। दोनों सरकारों को अपने समर्थकों से हथियार प्राप्त होने लगे। मई, 1856 ईसवी में दास प्रथा के समर्थकों ने स्वतन्त्र राज्य वालों के मुख्यावास लारेन्स (Lawrence) पर आक्रमण किया और उसे नष्ट कर दिया। प्रत्युत्तर में जॉन ब्राउन ने जो कनेक्टिकट का था, अपने कुछ समर्थकों के साथ पोट्टावॉटमी (Pottawatmie) के निकट दास प्रथा के समर्थकों पर आक्रमण किया और पाँच व्यक्तियों की हत्या कर दी। इसके पश्चात् एक प्रकार से गृह युद्ध प्रारम्भ हो गया जिसमें लगभग दो सौ व्यक्ति मारे गये। संघीय सरकार ने व्यवस्था स्थापित करने के लिए सेना भेजी, किन्तु कैन्सास का प्रश्न अभी भी खुला रहा जब तक कि बुचानन द्वारा इसका समाधान नहीं कर दिया गया।

(2) रिपब्लिकन दल का निर्माण – कैन्सास-नेब्रास्का विधेयक का अन्य परिणाम यह हुआ कि व्हिग दल में फूट उत्पन्न हो गई। इस विधयेक को पारित होने से दास प्रथा के समर्थकों तथा विरोधियों दोनों ने ही अपने-अपने मत का समर्थन तीव्रता से करना प्रारम्भ किया। दास प्रथा के विरोधियों ने भगोड़े दासों की गिरफ्तारी के कानून (Fugitive Slave Act)के लागू न करने देने के लिए सामूहिक कदम उठाया। इसी कानून से श्रीमती हेरियट बेचिर (Mrs. Harriet Bechir)को अंकल टाम्स केबिन (Uncle Tom's Cabin) नामक उपन्यास लिखने की प्रेरणा मिली तथा इसके 'कॉमन सेन्स' (Common Sense) ने दास विरोधी भावना को गति प्रदान की। विधेयक के विरोधी उत्तर व्हिगों ने इस कदम का समर्थन करना स्वीकार नहीं किया। इस प्रकार नेब्रास्का विरोधी उत्तर के डेमाक्रेटों ने विधेयक के विरोध में दल से त्याग पत्र दे दिया। 1854 ईसवी के पश्चात् मिशिगन में एक विशाल सभा हुई जिसे रिपब्लिकन दल के उद्‌भव का प्रारम्भ माना जाता है। इसका राष्ट्रीय स्तर पर प्रथम अधिवेशन 1856 ईसवी में हुआ। इस दल का प्रमुख उद्देश्य संयुक्त राज्य अमेरिका के किसी भी क्षेत्र में दास प्रथा के विस्तार का विरोध करना था।

(3) 1856 ईसवी का चुनाव – 1856 ईसवी के निर्वाचन के लिए डेमोक्रेटिक दल ने जेम्स बुचानन (James Buchanan) को अपना प्रत्याशी नामांकित किया और अपने कार्यक्रम में उन्होंने ''लोकप्रिय प्रभुसत्ता'' के सिद्धान्त को दोहराया तथा उत्तर के समर्थकों को विश्वास दिलाया गया कि इसे कैन्सास में लागू किया जायेगा। रिपब्लिकन दल ने अपने प्रथम नामांकन में जान सी फ्रीमाण्ट (John C. Fremont) मनोनीत किया और ''फ्री सोइल, फ्री स्पीच तथा फ्री मैन'' (Free Soil, Free Speech,Free Man) का नारा दिया। ''नो नथिंग दल'' (No Nothing Party) ने फिलमोर को अपना प्रत्याशी बनाया, किन्तु निर्वाचन से स्पष्ट हो गया कि डेमोक्रेटिक दल अब भी शक्तिशाली है। बुचानन एक सौ चौदह के विरुद्ध एक सौ चोहत्तर मतों से फ्रीमाण्ट को परास्त कर राष्ट्रपति निर्वाचित हुआ।

VIII. बुचानन का प्रशासन (1857-61 ईसवी) :

राष्ट्रपति बुचानन एक उच्च कोटि का सफल वकील था फिर भी उसने अपना जीवन सार्वजनिक सेवा में अर्पित किया। राष्ट्रपति पद प्राप्त करने से पूर्व वह अनेक सार्वजनिक पदों पर रह चुका था। इस युग में अन्य राष्ट्रपतियों की तरह बुचानन अत्यन्त अनुभवी था। कांग्रेस के दोनों सदनों का सदस्य रह चुका था। उसका शिष्टाचार उच्च कोटि का था। विचारों से वह अप्रगतिशील एवं रूढ़िवादी था और इसीलिए दास प्रथा का विरोधी होते हुए भी वह दास स्वामियों के कानूनी अधिकारों के प्रति सम्मान की भावना रखता था। बुचानन दासों व उनके स्वामियों में संघर्ष नहीं चाहता था इसलिए वह दक्षिण के दास स्वामियों का समर्थन करता था। फिर भी वर्गीय भावना एवं संघर्ष के वह विरुद्ध था तथा यह नहीं चाहता था कि अमेरिका के राजनीतिक दल भौगोलिक आधार पर बन जायें। बुचानन की दक्षिण समर्थक नीति के कारण उसके विरोधी 'डाउ फेस' (Dough Face)कहते थे जिससे तात्पर्य यह था कि वह उत्तर का एक ऐसा रहने वाला था जिसके सिद्धान्त दक्षिण के थे।

(1) कैन्सास की समस्या एवं ली कोम्पटन संविधान - बुचानन के लिए बड़ा कठिन था कि अपने विचारों से दास प्रथा विरोधियों को प्रसन्न कर सके, फिर भी उसने सन्तुलन रखने का प्रयास किया और चार मन्त्री दास राज्यों व तीन स्वतन्त्र राज्यों से लिये। लुइस काश को राज्य मन्त्री या विदेश सचिव बनाया तथा हावेल कॉब (Howel Cobbe) को उसने राजकोष सचिव नियुक्त किया। अपने प्रशासन काल में सबसे गम्भीर समस्या जिसका बुचानन को समाना करना पड़ा वह कैन्सास की थी। कैन्सास में उस समय विपक्षी गिरोहों में छापामार अथवा गुरिल्ला युद्ध चलने लगा। लगभग दो सौ व्यक्ति मारे गये। कैन्सास की राज्य क्षेत्र की सरकार दास समर्थकों के हाथ में थी। लेकिन दास विरोधी लोग वहाँ की सरकार को मानने या स्वीकार करने को तैयार नहीं थे।

बुचानन ने कैन्सास के गवर्नर के रूप में मिसिसिप्पी राज्य के रहने वाले राबर्ट वाकर को नियुक्त किया। वाकर अनेक वर्षों तक सीनेट का सदस्य रह चुका था तथा पोल्क के प्रशासन में राजकोष सचिव रह चुका था। वाकर अत्यन्त ईमानदार था। उसने पूरी निष्ठा से अपने उत्तरदायित्वों को निभाने का प्रयास किया। उसका लक्ष्य यह था कि केन्सास में चल रहे संघर्ष और रक्तपात को समाप्त करे ताकि वहाँ एक ऐसी सरकार की स्थापना करे जो वास्तव में बहुमत की हो। वाकर ने विधान निर्माण के लिए ली काम्पटन (Le Compton) के स्थान पर एक अधिवेशन बुलाया। उस समय बहुमत वास्तव में फ्री सोइलर्स का था, लेकिन अपने नेताओं की मूर्खता के कारण उन्होंने कन्वेशन में भाग नहीं लिया इसलिए कन्वेंशन में दास समर्थकों ने एक ऐसा विधान बना लिया जो कि दास प्रथा के पक्ष में था। लेकिन जब कैन्सास के राज्य क्षेत्र की विधायक सभा का चुनाव हुआ तो फ्री सोइलर्स ने चुनाव में भाग लिया और बहुमत प्राप्त कर लिया। तत्पश्चात् उन्होंने विधान को स्वीकृति के लिए रखा। इस बार दास समर्थकों ने अपने आपको जनमत संग्रह से अलग रखा और "ली काम्पटन संविधान" जो एक बार स्वीकार हो चुका था, वह अस्वीकृत हो गया।

राष्ट्रपति बुचानन ने कैन्सास के राज्य क्षेत्र की दास समर्थक सरकार का समर्थन किया और कांग्रेस से माँग की कि कैन्सास को ली कॉम्पटन विधान के अनुसार सम्पूर्ण राज्य के रूप में संघ में प्रवेश दे दिया जाये। बुचानन के इस प्रस्ताव का डगलस ने घोर विरोध किया। डगलस ने कांग्रेस के समक्ष यह स्पष्ट कर दिया कि ली काम्पटन विधान के पक्ष में कैन्सास में निश्चित रूप से अल्पमत हैं तथा वहाँ बहुमत उस विधान को अस्वीकार कर चुका है। अत: डगलस ने जो लोकप्रिय प्रभुसत्ता का समर्थक था, यह तर्क रखा कि राष्ट्रपति द्वारा रखा गया सुझाव मान लिये जाने पर लोकप्रिय प्रभुसत्ता के सिद्धान्त का खण्डन होगा। डगलस अपनी इस कार्यवाही से दक्षिण के राज्यों में अलोकप्रिय हो गया तथा बुचानन भी उसका शत्रु बन गया। कैन्सास की गुत्थी आगे चल कर सुलझी जब कांग्रेस के दोनों सदनों ने इस सुझाव को मान लिया कि ली काम्पटन विधान पर पुन: जनमत लिया जाये। जनमत में विधान को अस्वीकार किया गया और कैन्सास के क्षेत्र को राज्य क्षेत्र की अवस्था में 1861 ईसवी तक रहना पड़ा। 1861 ईसवी में जब अनेक दक्षिण के सदस्यों ने अपने आपको कांग्रेस से अलग कर लिया तो कैन्सास ने एक स्वतन्त्र राज्य के रूप में संघ में प्रवेश किया।

(2) ड्रेड स्काट का मामला (The Dred Scott Case) – दास प्रथा की वैधानिकता के प्रश्न पर ड्रेड स्काट का मामला एक महत्त्वपूर्ण घटना थी। ड्रेड स्काट एक नीग्रो दास था जिसे एक स्वामी एमर्सन (Emerson) द्वारा 1834 ईसवी में इलिनोय तथा 1836 ईसवी में लुसियाना क्रय के उत्तर के फोर्ट स्नेलिंग (Fort Snelling) में ले जाया गया। दो वर्ष पश्चात् वह पुन: मिसूरी आया। दो वर्ष पश्चात् एमर्सन की मृत्यु हुई तब भी ड्रेड स्काट को दास के रूप में रखा गया। 1846 ईसवी में ड्रेड स्काट ने मिसूरी में एक मुकद्दमा दायर किया जिसमें उसने अपनी व अपने परविार की स्वतन्त्रता की माँग इस आधार पर की कि वह स्वतन्त्र राज्यों व स्वतन्त्र भूमियों में कुछ समय के लिए आवास कर चुका था। इलिनोय में दास प्रथा 1787 ईसवी में तथा मिसूरी समझौते द्वारा अवैध की जा चुकी थी। मिसूरी न्यायालय ने ड्रेड स्काट के तर्क को स्वीकार नहीं किया और निर्णय में स्पष्ट किया कि मिसूरी में उसके वापस लौट आने से उसकी स्थिति यथापूर्व हो गई थी।

श्रीमती एमरसन व उसका दूसरा पति दास प्रथा के विरोधी थे, अत: श्रीमती एमरसन ने उसका स्वामित्व अपने भाई सनफोर्ड (Sanford) को, जो न्यू यार्क में रहता था, बेच दिया। अत: जब ड्रेड स्काट का मामला संघीय सर्वोच्च न्यायालय में लाया गया। इस समय संघीय सर्वोच्च न्यायालय में पाँच न्यायाधीश दास-राज्यों से तथा चार स्वतन्त्र राज्यों से थे। सर्वोच्च न्यायालय ने अपने निर्णय में कुछ मुख्य बातें कही -प्रथम, तो न्यायालय ने नीग्रो को नागरकि मानने से इन्कार कर दिया और इसी आधार पर उसके मुकद्दमे दायर करने के अधिकार को अस्वीकार कर दिया। द्वितीय, कांग्रेस को दास प्रथा पर प्रतिबन्ध लगाने का अधिकार नहीं था, अत: मिसूरी समझौता अवैधानिक है और निरस्त किया जाता है। तृतीय, ड्रेड स्काट अभी भी दास है क्योंकि अल्पकालीन आवास से स्थिति में कोई अन्तर नहीं पड़ता।

सर्वोच्च न्यायालय के इस निर्णय की तीव्र प्रतिक्रिया हुई। डेमोक्रेटिक दल को इससे प्रसन्नता हुई, क्योंकि न्यायालय का निर्णय उनके सिद्धान्तों का समर्थन करता था, किन्तु रिपब्लिकन दल के तो अस्तित्व के लिए खतरा हो गया। अत: उन्होंने इसकी आलोचना की। उनका कहना था कि

यह एक राय मात्र है, निर्णय नहीं और जब उनके समर्थक न्यायालय में बहुमत में होंगे तो वे इस निर्णय को बदलवाने में सफल होंगे। दूसरे दृष्टिकोण से यह निर्णय रिपब्लिकन दल के लिए कल्याणकारी सिद्ध हुआ, क्योंकि अब उनके समक्ष एक मसला उपस्थित था। न्याय की स्वतन्त्रता में विश्वास करने वालों को इस निर्णय ने निराश किया। दास प्रथा विरोधी समाचार पत्रों तथा लेखों द्वारा इस निर्णय की भर्त्सना की गई और यहाँ तक कहा गया कि जो लोग इस निर्णय का पालन करते हैं वे ईश्वर की अवज्ञा करते हैं। इस निर्णय का एक यह भी परिणाम हुआ कि उत्तर के कुछ लोगों ने निर्णय को स्वीकार नहीं किया तो उत्तर व दक्षिण की कटुता बढ़ी। इतना ही नहीं, इससे सर्वोच्च न्यायालय की प्रतिष्ठा व प्रभाव घटा। इस प्रकार ड्रेड स्काट का मामला न केवल दासता के प्रश्न के समाधान में असफल रहा वरन् इससे उत्तर व दक्षिण के सम्बन्ध कटु से कटुतर बन गये।

(3) 1858 का आर्थिक संकट - बुचानन को अपने प्रशासन काल के प्रारम्भिक दिनों में गम्भीर आर्थिक संकट का सामना करना पड़ा था। इस आर्थिक संकट के अनेक कारण थे। प्रथम तो उन्नीसवीं शती का मध्य काल अमेरिका के इतिहास में असाधारण समृद्धि का काल था। इस समृद्धि का कारण कैलीफोर्निया से प्राप्त स्वर्ण तथा उसके परिणामस्वरूप होने वाला मुद्रा प्रसार था। कीमतों में लगातार वृद्धि हुई। स्वर्ण की प्रचुरता से आर्थिक क्षेत्र में तेजी आई। दूसरा, अमेरिका में जैक्सन के काल से कोई राष्ट्रीय बैंक नहीं था। विभिन्न छोटी-छोटी बैंकों द्वारा पत्र मुद्रा का प्रचलन किया जाता था जिसके समर्थन में वे निश्चित "संचित निधि" रखते थे। चूँकि यह संचित निधि भिन्न-भिन्न होती थी, अतः उनके द्वारा प्रचलित मुद्रा का मूल्य भी भिन्न-भिन्न होता था। इससे मुद्रा की पूर्ति का अतिशय विस्तार हुआ। तीसरा इसी काल में औद्योगिक क्षेत्र में माँग की अपेक्षा उत्पादन अधिक हुआ। जहाज तथा वाष्पचालित नावों का निर्माण अपने चरम पर था। रेल मार्गों का निर्माण अनावश्यक रूप से किया जा रहा था। अन्य वस्तुओं का इतना अधिक उत्पादन किया जा चुका था कि बाजार में उसकी माँग नहीं थी। अन्त में, क्रीमिया के युद्ध ने अमेरिका के किसानों में अनाज के भावों की वृद्धि की आशा उत्पन्न कर दी, अतः उन्होंने ऋण लेकर भी उत्पादन के क्षेत्र को विस्तृत किया।

अमेरिका की यह समृद्धि आधारहीन थी। 1856-57 ईसवी में आर्थिक मन्दी प्रारम्भ हुई। बैंकों ने अपने ऋणों की वापसी की माँग करनी प्रारम्भ की जिससे अविश्वास तथा अव्यवस्था उत्पन्न हुई। ओहायो लाइफ इन्श्योरेन्स तथा ट्रस्ट कम्पनी ने अपने कार्य को स्थगित कर दिया। राष्ट्र में शीघ्र ही पूर्ण आर्थिक संकट स्पष्ट होने लगा। परिणामतः कारखाने बन्द हो गये। रेल कम्पनियाँ दिवालिया हो गई। बैंकों ने भुगतान करना बन्द कर दिया।

इस संकट का दक्षिण और उत्तर पर समान प्रभाव पड़ा। उत्तर के किसान, उत्पादक, व्यापारी तथा सटोरिये सभी मन्दी से प्रभावित हुए। भावों के गिर जाने और माँग में कमी होने से सभी क्षेत्र के किसानों को क्षति पहुँची। अनाज के भावों में इतनी कमी हुई कि किसान खेती के लिए लिये गये ऋण को चुकाने में भी असमर्थ रहे। गल्ला पैदा करने वाले किसानों की अपेक्षा दक्षिण के रूई उत्पादक सुरिक्षत स्थिति में थे, क्योंकि रूई के भावों में कमी नही हुई तथा विदेशों में उसकी माँग बनी रही। इस परिस्थिति के कारण दक्षिण में पृथक्ता की भावना को बल प्राप्त

हुआ, क्योंकि उनमें एक ऐसा विश्वास उत्पन्न हुआ कि उत्तर की अपेक्षा दक्षिण की अर्थ व्यवस्था स्थायी है। दक्षिण कैरोलिना के सीनेटर हेमण्ड (Hammond) ने सदन में यह कहा कि ''रूई सम्राट है'' (Cotton is king)। संकट के परिणामस्वरूप उत्तर में प्रशुल्क की दरों में वृद्धि की माँग ने बल पकड़ा। बुचानन पर उद्योगपतियों द्वारा दबाव डाला गया। स्वयं उसके राज्य पेनसिलवेनिया के उत्पादकों के स्वार्थों को ध्यान में रखते हुए उसने आयात करों की दरों में वृद्धि का समर्थन किया। मई, 1860 में एक प्रशुल्क अधिनियम मोरिल बिल (Morrell Bill) प्रतिनिधि सभा द्वारा पारित किया गया लेकिन सीनेट ने उसे अस्वीकार कर दिया। यह विधेयक मार्च, 1861 ईसवी में पारित होकर पुनः कानून बना जबकि दक्षिण के सात राज्यों के सदस्यों ने अपने को सदन की कार्यवाही से पृथक् कर लिया।

यह आर्थिक संकट बुचानन के प्रशासन काल की प्रमुख घटना थी, लेकिन इस संकट की समाप्ति के पश्चात् भी प्रशासन ने केवल उत्पादन को संरक्षण प्रदान करने का प्रयास किया। अमेरिका के किसानों की दशा सुधारने का कोई प्रयत्न नहीं किया गया।

(4) लिंकन डगलस विवाद – 1858 ईसवी में जब समस्त अमेरिका में वर्गीय भावना जोर पकड़ रही थी, उस समय अमेरिका में सीनेट के चुनाव हुए। निर्वाचन में सीनेट में स्थान प्राप्तकर्ताओं में लिंकन और डगलस थे जो अपने-अपने दल के प्रतीक थे। चुनाव अभियान में इन दोनों में एक उच्च कोटि की वाद विवाद शृंखला प्रारम्भ हुई। बाह्य रूप से दोनों का लक्ष्य सीनेट में स्थान प्राप्त करना था, किन्तु वास्तव में यह विवाद अमेरिका के उस समय के मौलिक प्रश्न दास प्रथा से सम्बन्धित था। डगलस एक योग्य, अनुभवी राजनीतिज्ञ था तथा अपने समय का अमेरिका में सर्वश्रेष्ठ वक्ता था। इसके विपरीत लिंकन राजनीति में थोड़े ही समय से था लेकिन उसकी ईमानदारी प्रसिद्ध थी। डगलस ने राष्ट्रपति बुचानन की कैन्सास नीति का विरोध करके अपने आपको उत्तर में लोकप्रिय बना लिया था। उसके कारण रिपब्लिकन दल में भी उसके समर्थक बढ़े। पूर्वी राज्यों के रिपब्लिकनों ने यहाँ तक सुझाव रखा था कि डगलस का विरोध नहीं किया जाये, किन्तु इलिनोय राज्य के रिपब्लिकनों ने लिंकन को खड़ा करना उचित समझा।

लिंकन ने नामांकन स्वीकार करने पर जो भाषण दिया, वह बड़ा प्रसिद्ध है। इस भाषण का शीर्षक था ''विभाजित घर'' (Divided House)। इसमें लिंकन ने आशा प्रकट की थी कि अमेरिका में विभाजन की भावना अवश्य समाप्त होगी तथा दास प्रथा के पक्ष अथवा विपक्ष में अवश्य ही निर्णय किया जायेगा। डगलस ने लिंकन के भाषण का यह अर्थ लगाया कि वह दास प्रथा के प्रश्न पर संघर्ष के लिए उत्तेजना देना चाहता है तथा वर्ग की भावना को युद्ध की स्थिति में बदलना चाहता है। लिंकन ने इस आरोप का खण्डन किया कि वह राज्यों में दास प्रथा में हस्तक्षेप करने के पक्ष में नहीं है। इन प्रारम्भिक वाद-विवादों के पश्चात् डगलस व लिंकन ने सात सम्मिलित सभाओं में वाद-विवाद किया। छोटे कद के डगलस ने वाद-विवाद कला में अपनी दक्षता का परिचय दिया तो लिंकन ने अपनी शैली तथा साधारण भाषा एवं हास्य व्यंग से दर्शकों को मोहित किया। वाद-विवाद की इन शृंखलाओं में सबसे महत्त्वपूर्ण फ्री पोर्टर (Free Porter) पर हुई। लिंकन ने ड्रेड स्काट निर्णय का खण्डन किया तथा उसने डगलस से यह पूछा कि क्या किसी राज्य क्षेत्र को यह अधिकार है कि वह दास प्रथा को अपने क्षेत्र से निषिद्ध कर दे?

लिंकन के सीधे प्रश्न का डगलस हां या ना में उत्तर नहीं दे सका, अत: उसने अपने उत्तर में यह कहा कि कोई भी राज्य-क्षेत्र दास प्रथा को कानूनी रूप से निषिद्ध किये बिना ही अपने क्षेत्र से पृथक् रख सकता है तथा ऐसा करने के लिए सम्बन्धित राज्य क्षेत्र को केवल इतना ही करना होगा कि वह दासों की गिरफ्तारी के सम्बन्ध में पुलिस नियम नहीं बनाये जिसके कारण उन क्षेत्रों में दास रखने की जोखिम नहीं उठाये। इस वाद-विवाद के पश्चात् डगलस सीनेट के चुनाव में विजयी रहा, लेकिन फ्री पोर्टर वाद-विवाद में दिये गये अपने उत्तर के कारण दक्षिण में डगलस की लोकप्रियता कम हो गई और वे संयुक्त डेमोक्रेटिक दल के प्रत्याशी के रूप में राष्ट्रपति पद के लिए स्वयं को नामांकित नहीं करा सका। इसके विपरीत लिंकन की पराजय होने के उपरान्त भी उसकी सरलता और ईमानदारी के कारण उसकी प्रतिष्ठा बढ़ी। 1860 ईसवी के चुनाव में रिपब्लिकन दल ने लिंकन को अपना प्रत्याशी बनाना ही उचित समझा।

(5) जार्ज ब्राउन का आक्रमण - दास प्रथा के प्रश्न को लेकर अमेरिकीयों का व्यक्तिगत रूप से उत्तेजित हो जाना स्वाभाविक था। अनेक लोग दास प्रथा का अन्त करना अपने जीवन का लक्ष्य मानते थे। इसके लिये वे अपना सर्वस्व बलिदान करने के लिए तत्पर थे। ऐसे व्यक्तियो में जार्ज ब्राउन (George Brown) उल्लेखनीय है। उसकी योजना वर्जीनिया पर आधिपत्य स्थापित कर दासों को मुक्त कराने की थी। उसकी मान्यता थी कि उसे वर्जीनिया के निकटवर्ती क्षेत्र में सफलता प्राप्त हो जाये तो उत्तर और दक्षिण के दास उसके आन्दोलन में सम्मिलित हो जायेंगे। दास-सम्पत्ति इतनी असुरक्षित हो जायेगी की दास-स्वामी स्वत: ही उन्हें मुक्त कर देंगे। अमेरिका में इस प्रकार के निर्दोष मूर्खों की, जो कल्पना की दुनिया में रहते थे, कोई कमी नहीं थी। अक्टूबर, 1859 ईसवी के मध्य एक रात्रि को उसने योजनाबद्ध आक्रमण किया जिसका उद्देश्य बल प्रयोग व हत्या द्वारा दासों को मुक्त करवाना था। यद्यपि उसका कोई व्यक्तिगत स्वार्थ नहीं था तथापि वह अपराधी था। वह और उसके साथी पकड़ लिये गये और 2 दिसम्बर, 1859 ईसवी को छ: साथियों सहित उसे फांसी दे दी गई।

उत्तर के दास विरोधी लोगों ने उसे ईश्वर से प्रेरित पैगम्बर माना और उसे स्वतन्त्रता के शहीद की संज्ञा प्रदान की गई। इसके विपरीत दक्षिण के लोगों ने उसे बहुत बड़ा अपराधी माना। उन्होंने इसे उत्तर द्वारा दक्षिण पर एक आक्रमण के रूप में देखा। इस घटना ने स्पष्ट कर दिया कि दोनों वर्ग अधिक समय तक एक-दूसरे के साथ नहीं रह सकते। इस घटना ने संघ को कमजोर किया।

इस प्रकार बुचानन प्रशासन के अन्तिम काल में यह स्पष्ट हो गया था कि अमेरिकी राजनीति में एक वर्ग संघर्ष प्रारम्भ हो गया जिसे रोका नहीं जा सकता था। लिंकन ने यह घोषणा की थी देश में एक संकट आ गया है। यह संकट बुचानन के प्रशासन काल के अन्तिम दिनों में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

□□□

अध्याय - 11

पश्चिम की ओर प्रसार

❑ एल. पी. माथुर

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद जबकि कुछ अमेरिकी या तो प्रजातंत्र के राजनैतिक व सामाजिक प्रभावों के बारे में विचार कर रहे थे अथवा आध्यात्मिक क्षेत्र के नये पहलुओं के सम्बन्ध में चिन्तन कर रहे थे उस समय कुछ अन्य व्यक्ति अमेरिकी महाद्वीप के पश्चिमी भाग की ओर प्रसार की योजनाओं को कार्यान्वित करने की दिशा में सक्रिय थे। 1850 ईसवी तक प्रशान्त महासागर के तट पर स्थित अमेरिकी महाद्वीप के प्रदेशों में संयुक्त राज्य अमेरिका का राज्य स्थापित हो चुका था तथा दस लाख वर्ग मील से अधिक प्रदेश में अमेरिकी झंडा लहराया जा चुका था।

अमेरिका की खोज के बाद वहाँ पर आने वाले प्रवासियों में से अधिकांश उसके पूर्वी भाग में ही बस गये थे। इस भाग की पश्चिमी सीमा पर अलेघैनी पर्वत था तथा उसके पार प्रशांत महासागर के तट पर स्थित प्रदेश थे। काफी समय तक पूर्वी भाग में बसने वाले प्रवासियों ने, अलेघैनी पर्वत शृंखला को लांघ कर पश्चिम की ओर बढ़ने का प्रयत्न नहीं किया। किंतु संयुक्त राज्य अमेरिका के निर्माण के पश्चात् यह अनुभव किया गया कि पश्चिम की ओर विस्तार को अब और टाला नहीं जा सकता था। इसके अनेक कारण थे -

I. कारण :

1. स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् अनेक राजनीतिज्ञों और विचारकों के अनुसार उस समय की परिस्थितियों में पश्चिम की ओर प्रसार अमेरिकी क्रान्ति के सिद्धान्तों की रक्षा तथा स्थायित्व के लिए आवश्यक हो गया था। जेफरसन के मत में हमारा प्रदेशों का जितना अधिक विस्तार होगा वह नव स्थापित गणतंत्र स्थानीय भावनाओं से उतनी ही मात्रा में कम प्रभावित होगा। इसके अतिरिक्त वह अधिक शक्तिशाली होगा जिसके फलस्वरूप वह आन्तरिक समस्याओं के साथ जूझने में अधिक सक्षम होगा।

2. अतः संघीय सरकार ने उत्तरी अमेरिका के पश्चिमी प्रदेशों की खोज करने के लिए अनेक अभियान भेजे। लुईसियाना की खरीद के पहले राष्ट्रपति जेफरसन ने मेरीवेदर लेविस (Meriweather Lewis) और विलियम क्लार्क (William Clark) को मिसूरी नदी के उद्‌गम को खोजने और सम्भव हो तो प्रशांत महासागर के तट तक का मार्ग खोजने, उस क्षेत्र के प्राकृतिक साधनों के बारे में जानकारी प्राप्त करने एवं इंडियन्स के साथ व्यापार की सम्भावनाओं का पता लगाने भेजा। 1804 ईसवी में वे सेंट लुई (Saint Louis) से रवाना

होकर मिसौरी नदी में यात्रा करते हुए उत्तरी डेकोटा पहुँचे। वहाँ से वे कोलम्बिया नदी के मुहाने पर जा पहुँचे। इसके पश्चात् भी जेफरसन ने कुछ और अभियान भेजे। इसमें सबसे महत्त्वपूर्ण अभियान जेबुलोन मोंटगुमरी पाईक (Zebulon Montgomery Pike) के नेतृत्व में भेजा हुआ अभियान था। 1806 व 1807 ईसवी में पाईक कोलारेडो होता हुआ न्यू मैक्सिको जा पहुँचा। 1812 के युद्ध के बाद अनेक सैनिक अभियानों का भी संचालन किया गया। 1820 में स्टीफन एच. लोंग (Stephen H. Long) के नेतृत्व में भेजा गया एक दल कोलारेडो के आन्तरिक प्रदेशों में पहुँच गया। किंतु उन्नीसवीं शताब्दी के प्रथम दो दशकों में भेजे गये ये अभियान पश्चिमी प्रदेशों के साधनों, वहाँ के आदि निवासियों के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त नहीं कर सके और न ही प्रशांत महासागर के तट तक पहुँचने को एक आसान मार्ग खोजा गया।

पश्चिमी प्रदेशों में प्रसार हेतु आवश्यक जानकारी प्राप्त करने में फर व्यापार ने उपरोक्त अभियानों से अधिक महत्त्वपूर्ण जानकारी प्रदान की। 1807 में इन प्रदेशों के साथ फर का व्यापार आरम्भ हुआ। 1809 ईसवी मे सेंट लुई में मिसूरी फर कम्पनी स्थापित हुई। इसके कर्मचारियों ने पहाड़ों को पार किया। कुछ समय तक महान् प्लेंस (Great Plains) तक ही उनका व्यापार सीमित रहा। 1822 ईसवी में स्थापित रोकी माऊंटेन फर कम्पनी (Rocky Mountain Fur Company) ने पहाड़ी प्रदशों के आन्तरिक भागों में फर के व्यापार के लिए वहाँ के आदि निवासियों के साथ सम्पर्क स्थापित किया। 1824 ईसवी में जेबेडिहा स्मिथ (Jebediha Smith) ने दक्षिणी दर्रे (South Pass) को खोज निकाला। कुछ समय बाद वह महान् बेसीन (Great Basin) को पार करके कैलीफोर्निया में पहुँच गया। जिम ब्रिजर (Jim Bridger) ने व्योमिंग के उत्तर-पश्चिम प्रदेश में एक व्यापारिक केन्द्र स्थापित किया। किट कारसन (Kit Carson) ने कैलीफोर्निया जाने के कुछ और मार्ग ढूँढ निकाले। 1832 ईसवी से फर व्यापार का पतन आरम्भ हुआ। किंतु इस समय तक यह व्यापार पश्चिम की ओर प्रसार की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा कर चुका था।

संघीय सरकार द्वारा भेजे गये अभियानों तथा फर के व्यापारियों द्वारा प्राप्त की गई जानकारियों से यह ज्ञात हो गया कि अमेरिका का पश्चिमी भाग उसके पूर्वी भागों की अपेक्षा अधिक उपजाऊ है तथा उन क्षेत्रों में आर्थिक विकास के लिए प्रचुर मात्रा में प्राकृतिक साधन उपलब्ध हैं। चाँदी, ताँबा व अन्य धातु भी काफी मात्रा में पाये जाते हैं। अत: कृषि व उद्योग के क्षेत्र में संयुक्त राज्य अमेरिका तेजी के साथ समृद्धि की ओर बढ़ सकता है।

उस समय पश्चिम की ओर प्रसार के लिए अनुकूल परिस्थतियाँ भी थी। टेक्सास के प्रदेश मैक्सिको के अधीन थे। वहाँ की सरकार दुर्बल थी। टेक्सास की आकर्षक जलवायु तथा उपजाऊ व सस्ती भूमि ने अमेरिका से अनेक अप्रवासियों को आकर्षित किया। उनके बढ़ते हुए प्रभाव से मैक्सिको सरकार चिन्तित हुई किंतु वह टेक्सास को स्वतंत्र होने से न रोक सकी। 1836 ईसवी में टेक्सास स्वतंत्र हो गया तथा 1845 ईसवी में उसका विलय संयुक्त राज्य अमेरिका में हो गया।

6. 1848 ईसवी में कैलीफोर्निया की सेक्रोमेंटो घाटी (Sacromento Velley) में सोने की खान होने का पता चला। काफी संख्या में संयुक्त राज्य अमेरिका के प्रदेशों में बसे प्रवासी वहाँ आने लगे। मार्ग में उन्हें अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, किंतु कैलीफोर्निया की आबादी बढ़ती गई। 1849 ईसवी के अंत तक वहाँ की आबादी नब्बे हजार तक पहुँच गई थी। इसी वर्ष कैलीफोर्निया को भी संयुक्त राज्य अमेरिका का एक राज्य मान लिया गया।

II. मेनीफेस्ट डेस्टिनी (Manifest Destiny) :

उपरोक्त परिस्थितियों का अध्ययन करने से यह ज्ञात होता है कि संयुक्त राज्य अमेरिका के निवासी पश्चिम की ओर प्रसार के लिये व्यग्र थे। अधिकांश अमेरिकी यह सोचते थे कि कनाडा को छोड़ कर उत्तरी अमेरिका के शेष प्रदेशों को संयुक्त राज्य अमेरिका का अंग बनना पड़ेगा। उन्होंने कहा कि यह अमेरिका के भाग्य में लिखा है। इसके लिए उन्होंने मेनीफेस्ट डेस्टिनी (Manifest Destiny) का नारा लगाया। सबसे पहले इस नारे का प्रयोग न्यू यार्क के पत्रकार जॉन ओ सलीवन (John O'Sullivan)ने किया था। उसके विचार में संयुक्त राज्य अमेरिका के लिए यह अनिवार्य है कि वह अपनी प्रजातांत्रिक पद्धति तथा जीवन शैली का लाभ अधिक से अधिक प्रदेशों तक पहुँचाये। पूर्व के प्रदेशों की सीमाओं पर रहने वाले निवासियों का यह विश्वास था कि बिना किसी कानूनी अधिकार के वे पश्चिम की भूमि पर अधिकार कर सकते हैं। कृषि, व्यापार व उद्योगों के विकास के लिए अमेरिका की सरकार उनका समर्थन करती थी। इनके अतिरिक्त वह प्रशांत महासागर के तटीय प्रदेशों के बन्दरगाहों पर अधिकार कर सुदूर पूर्व में अपना प्रभाव व शक्ति बढ़ाना चाहती थी। इन परिस्थितियों मे 1843 ईसवी के पश्चात् अमेरिकी राजनीति का प्रमुख लक्ष्य पश्चिम की ओर प्रसार से सम्बद्ध प्रश्नों से जुड़ा रहा।

III. पश्चिम की ओर प्रसार की प्रमुख घटनाएँ

1. टैक्सास सम्बन्धी विवाद - यह प्रदेश मैक्सिको के अधीन था। काफी संख्या में यहाँ पर अमेरिकी बस गये थे। 1830 में उनकी संख्या बीस हजार थी। इसी वर्ष मैक्सिको की सरकार ने उनके टैक्सास आने पर प्रतिबन्ध लगा दिया। इस पर वहाँ विद्रोह आरम्भ हो गया। अंत में 1836 ईसवी में टैक्सास ने स्वतंत्रता की घोषणा कर दी। 1845 ईसवी में इस राज्य का विलय संयुक्त राज्य अमेरिका में हो गया।

2. ओरेगन का प्रश्न –पोल्क ने अपने चुनाव अभियान में संयुक्त राज्य अमेरिका में ओरेगन के विलय के प्रश्न को महत्त्व दिया। इंग्लैण्ड, जिसका कि यहाँ पर अधिकार था ने इसका विरोध किया। 1846 ईसवी में इंग्लैण्ड की सरकार समझौते के लिए तैयार हो गई। 15 जून, 1846 ईसवी की संधि के अनुसार संयुक्त राज्य अमेरिका को ओरेगन का अच्छा और अधिक भाग प्राप्त हो गया।

3. मैक्सिको के साथ विवाद व मैक्सियन युद्ध - टैक्सास के संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ विलय के समय संतोषजनक ढंग से उसकी सीमा निश्चत नहीं की गई थी। पोल्क ने जान स्लीडेल को अपना विशेष प्रतिनिधि बनाकर वहाँ भेजा। पोल्क चाहता था कि रियो ग्रेन्डो को

टैक्सास की दक्षिणी सीमा मान ली जाय तथा कैलीफोर्निया को पच्चीस लाख डालर की अदायगी पर संयुक्त राज्य अमेरिका को सौंप दिया जाये। किंतु दोनों पक्षों के बीच समझौता न हो सका तथा 1846 ईसवी में युद्ध छिड़ गया। इस युद्ध में मैक्सिको की हार हुई। 2 फरवरी 1848 को दोनों देशों के बीच हुई संधि के अनुसार संयुक्त राज्य अमेरिका को न्यू मैक्सिको, कैलीफोर्निया, नेवाडा, उटा, एरीजोना और कोलाराडो तथा वोमिंग के कुछ भाग मिले।

उपरोक्त तीनों घटनाओं का विस्तृत विवरण इसके पहले के एक अध्याय में पोल्क व टिलर के शासन काल के अन्तर्गत दिया गया है।

IV. पश्चिम की ओर प्रसार का प्रभाव :

1. राजनीतिक प्रभाव - पश्चिम की ओर प्रयाण के मुद्दे को लेकर एक ऐसे राजनीतिक वर्ग का उदय हुआ जिसने शीघ्र ही अमेरिका की राजनीति में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की। इस प्रसार के फलस्वरूप अमेरिकी दलीय राजनीति में नए विचारों ओर नए उद्देश्यों का प्रादुर्भाव हुआ। तत्कालीन राजनीतिज्ञों ने सीमा प्रान्तों के प्रभाव का अनुभव किया तथा इसको ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय नीति और विधान को आवश्यक मोड़ दिया। 1828 ईसवी में पश्चिमी प्रदेशों का एक निवासी जैक्सन अमेरिका का राष्ट्रपति बना। उसने अमेरिका के प्रजातंत्र को एक नया रूप दिया जिसे जैक्सोनियन लोकतंत्र की संज्ञा दी जाती है। आन्तरिक क्षेत्र में अधिकाधिक सुधारों की नीति अपनाई गई। ऐसे कानून बनाये गये जिनसे भूमि का सरलता से विक्रय हो सके तथा पश्चिम के प्राकृतिक साधनों का भरपूर लाभ उठाया जा सके तथा देश की आय बढ़ाई जा सके। इन उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए बैंक की व्यवस्था तथा यातायात के साधनों का विस्तार किया गया। इनके कारण राजनीतिक एकता के समर्थकों को बल प्राप्त हुआ। जनता के आर्थिक अवसरों में वृद्धि, व्यक्तिवाद और निजी उपक्रम की स्वतंत्रता अमेरिकी गणतंत्र की विशेषताएँ बनी। इससे एक विशाल प्रजातन्त्र के विकास का मार्ग प्रशस्त हुआ।

2. आर्थिक प्रभाव - स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी अमेरिका में प्रवासियों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही थी। यदि इन्हें पश्चिम के प्रदेशों में नहीं बसाया जाता तो पूर्वी प्रदेशों के निवासियों का जीवन कष्टमय हो जाता। इसके अतिरिक्त पूर्वी प्रदेशों के प्राकृतिक साधनों का भरपूर लाभ उठाकर संयुक्त राष्ट्र अमेरिका समृद्धि की ओर तेजी के साथ बढ़ा। पूर्व के उद्यमशील लोगों ने पश्चिमी प्रदेशों में प्रयाण करके वहाँ की उपजाऊ भूमि में कृषि का विस्तार किया तथा कालान्तर में कृषि के क्षेत्र में नये-नये तरीके अपना कर एक क्रान्ति ला दी। यातायात के साधनों के विकास से आन्तरिक व बाह्य व्यापार में वृद्धि हुई। संयुक्त राज्य अमेरिका में उद्योगों का भी विकास हुआ। कृषि व उद्योगों के विकास से देश में बेरोजगारी का अंत हुआ।

3. सामाजिक प्रभाव -पश्चिम की ओर प्रसार में व्यक्तिगत साहस व प्रतिभा का महत्त्वपूर्ण योगदान था। इससे स्थानीय व व्यक्तिगत निर्भरता की भावना को प्रोत्साहन मिला तथा जनता में दृढ़ता की भावना विकसित हुई। इस प्रक्रिया में प्रवासियों को प्राकृतिक बाधाओं, जंगल पशुओं व इंडियन्स के विरोध का सामना करना पड़ा। इससे उनमें आत्म विश्वास बढ़ा। व्यक्तिवाद के

विकास से समाज की अनेक अनुपयोगी परम्पराएँ समाप्त हो गई। जनता में स्वतंत्रता के प्रति उत्साह बढ़ा।

4. डालर साम्राज्यवाद की आधारशिला– पश्चिम की ओर प्रसार के फलस्वरूप अमेरिका में पूँजीवाद का विकास हुआ। अमेरिका का पूँजीवाद ब्रिटेन के पूँजीवाद से भिन्न था। इसमें समुद्रपारीय विस्तार व औपनिवेशिक साम्राज्य को ब्रिटेन के समान महत्त्व नहीं दिया गया। पश्चिमी प्रदेशों के साधनों का उपयोग करके अमेरिका एक पूँजीवाद देश बन गया तथा उसने डालर साम्राज्यवाद की नीति अपनाई। विदेशों में अपने प्रभाव का विस्तार करने के लिए अमेरिका ने डालर कूटनीति का प्रयोग किया।

वास्तव में पश्चिम की और विस्तार ने अमेरिकी राष्ट्र को एक नया स्वरूप प्रदान किया। सीमा प्रदेशों व पश्चिमी भाग में विभिन्न जातियों ओर समुदाय के व्यक्तियों के एक साथ रहने से अमेरिकी सभ्यता को एक नया रूप मिला। टर्नर के अनुसार ''पश्चिम में राजनीतिक और सामाजिक असंतोष के विरुद्ध सुरक्षा कवच का कार्य किया। इसने पूर्वी भाग के श्रमिकों के लिये संवर्ग का काम किया। यह औद्योगिक बेरोजगारी के विरुद्ध बीमा सिद्ध हुआ।'' पार्केस ने भी इसके महत्त्व को समझाते हुए लिखा है कि पश्चिम की ओर प्रसार का सबसे महत्त्वपूर्ण तत्त्व यह था कि उस क्षेत्र में जाकर बसने वाले मनुष्यों ने तत्कालीन अमेरिकी सभ्यता की विशेषताओं को अपने साथ वहाँ ले गया। एक नये क्षेत्र पर अधिकार होने के पश्चात् जैसे ही सम्भव हो सका उन्होंने वहाँ पर जनता द्वारा निर्वाचित सरकारें, न्यायालय, चर्च, स्कूलें, विश्वविद्यालय, समाचार पत्र आदि स्थापित किये।



अध्याय - 12

सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक प्रगति (1789-1861 ईसवी)

□ पुखराज आर्य

क्रान्तिकारी युग से गृह युद्ध तक अमेरिका में हुई सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक प्रगति का अमेरिका के इतिहास में ही नहीं वरन् समग्र मानव जाति के आधुनिक इतिहास में अत्यन्त महत्त्व है। आर्थिक दृष्टि से ही नहीं वरन् सामाजिक व सांस्कृतिक दृष्टि से विश्व के अन्य स्वतंत्र राष्ट्रों पर इसका गहरा प्रभाव पड़ा है किंतु स्वयं अमेरिका में जो अद्यतन सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक प्रगति हुई उसका बीजारोपण अठारहवीं शती के अन्त में हुआ। उन्नीसवीं सदी का पूर्वार्द्ध तक इसका शैशव काल रहा। इस युग में विविध क्षेत्रों में हुई प्रगति के सम्बन्ध में यह कहा जा सकता है कि इसके कारण अमेरिकी समाज़ के पूँजीवादी होते हुए भी इसका लक्ष्य समानता का रहा है और कुछ प्रदेशों में इस लक्ष्य की प्राप्ति बीसवीं शताब्दी में हुई। इसी प्रकार अमेरिका की आर्थिक प्रगति की आधारशिला भी उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध तक ही रख दी गई थी। इस युग में अमेरिका में अभूतपूर्व सांस्कृतिक प्रगति भी हुई जिसके प्रभाव से विश्व का कोई भी देश नहीं बच पाया। इस प्रकार सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक प्रगति की दृष्टि से यह काल युगांतरकारी माना जा सकता है।

I. सामाजिक प्रगति :

क्रान्ति के पश्चात् भी अमेरिकी समाज कृषि व व्यापार प्रधान रहा, अत: क्रान्ति के पूर्ववर्ती और उत्तरवर्ती अमेरिकी समाज में कोई अन्तर दृष्टिगोचर नहीं होता है। उन्नीसवीं शती के पूर्वार्द्ध में आने वाले आप्रवासियों ने अमेरिका की सामाजिक व्यवस्था को प्रभावित किया। इस काल में जनसंख्या कि वृद्धि और आप्रवासयों के आगमन से अलेघैनी पर्वतमाला में घन रूप से बसी जनसंख्यो ने अन्यत्र फैलना प्रारम्भ किया जिससे समग्र अमेरिका में नगरीकरण की प्रक्रिया प्रारम्भ हो गई। नगरीकरण ने अमेरिका में जन सुरक्षा, जन स्वास्थ्य, यातायात आदि समस्याओं को उत्पन्न किया। इसी काल में इन समस्याओं का समाधान करने का प्रयास किया गया। नगरीकरण के उपरान्त भी अमेरिकी ग्रामीण जीवन पूर्व की भाँति सहयोग व सहकारिता पर आधारित रहा। इसी काल में हुई औद्योगिक प्रगति की प्रक्रिया ने जहाँ एक ओर अमेरिकी लोगों को समृद्ध बनाने में योग दिया वहाँ दूसरी ओर बेरोजगारी और अपराधी प्रवृत्तियों में भी वृद्धि की।

मद्यपान, जुआ खेलना तथा वेश्यावृत्ति आदि बुराइयों ने अमेरिकी जीवन में तीव्रता से प्रवेश किया। इन बुराइयों को दूर करने का प्रयास कुछ सुधारकों, संगठनों तथा राजकीय नियमों द्वारा किया गया। यद्यपि सफलता अधिक सन्तोषजनक नहीं थी तथापि अमेरिकी समाज एक स्वस्थ संगठन था जिसकी भित्ति पर आगामी सामाजिक जीवन का भव्य महल निर्मित किया जा सका।

(1) जनसंख्या में वृद्धि -अठारहवीं शती के अन्तिम दशक में अमेरिका की जनसंख्या लगभग चालीस लाख से कम थी। ये आँकड़े 1850 ईसवी में प्रथम बार की गई जन गणना पर आधारित थे। इसी प्रकार 1830 ईसवी में अमेरिका की अनुमानित जनसंख्या सवा करोड़ से अधिक मानी गई थी। स्पष्टत: अमेरिका में क्रान्ति के पश्चात् जनसंख्या में वृद्धि की प्रवृत्ति रही और यह क्रम गृह युद्ध तक जारी रहा। 1850 ईसवी में अमेरिका की जनसंख्या 23,191,000 हो गई। इस प्रकार साठ वर्ष के काल में, अर्थात् 1790-1850 ईसवी में अमेरिका की जनसंख्या में छ: गुना वृद्धि हुई। यह वृद्धि स्वाभाविक व प्रकृत्य थी।

विदेशी अप्रवासियों के आगमन ने भी जनसंख्या की वृद्धि में महत्त्वपूर्ण योग दिया। 1820 ईसवी से लेकर 1830 ईसवी तक अमेरिका में विदेशों से केवल पाँच लाख व्यक्तियों ने आप्रवास किया। आगामी दो दशकों में लगभग पच्चीस लाख व्यक्ति आये। 1850 ईसवी की जन गणना के अनुसार केवल बारह प्रतिशत लोग ऐसे थे जिनका जन्म विदेशों में हुआ था। विदेशों से हुए इस आप्रवास के लिए कुछ उल्लेखनीय कारण थे। इस काल में मुख्य रूप से आप्रवास इंग्लैण्ड और आयरलैण्ड से हुआ था। इसका कारण यह था कि इंगलैण्ड में इस काल में श्रमिकों की दशा सन्तोषजनक नहीं थी, अतः उन्होंने अपने भविष्य को सुधारने हेतु इंग्लैण्ड से अमेरिका में आप्रवास किया था। इसी प्रकार आयरलैण्ड में यदाकदा पड़ने वाले अकालों ने आयरलैण्ड वासियों को अमेरिका में आप्रवास के लिए बाध्य किया। यूरोप में होने वाली राजनीतिक उथल-पुथल, क्रान्तियों व उनके फलस्वरूप हुई आर्थिक दुर्दशा ने यूरोपवासियों को अमेरिका में आप्रवास के लिए प्रेरित किया। इन सब कारणों ने समवेत रूप से जनसंख्या की वृद्धि में योगदान दिया।

(2) जनसंख्या का वितरण व नगरों का विकास - अमेरिका में जिस प्रकार शनै:-शनै: जनसंख्या का वितरण तथा नगरों का विकास हुआ वह रोमांचक घटना है। अठारहवीं शती के अन्त तक समस्त अमेरिका की नब्बे प्रतिशत से अधिक जनसंख्या अलेघेनी पर्वतमाला (Allegheni Mountains) के पूर्व में निवास करती थी। जनसंख्या में वृद्धि के साथ-साथ अलेघेनी पर्वत के पूर्व में रहने वाली जनसंख्या का समस्त अमेरिका की जनसंख्या की तुलना में प्रतिशत क्रम होने लगा। उन्नीसवीं शती के मध्य तक अलेघेनी पर्वतमाला के पूर्व में अमेरिका के केवल पचपन प्रतिशत लोग रहते थे। उन्नीसवीं शती के मध्य तक समस्त अमेरिकी क्षेत्रों में जनसंख्या का वितरण हुआ। इस काल में अमेरिका के उत्तर पश्चिमी क्षेत्रो में सबसे अधिक जनसंख्या में वृद्धि हुई जो लगभग पिचहत्तर प्रतिशत थी। इसी कारण दक्षिण तथा दक्षिण पश्चिम क्षेत्रों में जनसंख्या में केवल दस प्रतिशत से अधिक ही वृद्धि हुई जिसका कारण इस क्षेत्र की जलवायु तथा दूसरी भौगोलिक परिस्थितियाँ थीं।

नगरीकरण अमेरिका के विकास की मुख्य विशेषता है। विश्व में अमेरिका आज भी एक ऐसा देश है जहाँ पर नगरीकरण सर्वश्रेष्ठ है। अमेरिका में नगरीकरण के इतिहास का प्रारम्भ उन्नीसवीं शती के प्रारम्भ से होता है। अमेरिका की क्रान्ति की समाप्ति के पश्चात् समस्त अमेरिका में केवल पाँच नगर ऐसे थे जिनकी जनसंख्या दस हजार के लगभग थी। इससे स्पष्ट है कि अठारहवीं शती के अन्त तक अमेरिका में नगरीकरण की प्रवृत्ति का जन्म नहीं हुआ था। इस क्रम का प्रारम्भ उन्नीसवीं शती से हुआ जिसका मुख्य कारण अमेरिका की औद्योगिक क्रान्ति थी। इंग्लैण्ड और यूरोप में भी औद्योगिक क्रान्ति ही नगरीकरण का मुख्य कारण थी लेकिन जिस गति से अमेरिका में नगरीकरण हुआ व अत्यन्त उल्लेखनीय है। यह प्रवृत्ति अमेरिका के लोगों के लिए चिन्ता का विषय रही लेकिन वे इस विकास को रोकने में असमर्थ थे। अत: उन्हें उन सब समस्याओं का सामना करना पड़ा जो नगरीकरण के कारण उत्पन्न होती हैं।

उन्नीसवीं शती के मध्य तक अमेरिका में लगभग ऐसे एक सौ पचास नगरों का विकास हो चुका था जिनकी जनसंख्या दस हजार के लगभग थी। इन नगरों में 1850 ईसवी तक अमेरिका की समस्त जनसंख्या का पन्द्रह प्रतिशत से कुछ अधिक भाग बस चुका था। अमेरिका में हुए इस नगरीकरण से विभिन्न प्रकार की समस्याएँ उत्पन्न हुईं जिनमें जन सुरक्षा, जन स्वास्थ्य, सफाई, यातायात तथा आग की रोकथाम प्रमुख थी। इन समस्याओं के अतिरिक्त अमेरिका में नगरीकरण के उपरान्त सामाजिक अव्यवस्था, राजनीतक भ्रष्टाचार तथा धार्मिक अन्धानुयायिता की समस्याएँ भी उत्पन्न हुईं। लोगों के आचरण में अन्तर आया। यह सब परिवर्तन नगरीकरण के कारण हुआ जो अमेरिकी जनता के लिए एक प्रकार की चेतावनी थी। अमेरिका में बसे जन्मजात लोगों ने इन प्रवृत्तियों को भय की दृष्टि से देखा। उन्होंने इन प्रवृत्तियों के लिए विदेशों से आये आप्रवासियों को उत्तरदायी ठहराया। 1837 ईसवी में वाशिंगटन नगर में अमेरिका के मूल निवासियों ने अपनी एक संस्था बनाई। प्रारम्भ में यह संस्था कैथोलिक विरुद्ध धार्मिक भावनाओं के कारण आयरलैण्ड से हो रहे अप्रवास को रोकना चाहती थी, किन्तु उन्नीसवीं शती के मध्य तक इस संस्था ने धार्मिक क्षेत्र के अतिरिक्त अन्य प्रश्नों में भी रुचि लेना प्रारम्भ किया। 1825 ईसवी में मूल निवासियों ने एक 'आर्डर ऑफ द स्टार स्पैंगल्ड बैनर' (Orde of the Star Spangled Banner)की स्थापना की जो कालांतर में 'नो नथिंग'(No Nothing) पार्टी के नाम से जानी जाने लगी। इस पार्टी का उद्देश्य देशीकरण के नियमों में रुचि लेना था। वे विदेशों से आप्रवास करने वाले लोगों को सरलता से नागरिक बनाना नहीं चाहते थे। इस प्रकार नो नथिंग पार्टी, जिसकी उत्पत्ति एक कैथोलिक विरोधी दल के रूप में हुई, ने आगे चलकर अमेरिका में आप्रवास का विरोध किया तथा आये हुए आप्रवासी कैथोलिक को सार्वजनिक पदो से वंचित रखना चाहा। यह दल उन्नीसवीं शती के मध्य तक शक्तिशाली रहा लेकिन 1856 ईसवी के निर्वाचन में आपसी मतभेदों के कारण शक्तिहीन हो गया।

(3) अमेरिकी जन जीवन - फ्रांसीसी क्रान्ति की भाँति अमेरिका ने वहाँ के सामाजिक जीवन में कोई भारी उथल-पुथल नहीं की फिर भी अमेरिकी क्रान्ति ने वहाँ के सामाजिक जीवन को एक नया मोड़ अवश्य प्रदान किया जिसके फलस्वरूप अमेरिका के आर्थिक व राजनीतिक

जीवन में परिवर्तन आया। क्रान्ति के फलस्वरूप सबसे महत्त्वपूर्ण परिवर्तन भूमिधारी अधिकारों में आया। बड़े-बड़े फार्मों के स्थान पर छोटे व साधारण फार्मों की स्थापना हुई। इसी प्रकार से जो भूमि अब तक इंग्लैण्ड के राजतन्त्र की मुकुट की भूमि मानी जाती थी वह अब विभिन्न राज्यों द्वारा ग्रहण कर ली गई। उसका वितरण नये काश्तकारों में कर दिया गया। राजनीतिक व आर्थिक परिवर्तनों के साथ-साथ सामाजिक जीवन में तथा रहन-सहन के तरीकों में अन्तर आया। अधिकांश अमेरिकी नागरिक गृह युद्ध काल तक कृषि के व्यवसाय में लगे रहे। वे अपने-अपने फार्मों पर जीवन व्यतीत करते थे जहाँ पर उनका अपना पारिवारिक जीवन था। सब मिल जुल कर काम करते थे। कृषि के काम में थोड़ी बहुत सहायता कृषक श्रमिकों से भी ली जाती थी और घरों में स्त्रियाँ व लड़कियाँ थोड़ा बहुत हाथ बँटाती थी। किसान परिवार परस्पर एक दूसरे की सहायता करते थे, मकान बनाते समय या धान साफ करते समय पड़ौसी किसान परिवारों से सहायता ली जाती थी। इस प्रकार नये विकसित होने वाल नगरों को छोड़ कर शेष अमेरिकी लोगों का जीवन साधारण था, जहाँ पर लोग स्वस्थ और साहसी थे तथा ईमानदारी से मेहनत कर अपना जीवन व्यतीत करते थे। धर्म में उनकी पूरी आस्था थी। इस काल में उत्तर व दक्षिण के किसानों में कोई विशेष अन्तर नहीं था। यद्यपि दक्षिण में बड़े-बड़े भूमिधारियों का जीवन भिन्न था और वे लोग बड़े फार्मों के स्वामी होने के कारण दासों से श्रम लेते थे तथा स्वयं विशाल भवनों में जीवन व्यतीत करते थे। इस प्रकार के बड़े भूमिपतियों के कम संख्या में होने के उपरान्त भी वहाँ के आर्थिक, राजनीतिक व सामाजिक जीवन का उनका प्रभुत्व था। यदि यह कहा जाये कि दक्षिण में एक छोटे कुलीतन्त्र का स्वामित्व था तो ऐसा कहना अनुचित नहीं होगा। दक्षिण के उच्च वर्गों का जीवन इंग्लैण्ड के विक्टोरियन काल के जीवन के समान था।

अमेरिका के नव विकसित नगरों में सामाजिक जीवन भिन्न था। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि दक्षिण के राज्यों मे केवल चार पाँच नगर ही बड़े थे और शेष नगर उत्तर के राज्यों में विकसित हुए थे। उत्तर के राज्यों में समृद्ध व प्रभावशाली वर्ग वे थे जो व्यापार, उत्पादन तथा लेन देन में लगे हुए थे। ये लोग शहरों में रहते थे तथा दक्षिण के बड़े भूमिपतियों के समान ही प्रदर्शन का जीवन व्यतीत करते थे। उत्तर के महाजन तथा व्यापारी ऐशो-आराम का जीवन व्यतीत करते थे। अन्तर केवल इतना ही था कि दक्षिण का धनी वर्ग, ग्रामीण अर्थ व्यवस्था पर निर्भर था जबकि उत्तर के महाजनों की समृद्धि उद्योग तथा व्यापार पर आधारित थी।

(4) मनोरंजन के साधन- उन्नीसवीं शती के पूर्वार्द्ध में अमेरिका में मनोरंजन के मुख्य साधन घुड़सवारी, शिकार तथा मछली पकड़ना था। इसके अतिरिकत लोग तैराकी, नौका विहार तथा स्केटिंग में रुचि लेते थे। खेलों में फुटबाल तथा बेसबाल प्रमुख थे। सर्कस व थियेटर भी मनारेजन के प्रमुख साधन थे। अन्तरंग खेलों में ताश, शतरंज, बिलियर्ड तथा चेकर्स लोकप्रिय थे। नृत्य का सभी को शौक था। उच्च वर्गों में 'पोलका' तथा 'वाल्टस' नृत्यों की फैशन थी। यद्यपि रूढ़िवादी लोग इस प्रकार के नृत्यों को उचित नहीं समझते थे। अमेरिका में समृद्ध लोगों के लिए यूरोप की यात्रा भी मनोरंजन का एक प्रमुख साधन होती थी। इसी प्रकार स्वयं अमेरिका के समुद्रतटीय स्थानों पर ग्रीष्म काल में लोग आते थे जहाँ पर लोग घुड़वारी, नृत्य, नौका विहार तथा

तैराकी में समय व्यतीत करते थे। इसी प्रकार अमेरिका में समृद्ध वर्ग के लोग ग्रीष्मकाल में खनिज स्रोतों पर जाते थे। उनका यह विश्वास था कि इन स्रोतों के जल से उनको लाभ होगा, लेकिन अधिकांश लोग मनोरंजन व सामाजिक संसर्ग के उद्देश्य से जाते थे। इन ग्रीष्मकालीन पर्यटन के स्थानों पर दक्षिण के धनी, बड़े भूमिपति तथा उत्तर के महाजन, व्यापारी तथा उत्पादक मिला करते थे। प्रारम्भ में उनके पारस्परिक सम्बन्ध अच्छे थे, किन्तु 1850 ईसवी के पश्चात् दक्षिण में आने वाले अतिथि रूक्ष व्यवहार की शिकायत करने लगे थे। उन्होंने उत्तर के इन ग्रीष्मकालीन मनोरंजन के स्थानों का बहिष्कार करना प्रारम्भ कर दिया तथा दक्षिण में इसी प्रकार के स्थानों का विकास प्रारम्भ किया।

ये सभी मनोरंजन धनी वर्ग के लोगों के लिए थे। देहात में रहने वाले अमेरिकी व छोटे स्तर के किसानों का मनोरंजन का मुख्य साधन पारस्परिक बातचीत था। यह बातचीत देहात के किसी गिरजाघर, दूकान, सराय अथवा किसी सार्वजनिक स्थापन पर हो सकती थी। इस बातचीत में चुटकुले, हँसी मजाक, कभी-कभी राजनीतिक प्रश्नों पर विचार या फसल की स्थिति पर विचार आदि विषय हुआ करते थे। इससे मनोरंजन के साथ-साथ विचारों का आदान-प्रदान तथा हास्यवृत्ति का विकास भी होता था। खेल कूद, शिकार, मछली पकड़ना तथा नृत्य इत्यादि ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले मध्यवर्गीय लोगों के मनोरंजन के अतिरिक्त साधन थे।

अमेरिका के नवविकसित नगरों में स्वस्थ मनोरंजन के साधनों का सर्वथा अभाव था। अन्तर्द्वार खेलकूदों में लोगों की रुचि नहीं थी तथा बहिर्द्वार खेलकूदों के लिए सुविधा नहीं थी। अधिकांश लोग मदिरा सेवन, नृत्य आदि में रुचि रखते थे जिसके लिए सार्वजनिक स्थान थे। इन स्थानों पर लोग बड़ी संख्या में एकत्रित होते थे, परिणामस्वरूप वहाँ का वातावरण दूषित हो जाता था। इन स्थानों पर अनैतिकता और अपराध का जन्म स्वाभाविक था।

इस काल में अमेरिकन सार्वजनिक जीवन की एक विशेषता लोगों का राजनीतिक रैलियों में इकट्ठा होना था। ग्रामीण क्षेत्रों में इस प्रकार की राजनीतिक सभाओं में अधिक लोग एकत्रित होते थे। राष्ट्रपति चुनाव के समय इस प्रकार की रैलियों का बाहुल्य रहता था। इससे सामाजिक संसर्ग बढ़ता व मनोरंजन भी होता था। इन अवसरों पर ऊँच नीच का भेद नहीं होता था, सामाजिक समानता का वातावरण होता था। ये एक प्रकार के मेले होते थे, जिनमें भिन्न प्रकार के लोग अपना माल बेचते थे। इन अवसरों पर जुलूस निकाले जाते थे और सभाएँ होती थीं। विभिन्न प्रकार के भोजन व वार्ता के दौरान विनोद का वातावरण रहता था।

(5) वेशभूषा - इस काल में अमेरिका में वेशभूषा के क्षेत्र में नवीनतम प्रयोग किये गये। उच्च वर्गों में विशेष स्थान रहा लेकिन यह स्त्रियों की वेशभूषा में प्रमुख था। बड़े घरों की स्त्रियाँ बहुमूल्य पोशाकों का प्रयोग करती थीं। उस युग में, जबकि डालर की कीमत आज की तुलना में कहीं अधिक थी, समृद्ध परिवार की स्त्रियाँ एक सौ डालर से अधिक की कीमत के गाउन्स (Gowns) सिलवाती थीं। इसके अतिरिक्त कीमती व आकर्षक दुशालों का रिवाज था। फैशन करने वाली स्त्रियाँ बड़े-बड़े गले वाले वस्त्र पहनती थीं जिस पर रूढ़िवादी लोग आपत्ति भी किया करते थे। लहंगों के समान बहुत लटकने वाले स्कर्ट पहने जाते थे जो एक प्रकार से झाड़ू देते हुए

होते थे। स्त्रियों की वेशभूषा में समय-समय पर परिवर्तन होते रहे। समृद्ध वर्गों के लोगों की वेशभूषा साधारण होती थी और दिखावे के रूप में केवल रंगीन जाकिटें या मखमल या साटन के वस्त्र बनवा लिये जाते थे। वृद्ध व युवक दाढ़ी मूँछ रखते थे।

(6) सामाजिक विषमताएँ व अपराध- इसमें कोई सन्देह नहीं कि इस काल में अमेरिकी समाज में महत्त्वपूर्ण प्रगति हुई। विशाल प्राकृतिक साधनों की उपलब्धि से समृद्धि बढ़ी तथा भौतिक प्रगति हुई। समाज में परिपक्वता आई। उसे एक नैतिक आधार देने का प्रयत्न किया गया। इतना ही नहीं, लोकपकारी कार्य तथा कुछ दूसरे प्रकार के सुधार आन्दोलन भी चलाये गये। रॉबर्ट ओवन (Robert Owen), एल्बर्ट ब्रिस्बेन (Albert Brisbane) व केबेट (Cabot) आदि सुधारकों ने कुछ आदर्श बस्तियों का निर्माण किया। फिर भी औद्योगिक प्रगति के साथ-साथ कुछ सामाजिक विषमताएँ बढ़ीं। गरीबी और बेरोजगारी के कारण नगरों में विशेषकर अपराधों की वृद्धि हुई। मद्यपान की आदत न केवल उच्च वर्गों में वरन् निम्न वर्ग में भी थी जिससे समाज की उलझनें बढ़ीं। 1857 ईसवी के संकट के समय बड़े नगरों में बेरोजगारी फैली और लोग भूख से मरने लगे थे, यद्यपि देश में खाद्यान्न का अभाव नहीं था। उस समय भूखे लोगों ने दूकानों और बैंकों को लूटने की धमकियाँ दीं। बड़े नगरों में अपराधों की प्रवृत्ति बढ़ने लगी। चोरी, हत्या, डकैती आदि की घटनाएँ प्रतिदिन होने लगीं। वेश्यावृत्ति को प्रोत्साहन मिला और जुए का खेल भी बड़े नगरों में सामान्य हो गया। इस प्रकार नगरीय जीवन व औद्योगीकरण से समाज में अनेक बुराइयों का समावेश हुआ।

(7) सामाजिक एवं मानवतावादी सुधार - सोलहवीं शती के पूर्वार्द्ध में कुछ उल्लेखनीय सामाजिक व मानवतावादी आन्दोलन हुए। इस युग में अमेरिकी समाज का आशावाद तथा निष्पत्तिवाद में विश्वास था जिसके परिणामस्वरूप अमेरिकी समाज में विभिन्न प्रकार के प्रयोग किये गये व मानवीय सुधारों के प्रयास किये गये। इस दिशा में आदर्श युक्त यूटोपिया (Utopia) पर आधारित बस्तियाँ की स्थापना की गई जिनमें आर्थिक एवं सामाजिक न्याय प्रदान करने का प्रयास किया गया। आदर्श बस्तियों की स्थापना केवल प्रयोगमात्र थी, किन्तु उनके द्वारा दी गई प्रेरणा के तथा धार्मिक विचारों के कारण उल्लेखनीय मानवतावादी सुधारों के प्रयास किये गये। अनेक अमेरिकी लोगों को यह विश्वास था कि उनके देश में एक पूर्ण समाज की स्थापना हो जायेगी। इसी कारण मानवतावादी अमेरिकीयों ने विभिन्न प्रकार के सुधार आन्दोलन चलाये जिनमें मानसिक व शारीरिक दृष्टि से अक्षम लोगों के लिए कार्य किए गए। 1816 ईसवी में हार्टफोर्ट (Hart Fort) के स्थान पर बहरे व गूंगे लोगों के लिए शिक्षण संस्था खोली गई। 1829 ईसवी में पर्किन्स संस्थान (Perkins Institution) द्वारा अन्धों की शिक्षा की व्यवस्था की गई और इसी प्रकार मानसिक दृष्टि से विकृत लोगों के लिए बूरसेस्टर में 1833 ईसवी में शरण-गृह की स्थापना की गई। उनकी चिकित्सा की ओर भी ध्यान दिया गया।

मानवतावादी सुधारकों ने अमेरिका में प्रचलित दण्ड संहिता की ओर भी ध्यान दिया। मानवता के सिद्धान्तों को ध्यान में रखते हुए उसमें सुधार की माँग की गई। इन सुधारों का लक्ष्य यह था कि अपराधियों के साथ अमानवीय व्यवहार नहीं किया जाये। उनके लिए कारागृह की

व्यवस्था की जाये। ऋण न चुकाने पर कारागृह की सजा न दी जाये। सभी प्रकार के अपराधियों के लिए इस प्रकार के कार्यक्रम अपनाये जायें जिससे उनकी प्रवृत्ति में सुधार लाया जा सके। सुधारकों ने नशाबन्दी के लिए भी प्रयास किये। 1826 ईसवी में बोस्टन में 'अमेरिकन टेम्परेन्स सोसायटी' (American Temperance Society) की स्थापना की गई। इस सोसायटी की शाखाएँ सभी राज्यों में स्थापित की गईं। गिरजाघरों ने भी इस कार्य में आर्थिक सहायता प्रदान की। सुधारकों ने प्रारम्भ में प्रचार के माध्य से अपने लक्ष्य की ओर बढ़ना चाहा लेकिन बाद में उन्होंने कानून द्वारा नशाबन्दी करने को अपना लक्ष्य बनाया। 1851 ईसवी में मेन के राज्य में पहली बार एक कानून स्वीकार किया गया जिसमें शराब के बनाने, विक्रय व आयात पर प्रतिबन्ध लगाया गया। यह आन्दोलन गृह युद्ध के पश्चात् तक चलता रहा।

समाज सुधारकों ने स्त्रियों की दशा में सुधार करने का कार्यक्रम अपनाया। उनका लक्ष्य स्त्रियों का राजनीतिक व आर्थिक शोषणा समाप्त करना था। स्त्रियों को साधारण मताधिकार प्रदान करने की माँग की गई। 1848 ईसवी में एक 'वीमेन्स राइट्स कन्वेन्शन' (Women's Rights Convention) हुआ जिसमें राष्ट्रीय स्तर पर यह माँग की गई कि स्त्रियों को मतदान का अधिकार दिया जाये तथा उन्हें पुरुषों के समान शिक्षा व जीविकोपार्जन के अवसर प्रदान किये जायें। उनका शोषण समाप्त किया जाये।

इस मानवतावादी सुधार आन्दोलन से अमेरिकी समाज में कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ तथापि इन सब आन्दोलनों का लक्ष्य एक आदर्श की प्राप्ति थी। इसमे कोई सन्देह नहीं कि इन आन्दोलनों का कोई गहरा प्रभाव नहीं पड़ा, फिर भी इनके कारण जो चेतना उत्पन्न हुई उसने भविष्य में अमेरिका की सामाजिक प्रगति में महत्त्वपूर्ण योग दिया।

इस प्रकार अमेरिकी समाज इस काल में लगभग उसी प्रकार का था जैसा कि यूरोपीय समाज, फिर भी अमेरिकी समाज की कुछ अपनी विशेषताएँ थीं जो सहज ही परिलक्षित होती थीं। अमेरिकी समाज को आप्रवासियों ने प्रभावित किया तथापि अमेरिका का सामाजिक जीवन अब भी कृषि-प्रधान ही रहा। अमेरिकी समाज में कुछ दोषों के होते हुए भी वह उन्नति की ओर अग्रसर हो रहा था। यद्यपि वर्तमान समाज की भाँति उस समय का समाज व्यवस्थित नहीं था तथापि एक स्वस्थ समाज था और इसी की नींव पर आधुनिक अमेरिका का निर्माण किया गया।

II. आर्थिक प्रगति :

(1) औद्योगक विकास के मार्ग में कठिनाइयाँ - अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में इंग्लैण्ड में औद्योगिक क्रान्ति हुई और उद्योगों के क्षेत्र में वह शीघ्र ही विश्व के देशों में अग्रणी हो गया लेकिन स्वतंत्रता प्राप्ति से लेकर गृह युद्ध तक की अवधि में इस क्षेत्र में अमेरिका ने जो प्रगति की, वह उल्लेखनीय है।

अठारहवीं सदी के मध्य में निम्नांकित कठिनाइयाँ थीं -

1. अमेरिका की अधिकांश पूँजी, कृषि विदेशी व्यापार और भूमि के क्रय-विक्रय में लगी हुई थी। शेष पूँजी, जो अमेरिकन पूँजीपतियों के पास थी, उसे वे औद्योगीकरण में इस भय से नहीं लगाना चाहते थे कि कहीं अंग्रेजी उद्योगों की प्रतिस्पर्धा में अपनी पूँजी न गँवा बैठें।

2. उस समय अमेरिका में दक्ष एवं कुशल श्रमिकों का अभाव था। वैसे भी साधारण श्रेणी के श्रमिकों की प्राप्ति में भी कठिनाइयाँ थीं।
3. अमेरिका में उत्पादन-विधि तथा मशीन सम्बन्धी ज्ञान व जानकारी की कमी थी।
4. अमेरिका के स्थानीय बाजारों की माँग सीमित व अनिश्चित थी।
5. अमेरिका में यातायात के साधनों की कमी थीं।

उद्योगों के साथ कृषि की अवस्था भी संतोषजनक नहीं थी। असंयत मात्रा में भूमि उपलब्ध होने के कारण अमेरिकन कृषक खेती के नये तरीकों को काम में नहीं लाना चाहते थे। वहाँ पर इंग्लैण्ड के समान वैज्ञानिक ढंग से खेती नहीं होती थी। पशुपालन के क्षेत्र में भी अमेरिका पिछड़ा हुआ था।

(2) कठिनाइयों पर विजय - किंतु उन्नीसवीं सदी के प्रारम्भिक दशकों में उद्योगों व कृषि के क्षेत्र में इन कठिनाइयों पर विजय प्राप्त कर ली गई थी। इस दिशा में जो कुछ प्रगति उस समय व बाद में हुई उसमें निम्नांकित तत्त्वों का योगदान रहा-

1. अमेरिका में प्रचुर मात्रा में प्राकृति साधन उपलब्ध थे। उनका उचित ढंग से प्रयोग किया गया।
2. राजनीतिक एकता की स्थापना व उसके स्थायित्व ने औद्योगिक प्रगति में सहायता दी। उद्योगों व कृषि को सरकारी संरक्षण एवं प्रोत्साहन मिलता रहा जिसके कारण साहसी व उद्यमी प्रवृत्ति के लोगों ने व्यक्तिगत रूप से आर्थिक प्रगति के मार्ग पर चलने का निर्णय लिया और वे सफल हुए।
3. उन्नीसवीं शताब्दी के तीसरे दशक से यातायात व संचार के साधनों का विकास तेजी के साथ हुआ। जल यातायात के विकास ने भी इस क्षेत्र में अपना योगदान दिया।
4. नेपोलियन के समय के युद्धों ने बहुत-सी अमेरिकी पूँजी को, जो विदेशी व्यापार में तथा यूरोप के जहाज-निर्माण उद्योग में लगी हुई थी, वापस घर लौटा दिया तथा यह पूँजी अमेरिका के औद्योगिक विकास के लिए उपलब्ध हो गई।
5. उद्योगों व कृषि के क्षेत्र में मशीनों के प्रयोग ने क्रान्ति ला दी।

(3) यातायात व संचार व्यवस्था में प्रगति - 1789 से 1861 ईसवी के काल में अमेरिका की आर्थिक एवं औद्योगक प्रगति में सबसे महत्त्वपूर्ण योगदान यातायात तथा संचार के साधनों के विकास का रहा। स्वाधीनता के पश्चात् पश्चिम की ओर विस्तार की भावना का महत्त्व राष्ट्र के समक्ष आया। उसके साथ-साथ यातायात के सुलभ साधनों के महत्त्व के प्रति चेतना उत्पन्न हुई। क्रान्ति के पश्चात् भी कुछ समय तक अमेरिका में आवागमन गन्दे व दलदल वाले मार्गों पर होता रहा, किन्तु अठारहवीं शती के अन्त के पूर्व ही कुछ ऐसे सफल प्रयास किये गये जिनके परिणामस्वरूप बड़ी सड़कों व मुख्य मार्गों को महापथों के रूप में परिवर्तित किया गया। अमेरिकनों ने इस दिशा में इंग्लैण्ड का अनुकरण किया। इंग्लैण्ड की तरह पक्की सड़कों

तथा नहरों का यातायात के लिए निर्माण किया गया। लेकिन भाप इंजिन से चलने वाली नावों का विकास स्वयं अमेरिकनों ने किया।

यातायात और संचार के साधनों के विकास के साथ इस दिशा में प्रगति के प्रश्न पर अमेरिका में एक विवाद उत्पन्न हो गया। प्रश्न यह था कि यातायात के साधनों का विकास राज्य करे तथा उन पर राज्य का स्वामित्व रहे अथवा इन साधनों का विकास निजी साहस व प्रयासों पर छोड़ दिया जाये। इसमें कोई सन्देह नहीं था कि इस प्रकार के विस्तार के लिए बड़ी मात्रा में पूँजी की आवश्यकता थी और अधिक व्यय को देखते हुए सभी सहमत थे कि इनके विकास में राज्य को कुछ न कुछ सहायता अवश्य प्रदान करनी चाहिए। साथ ही यह प्रश्न भी था कि निजी प्रयासों से यातायात के साधनों का विकास होता है तो सार्वजनिक हितों की रक्षा करने हेतु क्या राज्य को पथ-कर की दर पर नियंत्रण रखने का अधिकार है या नहीं। इन प्रश्नों पर अमेरिका में निरन्तर विचार होता रहा तथा समय-समय पर भिन्न-भिन्न निर्णय लिये गये। अमेरिका में यातायात के विकास के क्रम में कुछ स्पष्ट चरण आते हैं। अठारहवीं शती के अन्तिम दशक से आर्थिक प्रगति के लक्ष्य की पूर्ति के विपरीत आवश्यकताओं के अनुरूप विकास किया गया। प्रथम चरण में पक्की सड़कों और उन पर राष्ट्रीय चुँगी-चौकियों का निर्माण किया गया। दूसरे चरण में नदियों तथा नहरों द्वारा यातायात को प्रधानता दी गई। तत्पश्चात् तीव्र गति से रेल लाइनें डाली गई एवं अन्तिम चरण में पक्की सड़कें और राष्ट्रीय चुँगी-चौकियों का अत्यधिक विस्तार किया था। उन्नीसवीं शती के आरम्भिक दशकों में निजी कम्पनियों ने पक्की सड़कों के निर्माण का कार्य उत्सुकता से किया। वैसे यह कार्य सफल रूप से अठारहवीं शती के अन्तिम दशक में प्रारम्भ हो गया था जबकि 1794 ईसवी में फिलाडेल्फिया से लंकास्टर तक अमेरिका की प्रथम लम्बी पक्की सड़क यातायात के लिए खोल दी गई। फिर भी उन्नीसवीं शती के आरम्भिक दशकों में यातायात का यही साधन लोकप्रिय रहा। इसके पश्चात् भाप का इंजिन व जल-यातायात का विकास हुआ तथा उन्नीसवीं शती के तीसरे दशक में रेलों के निर्माण का कार्य किया गया।

(4) सड़कों पर पुल का निर्माण- उन्नीसवीं शती के प्रथम दशक की समाप्ति के साथ-साथ अमेरिका में सड़क निर्माण के कार्य पर लगभग चार करोड़ डालर की पूँजी लगा दी गई। इस दिशा में निजी कम्पनियों ने बड़ा उत्साह दिखाया। उनका लक्ष्य लगाई गई पूँजी पर 'पथ-कर' प्राप्त करके लाभ कमाना था। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि व्यापार के क्षेत्र में निगमों की स्थापना अमेरिका में सर्वप्रथम यातायात उद्योग के क्षेत्र में हुई जिनका लक्ष्य सड़कों व पुलों का निर्माण करना था। इन निगमों को राज्य द्वारा आर्थिक सहायता भी प्रदान की गई। इस काल में संघीय सरकार ने भी अलग से राष्ट्रीय महापथ के निर्माण को अपन हाथ में लिया। यह पथ मेरीलैण्ड से लेकर ओहायो राज्य तक बनाया गया। इसे यातायात के लिए 1870 ईसवी में खेल दिया गया। इस मार्ग क लिए कांग्रेस ने 1838 ईसवी तक धन राशि प्रदान की और इसका विकास उन्नीसवीं शती के मध्य के पश्चात् तक होता रहा।

अमेरिका की नव-निर्मित सड़कों पर यातायात का मुख्य साधन गति से चलने वाली बग्घियाँ होती थीं जिनमें चार या छ: घोड़े जोते जाते थे। इन बग्घियों को चमकीले रंगों से रंगा जाता था। मार्गों पर यात्रियों की सुविधा के लिए सरायें व विश्राम घर बनाये गये जहाँ पर भोजन

आदि की व्यवस्था भी होती थी। उन्नीसवीं शती के मध्य तक राजकीय प्रयास एवं सहायता व निजी कम्पनियों के साहस के कारण अमेरिका में सार्वजनिक मार्गों का अत्यधिक विकास हुआ, यद्यपि सड़क बनाने वाले निगमों को कोई विशेष लाभ नहीं हुआ। बहुत सी कम्पनियों को राजकीय स्वामित्व के अधीन लेना पड़ा। इसके विपरीत पुलों का निर्माण करने वाली निगमों ने तुलनात्मक रूप से अधिक लाभ कमाया, क्योंकि उन्हें एकाधिकार प्रदान किये गये थे। इन कम्पनियों का अमेरिका के यातायात के विकास में अपना एक विशेष महत्त्व है।

(5) जल यातायात- जल यातायात का विकास अमेरिकी आर्थिक प्रगति की एक विशेषता रही है। अमेरिका जैसे विशाल देश में बड़ी-बड़ी नदियों का अभाव नहीं था और वे सब नदियाँ यातायात के लिए काम में आ सकती थी। 1780 ईसवी में जान फिच (John Fitch) ने अमेरिका में एक भाप से चलने वाली नाव का विकास कर लिया लेकिन इस क्रान्तिकारी आविष्कार का व्यापारिक दृष्टि से लाभदायक प्रयोग प्रथम बार 1807 ईसवीं में किया गया जब कि राबर्ट फुलटन (Robert Fulton) ने अपनी भाप इंजिन से चलने वाली नाव क्लेरमोन्ट (Clermont) को न्यूयार्क से अल्बेनी (Albeny) तक चल कर दिखाया। इस सफलता से अमेरिका के समस्त आन्तरिक जल क्षेत्रों के विकास के लिए प्रेरणा मिली। मिसीसिप्पी तथा उसकी सहायक नदियों में भाप इंजिन से चलने वाली नावों को सफलतापूर्वक उतारा गया। बड़ी-बड़ी नावों का निर्माण किया गया जिनमें यात्रियों के लिए सुविधाएँ ही नहीं बल्कि ऐशोआराम तक की व्यवस्था की गई। उन्नीसवीं शती से गृह युद्ध के काल तक का युग मिसीसिप्पी के 'अन्तरस्थलीय नौ-चालन का युग' माना गया है जिसका स्मरण आज तक मार्क स्वेन के लेखों द्वारा किया जा रहा है। 1860 ईसवी तक मिसिसिप्पी और उसकी सहायक नदियों में एक हजार से भी अधिक भाप से चलने वाली नावें चलने लगी थीं।

मिसीसिप्पी तथा उसकी सहायक नदियों में अन्तरस्थलीय जल यातायात ने अमेरिका की आवश्यकताओं को पूरा नहीं किया। सबसे बड़ी आवश्यकता पूर्वी राज्यों से पश्चिमी राज्यों तक आर्थिक दृष्टि से लाभदायक यातायात के साधनों की थी। यह कमी सड़कों के निर्माण से पूरी नहीं हुई। पूर्व के नगरों के लिए यह आवश्यक था कि वे अपने व्यापार को पश्चिमी बाजारों और मण्डियों तक ले जायें इसके लिए नहरों का निर्णय ही एकमात्र लाभदायक उपाय हो सकता था। न्यूयार्क के औद्योगिक राज्य ने इस दिशा में अग्रगामी कार्य किया और अन्य राज्यों के पूर्व ही 1825 ईसवी तक ईरी नहर (Erie Canal) का निर्माण किया गया। इस नहर ने बफेलो (Buffalo) में स्थित ईरी झील (Erie Lake) को ट्राय (Troy) के स्थान तक हडसन नदी से मिला दिया गया। ईरी नहर का निर्माण अत्यन्त लाभदायक रहा। दस वर्षों के अल्पकाल में ही इस पर लगाई गई धन राशि वसूल हो गई। न्यू यार्क राज्य का अनुकरण फिलाडेल्फिया, बाल्टीमोर तथा चार्ल्सटन के नगरों ने किया। पेनसिलवेनिया ने धन राशि लगा कर अपने नगर फिलाडेल्फिया को पीट्सबर्ग के नगर से एक नहर द्वारा जोड़ दिया। ये महानगर पेनसिलवेनिया नहर के नाम से प्रसिद्ध है। नहरों का निर्माण कार्य इस प्रकार बढ़ता रहा व उन्नीसवीं शती के मध्य तक अमेरिका में निर्मित नहरों की लम्बाई लगभग 5000 किलोमीटर हो गई। यह निस्सन्देह आश्चर्यजनक प्रगति की थी। यहाँ

यह भी उल्लेखनीय है कि दक्षिण के राज्यों में नहर-निर्माण कार्य को प्रधानता नहीं दी गई। क्योंकि वहाँ की नदियाँ सीधी मैक्सिको की खाड़ी या अटलांटिक सागर में गिरती थीं। वैसे भी दक्षिण में नहरों का निर्माण लाभदायक नहीं हो सकता था। अमेरिका में सभी नहरें राज्य की सरकारों द्वारा निर्मित की गई। उनके निर्माण में लाभ के उद्देश्य को अधिक प्रधानता नहीं दी गई। इन निर्माण-कार्यों के लिए पूँजी यूरोप के बाजारों से ली गई थी जिसे बहुत कम समय में चुका दिया गया।

(6) रेल मार्गों का निर्माण- अमेरिका में रेल मार्गों का निर्माण सड़क व जलमार्गों के पश्चात् हुआ लेकिन यातायात के इस साधन ने अधिक सफलता प्राप्त की तथा गृह-युद्ध के समय तक रेल यातायात अमेरिकी अर्थ व्यवस्था का एक प्रमुख अंग बन गया था। रेल मार्गों के विकास मे बाल्टीमोर नगर अग्रगामी रहा। 1828 ईसवी में बाल्टीमोर से आहायो तक रेल निर्माण कार्य को प्रारम्भ किया गया और 1853 ईसवी तक ओहायो नदी पर स्थित बिहलिंग के स्थान तक रेल-निर्माण के कार्य को पूरा कर लिया गया। रेल मार्गों की सफलता के कारण अमेरिका में अनेक रेल कम्पनियों का जन्म हुआ जिन्हें उदारता से संघीय व राज्य सरकारों ने सुविधाएँ तथा अनुदान दिया। जिन मार्गों पर रेल लाइन डाली गई वहाँ पर कम्पनियों को आवश्यक भूमि तथा आर्थिक सहायता प्रदान की गई। इस सहायता व सुविधा के कारण गृह युद्ध के पूर्व अमेरिका के उत्तर-पूर्वी और उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों को रेल महापथों से जाड़ दिया गया। रेल पटरियों की कुल लम्बाई पचास हजार किलोमीटर से भी अधिक हो गई। इस प्रकार रेलमार्गों ने समस्त अमेरिका के पूर्वी व पश्चिमी प्रदेशों को एक आर्थिक संगठन में बांध दिया। केवल दक्षिण को जोड़ना शेष रह गया। रेल निर्माण कार्य ने अमेरिका में यातायात के साधनों के विकास को पूरा कर औद्योगीकरण के मार्ग से सबसे बड़ी बाधा को दूर कर दिया।

(7) तार व्यवस्था - गृह युद्ध के समय तक अमेरिका में तार सेवा का भी अत्यधिक विकास हुआ जिससे संचार सुविधाओं में पर्याप्त विस्तार हो गया। 1837 ईसवी में सेम्युअल मोरस (Samuel Moras) ने तार व्यवस्था की सम्भावनाओं को सिद्ध कर दिया, किन्तु प्रथम तार लाइन 1843 ईसवी में डाली गई। 1860 ईसवी तक अमेरिका में एक काने से दूसरे कोने तक तार लाइनें बिछा दी गईं जिनकी कुल लम्बाई अस्सी हजार किलोमीटर से अधिक थी। तार व्यवस्था के विकास से व्यापार, वाणिज्य व प्रशासन के क्षेत्र में तो प्रगति हुई ही लेकिन इससे सबसे अधिक लाभ रेलों के निर्माण कार्य को मिला। यह कहना अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं होगा कि जिस तीव्र गति से अमेरिका में रेल निर्माण कार्य हुआ उसमें तार व्यवस्था ने सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण योग दिया।

(8) उत्पादन के साधनों में क्रान्ति - यूरोप व इंगलैण्ड की भाँति अमेरिका में भी उत्पादन के साधनों में क्रान्ति आई और जो परिवर्तन हुआ उसे ही अमेरिका की औद्योगिक क्रान्ति कहा जा सकता है। इस क्रान्ति से पूर्व अमेरिका से पूर्व अमेरिका में केवल छोटे-छोटे उद्योग थे जो उत्तर व मध्य में स्थित बड़े नगरों तक सीमित थे। इन नगरों में दक्ष कारीगर अपने हाथों से कपड़ा, बर्तन व औजार आदि बनाते थे। इसी प्रकार से हाथ से पीसने वाली चक्कियाँ ढ़ाली जाती थीं जिसमें गेहूँ तथा मक्के की पिसाई की जा सकती थी। घरेलू उद्योग में कुछ लोहे के ढ़लाई घर होते

थे जहाँ कारीगरों के लिए कच्चा लोहा आदि तैयार किया जाता था। इस प्रकार का जो भी माल तैयार किया जाता था वह केवल आन्तरिक खपत के लिए होता था। अमेरिकी देहातों में परिवार के सदस्य अपनी आवश्यकता की वस्तुएँ स्वयं बनाते थे लेकिन दक्षिण के बड़े फार्मों पर दासों से दैनिक आवश्यकताओं की वस्तुओं का निर्माण करवाया जाता था।

अमेरिका में औद्योगिक क्रान्ति मशीनों के आविष्कार के पश्चात् आई। इसके पूर्व कुछ अमेरिकी व्यापारियों ने बिना मशीनों की सहायता से मध्यम उद्योग स्थापित किये थे। इस प्रणाली के अन्तर्गत व्यापारियों ने दक्ष एवं कुशल कारीगरों को अपनी पूँजी लगाकर कच्चा माल आदि देना प्रारम्भ कर दिया। उनसे तैयार माल खरीद कर बाजारों में बेचने की व्यवस्था की गई थी। प्रारम्भ में कारीगरों को अपने घर पर काम करने दिया जाता था। लेकिन बाद में उन्हें एक स्थान पर एकत्रित करके काम लिया जाने लगा। इस प्रकार से अमेरिका में मशीन युग से पूर्व ही फैक्टरी पद्धति प्रारम्भ हो गई थी। प्रारम्भ में यह पद्धति कपड़े की बुनाई तथा जूतों के निर्माण के क्षेत्र तक सीमित थी। फैक्टरी पद्धति के विकास ने अमेरिका में पूँजीवाद के विकास के मार्ग को प्रशस्त किया।

(i) वस्त्र उद्योग -उन्नीसवीं शती के प्रारम्भ में अमेरिका में वस्त्र उद्योग में सर्वप्रथम मशीन का उपयोग किया गया। ये मशीनें इंग्लैण्ड से लाई गई थीं। अठारहवीं शती के अन्तिम दशक में सेम्युअल स्लेटर (Samuel Slater) नामक व्यक्ति, जो इंग्लैण्ड से आप्रवास करके अमेरिका में आया था, ने प्रथम कपड़ा मिल की स्थापना में सफलता प्राप्त की। उन्नीसवीं शती के दूसरे दशक में स्वयं अमेरिका में कपड़ा उद्योग के क्षेत्र में आविष्कार किये गये। 1814 ईसवी में लावेल (Lowell) तथा पॉल (Paul) नाम के व्यक्तियों ने अच्छे पावरलूम तैयार किये। इसी प्रकार 1826 ईसवी में जॉन गाउल्डिन (John Gouldin) नाम के व्यक्ति ने कार्डिंग मशीन में सुधार किये। इन आविष्कारों व सुधारों के कारण कपड़ा उद्योग विकसित हुआ और गृह-युद्ध के काल तक यह अमेरिका का सबसे महत्त्वपूर्ण उद्योग बन गया। अमेरिका का दक्षिणी न्यू इंग्लैण्ड क्षेत्र इस उद्योग का केन्द्र बना, क्योंकि वहाँ के व्यापारियों ने विदेशी व्यापर में बहुत पूँजी कमायी थी जिसे अब वे सन्तोषजनक परिस्थितियों के कारण लाभ की आशा में फैक्ट्रियों में लगाने के लिए तैयार थे। इस क्षेत्र के किसानों को भी अपनी कुछ असुविधाएँ थीं। वे अपने धन्धे में उपजाऊ मिसीसिप्पी के क्षेत्र में किसानों से प्रतियोगिता नहीं पर पाते थे इसलिए पश्चिम की ओर अग्रसर होना चाहते थे। इनमें से कुछ पश्चिम की ओर चले गये और शेष फैक्ट्रियों में काम करने के लिए तैयार हो गये। फिर इन किसान परिवारों की स्त्रियों व पुत्रियों ने, जो कपड़े की बुनाई का काम करती थीं, अब वेतन के आधार पर फैक्ट्रियों में काम करना स्वीकार किया। इस प्रकार न्यू इंग्लैण्ड में पूँजी व श्रम दोनों ही उपलब्ध हो गये। इस क्षेत्र की जलवायु भी इस उद्योग के लिए उपयुक्त थी। कपड़ा उद्योग का विकास न्यू इंग्लैण्ड के अतिरिक्त पेनसिलवेनिया के राज्य में भी हुआ। दोनों ही स्थानों पर गर्म कपड़े के निर्माण के लिए प्रयास किये गये थे। इन प्रयासों को उन्नीसवीं शती के उत्तरार्द्ध में जाकर थोड़ी बहुत सफलता मिली।

(ii) लोहा व इस्पात उद्योग - किसी भी प्रकार के उद्योगीकरण के लिए लोहे एवं इस्पात

उद्योग का विकास एक आधारभूत आवश्यकता होती है। अत्यधिक मात्रा में मशीनें उस समय तक तैयार नहीं की जा सकती जब तक कि पर्याप्त मात्रा में लोहा उत्पन्न नहीं हो। उन्नीसवीं शती के प्रारम्भ में इस दिशा में प्रगति प्रारम्भ हुई। पक्के कोयले की प्राप्ति से लोहे को पिघलाना सरल हो गया। 1833 ईसवी में फ्रेडरिक (Frederick) नाम के व्यक्ति ने लौह धातु से लोहे को पिघला कर अलग करने की एक नई विधि निकाली। कुछ समय बाद विलियम केली (William Cailles) ने इस्पात निर्माण की एक नई विधि का आविष्कार किया। इन आविष्कारों के परिणामस्वरूप केन्द्रीय व दक्षिण पेनसिलवेनिया में लौह व इस्पात उद्योग का विकास हुआ, क्योंकि इस क्षेत्र में लौह एवं कोक अथवा पक्का कोयला दोनों ही उपलब्ध थे। लौह उद्योग के विकास ने उद्योगीकरण को प्रोत्साहन दिया व विभिन्न प्रकार की फैक्ट्रियाँ स्थापित की गईं। इस सम्बन्ध में बन्दूकें तथा दूसरे शस्त्रों का निर्माण उल्लेखनीय है। बन्दूकों व अन्य शस्त्रों, जैसे-पिस्तोल, रिवाल्वर आदि का उत्पादन बड़े पैमाने पर किया जाने लगा और इन शस्त्रों के पृथक्-पृथक् भाग अलग- अलग फैक्ट्रियों में बनने लगे, जिन्हें जोड़ कर सम्पूर्ण शस्त्र बनाये जाने लगे। अब तक बन्दूकों का निर्माण कुशल कारीगरों द्वारा किया जाता था, किन्तु व्हिटने (Whitney) ने बन्दूक के भाग अलग-अलग फैक्ट्रियों में बनाये जाने की योजना कार्यान्वित की। इसी प्रकार इलियाज हो (Elias Howe) ने 1846 ईसवी में सिलाई की मशीन तैयार की। 1848 ईसवी में डेनीसन (Denision) ने मशीनों की सहायता से सफलतापूर्वक घड़ियों का निर्माण किया। यह सब लौह व इस्तात के निर्माण के क्षेत्र में हुई प्रगति के कारण हुआ। इतना ही नहीं, इस काल में बड़ी-बड़ी यन्त्रीकृत आटा पीसने की चक्कियाँ बनाई गईं जो स्वयं बहुत बड़ा उद्योग बन गयी। इसी प्रकार माँस काटने का काम मशीन से किया जाने लगा। रोचेस्टर (Rochester) व सेण्ट लुई (Saint Louis) के नगर बड़ी आटे की चक्कियों के लिए प्रसिद्ध हुए। शिकागो में माँस काटने व पैक करने का उद्योग स्थापित हुआ।

गृह युद्ध के काल तक अमेरिकी उद्योगीकरण निश्चित रूप से यूरोप व इंग्लैण्ड की तुलना में अधिक गति से सम्पन्न हो चुका था। 1820 ईसवी में पाँच करोड़ डालर की पूँजी लगाई थी जो 1850 ईसवी में बढ़कर पाँच अरब डालर हो गई। इसी प्रकार इसी काल में श्रमिकों की संख्या साढ़े तीन लाख से बढ़ कर नौ लाख हो गई जिनमें एक चौथाई स्त्रियाँ भी थीं। इसी काल में उत्पादन का मूल्य बीस करोड़ डालर से बढ़ कर दस अरब डालर हो गया। इन आँकड़ों से अमेरिका की आश्चर्यजनक प्रगति को सही प्रकार से आंका जा सकता है।

(9) निगम व स्टाक बाजार – पूँजी उद्योगीकरण की प्रथम आवश्यकता होती है। अमेरिका में उद्योगीकरण की माँग की पूर्ति केवल व्यक्तिगत पूँजी लगाकर पूरी नहीं हो सकती थी, अतः बड़े-बड़े कारखानों का निर्माण साझेदारी में किया गया। ये साझेदारियाँ आगे चलकर निगमों में परिवर्तित हो गई। उद्योगों के शेयर्स अधिक से अधिक लोगों को बेचे जाने लगे।अधिकांश पूँजी व्यापारियों व महाजनों द्वारा लगाई गई जो अपने लाभ को पुनः उद्योगों में लगाते थे। अमेरिकी उद्योगों की सफलता के कारण इंग्लैण्ड व यूरोप के व्यापारियों ने अपनी पूँजी अमेरिकी उद्योगों में लगाना प्रारम्भ किया। निगमों की स्थापना व विकास के साथ-साथ उनके शेयरों तथा स्टॉक

का सट्टा होने लगा जिससे न्यू यार्क में स्टाक एक्सचेन्ज (Stock Exchange) की स्थापना हुई जो कि आज कल वाल स्ट्रीट (Wall Street) के नाम से प्रसिद्ध है। सभी अमेरिकी निगम , बैंकों व दलालों के माध्यम से अपने शेयर अमेरिका में ही नहीं वरन् इंग्लैण्ड व यूरोप में बेचने लगे। इस प्रकार स्टाक बाजार का विकास हुआ तो अमरिकी अर्थ-व्यवस्था का महत्त्वपूर्ण अंग बन गया। स्टाक बाजार के सट्टों में चतुर लोग धन कमाने लगे और इससे उद्योगीकरण व आर्थिक प्रगति को सहायता मिली। यह यहाँ उल्लेखनीय है कि मेरीलैण्ड तथा वर्जीनिया के कुछ भागों को छोड़कर दक्षिण के क्षेत्रों में 1865 ईसवी तक कोई उल्लेखनीय औद्योगिक प्रगति नहीं हुई। उद्योगीकरण की प्रगति दक्षिणी न्यू इंग्लैण्ड, दक्षिण न्यूयार्क, न्यू जर्सी, पूर्वी पेनसिलवेनिया व पूर्वी मेरीलैण्ड में सबसे अधिक हुई। इन क्षेत्रों में कपड़ा उद्योग की कपड़े बनाने की मशीनें, अन्य मशीनें, चमड़ा उद्योग तथा काँच का सामान आदि अधिक बनाये जाने लगे थे। उन्नीसवीं शती के मध्य तक पश्चिमी न्यूयार्क , पश्चिमी पेनसिलवेनिया, ओहीयो, इण्डियाना तथा ईलिनोय के राज्यों में सफल रूप से औद्योगिक क्रान्ति हुई।

(10) श्रमिकों की स्थिति - उद्योगीकरण के साथ श्रमिकों की स्थिति का प्रश्न ही महत्त्व रखता है। अमेरिका की क्रान्ति के पश्चात् विदेशों से आप्रवास लगभग तीस वर्षों के लिए बहुत कम हो गया था। इसलिए यह कहा जा सकता है कि 1830 ईसवी तक अमेरिका के उद्योगों, विशेषत: कपड़ा उद्योग में काम करने वाले श्रमिक वहीं के जन्मजात लोग थे। इनमें स्त्रियों और बच्चों की संख्या कम नहीं थी। प्रारम्भ में स्त्रियों को श्रमिकों के रूप में आकर्षित करने के लिये फैक्ट्रियों के मालिकों ने पृथक् निवास गृह बनवाये जहाँ पर उनकी पूरी देखभाल की जाती थी। इन निवास गृहों में स्वेच्छा से किसानों की लड़कियाँ आकर रहती थी और रुचि से फैक्ट्रियों में श्रमिकों की भाँति काम करती थी। न्यू इंग्लैण्ड की कपड़ा मिलों में 1830 ईसवी में श्रमिकों के रूप में स्त्रियों की संख्या कुल श्रमिकों की 4/5 थी। स्त्री श्रमिकों के निवास गृहों पर पूरा नियन्त्रण रखा जाता था ताकि उनका नैतिक आचरण बिगड़ नहीं जाये। इस स्थिति को एक आदर्श स्थिति माना जाता था। स्त्रियों और बच्चों को सूर्योदय से सूर्यास्त तक कार्य करना पड़ता था और उनका वेतन कम था। पुरुष श्रमिक भी जो सुबह से शाम तक कार्य करता था प्रतिदिन एक डालर भी नहीं कमा पाता था तथा अमेरिका में श्रमिकों की स्थिति तथा उनका वेतन इंग्लैण्ड की तुलना में अच्छा था। शनै: शनै: अमेरिकी श्रमिकों में अपनी स्थिति के प्रति असन्तोष की भावना उत्पन्न होने लगी। उनमें यह चेतना उत्पन्न हुई कि फार्मों की अपेक्षा फैक्ट्रियों में काम करने से अधिक थकावट होती है। वहाँ का वातावरण भी फार्मों की तुलना में अस्वस्थकर होता है।

1830 ईसवी के पश्चात् यूरोप, इंग्लैण्ड व आयरलैण्ड से बड़ी मात्रा में अप्रवास हुआ। आयरलैण्ड से आये आप्रवासी अपने देश में खेती का काम करते थे लेकिन अमेरिका में वे बिना किसी पूँजी के आये थे अत: श्रम बेचने के अतिरिक्त उनके सम्मुख और कोई चारा नहीं था। इन आप्रवासियों ने अमेरिका में रेल मार्गों, नहरों, कोयले, लोहे की खानों व कपड़ा मिलों में काम करना आरम्भ किया और जन्मजात अमेरिकी श्रमिकों विशेषत: अमेरिकी किसानों की लड़कियों का स्थान आयरलैण्ड से आये इन आप्रवासियों ने ले लिया। इसमें कोई विशेष परिवर्तन नहीं

हुआ, क्योंकि नये औद्योगिक नगरों और फैक्ट्रियों का विकास साथ-साथ हो रहा था। इन नये औद्योगक नगरों में गन्दी बस्तियों का विकास होना स्वाभाविक था। आदर्श निवास-गृहों का युग समाप्त होने लगा। अमेरिकी श्रमिक नवविकसित गन्दी बस्तियों में कठिनाइयों का जीवन व्यतीत करने के लिए बाध्य हो गया। ये कठिनाइयाँ सेवा की असुरक्षा के कारण और बढ़ गईं, क्योंकि मन्दी आने पर श्रमिकों में बेरोजगारी फैल जाती थी। उन्हें निजी दान पर निर्भर रहना पड़ता था।

अमेरिकी उद्योगों में श्रमिकों की विभिन्न समस्याओं को लेकर श्रमिक संघों का विकास दक्ष व कुशल कारीगर लोग ही कर पाये थे, यथा-जूता बनाने वाले, बढ़ई लोग, चुनाई का काम करने वाले, टोप बनाने वाले व छपाई का काम करने वाले इत्यादि। ये लोग पहले स्वतन्त्र रूप से काम करते थे, किन्तु समय के साथ अपना श्रम बेचन लगे जिससे इनकी स्थिति दयनीय होने लगी। अत: इन्होंने श्रमिक संघों का निर्माण किया और उनके माध्यम से अपनी स्थिति में सुधार किया। श्रमिक संघों का विकास 1830 ईसवी के पश्चात् हुआ। 1834 ईसवी में अनेक नगरों से आये श्रमिक प्रतिनिधियों ने नेशनल ट्रेड यूनियन (National Trade Union) की स्थापना की। 1834 -37 ईसवी तक श्रमिकों ने एक सौ पचास से अधिक बार हड़तालें कीं लेकिन 1837 ईसवी की मन्दी के पश्चात् पुन: बेरोजगारी फैल गई और श्रमिक संघ टूटने लगे। ये संघ उन्नीसवीं शती के उत्तरार्द्ध में पुन: जीवित किये गये। इन श्रमिक संघों को प्रारम्भ में गैर कानूनी समझा जाता था। 1806 ईसवी में फिलाडेल्फिया में छ: श्रमिक नेताओं को कारागार की सजा इस अपराध में दी गई कि उन्होंने वेतन बढ़ाने के लिए श्रमिकों को संगठित किया था। शनै: शनै: अमेरिकी न्यायालयों ने उदार दृष्टिकोण अपनाया जिसके फलस्वरूप उन्नीसवीं शती के उत्तरार्द्ध में श्रमिक संघों का विकास सम्भव हो सका।

(11) जहाजरानी व विदेशी व्यापार - औद्योगिक उन्नति के साथ-साथ जहाजरानी तथा विदेशी व्यापार के क्षेत्र में भी अमेरिका ने विशेष प्रगति की। इसका मुख्य कारण नेपोलियन के युद्ध थे जिनमें इंग्लैण्ड की शक्तिशाली नौ सेना ने फ्रांसीसी जहाजरानी को लगभग समाप्त कर दिया। एक तटस्थ राष्ट्र होने के कारण इस प्रकार की परिस्थिति में अमेरिका को जहाजरानी तथा विदेशी व्यापार के क्षेत्र में एक स्वर्ण अवसर प्राप्त हुआ। इस समय अमेरिका को खाद्य सामग्री की इंग्लैण्ड व यूरोप में माँग बढ़ी जिससे अमेरिका के विदेशी व्यापार का अत्यधिक विस्तार हुआ। यह विदेशी व्यापार कुछ समय के लिए 1807-1815 ईसवी तक ठप्प रहा। 1812 ईसवी के युद्ध की समाप्ति तथा 1815 ईसवी में शान्ति सन्धि के साथ-साथ यूरोप से पुन: अमेरिकी व्यापार बढ़ा। कुछ समय तक तट करों के प्रश्न ने व्यापार को सुदृढ़ नहीं होने दिया, किन्तु 1830 ईसवी के पश्चात् से गृह युद्ध के काल तक विदेशी व्यापार बढ़ता गया।

1812 ईसवी के पश्चात् यूरोप के देश अपने ही जहाजों में माल ढ़ोने लगे। इंग्लैण्ड भी अपनी जहाजरानी का विकास करता रहा, किन्तु 1840 ईसवी के पश्चात् अमेरिका में जहाज निर्माण कला में बड़ी प्रगति हुई और एक उच्च कोटि का अमेरिकी जहाज, जो क्लीपर (Clipper) कहलाता था, बनाया गया। अमेरिकी क्लीपर की यह विशेषता थी कि वह अन्य जहाजों की अपेक्षा अधिक गति से चलता था। क्लीपर के आविष्कार ने अमेरिकी जहाजरानी को अत्यधिक

प्रोत्साहन दिया। 1861 ईसवी तक व्यापारी बेड़े में अमेरिका इंग्लैण्ड के लगभग बराबर हो गया। यह उपलब्धि अत्यन्त सराहनीय थी। इसके कारण अमेरिका अब स्वावलम्बी हो गया और उसके विदेशी व्यापार का प्रसार अब नहीं रोका जा सकता था।

(12) कृषि - अमेरिका में यातायात के साधनों के विकास तथा वहाँ की औद्योगिक क्रान्ति के साथ कृषि के क्षेत्र में भी महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुआ। कृषि के क्षेत्र में पर्याप्त विस्तार व प्रगति हुई। वास्तव में यातायात के विकास तथा औद्योगिक क्रान्ति दोनों ने ही कृषि की उन्नति में योग दिया तथा अमेरिका में वाणिज्यिक कृषि तथा पशुपालन का जन्म हुआ। इसमें सन्देह नहीं है कि प्रारम्भ में असंयत मात्रा में उपलब्ध भूमि के कारण अमेरिकी किसानों ने कृषि क्षेत्र में लापरवाही बरती। भूमि की उर्वरता को नष्ट भी किया लेकिन उन्नीसवीं शती के आरम्भ से एक नई चेतना उत्पन्न हुई जिससे भूमि का दुरुपयोग रुका। अमेरिकी किसानों ने उन्नीसवीं शती के प्रारम्भ में वैज्ञानिक रूप से खेती करना प्रारम्भ किया। खाद का प्रयोग किया जाने लगा, फसलों में हेरा-फेरी की जाने लगी, पशुपालन में नस्ल का ध्यान रखा जाने लगा। इन सबके साथ-साथ कृषि का शनैः शनैः यंत्रीकरण किया गया। यातायात के साधनों में विकास के कारण कृषि की उपज के लिए उचित मूल्य देने वाले बाजार ढूँढ़े गये। यह सब होते हुए भी कृषि में उन्नति का मुख्य कारण अमेरिका में उपलब्ध विशाल अक्षत भूमि था। इसका अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि अलेघेनी पर्वतमाला से लेकर प्रशान्त महासागर तक की सभी भूमि एक सौ वर्षों के काल में अमेरिकनों को उपलब्ध हो गई थी। इस प्रकार से रुई उत्पादक दक्षिण के पाँच राज्यों में 1850 ईसवी में दस करोड़ एकड़ भूमि उपलब्ध थी तथा अकेले टैक्सास राज्य में इससे भी अधिक भूमि खाली पड़ी थी जिस पर पशुपालन किया जा सकता था। कृषि को अमेरिका में एक और कारण से प्रोत्साहन मिला। जनसंख्या की वृद्धि के कारण स्वयं अमेरिका के गृह बाजार का विकास हुआ जहाँ अनाज, धान, तरकारियाँ तथा माँस की खपत दिन-प्रति-दिन बढ़ी। दूसरी ओर यूरोप के बाजारों मं अमरिकी खाद्यान्न व माँस की आवश्यकता बढ़ी। अमरिकी कृषि का विकास यंत्रीकरण के कारण और अधिक सम्भव हो गया। एक के पश्चात् एक नये प्रकार के हल का आविष्कार होता रहा। इसी प्रकार से कपास साफ करने की मशीनें निर्मित की गईं। अमेरिकी रुई की माँग यूरोप में निरन्तर बढ़ती गई। बढ़ती हुई कृषि उपज की माँग के कारण कृषि का विज्ञानीकरण व यंत्रीकरण हुआ और साथ ही साथ पशुपालन का भी विकास हुआ जिससे गृह युद्ध के पूर्व ही अमेरिका विश्व में कृषि के क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ देश बन गया। अमेरिका में कृषि के क्षेत्र में उत्पादन की दर बढ़ती गई एवं ऊन का उत्पादन दुगुने से भी अधिक हो गया। इस प्रकार स्पष्ट है कि इस काल में व्यापार की अपूर्व वृद्धि हुई, अनेक सड़के बनीं तथा नौ-साधनों की उन्नति हुई। ईरी नहर खुली तथा प्रथम बार वाष्पचालित जहाज के दर्शन हुए जिसने नौ व्यापार में अपूर्व वृद्धि की। नये रेल मार्ग बने, इन सब विकासों और परिवर्तनों ने अर्थिक प्रगति के साथ देश में अपूर्व एकता का भाव उत्पन्न किया। इनसे पूर्वी और पश्चिमी अमेरिका का संयोग हुआ और उत्तरी एवं दक्षिणी अमेरिका में भी प्रेम भाव के दर्शन हुए, किन्तु इसका दूसरा पक्ष भी था। यह आर्थिक समृद्धि राष्ट्रीय समैक्य के मार्ग में काँटा बन गई और अन्त में इसके कारण गृह युद्ध हुआ।

III. सांस्कृतिक प्रगति :

इस काल में सांस्कृतिक जीवन पर इंग्लैण्ड का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता था। तथापि राजनीतिक स्वाधीनता के साथ सांस्कृतिक दृष्टि से स्वतन्त्र होने की प्रवृत्ति भी जागृत हो चुकी थी। इस काल में शिक्षा की प्रगति मन्द रही और यह विवाद का विषय रहा कि शिक्षा सार्वजनिक हो अथवा निजी। यूरोपीय साहित्य ने अमेरिकी साहित्य के लिए उपजीव्य का कार्य किया तथापि कुछ स्वतन्त्र प्रवृत्तियाँ भी प्रारम्भ हुईं। अन्तर्ज्ञानवाद व रोमानी विचारधारा (Romanaticism) का प्रभाव साहित्यिक कृतियों में स्पष्ट देखा जा सकता था। भवन निर्माण कला की शैली पुरानी रही और यूनानियों से प्रेरणा प्राप्त करती रही। चित्रकला, संगीत कला और नाट्यकला में समाज की आवश्यकता के अनुरूप परिवर्तन हुआ।

(1) शिक्षा एवं सांस्कृतिक परम्पराएँ -उन्नीसवीं शती के आरम्भ में अमेरिका में अधिकांश लोग अशिक्षित थे। अमेरिकी क्रान्ति के काल में शिक्षा का ह्रास हुआ। अनेक शिक्षण संस्थाएँ युद्ध के कारण बन्द कर दी गईं। कुछ दूसरी शिक्षण संस्थाएँ उपस्थिति के अभाव में बन्द हो गईं। अमेरिकी विधान के अन्तर्गत शिक्षा का उत्तरदायित्व राज्यों पर छोड़ दिया गया। उन्नीसवीं शती के प्रारम्भ में संघीय सरकार ने नये प्रश्न करने वाले राज्यों को शिक्षा के कार्य हेतु भूमि अनुदान की नीति अपनाई। 1830 ईसवी में ओहायो के राज्य को संघ में इस शर्त पर प्रवेश दिया कि वह अपने प्रत्येक कस्बे का 1/16 भू-भाग शिक्षण संस्थाओं के पोषण हेतु रखेगा। संघीय सरकार का उद्देश्य राज्यों को अपने शिक्षा सम्बन्धी अधिकारों एवं कर्त्तव्यों के प्रति जागरूक करना था, इसलिए ओहायो की व्यवस्था का उन्नीसवीं शती के मध्य तक पालन किया गया। संघ में प्रवेश करने वाले नये राज्य को शिक्षा के कार्य हेतु सुरक्षित भूमि प्रदान करनी होती थी। इतना ही नहीं, जब केलिफोर्निया, ऐरिजोना (Arizona) तथा न्यू मैक्सिको के राज्यों ने संघ में प्रवेश किया तो इन राज्यों का ओहायो की तुलना में दुगुनी तथा तिगुनी भूमि देनी पड़ी ताकि शिक्षा के कार्यों को प्रोत्साहन मिल सके, किन्तु इन भूमियों की व्यवस्था ठीक प्रकार से नहीं हो सकी और अमेरिका में शिक्षा की स्थिति दयनीय ही रही।

अमेरिका के अन्य दूसरे भागों में भी स्थिति सन्तोषजनक नहीं थी। न्यू इंग्लैण्ड में प्रत्येक कस्बे से कानूनी रूप से आशा की जाती थी कि वे अपने विद्यालय चलायेंगे। ये विद्यालय नाम मात्र के थे। उनमें स्थिति अत्यन्त दुःखद थी। ये स्कूलें किसी टूटे-फूटे कमरे में चलती थीं। जिनमें थोड़े विद्यार्थी आते थे और उन्हें मामूली पढ़ना लिखना सिखाया जाता था। अध्यापक का वेतन प्रति मास दस डालर से अधिक नहीं था। उसकी अपने कार्य में कोई रुचि नहीं होती थी। मध्य व दक्षिण के राज्यों में भी स्थिति सनतोषजनक नहीं थी, यद्यपि इन राज्यों में गिरजाघरों द्वारा शिक्षण संस्थाएँ चलाई जाती थीं लेकिन उनमें कोई सार्वजनिक रुचि नहीं थी और न ही उन्हें सार्वजनिक सहायता प्रदान की जाती थी। उनका स्तर सन्तोषजनक नहीं था। इस प्रकार अमेरिका में अच्छी सार्वजनिक शिक्षण संस्थाओं का अभाव था।

औद्योगिक क्रान्ति के साथ-साथ अमेरिका में शिक्षा का भी विकास हुआ। इस प्रकार की मान्यता हो रही थी कि जन साधारण की भौतिक उन्नति के साथ-साथ उनकी बौद्धिक, सांस्कृतिक

तथा कलात्मक उन्नति भी होनी चाहिए। इसी प्रकार से लोगों का यह भी विश्वास था कि कोई भी प्रजातंत्र उस समय तक शक्तिशाली नहीं बन सकता जब तक कि उस प्रजातंत्र के जन साधारण अज्ञानी व अशिक्षित हैं। इन कारणों से नि:शुल्क सार्वजनिक शिक्षा की माँग प्रबल हो रही थी। अधिकांश लोग इस माँग का समर्थन कर रहे थे यद्यपि कुछ ऐसे भी अनुदार व्यक्ति थे जो राज्य द्वारा शिक्षा के कार्य के लिए किसी भी प्रकार की सहायता देने के विरुद्ध थे, क्योंकि उनका विश्वास था कि इस प्रकार के कार्य से राज्य किसी व्यक्ति की सम्पत्ति छीन कर दूसरे के बच्चों को शिक्षा प्रदान करेगा। लेकिन अमेरिका के दूसरे रूढ़िवादी लोग देश में सार्वजनिक शिक्षा का इसलिए समर्थन कर रहे थे, क्योंकि उनका विश्वास था कि सार्वजनिक विद्यालयों में प्रदान की गई शिक्षा से सामाजिक स्थायित्व बढ़ेगा, युवकों में धर्म के प्रति आस्था बनी रहेगी तथा वे अमेरिका की प्राधिकृत संस्थाओं के प्रति वफादार बने रहेंगे।

अमेरिका में शिक्षा अभियान सरलता से सम्पूर्ण नहीं हो सका। राज्यों और स्थानीय सरकारों द्वारा आवश्यक धन जुटाने में संकोच किया गया, क्योंकि इस विवाद का निर्णय नहीं हुआ कि शिक्षा सार्वजनिक हो तथा सार्वजनिक संस्थाएँ शिक्षा के विकास का उत्तरदायित्व लें अथवा शिक्षा के कार्य को निजी उपक्रमों पर छोड़ दिया जाये। उत्तर पश्चिम के क्षेत्रों में धन के अभाव के कारण शिक्षा की प्रगति मन्द रही यद्यपि वहाँ सार्वजनिक शिक्षा की उपयोगिता के प्रश्न पर कोई मतभेद नहीं था। इसके विपरीत पूर्वी क्षेत्रों में कर दाताओं ने शिक्षा सम्बन्धी सार्वजनिक उत्तरदायित्व ग्रहण किये जाने का विरोध किया तथा अमेरिकनों की व्यक्तिगत स्वतन्त्रता का तर्क प्रस्तुत किया।

उन्नीसवीं शती के प्रारम्भ में उत्तर के राज्यों द्वारा शिक्षा के महत्त्व को स्वीकार किये जाने पर उसके शोषण का उत्तरदायित्व लेने का निर्णय किया गया। न्यू यार्क राज्य ने इसमें पहल की तथा 1812 ईसवीं में सार्वजनिक शिक्षा के लिए अनुदान देना प्रारम्भ किया, फिर भी समृद्ध परिवारों के बच्चों से शिक्षा शुल्क लिया जाता था तथा निर्धन परिवारों के बच्चे नि:शुल्क शिक्षा प्राप्त कर सकते थे। निर्धन परिवारों की समस्या यह थी कि नि:शुल्क शिक्षा प्राप्त करने पर उन्हें कंगालों की श्रेणी में गिना जाता था, अत: अनेक साधारण परिवार उपलब्ध सुविधा को ग्रहण करने में संकोच करते थे। फिर भी न्यू यार्क के राज्य को सार्वजनिक शिक्षा के क्षेत्र में अग्रगामी कहा जा सकता है। इसका श्रेय सुधारक क्लिन्टन को है। न्यू यार्क में शुरू किये गये कार्य की गति धीमी रही। उन्नीसवीं शती के मध्य तक अमेरिका में सार्वत्रिक अनिवार्य तथा नि:शुल्क शिक्षा एक आदर्श मात्र बनी रही। अमेरिका में अनिवार्य शिक्षा सम्बन्धी अधिनियम सर्वप्रथम मैसाचुसेट्स के राज्य में 1852 ईसवी में पारित किया गया तथा इसका अनुकरण दूसरे राज्यों ने गृह युद्ध काल के पश्चात् किया। यह विचित्र सी बात है कि अमेरिका जैसे विकासशील देश में सार्वजनिक शिक्षा के प्रश्न पर विवाद बना रहा तथा शिक्षा के विकास की गति मन्द रही। 1830 ईसवी में व उसके पश्चात् अमेरिका के अधिकांश राज्यों में पुरुषों को मताधिकार प्रदान कर दिया गया था। इसके उपरान्त भी शिक्षा के प्रसार में जो संकोच रहा वह एक प्रकार का देश-दोष था। इसका एक ही कारण था कि शिक्षा का पोषण कौन करे, यह निश्चय नहीं किया जा सका था।

अमेरिका में सार्वजनिक शिक्षा के प्रसार में इस काल में सबसे उल्लेखनीय व्यक्ति होरेस मैन (Horce Mann) था जो 1837 ईसवी में मैसाचुसेट्स बोर्ड ऑफ एज्युकेशन (Massachusetts Board of Education)का सचिव बना। इस पद को ग्रहण करने के लिए मैन को बड़ा बलिदान करना पड़ा। उसका निजी व्यवसाय सफलतापूर्वक चल रहा था लेकिन ब्राउन विश्वविद्यालय (Brown University) में शिक्षा ग्रहण करते समय ही मैन ने जीवन में कुछ आदर्श ग्रहण कर लिये थे। यह प्रजातांत्रिक आदर्शों में दृढ़ विश्वास रखता था। उसकी मान्यता थी कि किसी भी प्रजातन्त्र में अज्ञानता एक अपराध है। इस आदर्श से प्रेरित होकर मैन ने पन्द्रह-पन्द्रह घंटे कार्य किया। उसने अपने राज्य में भवनों का तथा नार्मल स्कूलों (Normal Schools) का निर्माण करवाया जिनमें शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण की व्यवस्था की। शिक्षकों के वेतन को बढ़ाने के प्रयास किये। इन सबके साथ-साथ शिक्षा का स्तर ऊँचा करने का प्रयास किया । मैन की भाँति कनेक्टिकट तथा रोडे आइलैण्ड में हेनरी बर्नार्ड (Henery Bernard) ने भी कार्य किया। इन दोनों महान् व्यक्तियों ने देश में शिक्षा तथा शिक्षकों की अवस्था पर एक सार्वजनिक चेतना उत्पन्न की तथा अमेरिका में शिक्षा के स्तर को ऊँचा उठाने का आदर्श प्रयत्न किया।

अमेरिका में शिक्षा का प्रसार अब तक उत्तर-पश्चिम व उत्तर में अधिक हुआ। उन्नीसवीं शती के मध्य तक इन क्षेत्रों में पैंतीस लाख बालक अनेक प्राथमिक शिक्षा संस्थाओं में शिक्षा पाने लगे। गृह युद्ध के पूर्व तथा उसके पश्चात् दक्षिण के राज्यों में प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में शनैः-शनैः विकास हुआ। दक्षिण में शिक्षा का प्रसार 'एकेडेमीज' (Academies) पर निर्भर रहा तथा सार्वजनिक शिक्षण संस्थाएँ उन्नीसवीं शती के अन्तिम दशक में ही खुल पाई। प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में दक्षिण में अलबामा और उत्तर में कैरोलीना के राज्यों में उल्लेखनीय प्रगति हुई। ऐकेडेमीज में केवल माध्यमिक शिक्षा दी जाती थी। ये संस्थाएँ स्कूल व कॉलेज के मध्य की थीं और दक्षिण में शिक्षा का प्रमुख साधन बनी रहीं। वैसे भी माध्यमिक शिक्षा के क्षेत्र में समस्त अमेरिका में एकेडेमी ने ही उत्तरदायित्व निभाया। ये संस्थाएँ शिक्षकों के प्रशिक्षण का कार्य भी करती थीं।

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में भी अमेरिका की प्रगति सन्तोषजनक नहीं थी। बीसवीं शती के प्रारम्भ में समस्त अमेरिका में केवल चौबीस कॉलेज थे। इस प्रकार इंग्लैण्ड व यूरोप से अमेरिका बहुत पीछे था। उच्च शिक्ष की आवश्यकता के प्रति अमेरिकी नेताओं में जागृत का अभाव नहीं था। स्वयं जेफरसरन ने अपने जीवन का भाग वर्जीनिया विश्वविद्यालय के निर्माण में लगाया। इसी प्रकार से वाशिंगटन ने एक राष्ट्रीय विश्वविद्यालय की स्थापना की कल्पना की थी जिसके पोषण का दायित्व संघीय सरकार का हो। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में विकास मन्द गति से हुआ। गृह युद्ध के काल तक लगभग ढाई सौ कॉलेजों की स्थापना हुई जिनमें अधिकांश निजी प्रयासों द्वारा स्थापित किये गये। अमेरिका में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में वृद्धि सांख्यिकी दृष्टि से अधिक हुई, किन्तु श्रेष्ठता की दृष्टि से कम, यद्यपि इस दिशा में भी प्रयास किये गये। इसका श्रेय उन युवक विद्वानों को दिया जा सकता है जो जर्मनी के विश्वविद्यालयों से शिक्षा प्रास करके लौटे थे। 1820 ईसवी के पश्चात् तक यह क्रम बना रहा। अनेक अमेरिकी छात्र जर्मनी में शिक्षा ग्रहण करने जाने लगे और वहाँ से लौटकर अपने परिश्रम से अमेरिका में शिक्षा का स्तर ऊँचा उठाने में लगे रहे। इस अभियान

का केन्द्र हार्वर्ड (Harvard) बना जो आज भी विश्व के सर्वश्रेष्ठ विश्वविद्यालयों में से एक है। हार्वर्ड ने नवीन विचारों को अपनाया तथा उच्च शिक्षा के क्षेत्र में उदारवाद को आदर्श माना। हार्वर्ड से अमेरिका की दूसरी उच्च शिक्षण संस्थाओं ने प्रेरणा ली। हार्वर्ड ने उच्च शिक्षा के क्षेत्र में अमेरिका को शैक्षणिक नेतृत्व प्रदान किया। वहाँ अनुसंधाम को भी प्रोत्साहन किया गया। '

उपरोक्त वर्णन से यह स्पष्ट है कि उन्नीसवीं शती के प्रारम्भ में अधिकांश अमेरिकी अशिक्षित थे। अत: अमेरिका में प्रौढ़ शिक्षा की समस्या उतनी ही गम्भीर थी जितनी कि साधारण शिक्षा की। इस दिशा में जोशिया हालब्रुक (Josiah Halbrook) ने उल्लेखनीय कार्य किया। उसने 1876 ईसवी में मिलबरी के स्थान पर एक 'लाइशियम'(Lyceum) की स्थापना की जो एक प्रकार की प्रौढ़ शिक्षण संस्था थी। इन संस्थाओं में अध्ययन के साथ विचार-विमर्श किया जाता और इनमें प्रवक्ता के रूप में विद्वानों को बुलाया जाता था। हालब्रुक का अभियान सफल रहा और आगामी बीस वर्षों में अमेरिका में चार हजार 'लाइशियम' खोले गये। कुछ स्थानों पर मिस्त्रियों के लिए भी 'लाइशियम' खोले गये। प्रौढ़ शिक्षा के कार्य में सार्वजनिक वाचनालयों ने भी योग दिया।

इस काल में स्त्रियों की उच्च शिक्षा की ओर भी ध्यान दिया गया। प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा के पश्चात् युवा अमेरिकी लड़कियाँ उच्च शिक्षा संस्थानों में शिक्षा प्राप्त करने में संकोच करती थीं। लड़कियों के लिए कई स्थानों पर कन्या पाठशालाएँ, ऐकेडेमीज सेमीनरीज (Academies Seminaries) खोली गईं, पर इनकी संख्या बहुत कम थी। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में कुछ महिला कॉलेज खोले गये जिनमें वाशिंगटन की एलिजाबेथ एकेडेमी (Elizabeth Acadey), जार्जिया का फीमेल कॉलेज तथा वाशर कॉलेज के नाम उल्लेखनीय हैं। उच्च शिक्षा में सहशिक्षा के क्षेत्र में ओवरलीन कॉलेज (Overline College) प्रसिद्ध था। व्यावसायिक, धार्मिक व तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में प्रगति अधिकांशत: गृह युद्ध के पश्चात् हुई।

(2) साहित्य व दर्शन - अमेरिका में साहित्यिक प्रगति उन्नीसवीं शती के मध्य में अधिक हुई। यद्यपि क्रांति काल में कुछ युवकों को यह आशा थी कि राजनीतिक स्वाधीनता के साथ-साथ सांस्कृतिक दृष्टि से भी अमेरिका इंग्लैण्ड से स्वतन्त्र हो जायेगा, किन्तु इस लक्ष्य की प्राप्ति नहीं हो सकी। अमेरिकनों की भाषा अंग्रेजी थी, अत: इंग्लैण्ड की साहित्यिक उन्नति के प्रभाव में स्वयं अमेरिकी भूमि पर कोई उल्लेखनीय उपज सरल नहीं थी। शिक्षा की भाँति साहित्य के क्षेत्र में भी अमेरिकी समाज साहित्यकारों का पोषण करने के लिए तत्पर नहीं था। जिस प्रकार का संघर्ष करके अमेरिकनों ने एक नयी भूमि पर अपने आपको बसाया था और स्वतन्त्रता प्राप्त की थी उसके कारण यथार्थवादी (Realistic) बन गये थे। प्रगति की सम्भावनाओं ने उन्हें भौतिकवादी बना दिया था। फिर अमेरिकियों की अपनी कोई साहित्यिक परम्परा नहीं थी तथा अमेरिकन राष्ट्र अनेक जातियों के मिश्रण से बना था। इस राष्ट्र को अभी अपना अभिज्ञान करना था। यह कार्य साहित्यकार व दार्शनिक ही कर सकते थे। लेकिन इन लोगों के लिए एबसे बड़ा प्रश्न जीविकोपार्जन का था। अमेरिकी कांग्रेस ने विदेशी लेखकों को कापीराइट (Copyright) अथवा प्रतिलिपि अधिकार प्रदान नहीं किया था, अत: अमेरिकी प्रकाशक उनकी कृतियाँ सस्ते में छाप सकते थे।

ऐसी स्थिति में अमेरिकी लेखकों की कृतियाँ नहीं छप सकती थीं। गृह युद्ध काल के पूर्व केवल तीन ही अमेरिकी लेखक ऐसे थे जो अपनी कृतियों से जीविका कमा सकते थे यद्यपि इनमें से प्रत्येक को अन्य साधनों पर निर्भर रहना पड़ता था। ये तीन - वाशिंगटन इरविंग (Washington Irvin), जेम्स फेनीमोर कूपर (James Fenimor Cooper) तथा विलियम कलेन ब्रैन्ट (William Cullen Bryant) थे। तीनों व्यक्ति न्यू यार्क के रहने वाले थे तथा अमेरिका में साहित्य सृजन के क्षेत्र में इन्हें अग्रणी कहा जा सकता है।

अमेरिकी साहित्यकारों तथा दार्शनिकों के प्रेरणा के मूल स्रोत स्थानीय वातावरण, रोमानी विचारधारा एवं अनुभावातीतात्मक ज्ञान अथवा अन्तर्ज्ञानवाद (Transcendentalism) रहे। इंग्लैण्ड और यूरोप में इन तत्त्वों तथा आदर्शों ने साहित्य व दर्शन को प्रभावित किया था और इस प्रकार से अगर यह कहा जाये कि अमेरिकियों ने इंग्लैण्ड की व यूरोपीय परम्पराओं का ही अनुसरण किया तो ऐसा कहना अनुचित नहीं होगा। इतना होते हुए भी गृह युद्ध के काल तक अमेरिकी साहित्यकारों व दर्शनिकों ने अपनी मौलिकता का परिचय दिया। स्थानीय वातावरण के अनुकूल अमेरिकी लेखकों ने इतिहास रचना की। रोमानी विचारधारा तथा अन्तर्ज्ञानवाद से प्रभावित होकर काव्य व नाटक लिखे तथा दार्शनिक विचारों का सृजन किया। इसमें भी सन्देह नहीं है कि जो मौलिकता अमेरिकन साहित्यकारों में आई उसका मुख्य कारण स्थानीय वातावरण ही था जिसमें अमेरिकन लेखकों ने इंग्लैण्ड व यूरोप के लेखकों से भिन्न अनुभव किये। यहाँ यह भी स्मरणीय है कि अमेरिका ने एक नवराष्ट्र के रूप में जन्म लिया था और इस तत्त्व के प्रभाव से अमेरिकी साहित्य अप्रभावित नहीं रह सका।

रोमानी विचारधारा ने निस्सन्देह अमेरिकन साहित्याकारों को प्रभावित किया। इस विचारधारा का जन्म इंग्लैण्ड में हुआ था। यइ विचारधारा आदर्शवादी थी जो मनुष्य की प्रकृति में अन्तर्दृश्य, आध्यात्मिक तथा अनुप्राणित तत्त्वों को तर्क और बुद्धि की अपेक्षा अधिक महत्त्व देती थी। इंग्लैण्ड के महाकवि वर्ड्सवर्थ (Wordsworth) तथा कोलरिज (Coleridge) की कृतियों ने रोमानी परम्परा में चार चांद लगा दिये। लेकिन यहाँ यह विचारणीय है कि क्या अमेरिकियों का अनुभव उन्हें रोमानी विचारधारा का समर्थक बनाने के पक्ष में नहीं था। अमेरिकी लोग अपनी अन्तर्दर्शी भावनाओं का हमेशा दृढ़ता से समर्थन करते थे। अमेरिकी साहित्यकारों ने सरलता से आध्यात्मिक अन्त:दर्शन को अपनाया और इसके साथ यूरोप के रोमानी लेखकों की भाँति मनुष्य व प्रकृति के बीच सम्बन्ध के महत्त्व को समझा। अमेरिकी लेखकों ने रोमानी प्रभाव के कारण जो अन्त: दर्शिता उत्पन्न हुई उसके परिणामस्वरूप आशावाद व निराशावाद दोनों का ही जन्म हुआ। इमरसन (Emerson), थोरो (Thoreau) तथा व्हिटमेन (Whitman) जैसे आशावादी लोगों को अमेरिकी भूमि ने जन्म दिया तो उसी भूमि पर हाथर्न (Hawthorne), मेलविल (Melvill) तथा पौ (Poe) जैसे निराशावादी भी हुए। अन्तर्ज्ञानवादी विचारधारा एक यूरोपीय विचारधारा थी जिसका जन्म जर्मनी में हुआ। इसके प्रमुख प्रणेत काण्ट (Kant) तथा हीगेल (Hegel) थे। यह दर्शन भी अन्तरात्मा के विकास में विश्वास रखता था तथा बुद्धि और तर्क को कम महत्त्व देता था। अन्तर्ज्ञानवादी इस प्रकार व्यक्तिगत स्वतन्त्रता में विश्वास रखते थे। यह

सिद्धान्त अमेरिकियों को प्रिय था। इसलिए यह विचारधारा अमेरिका में साहित्य व दर्शन के क्षेत्र में प्रबल बनी यद्यपि इमरसन अथवा अन्य अमेरिकी लेखकों ने इस विचारधारा के पक्ष में प्रेरणा विदेशों से ली।

स्थानीय वातावरण का प्रभाव इतिहास रचना पर भी हुआ। न्यू इंग्लैण्ड इतिहास लेखन की प्रमुख कर्मस्थली रही, क्योंकि बोस्टन व केम्ब्रिज में यथेष्ट सामग्री उपलब्ध थी। इरविंग द्वारा लिखित 'न्यूयार्क का इतिहास' नामक ग्रन्थ की गणना ऐतिहासिक ग्रन्थों में नहीं की जा सकती। सर्वप्रथम जारेड स्पार्क्स (Jared Sparks) ने डिप्लोमेटिक कोरेस्पोन्डेन्स ऑफ अमेरिकन रिवाल्यूशन (Diplomatic Correspondence of American Revolution) की रचना की। जार्ज बेन क्रैफ्ट (George Ban Croft) ने बारह जिल्दों में संयुक्त राज्य अमेरिका का इतिहास प्रस्तुत किया। विलियम हिक्लिग प्रेस्काट (William Hickling Prescoft) ने हिस्ट्री ऑफ दी रेन ऑफ फर्डीनेण्ड एण्ड इसाबेला (History of the Reign of Fardinend and Isabella) , हिस्ट्री ऑफ कॉन्क्वेस्ट ऑफ मैक्सिको (History of Conquest of Mexico), हिस्ट्री ऑफ द कॉन्क्वेस्ट पीरु (History of the Conquest of Peru) तथा हिस्ट्री ऑफ द रेन ऑफ फिलिप II (History of the Reign of Phillips II) नामक ग्रन्थों की रचना की। जान लोथ्राप माटले (John Lothrop Motley) ने अपने ऐतिहासिक ग्रन्थ 'द राइज ऑफ द डच रिपब्लिक' (The Rise of the Dutch Republic) तथा द हिस्ट्री ऑफ द यूनाइटेड नीरदलैण्ड (The History of the United Netherland) में घटनाओं का वर्णन बड़ी योग्यता से किया। फ्रान्सिस पार्कमैन (Farncis Parkman) ने 'द औरेगन ट्रेल' (The Oregan Trail) की रचना की और बाद में उत्तरी अमेरिका से सम्बद्ध इंग्लैण्ड फ्रांसीसी युद्ध बारह जिल्दों में प्रकाशित किया।

इस काल में गद्य, काव्य व उपन्यास लेखन के क्षेत्र में भी प्रगति हुई। गद्य लेखन में वाशिंगटन इरविंग (Washington Irving) का स्थान प्रमुख है। उसने स्केच बुक (Sketch Book) , रिप वान विन्कल (Rip Van Winkle) तथा द लीजेन्ड ऑफ स्लीपी होलो (The Legend of Sleepy Hollo) में अमेरिकी वातावरण का रोचक वर्णन किया। उसने स्पेन के इतिहास के अतिरिक्त वाशिंगटन, मुहम्मद साहब, कोलम्बस, गोल्ड स्मिथ आदि की जीवनियाँ भी लिखीं। जेम्स फिनीमूर कूपर (James Fenimore Cooper) ने द स्पई (The Spy) , लेदर स्टोकिंग टेल्स (Leather Stocking Tales) व द पाइलट (The Pilot) नामक ग्रन्थों की रचना की। हरमैन मेलविल (Herman Melville) ने मोबी डिक (Moby Dick) की रचना की। विलियम गिल्मोर सिम्स (William Gilmore Simms) ने द येमसी (The Yamassee), द पार्टीशन (The Partisation) में क्रमशः आदिवासी जीवन व क्रान्तिकालीन छापामारों की गतिविधियों का वर्णन किया।

काव्य के क्षेत्र में कलेन ब्राएंट (Cullen Bryant) को अमेरिकी काव्य का पिता कहा जाता है। उसने प्रथम कविता थानाटोपसिसं (Thanatopsis) की रचना अल्पायु में ही की थी। फ्लड आफ ईयर (Flood of Year) उसकी अन्तिम कविता थी। हेनरी वेडस्वर्थ लांगफेलो (Henery Wadsworth Longfellow) की द सॉम आफ लाइफ (The Psalm of Life), हाइम टू द

नाइट (Hymn to the Night), दे विलेज ब्लेक स्मिथ (The Village Black Smith) तथा द डे इज डन (The day is done) लघु कविताएँ प्रसिद्ध हैं। इवान्जलीन (Evangeline) हीवाथा (Hiawatha) तथा द कोर्टशिप आफ माइक स्टेन्डीश (The Courtship of Mike Standish) उनकी प्रसिद्ध लम्बी कविताएँ हैं। जान ग्रीनलीफ व्हिटर (John Greenleaf Whitter) नाम अन्य कवि ने स्नोबाउन्ड (Snowbound) नामक प्रसिद्ध कविता लिखी जिसमें ग्रामीणों के शीतकालीन जीवन का वर्णन किया गया है। वाल्ट व्हिटमैन (Walt Whitman) ने लीव्ज ऑफ ग्रास (Leaves of Grass) नामक कविता संग्रह प्रकाशित किया। एडगर एलेन पो (Edgar Allan Poe) ने द हेलेन (The Helen) तथा अन्नाबेल ली (Annabel Lee) नामक कविताएँ लिखीं। उसने द गोल्ड बग (The Gold Bug), पुरलोइन्ड लेटर (Purloined Letter) तथा द ब्लेक केट (The Black Cat) नामक लघु कहानियाँ भी लिखीं।

उपन्यासकारों में नथेनिएल हाथार्न (Nathaniel Hawthorne) का स्थान प्रमुख है। द स्कार्लेट लेटर (The Scarlet Letter) उसका प्रसिद्ध उपन्यास है। इसके अतिरिक्त द हाउस ऑफ सेवन गेबल्स (The House of Seven Gables), मार्बल फेनन (Marble Fanan) तथा ब्लीथीडेल रोमान्स (Blithedale Romance) उसके अन्य प्रसिद्ध उपन्यास हैं।

अमेरिकी निबन्धकारों ने अपने लेखों में दार्शनिक विचारों को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया। अनुभववाद अथवा अन्तर्ज्ञानवाद का प्रमुख पोषक इमरसन था। उसने सेल्फ रिलीज (Self Release), कम्पन्सेशन (Compensation) तथा अवर सोल (Our Soul) नामक सारगर्भित लेख लिखे। अनुभववाद का दूसरा लेखक थोरा (Thoreau) था जिसने वाल्डन (Walden) तथा सिविल डिसओबिडियन्स (Civil Disobedience) की रचना की। अन्य निबन्ध लेखक मारग्रेट फुलर (Margaret Fuller) व ब्रान्सन आल्काट (Bronson Alcot) थे जिन्होंने क्रमश: द वीमेन ऑफ द नार्थन कन्ट्री (The Women of the Northern Country) व लिटल वीमेन (Little Women) नामक पुस्तकों की रचना की। थियोडोर पार्कर (Theodore Parker) ने दास उन्मूलन व अन्य सुधारों का समर्थन किया।

(3) कलाओं का विकास - 1789 ईसवीं से गृह युद्ध के काल तक अमेरिका में चित्रकला, स्थापत्य कला, संगीत कला व नाट्य कला में जो प्रगति हुई वह अधिक प्रभावशाली नहीं थी। कला क्षेत्र में अधिकांशत: यूरोप की कला का अनुकरण ही किया गया तथा कुछ ऐसे व्यक्ति भी थे जो अमेरिकी अनुभव के प्रति वफादार थे, किन्तु उन्हें अधिक सफलता प्राप्त नहीं हुई।

अमेरिका में चित्रकला के विकास के लिए न्यूयार्क और फिलाडेल्फिया में एकेडेमीज का निर्माण किया गया ताकि कलाकारों को सुविधा प्रदान की जा सके, किन्तु कालान्तर में इनका नेतृत्व अनुदारवादी व्यक्तियों के हाथ में आ जाने पर सेम्युअल एफ.बी.मोर्स (Samuel F.B. Morse) ने 1826 ईसवी में नेशनल ऐकेडमी (National Academy) की स्थापना की। उन्नीसवीं शती का पूर्वार्द्ध व्यक्तिगत चित्रों का स्वर्ण युग है। गिलबर्ट स्टुअर्ट (Gillbert Stuart) तथा चार्ल्स विल्सन पील (Charles Wilson Peale) ने तत्कालीन समय के सुविख्यात व्यक्तियों ने चित्रों का

निर्माण किया। जान ट्रमबुल (John Trumbull) ने अमेरिकी चित्रकला को नई दिशा प्रदान की। उसने रूप चित्रों के अतिरिक्त क्रान्तिकालीन घटनाओं का वर्णन किया। 1820 ईसवी के पश्चात् रोमानी विचारधारा का प्रभाव अमेरिकी चित्रकला पर स्पष्ट परिलक्षित होने लगा। वाशिंगटन एल्सटन (Washington Allston), थाम्स कोल (Thomas Cole) तथा एशर बी. डूरण्ड (Asher B. Durand) इस विधारधारा के प्रमुख चित्रकार थे। अन्य चित्रकारों ने अमेरिकी जनजीवन व घटनाओं का चित्रण किया। इनमें सर्वप्रमुख विलियम एस. माउण्ट (William S. Mount) था। इस विचारधारा के लोगों की कलाकृतियों में यद्यपि धार्मिकता का अभाव था, किन्तु अमेरिकी समाज के जनजीवन का भावपूर्ण चित्रण किया गया था।

वास्तु कला में अमेरिकन कलाकारों की प्रेरणा का स्रोत यूनान व रोम रहा। आरम्भ में लकड़ी पर मूर्तियों का निर्माण किया गया, किन्तु बाद में पत्थर व कांस्य का प्रयोग किया जाने लगा। वास्तु कला के क्षेत्र में हीरम पावर्स (Hiram Powers) ने प्रथम बार मानव शरीर की मूर्तियाँ बनाई। पावर्स के अतिरिक्त होरेशियो ग्रीनो (Haratio Greenough) भी प्रसिद्ध मूर्तिकार था जिसने वाशिंगटन की मूर्ति का निर्माण किया।

भवन निर्माण कला में यूरोपीय प्रभाव सर्वाधिक स्पष्ट परिलक्षित होता था। यद्यपि अनेक भव्य भवनों का निर्माण किया गया, किन्तु उसमें अनेक अस्वस्थ परम्पराओं का समावेश होने लगा। कला का वास्तविक दैनिक जीवन से सम्बन्ध विच्छेद हो गया। प्रारम्भिक काल में सर्वश्रेष्ठ भवनों का निर्माण न्यू इंग्लैण्ड में हुआ। चार्ल्स बुलफिन्च (Charles Bulfinch), सेम्युअल मेकइन्टायर (Samuel Macintire) तथा एशर बेंजामिन (Asher Banjamin) ने गिरजाघरों, सरकारी भवनों तथा व्यक्तिगत भवनों का निर्माण बोस्टन (Boston), सालेम (Salem) तथा अन्य नगरों में किया, किन्तु अन्यत्र जॉर्जियन परम्परा का परित्याग कर यूनानी कला को पुनर्जीवित किया गया। इस पुनर्जीवन का प्रमुख प्रणेता थामस जेफरसन (Thomas Jefferson) था। उसके द्वारा निर्मित कैपीटल वर्जीनिया (Capital Verginia) विश्वविद्यालय की कला पुरातन शैली के उदाहरण हैं। 1820 ईसवी के पश्चात् इस शैली का विस्तार होना प्रारम्भ हुआ और आगामी पीढ़ी ने अनिवार्य रूप से गुम्बदों और स्तम्भों का आकार पुरातन शैली पर निर्माण करना प्रारम्भ किया फिर भी स्वतन्त्र अमेरिकी शैली का विकास होना इस समय तक प्रारम्भ हो गया था।

संगीत कला के क्षेत्र में अमेरिका की प्रगति इस काल में मन्द रही। ऐडेलीना पेट्टी (Adelina Patti), जेनी लिंड (Jenny Lind) जैसी विदेशी गायिकाओं ने यथेष्ट ख्याति प्राप्त की। 1842 ईसवी में फिलहारमोनिक सोसायटी (Fhilharmonic Society) की न्यू यार्क में स्थापना हुई और कुछ इसी प्रकार के संगठन बने, किन्तु संगीत कला का स्तर अत्यन्त निम्न था। केवल तीन या चार अमेरिकियों ने वाद्य यन्त्रों के साथ संगीत प्रस्तुत करने का प्रयास किया, किन्तु उन्हें अधिक सफलता नहीं मिली, किन्तु उन्होंने लोक गीतों के क्षेत्र में अथक प्रयास किया। पेनसिलवेनिया निवासी स्टीफेन फास्टर (Stephen Foster) ने अनेक लोक गीतों की रचना की जिनका प्रमुख विषय नीग्रो जीवन को व्यक्त करना था जो एक नवीन प्रवृत्ति का द्योतक था। संगीत के साथ-साथ नाट्य कला की भी प्रगति हुई। नाट्य कला के क्षेत्र में जोसेफ जेफरसन (Joseph Jefferson)

का नाम विशेष उल्लेखनीय है। नाटकों का प्रमुख विषय शेक्सपियर के नाटक थे यद्यपि कभी-कभी अमेरिकी लेखकों के नाटकों का भी प्रदर्शन किया जाता था।

इस काल में विशुद्ध वैज्ञानिक प्रगति नगण्य ही रही। आगासिज (Agassiz) व आड्बन (Addubon) दोनों विदेशी थे। एक मात्र अमेरिकी वैज्ञानिक असा ग्रे (Asa Gray) था जिसने वनस्पति विज्ञान के अध्ययन को आगे बढ़ाया, किन्तु जार्जिया के क्राफोर्ड लांग (Crawford Long) ने ईथर की खोज की। डॉ. होरेस वैलस (Dr. Horace Welles) ने नाइट्रस आक्साइड (Nitrus Oxide) की दन्त चिकित्सा में उपयोग की दृष्टि से खोज की। यद्यपि ये खोजें लाभदायक थीं किन्तु वैज्ञानिक क्षेत्र में इनका अधिक महत्त्व नहीं था।

यद्यपि गृह युद्ध के कारण अमेरिका की औद्योगिक सांस्कृतिक प्रगति में कुछ बाधाएँ उत्पन्न हुई, किंतु उन पर शीघ्र ही काबू पा लिया गया। उन्नीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध में उद्योग व कृषि के क्षेत्र में प्रगति की जो नींव रख दी गई थी उस पर अमेरिका और तेजी के साथ बढ़ा। इसी प्रकार सांस्कृतिक क्षेत्र में भी अभूतपूर्व प्रगति हुई। दास प्रथा के उन्मूलन के बाद अमेरिका का समाज समानता के सिद्धांत का पालन करते हुए आगे बढ़ा। ऐसी परिस्थितियों में गृह युद्ध के बाद अमेरिका तीव्र गति के साथ आधुनिकता की ओर अग्रसर हुआ।



द्वितीय खण्ड

अध्याय -13

गृह युद्ध

□ बी.एस. माथुर

I. 1860 ईसवी का चुनाव और लिंकन की विजय :

1860 ईसवी का चुनाव अमेरिका के इतिहास में महत्त्वपूर्ण है। इसमें रिपब्लिकन दल के विलियम एच. सीवर्ड (William H. Seward) और अब्राहम लिंकन चुनाव लड़ने के इच्छुक थे। सीवर्ड को यह आशा थी कि उसका नामांकन हो जायेगा, परन्तु पश्चिमी राज्यों के प्रतिनिधि लिंकन के दृढ़ समर्थक थे। यह भी स्पष्ट था कि इण्डियाना और इलिनोय जैसे शंकापूर्ण राज्यों में लिंकन ज्यादा मान्य था। उत्तरी राज्यों में भी उसकी सादगी और घेरलू भाषणशैली अपना स्थान बना चुकी थी। इन तथ्यों से प्रभावित होकर पार्टी के नेताओं ने लिंकन का ही नामांकन करने का निश्चय किया। सीवर्ड यद्यपि काफी निराश हुआ, परन्तु उसने लिंकन को पूरा सहयोग देने का अश्वासन दिया। डेमोक्रेटिक दल प्रारम्भ में अपना उम्मीदवार निश्चित नही कर सका। उत्तरी राज्यों ने डगलस का समर्थन किया, जबकि दक्षिण ने जॉन ब्रकिनरिज (John Breckinridge) का। इस विभाजन ने डेमोक्रेटिक दल की स्थिति कमजोर कर दी और रिपब्लिकन दल को विजय में सुविधा रही। संवैधानिक संघीय दल (Constitutional Unionist Party) ने, जिसमें कुछ अनुदारवादी व्हिग और 'नो नथिंग' दल सम्मिलित थे, टैनेसी के जॉन बैल (John Bell) को अपना उम्मीदवार घोषित किया।

इस निर्वाचन में लिंकन की विजय हुई। इस समय अमेरिकी संघ में अट्ठारह स्वतन्त्र राज्य थे और पन्द्रह दास प्रथा समर्थक राज्य। लिंकन को संघ के अट्ठारह राज्यों का समर्थन मिला और निर्वाचन मण्डल में एक सौ अस्सी वोट। इसके विपरीत उसके तीनों प्रतिद्वन्द्वियों को मिला कर एक सौ तेईस वोट प्राप्त हुए। दक्षिण के नौ राज्यों ने एकमत से उसका विरोध किया। लिंकन के चुनाव से ऐसा प्रतीत होने लगा कि देश दो भागों में विभाजन की ओर बढ़ रहा था। दक्षिण अपने को उत्तर से भिन्न समझने लगा। जब उत्तरी राज्य औद्योगीकरण की ओर अग्रसर हो रहे थे, नई रेलवे लाइन और फैक्ट्रीयाँ स्थापित कर रहे थे, दक्षिण मूल रूप से कृषि प्रधान ही रहा। उत्तर द्वारा प्रस्तावित प्रशुल्क दरें भी उसे मान्य नहीं थीं। उसकी सभ्यता ग्रामीण रही जब उत्तर तेजी से अपने को एक आधुनिक राज्य में बदल रहा था। स्पष्ट था कि ऐसी परिस्थितियों में लिंकन की विजय उत्तर और उसकी औद्योगिक सभ्यता की विजय थी, जो दक्षिण को प्रिय नहीं थी।

II. दक्षिण के राज्यों द्वारा नये परिसंघ की स्थापना :

उत्तर की विजय का तुरन्त परिणाम यह हुआ कि दक्षिण कैरोलिना राज्य ने सबसे पहले संघ छोड़ने का निश्चय किया। छः सप्ताह के अन्दर छः अन्य राज्य भी मिसीसिप्पी, फ्लोरिडा, अलाबामा, जार्जिया, लुईसियाना व टैक्सास भी संघ से अलग हो गये और 4 फरवरी, 1861 ईसवी को उन्होंने एक परिसंघ स्थापित करने की घोषणा की। इसके संविधान में दासता को मान्यता दी गई, राज्यों के अधिकारों पर बल दिया गया और सुरक्षात्मक प्रशुल्कों पर रोक लगा दी गई। मिसिसिप्पी के नेता जैफरसन डेविस (Jefferson Davis) को परिसंघ का राष्ट्रपति बनाया गया और इस प्रकार एक नये राष्ट्र और उसकी सरकार की स्थापना की गई। यद्यपि 1861 ईसवी में परिसंघ स्थापित हो गया था, परन्तु कई दासता-समर्थक राज्यों ने पुराने संघ को नहीं छोड़ा। उत्तरी राज्यों का दृष्टिकोण परिसंघ की स्थापना के प्रति मिश्रित था। भूतपूर्व राष्ट्रपति बुचानन की यह मान्यता थी कि यद्यपि संघ का परित्याग वैधानिक नहीं था, परन्तु किसी भी राज्य को उसकी इच्छा के विरुद्ध संघ में नहीं रखा जा सकता था। फिर भी उत्तरी राज्य की अधिकांश जनता परिसंघ के राज्यों के विरुद्ध शक्ति के प्रयोग की इच्छुक नहीं थी। नये राष्ट्रपति लिंकन ने अपने प्रथम भाषण में परिसंघ के राज्यों को यह आश्वासन दिया कि उनमें प्रचलित दास प्रणाली में हस्तक्षेप नहीं किया जायेगा, परन्तु साथ ही साथ उसने यह भी स्पष्ट कर दिया कि संघ विभाजित नहीं किया जा सकता और उसको छोड़ना विद्रोह के समान है। परिसंघ राज्यों पर लिंकन के भाषणा का कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा। इस प्रकार युद्ध को टालने का लिंकन का प्रयास असफल रहा।

III. फोर्ट समटर की घटना एवं गृह युद्ध का आरम्भ :

बुचानन के शासन काल में दक्षिण कैरोलिय में स्थित फोर्ट समटर (Fort Sumter) के सैनिक कमाण्डर मेजर रॉबर्ट एडर्सन (Robert Anderson) से किले को खाली करने की माँग की गई। संघीय सरकार को तुरन्त यह निश्चय करना था कि किले को खाली किया जाये या नहीं। राष्ट्रपति बुचानन इस विषय में कोई फैसला नहीं कर सका यद्यपि प्रारम्भ में उसने परिसंघ को आश्वासन दिया कि दुर्ग खाली कर दिया जायेगा। परन्तु कुछ ही समय बाद उसने अपने निर्णय का बदल कर 'स्टार ऑफ दी वेस्ट' (Star of the West) जहाज को दुर्ग की रक्षा के लिए भेजा। दक्षिणी कैरोलिना की सेना ने जहाज पर आक्रमण कर उसे दुर्ग में प्रवेश नहीं करने दिया। मेजर एण्डर्सन बराबर सहायता की माँग कर रहा था और मार्च, 1861 ईसवी में जब लिंकन राष्ट्रपति बना तो उसे फौरन इस समस्या का समाधान करना था। सैनिक सहायता भेजने से युद्ध की सम्भावनाएँ बढ़ जातीं, परन्तु नहीं भेजने से उत्तर की सिर्फ कमजोरी का प्रदर्शन ही नहीं होता, यह भी आरोप लगाया जा सकता था कि लिंकन ने परिसंघ को परोक्ष रूप से कानूनी मान्यता दे दी। सारी स्थिति पर विचार करके, लिंकन ने अन्त में सैनिक सहायता के स्थान पर रसद इत्यादि भेजने का निश्चय किया। परन्तु परिसंघ ने इसे भी एक धमकी समझ कर 12 अप्रेल को दुर्ग पर गोलाबारी शुरू कर दी और अगले दिन एण्डर्सन को दुर्ग खाली करने पर मजबूर कर

दिया। आने वाले संघर्ष का अन्दाजा लगा कर 15 अप्रैल को लिंकन ने पिचहत्तर हजार नागरिक स्वयंसेवियों को इकट्ठा करने का घोषणा पत्र जारी किया। सारे देश में तनाव का वातावरण छा गया। उत्तर के नेता डगलस और भूतर्व राष्ट्रपति पियर्स तथा बुचानन ने उत्तर को उत्साहित करने का प्रयत्न किया। दक्षिण में भी बड़ा जोश था और लिंकन की स्वयंसेवियों को इकट्ठा करने की घोषणा की भर्त्सना करते हुए हजारों दक्षिणवासी वहाँ की सेना में भर्ती होने को तैयार हो गये। अब समझौता होने की स्थिति समाप्त हो गई और देश में गृह युद्ध शुरू हो गया।

IV. अमेरिका में दास प्रथा का आरम्भ व उसका स्वरूप :

इसके पहले कि हम दास प्रथा के उन्मूलन की समस्या को लेकर अमेरिका के उत्तरी व दक्षिणी राज्यों में हुए गृह युद्ध के कारणों का अध्ययन करें हमें उस देश में दास प्रथा के आरम्भ व उसके स्वरूप के बारे में जानकारी प्राप्त कर लेना उचित होगा।

अमेरिका के राज्यों में दास प्रथा उसकी स्वतन्त्रता की घोषणा के दो सौ वर्ष पहले आरम्भ हुई थी। दासों को अफ्रीका से वहाँ लाकर बेचने वाला पहला ज्ञात व्यापारी वार का डचमेन (Dutchman of Warr) था जिसने जेम्स टाउन में बीस हब्शी दास बेचे थे। सोलहवीं से उन्नीसवीं सदी तक अमेरिका में नीग्रो हब्शी दासों को इतनी बड़ी संख्या में लाया गया था कि लगभग प्रत्येक ईसाई के यहाँ लकड़ी काटने ओर पानी भरने के लिए एक दास था। क्योंकि अफ्रीका से दासों को अमेरिका लाकर बेचने का धन्धा लाभकारी था इसलिए इस व्यापार में अंग्रेजों, स्पेनवासियों और पुर्तगालियों ने खूब धन कमाया। इस व्यापार के लिए विशेष रूप से जहाज बनाये जाते थे, जहाँ 1730 ईसवी में इंग्लैण्ड के लिवरपूल बन्दरगाह में पन्द्रह जहाज इस धन्धे में लगे हुए थे वहाँ 1792 ईसवी में उनकी संख्या एक सौ बत्तीस हो गई। औद्योगिक क्रान्ति के आरम्भ होने से लंकाशायर में रूई की कटाई का उद्योग निरन्तर प्रगति कर रहा था और इसके लिए कपास अमेरिका के दक्षिणी राज्यों से आती थी। वहाँ पर कपास की उपज दासों की मदद से की जाती थी। 1790 ईसवी में अमेरिका में दासों की संख्या सात लाख थी। 1850 ईसवी में इनकी संख्या बत्तीस लाख हो गई। केवल 34,725 गोरे लोग इनके स्वामी थे। यद्यपि इंग्लैण्ड ने 1771 ईसवी में दास प्रथा की समाप्ति की घोषणा कर दी थीं, किन्तु इस लाभदायक व्यापार की घोषणा को रोकने के लिए वहाँ की सरकार ने कोई कदम नहीं उठाये।

अमेरिका की स्वतन्त्रता की घोषण में निहित सिद्धान्तों ने दास प्रथा की जड़ों पर आघात किया। इससे प्रभावित हो उत्तर के राज्यों ने दासता विरोधी आन्दोलन चलाया तथा समस्त राज्यों में इस प्रथा को समाप्त करने की अपील की, किन्तु दक्षिण के राज्य इसके लिए राजी नहीं हुए, क्योंकि इससे उनके आर्थिक हितों को हानि पहुँचती थी। यह प्रथा उनके जन जीवन में घुल चुकी थी। अतः दासता का प्रश्न उत्तर एवं दक्षिण के राज्यों के बीच विवाद का विषय बन गया। दक्षिण के दास स्वामियों से बच कर भागने वाले दासों को उत्तर के निवासी रातों रात उत्तर से सुरिक्षत स्थान अथवा सीमा के पार कनाडा में पहुँचा देते थे। उन्नीसवीं सदी के चतुर्थ दशक तक उत्तर के सब भागों में इस प्रकार के भगोड़े दासों के लिये गुप्त मार्गों का एक जाल बिछ गया था और

इस व्यवस्था को अण्डर ग्राउण्ड रेल रोड़ (Underground Rail Road) के नाम से जाना जाता था। हिट्टने (Hittney) नामक इतिहासकार के अनुसार 1830 से 1860 ईसवी तक अकेले ओहायो में चालीस हजार से अधिक ऐसे दासों को स्वतन्त्र होने में मदद दी गई। 1830 ईसवी में दास प्रथा एक राष्ट्रीय समस्या के रूप में उभरी। एक ओर दासों की माँग बढ़ रही थी तो दूसरी ओर दास विरोधी आन्दोलन भी जोर पकड़ रहा था। अन्त में इस समस्या को लेकर 1861 ईसवी में गृह युद्ध आरम्भ हो गया।

V. गृह युद्ध के कारण :

गृह युद्ध की समाप्ति के लगभग एक शताब्दी बाद तक भी इतिहास लेखक इस युद्ध के कारणों पर एकमत नहीं हो पाये हैं। कुछ लेखकों ने कहा कि है यदि उत्तर और दक्षिण के कुछ उग्रवादियों ने दोनों क्षेत्रों में उत्तेजना पैदा नहीं की होती तो शायद इस युद्ध को टाला जा सकता था। दासता के विरोधी और समर्थकों ने जॉन ब्राउन के आक्रमण, ब्लीडिंग कैनसास तथा ड्रेड स्काट केस जैसी घटनाओं को लेकर अनावश्यक रूप से देश में उत्तेजक भावनाएँ पैदा कर दीं और बहुत से राजनीतिज्ञों ने अपने चुनाव कार्यक्रम में इसका लाभ उठाया। दक्षिण और उत्तर के मतभेदों पर उन्होंने जरूरत से ज्यादा जोर दिया परन्तु साथ रहने के लाभों को कोई महत्त्व नहीं दिया। दुर्भाग्य से क्ले, कैलहुन और वेब्स्टर जैसे दूरदर्शी कांग्रेस के सदस्य इस समय जीवित नहीं थे जो देश को सद्बुद्धि दे सकते।

(1) दक्षिण के राज्यों में सीमित राष्ट्रवाद – अन्य इतिहासकारों ने यह मत प्रकट किया है कि दक्षिण में सीमित राष्ट्रवाद की भावनाएँ पैदा हो रही थीं। वहाँ के लोगों में उत्तर के प्रति आकर्षण नहीं था। 1860 ईसवी तक जब पश्चिम के तीन राज्यों– कैलीफोर्निया, मिनीसोटा और आरेगन–ने संघ की सदस्यता स्वीकार कर ली, तो दक्षिण का यह निश्चित मत हो गया कि इन पश्चिमी राज्यों की सहायता से उत्तर उन पर अब राजनीतिक और आर्थिक प्रभुता स्थापित करेगा। दक्षिणी राजनीतिज्ञों ने स्पष्ट रूप से कहना शुरू कर दिया कि स्वतन्त्रता के घोषणा पत्र में, उन्हें संघ से अलग होने तथा अपनी स्वतन्त्र सरकार बनाने का अधिकार निहित है। उन्होंने यह प्रश्न उठाया कि जब उत्तर और दक्षिण के सामाजिक तथा आर्थिक दृष्टिकोण में इतना अधिक अन्तर है तो साथ रहने के क्या लाभ हो सकते हैं? यह सत्य था कि जब उत्तर में शिक्षा की प्रगति, स्त्रियों और श्रमिकों के अधिकार जैसे विषयों पर सुधार की काफी माँग थी, दक्षिण का जीवन क्रम मध्यकालीन वातावरण में लिप्त था, जहाँ प्रगतिवादी विचारों के लिए कोई स्थान नहीं था। इस बात को लेकर कई संवैधानिक प्रश्न सामने आये, जैसे संघ की तुलना में राज्यों के क्या अधिकार थे तथा संघ की सदस्यता का परित्याग हो सकता था अथवा नहीं? राज्यों के अधिकारों के समर्थकों की मान्यता थी कि संघ की तुलना में राज्य पुराने थे और उन्होंने मिल कर ही संघ का निर्माण किया था। कांग्रेस के किसी भी अधिनियम को राज्य निरस्त कर सकते थे यदि उसे वे असंवैधानिक समझते थे अथवा जो उनके अधिकारों पर कुठाराघात करता था? इतना ही नहीं, राज्य किसी भी समय संघ की सदस्यता को छोड़ भी सकते थे। क्या अमेरिका के बड़े नेता जेफरसन, मैडीसन, कैलहुन इत्यादि इस ओर इशारा नहीं कर चुके थे? क्या तीन नये राज्यों के

संघ में आने से कांग्रेस में दक्षिण का प्रभाव कम नहीं हो गया था जिसके कारण अब उसके अधिकारों की सुरक्षा की ओर भी अधिक आवश्यकता थी? इस प्रकार के विचारों ने दक्षिणी राज्यों में राजनीतिक असुरक्षा की भावना पैदा कर दी और जब राष्ट्रपति लिंकन ने घोषणा की कि किसी राज्य को संघ का परित्याग करने का अधिकार नहीं था, तो दक्षिण में इससे अविश्वास और असन्तोष और ज्यादा बढ़ा।

(2) दास प्रथा के सम्बन्ध में मौलिक मतभेद - कुछ विद्वानों का मत है कि गृह युद्ध के पीछे मूल रूप से दास प्रथा के सम्बन्ध में उत्तरी व दक्षिणी राज्यों में मौलिक मतभेद था। अठारहवीं शती के अन्त तक अमेरिका की साधारण जनता दास व्यापार को बुरी नजर से देखने लगी थी। विशेषकर उत्तरी राज्यों की जनता की दृष्टि में यह मानवता पर एक कलंक था। वे कहते थे, स्वतन्त्रता के प्रारूप में एक धारा यह भी थी कि दास व्यापार जार्ज तृतीय का एक अपराध था, किन्तु दक्षिणी कैरोलिना और जार्जिया की इच्छाओं के प्रति सम्मान रखने के लिए इस धारा को हटा दिया गया था। 1787 ईसवी के अध्यादेश में ओहायो नदी के उत्तर के सारे प्रदेशों में दास प्रथा को बन्द करा दिया गया था किन्तु फिर भी यह छूट दे रखी थी कि भागने वालों दासों को पुनः पकड़ा जाये। सम्भवतः अमेरिका के संविधान निर्माताओं ने समय की आवश्यकताओं को देखकर दास प्रथा के प्रश्न पर समझौता कर लिया था तथा उन्होंने संविधान में यह स्वीकार कर लिया था कि राज्यों के विधान-मण्डलों के निर्वाचनों में हब्शी दासों को भाग लेने का अधिकार होगा, किन्तु यह अधिकार उनकी संख्या के 3/5 भाग को ही प्रदान किया गया था।

वास्तव में यह प्रथा किसी कार्य श्रेणी से सम्बन्धित न होकर एक जाति से सम्बन्धित थी। इसमें गोरे स्वामी थे और काले गुलाम। वस्तुतः उत्तरी और दक्षिणी राज्यों के निवासियों का दास प्रथा के सम्बन्ध में भिन्न-भिन्न दृष्टिकोण था। उत्तरी अमेरिका के निवासी इस प्रथा का अन्त करना चाहते, थे किन्तु दक्षिणी अमेरिका के राज्यों के लिए यह एक आवश्यक बुराई थी जिसे समाप्त नहीं किया जा सकता था।

(3) दास-स्वामियों का क्रूर व्यवहार - हब्शी दासों के साथ उनके स्वामी क्रूरता का व्यवहार करते थे। ऐलन नेविन्स और हेनरी स्टील कोमेजर ने एक न्यू यार्क वासी पर्यवेक्षक, फ्रेडरिक लॉ ओमस्टेड (Fredric Law Omstead), जिसने गृह युद्ध के छः वर्ष पहले मिसीसिप्पी के एक उत्तम कपास के फार्म में एक सौ पैंतीस तथा अन्य खेतों में हब्शी दासों की दशा का अवलोकन किया था, वर्णन के आधार पर लिखा है कि उन्हें बहुत अधिक परिश्रम करना पड़ता था और कोड़ों से मारा जाता था तथा शिक्षा से वंचित रखा जाता था। मालिकों के क्रूर व्यवहार से बचने के लिये 1850 ईसवी में एक अधिनियम पारित किया गया। भगोड़े दास कानून (Fugitive Slave Act) में ऐसे दासों को कठोर सजा देने के प्रावधान थे। पार्केस के अनुसार उत्तरी राज्यों के अनेक बुद्धिजीवी और मानवतावादी विचारकों ने इस अधिनियम को ईसाई धर्म के मूल सिद्धान्तों तथा अमेरिकन संविधानों के विरुद्ध माना। उन्होंने अपना यह नैतिक कर्त्तव्य समझा कि वे इस अधिनियम का उल्लंघन न करें तथा दासों को सुरक्षित स्थान अथवा कनाडा पहुँचने में मदद करें। उनके ऐसे प्रयत्नों के फलस्वरूप भी दक्षिणी व उत्तरी राज्यों में मतभेद बढ़े।

(4) साहित्यकारों का प्रभाव - दासों के साथ हो रहे अन्यायों ने साहित्यकारों को इस सम्बन्ध में लिखने की प्रेरणा दी। श्रीमती हेरियट बीचर स्टोव के उपन्यास 'अंकल टॉम्स केबिन' में इस प्रथा का वैविध्य भरा इतना गहरा व नग्न चित्रण किया गया था कि इससे उत्तर व दक्षिण के लोगों में दास प्रथा की वीभत्सताओं के प्रति गहरी घृणा के भाव भर गये। एक अन्य लेखक ने अपने रचना 'कामन सेन्स' में इसे घृणित प्रथा बताया। अनेक अन्य साहित्यकारों ने भी जनता का ध्यान इस क्रूर प्रथा की ओर आकर्षित किया। यद्यपि उनकी रचनाओं से सभी राज्यों के निवासी प्रभावित हुए, किन्तु दक्षिण के भू-स्वामी अपने आर्थिक हितों के कारण इस प्रथा को समाप्त करने के लिए तैयार नहीं थे।

(5) राजनीतिक प्रचार - दास प्रथा के विरोधियों ने दक्षिणी राज्यों में यह आशंका पैदा कर दी थी कि उत्तर उनकी ऐतिहासिक श्रम प्रणाली को नष्ट करना चाहता है। उत्तरी राज्यों के नेताओं द्वारा दक्षिणवासियों की जो आलोचना की गई उनमें से अधिकांश अव्यावहारिक व अपमानजनक थी। फलत: दक्षिणवासियों में आशंका, भय व रोष की भावनायें जागृत हुईं। दूसरी ओर दक्षिण के भू-स्वामियों के दास प्रथा को फैलाने के प्रयत्नों से उत्तर में लिंकन जैसे नेताओं को यह आशंका हुई कि कहीं समस्त देश में दास प्रथा न फैल जाये।

(6) आर्थिक कारण - चार्ल्स बियर्ड (Charles Beard) ने गृह युद्ध के कारणों में दक्षिण व उत्तर के राज्यों की आर्थिक स्थिति को भी महत्त्व प्रदान किया है। अधिकांश दक्षिणी राज्यों में कपास की खेती होती थी। दक्षिणी कैरोलिना, जार्जिया, अलाबामा, मिसीसिप्पी, लुइसियाना और टैक्सास 'कपास के राजा' (Cotton King) थे। इन प्रदेशों में 1840 ईसवी में 320,000,000 पौंड कपास की उपज थी जो कि 1860 ईसवी में बढ़कर 2,000,000,000 पौंड हो गई थी। कपास के विशाल फार्मों में दास-श्रमिकों से काम लिया जाता था। नीग्रो दासों से निर्दयतापूर्वक काम लिया जाता था। उनके द्वारा किए गए परिश्रम से ही विशाल पैमाने पर कपास की खेती की जाती थी। अत: दक्षिण के लोग दास प्रथा के अन्त के विरुद्ध थे। उत्तर के प्रदेशों में इस समय तक उद्योगों का विकास हो गया था। वहाँ पर सूती कपड़े, ऊनी वस्त्र, चमडे का सामान, लकड़ी की वस्तुऐं आदि बड़े पैमाने पर बनाई जाती थी। कांग्रेस में उत्तर के प्रतिनिधि ऊँचे रक्षात्मक शुल्क, केन्द्रीय बैंक प्रणाली और रेलों के निर्माण में प्रचुर संघीय सहायता जैसी आर्थिक नीतियों में रुचि रखते थे। अत: वे दास प्रथा के उन्मूलन के समर्थक थे।

दक्षिण में उत्पादित कपास की अधिकांश बिक्री इंग्लैण्ड में होती थी। दक्षिण से राज्यों का यह अनुमान था कि यदि युद्ध हुआ तो इंग्लैण्ड दक्षिण का साथ देगा, क्योंकि वह दक्षिण राज्यों की कपास मंडी था। इंग्लैण्ड का अमीर वर्ग उनके साथ था इसलिये उनको उत्तर की चिन्ता नहीं थी। वे स्वतन्त्र सम्प्रभु दास राज्य संघ के निर्माण के पक्ष में थे। हेनरी टिमरॉड (Henry Timrod) ने, अपनी पुस्तक 'इथनो जेनेसिस (Ethno Genesis) नामक पुस्तक में तो यहाँ तक भविष्यवाणी कर दी कि "दक्षिणी परिसंघ न केवल समुद्रों से समुद्रों तक फैलेगा वरन् सारे विश्व की गरीबी की समस्या का समाधान निकालेगा।"

(7) समझौते के असफल प्रयत्न तथा उत्तेजना पूर्ण कार्यवाहियाँ - 1820 ईसवी में प्रथम बार दास प्रथा के उन्मूलन ने एक गम्भीर रूप धारण किया। उस समय से लेकर गृह-युद्ध के आरम्भ तक इस समस्या पर समझौता करने के अनेक प्रयास किये गये। लेकिन ये प्रयत्न असफल रहे और दोनों पक्षों के बीच कटुता बढ़ती गई। इस प्रकार के प्रयत्नों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है -

(i) मिसूरी समझौता (1820 ईसवी) - 1819 ईसवी में मिसूरी राज्य ने संयुक्त राज्य अमेरिका के संघ का सदस्य बनने के लिए आवेदन पत्र प्रस्तुत किया। वह दास प्रथा के समर्थक के रूप में प्रवेश करना चाहता था। उस समय संघ में दास प्रथा वाले राज्यों और मुक्त राज्यों की संख्या ग्यारह-ग्यारह थी, अतएव मिसूरी के प्रवेश से दोनों पक्षों में सन्तुलन बिगड़ने की सम्भावना थी। फलतः इस प्रश्न पर एक गतिरोध उत्पन्न हो गया और दिन-प्रति-दिन तनाव बढ़ता गया। अन्त में हेनरी क्ले द्वारा प्रस्तावति एक समझौता किया गया। मिसूरी के साथ-साथ मेन को, जो मैसोचुसेट्स राज्य का एक अंग था, एक स्वतन्त्र राज्य का दर्जा दिया गया। इस प्रकार दास प्रथा के समर्थक व विरोधी राज्यों की संख्या बारह-बारह हो गई। दोनों पक्षों के उग्रवादी इस समझौते से सन्तुष्ट नहीं हुए। इससे राष्ट्रवाद को एक गहरा धक्का लगा और प्रान्तीयता की भावनाओं को प्रोत्साहन मिला।

(ii) निरस्तीकरण का सिद्धान्त - इसके बाद उत्तरी व दक्षिणी राज्यों के बीच मतभेद बढ़ते गये। सीमा शुल्क के बारे में इन दोनों के हितों में टकराव था। उत्तर के राज्यों का हित सीमा-शुल्क की दरें ऊँची रखने का था तो दक्षिण के राज्यों का हित इसके विपरीत था। एडम्स के शासन काल में पारित सीमा शुल्क कानून के प्रति दक्षिण के राज्यों में तीव्र प्रतिक्रिया हुई। तट करों के सम्बन्ध में कैलहुन एवं जैक्सन के मतभेद तीव्र हो गये थे। एक ओर दक्षिण कैरोलिना संघ के विरुद्ध दक्षिण के राज्यों को ऊँचे तटकरों के सम्बन्ध में विरोध का नेतृत्व कर रहा था तो दूसरी ओर पश्चिमी व पूर्व के राज्य इसका समर्थन कर रहे थे। अन्त में दक्षिणी कैरोलिना की ओर से कैलहुन ने 1828 ईसवी में निरस्तीकरण का सिद्धान्त प्रतिपादित किया। इसके फलस्वरूप निष्प्रभावन संकट पैदा हो गया। राष्ट्रीय बैंक के अस्तित्व के प्रश्न को लेकर भी संघ के विभिन्न राज्यों में मतभेद पैदा हो गये। यद्यपि उपर्युक्त घटनाएँ दास प्रथा से प्रत्यक्ष रूप से सम्बन्धित नहीं थीं, किन्तु इन्होंने भी प्रान्तीयता की भावना तथा संघ से पृथक् होने की प्रवृत्ति को बल दिया।

नोट - मिसूरी समझौते व निरस्तीकरण के सिद्धान्त का विस्तृत विवेचन अध्याय आठ में किया गया है।

(iii) नये राज्यों में दास प्रथा की मान्यता का प्रश्न तथा 1850 ईसवी का समझौता- पोल्क के शासन काल में मैक्सिकों से कुछ भू-भाग खरीद कर कुछ नये राज्यों को बनाने का प्रस्ताव था। इनमें दास प्रथा को लेकर एक तीव्र विवाद उठ खड़ा हुआ। उत्तर के राज्यों को भय था कि इन प्रस्तावित राज्यों की स्थापना से अमेरिकी संघ का सन्तुलन बिगड़ जायेगा, क्योंकि ये दास प्रथा के समर्थक होंगे। अतः 1848 ईसवी के चुनाव में दास प्रथा के प्रश्न को

प्रमुखता दी गई। व्हिग दल के प्रत्याशी टेलर ने संघ की एकता का समर्थन करके विजय प्राप्त की। लेकिन उसे दास प्रथा के सम्बन्ध में एक तीव्र विवाद का सामना करना पड़ा। उत्तर के लोग यह चाहते थे कि इस प्रथा को नये क्षेत्रों में फैलने से रोका जाये। लेकिन दक्षिण के निवासी कहते थे कि दास उनकी सम्पत्ति है तथा संघीय सरकार का यह दायित्व है कि वह इस निजी सम्पत्ति के अधिकार को संरक्षण प्रदान करे। दक्षिण के बड़े-बड़े प्लान्टर्स नये क्षेत्रों में दासों की सहायता से बड़े-बड़े प्लान्टेशन स्थापित करना चाहते थे। लेकिन पश्चिम के किसान इसके विरुद्ध थे। इस प्रश्न को लेकर व्हिग दल दो भागों में विभाजित हो गया। इनमें से एक 'कान्सियन्स दल' था जो आत्मा की आवाज को महत्त्व देता हुआ दास प्रथा का विरोध करने लगा। दूसरा गुट 'कॉटन व्हिग' कहलाने लगा जिसका स्वार्थ दक्षिण के रूई उत्पादन में था और इसलिए वह दास प्रथा को जीवित रखना चाहता था। डेमोक्रेटिक दल में भी दक्षिण के बड़े भू-स्वामियों का एक दल बन गया लेकिन उत्तर के डेमोक्रेट दक्षिण के भू-स्वामियों के प्रयत्नों से चिन्तित थे। दक्षिण के डेमोक्रेटों में एक दल ऐसा था जो संघ से अलग होना चाहता था। ऐसी परिस्थितियों में 1850 ईसवी में हेनरी क्ले ने समझौते का एक प्रस्ताव दोनों पक्षों के समाने रखा। काफी विचार विमर्श के पश्चात् उसे सफलता मिली। इस समझौते की शर्तों का उल्लेख अध्याय नौ में किया गया है।

(iv) 1850 ईसवी के समझौते की असफलता – इस समझौते के उपरान्त भी निवासी भगोड़े दासों की मदद करने में लगे रहे। दक्षिण के राज्यों में पृथक् होने की बात चलती रही लेकिन यह तय किया गया कि जब तक उत्तर के राज्य उसका स्पष्ट उल्लंघन न करें वे इस पर अमल करेंगे।

(v) कैनसस-नेब्रास्का बिल (1854 ई.) – इस वर्ष डगलस द्वारा प्रस्तावित कैनसास-नेब्रास्का बिल ने इस अस्थायी शान्ति को भंग कर दिया। इसमें कैनसास और नेब्रास्का नामक दो राज्यों की स्थापना का प्रस्ताव था। ये प्रदेश यद्यपि मिसूरी के उत्तर में थे किन्तु उनमें मिसूरी समझौते को लागू न करने की व्यवस्था थी क्योंकि मिसूरी में दास प्रथा दृढ़ता से प्रचलित थी अत: वहाँ के दास-स्वामी कैनसास में भी इस प्रथा को वैधानिकता प्रदान करना चाहते थे। उनका समर्थन दक्षिण के लोगों ने भी किया। उनके विरोध में उन्मूलनवादी थे जो दास प्रथा को समाप्त करना चाहते थे। 1855 ईसवी में कैनसास में दो विरोधी सरकारों का गठन किया गया। एक स्थान पर दास प्रथा के पाँच समर्थक मारे गये। तत्पश्चात् दोनों पक्षों के संघर्ष में दो सौ व्यक्ति मृत्यु के ग्रास बने। अब दोनों पक्ष के समर्थक एक दूसरे के विरुद्ध तैयारी करने लगे। कैन्सास को एक राज्य का दर्जा देने के लिये बुचानन के शासन काल में लकाम्पटन संविधान बनाया गया, किन्तु डगलस के विरोध के कारण उसे 1861 ईसवी तक राज्य क्षेत्र ही बना रहना पड़ा।

(vi) ड्रेड स्काट का मामला – इस मामले में सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय की तीव्र प्रतिक्रिया हुई। काँग्रेस को दास प्रथा पर प्रतिबन्ध लगाने के अधिकार को न मान कर सर्वोच्च न्यायालय ने मिसूरी समझौते को असंवैधानिक घोषित कर दिया। उत्तर के कुछ लोगों ने इसकी भर्त्सना की। इससे दक्षिण व उत्तर में कटुता बढ़ी। इस प्रकार यह निर्णय दासता के प्रश्न का समाधान करने में असफल रहा।

(vii) लिंकन डगलस विवाद -दास प्रथा की समस्या को लेकर लिंकन व डगलस में अनेक वाद-विवाद हुए। इनमें सबसे महत्त्वपूर्ण फ्री पोर्टर का वाद-विवाद था। लिंकन ने ड्रेड स्काट के निर्णय का खण्डन किया। डगलस के इस प्रश्न के उत्तर में कि क्या किसी राज्य-क्षेत्र को यह अधिकार है कि वह अपने क्षेत्र से दास प्रथा को निषिद्ध कर दे। डगलस निश्चित उत्तर नहीं दे सका। उसने केवल यही कहा कि वह राज्य दास प्रथा को कानूनी रूप से निषिद्ध किये बिना अपने क्षेत्र से पृथक् रह सकता है तथा ऐसा करने के लिए उसे दासों की गिरफ्तारी के सम्बन्ध में कोई पुलिस नियम नहीं बनाने होंगे। वाद विवादों से भी दोनों पक्षों के समर्थकों में उत्तेजना फैली।

(viii) जार्ज ब्राउन का आक्रमण- जार्ज ब्राउन नामक एक व्यक्ति ने दासों को मुक्त कराने के लिये वर्जीनिया पर आक्रमण किया। उसका विचार था कि यदि उसे इस क्षेत्र में सफलता प्राप्त हुई तो सब जगह के दास उसके आन्दोलन का समर्थन करेंगे। लेकिन वह पकड़ा गया तथा उसे तथा उसके छः साथियों को फाँसी दे दी गई। दक्षिण के लोगों ने इस घटना को दक्षिण पर एक आक्रमण माना। इस घटना ने संघ की एकता पर एक और प्रहार किया।

(ix) लिंकन की चुनाव में विजय - 1860 ईसवी के चुनाव में लिंकन की विजय को दक्षिण के निवासियों ने औद्योगिक सभ्यता की जीत माना। सबसे पहले दक्षिण कैरोलिना संघ से अलग हुआ और शीघ्र ही छः अन्य राज्य भी अलग हो गये। उन्होंने एक पृथक् परिसंघ की स्थापना की। दक्षिणी कैरोलिना में फोर्ट समटर पर अधिकार को लेकर गृह युद्ध आरम्भ हो गया।

(8) आधुनिकता की ओर बढ़ने का प्रश्न- क्लिंटन रोजिटर (Clinton Rositer) ने अपनी पुस्तक 'दी अमेरिकन क्वेस्ट' (1780-1860) (The Amercian Quest 1780-1860) में गृह युद्ध के कारणों पर प्रकाश डालते हुए इसे आधुनिकता का संकट बताया है। उत्तर आधुनिकता के प्रति अत्यधिक समर्पित था और सम्भवतः दक्षिण इनके प्रति उदासीन।

आम तौर पर यह माना जाता है कि गृह युद्ध को जन्म देने वाले अनेक कारण थे, किन्तु एच.डब्ल्यू. एलसन (H.W. Elson) ने लिखा है कि यह कहना कि युद्ध के अनेक व भिन्न भिन्न कारण थे, सही नहीं है। यदि प्रत्येक कारण का विश्लेषण किया जाय तो यह ज्ञात होगा कि इनकी जड़ें दास प्रथा में थीं।

उपर्युक्त अध्ययन से यह प्रतीत होता है कि उत्तर और दक्षिण में गहरा मनमुटाव हो गया था। दोनों में एक दूसरे के प्रति घोर अविश्वास था। दक्षिणी राज्य विशेष रूप से अपनी सांस्कृतिक परम्पराओं में कोई परिवर्तन करने के लिए तैयार नहीं थे। ऐसी स्थिति में दक्षिणी नेता संघ को छोड़ना ही सबसे अच्छा उपाय समझते थे, परन्तु उत्तर के नेताओं ने उनके इस कदम को स्वीकार नहीं किया। वास्तव में दोनों के उद्देश्य अलग-अलग थे। दक्षिण के लिए दासता का प्रश्न महत्त्वपूर्ण था तो उत्तर के लिए संघ की एकता बनाये रखना। लिंकन ने भी संघ की एकता पर ही ज्यादा जोर दिया। जब उसने घोषित किया कि यदि वह बिना किसी दास को मुक्त किये संघ की रक्षा कर सकता है तो वह ऐसा करेगा, यदि इसके लिए सब दासों को स्वतन्त्र करने की आवश्यकता होगी तो वह वैसा कदम उठायेगा और यदि संघ की रक्षा के लिए कुछ दासों को

स्वतन्त्र करने और बाकी को यथावत् रखने की जरूरत होगी, तो वह वैसा भी करने को तैयार था। इस प्रकार लिंकन तो हर हालात में संघ की अखण्डता को दूसरे किसी भी अन्य प्रश्न की तुलना में अधिक महत्त्व देता था, परन्तु अब समय वाद-विवाद का नहीं रह गया। स्थिति ऐसी बन गई थी, जिसमें प्रश्नों का समाधान युद्ध के मैदान में ही होता दिखाई देता था।

यह पूछना उचित ही है कि क्या गृह युद्ध को स्थगित किया जा सकता था? एक अमेरिकी लेखक ने कहा है कि यदि दोनों ओर के उद्वेग उत्पन्न करने वाले नेताओं को एक गाड़ी में बन्द कर नदी में डाल दिया जाता तो सम्भव है दोनों क्षेत्रों के विवेकशील व्यक्ति किसी प्रकार का समझौता कर ही लेते। यह सम्भव हो सकता था कि दासों के मालिकों को मुआवजा देकर दासों को शनैः शनैः स्वतन्त्र करवाया जा सकता था, परन्तु आक्रोश के वातावरण में ऐसे विचार पैदा ही नहीं होते। वास्तव में व्यक्तियों की भाँति राष्ट्रों के भी उद्वेग के क्षण होते हैं और 1861 ईसवी में अमेरिका एक ऐसे ही दौर से गुजर रहा था।

VI. गृह युद्ध के आरम्भ में दोनों पक्षों के साधन :

1861 ईसवी में दक्षिण की तुलना में उत्तरी अमेरिका कहीं ज्यादा अच्छी स्थिति में था। संघ के चौंतीस राज्यों में से तेईस राज्य अभी उत्तर में सम्मिलित थे। देश की कुल जनसंख्या का लगभग दो तिहाई भाग उत्तर में रहता था जिनमें नीग्रो बहुत कम थे। इसके विपरीत दक्षिण की पिचानवें लाख आबादी में से लगभग पैंतीस लाख नीग्रो थे जिनका उपयोग युद्ध में नहीं किया जा सका। इसके अतिरिक्त तीस हजार मील रेल व सड़कों में से लगभग बीस हजार मील संघ की सीमाओं में थी। अमेरिका की अधिकांश खानें, उद्योग, बैंक इत्यादि भी उत्तरी राज्यों में ही थे जिनके कारण यहाँ युद्ध काल में सामग्रियों की कठिनाई नहीं हुई। वास्तव में उत्तर में उद्योगीकरण काफी प्रगति कर चुका था। ऐली ह्विटनी (Eli Whitney) के आि ˉ ˉ˛ के कारण युद्ध सामग्री और बन्दूकों के उत्पादन में बहुत वृद्धि हो सकी। उत्तर में यातायात के साधनों के विस्तार ने सिर्फ उद्योगीकरण का ही विकास नहीं किया परन्तु युद्ध के समय सैनिक और सामग्री को एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजने में सुविधा प्रदान की। उत्तरी राज्यों के पास युद्ध और व्यापारिक जहाज भी अधिक थे जिससे अमेरिका के बन्दरगाहों पर उनका ज्यादा प्रभावशाली अधिकार हो सका। कृषि के क्षेत्र में उत्तरी राज्यों की सीमा में उपजाऊ भूमि अधिक थी जिसकी अच्छी पैदावार ने संघ को खाने-पीने की सामग्री में कमी नहीं होने दी। मैककोर्मिक (Mc Cormick) के फसल काटने के यन्त्र ने उत्तर में बहुत से कृषकों को खेतों पर लगे रहने से मुक्त कर दिया जिससे उनकी सेवाओं का उपयोग सेना में किया जा सके। उत्तर के पास सोना व चाँदी के विशाल भंडार थे।

उत्तर की राजधानी वाशिंगटन (संघ) शासन को विदेशी शासनों की मान्यता प्राप्त थी। दक्षिणी परिसंघ कूटनीतिक अदूरदर्शिता के कारण यूरोपीय देशों से सम्बन्ध स्थापित नहीं कर सका, मान्यता दे दूर रहा।

संघ का राष्ट्रपति लिंकन एक सूझबूझ वाला व दूरदर्शी व्यक्ति था। उसके कुशल नेतृत्व ने संघीय सेनाओं में उत्साह एवं आशा का संचार हुआ। इसके विपरीत परिसंघ का राष्ट्रपति डेविस

अत्यन्त कठोर, कम विचारशील, छोटी-छोटी समस्याओं में उलझा हुआ व्यक्ति था जो युद्ध नेता नहीं बन सकता थ। सी.पी. नील (C.P. Nill) के अनुसार उसके अधिक हस्तक्षेप के कारण उसके सेनापति हताश हो जाते थे।

उत्तरी राज्यों को यदि ये सब लाभ उपलब्ध थे, तो दक्षिण की स्थिति दूसरी क्षेत्रों में अच्छी थी। युद्ध के प्रारम्भिक काल में सीमावर्ती राज्यों से बहुत से व्यक्तियों ने परिसंघ को समर्थन दिया, जिससे परिसंघ की सेना की संख्या संघीय सेना के लगभग समान हो गई। दक्षिण के सैनिक इस भावना से लड़ रहे थे कि वे उत्तरी आक्रमणकारियों से अपने अधिकारों और अपने घरों की रक्षा कर रहे थे और इस कारण उनका उत्साह बहुत ऊँचे स्तर पर था। दक्षिण में शिकार और जंगल के जीवन के प्रति लगाव भी ज्यादा था, जिसके कारण वहाँ के लिए अच्छे बन्दूक चलाने वाले और अच्छे घुड़सवार जरूरी थे। गृह युद्ध की अधिकांश लड़ाईयाँ दक्षिण की भूमि में हुई थीं, जिसके भौगोलिक वातावरण से भी उत्तर के सैनिक अच्छी तरह से परिचित नहीं थे। इसके अतिरिक्त दक्षिण के कुछ सेनापति बहुत योग्य थे जिनमें राबर्ट ली और थॉमस जैक्सन के नाम प्रमुख हैं। ली और जैक्सन ने वेस्ट पाइन्ट (West Point) से सैनिक शिक्षा ली थी और संघीय सेना में शीघ्र ही उन्नति करते गये। ली ने 1812 और 1846 ईसवी के युद्धों में भी भाग लिया था। दोनों सेनापतियों ने दक्षिणी राज्यों द्वारा संघ छोड़ने का विरोध किया था और दास प्रणाली की भी आलोचना की थी, परन्तु युद्ध शुरू होने पर दोनों ने अपने गृह राज्य वर्जीनिया के विरुद्ध शस्त्र उठाने से इन्कार कर दिया। ली को तो आगे चल कर दक्षिणी सेना के मुख्य सेनापति का भार भी सम्भालना पड़ा।

दोनों पक्षों की स्थिति का अध्ययन करके नेविन्स एंड कोमेजर ने लिखा है, "सभी दृष्टियों से देखा जाये, तो उत्तर के लोग दक्षिण वालों से कहीं अधिक शक्तिशाली थे और दक्षिण वालों की जीत की आशा बहुत कुछ इसी बात पर निर्भर थी कि इतने लम्बे-चौड़े प्रदेश और विशाल असंतुष्ट आबादी पर विजय प्राप्त करना दुष्कर होगा।"

VII. युद्ध की घटनाएँ :

युद्ध के प्रारम्भिक काल में दक्षिण ने सुरक्षात्मक नीति अपनाई। परिसंघ सरकार ने संघ से कहा कि सिर्फ शान्ति के अतिरिक्त वे उत्तर से कुछ नही माँगते, परन्तु ऐसा सम्भव नहीं था, क्योंकि युद्ध से बहुत से महत्त्वपूर्ण और विवादग्रस्त प्रशन जुड़े हुए थे। दूसरी ओर दोनों तरफ के सेनापतियों के सामने कठिनाईयाँ थीं। किसी भी राज्य में प्रशिक्षित सेना नहीं थी और जल्दी में नागरिक स्वयंसेवियों को सेना में भर्ती होने के लिए बुलाया गया। उत्तरी राज्यों को युद्ध में अपने उ्ददेश्य निश्चित करने थे। क्या सारे दक्षिण को विजय किया जाये अथवा सिर्फ परिसंघ की राजधानी रिचमण्ड (Richmond) को? यह भी हो सकता था कि परिसंघ के यातायात और संचार व्यवस्था को अस्त-व्यस्त कर उसे झुकने पर मजबूर कर दिया जाये, परन्तु इस प्रकार की युद्ध नीति उत्तरी राज्यों के सेनापतियों के बहुत समय बाद समझ में आई। युद्ध के प्रारम्भ में तो संघीय सेना के उद्देश्य अपनी राजधानी वाशिंगटन की सुरक्षा और रिचमण्ड की विजय करने तक

सीमित थे। दक्षिण के बन्दरगाहों की नाकाबन्दी करना आवश्यक था, जिससे यूरोप से वे युद्ध सामग्री नहीं मंगा सकें और न ही अपना कोई माल वहाँ भेज सकें।

युद्ध के शुरू होते ही राजधानी वाशिंगटन में तीस हजार स्वयंसेवी इकट्ठे हो गये जिन्होंने 'रिचमण्ड चलो' के नारे लगाने शुरू किये। वास्तव में उत्तरी राजनीतिज्ञों, प्रेस और सामान्य जनता में यह विश्वास था कि दक्षिण को एक ही युद्ध में परास्त कर वापस संघ में ले आया जायेगा। परिणामस्वरूप, सेनापतियों के मत के विरुद्ध इस स्वयंसेवी सेना ने रिचमण्ड की ओर प्रस्थान किया, परन्तु 21 जुलाई, 1861 ईसवी को बुल रन (Bull Run) के स्थान पर मुठभेड़ में उनका संगठन टूट गया और यह सेना वाशिंगटन की ओर वापस भागी। इस पराजय के बाद लिंकन ने जनरल जार्ज मैक्लीलन (George Meclellan) को संघीय सेना का भार सौंपा। मैक्लीलन वैस्ट पॉइन्ट में प्रशिक्षित था और समकालीन युद्ध प्रणालियों से परिचत था। उसने संघीय सेना को संगठित करने का प्रयत्न किया, परन्तु मैक्लीलन की कार्य प्रणाली बहुत धीमी थी। 1862 ईसवी के शुरू में उसने घमण्ड से कहा था कि वह दस दिन के अन्दर रिचमण्ड पहुँच जायेगा, क्योंकि उसने संघीय सेना को कुछ ही महीनों में अनुशासित कर दिया था। लेकिन नये सेनापति में सबसे बड़ा दोष यह था कि वह आवश्यकता से अधिक सावधानी में विश्वास करता था और वह बड़ी कठिनाई से नई संगठित सेना को लेकर रिचमण्ड जाने को तैयार हुआ। परन्तु एक बार फिर परिसंघ की सेना ने उसे लौटने पर मजबूर कर दिया।

इस पराजय से निराश होकर लिंकन ने जनरल जॉन पोप (John Pope) की अध्यक्षता में दूसरी सेना भेजी। अगस्त, 1862 ईसवी में यह सेना भी बुल रन के दूसरे युद्ध में पराजित होकर वाशिंगटन लौटी। इन विजयों से उत्साहित होकर दक्षिण के सेनापति ली ने पाटोमैक नदी को पार कर मेरीलैण्ड राज्य में प्रवेश किया। एण्टीटैम (Antieteam) के स्थान पर युद्ध लड़ा गया, पर ली को सफलता नहीं मिली और मजबूर होकर उसे वर्जीनिया वापिस लौटना पड़ा। सितम्बर, 1862 ईसवी में ऐण्टीटैम के युद्ध में संघीय सेनाओं को पहली बार कुछ सफलता मिली। एण्टीटैम के बाद ली का पीछा नहीं करने के कारण राष्ट्रपति ने मैक्लीलन से अप्रसन्न होकर उसके स्थान पर जनरल बर्नसाइड (Burnside) को सेना का नेतृत्व दिया। वह शीघ्र ही फ्रेड्रिक्स्बर्ग (Fredricksburg) के स्थान पर ली की सेना से हार गया। बर्नसाइड को हटा कर अब जनरल हूकर (Hooker) को सेनापति बनाया गया, परन्तु उन्होंने त्याग पत्र दे दिया। इस प्रकार पूर्व में संघ की सेनाएँ हारती जा रही थीं और लिंकन के सामने यह कठिन समस्या थी कि अब किसको सेनापति बनाया जाये जो पराजय के क्रम को तोड़ सके। यह काम अब जनरल जार्ज मीड (George Meade) को सौंपा गया। गैटिसबर्ग (Gattisburg) के स्थान पर एक बार फिर भयंकर युद्ध हुआ जिसमें दोनों तरफ काफी क्षति हुई, परन्तु विजय अन्त में मीड की सेना को ही मिली। यह युद्ध महत्त्वपूर्ण रहा, क्योंकि इसके बाद संघ की सेना ने परिसंघ की सेना को निरन्तर पीछे हटाना शुरू कर दिया।

जब पूर्वी क्षेत्र में घमासान लड़ाई हो रही थी, पश्चिम में भी युद्ध तेजी से चल रहा था तब संघीय रणनीति के अनुसार मिसूरी राज्य पर अधिकार करना आवश्यक था और यह कार्य जनरल

लियोन (Leon) को सौंपा गया। परन्तु युद्ध में लियोन की मृत्यु के कारण कुछ समय के लिए यह उद्देश्य पूरा नहीं हो सका। 1862 ईसवी के प्रारम्भ में सिनसिनाटी (Cincinati) में दो सैनिक केन्द्र खोले गये। पहले केन्द्र के कमाण्डर ब्यूल (Buell) थे जिनकी सेना ने परिसंघीय सेना को पूर्वी केन्टकी राज्य की सीमा से खदेड़ दिया। यूलिसिस ग्रान्ट (Ulysses Grant) के नेतृत्व में दूसरी सेना ने हेनरी (Henry) और डोनलसन (Donelson) किलों पर अधिकार कर लिया जिससे पश्चिमी टैनेसी के क्षेत्र में उसका अधिकार हो गया। परिसंघीय सेना ने एक बार फिर हमला किया, परन्तु ग्रान्ट अपने स्थान पर डटा रहा। इन विजयों ने ग्रान्ट की प्रतिष्ठा को चार चाँद लगाये और आगे चल कर यह संघीय सेना के मुख्य नेता के रूप में सामने आया। अन्य जनरलों की भांति वह भी वेस्ट पाईन्ट से प्रशिक्षण प्राप्त किये हुए था, परन्तु मैक्सिको के युद्ध के बाद अधिक शराब पीने के कारण 1854 ईसवी में उसे सेना से त्याग पत्र देना पड़ा था। गृह युद्ध शुरू होने पर जब सेवानिवृत्त अफसरों की आवश्यकता पड़ी , तो उसे पुन: सेना में ले लिया गया। कुछ सफल अभियानों के बाद उसे ब्रिगेडियर जनरल का पद दिया गया। 1862 ईसवी के युद्धों की सफलताओं ने लिंकन को प्रसन्न कर दिया। अगले वर्ष ग्रान्ट को मिसीसिप्पी क्षेत्र की सेनाओं का मेजर जनरल नियुक्त कर दिया गया।

एन्टीटैम की विजय के बाद उत्तरी राज्यों की स्थिति में कुछ मजबूती आई। लिंकन को अब ध्यान आया कि दासों को स्वतन्त्र करने की दिशा में कुछ कदम उठाये जायें। इसीलिए 22 सितम्बर, 1862 ईसवी को उसने एक घोषणा पत्र जारी किया जिसके अनुसार विद्रोही राज्यों में 1 जनवरी, 1863 ईसवी से दासों को मुक्त कर देने का प्रावधान था। इसका तात्पर्य यह नहीं था कि इस घोषणा के साथ ही व्यवहार में दासता का अन्त हो गया, परन्तु इसके अनुसार जैसे-जैसे दक्षिणी राज्यों पर विजय होती गई वैसे ही उन राज्यों के दासों को स्वतन्त्र कर दिया गया। परिणामस्वरूप लगभग डेढ़ लाख स्वतन्त्र किये गये दास संघीय सेना में भर्ती हो गये। इस घोषणा का एक दुष्परिणाम भी रहा, क्योंकि इससे दक्षिणी राज्यों में उत्तर के प्रति विरोध की भावना और तीव्र हो गई और अब बातचीत द्वारा शान्ति स्थापित करना सम्भव नहीं रहा।

1862 ईसवी में पश्चिम में ग्रान्ट अपने मोर्चे पर जमा हुआ था। इस वर्ष के मध्य तक संघीय सेना ने मैमफिस (Memphis) और न्यू आरलिन्स के स्थान जीत लिये थे। अब विक्सबर्ग ही ऐसा बिन्दु रहा था जिसके द्वारा दक्षिणी राज्य पश्चिमी क्षेत्र से सामग्री और सैनिक मंगवा सकते थे। यदि विक्सबर्ग उनके हाथ से निकल जाता था, तो दक्षिणी परिसंघ लगभग दो अलग-अलग भागों में बंट जाता, परन्तु विक्सबर्ग पर अधिकार करना आसान नहीं था। यद्यपि दोनों राज्यों की सेना की संख्या लगभग बराबर थी, परन्तु ग्रान्ट ने परिसंघ की सेना की सामग्री सम्बन्धी कमजोरी का लाभ उठाया। कई महीनों के घेरे के बाद 4 जुलाई को ग्रान्ट ने विक्सबर्ग को विजय कर लिया। इस विजय ने मिसिसीप्पी नदी पर संघीय सेना का अधिकार स्थापित कर दिया। गैटिसबर्ग और विक्सबर्ग के युद्ध उत्तरी अमेरिका के इतिहास में महत्त्वपूर्ण हैं, क्योंकि उन्होंने अब संघ की सफलता का मार्ग प्रशस्त कर दिया।

गैटिसबर्ग के युद्ध के बाद कुछ समय के लिए पूर्व में लड़ाई रुक गई थी, क्योंकि दोनों ओर की सेनाओं को अपना पुन: संगठन करने की आवश्यकता थी, परन्तु पश्चिमी क्षेत्र में युद्ध जारी रहा। संघ के सेनापति जनरल रोजक्रेन्स (Rosecrens) ने पूर्वी टैनेसी पर अधिकर करने की योजना बनाई। यद्यपि वह अपने विरोधी जनरल ब्राग (Bragg) को तो परास्त नहीं कर सका परन्तु चटनूगा (Chattanooga) के महत्त्वपूर्ण रेल केन्द्र पर ग्रान्ट की सहायता से उसका अधिकार हो गया। नवम्बर, 1863 ईसवी में ग्रान्ट ने, जो इस समय पश्चिमी सेना का सेनाध्यक्ष था, जनरल ब्राग को परास्त कर एटलान्टा की तरफ लौटने को मजबूर कर दिया। इन विजयों से प्रभावित होकर मार्च, 1864 ईसवी में ग्रान्ट को समस्त संघीय सेनाओं का अध्यक्ष बनाया गया। पश्चिमी क्षेत्र की अध्यक्षता जनरल शर्मन (Sherman) को सौंपी गई। शर्मन ने टैनेसी से जार्जिया की तरफ बढ़ना शुरू किया और सितम्बर में एटलान्टा पर अधिकार कर लिया। इसके बाद शर्मन की सेना जार्जिया राज्य को पार करती हुई समुद्र के किनारे पहुँच कर उत्तरी कैरोलिना में जाकर ग्रान्ट की सेना से मिल गई। शर्मन की सेना ने सिर्फ दक्षिण के मध्य तक ही प्रवेश नहीं किया, परन्तु इन क्षेत्रों में बड़े स्तर पर विनाश भी किया।

पूर्व में ग्रान्ट को अब सम्पूर्ण शक्ति से ली से उलझना था। 1864 ईसवी के मध्य से उन्होंने एक बार फिर रिचमण्ड की ओर बढ़ने का प्रयत्न किया, परन्तु कई महीनों तक उन्हें सफलता नहीं मिली। 1864 ईसवी चुनाव का वर्ष भी था। ग्रान्ट और शर्मन को विशेष सफलता नहीं मिलने के कारण परिसंघ की पराजय अभी दूर मालूम होती थी। उत्तर की सेना में हताहतों की संख्या भी बहुत थी। इस वातावरण में रिपब्लिकन पार्टी की विजय पर शंका प्रगट की जा रही थी। दूसरी तरफ डेमोक्रेटिक पार्टी ने अपने चुनाव अभियान में यह प्रस्ताव रखा कि यदि वे जीत जायेंगे, तो परिसंघ के राज्यों को समझा बुझा कर फिर से संघ में लाने का प्रयत्न करेंगे। चुनाव में कुछ डेमोक्रेटों ने रिपब्लिकन दल की सहायता की और अन्त में लिंकन दुबारा चुनाव जीत गया।

1864 ईसवी के दिसम्बर में युद्ध का पासा फिर संघ के पक्ष में पड़ा। शर्मन अब कैरोलिना राज्यों में लड़ रहा था। दूसरी तरफ ग्रान्ट की योजना रिचमण्ड में ली को घेरने की थी। ग्रान्ट के दबाव में 2 अप्रैल, 1865 ईसवी को ली ने रिचमण्ड खाली कर दिया, परन्तु शैरिडन (Sheridan) ने उसके पीछे लौटने का मार्ग रोक लिया। इस प्रकार ली घिर गया। परिसंघ का राष्ट्रपति जैफरसन डेविस (Jefferson Davis) राजधानी छोड़ कर पहाड़ों की तरफ भागा, परन्तु कुछ ही समय बाद उसे पकड़ लिया गया। 9 अप्रैल को ली ने अपनी हार सामने देख कर एपोमेटोक्स (Appomattox) के स्थान पर समर्पण कर दिया और 26 मई तक परिसंघ सेनाओं ने पूर्ण रूप से हथियार डाल दिये। इस प्रकार लगभग चार वर्ष के बाद गृह युद्ध समाप्त हुआ। दुर्भाग्य से राष्ट्रपति लिंकन युद्ध का अन्त नहीं देख सके, क्योंकि 14 अप्रैल, 1865 ईसवी को उनकी हत्या कर दी गई।

VIII. गृह युद्ध काल में विदेशी शक्तियों का दृष्टिकोण :

गृह युद्ध का अध्ययन करते समय विदेशी राज्यों के दृष्टिकोण को देखना भी आवश्यक है। उत्तर के सामने यह महत्त्वपूर्ण प्रश्न था कि इंग्लैण्ड किस सीमा तक परिसंघ का पक्ष लेता है।

दक्षिण से इंग्लैण्ड की कपड़ा मिलों के लिए कपास जाती थी, परन्तु 1861 ईसवी में जब उत्तरी जल सेना ने दक्षिण के बन्दरगाहों पर नाकाबन्दी करने का प्रयत्न किया तो इंग्लैण्ड को कपास मिलने में कठिनाई की सम्भावना हुई। दक्षिण के नेता यह आशा करते थे कि कपास नहीं मिलने पर इंग्लैण्ड उनके पक्ष में हस्तक्षेप करेगा और नाविक घेरे को हटवाने का भी प्रयत्न करेगा। परन्तु इंग्लैण्ड के उद्योगपतियों के पास काफ़ी मात्रा में कपास इकट्ठी थी, जिससे 1863 ईसवी तक उनको कपड़ा उत्पादन में कठिनाई नहीं हुई। दूसरी तरफ, इंग्लैण्ड का व्यापार उत्तरी राज्यों से भी बड़े स्तर पर था। इंग्लैण्ड उत्तर से अनाज खरीदता था और इसके बदले स्टील और युद्ध सामग्री भेजता था। यह सत्य है कि उत्तर के द्वारा लगाये गये नाविक प्रतिबन्धों से इंग्लैण्ड के व्यापार को कुछ सीमा तक क्षति पहुँची और ऐसे अवसर भी आये जब कुछ जहाज, जो दक्षिणी बन्दरगाहों को सामान लेकर जा रहे थे, पकड़ लिये गये फिर भी इंग्लैण्ड ने इस पर कोई विशेष आपत्ति नहीं उठाई। दो अवसरों पर अवश्य राजनीतिक संकट पैदा हो गया। नवम्बर, 1861 ईसवी में जब परिसंघ के दो कूटनीतिज्ञ, जैम्स मैसन (James Mason) तथा जॉन स्लिडिल (John Slidell) अंग्रेज यात्री जहाज ट्रेन्ट (Trent) से यूरोप का सफर कर रहे थे, तब उत्तर के एक युद्ध पोत ने इन्हें पकड़ कर बन्दी बना लिया। इस पर इंग्लैण्ड की सरकार ने प्रतिरोध किया। राष्ट्रपति लिंकन ने इंग्लैण्ड से इस प्रश्न पर झगड़ा नहीं करने की दृष्टि से मैसन और स्लिडिल को तुरंत छोड़ दिया। दूसरा बड़ा संकट इस बात पर उठा कि यह पता चला कि परिसंघ के उपयोग के लिए इंग्लैण्ड के जहाज बनाने के कारखानों में युद्ध पोतों का निर्माण हो रहा था। इस पर इंग्लैण्ड में संघ के प्रतिनिधि चार्ल्स एडम्स (Charles Adams) ने यह माँग की कि इस निर्माण कार्य को तुरन्त बन्द कर दिया जाये, क्योंकि आगे-पीछे इन जहाजों का उपयोग संघ के विरुद्ध किया जायेगा। कुछ हिचकिचाहट के बाद इंग्लैण्ड ने अप्रैल, 1863 ईसवी में नये जहाजों के निर्माण पर प्रतिबन्ध लगा दिया। लेकिन इससे पहले जुलाई, 1862 ईसवी में अलाबामा नामक जहाज इंग्लैण्ड से निकल भागा और उत्तरी राज्यों को उसने क्षति पहुँचाई। आगे चल कर इस प्रश्न पर इंग्लैण्ड और संयुक्त राज्य अमेरिका में काफी वाद-विवाद हुआ।

वह एक यूरोपीय संघ बना कर अमेरिका के गृह युद्ध में हस्तक्षेप करना चाहता था, किन्तु इंग्लैण्ड व रूस ने उसके प्रस्ताव को स्वीकार नहीं किया। इसके पश्चात् नेपोलियन तृतीय ने लिंकन के पास मध्यस्थता करने का प्रस्ताव भेजा, किन्तु लिंकन ने भी इसे अस्वीकार कर दिया। चार्ल्स बियर्ड के अनुसार ''यदि 1863 में गेटिसबर्ग और विक्सबर्ग में निर्णायात्मक उत्तरी विजय नहीं होती तो फ्रांसीसी और ब्रिटिश हस्तक्षेप हो जाता।'' परन्तु इन विजयों ने विदेश सत्ताओं को स्पष्ट चेतनावनी देने का कार्य किया। इसके पश्चात् नेपोलियन तृतीय ने अमेरिका के गृह युद्ध का लाभ उठाने का प्रयत्न किया। अमेरिका के दक्षिण में स्थिति मैक्सिको पर अधिकार करने की दृष्टि से तथा अपने उम्मीदवार मैक्सी मिलियन (Maxi Millian) को एक कठपुतली शासक बनाने के लिए उसने एक सेना मैक्सिको भेजी। 1863 ईसवी तक फ्रांसीसियों ने मैक्सिको के काफी बड़े क्षेत्र पर अपना प्रभाव स्थापित कर लिया। मैक्सिको के भूतपूर्व राष्ट्रपति जुआरेज (Juarez) ने काफी समय तक अपना संघर्ष जारी रखा। इस प्रकार गृह युद्ध के समय जब फ्रांस ने संयुक्त राज्य की

संकटमय स्थिति का लाभ उठाने का प्रयत्न किया, पर इंग्लैण्ड ने ऐसा करने की कोई चेष्टा नहीं की। वास्तव में इंग्लैण्ड का मध्य और निम्न वर्ग लिंकन की नीतियों का समर्थक था और उसका विश्वास था कि संघ की विजय से सिर्फ दास प्रणाली ही समाप्त नहीं हो जायेगी परन्तु प्रजान्तत्रात्मक प्रणाली का भी विकास होगा।

IX. परिणाम :

(1) आधुनिक रणनीति का प्रथम युद्ध - 1865 ईसवी में गृह युद्ध समाप्त हुआ। युद्ध के परिणाम कुछ क्षेत्रों में बड़े दूरगामी साबित हुए। दोनों राज्यों के संघर्ष में पहली दफा आधुनिक शस्त्रों और उपकरणों का प्रयोग किया गया। पहली बार तोपखाने तथा गोला बारूद काम में लाया गया। अमेरिका के इतिहास में यह प्रथम युद्ध था जिसमें बख्तरबन्द युद्ध पोतों ने संघर्ष किया एवं रेल व सड़क यातायात आदि संचार साधनों का व्यापक प्रयोग किया गया। इस युद्ध में मशीनगनों का प्रयोग आरम्भ हुआ। पहली बार घायल सैनिकों की चिकित्सा का सुव्यवस्थित ढंग से प्रबन्ध किया गया। प्रथम बार भूमिगत तथा जलगत सुरंग बिछाई गई तथा पनडुब्बियाँ काम में लाई गई। इसमें पहली दफा समाचार पत्रों ने युद्ध की गतिविधियों का विस्तृत विवरण प्रकाशित किया। अमेरिका के राष्ट्रीय निर्वाचनों में सैनिकों द्वारा मताधिकार के प्रयोग का यह पहला उदाहरण है। इस प्रकार यह माना जाता है कि आधुनिक तकनीक पर अमेरिका में लड़े जाने वाला यह प्रथम युद्ध था।

(2) जन धन की हानि- 1919 ईसवी तक अमेरिका में जितने भी युद्ध हुए उनमें यह गृह युद्ध संलग्न मनुष्यों तथा विस्तीर्ण क्षेत्र की दृष्टि से सबसे बड़ा युद्ध था। इस युद्ध में अमेरिका के तीन लाख साठ हजार और दक्षिण के दो लाख अठावन हजार व्यक्तियों के मारे जाने का अनुमान है। इनके अतिरिक्त लाखों व्यक्ति ऐसे थे जो शारीरिक रूप से अपंग हो गये थे। युद्ध में दोनों पक्षों का पर्याप्त धन व्यय हुआ। संघीय सरकार का औसतन व्यय तीस लाख डालर प्रतिदिन था। युद्ध की समाप्ति पर उस पर दो अरब पिचासी करोड़ डालर का ऋण था। राज्यों तथा नगरों द्वारा किया गया व्यय लगभग पचास करोड़ डालर था। इसके अतिरिक्त दक्षिणी राज्यों की आय और सम्पत्ति का व्यापक विनाश भी हुआ। सरकारी ऋणों पर दिया गया ब्याज और मृत सैनिकों की विधवाओं तथा अनाथों को दी गई पेंशनें संघीय सरकार पर एक बड़े भार के रूप में थे। दक्षिण के सभी बैंक और बीमा कम्पनियों का दिवाला निकल गया। एच.डब्ल्यू. एल्सन (H.W.Elson) ने युद्ध का कुल व्यय दस अरब डालर आंका है।

(3) पारस्परिक घृणा की भावना में वृद्धि - गृह युद्ध ने उत्तरी और दक्षिणी राज्यों के निवासियों के मध्य कटुता की भावना में वृद्धि की। नेविन्स व कोमाजेर के अनुसार युद्ध ने उत्तर व दक्षिण में ऐसी घृणा का वातावरण छोड़ा जो वर्षों तक कायम रहा। युद्ध की समाप्ति पर राष्ट्रपति लिंकन ने कहा था कि प्रत्येक दक्षिणी राज्य को अपनी पराजय की भावना को भूल कर संयुक्त राज्य की एकता के लिये कार्य करना चाहिए। उसने राष्ट्रपति का पद दूसरी बार ग्रहण करते समय कहा था, किसी से भी द्वेष न रखते हुए, सबके प्रति उदार रह कर, सत्य पर दृढ़ रह कर, जैसा कि

उसे देखने की ईश्वर ने हमें शक्ति दी है। हमें उस कार्य को पूरा करना चाहिये, जो हमने हाथ में लिया है। किन्तु दोनों पक्षों के बीच घृणा की भावना काफी समय तक विद्यमान रही। इसके फलस्वरूप बहुत से लोग विशेषकर राजनीतिक क्षेत्र में, एक दूसरे के प्रति असहिष्णु हो गये। उत्तर के अनेक रिपब्लिकनों ने वोट प्राप्त करने के लिए अक्सर लिंकन की 'खून भरी कमीज़' का प्रदर्शन किया। इसके विपरीत डेमोक्रेट दल के लोगों ने अपनी पार्टी के झण्डे तले एकत्र होकर 'संगठित दक्षिण दल' बनाया।

(4) संघ की विजय एवं सुदृढ़ राजनीति व्यवस्था की स्थापना - संघ के नेताओं की मान्यता थी कि उन्होंने राष्ट्रीय एकता की रक्षा और राज्यों के संघ परित्याग के सिद्धान्तों के विरोध में शस्त्र उठाये थे। इस दृष्टि से गृह युद्ध में उनके उद्देश्य पूरे कर दिये। राष्ट्रीय एकता अब सुरक्षित थी तथा कोई भी राज्य संघ से पृथक् होने के अधिकार की माँग नहीं कर सकता था। संघ की विजय ने सदैव के लिए कैलहुन के सिद्धान्तों को समाप्त कर दिया, क्योंकि दक्षिणी राज्यों ने यह स्वीकार कर लिया कि इस प्रश्न को दुबारा नहीं उठाया जायेगा परन्तु इसका अर्थ यह नहीं था कि राज्यों के अधिकार समाप्त हो गये अथवा राज्य अधिकारों के समर्थकों ने केन्द्रीकरण के विरुद्ध आवाज उठाना बन्द कर दिया। वास्तव में युद्ध समाप्ति के बहुत समय बाद तक भी डेमोक्रेटिक दल संघीय सरकार से राज्यों के अधिकारों की सुरक्षा की माँग करता रहा। यद्यपि वे ऐसा एक विशेष कारण से कर रहे थे, क्योंकि वे लम्बे समय तक विपक्षी दल के रूप में थे। एक बार सत्ता प्राप्त कर लेने के बाद डेमोक्रेटों ने भी संकटकालीन स्थिति में केन्द्र को शक्तिशाली बनाने पर जोर दिया।

(5) लम्बे समय के लिए रिपब्लिकन दल की प्रभुत्ता- गृह युद्ध ने काफी समय के लिए रिपब्लिकन दल की प्रभुत्ता और लिंकन उपाख्यान की स्थापना की। रिपब्लिकन दल इतनी दृढ़तापूर्वक अपना प्रभाव जमाये रहा कि 1912 ईसवी तक एक भी राष्ट्रपति डेमोक्रेटिक दल से नहीं चुना जा सका। रिपब्लिकनों ने देश को हर चुनाव में ध्यान दिलाया कि दक्षिणीवासी देशीद्रोही थे जिन्होंने अमेरिका की एकता को नष्ट करने का प्रयत्न किया, जबकि दूसरी तरफ रिपब्लिकन दल ने अमेरिका को इस संकट से बचाया। इतना ही नहीं उन्होंने उन्नीसवीं सदी के हर चुनाव में राष्ट्रपति लिंकन के शहीद होने की याद दिलाई और हर बार उनकी खूनी कमीज़ का प्रदर्शन किया। लिंकन की याद ताजा रखने के लिए कई स्थानों पर स्मारक बनाये गये और साहित्यिक रचनाएँ तैयार की गई। इन कार्यों से रिपब्लिकन दल ने राजनीतिक जीवन में अपना एकाधिकार स्थापित करने का पूरा प्रयत्न किया और उन्हें काफी मात्रा में सफलता भी मिली। इतना ही नहीं, पहली दफा राष्ट्रपति तथा कांग्रेस ने खुल कर अपनी शक्तियों का प्रयोग किया, जिसका अवसर उन्हें इससे पहले नहीं मिला था।

(6) यूरोपीय मामलों में अमेरिका की अरुचि - 1865 ईसवी के बाद कुछ समय के लिए विदेशों के प्रति अमेरिका में उदासीनता पैदा हो गई। 1860 ईसवी से पहले अमेरिका यूरोप के प्रति काफी जागरूक था, परन्तु गृह युद्ध के बाद एक नये उठते हुए राष्ट्र के रूप में वह अपनी ही समस्याओं में डूबने लगा। परिणामस्वरूप यूरोप के प्रसंगों में उसकी रुचि कम हो गई। नये राष्ट्र

का सम्पूर्ण ध्यान अब अपने ही आन्तरिक विकास में लगने लगा। देश की उपजाऊ भूमि काफी अनाज पैदा कर सकती थी, उसकी प्रचुर खनिज सम्पदा एक नये औद्योगिक राष्ट्र के निर्माण में सहायक हो सकती थी। इसलिए यह अमेरिका के हित में ही था कि वह दूसरे देशों के मामलों में हस्तक्षेप नहीं करके अपने को संगठित करे। गृह युद्ध ने विश्व राष्ट्रों को यह स्पष्ट कर दिया कि अमेरिका के साधन काफी हैं और वह लम्बे समय तक युद्ध लड़ने की क्षमता रखता है। अमेरिका के लिए अब मुनरो सिद्धान्त अब सिर्फ एक अभिलाषा मात्र ही नहीं रह गया था, वह उसको व्यवहार में भी ला सकता था।

(7) आर्थिक प्रभाव : (i) दक्षिण में व्यापक क्षति - आर्थिक क्षेत्र में गृह युद्ध के परिणाम बड़े हानिकारक सिद्ध हुए। मोरिसन एवं कोमेज़र के अनुसार दक्षिण परिसंघ के पतन से राजनैतिक अधिकार प्राप्त दक्षिण के बड़े-बड़े भू-स्वामियों का अन्त हो गया। दक्षिण के सैनिक युद्ध से जब वापस लौटे तब अपने प्रदेश की बर्बादी से बहुत द्रवित हुए। उत्तर की सेनाओं ने उनकी फसलों को नष्ट कर दिया और उनके यातायात और संचार के साधनों को बुरी तरह से अव्यवस्थित कर दिया था। बैंक और बीमा कम्पनियों के पास पूँजी नहीं थी और परिसंघ सरकार की सारी सम्पत्ति संघीय कोष विभाग ने अपने अधिकार में कर ली थी। इस प्रकार दक्षिण का विनाश विस्तृत था। बिना निग्रो दासों की सहायता के खेतों पर अनाज और कपास उत्पादन का कार्य नहीं हो सकता था। परन्तु नीग्रो अब स्वतन्त्र थे और कानूनी दृष्टि से उनसे काम नहीं लिया जा सकता था। हजारों ऐसे नीग्रो जो उत्तर की सेवा में भर्ती हो गये थे अब दक्षिण में बिना काम के घूमते थे। 1865 ईसवी में उनमें से बहुत से भूख अथवा ठंड से मर गये। इस प्रकार एक तरफ जब नीग्रो परेशान थे तथा दूसरी तरफ उनकी सेवाओं के अभाव में कृषि उत्पाद का कार्य भी हाथ में नहीं लिया जा सकता था। समस्त दक्षिण में अराजकता की स्थित थी।

(ii) औद्योगिक विकास - युद्धोपरान्त उत्तर के राज्यों में व्यापारिक और औद्योगिक उन्नति के लक्षण दिखाई दिये यद्यपि उत्तर में मजदूरों का अभाव था, परन्तु उनकी कमी को मशीनों और उत्पादन की सुधरी हुई तकनीकी प्रणालियों ने पूरा किया जिससे औद्योगिक विकास सम्भव हुआ। युद्ध के समय बड़े उद्योगपतियों ने बहुत धन कमाया जिससे राजनैतिक जीवन में उन्होंने अपना अच्छा प्रभाव स्थापित कर लिया। सरकार की कर सम्बन्धी नीति अब कुछ समय के लिए इन्हीं उद्योगपतियों द्वारा निर्देशित की जाने लगी। इनका उद्देश्य ऐसी कर व्यवस्था स्थापित करना था जिसमें कृषक और छोटे व्यापारी वर्ग की तुलना में बड़े उद्योगों को लाभ पहुँचे। इस कारण आगे चलकर कृषक और मजदूर वर्गों ने बड़े उद्योपतियों की शक्ति कम करने के लिए आवाज उठाई। कुछ समय तक दक्षिणी राज्यों में भी औद्योगिक प्रसार हुआ। दक्षिण में कोयला, लोहा और तांबे की खानें थी, जिसमें अब उत्पादन शुरू किया गया, क्योंकि दक्षिणवासी यह समझ गये थे कि उत्तर की विजय का प्रमुख कारण वहाँ का औद्योगिकरण था। दक्षिण में कपास और तम्बाकू के अधिक उत्पादन के कारण कपड़ा मिलें तथा तम्बाकू सम्बन्धी फैक्ट्रियाँ स्थापित करने का भी अच्छा अवसर था। सस्ती दरों पर मजदूरों की उपलब्धि वहाँ औद्योगीकरण में और सहायक हो

सकती थी। इस प्रकार जब गृह युद्ध के बाद एक तरफ दक्षिणी राज्यों का विस्तृत विनाश हुआ, दूसरी तरफ उनके आर्थिक और औद्योगिक विकास का सूत्रपात भी हुआ। परिणामस्वरूप एक ऐसे दक्षिण का जन्म हुआ जिसको अमेरिकन इतिहासकारों ने 'नया दक्षिण' (New South) कहा है।

(8) दास प्रथा की समाप्ति - सामाजिक क्षेत्र की सबसे बड़ी उपलब्धि दास प्रथा की समाप्ति थी। यद्यपि 1 जनवरी, 1863 ईसवी से लिंकन ने दास प्रथा के अंत की घोषणा कर दी थी, परन्तु इस घोषणा को गृह युद्ध के बाद ही क्रियान्वित किया जा सका। देश के लाखों दास स्वतन्त्र कर दिये गये लेकिन उनकी सामाजिक और आर्थिक स्थिति बड़ी खराब थी। वे लक्ष्यहीन हो गये और बराबर इस आशा में रहे कि सरकार उन्हें काम करने और रहने की सुविधा देगी। उनके पुनर्स्थापन का कार्य भी कठिन था, क्योंकि उनके प्रति पुरानी भावनाओं को छोड़ना एकदम सम्भव नहीं हो सकता था। युद्ध के तुरन्त बाद उनकी शिक्षा के लिए प्रबन्ध करना आवश्यक था क्योंकि श्वेतों ने उनको समाज में आसानी से नहीं अपनाया। काफी समय तक उन्हें अलग गिर्जाघरों मे जाना पड़ता था। उनको डराने के लिए, 'नाइट्स ऑफ व्हाइट कैमिलिया' (Knights of White Camellia) तथा कू-क्लक्स क्लान (Ku-Klux Klan) जैसे गुप्त संघ सक्रिय रहे। नीग्रो लोगों के साथ मार-पीट और दुर्व्यवहार भी सामान्य बात हो गई। परिणामस्वरूप नीग्रो और श्वेतों का मतभेद अमेरिका के इतिहास में आज तक भी एक समस्या बना हुआ है।

(9) नैतिक मूल्यों में गिरावट - लम्बे समय तक युद्ध चलते रहने के कारण उसके बाद समाज का नैतिक स्तर कुछ अंशों में गिरा। लोगों में उत्पात और अपराध की भावना बढ़ी जो युद्ध के बाद भी चलती रही। शीघ्र धनवान बनने की प्रवृत्ति का विकास हुआ, जिसके कारण गलत तरीकों से धन कमाना लोकप्रिय होने लगा। यह कहा जाता है कि अमेरिका के इतिहास में उन्नीसवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध एक अत्यन्त भ्रष्ट युग था।

(10) दक्षिणवासियों का भावनात्मक एकीकरण - गृह युद्ध ने दक्षिणवासियों में एक नई भावना उत्पन्न कर दी। उनकी पराजय से उनके हृदय में अपनी सभ्यता के प्रति विरक्ति नहीं हुई; उल्टे उत्तर द्वारा उत्पीड़न होने के कारण उनमें अपनी पुरातन सभ्यता की रक्षा करने तथा क्षेत्रीय एकता बनाये रखने के प्रति जागरण हुआ। अपने कष्टों के लिए उन्होंने रिपब्लिकन दल और विशेष रूप से उसके उग्रवादी वर्गों को उत्तरदायी ठहराया। उनके विचार में नीग्रो वर्ग से किस प्रकार के सम्बन्ध होने चाहिए, यह वे ज्यादा अच्छी तरह समझते थे। अत: रिपब्लिकनों द्वारा उन पर थोपे गये नियम उन्हें सह्य नहीं थे। उत्तर के प्रति उनकी घृणा तीव्र हो गई। गृह युद्ध के पहले वे अपने को दक्षिण के किसी एक राज्य का निवासी कहते थे, परन्तु अब दक्षिणवासी सम्बोधन उनको प्रिय लगता था। इस भावनात्मक एकीकरण ने उनक देश को 'सुदृढ़ दक्षिण' (Solid South)की संज्ञा दी। नि:सन्देह आगे आने वाले समय में उत्तर और दक्षिण के इस विभाजन ने देश में कुछ आन्तरिक कठिनाइयाँ पैदा कर दीं।

उपर्युक्त अध्ययन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि गृह युद्ध के परिणाम अच्छे तथा बुरे दोनों ही रहे। एक तरफ जब बड़े स्तर पर विनाश हुआ, तब दूसरी तरफ अमेरिका प्रगति और विकास के पथ पर अग्रसर भी हुआ। इस सम्बन्ध में एल्सन का यह कथन उपयुक्त है कि ''युद्ध एक शल्य क्रिया थी। यह दु:खदायी होते हुए भी संयुक्त राज्य के लिए एक अनकहा आशीर्वाद बन गई।'' इसने दासता तथा संघीय शक्ति के प्रभुत्व सम्बन्धी प्रश्नों का समाधन कर अमेरिका में पुनर्निर्माण के युग का मार्ग प्रशस्त किया।

□□□

अध्याय - 14

रिपब्लिकन राष्ट्रपतियों का प्रशासन (1865-1885 ईसवी)

□ एल. पी. माथुर

I. गृह युद्ध के अन्त में अमेरिकी सरकार के सम्मुख समस्याएँ :

गृह युद्ध की समाप्ति पर अमेरिकी सरकार को अनेक गम्भीर समस्याओं का सामना करना पड़ा। चार वर्ष के युद्ध में दक्षिण के प्रदेशों की आर्थिक व्यवस्था नष्ट हो चुकी थी। वहाँ के अधिकांश कारखाने, रेल मार्ग व सडकें युद्ध में क्षतिग्रस्त हो गये थे। पुनर्निर्माण के कार्यों के लिए दक्षिण के पूँजीपतियों के पास धन का अभाव था, क्योंकि उनकी पूँजी युद्ध में व्यय हो गई थी। दक्षिण के राज्यों के बैंक और बीमा कम्पनियों की आर्थिक स्थिति भी अत्यन्त शोचनीय थी। युद्ध की समाप्ति के तुरन्त बाद संघीय कोष विभाग द्वारा दक्षिण परिसंघ के राज्यों की सम्पत्ति जब्त करने के फलस्वरूप वहाँ की सरकारों की आर्थिक दशा और भी बिगड़ गई थी। कृषि की दशा भी अच्छीं नहीं थी। दक्षिणी राज्यों के बड़े भूमिपति अब नीग्रो दासों की सहायता से वंचित हो गये थे। यद्यपि लगभग साढ़े तीन लाख व्यक्ति दासता के बन्धन से मुक्त हो गये थे, किन्तु उनके पास जोविका के कोई भी साधन नहीं थे। इन परिस्थितियों में संघीय सरकार को दक्षिण के राज्यों के पुनर्निर्माण का कार्य अत्यन्त दुष्कर प्रतीत हो रहा था।

II. दक्षिण के पुनर्निर्माण का कार्य :

(1) लिंकन के प्रयत्न - लिंकन की यह आशा फलीभूत नहीं हुई कि उत्तर व दक्षिण के राज्यों के निवासी पारस्परिक द्वेष की भावना को शीघ्र भूल कर सहयोग के साथ पुनर्निर्माण के लिए कार्य करेंगे। पार्केस के अनुसार उस समय उत्तर के राज्यों के अनेक व्यक्ति दक्षिण के प्रदेशों को विजित इलाके मानते थे। रिपब्लिकन दल के उग्रवादी (Radicals) यह चाहते थे कि दक्षिण के भूमिपतियों की शक्ति पूर्णतया नष्ट कर दी जाये। ऐसी परिस्थितियों में लिंकन के सामने यह समस्या थी कि पराजित परिसंघ के ग्यारह राज्यों को पुन: संघीय सरकार में सम्मिलित करते समय क्या शर्तें रखी जायें और उनके विलय के लिए क्या प्रक्रिया अपनाई जाये? लिंकन ने इस समस्या पर गम्भीरता से विचार कर दिसम्बर, 1863 ईसवी में राष्ट्रपति की क्षमा शक्ति का प्रयोग कर परिसंघ के सैनिक व प्रशासनिक अधिकारियों के अतिरिक्त उन व्यक्तियों को, जो कि दक्षिण

के राज्या के नागरिक संघ के प्रति स्वामी-भक्ति की शपथ लेने को तैयार थे, क्षमा प्रदान करने की घोषणा की। यह भी घोषित किया गया कि जब किसी दक्षिण राज्य में 1860 ईसवी के चुनाव में मत देने वाले व्यक्तियों में से दस प्रतिशत व्यक्ति संविधान, कांग्रेस द्वारा पारित अधिनियम और राष्ट्रपति द्वारा दास प्रथा पर की गई घोषणाओं का समर्थन करने की शपथ ले लेंगे तो वे अपने प्रदेश में सरकार का संगठन कर सकेंगे और सरकार उन्हें मान्यता देगी, किन्तु उनके द्वारा भेजे गये सदस्यों को कांग्रेस में स्थान ग्रहण करने की अनुमति देने का अधिकार दोनों सदनों को होगा। लिंकन की इस घोषण के विरोध में कांग्रेस ने 1864 ई. में वेड डेविस बिल (Wade Davis Bill) प्रस्तावित किया, किन्तु लिंकन ने उसे पारित नहीं होने दिया। अप्रैल, 1865 में लिंकन की हत्या ने दक्षिण के पुनर्निर्माण की प्रक्रिया को पूर्णतया परिवर्तित कर दिया।

III. जॉनसन का प्रशासन (1865-69 ई.) :

लिंकन की मृत्यु पर उपराष्ट्रपति एन्ड्र्यू जॉनसन राष्ट्रपति बना। वह दक्षिण के एक राज्य नेसी का निवासी था। गरीब परिवार में पैदा होने के कारण वह दक्षिण के भूमिपतियों से घृणा करता था। यद्यपि वह एक कुशल वक्ता और योग्य सेनापति था। किन्तु राजनीतिक वाद-विवादों को सुलझाने में उसने दक्षता का परिचय नहीं दिया। वह अपने सार्वजनिक भाषणों में अपने विरोधियों की निन्दा करने में नहीं चूकता था। दक्षिण के राज्यों के निवासियों के साथ सहानुभूति रखते हुए भी वह उनमें पारस्परिक सहयोग की भावना पैदा न कर सका।

जॉनसन के सम्मुख पुनर्निर्माण का कार्य :

(1) उद्देश्य- रिपब्लिकन दल के सामने दक्षिण के राज्यों के पुनर्निर्माण का कार्य था। एलन नेविन्स और हेनरी स्टील कौमेजर के अनुसार मोटे तौर पर पुनर्निर्माण के तीन निम्नांकित उद्देश्य थे-

1. दक्षिण राज्य समूह के मामलों को समाप्त करना, दक्षिण राज्यों को फिर से संघ में लाना, राष्ट्रीय राजनीति और प्रशासन के भग्न तन्त्रों को पुनरुज्जीवित करना;
2. नव-मुक्त नीग्रो को न केवल उनकी आजादी, बल्कि उनको राजनीतिक अधिकार दिलाना था; और
3. तटकरों, पश्चिमी भूमियों, बैंकिंग मुद्रा और वित्त तथा ऐसे अन्य हितों के सम्बन्ध में गृह युद्ध के दिनों में बनाये गये कानूनों को कायम रखना और इस काम के लिए दक्षिण में तथा सारे देश में अपने दल को मजबूत बनाना।

इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए स्पष्टत: दो तरीकें थे, एक वैधानिक और दूसरा राजनैतिक। पहला तो यह था कि एपोमेटोक्स में परिसंघ की सेवाओं द्वारा, आत्मसमर्पण के समय लिये गये निर्णयों और नीग्रो लोगों के लिए नागरिक और राजनीतिक अधिकारों की गारंटियाँ स्वयं संविधान में लिख दी जायें। इसके लिए संविधान में संशोधन की आवश्यकता थी। दूसरा तरीका यह था कि नागरिक अधिकारों के लिए कानून बनाकर इन वैधानिक संरक्षणों को मजबूत किया जाये और

भविष्य में नीग्रो सदस्य भर्ती करके तथा व्यवसाय, रेलवे और ऐसे अन्य हितों को अपने पक्ष में करके दक्षिण रिपब्लिकन पार्टी को मजबूत किया जाये।

रिपब्लिकन दल के नेताओं ने इस कार्यक्रम पर चलने का प्रयास किया, किन्तु उन्हें इसको लागू करने में विरोध का सामना करना पड़ा।

(2) नवगठित दक्षिणी राज्यों को मान्यता - लिंकन के समान जॉनसन ने भी दक्षिण के प्रति उदारता की नीति अपनाई। मई, 1865 ईसवी की एक घोषणा में उसने लुईसियाना अरकान्सास और टैनेसी की सरकारों को, जो कि लिंकन के दिसम्बर, 1863 ईसवी की तीन घोषणा की शर्तों को पूरा करने के बाद बनाई गई थी, मान्यता प्रदान की। लिंकन के द्वारा प्रोत्साहित वर्जीनिया की नई सरकार को भी जानसन ने मान्यता दे दी। शेष सात दक्षिण के राज्यों में उसने प्रावधिक सरकारें स्थापित कर दीं। इन सरकारों को यह आदेश दिये गये कि वे शीघ्र ही संविधान के अनुसार चुनाव करायें। केवल कुछ मामलों में उसके आदेश लिंकन के आदेश से भिन्न थे। नये नियमों के अनुसार बीस हजार डालर से अधिक मूल्य की जायदाद वाले व्यक्ति को मताधिकार से वंचित रखा गया अगर उसने स्वेच्छा से गृह युद्ध में भाग लिया हो। ऐसे मनुष्य राष्ट्रपति से व्यक्तिगत प्रार्थना कर अनुमति प्राप्त करके मताधिकार प्राप्त कर सकते थे। इन आदेशों में यह स्पष्ट नहीं किया गया कि एक राज्य की सरकार के निर्माण के पहले संविधान के प्रति शपथ लेने वाले मतदाताओं की संख्या कितनी होनी चाहिए। जानसन ने दक्षिण के राज्यों को आदेश दिये कि वे दास प्रथा को समाप्त करने और युद्ध के संचालन हेतु लिये गये ऋणों को न अदा करने की घोषणा कर दें। शेष मामलों में इन राज्यों को अपने संविधान में परविर्तन करने की पूर्ण स्वतन्त्रता दी गई। जानसन ने यह आशा प्रकट की कि साक्षर नीग्रो मनुष्यों और जायदाद के स्वामी नीग्रो को मताधिकार प्रदान किये जायेंगे।

जुलाई के अन्त तक टैक्सास के अतिरिक्त सभी दक्षिणी राज्यों ने जानसन के आदेशों के अनुसार अपनी सरकारों का संगठन कर लिया था और कांग्रेस में भेजे जाने वाले सदस्यों का चुनाव कर लिया था। मिसीसिप्पी के अतिरिक्त सभी राज्यों ने संघीय संविधान का तेरहवां संशोधन स्वीकार करके दास प्रथा के अन्त की घोषणा भी कर दी, किन्तु दक्षिण की नई सरकारों ने नीग्रो को गोरे व्यक्तियों के समान नागरिक अधिकार नहीं दिये। काले कानून पारित करके इन सरकारों ने उन्हें मताधिकार से वंचित किया। इन कानूनों के अन्तर्गत नीग्रो न्यायपीठ में कार्य नहीं कर सकते थे। किसी मुक्त दास के पास कानूनी जीवन निर्वाह के साधन नहीं होने की दशा में उसे जेल भेजा जा सकता था अथवा उस पर जुर्माना किया जा सकता था। जुर्माना न अदा करने की स्थिति में स्थानीय अधिकारी उन्हें पुराने स्वामी के पास काम करने के लिए भेज सकते थे। कुछ राज्यों ने कृषि और घरेलू कार्यों के अतिरिक्त अन्य व्यवसायों में नीग्रो के काम करने पर प्रतिबन्ध लगा दिये।

(3) रिपब्लिकन दल के उग्रवादियों का दक्षिण के प्रति रवैया - रिपब्लिकन दल के रेडिकल्स आरम्भ से ही जानसन की पुनर्निर्माण की योजना का विरोध कर रहे थे। काले कानूनों के पारित हो जाने पर उन्होंने दक्षिण के राज्यों को गृह युद्ध छेड़ने के लिए कठोर दण्ड देने की

माँगी की। उनके एक नेता समनर (Sumner) ने 'राज्य आत्महत्या' (State Suicide) का सिद्धान्त प्रतिपादित किया। उसके अनुसार गृह युद्ध में संघ से पृथक् होने वाले राज्यों ने अपने सभी अधिकार खो दिये थे और अब उनको संघ में पुन: सम्मिलित करने के अन्तिम निर्णय का अधिकार केवल कांग्रेस को ही था। एक अन्य नेता थेडियस स्टीवेन्स (Thaddeus Stevens) का मत समनर के मत से भी अधि उग्र था। स्टीवन्स के अनुसार इन राज्यों द्वारा संघीय संविधान का परित्याग करने के फलस्वरूप इनकी स्थिति राज्यों की न रह कर केवल प्रदेशों की रह गई थी। अत: युद्ध में परास्त होने के कारण उनके साथ वही व्यवहार होना चाहिए जो कि एक पराजित प्रदेश के साथ होता है। उग्रवादियों को यह भी भय था कि अगर लिंकन व जानसन की योजनाओं के अनुसार दक्षिण के राज्यों को संघ में स्थायी तौर पर मिला लिया गया तो डेमोक्रेटिक दल की पुनर्स्थापना हो जायेगी और वे दक्षिण के राज्यों की सहायता से चुनाव जीत जायेंगे। उग्रवादी यह भी चाहते थे कि दास प्रथा को सभी राज्यों में पूर्णतया समाप्त कर देना चाहिए।

रेडिकल्स ने जॉनसन को पुनर्निर्माण योजनाओं की पूर्ण जाँच करने के लिए दोनों सदनों के पन्द्रह प्रतिनिधियों की एक संयुक्त समिति (Joint Committee of Reconstruction) नियुक्त करने के लिए बाध्य किया। इस समिति के प्रतिवदेन प्राप्त होने के पहले कांग्रेस ने फ्रीडमेन्स ब्यूरो बिल (Freedmen's Bureau Bill) पारित किया। इस अधिनियम में 1865 ईसवी में मुक्त हुए दासों को अनाज व वस्त्र आदि की सहायता देने के लिए स्थापित विमुक्ति जाति विभाग (Freedmen's Bureau) नामक संस्था की कार्य अवधि बढ़ाने तथा उसे और अधिकार देने का प्रस्ताव था। इसके अतिरिक्त सिविल राइट्स बिल (Civil Rights Bill) पारित किया गया। इसमें नीग्रो को श्वेत मनुष्यों के समान अधिकार देने का प्रस्ताव था। जॉनसन ने निषेधाधिकार का प्रयोग करके इन अधिनियमों को स्वीकृति नहीं दी। इससे उसके कुछ समर्थक भी उसके विरुद्ध हो गये। कांग्रेस ने जॉनसन के निषेधाधिकार की चिन्ता न करके सिविल राइट्स बिल एवं एक नया फ्रीडमेन्स ब्यूरो बिल पारित कर दिया।

(4) संविधान का चौदहवाँ संशोधन – पुनर्निर्माण संयुक्त समिति के मत में दक्षिण के राज्यों पर यह विश्वास नहीं किया जा सकता कि वे संघ के प्रति स्वामिभक्त रहेंगे, अत: वे उन्हें उनके कार्यों की सजा देना चाहते थे। वे नीग्रो को राज्य की ओर से पूर्ण अधिकार व संरक्षण भी दिलाना चाहते थे। इन लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए जून, 1866 ईसवी में उसने संविधान का चौदहवाँ संशोधन पारित किया। इस संशोधन के चार मुख्य भाग थे –

1. संयुक्त राज्य अमेरिका में जन्मे अथवा बसने वाले सभी संयुक्त राज्य के एवं उस राज्य के, जिसमें वे रहते हैं, नागरिक हैं। संयुक्त राज्य के नागरिकों के अधिकारों को सीमित करने के लिए कानून बनाने का अधिकार किसी राज्य को नहीं दिया गया। सभी राज्यों को बिना कानूनी कार्यवाही के किसी भी व्यक्ति को उसके जीवन, जायदाद और स्वतन्त्रता से वंचित करने का अधिकार नहीं दिया गया।

2. अगर कोई राज्य किसी भी वयस्क पुरुष को विद्रोह या अन्य गम्भीर अपराध में भाग लेने के अतिरिक्त अन्य , कारण से मताधिकार से वंचित करेगा तो उस राज्य को हाउस ऑफ

रिप्रेजेन्टेटिव में अपने प्रतिनिधि भेजने के अधिकार से वंचित किया जा सकता है अथवा उसके प्रतिनिधियों की संख्या घटाई जा सकती है।

3. गृह युद्ध में संघ के विरुद्ध सक्रिय भाग लेने वाले व्यक्ति को संविधान के प्रति निष्ठा की शपथ तोड़ने के अपराध में सार्वजनिक पद पर उस समय तक नियुक्त नहीं किया जायेगा जब तक कि कांग्रेस दो तिहाई बहुमत से उसे क्षमा प्रदान नहीं कर दे।

4. परिसंघ (Confenderate States) द्वारा लिये गये ऋणों और दासों को मुक्त करने के बदले में मुआवजे की रकम अदा करने का अधिकार संघ अथवा किसी अन्य को नहीं होगा।

संविधान में प्रस्तावित संशोधन को सभी राज्यों के पास अनुमति के लिए भेजा गया। टैनेसी के अतिरिक्त दक्षिण के अन्य राज्यों ने इसे स्वीकार नहीं किया। अत: इस राज्य को पूर्ण अधिकारों के साथ पुन: संघ का सदस्य बना लिया गया।

(5) जॉनसन के अधिकारों में कमी – इस समय में कांग्रेस के चुनाव हुए। जॉनसन ने डमोक्रेटिक दल के समर्थन से रेडिकल्स के विरुद्ध प्रचार किया। उसने देश के अनेक भागों की यात्रा की। अपने भाषणों में उसने अपने विरोधियों की निंदा करने में अपने पद के अनुसार मर्यादा से काम नहीं लिया, अतएव उसकी प्रतिष्ठा कम हो गई। शीघ्र ही उस पर व्यक्तिगत आक्षेप होने लगे। मेम्फिस और न्यू आरलिन्स में वर्ण उपद्रवों (Race Riots) से उसकी लोकप्रियता और भी कम हुई। फलस्वरूप दोनों सदनों में रेडिकल्स की संख्या में वृद्धि हुई।

रेडिकल्स ने अपनी सफलता से प्रोत्साहित हो जॉनसन के अधिकारों को सीमित करने के सफल प्रयास किये। अगले दो वर्षों में वह नाम मात्र का राष्ट्रपति रह गया और सरकार का नियन्त्रण कांग्रेस के हाथ में आ गया। टेन्योर आफ ऑफिस एक्ट (Tenure of Office Act) में राष्ट्रपति से सीनेट की अनुमति के बिना किसी प्रशासनिक अधिकारी को पदच्युत करने का अधिकार छीन लिया गया। अगर राष्ट्रपति इस कानून का उल्लंघन करे तो उसे कैद अथवा जुर्माने की सजा दी जा सकती थी। कमान्ड आफ दी आर्मी एक्ट (Command of the Army Act) पारित करके राष्ट्रपति से कमांडर इन चीफ के संवैधानिक अधिकार छीन लिये गये। अब राष्ट्रपति ग्रांट को सेनाध्यक्ष के पद से नहीं हटा सकता था तथा सेना को आदेश ग्रांट के द्वारा ही भेज सकता था।

(6) प्रथम पुनर्निर्माण अधिनियम (1867 ईसवी) - मार्च, 1867 ईसवी में कांग्रेस ने प्रथम पुनर्निर्माण अधिनियम (Reconstruction Act) पारित किया। यह घोषित किया गया कि टैनेसी के अतिरिक्त अन्य दक्षिण राज्यों में सरकारें वैधानिक नहीं हैं। ऐसे राज्यों को पाँच जिलों में विभाजित किया गया। प्रत्येक जिले में एक सेनाध्यक्ष के अधीन संघीय सेनाएँ रखी गयीं। इनका कार्य अपने क्षेत्र में शान्ति व सुव्यवस्था बनाये रखना था तथा मतदाताओं की सूचियाँ तैयार करना था। देशद्रोही व्यक्तियों को छोड़ कर सभी श्वेत व नीग्रो वयस्क पुरुषों को मताधिकार दिया गया था। मतदाताओं द्वारा चुने गये प्रतिनिधियों की सभा को अपने राज्य का संविधान बनाने का अधिकार दिया गया। किन्तु उसके लिए यह आवश्यक था कि चौदहवें संशोधन को स्वीकार कर

संविधान में नीग्रो लोगों को समान अधिकार दिया जाये। इन संविधानों का मतदाताओं द्वारा बहुमत से स्वीकार होना भी अनिवार्य था। इन सभी कार्यवाहियों के बाद ही एक राज्य को संघ द्वारा मान्यता मिल सकती थी, उसके प्रतिनिधि कांग्रेस के सदस्य बन सकते थे तथा वहाँ से सेना हटाई जा सकती थी।

(7) जॉनसन के विरुद्ध महाभियोग- जॉनसन ने टेन्योर ऑफ ऑफिस एक्ट और प्रथम रिकन्सट्रक्शन एक्ट पर भी निषेधाधिकार का प्रयोग किया, किन्तु कांग्रेस ने इनको कोई महत्त्व न देकर इन्हें पारित कर दिया। जॉनसन के लगातार विरोध में रेडिकल्स को उसके पूर्णतया विरुद्ध कर दिया और अब वे उस पर महाभियोग चलाने का अवसर ढूँढने लगे। उन्हें यह अवसर शीघ्र मिल गया। जब 1867 ईसवी के अन्त में जॉनसन ने युद्ध सचिव स्टेन्टन को रेडिकल्स को सहयोग देने के कारण पद्द से हटा दिया तो टेन्योर ऑफ ऑफ़िस एक्ट के अन्तर्गत उस पर महाभियोग चलाया गया।

न्यायाधीश चेस की अध्यक्षता में सीनेट ने महाभियोग की कार्यवाही आरम्भ की। जॉनसन के विरुद्ध महाभियोग को सिद्ध करने के लिए बीस मतों की आवश्यकता थी, किन्तु उसके विपक्ष में केवल उन्नीस वोट मिले। सीनेट के साथ रिपब्लिकन सदस्यों ने अपने दल के नेताओं के आदेशों का पालन न करते हुए जॉनसन को दोषी नहीं माना और उसके पक्ष में डेमोक्रेटिक सदस्यों का साथ दिया। इन सदस्यों का बाद में उसके नेताओं ने राजनीति के क्षेत्र से हटा दिया। इस घटना के पश्चात् जॉनसन ने पहले की अपेक्षा शांतिपूर्वक कार्य किया।

(8) सर्वोच्च न्यायालय के अधिकारों में कमी- 1866 ईसवी में दोनों सदनों में अपना बहुमत बढ़ाने के बाद रेडिकल्स ने सर्वोच्च न्यायालय की शक्ति को भी कम किया। इस वर्ष सर्वोच्च न्यायालय ने यह फैसला किया कि अगर नागरिक न्यायालय कार्य कर रहे हों तो सैनिक न्यायालयों को नागरिकों के मुकदमे की जाँच करने का अधिकार नहीं है। रेडिकल्स ने यह अधिनियम पारित किया की उच्चतम न्यायालय हेबियस कोर्पस (Habeas Corpus) सम्बन्धी अधिकारों के मामलों में निचली अदालतों द्वारा दिये गये फैसले के विरुद्ध अपीलें नहीं सुन सकता है।

(9)1868 ईसवी का चुनाव - 1868 ईसवी में राष्ट्रपति के चुनाव के लिए रिपब्लिकन दल ने जनरल यूलिसिस ग्रांट को अपना उम्मीदवार चुना। डेमोक्रेटिक दल की ओर से न्यू यार्क के होरेशियो सेमोर (Horatio Seymore) ने चुनाव लड़ा। यद्यपि ग्रांट को छब्बीस राज्यों का और सेमोर को केवल आठ राज्यों का समर्थन मिला, किन्तु लोकप्रिय मतों में उसको कई राज्यों में साधारण बहुमत प्राप्त हुआ। इस चुनाव में उत्तर के राज्यों की श्वेत जनता का पहले की अपेक्षा कम समर्थन रिपब्लिकन दल को मिला। उनके उम्मीदवार ग्रांट की जीत लगभग छः लाख नीग्रो लोगों के उसके पक्ष में मत देने से हुई।

IV. यूलिसिस ग्रांट का पहला प्रशासन (1869-1873 ई.) :

(1) ग्रांट का व्यक्तित्व - यूलिसिस ग्रान्ट ने गृह युद्ध में एक योग्य एवं निपुर्ण सेनापति के रूप में ख्याति प्राप्त की थी। उसकी सफलता एवं उदार व्यवहार ने उसे लोकप्रिय बना दिया था।

उसकी लोकप्रियता को देख कर ही रेडिकल्स ने उसे राष्ट्रपति पद के लिए मनोनीत किया था। उन्हें विश्वास था कि वह अवश्य जीतेगा तथा राष्ट्रपति बनने के पश्चात् उनकी नीतियों का समर्थन करने में आनाकानी नहीं करेगा। उनकी दोनों आशाएँ फलीभूत हुई। इसका कारण ग्रांट का राजनीति के दाँव पेचों से अनभिज्ञ होना था। इसके अतिरिक्त राष्ट्रपति पद को वह गृह युद्ध में जीता हुआ पुरस्कार समझता था। इस पद के उत्तरदायित्व की ओर उसका ध्यान कभी नहीं गया। इसके फलस्वरूप अपने आठ वर्षों के शासनकाल में वह सलाहकार और दलों के चौधरियों के इशारों पर नाचता रहा। यद्यपि वह स्वयं भ्रष्ट नहीं था, किन्तु पूर्ण रूप से भ्रष्ट व्यक्तियों से घिरा रहता था। विदेश सचिव हैमिल्टन फिश (Hamilton Fish) को छोड़ कर उसके शेष मंत्री अयोग्य व भ्रष्ट थे। अत: सी.पी. हिल के शब्दों में ग्रान्ट का राजनीतिक शासन काल अधिकांश लोक निंदा एवं भ्रष्टाचार से परिपूर्ण था। राष्ट्रपति ग्रांट उन व्यक्तियों के हाथ में भी कठपुतली बन गया था जो दक्षिण के साथ कठोर व्यवहार करना चाहते थे। इसके फलस्वरूप दक्षिण में चौदहवें संशोधन के अनुसार जो सरकार स्थापित हुई जिनमें रेडिकल्स का प्रभाव था। इन सरकारों में व्याप्त भ्रष्टाचारों के कारण दक्षिण के पुनर्निर्माण का कार्य सुचारु रूप से नहीं हो सका।

(2) संविधान का पन्द्रहवाँ संशोधन - नीग्रो लोगों के समर्थन को बनाये रखने के लिए रेडिकल्स ने सदैव के लिए नीग्रो लोगों को मताधिकार देने के लिए संविधान का पन्द्रहवाँ संशोधन पारित किया। इसके अनुसार किसी भी नागरिक को जाति व वर्ण के कारण मताधिकार से वंचित नहीं किया जायेगा। यह संशोधन 1870 ईसवी में संविधान का अंग बन गया। रेडिकल्स का यह अन्तिम महत्त्वपूर्ण कार्य था। 1868 ईसवी में स्टीवेन्स की मृत्यु के बाद उनके पास उसके समान प्रभावशाली नेता नहीं रहा। जनता ने भी उनके कार्यक्रम को दक्षिण के वास्तविक पुनर्निर्माण में सहायक न समझ कर समर्थन देना कम कर दिया।

1870 ईसवी तक दक्षिण के सभी राज्यों में पुनर्निर्माण अधिनियम की धाराओं के अनुसार चुनाव हो चुके थे और चौदहवें संशोधन को स्वीकार किया जा चुका था। अत: उन्हें संघ का सदस्य बना लिया गया। रेडिकल्स ने इसे अपने कार्य का अन्त माना।

(3) दक्षिण के राज्यों में पुनर्निर्माण का कार्य - दक्षिण के राज्यों में नव निर्मित सरकार के सामने गम्भीर समस्याएँ थीं। यद्यपि ये सरकारें नीग्रो मतदाताओं के समर्थन से बनी थीं, किन्तु इनका नेतृत्व श्वेत मनुष्यों के हाथ में था। इनमें दो प्रकार के व्यक्ति थे, प्रथम श्रेणी में गृह युद्ध में लड़ने के लिए उत्तर से आये वे सैनिक थे जो दक्षिण में स्थायी रूप से बस गये थे। इन्हें दक्षिण के निवासी कारपेट बेगर्स (Carpet Beggars) कहते थे, क्योंकि ये दक्षिण की आर्थिक स्थिति से आर्थिक लाभ उठाने आये थे। दूसरी श्रेणी में स्कालावेग्स (Scalawags) थे। ये व्यक्ति पहले से ही दक्षिण के निवासी थे। अवसरवादी होने के कारण वे कारपेट बेगर्स का समर्थन करते थे।

इन सरकारों ने दक्षिण में प्रजातंत्र की जड़ों को मजबूत करने के लिए अनेक कानून बनाये जिनका मुख्य उद्देश्य बड़े भूमिपतियों के विशेषाधिकारों को समाप्त करना था। अपने राज्यों में काउंटी की प्रशासनिक व्यवस्था, कर प्रणाली और न्याय व्यवस्था का उन्होंने समानता के सिद्धान्त

के आधार पर पुनर्संगठन किया । मुक्त दासों व गरीबों की सहायता के लिए सराहनीय प्रबन्ध किये। युद्ध में क्षतिग्रस्त सड़कों, सार्वजनिक भवनों, रेल मार्गों और पुलों की मरम्मत की गई। सार्वजनिक शिक्षा का प्रबन्ध करने के लिए कानून पारित किये गये। इन सब कार्यों के व्यय के लिए दक्षिण की पुनर्निर्माण सरकारों ने अधिक मात्रा में अतिरिक्त कर लगाये गये और ऋण लिये। 1868 से 1874 ईसवी तक संघ के ग्यारह राज्यों का सार्वजनिक ऋण ग्यारह करोड़ तीस लाख डालर तक बढ़ चुका था।

इस अवधि में दक्षिण के राज्यों के अधिकांश गवर्नरों, प्रशासकों और धारा सभाओं के सदस्यों ने भ्रष्टाचार द्वारा काफी धन कमाया। दक्षिण कैरोलिना के राज्य भवन में अठारह हजार डालर की कीमत के फर्नीचर के दो लाख डालर हिसाब में बताये गये। अरकंसास राज्य में सरकार का व्यय पन्द्रह सौ प्रतिशत बढ़ गया। उत्तरी कैरोलिना में सहस्त्रों डालर रेल मार्गों के लिए स्वीकृत किये गये, किन्तु एक मील नया मार्ग नहीं बिछाया गया। लुईसियाना के गवर्नर ने चार साल में पचास लाख डालर की अनैतिक आमदनी की। उसके राज्य के अधिकारियों व धारा सभा के सदस्यों ने भी साधारण कीमतों पर बड़े सार्वजनिक भवन खरीदे अथवा ठेके पर काम लिये। ऐसी परिस्थितियों में नीग्रो लोगों को पुनर्निर्माण कार्यों से विशेष लाभ नहीं हुआ।

दक्षिण के नेताओं ने शीघ्र ही यह अनुभव किया कि राजनीतिक सत्ता बनाये रखने के लिए उन्हें निम्न वर्ग के कृषकों का समर्थन प्राप्त करना आवश्यक है। इस समय में अनेक स्थानों से मुक्त नीग्रो दास कृषि के क्षेत्र में उनके प्रतिद्वन्दी बन चुके थे, अतएव निम्न वर्ग के कृषकों ने भी धनी श्वेत नेताओं का साथ दिया। इस प्रकार दक्षिण के विभिन्न वर्गों के श्वेत निवासी संगठित हो गये। वे रिपब्लिकन दल के स्थान पर डेमोक्रेटिक दल के समर्थक बन गये। उन्होंने नीग्रो लोगों को आतंकवादी तरीकों से भी भयभीत किया। दक्षिण में श्वेत मनुष्यों ने नीग्रो लोगों का दमन करने के लिए अनेक गुप्त संस्थाएँ खोलीं।

इनमें से कु-क्लक्स क्लान (Ku-Klux Klan) सबसे अधिक प्रसिद्ध है। टेनैसी के पुलास्की (Pulaski) क्षेत्र के श्वेत निवासियों ने 1866 ईसवी में एक क्लब (Club) स्थापित की। इस संस्था में युवकों को भर्ती किया जाता था। ये युवक सफेद वस्त्र धारण करते थे तथा स्वयं को भूतों के रूप में प्रदर्शित करते थे। इस प्रकार का आचरण का उद्देश्य अपने पड़ोस में रहने वाले नीग्रो निवासियों को डराना था। वे ऐसे श्वेत मनुष्यों को जो नीग्रो लोगों के अधिकारों का समर्थन करते थे, धमकियाँ देते थे अथवा उनकी जायदाद नष्ट करते थे। उनकी बात न मानने पर उनका कत्ल तक भी कर देते थे। शीघ्र ही यह संस्था दक्षिण के राज्यों में लोकप्रिय हो गई। 1867 ईसवी में कुकलक्स क्लान ने अपना एक नया संविधान बनाया। इसके अनुसार इसकी स्थानीय शाखाओं का नेतृत्व 'ग्रांड साइक्लोप्स'(Grand Cyclops) करता था। ये शाखाऐं काऊंटी की शाखाओं के अधीन थी जिनका अध्यक्ष 'ग्रांड टाइटन' (Grand Titan) होता था। इनका संचालन राज्यों की प्रमुख शाखा के अध्यक्ष 'ग्रांड ड्रेगन' द्वारा किया जाता था। इन सब के ऊपर एक 'ग्रांड विजर्ड' (Grand Wizard) होता था। ऐसा विश्वास किया जाता है कि जनरल नाथन बेडफोर्ड फारेस्ट (Nathan Bedford Forest) इस पद पर आसीन थे।

सम्भवत: इस प्रकार का संगठन प्रभावशाली नहीं हो सका था तथा राज्यों, काऊंटियों और स्थानीय शाखाएँ मनमाने ढंग से कार्य करती थीं। इसका प्रमुख कारण यह था कि इस संस्था के अधिकांश सदस्य श्वेत जाति के निकृष्ट व चरित्रहीन व्यक्ति थे। ऐसे सदस्यों की बढ़ती हुई अनुशासनहीनता के कारण कुछ जिम्मेदार श्वेत नेताओं ने 1869 ईसवी में इस संस्था को समाप्त करने की घोषणा की। इस प्रकार की घोषणा के बावजूद इसकी अनेक शाखाएँ काम करती रहीं। नीग्रो जाति के सदस्यों के विरुद्ध अनेक हिंसात्मक घटनाएँ होती रही।

दक्षिण की सरकारें उनकी इन गैर कानूनी कार्यवाहियों को नहीं रोक सकी। अत: 1870 व 1871 ईसवी में संघीय सरकार ने तीन एन्फोर्समेंट एक्ट (Enforcement Act) लागू किये। किसी भी मनुष्य को मतदान करने से रोकने के लिए भारी सजा की व्यवस्था की गई। राष्ट्रपति को यह अधिकार दिये गये कि वह सुव्यवस्था बनाये रखने के लिए सेना की सहायता ले सकता है अथवा हेबियस कोर्पस की अपीलें दायर करने से रोक सकता है। दो वर्षों तक इन कानूनों सख्ती से लागू किया गया। 1872 ईसपी में एमनेस्टी एक्ट (Amnesty Act) द्वारा कुछ अपराधियों को क्षमा प्रदान की गई। एन्फोर्समेन्ट एक्ट के विरुद्ध की गई अपीलों में उच्चतम न्यायालय ने यह फैसला दिया कि संघीय सरकार नीग्रो लोगों के अधिकारों को बनाये रखने के लिए उसी समय हस्तक्षेप कर सकती है जबकि राज्यों की धारा सभाएँ कानून बना कर उनका उल्लंघन करने की चेष्टा करें एवं संघीय सरकार को यह अधिकार नहीं है वे किसी व्यक्ति द्वारा किये गये अपराधों के मामले में हस्तक्षेप करें। कु कलक्स क्लान व अन्य ऐसी संस्थाओं को दक्षिण राज्यों के श्वेतों की प्रजातीय भावना का उद्बोधन माना जा सकता है। विवश होकर इन्होंने परिसंघ की हार तो स्वीकार कर ली तथा दास प्रथा का अंत भी मान लिया। किन्तु वे एक ऐसे समाज की कल्पना नहीं कर सकते थे जिसमें नीग्रो व श्वेतों को समान अधिकार हैं। धीरे-धीरे दक्षिण के राज्यों में डेमोक्रेटिक दल का प्रभुत्व स्थापित हो गया। नीग्रो या तो स्वयं डर कर मतदान नहीं करते थे अथवा उन्हें डरा धमका कर ऐसा करने से रोका जाता था। 1877 ईसवी में जब ग्रांट के स्थान पर हेज राष्ट्रपति बना उस समय दक्षिण कैरोलिना और लुसियाना को छोड़ शेष सभी दक्षिणी राज्यों में डेमोक्रेटिक दल की सरकारें स्थापित हो चुकी थी। इस वर्ष दक्षिण से संघीय सेना भी हटा ली गई। नयी सरकारों ने उद्योगों के विकास, भूमिपतियों और कारखानों के मालिकों के हितों को सुरक्षित रखने के लिए संरक्षण की नीति अपनाई। शेष मामलों में उनकी नीति उन्मुक्त व्यापार की थी। उन्होंने सार्वजनिक व्यय तथा शिक्षा पर होने वाले व्यय में कमी की। इसके फलस्वरूप वे करों को कम करने में सफल हुए। उन्होंने प्रशासन में व्याप्त भ्रष्टाचार भी कम किया।

जब हम गृह युद्ध के पश्चात् दक्षिण में संघीय सरकार की नीतियों पर दृष्टिपात करते हैं तो यह स्पष्ट हो जाता है कि ये योजनाएँ पुनर्निर्माण के कार्य को प्रगति न दे सकीं। दक्षिण में यह कार्य लगभग एक दशक पीछे पड़ गया। फलस्वरूप दक्षिण के श्वेत निवासियों का समर्थन रिपब्लिकन दल ने खो दिया। यद्यपि नीग्रो लोगों का समान अधिकार दिलाने का प्रयत्न एक सही

कदम था, किन्तु जिन परिस्थितियों में यह किया गया था उनमें वह कई नवीन समस्याएँ उत्पन्न कर गया। श्वेत व नीग्रो निवासियों में आर्थिक व सामाजिक तनाव बना रहा। दक्षिण के श्वेत निवासियों में उत्तर के श्वेत निवासियों के प्रति कुछ समय तक घृणा के भाव बने रहे।

(i) ब्लेक फ्राइडे की घटना - ग्रांट के प्रथम राष्ट्रपतित्व काल की पहली प्रमुख घटना ब्लेक फ्राइडे (Black Friday) के नाम से प्रसिद्ध है। गृह युद्ध के समय संघीय सरकार ने जनता को पैंतालीस हजार डालर के कागजी नोट (Green Packs) जारी करके ऋण लिया था। सरकार अब हर महीने इनके बदले ऋणदाताओं को स्वर्ण देती थी। इसके अतिरिक्त सरकार निश्चित राशि में कोष से स्वर्ण बेचती थी। जे गुल्ड (Jay Gould) और जेम्स फिस्क जूनियर (James Fisk Junior) नामक दो पूँजीपतियों ने बाजार में बिकने वाले स्वर्ण को अत्यधिक मात्रा में खरीद कर स्वर्ण के मूल्यों में वृद्धि ला कर लाभ उठाने की योजना बनाई। उनकी योजना के सफल होने के लिए यह आवश्यक था कि राज्य कोष से स्वर्ण की बिक्री बन्द हो जाये। उन्होंने राष्ट्रपति पर प्रभाव डाल कर ऐसे आदेश जारी करा लिये। इसके फलस्वरूप सितम्बर, 1869 ईसवी के तीसरे सप्ताह में स्वर्ण की कीमत में एक सौ चालीस से एक सौ तिरेसठ डालर तक की वृद्धि हो गई तथा सरकार द्वारा दिये गये ग्रीन पैक नोटों की कीमत घट गई। छोटे पूँजीपतियों और व्यापारियों की आर्थिक दशा पर इसका विपरीत प्रभाव पड़ा। उन्होंने सरकार से अपना आदेश वापस लेने की अपील की। राष्ट्रपति ने अपने आदेश वापस लेने की सूचना अपनी पत्नी के भाई को दी। उसने यह सूचना आदेश जारी होने के पहले गुल्ड को दे दी थी। अत: नवीन आदेश जारी होने के पहले गुल्ड ने बाजार में स्वर्ण कम कीमतों पर बेचना शुरू कर दिया। शीघ्र ही स्वर्ण की कीमत एक सौ पैंतीस डालर तक गिर गई। शुक्रवार, सितम्बर 24, 1869 ईसवी को बाजार में एक महान् संकट उपस्थित हो गया। कई व्यापारिक प्रतिष्ठानों का दिवाला निकल गया। कांग्रेस द्वारा नियुक्त एक समिति ने इस मामले की जाँच की। यद्यपि समिति ने अपने प्रतिवेदन में राष्ट्रपति को निर्दोष माना, किन्तु गुल्ड व फिस्क के साथ उनके निकट सम्बन्धों के कारण उनकी प्रतिष्ठा को धक्का पहुँचा।

(ii) क्रेडिट मोबिलाइजर नामक कम्पनी की सुविधायें देने का मामला- दूसरा सार्वजनिक अपवाद रेल रोड के निर्माण के सम्बन्ध में हुआ। यूनियन पेसीफिक रेल रोड कम्पनी के कुछ भागीदारों ने क्रेडिट मोबीलाइजर (Credit Mobilizer) नामक एक पृथक् कम्पनी ऋण देने और निर्माण कार्य करने के लिए बनाई। इनमें से एक भागीदार ओक्स एम्स (Oakes Ames) मैसाचुसेट्स से कांग्रेस का निर्वाचित सदस्य था। उसने कांग्रेस के अनेक सदस्यों को कम कीमत पर इसका भागीदार बना लिया। इन्होंने अपने प्रभाव से क्रेडिट मोबीलाइजर के लिए अनेक प्रकार की सुविधाएँ प्राप्त कर लीं। इस मामले की जाँच होने पर उपराष्ट्रपति कॉलफेक्स (Colfax) एम्स व कांग्रेस के अनेक सदस्यों को सार्वजनिक जीवन से सन्यास लेना पड़ा।

(iii) व्हिस्की रिंग का अपवाद - इसी समय मध्य पूर्व के प्रदेशों में एक अन्य सार्वजनिक अपवाद का पता चला। व्हिस्की रिंग (Whisky Ring) नामक एक प्रतिष्ठान के सदस्य सरकार

को कर नहीं देते थे। इसका एक प्रमुख सदस्य एक सरकारी अधिकारी था जिसने ग्रांट को कुछ घोड़े और ग्रांट के निजी सचिव को 2400 डालर के आभूषण भेंट में दिये थे। यद्यपि इस रिंग के अनेक सदस्यों को सजा दी गई किन्तु ग्रांट ने बाद में उन्हें क्षमा प्रदान कर दी।

(iv) युद्ध सचिव पर रिश्वत लेने के लिये महाभियोग - ग्रांट के युद्ध सचिव बेल्कनेप (Belknap) को रिश्वत लेने के आरोप में सदन ने महाभियोग चलाया, किन्तु ग्रांट ने उसका इस्तीफा स्वीकार कर उसे सजा से बचा लिया।

(v) ट्वीड रिंग की अनैतिक कार्यवाहियाँ - ग्रांट के शासन काल का सबसे बड़ा कलंक ट्वीड रिंग (Tweed Ring) की अनैतिक कार्यवाहियाँ थीं। विलियम ट्वीड (William Tweed) न्यू यार्क शहर के डेमोक्रेटिक दल के लिए कार्य करने वाली एक संस्था का सचिव था। उसने व उसके साथियों ने रिश्वत देकर न्यू यार्क में सरकारी कार्यों के ठेके अत्यन्त ऊँची दरों पर लेकर काफी धन कमाया। ट्वीड व उसके साथियों को सजा दी गई।

(vi) वेतन छीना-झपटी (Salary Grab) -वेतन छीना-झपटी की घटना भी कांग्रेस के भ्रष्ट आचरणों का एक उदाहरण है। 3 मार्च, 1873 को कांग्रेस द्वारा पारित एक अधिनियम के अनुसार राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति और कांग्रेस के सदस्यों का वेतन पचास प्रतिशत बढ़ा दिया गया। उन्हें यह वेतन पिछले दो वर्षों से मिलना था। इस वेतन छीना-झपटी के विरुद्ध इतना शोर मचा कि दूसरी कांग्रेस ने इसे निरस्त कर दिया। परंतु दो वर्ष पूर्व, से निर्धारित वेतन वृद्धि के कारण सरकारी कोष से काफी धन निकाला जा चुका था।

(vii) भ्रष्टाचार के अन्य प्रकरण- नौ सेना विभाग खुले आम ठेकेदारों से ठेकों के सौदे किया करते थे। आदिवासियों की भूमि का क्रय-विक्रय धनवान एवं ऊँची बोली वालों का ही होता था। न्यू यार्क और न्यू ओर्लिंस के तटकर कार्यालयों में घूंसखोरी का बोलबाला था। भ्रष्टाचार केवल राष्ट्रीय सरकार तक ही सीमित नहीं था। राज्यों व स्थानीय शासनों में भी घूस का बाजार गर्म रहता था। रेलवे, खदानों, तेल के कुएँ, सोना व चाँदी की खदानों आदि पर सट्टेबाजों ने अपना वर्चस्व स्थापित कर जनता को करोड़ों डालर का नुकसान पहुँचाया था। 1873 का भीषण आर्थिक संकट ऐसे सभी भ्रष्टाचार के कार्यों का परिणाम था। व्यापार जगत में भी भ्रष्टाचार फैल गया था।

इस प्रकार संघीय सरकार, राज्य सरकारों व स्थानीय सरकारों, सार्वजनिक उपक्रमों तथा व्यापार जगत में व्याप्त भ्रष्टाचार के कारण ग्रांट का प्रशासन बदनाम हो गया था। ऐसा लगता था कि रिपब्लिकन दल नाश की ओर जा रहा है। एक तत्कालीन सिनेटर ग्राईन्स ने लिखा था कि इससे बढ़ कर भ्रष्टाचारी राजनीति दल कभी भी विश्व में नहीं रहा होगा।

(viii) 1872 ईसवी का चुनाव - 1873 में ग्रांट के प्रथम राष्ट्रपतित्व काल की अवधि समाप्त होने वाली थी। अतः 1872 ईसवी में रिपब्लिकन दल ने राष्ट्रपति पद के लिए अपना उम्मीदवार मनोनीत करने के लिए अनेक नामों पर विचार किया। दल के अधिकांश प्रभावशाली

नेता ग्रांट को फिर मनोनीत करने के पक्ष में थे, किन्तु अनेक सदस्य इसका विरोध करते थे। उन्होंने लिबरल रिपब्लिकन दल स्थापित किया और न्यूयार्क ट्रिब्यून के सम्पादक होरेस ग्रीले (Horace Greeley) को मनोनीत किया। डेमोक्रेटिक दल ने ग्रीले को समर्थन दिया। चुनाव में ग्रांट की बहुमत से वि॰॰य हुई।

V. ग्रांट का द्वितीय प्रशासन :

ग्रांट के द्वितीय राष्ट्रपतित्व काल (1873-1877 ईसवी) में उसके प्रथम शासन काल के भ्रष्टाचार और अपवाद जनता के सामने आये। जाँच करने पर यह पाया गया कि प्रत्येक सरकारी विभाग में भ्रष्टाचार बहुत अधिक मात्रा में फैला हुआ है। कर अधिकारी निर्यात व आयात करने वाले व्यापारियों से और नौ सेना विभाग के अधिकारी ठेकेदारों से घूस लेते थे। यह भी ज्ञात हुआ कि गृह विभाग के अधिकारियों ने कानूनी कार्यवाही पूरी कराये बिना अनेक व्यक्तियों को भूमि पर अधिकार करने दिया है। ब्रिटेन में अमेरिका का राजदूत ने अपने पद का अनुचित लाभ उठाते हुए अंग्रेज पूँजीपति॰ को खनिज पदार्थों की बिक्री में सहायता कर धन कमाया था।

(1) रिसम्पसन अधिनियम-1875 ईसवी में कांग्रेस ने रिसम्पशन अधिनियम (Resumption Act) पारित किया। 1869 ईसवी में कांग्रेस ने यह निश्चय किया था कि संघीय सरकार अपने सारे ऋण अदा करेगी। 1875 ईसवी के रिसम्पसन अधिनियम द्वारा सरकार ने यह आश्वासन दिया कि जनवरी 1, 1879 ईसवी से राज्य कोष उन सब ग्रीन पैक नोटों की अदायगी कर देगा जो उसको पेश किये जायेंगे। इसके लिए स्वर्ण का एक पर्याप्त सुरिक्षत भंडार बनाने का आदेश संघीय कोष के सचिव को दिया गया। इस अधिनियम के पारित होने के फलस्वरूप ग्रीन पैक की कीमतों में वृद्धि हो गई और उनके स्वामियों को भुगतान की जल्दी नहीं रही। यद्यपि ग्रीन पैक का स्वर्ण मुद्रा में भुगतान करने के आश्वासन से ऋण देने वाले व्यापारियों को लाभ पहुँचा किन्तु इससे कृषकों और ऋण लेने वालों को हानि हुई। उन्होंने इसका विरोध करने के लिए ग्रीन पैक दल की स्थापना की। 1876, 1880 और 1884 ईसवी में इस दल के द्वारा मनोनीत व्यक्तियों ने राष्ट्रपति पद के लिए असफल चुनाव लड़े।

(2) आर्थिक संकट (1873 ईसवी) - 1873 ईसवी में अमेरिका में एक आर्थिक संकट आया। युद्ध के बाद के पहले दशक में कारखानों और खेतों में अधिक उत्पादन, रेल मार्गों के शीघ्र विकास और शेयर बाजारों में सट्टेबाजी की कार्यवाहियों से पूँजीपतियों और फार्म मालिकों की आर्थिक स्थिति बिगड़ने लगी। जे कुक एण्ड कम्पनी (Jay Cook and Company) और कई अन्य बैंकों का दिवाला निकल गया। सहस्त्रों मजदूर बेरोजगार हो गये। रिपब्लिकन दल ने आर्थिक स्थिति से उत्पन्न समस्याओं को सुलझाने में विशेष उत्साह का प्रदर्शन नहीं किया। अत: जनता रिपब्लिकन दल से असन्तुष्ट हो गई। 1874 ईसवी में मैसाचुसेट्स, पेनसिलवेनिया, न्यूयार्क और ओहायो में डेमोक्रेटिक गवर्नर चुने गये। युद्ध के प्रथम बार कांग्रेस में डेमोक्रेटिक दल का बहुमत हो गया। यह स्पष्ट हो गया कि 'महान प्राचीन दल' (Grand Old Party) की लोकप्रियता घटती जा रही है।

प्रजातान्त्रिक सिद्धान्तों की रक्षा के लिए यह उचित समझा गया कि ग्रांट को तृतीय बार राष्ट्रपति पद के लिए मनोनीत न किया जाये। अतः उसके स्थान पर रिपब्लिकन दल ने आहायो के प्रभावशाली नेता रदरफोर्ड बी. हेज (Rutherford B. Hayes) को मनोनीत किया। उसने अपने प्रतिद्वन्द्वी डेमोक्रेटिक उम्मीदवार सेम्यूअल जे. टिलडेन (Samuel J. Tilden) को परास्त किया।

VI. ग्रांट की उपलिब्धयों का मूल्यांकन :

इसमें कोई सन्देह नहीं कि ग्रांट एक असफल राष्ट्रपति था। गृह युद्ध में एक सेनाध्यक्ष के पद पर कार्य करते समय उसने अपनी योग्यता का परिचय दिया था, किन्तु राष्ट्रपति पद पर आसीन होने के पश्चात् वह अपनी कार्य क्षमता, दृढ़ निश्चय लेने कि प्रवृत्ति और स्थिति का सही मूल्यांकन करने क योग्यता का प्रदर्शन नहीं कर सका। अमेरिकन इतिहास में उसकी गणना द्वितीय श्रेणी के राजनीतिज्ञों में की जा सकती है।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि उसका आठ साल का शासन काल भ्रष्टाचार से परिपूर्ण था, किन्तु इस अवधि में राष्ट्र ने कई अन्य क्षेत्रों में अभूतपूर्व प्रगति की। 1876 ईसवी में एलेक्जैण्डर ग्राहम बैल (Alexandar Graham Bell) ने टेलीफोन का आविष्कार किया। रेल मार्गों का तीव्र गति से विकास हुआ। 1876 ईसवी में फिलाडेल्फिया में एक विशाल प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। औद्योगिक व कृषि उत्पादन क्षेत्रों में भी नये-नये तरीके अपनाये गये। यद्यपि 1873 ईसवी के आर्थिक संकट के कारण उत्पादन के क्षेत्र में वृद्धि की गति कुछ धीमी पड़ी, किन्तु शीघ्र ही राष्ट्र ने अपनी स्थिति में सुधार कर असाधारण प्रगति की।

पदारूढ़ होने के समय ग्रान्ट पर राष्ट्र का जितना विश्वास था, उतना जैक्सन के बाद के किसी भी राष्ट्रपति पर न था। लेकिन वैदेशिक मामलों को छोड़ कर उसका शासन काल लगातार असफलताओं का ही युग सिद्ध हुआ।

VII. 1876 ईसवी का चुनाव :

1876 ईसवी के चुनाव में रिपब्लिकन दल के उम्मीदवार रदरफोर्ड हेज को लोकप्रिय मतों से ढाई लाख का बहुमत मिला। कारपेट बेगर्स अधिनियम के अनुसार फ्लोरिडा, लुइसियाना, दक्षिण कैरोलिना और ओरेगन में हेज को प्रत्येक राज्य के चुनाव मण्डल से बीस वोट मिलने चाहिए थे। ओरेगन में एक ऐसे वोट की गणना में वैधानिक आपत्ति की गई परन्तु निर्णय हेज के पक्ष में किया गया। शेष तीन राज्यों में डेमोक्रेटिक दल का बहुमत होते हुए भी उसे नहीं माना गया, क्योंकि अभी तक ये राज्य कारपेट बेगर्स अधिनियम से शासित थे। ऐसी परिस्थिति में हेज को सफल घोषित किया गया। डेमोक्रेटिक दल ने हेज के चुनाव को चुनौती दी, क्योंकि अमेरिका के संविधान में इस प्रकार के झगड़े का निर्णय करने की व्यवस्था नहीं थी इसलिए दोनों दल इस मामले को एक चुनाव आयोग को निर्णय के लिए सौंपने को सहमत हो गये। यह निश्चय किया गया कि इस आयोग में सात रिपब्लिकन, सात डेमोक्रेट और उच्चतम न्यायालय का एक न्यायाधीश, जो किसी भी दल से सहानुभूति न रखता हो, सदस्य होंगे। उस समय केवल जस्टिस

डेविस ही ऐसे न्यायाधीश थे जो इस आयोग के सदस्य बन सकते थे, किन्तु उनका सीनेट का सदस्य निर्वाचित होने के कारण जस्टिस ब्रेडले को आयोग का सदस्य बनाया गया। अत: हेज के पक्ष में आठ और टिलडेन के पक्ष में केवल सात मत आये तथा हेज को निर्वाचित घोषित किया गया। डेमोक्रेटिक दल हेज के उद्घाटन समारोह को असफल करने की योजना बनाई, किन्तु वाशिंगटन में दोनों दलों के नेताओं में समझौता होने के कारण ऐसा प्रयत्न नहीं किया गया। रिपब्लिकन दल ने यह वचन दिया कि अगर डेमोक्रेटिक दल हेज के चुनावों का विरोध समाप्त कर देगा तो दक्षिणी के राज्यों से संघीय सेनाओं को हटा लिया जायेगा तथा पुनर्निर्माण सरकारों का अन्त कर दिया जायेगा। दक्षिण में रेल मार्गों का विकास आर्थिक सहायता द्वारा किया जायेगा तथा अन्य आर्थिक सुविधायें दी जायेंगी। दक्षिण के राज्यों के व्यक्तियों को संघीय शासन में पद भी दिये जायेंगे।

यद्यपि हेज असाधारण योग्यताओं से सम्पन्न व्यक्ति नहीं था, किन्तु वह ईमानदार था। गृह युद्ध में एक नेता के रूप में वह प्रसिद्धी प्राप्त कर चुका था। उसने सदैव सुधारों की माँग की थी तथा राष्ट्रपति बनने पर उसने यह इरादा प्रकट किया कि वह उत्तर व दक्षिण के प्रदेशों का मध्य का अंतर समाप्त करना चाहता है। अपने चुनाव-भाषणों में उसने सरकारी नौकरों के भ्रष्टाचार को समाप्त करने और संरक्षण की नीति अपनाने का वचन दिया था।

राष्ट्रपति पद ग्रहण के समय हेज की स्थिति सुदृढ़ नहीं थी। लगभग आधी जनता उसको सफल उम्मीदवार नहीं मानती थी। उस समय प्रतिनिधि सभा में डेमोक्रेटिक दल का बहुमत था। कुछ समय बाद उच्च सदन में उसका बहुमत हो गया था। हेज के दल में भी एकता नहीं थी। ग्रांट के समय के रेडिकल्स ने स्टॉलवार्ट्स (Stalwarts) नामक वर्ग का संगठन किया था। रिपब्लिकन दल का दूसरा वर्ग हॉफ ब्रिड्स (Half Breeds) कहलाता था। एक ओर स्टॉलवार्ट्स हेज की सुधार योजनाओं का विरोध करते थे तो दूसरी ओर हॉफ बीड्स साधारण सुधार के पक्ष में थे।

VIII. 1865 से 1877 ईसवी तक के पुनर्निर्माण के कार्यों का मूल्यांकन :

लगभग एक शती तक दक्षिण के लोग पुनर्निर्माण के काल को बेहद अत्याचार का काल मानते रहे हैं उनके अनुसार विजयी उत्तर वालों ने पराजित दक्षिणवासियों पर मनमानी शांति थोपी। उनके मत में पुनर्निर्माण दंडात्मक था। एलन नेविन्स और कौमेजर लिखते है कि, ''दक्षिण और उसके नेताओं को संघ से अलग होने के कारण और युद्ध के कारण सजा देने के बारे में बिना सोच समझे बहुत कुछ कहा गया, पर तथ्य यह है कि जितनी कार्यवाही की सम्भावना हो सकती थी उससे बहुत कम की गई।'' ''आधुनिक युग के किसी अन्य विद्रोह को दबाने के पश्चात् परिजनों को इतना कम दंड नहीं दिया गया और किसी अन्य विद्रोही समूह को पराजय के बाद इतनी जल्दी अपनी पुरानी स्थिति और शक्ति नहीं प्राप्त करने दी गई।'' कुल मिला कर विजयी उत्तर का पराजित दक्षिण के प्रति आचरण उदारतापूर्ण था। जॉनसन, ग्रान्ट एवं हेज को ऐसा करने में अपने ही दल के उग्रवादियों का विरोध सहना पड़ा। निग्रो लोगों को अधिकार दिलाने में उन्हें अनेक बाधाओं का सामना करना पड़ा। अन्त में 1877 ईसवी में पुनर्निर्माण का कार्य समाप्त हुआ। इन बारह वर्षों के नागरिक संघर्ष और उथल-पुथल पर दृष्टिपात करने से ऐसा

लगता है कि यदि दास प्रथा का अंत धीरे-धीरे होता और दास समूहों को मुआवजा देने के बाद होता जैसा कि लिंकन को बहुत दिनों तक ईच्छा थी तो शायद देश की स्थिति बहुत कुछ सुखद बनी रहती। ऐसा करने से राष्ट्र युद्ध के भयंकर विनाश से बच जाता। लेकिन प्रश्न यह उठता है कि क्या दक्षिण शांति से दास प्रथा को त्यागने के लिए तैयार था? इसका उत्तर नकारात्मक ही दिखाई देता है। अतएव युद्ध की स्थिति से गुजरना आवश्यक हो गया था लेकिन इसके बाद उत्तर के कुछ प्रमुख नेताओं ने दक्षिण के साथ जो व्यवहार किया वह काफी हद तक सराहनीय था। इनमें कोई संदेह नहीं कि उनसे कुछ भूलें हुई, परन्तु कुल मिलाकर उनके कार्यों में राष्ट्र को पुनर्निर्माण करने में सहायता प्रदान की।

IX. हेज का प्रशासन (1877 से 81 ई.) :

हेज का प्रशासनिक सुधार :

(1) संघीय सेना की वापसी- अपने चुनाव भाषणों में हेज ने दक्षिण राज्यों से संघ की सेनाओं को तुरंत वापस बुलाने की बात की थी। अत: राष्ट्रपति बनते ही उसने अप्रैल, 1877 ईसवी तक दक्षिणी कैरोलिना, कोलम्बिया और लुईसियाना से संघीय सेनाएँ हटा लीं। इससे दक्षिण के श्वेत धनी प्रसन्न हुए तथा नीग्रों की समस्या पर पुन: प्रश्नचिह्न लग गया। उसने डाक विभाग के अध्यक्ष के महत्त्वपूर्ण पद पर टैनेसी के एक डेमोक्रेटिक को नियुक्त कर संघीय पदों पर दक्षिण के व्यक्तियों को नियुक्त न करने के प्रतिबन्ध कों समाप्त किया। उसने अपनी केबिनेट में ईमानदार व योग्य व्यक्तियों की नियुक्ति की। उसने यह विचार प्रकट किये कि दल के नेताओं की नियुक्तियों के मामले में हस्तक्षेप करने का अधिकार किसी को भी नहीं होना चाहिए और अयोग्य अधिकारियों को अपने पदों से हटाना चाहिए। किसी भी सरकारी अधिकारी को यह अधिकार नहीं होना चाहिए क़ि राजनीतिक दलों के प्रबन्ध और सभाओं और चुनाव अभियानों में भाग ले। उसने अपने विचारों को क्रियात्मक रूप देने के लिए अनेक आदेश जारी किये।

(2) नागरिक क्षेत्र में सुधार - एक सिविल सर्विस आयोग की नियुक्ति की गई। एक आदेश द्वारा सरकारी नौकरों का राजनीतिक दलों की कार्यवाहियों में भाग लेने पर प्रतिबन्ध लगाया गया। राष्ट्रपति की पत्नी और उसके सम्बन्धी, चाहे कितने भी योग्य क्यों न हों, किसी भी सरकारी पद पर नियुक्त नहीं किये जा सकते थे। उसने न्यूयार्क के चुंगी घर की जाँच कराकर वहाँ के दो प्रमुख अधिकारियों को उनके पदों से हटा दिया। इससे सिनेट में बड़ा हंगामा हुआ। हेज के ये सुधार पूर्ण रूप से लागू नहीं किये जा सके, क्योंकि उसे कांग्रेस का पूर्ण समर्थन प्राप्त नहीं हुआ। सिविल सर्विस आयोग के लिए कांग्रेस द्वारा व्यय की स्वीकृति न मिलने से आयोग अपना कार्य आरम्भ नहीं कर सका। सरकारी अधिकारियों को भी राजनीतिक दलों की हलचलों में भाग लेने से नहीं रोक सका। अनेक पदाधिकारियों को इच्छा होते हुए भी राष्ट्रपति हेज पद से नहीं हटा सका, क्योंकि उनकी नीति का विरोध डेमोक्रेट्स के अतिरिक्त स्टॉलवार्ट्स भी कर रहे थे।

(3) दक्षिण की पुनर्निर्माण सरकारों का अंत - हेज ने दक्षिण में रिपब्लिकन दल की पुनर्निर्माण सरकारों के अंत की घोषणा की। उनके स्थान पर इन राज्यों में डेमोक्रेटिक दल की

सरकारें निर्वाचित हुई। गृह युद्ध के पश्चात् प्रथम बार दक्षिण के समस्त राज्यों को अपने राजनीतिक मामलों में पूर्ण स्वतन्त्रता के साथ कार्य करने का अवसर मिला। रिपब्लिकन दल के सदस्यों ने हेज के इस 'समर्पण' की कड़ी आलोचना की।

(4) मुद्रा का प्रश्न- हेज के राष्ट्रपतित्व काल का सबसे महत्त्वपूर्ण कानून मुद्रा की समस्या से सम्बन्धित था। जैक्सन के युग में अमेरिकी मुद्रा में स्वर्ण और चाँदी का अनुपात 16 : 1 निश्चित किया गया था, क्योंकि एक ओंस चाँदी का मूल्य एक ओंस स्वर्ण के 1/16 भाग की कीमत से अधिक हो गया था। इसलिए चाँदी के सिक्कों का प्रचलन कम हो गया था। 1873 ईसवी में कांग्रेस ने चाँदी के डॉलर न बनाने का निश्चय किया था। शीघ्र ही यह अनुभव होने लगा कि नेवदा (Nevada) और अन्य स्थानों की चाँदी की खानों के अन्दर अधिक उत्पादन के कारण स्वर्ण के मुकाबले में चाँदी की कीमत गिरने के कारण पुन: चाँदी के सिक्के प्रचलित किया जाना आवश्यक हो गया। प्रतिनिधि सभा में मिसूरी के प्रतिनिधि रिचर्ड ब्लेंड (Richard Blend) ने पुन: पुराने अनुपात के अनुसार चाँदी की मुद्रा प्रचलित करने का अधिनियम पारित किया। सीनेट में एलिसन (Alison) ने इसमें कुछ संशोधन पारित करवाये। राष्ट्रपति ने निषेधाधिकार का प्रयोग कर इस अधिनियम को कानून बनने से रोकने की चेष्टा की, किन्तु दोनों सदनों ने इसकी परवाह न कर इसे पारित कर दिया। ब्लेंड एलिसन अधिनियम के अनुसार संघीय कोष-विभाग ने प्रत्येक मास बाजार भाव से दो मिलियन डॉलर से लेकर चार मिलियन डालर तक की बाजार से खरीदी हुई चांदी से डॉलर बनाकर प्रचलित किये। इसके साथ ऐसे प्रमाण पत्र भी जारी किये जो चांदी की मुद्रा की कीमत के थे। यद्यपि यह अधिनियम बारह वर्ष तक लागू रहा, किन्तु यह अपने लक्ष्य की प्राप्ति में सफल नहीं हो सका, क्योंकि खदानों में चाँदी के अधिक उत्पादन से चाँदी की कीमत गिरती गई।

(5) रेल श्रमिकों की हड़ताल (1877 ईसवी) - 1877 ईसवी में पूर्व मिसिसिप्पी में रेल श्रमिकों की हड़ताल आरम्भ हुई। इस हड़ताल का प्रमुख कारण श्रमिकों के वेतन की दरों में कमी होना था। कुछ ही समय में यह हड़ताल 14 राज्यों में फैल गई और उसमें एक लाख श्रमिक सम्मिलित हो गये। हड़तालियों और राज्य सरकारों के सैनिकों में अनेक स्थानों पर झड़पें हुईं जिसमें कुछ श्रमिक मारे गये अथवा घायल हो गये। अनेक नगरों में जायदादों को नुकसान पहुँचाया गया। पिट्सवर्ग में एक करोड़ डॉलर की हानि हुई। हेज ने हड़ताल को तोड़ने के लिए राज्यों को सैनिक सहायता भेजी। यद्यपि संघीय सैनिकों ने हड़ताल को समाप्त करा दिया, किन्तु श्रमिकों का असन्तोष दूर नहीं हुआ। पहली बार अमेरिका में श्रमिकों ने अपने असन्तोष को प्रकट करने के लिए संगठित रूप से यह हड़ताल की थी तथा हड़ताल की अवधि में हिंसात्मक तरीके अपनाये थे। भविष्य में भी अनेक अवसरों पर संघीय सरकार को हड़तालों का दमन करने के लिए बल प्रयोग करना पड़ा।

(6) चीनियों के आप्रवास पर प्रतिबन्ध - इस समय में अमेरिका के नगरों में अपराधों की संख्या में वृद्धि हो रही थी। मुख्य रूप से इसकी जिम्मेदारी चीन के आने वाले प्रवासियों की मानी

गई थी, अत: उनके आगमन पर प्रतिबन्ध लगाने की माँग की गई। 1868 ईसवी की संधि के अनुसार चीन ने अमेरिकियों को विशेष सुविधाओं के बदले में चीनियों को अमेरिका में बसने की अनुमति दी गई थी। उस समय रेल मार्गों के निर्माण कार्य में चीनी श्रमिकों की आवश्यकता होने के कारण इस शर्त का स्वागत किया गया किन्तु शीघ्र ही अमेरिकी श्रमिक यह शिकायत करने लगे कि चीनी श्रमिकों के द्वारा कम वेतन पर कार्य करने में उनमें बेकारी बढ़ती जा रही है। 1879 ईसवी में हेज ने चीन के साथ 1868 ईसवी में की गई बरलिंघम सन्धि (Burlinghame Treaty) में संशोधन किया। सरकार को यह अधिकार दिया गया कि आवश्यकता पड़ने पर वह चीन के प्रवासियों के अमेरिका में आने पर प्रतिबन्ध लगाये। 1879 ईसवी में चीनियों के आगमन पर लगाया गया यह प्रतिबन्ध आप्रवास अधिनियमों की शृंखला की पहली कड़ी थी।

वस्तुत: हेज प्रशासन काल अपने सम्पूर्ण राजनैतिक नाटक के साथ अधिकांश रूप से अप्रभावी रहा तथापि उसने कुछ समस्याओं का दृढ़ता के साथ मुकाबला किया।

X. 1880 ईसवी का चुनाव व गारफील्ड की सफलता :

हेज ने 1880 ईसवी के निर्वाचन में पुन: उम्मीदवार बनने से मना कर दिया। उसके स्थान पर रिपब्लिकन दल ने ओहायो के सीनेट जैम्स ए. गारफील्ड (James A. Garfield) को मनोनीत किया। डेमोक्रेटिक दल की ओर से पेनसिलवेनिया के जनरल विन्फील्ड एस. हेन्कोक (Winfield S. Hancock) ने चुनाव लड़ा। 1876 ईसवी के चुनाव में दोनों दलों ने विभिन्न समस्याओं के प्रति भिन्न नीतियों का प्रतिपादन किया था; किन्तु इस चुनाव में उनकी नीतियों का अधिक अन्तर नहीं था। पार्कस के अनुसार यह चुनाव अमेरिकी इतिहास में सबसे अधिक रोचक था। निर्वाचन मण्डल के मतों में गारफील्ड को केवल उनसठ मत अधिक और लोकप्रिय मतों में केवल नौ हजार मत अधिक मिले। प्रतिनिधि सभा में भी रिपब्लिकन दल का बहुमत नाम मात्र का था तथा सीनेट ने दो स्वतन्त्र प्रतिनिधि के हाथों संतुलन शक्ति थी।

XI. गारफील्ड की मृत्यु (1881 ईसवी) :

गारफील्ड का जन्म एक गरीब परिवार में हुआ था। उसने अपना बचपन व युवा अवस्था में कठोर परिश्रम किया था तथा किसी प्रकार कॉलेज की शिक्षा प्राप्त कर ली थी। विभिन्न पदों पर कार्य करने के बाद वह संघीय सेना में मेजर जनरल बन गया था। चुनाव के समय वह सीनेट में ओहायो का प्रतिनिधि था। यद्यपि चुनाव में उसने स्टालवार्ट्स का समर्थन प्राप्त कर लिया था किन्तु शीघ्र ही उनका उससे मतभेद हो गया था। उसने हॉफ ब्रीड्स के नेताओं जेम्स ब्लेन को सेक्रेटरी ऑफ स्टेट और राबर्टसन को न्यू यार्क के बन्दरगाह के कलेक्टर के पदों पर नियुक्त किया तथा स्टालवार्ट्स के कुछ प्रभावशाली सदस्यों को उनकी इच्छानुसार पद नहीं दिये। इस प्रकार स्टालवार्ट्स के नेता कोंकलिंग (Conkling) को अप्रसन्न कर दिया।

राष्ट्रपति पद ग्रहण करने के चार महीने बाद स्टालवार्ट्स के एक समर्थक ने गारफील्ड पर गोली चलाई। कुछ दिनों बीमार रहने के बाद उसकी मृत्यु हो गई। उसके इस अल्कालीन शासन

में भ्रष्टाचार के कई मामलों का पता चला। सुदूर पश्चिमी और दक्षिण में डाक ले जाने वाले ठेकेदारों ने दरों में असाधारण वृद्धि करके काफी धन कमाया। यद्यपि इनकी भ्रष्ट कार्यवाहियों का सरकार को पता चल गया किन्तु उन्हें कोई सजा नहीं दी गई।

XII. चेस्टर ए. आर्थर का प्रशासन (1881-85 ईसवी) :

गारफील्ड की मृत्यु पर उपराष्ट्रपति चेस्टर ए. आर्थर (Chester A. Arthur) ने राष्ट्रपति का पद ग्रहण किया। क्योंकि आर्थर स्टालवार्ट्स दल का नेता था इसलिए शासन में सुधार की आशायें कम हो गई। आर्थर योग्य, ईमानदार व कर्त्तव्यनिष्ठ व्यक्ति था। अमेरिका का सबसे उच्च पद मिलते ही उसकी छिपी हुई योग्यताएँ सामने आने लगी। लगभग सभी अमेरिकन इतिहासज्ञ इस निर्णय से सहमत हैं कि गृह युद्ध के पश्चात् आर्थर ने देश को सबसे अच्छा शासन प्रदान किया।

(1) सिविल सर्विस में सुधार - सिविल सर्विस में सुधार के सम्बन्ध में शीघ्र ही राष्ट्रपति आर्थर का अपने दल के सदस्यों से मतभेद हो गया। पिछले बीस वर्षों से यह माँग की जा रही थी कि चुनाव जीतने वाला दल महत्त्वपूर्ण सरकारी पदों पर अपने समर्थकों को नियुक्त न करके योग्यता के आधार पर नियुक्तियाँ करे और इस प्रकार ईनाम (Spoils) वितरित करने की प्रथा को बन्द करे, क्योंकि इससे शासन में अयोग्यता व भ्रष्टाचार बढ़ता था। इसके अतिरिक्त जब भी राष्ट्रपति पद ग्रहण करता था तो उसका काफी समय पदों के वितरण में लग जाता था और इच्छानुसार पद न पाने वाले व्यक्ति उसका विरोध करने लग जाते थे। हेज ने इस दिशा में सुधार करने का प्रयास किया था, किन्तु उसे सफलता नहीं मिली थी। गारफील्ड की हत्या चार्ल्स गिट्यू (Charles Guiteau) नामक एक व्यक्ति ने इसलिए की थी कि उसे उसकी इच्छानुसार पद नहीं मिला था। इस दुर्घटना ने आर्थर को सुधार के पक्ष में कर दिया। उसने कांग्रेस द्वारा पेंडलेटन एक्ट (Pendleton Act) पारित कर सिविल सर्विस में सुधार के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण कदम उठाये। इस अधिनियम के अनुसार संघीय सरकार के पदों पर राजनीतिक कार्यकर्त्ताओं को चुनाव में उनके योगदान के आधार पर नियुक्त नहीं किया जायेगा। तीन सदस्यों के एक सिविल सर्विस कमीशन की नियुक्त की गई। इसका कार्य 'वर्गीकरण सेवाओं' में भर्ती के लिए परीक्षाओं का प्रबन्ध करना था। यद्यपि उस समय केवल निचले सरकारी पदों का ही 'वर्गीकरण सेवाओ' में सम्मिलित किया गया था किन्तु राष्ट्रपति को यह अधिकार दिया कि वह इसमें अन्य पदों को भी सम्मिलित कर दे। संघीय पदों पर कार्य करने वाले अधिकारियों की उन्नति आयोग द्वारा अयोजित परीक्षा में सफल होकर सरकारी पदों का कार्य करने वाले व्यक्ति को ही दी जा सकती थी। आर्थर ने योग्य व्यक्तियों को कमीशन का सदस्य नियुक्त किया। उसने पहले वर्ष में बारह प्रतिशत संघीय पदों पर परीक्षा में सफल व्यक्तियों की नियुक्ति करने का आदेश दिया। 1932 ईसवी तक उन्नासी प्रतिशत पदों पर नियुक्ति कमीशन की सिफारिश के आधार पर की जाने लगी।

यद्यपि पेंडलेटन अधिनियम ने इस दिशा में महत्त्वपूर्ण सुधार किया, किन्तु पूर्ण रूप से राजनीतिक कार्यकर्त्ताओं को उनके सहयोग के लिए राष्ट्रपति द्वारा महत्त्वपूर्ण पद वितरित करने की प्रथा समाप्त नहीं हुई। राजनीतिज्ञों ने इस सुधार का विरोध किया। अमेरिका में अभी भी कुछ

ऐसे पद हैं जिनकी नियुक्ति में योग्यता के स्थान पर राजनीतिक सहयोग को अधिक महत्त्व दिया जाता है। सरकारी पदों की ओर योग्य व्यक्ति आकर्षित नहीं हुए, क्योंकि परीक्षा में सफल होकर मिलने वाले पदों का वेतन कम था और इन पदों पर काम करने वाले व्यक्तियों को समाज में यथोचित सम्मान प्राप्त नहीं होता था।

(2) आप्रवासियों के आगमन पर प्रतिबन्ध - 1879 ईसवी में बरलिंघम सन्धि में किये गये संशोधन से प्रशान्त महासागर के तटीय प्रदेशों में चीन से आने वाले प्रवासियों की संख्या में विशेष कमी नहीं हुई थी, अत: उनके प्रवास को पूर्णरूप से रोकने की माँग की गई। आर्थर ने उनके प्रवास को सदैव के लिए रोकने के स्थान पर 1892 ईसवी में चीनी नागरिकों का अगले दस वर्ष में अमेरिका में आगमन रोक दिया गया तथा यह भी निश्चय किया गया कि अमेरिका में रहने वाले चीनियों को अमेरिकी नागरिकता के अधिकार नहीं दिये जायेंगे। बाद में इस प्रतिबन्ध की अवधि समय-समय पर बढ़ा दी गई तथा द्वितीय विश्व युद्ध तक केवल विद्यार्थी और कुछ विशेष वर्गों के चीनियों को ही अमेरिका आने की अनुमती दी गई।

1882 ईसवी में चीन के अतिरिक्त अन्य देशों से आनेवाले अपराधियों, अत्यन्त गरीब और पागल व्यक्तियों के अमेरिका में आगमन पर प्रतिबन्ध लगाया गया था। 1885 ईसवी में ऐसे व्यक्तियों के आगमन को भी रोक दिया गया जो कि ठेके पर किसी पूँजीपति के लिए काम करने आये हों।

(3) टेरिफ कमीशन की नियुक्ति - राष्ट्रपति चेस्टर आर्थर ने डाक विभाग में जालसाजी व गबन करने वालों को सख्त सजा दिलाई। उसने अनावश्यक सार्वजनिक निर्माण कार्यों पर होने वाले व्यय को कम करने का भी प्रस्ताव किया। किन्तु दोनों सदनों में उसके प्रस्ताव को स्वीकृत नहीं किया। आर्थर ने 1882 ईसवी में एक टेरिफ कमीशन (Tariff Commission) की नियुक्ति की। इस आयोग ने कर व्यवस्था के ढाँचे की जाँच करके अनेक करों को कम करने का सुझाव दिया। लेकिन प्रमुख उद्योगपतियों व व्यापारियों ने अपने प्रभाव का प्रयोग कर दोनों सदनों के अधिकांश सदस्यों को आयोग के सुझाव स्वीकार न करने के लिए राजी कर लिया। फलस्वरूप अनेक करों की ऊँची दरों में कोई कमी नहीं की गई।

(4) अमेरिकन नौ सेना का आधुनिकीकरण - आर्थर ने एक मामले में कांग्रेस की इच्छा के अनुसार कार्य करने से इन्कार कर स्वतन्त्रतापूर्वक कार्य करने की प्रवृत्ति का परिचय दिया। नदियों व बन्दरगाहों के प्रबन्ध के सम्बन्ध में प्रस्तावित एक अधिनियम को उसने निषेधाधिकार का प्रयोग करके स्वीकृति नहीं दी। आर्थर के शासन काल में अमेरिका की नौ सेना के आधुनिकीकरण का कार्य आरम्भ हुआ। फलस्वरूप बीसवीं सदी के आरम्भ में अमेरिका के समुद्री बेड़े की गणना विश्व के अत्यन्त शक्तिशाली बेड़े में की जाने लगी।

रिपब्लिकन दल के 20 वर्षों के शासन का मूल्यांकन :

1865 से 1885 ईसवी तक अमेरिका में रिपब्लिकन दल का शासन रहा। इस समय में लगभग सभी रिपब्लिकन राष्ट्रपति द्वितीय श्रेणी के राजनीतिज्ञ थे। इस अवधि में रिपब्लिकन दल

में पारस्परिक मतभेद धीरे-धीरे बढ़ते गये जिसके फलस्वरूप अन्त में डेमोक्रेटिक दल की विजय हुई। यह काल शासन में व्याप्त भ्रष्टाचार के लिए अमेरिका का एक कलंकपूर्ण काल है।

इस काल में गृह युद्ध के कारण दक्षिण के राज्यों की बिगड़ी हुई स्थिति को सुधारने और मुक्त नीग्रो दासों को उनके अधिकार दिलाने के लिए सराहनीय प्रयत्न किये गये। सरकारी सेवाओं में व्याप्त भ्रष्टाचार को समाप्त करने का पहला प्रयास रिपब्लिकन दल के शासन में ही किया गया था। इस युग में आर्थिक, सामाजिक व सांस्कृतिक क्षेत्र में होने वाले क्रान्तिकारी परिवर्तनों ने बीसवीं शताब्दी में अमेरिकी जीवन की आधारशिलाएँ रखीं।

□□□

अध्याय-15

सुधारों का युग (1885-1909 ईसवी)

□ बी. एस. माथुर

I. 1884 ईसवी का चुनाव :

1884 ईसवी के राष्ट्रपति चुनाव में चेस्टर आर्थर दुबारा मनोनीत होने का इच्छुक था, परन्तु उसकी प्रशासनिक नीतियों और स्वतंत्र विचारों के कारण रिपब्लिकन दल के हाफ ब्रीड्स (Half Breeds) और स्टालवर्ट्स (Stalwarts)वर्ग उससे अप्रसन्न थे। इस कारण रिपब्लिकन दल को नया नेता खोजना था। काफी विचार के बाद दल ने जेम्स ब्लेन (James Blain) को अपना उम्मीदवार चुना। परन्तु उसका चुनाव सबको पसन्द नहीं था और दल का प्रमुख नेता कोंकिंलग (Conkling) इससे विशेष रूप से नाराज हुआ। रिपब्लिकन दल का प्रगतिशील वर्ग भी, जो मगवम्पस (Maugwumps) कहलाता था, जेम्स ब्लेन को नहीं चाहता था और यह दल किसी भी योग्य डेमोक्रेट को अपना समर्थन देने को तैयार था। डेमोक्रेटिक दल ने उनके विचार से प्रभावित होकर न्यू यार्क के सुधारवादी गवर्नर ग्रोवर क्लीवलैण्ड (Grover Cleveland) का नाम अपने दल की ओर से प्रस्तावित कर दिया। ऐसा प्रतीत होता है कि 1880 ईसवी की भाँति इस चुनाव में भी दोनों दलों ने कोई निश्चित कार्यक्रम को देश के सामने नहीं रखा। इस कारण 1884 ईसवी का चुनाव राष्ट्रपति के पद के लिए संघर्ष मात्र ही रह गया। जब एक तरफ डेमोक्रेट दल ने मुलीगन पत्रों (Mulligon Letters) की चर्चा कर ब्लेन के अनैतिक व्यापारिक सम्बन्धों पर प्रकाश डाला तो दूसरी ओर रिपब्लिकन दल ने क्लीवलैण्ड के व्यक्तिगत चरित्र की कड़ी आलोचना की और कहा कि वह एक नाजायज पुत्र का पिता था। ब्लेन के प्रभाव को कम करने की दृष्टि से डिमोक्रेटिक पार्टी ने यह भी अफवाह फैलाई कि उसने एक प्रोटेस्टेन्ट पादरी सेमुअल बरचर्ड (Samuel Burchard) द्वारा कैथोलिक धर्म के अपराध का कोई विरोध नहीं किया। ऐसे वातावरण में 1884 ईसवी का चुनाव सम्पन्न हुआ। तेईस हजार के बहुमत से डेमोक्रेटिक पार्टी जीत गई और 1885 ईसवी में क्लीवलैण्ड ने व्हाइट हाउस में प्रवेश किया।

II. क्लिवलैन्ड का प्रशासन (1885-1889 ई.) :

नि:सन्देह लिंकन और थियोडोर रूजवेल्ट के मध्य काल में क्लिवलैन्ड सबसे योग्य राष्ट्रपति था। उसके व्यक्तित्व में दृढ़ता थी जिसका प्रमाण वह राष्ट्रपति बनने से पहले ही दे चुका था।

1881 ई. में बफेलो (Buffalo) में मेयर और 1882 ईसवी में न्यू यार्क के गवर्नर के पदों पर काम करते हुए उसने काफी सीमा तक राजनीतिज्ञों तथा दबाव समूहों (Pressure Groups) का सामना किया था जिसके कारण उसे विटो मेयर और विटो गवर्नर कहा जाता था। उसमें स्पष्टता इस मात्रा में थी कि वह किसी बात को मना करने में हिचहिचाता नहीं था, यह उसके चरित्र का गुण और दोष दोनों ही माना जा सकता है। एक तरफ जब इसके कारण वह बेईमान राजनीतिज्ञों को अपने से दूर रखता था, दूसरी तरफ इस प्रकार के दृष्टिकोण में वह अपने समय की बहुत सी समस्याओं को नहीं भी समझ सका।

क्लीवलैन्ड की प्रमुख इच्छा प्रशासनिक ढाँचे की ठीक करने की तथा व्यापारी धन्धों में नैतिक स्तर लाने की थी। मुद्रा और प्रशुल्क सम्बन्धी समस्याओं में उसे कम रुचि थी और मजदूर और कृषकों की कठिनाइयों को वह समझता था। उसका विचार था कि सरकार की तरफ से किसी विशेष वर्ग को लाभ नहीं मिलना चाहिए चाहे वह बड़ी निगम ही हो अथवा मजदूर वर्ग। वास्तव में डेमोक्रेटिक दल में इस समय कोई दूरदर्शी विचारक नहीं था जो उपर्युक्त समस्याओं के समाधान की योजना बना सके और इस कारण क्लीवलैन्ड का प्रशासन काल आर्थिक और राजनैतिक कठिनाइयों की जड़ तक पहुँचने में सफल नहीं हो सका।

1. प्रशासनिक सुधार :

(i) सरकारी पदों की वर्गीकृत सूची - राष्ट्रपति बनने पर क्लीवलैन्ड ने प्रशासनिक सेवाओं में सुधार करने का प्रयत्न किया परन्तु इस दिशा में उसको अपने दल की ओर से ही विरोध मिला। बहुत समय के बाद डेमोक्रेटिक पार्टी सत्तारूढ़ हुई थी और यह स्वभाविक था कि उसमें सरकारी पदों के प्रति आकर्षण था। क्लीवलैन्ड पद पुरस्कार व्यवस्था का विरोधी था और जब उसने रिपब्लिकन पदाधिकारियों को हटाने में आनाकानी की तो उसके दल के सदस्यों ने स्पष्ट रूप से उसे बतला दिया कि जीते हुए दल को पुरस्कार मिलना ही चाहिए। राष्ट्रपति ने इस प्रश्न पर समझौता करना ही उचित समझा और पद पुरस्कार और योग्यता प्रणाली दोनों को स्वीकार कर लिया। परिणामस्वरूप लगभग बारह हजार सरकारी पद वर्गीकृत सूची (Classified List) में रख दिये गये। जिन पर नियुक्ति योग्यता के आधार पर ही होती थी। परन्तु इस नीति ने न तो मगवम्पस (Mugwumps) को जो योग्यता प्रणाली चाहते थे प्रसन्न किया और न ही डेमोक्रेटों को जो पद पुरस्कार प्रणाली चाहते थे।

(ii) सेवानिवृत्त सैनिकों के पेंशन सम्बन्धी अधिनियम - प्रशासन में स्वच्छता लाने की दृष्टि से क्लीवलैन्ड ने सैनिकों के पेंशन पत्रों की भी जाँच करवाई। गृह युद्ध के अनुभवी योद्धाओं ने 'ग्रेंड आर्मी ऑफ दी रिपब्लिक' (Grand Army of The Republic) नामक एक संस्था बनाई थी। इस संस्था ने धीरे-धीरे राजनीति में अपना प्रभाव स्थापित कर लिया था। इसके दबाव के कारण 1879 ईसवी में एक अधिनियम बनाया गया जिसके द्वारा सैनिकों के सेवानिवृत्त होने के दिन से उन्हें पेंशन प्राप्त करने का अधिकार मिल गया। जिन लोगों की अर्जी पेन्शन कार्यालय ने अस्वीकार कर दी उनके लिए कांग्रेस ने व्यक्तिगत अधिनियम बनाये। 1887 ईसवी में

एक अधिनियम के द्वारा उन सब सैनिकों को, जिन्होंने तीन महीने की सेवा की थी पेन्शन का अधिकार दे दिया। क्लीवलैन्ड ने पेन्शन सम्बन्धी अधिकांश बिलों का निषेध कर दिया। परिणामस्वरूप, रिपब्लिकन और ग्रेंड आर्मी ऑफ दी रिपब्लिक के सदस्य मतदाताओं को याद दिलाने लगे कि दक्षिण राज्य का राष्ट्रपति होने के क्या दोष हो सकते हैं?

(iii) भ्रष्टाचार का दमन – अन्य क्षेत्रों में भ्रष्टाचार रोकने की दिशा में कदम उठाये गये। राष्ट्रपति ने गृह सचिव को आदेश दिया कि पश्चिमी क्षेत्रों में जो सरकारी भूमि खनिज और रेल कम्पनियों या लकड़ी काटने के ठेकेदारों को दी गई थी, उसकी जाँच करवाई जाये। 8 करोड़ एकड़ भूमि जो इन वर्गों ने हड़प ली थी, इस जाँच द्वारा सरकार को वापस मिल गई।

(iv) प्रशुल्क दरों में कमी करने का असफल प्रयत्न – प्रथम प्रशासन क्लीवलैन्ड राजनैतिक घटनाओं में अधिकतर उलझा रहा जिसके कारण प्रशुल्क की प्रमुख आर्थिक समस्याओं की ओर कम ध्यान दे सका। उसका समकालीन सुधारक कार्ल शुर्ज (Carl Cchurz) उससे मिलने गया तो शुर्ज ने उसे बताया की देश के सामने प्रशुल्क समस्या सबसे महत्त्वपूर्ण थी। क्लीवलैन्ड ने स्वीकार किया कि उसे प्रशुल्क का कुछ ज्ञान नहीं था। परन्तु शीघ्र ही राष्ट्रपति ने इस समस्या का अध्ययन किया और वह इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि वह गृह युद्ध के समय प्रशुल्क की जो दर बढ़ा दी गई थी अब उसको ऊँचा रखने की आवश्यकता नहीं थी। इतना ही नहीं देश की आर्थिक समृद्धि इतनी बढ़ गई थी कि प्रत्येक वर्ष सरकारी बजट में काफी बचत हो रही थी। इस कारण यदि प्रशुल्क दरों में कमी कर दी जाये तो भी किसी प्रकार की आर्थिक कठिनाई नहीं होती। राष्ट्रपति इस नतीजे पर पहुँचा कि अब संरक्षात्मक प्रशुल्कें (Protective Duties) कोई आवश्यकता नहीं थी। 1887 ईसवी में उसने कांग्रेस पर प्रशुल्कों को कम करने के लिए बार–बार जोर डाला। उसकी प्रेरणा से दक्षिण और पश्चिम के डेमोक्रेटों में हाउस ऑफ रिप्रजेन्टेटिव से मिल्स बिल (Mill's Bill) नामक एक विधेयक पास करा दिया जिसका उद्देश्य प्रशुल्क दरों में थोड़ी कमी करने का था परन्तु सीनेट ने रिपब्लिकन दल की प्रधानता के कारण यह बिल यहाँ पास नहीं हो सका और 1888 ईसवी के चुनाव के समय देश के समाने महत्त्वपूर्ण प्रश्न के रूप में बना रहा।

(v) कृषि विभाग को मंत्रिमंडलीय स्तर – क्लीवलैन्ड के समय कानून निर्माण कार्य रिपब्लिकनों के विरोध के बावजूद सामान्य गति से चलता रहा। कृषि विभाग के बढ़ते हुए महत्त्व को ध्यान में रखते हुए उसने इस विभाग को मन्त्रीमण्डलीय स्तर दे दिया।

(vi) राष्ट्रपति उत्तराधिकारी अधिनियम व चुनाव-गणना अधिनियम (1886 ईसवी) – 1886 ई. में राष्ट्रपति उत्तराधिकारी अधिनियम (Presidential Succession Act) पास किया गया जिसमें यह प्रावधान था राष्ट्रपति की मृत्यु के बाद विभिन्न सचिव क्रम से राष्ट्रपति बनाये जा सकते थे। 1887 ई. में चुनाव–गणना अधिनियम (Electoral Count Act) द्वारा यह निश्चित किया गया कि यदि किसी राज्य से राष्ट्रपति के निर्वाचन के बारे में एक से अधिक विवरण प्राप्त हो तो कांग्रेस उस विवरण को ही सही मानेगी जो राज्य सरकार द्वारा सही घोषित किया जायेगा।

(vii) अन्तर्राज्यीय वाणिज्य अधिनियम – अन्तर्राज्यीय वाणिज्य अधिनियम (Inter -

State Commerce Act) ने रेल के प्रशासन में सुधार की दिशा दिखाई। इसके अनुसार रेल कम्पनियों को ढुलाई की दर तालिका को आम स्थान पर प्रदर्शित करना होगा। कम दूरी का अधिक भाड़ा और ज्यादा दूरी का कम भाड़ा की नीति का परित्याग करना होगा और भाड़ों की दरों को न्यायसंगत रखना होगा। इसके साथ पाँच सदस्यों के एक अन्तर्राज्यीय वाणिज्य कमीशन (Inter-State Commerce Commission) की भी स्थापना की गई थी जिसे यह देखना था कि रेल मालिक उपर्युक्त अधिनियम की धाराओं का पालन करते हैं अथवा नहीं। इतना सब होते हुए भी रेल मालिक इन नियमों का उल्लंघन करते रहे जिसके कारण बार-बार वाणिज्य कमीशन को अदालत की सहायता लेनी पड़ती थी।

(viii) डॉस अधिनियम (Dawes Act) - 1865 ईसवी में गृह युद्ध की समाप्त होते ही कांग्रेस ने आदिवासियों की स्थिति का अध्ययन करने के लिए एक समिति का गठन किया। इस समिति ने उनके साथ शांतिपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करने की सिफारिश की थी। यह माना गया था कि उनसे युद्ध करना खर्चीला था। उनको नौकरियों में रखने की सिफारिश भी की गई थी। ऐसा मानवीय व आर्थिक दृष्टि से किया गया था, क्योंकि उन्हें पदों पर रखने से आर्थिक बचत और सस्ता श्रम उपलब्ध होता था। हेज आर्थर, चेस्टर एवं क्लीवलैन्ड के शासन काल में इन नीतियों पर अमल किया गया था। 1887 ईसवी में पारित डॉस अधिनियम के अनुसार-

(1) आदिवासियों की वैध रूप से मान्यता समाप्त कर उनकी भूमिका को व्यक्तिगत रूप से आदिवासियों में बांटी जाये।

(2) उनकी सम्पत्ति की रक्षा की जाये। पच्चीस वर्ष तक उनकी भूमि को बेचने से रोका जाये। इस अवधि के बाद वह पूर्णरूपेण उसका स्वामी बने और उसे पूर्ण अमेरिकी नागरिकता प्रदान की जाये।

(3) यदि कोई आदिवासी अपने समूह से विच्छेद कर ले तो भी उसे नागरिकता के अधिकार और भूमि दी जाये।

मोरिसन व कोमेज़र के अनुसार डॉस अधिनियम आदिवासियों को सभ्य बनाने, कृषि कार्य सीखने तथा राष्ट्र की राजनीति में भाग लेने की दिशा में पहला गम्भीर कदम था। किन्तु इस योजना द्वारा आदि निवासियों को छलने का प्रयत्न भी किया गया था। नागरिकता का लालच देकर उनमें शक्तिशाली समूह या संगठन को समाप्त करने का यह एक प्रयत्न था। उनकी भूमि हड़पी जा सकती थी तथा उन पर प्रवासियों को बसाने की प्रक्रिया सुलभ हो गई।

III. 1888 ईसवी का चुनाव :

1888 ईसवी के चुनाव के समय डेमोक्रेटों ने क्लीवलैन्ड को दुबारा नामांकित किया, यद्यपि दल के कुछ नेता उसकी नीतियों से प्रसन्न नहीं थे। रिपब्लिकन दल ने इन्डियाना राज्य के प्रसिद्ध वकील बेंजामिन हैरीसन (Benjamin Harrison) को प्रस्तावित किया जो भूतपूर्व राष्ट्रपति विलियम हेनरी हैरीसन का पौत्र था। 1888 ईसवी का चुनाव अमेरिका के इतिहास में अपना महत्त्व रखता है, क्योंकि गृह युद्ध के बाद पहली दफा दोनों दलों ने निश्चित कार्यक्रम देश के सामने रखा। प्रशुल्क समस्या अब मुख्य प्रश्न के रूप में सामने आई परन्तु इसके साथ अमेरिका की राजनैतिक

इतिहास में यह सम्भवत: भ्रष्ट चुनावों में से एक था। दोनों दलों ने अत्यन्त भ्रष्ट प्रणालियों का प्रयोग किया। रिपब्लिकन दल ने कई लाख डालर इकट्ठे किये जिसका चुनाव जीतने में दुरुपयोग किया गया उन्होंने गृह युद्ध के कर्मठों (Veterans) को भी क्लीवलैन्ड की निषेधाधिकार नीति का ध्यान दिला कर अपनी ओर मिला लिया जिसमें एक संगठित समूह की वोट उन्हें मिल गई। रिपब्लिकन दल के प्रयत्नों के कारण क्लीवलैन्ड की इस चुनाव में पराजय हुई, यद्यपि लगभग एक लाख लोगों ने उसे हैरीसन से ज्यादा वोट दी थी। कांग्रेस के दोनों सदनों में भी रिपब्लिकन दल का बहुमत स्थापित हो गया।

IV. बेंजामिन हैरीसन का प्रशासन (1889-1893 ईसवी) :

हैरीसन एक ईमानदार व कर्त्तव्यनिष्ठ व्यक्ति था, किन्तु वह दल के प्रमुख नेताओं में से नहीं था। वह अपने व्यक्तित्व से दूसरों को प्रभावित नहीं कर सकता था। व्यवहार में शीतल और सामाजिक सुधारों से दूर रहने के कारण वह अपने राजनैतिक जीवन में अपना पूरा योगदान नहीं दे सका। उसका विदेश सचिव जेम्स ब्लेन (James Blain) प्रतिभावान था जिसने विदेश नीति में समझ बूझ के साथ काम लिया। अन्य सचिव विलियम विंडन (William Winden) और जॉन वानामेकर (John Wanamaker) दल के सक्रिय कार्यकर्त्ता थे और उनके उद्देश्य दल के हितों की रक्षा करना था। अधिकांश सरकारी पदों का वितरण जॉन वानमेकर ने दल के सदस्यों में ही किया जिसके कारण राष्ट्रपति वर्गीकृत सूची में थोड़े से ही पद स्थानान्तरित कर सका।

(1) विरोधी दल की शक्ति को कम करने का संशोधन - अन्य अनुदारवादी राष्ट्रपतियों की भांति हैरीसन ने विधि-निर्माण का कार्य दल के नेताओं पर छोड़ दिया। हाऊस के स्पीकर थॉमस रीड (Thomas Reed) ने विरोधी दल की शक्ति को कम करने की दृष्टि से नियमों में संशोधन करा दिया जिसके परिणामस्वरूप कांग्रेस ने रिपब्लिकन दल का प्रभाव अच्छी तरह से स्थापित हो गया।

(2) आश्रित पेन्शन अधिनियम - पिछले कुछ वर्षों में सरकारी कोष में काफी धन इकट्ठा होता जा रहा था। हैरीसन के प्रशासन काल में इक्कानवीं कांग्रेस ने इस धन का दुरुपयोग करना शुरू किया। आश्रित पेन्शन अधिनियम (Dependent Pension Act) पारित कर युद्ध कर्मठ पेन्शन पाने वालों की संख्या लगभग दुगुनी कर दी गई। बहुत-सी आन्तरिक सुधार योजनाओं को भी सहायता दी गई और बड़े पैमाने पर नौ सैनिक विस्तार हाथ में लिया गया। इस कारण इक्कानवी कांग्रेस ''करोड़ डॉलर कांग्रेस'' (Billion Dollar Congress) के नाम से प्रसिद्ध है।

(3) शरमन न्यास-विरोधी अधिनियम - इस कार्यक्रम के अतिरिक्त अन्य महत्त्वपूर्ण अधिनियम भी पारित किये गये। जुलाई 1890 ईसवी में शरमन न्यास विरोधी अधिनियम (Sharman Anti-Trust Act) पारित किया गया। जिसके अनुसार ऐसे संवेदों का जिनका उद्देश्य विभिन्न राज्यों के व्यापार या विदेशी वाणिज्य में बाधा डालना हो, अवैध घोषित कर दिया गया। इससे

व्यापार में एकाधिकार स्थापित करने के प्रयत्नों को भी रोकने का प्रयास किया गया। यद्यपि वह अधिनियम न्यास-विरोध के इतिहास में पहला महत्त्वपूर्ण कदम था परन्तु वास्तव में अगले दस वर्षों में इसे क्रियान्वयन करने का कोई विशेष प्रयत्न नहीं किया गया। इस अवधि में बड़े-बड़े और बेहद बदनाम कई अन्य न्यास भी कायम हो गये।

(4) शरमन चाँदी क्रय अधिनियम - 1890 ईसवी के जुलाई माह में शरमन चाँदी क्रय अधिनियम (Sherman Silver Purchase Act) भी पारित हुआ। इसके अनुसार सरकारी कोष को प्रतिमाह पैंतालिस हजार औंस चाँदी खरीदनी थी और इसका भुगतान नोटों द्वारा करना था। ये नोट बाद में सोने या चाँदी के सिक्कों में भुनाये जा सकते थे। परन्तु इस अधिनियम से चाँदी के दामों में आई कमी रुक नहीं सकी।

(5) मेकिनले प्रशुल्क अधिनियम - 1888 ईसवी के चुनाव उस समय एक प्रमुख प्रश्न बन चुका था और दल के नेताओं ने इसमें बहुत रुची दिखाई थी। अक्टूबर, 1890 ई. में विलियम मेकिनले (William Mckinley) और नेल्सन एल्ड्रिच (Nelson Aldrich) के प्रयत्नों से कांग्रेस में मेकिनले प्रशुल्क अधिनियम (Mckinley Tariff Act) पारित किया गया। प्रशुल्क की सामान्य दरों को अड़तीस प्रतिशत से पचास प्रतिशत तक बढ़ा दिया गया। यद्यपि शक्कर पर से आबकारी कर बिल्कुल हटा लिया गया। परन्तु कपड़ों की विभिन्न किस्मों पर बढ़ा दिया गया। इन परिवर्तनों का परिणाम यह हुआ कि 1892 ईसवी तक बहुत सी वस्तुओं के दाम फिर बढ़ने लगे जिससे जनता में बड़ा असन्तोष हुआ। 1892 ईसवी के चुनाव के समय यह रिपब्लिकन दल की पराजय का सबसे बड़ा कारण बना।

V. 1892 ईसवी का चुनाव :

1892 ईसवी राष्ट्रपति के चुनाव का वर्ष था। रिपब्लिकन दल ने हैरीसन को तथा डेमोक्रेटों ने क्लीवलैन्ड को प्रस्तावित किया। दोनों दलों ने एक बार फिर प्रशुल्क की समस्या को सबसे महत्त्वपूर्ण प्रश्न बनाया। इसी समय पापुलिस्ट दल (Populist Party) के नाम से तीसरी पार्टी का सृजन हुआ जिसने जेम्स वीवर (James Weaver) को अपना उम्मीदवार खड़ा किया। पापुलिस्ट दल ने रिपब्लिकन और डेमोक्रेटों के कार्यक्रमों की आलोचना करते हुए देश के सामने आर्थिक सुधारों की समस्या को सबसे महत्त्वपूर्ण बताया। उन्होंने कृषक वर्ग की अवस्था सुधारने पर भी बल दिया। वास्तव में पिछले कुछ वर्षों में कृषक वर्ग की ओर से सरकार की पूरी उदासीनता ने कृषकों में काफी असन्तोष पैदा कर दिया था। पापुलिस्ट पार्टी का मूल आधार कृषक वर्ग ही था। इस प्रकार 1892 ईसवी का चुनाव तीन दलों का संघर्ष था। चुनाव में डेमोक्रेट दल को भारी बहुमत से विजय मिली और कांग्रेस के दोनों सदनों पर भी उनका पूरा अधिकार स्थापित हो गया। पापुलिस्ट दल की प्रारम्भिक सफलता भी प्रभावशाली रही, क्योंकि इस दल के बारह सदस्य कांग्रेस में चुन लिये गये। ऐसा प्रतीत होता है कि जनता डेमोक्रेटों से बहुत आशा रखती थी और उसका विश्वास था कि वे देश की कठिन समस्याओं का कोई न कोई हल निकाल ही लेंगे; परन्तु शीघ्र ही उनकी आशाओं पर पानी फिर गया।

VI. क्लीवलैन्ड का दूसरा प्रशासन (1893-97 ई.) :

(1) 1893 ई. का आर्थिक संकट - राष्ट्रपति क्लीवलैन्ड को पदासीन होते ही भयंकर आर्थिक संकट का सामना करना पड़ा। इस स्थिति के कई कारण थे। लगभग दस वर्षों से अमेरिका में सम्पन्नता धीरे-धीरे बढ़ रही थी। अधिकाधिक धन औद्योगिक विकास में लगाया जा रहा था, परन्तु इस दृष्टिकोण का दुष्परिणाम कृषि पर पड़ा जिसकी उपेक्षा के कारण कृषक वर्ग की आर्थिक स्थिति बिगड़ गई, उनकी क्रय शक्ति कम हो गई जिससे वे देश के अधिक उत्पादन को उपयोग करने में असमर्थ रहे। यूरोप के देशों में भी अमेरिका के सामान की खरीद कम हो गई थी, क्योंकि वहाँ भी इस समय आर्थिक.मंदी चल रही थी। परिणामस्वरूप देश में आठ हजार से ऊपर व्यापारिक संस्थान बन्द हो गये और चार सौ बैंकों ने अपना काम करना स्थगित कर दिया। अनाजों के मूल्य बहुत गिर गये। इस स्थिति का उद्योग पर भी प्रभाव पड़ा और लगभग दस लाख मजदूर बेरोजगार हो गये। व्यक्तिगत रूप से राष्ट्रपति आर्थिक मंदी का प्रमुख कारण सरकार की चाँदी नीति को मानता था। उसके विचार में चाँदी की खरीद के लिए सरकारी कोष से अधिक सोना खर्च करना ठीक नहीं था। इस कारण उसने शरमन चाँदी अधिनियम को इस स्थिति के लिए उत्तरदायी ठहरा कर कांग्रेस के एक विशेष अधिवेशन में उसको रद्द करने की माँग की। पूर्वी राज्यों के रिपब्लिकनों ने क्लीवलैन्ड की इस नीति का समर्थन किया और अन्त में शरमन अधिनियम रद्द कर दिया गया। सोने की निकासी कम करने के साथ-साथ सरकारी कोष में बन्धन-पत्र देकर सोना खरीदना शुरू किया। यद्यपि स्वर्ण-मानदण्ड की रक्षा हो तो गई परन्तु राष्ट्रपति पर यह आरोप लगाया गया कि उसने स्वयं को बड़े बैंकपतियों के हाथ बेच दिया था।

(2) विल्सन गोरमन प्रशुल्क अधिनियम - दूसरी समस्या प्रशुल्क सम्बन्धी थी। चुनाव के समय डेमोक्रेटों ने प्रशुल्क की दरें कम करने का वचन दिया था। इस कारण 1894 ईसवी में पश्चिमी वर्जीनिया के विलियम विल्सन (William Wilson) ने दरों में थोड़ा बहुत कमी करने की दृष्टि से एक विधेयक पेश किया। इसमें बहुत सी वस्तुओं पर दरें घटाने का प्रस्ताव था। बजट में घाटे होने की स्थिति में आयकर लगाकर इसे पूरा करने का सुझाव था। परन्तु जब बिल सीनेट में पहुँचा तो पूर्वी डेमोक्रेटों ने कुछ रिपब्लिकनों के साथ मिल कर इसमें छः सौ चौबीस संशोधन जोड़ दिये जिससे बहुत सी चीजों पर दरें बढ़ा दी गईं। यह संशोधित बिल विल्सन- गोरमन प्रशुल्क अधिनियम (Wilson-Gorman Trariff Act) के नाम से दोनों सदनों में पास हो गया। यद्यपि क्लीवलैन्ड ने इसकी कड़ी आलोचना की परन्तु उसने इसे अधिनियम बनने से नहीं रोका। कुछ ही समय पश्चात् सुप्रीम कोर्ट ने आयकर लगाने के प्रावधान को कानून के विरुद्ध घोषित कर दिया। अब बहुत से कृषक नेताओं ने यह कहना शुरू किया कि सरकार वास्तव में कृषकों के हित की रक्षा नहीं करके बड़े-बड़े उद्योगपतियों का साथ दे रही है। इससे क्लीवलैन्ड प्रशासन की बड़ी बदनामी हुई।

(3) पुलमेन कम्पनी के श्रमिकों की हड़ताल - 1894 ईसवी में पुलमेन (Pullman) कम्पनी के मजदूरों ने हड़ताल कर दी जिससे शिकागो और पश्चिमी क्षेत्र का रेल यातायात

लगभग बन्द हो गया। राष्ट्रपति ने केन्द्रीय सेना को भेज कर इस हड़ताल को समाप्त कर दिया। परन्तु इससे मजदूर वर्ग की सहानुभूति उसने खो दी।

इस प्रकार क्लीवलैन्ड के दूसरे प्रशासन का अन्त बढ़ते हुए सामाजिक और आर्थिक असन्तोष के वातावरण में हुआ। चाँदी और प्रशुल्क के प्रति नीति ने उसकी पार्टी को पहले ही विभाजित कर दिया था। ब्लैण्ड (Blend) और बेन टिलमेन (Ben Tillman) जैसे नेताओं ने राष्ट्रपति की नीतियों की खुले आम भर्त्सना की।

VII. 1896 ईसवी का चुनाव :

1896 ईसवी का चुनाव अभियान इन्हीं दोनों समस्याओं की पृष्ठभूमि में हुआ। इस बार रिपब्लिकन दल अपनी विजय के बारे में आश्वस्त था, क्योंकि डेमोक्रेटिक दल के पिछले तीन वर्ष आर्थिक मंदी और आपसी मतभेद के वातावरण में बीते थे। डेमोक्रेटिक की नरम स्थिति देखकर रिपब्लिकन नेता खुलेआम कहते थे कि वे जिस रिपब्लिकन को राष्ट्रपति पद के लिए मनोनीत कर देंगे वही विजयी हो जायेगा। इस दल के प्रमुख धनाढ्य नेता मॉरक्यूस हेना (Morcus Hanna) के इशारे पर ओहायो के गवर्नर विलियम मेकिन्ले (William Mackinley) को राष्ट्रपति पद के लिए मनोनीत किया गया। हेना सिर्फ मेकिन्ले का प्रशंसक ही नहीं था, वह यह भी जानता था कि मेकिनले ऊँची प्रशुल्क दरों का महान् समर्थक था और इस कारण वह उद्योगपतियों के हितों की रक्षा के लि" सर्वथा उपयुक्त था। रिपब्लिकन सम्मेलन की बैठक होने से पहले ही हेना ने मध्य पश्चिमी और दक्षिणी-प्रतिनिधि मण्डलों से मेकिन्ले का नाम प्रस्तावित करा दिया और उसे सम्पन्नता का अग्रदूत के नाम से पेश किया। बिना किसी विरोध के रिपब्लिकन दल ने मेकिन्ले की ओर से नामांकित कर दिया। डेमोक्रेटों में इस समय आपसी मतभेद बढ़ गये थे। दक्षिण और पश्चिम प्रतिनिधि मण्डल पूर्वी डेमोक्रेटों के हाथ से शक्ति छीनना चाहते थे। काफी वाद-विवाद के पश्चात् दल ने ब्रायन (Bryan) को इस पद के लिए मनोनीत किया। पापुलिस्टों ने भी ब्रायन का समर्थन करने का निश्चय किया, परन्तु इसके साथ अपने दल में टॉम वाटसन (Tom Watson) को उपराष्ट्रपति पद के लिए खड़ा किया। पापुलिस्टों का यह निर्णय उनके दल के लिए घातक सिद्ध हुआ, क्योंकि उन्होंने यह बता दिया कि उनके दल में राष्ट्रपति पद के लिए कोई योग्य नेता नहीं है। चुनावों में, जैसे कि पहले ही स्पष्ट था, विजय विलियम मेकिन्ले को मिली। रिपब्लिकन दल का कांग्रेस के दोनों सदनों पर भी अधिकार हो गया और कई अनुदारवादी करोड़पति सीनेट के सदस्य चुन लिये गये थे।

VIII. मेकिन्ले का प्रशासन (1897-1901 ईसवी) :

मेकिन्ले सामान्य योग्यता रखता था, परन्तु राजनैतिक हथकण्डों की सूझबूझ उसमें काफी थी। उसका जन्म ओहायो में हुआ था और गृह युद्ध के समय उसने सेना में मेजर का पद प्राप्त कर लिया था। राष्ट्रपति बनने के पहले वह रिपब्लिकन दल का सक्रिय कार्यकर्त्ता रह चुका था और चुनाव के समय ओहायो राज्य का गवर्नर था। उसके व्यक्तित्व में दृढ़ता नहीं थी और इस कारण वह हेना जैसे नेताओं के प्रभाव में शीघ्र आ जाता था।

(1) डिंगले प्रशुल्क अधिनियम - राष्ट्रपति और रिपब्लिकन दल ने सबसे पहले प्रशुल्क दरों को बढ़ाने की ओर कदम उठाया। आर्थिक मंदी इस समय समाप्त हो गई थी और देश तेजी से सम्पन्नता की ओर बढ़ रहा था। पदासीन होने के तुरन्त बाद मेकिन्ले ने प्रशुल्क के प्रश्न को लेकर कांग्रेस का विशेष अधिवेशन बुलाया और अपने दल के बहुमत के कारण बिना अधिक वाद-विवाद के डिंगले प्रशुल्क अधिनियम (Dingley Tariff Act) पास करा दिया। इसके अनुसार प्रशुल्क दरें बहुत ऊँची बढ़ा दी गईं। बहुत सी ऐसी वस्तुएँ जिन पर अभी तक कोई कर नहीं था, उन पर प्रशुल्क लगा दिया गया। उद्योगपतियों को अब दूसरे देशों की प्रतियोगिता से काफी मात्रा में राहत मिल गई।

(2) स्वर्ण मानदंड अधिनियिम - प्रशुल्क की तरह मुद्रा का प्रश्न भी महत्त्वपूर्ण था। द्विमुद्रा प्रणाली के लिए अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग की आवश्यकता थी। इस कारण राष्ट्रपति ने इंग्लैण्ड और फ्रांस से चाँदी के सम्बन्ध में समझौता करने का प्रयत्न किया। परन्तु इंग्लैण्ड इसके लिए तैयार नहीं था। यह स्पष्ट था कि अमेरिका अकेला चाँदी के मानदंड पर नहीं चल सकता था, क्योंकि ऐसा करने से अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में कठिनाई आती। इस कारण स्वर्ण को देश की स्थाई मुद्रा बनाने के लिए 1900 में स्वर्ण मानदण्ड अधिनियम (Gold Standard Act) पास किया। यह वास्तव में सही दिशा में एक कदम था और 1900 ईसवी के बाद अमेरिका में बढ़ती हुई आर्थिक सम्पन्नता इसका प्रतीक थी।

(3) 1900 ईसवी का चुनाव - 1900 ईसवी के चुनावों में रिपब्लिकन दल ने मेकिन्ले को दुबारा राष्ट्रपति पद के लिए मनोनीत किया और थियोडोर रूजवेल्ट (Theodore Roosevelt) को उसके साथ उपराष्ट्रपति के लिए रखा। डेमोक्रेट दल ने पुनः ब्रायन को मनोनीत किया। बिना किसी कठिनाई के मेकिन्ले और रूजवेल्ट की जोड़ी विजय हुई। 1901 ईसवी में राष्ट्रपति मेकिन्ले की एक हत्यारे की गोली से घायल होने के कुछ महीने बाद मृत्यु हो गई। अमेरिका के संविधान के अनुसार उपराष्ट्रपति रूजवेल्ट राष्ट्रपति बना।

(4) प्रगतिवादी वर्ग का उदय - उन्नीसवीं सदी का अन्तिम दशक अमेरिका के इतिहास में महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि इस समय देश में सुधारों की माँग बढ़ रही थी। रिपब्लिकन दल में एक वर्ग प्रगतिवादियों (Progressive) का था जो चाहते थे कि उन्नति के सबको समान अवसर मिले और सुविधाएँ और अधिकार किसी विशेष गुट के हाथ में नहीं जाये। प्रगतिवादी यह मानते थे कि इन आदर्शों के मार्ग में बड़े उद्योगपति बाध्य थे। व्यापारिक प्रतियोगिताओं में गलत प्रणालियों का उपयोग करके वे धन और शक्ति बनाये रखते थे। प्रशुल्क की दरों को नीचा करने के काम में भी उनका ही सबसे ज्यादा विरोध था। इस कारण प्रगतिवादी, उद्योगपतियों की शक्ति पर अंकुश लगाना चाहते थे। नये राष्ट्रपति से उन्हें बहुत आशाएँ थीं और रूजवेल्ट ने भी अपने आचरण से स्वयं को उनका समर्थक सिद्ध कर दिया। पार्कस के अनुसार उसने किसी और की अपेक्षा अधिक प्रगतिवाद को स्पष्ट दिशाएँ दीं।

IX. थियोडोर रूजवेल्ट का प्रशासन :

(I) व्यक्तित्व – थियोडोर रूजवेल्ट का जन्म न्यूयार्क के एक सम्पन्न परिवार में हुआ था। उसकी शिक्षा हारवर्ड विश्वविद्यालय में हुई। इसके पश्चात् वह न्यू यार्क राज्य में एक विधायक, मेयर, पुलिस कमिश्नर और अन्त में न्यू यार्क का गवर्नर बना। उसका व्यक्तित्व बड़ा आकर्षक था। एक तरफ जब वह इतिहास और साहित्य के अध्ययन में रुचि रखता था। दूसरी तरफ खेल-कूद और बाहरी जीवन से उसको बड़ा प्रेम था और कभी-कभी इस विषय में उसके कार्य बड़े मनोरंजक होते थे। उसने अपने प्रारम्भिक जीवन काल में डाकुओं को पकड़वाने का कार्य किया। पुलिस कमिश्नर के पद पर कार्य करते हुए उसने व्यभिचार रोकने का प्रयत्न किया। और स्पेन से युद्ध के समय उसने सेना में भर्ती होकर युद्ध में भाग लिया और परिश्रम के प्रति उसका भारी लगाव था।

राष्ट्रपति बनने के बाद भी उसने राजनीति में संयम से काम नहीं लिया और राजनीतिज्ञों की तरफ एक पुलिस कमिश्नर या सेना के अफसर का दृष्टिकोण बनाये रखा। उसने विपक्षी दल से कभी समझौता नहीं किया और अपने बल पर उनसे लोहा लिया।

रूजवेल्ट को कभी-कभी प्रगतिवाद का प्रतीक कहा जाता है परन्तु वास्तव में वह एक सीमा तक ही प्रगतिवादी था। उसका मुख्य उद्देश्य ऐसा प्रभावशाली वर्ग पर अंकुश लगाना था जिसके कार्य समाज के लिए अहितकर थे। इस कारण अति सुधारवादियों की महत्त्वाकांक्षाओं को वह पूरा नहीं कर सका। उसने बाद में स्वीकार किया कि राष्ट्रपति बनते समय उसके मस्तिष्क में किसी प्रकार की सुधार योजनाएँ नहीं थीं। इस समय उसकी सबसे बड़ी इच्छा अपनी योग्यता के आधार पर राष्ट्रपति चुने जाने की थी। रूजवेल्ट यह समझता था कि जब तक वह अपने देश को रिपब्लिकन दल के नेताओं के प्रभाव से मुक्त नहीं कर लेता तब तक वह देश में विस्तृत सुधार योजनाओं को क्रियान्वित नहीं कर सकेगा। कांग्रेस में केनन (Cannon) और आलड्रिच (Aldrich) जैसे अनुदारवादी नेताओं का प्रभाव था और इस कारण प्रारम्भ से उसने इन नेताओं से संघर्ष लेना उचित नहीं समझा। कांग्रेस को अपना पहला संदेश भेजते समय उसने आलड्रिच को परामर्श के लिए आमंत्रित किया। परन्तु साथ-साथ उसने राजनीतिज्ञों के प्रभाव से अपने को मुक्त कराने का यत्न भी जारी रखा। हेना के प्रभाव को कम करने की दृष्टि से उसने मध्य पश्चिमी राज्यों के प्रतिनिधियों को बड़े पैमाने पर पद वितरित किये। कैन्सास में हेना के प्रतिनिधि के विपरीत रूजवेल्ट ने पापुलिस्ट उम्मीदवार को समर्थन दिया और ला फौलेट (La Follet) की इच्छा के विरुद्ध हेनरी पेन (Henery Payne) को पोस्ट मास्टर जनरल के पद पर नियुक्त कर दिया। दक्षिण राज्यों में नीग्रो को कुछ पद दिये गये जिनसे उनका समर्थन प्राप्त हो सके और उत्तर के कुछ उदारवादी उद्योगपतियों को भी उसने अपनी ओर मिला लिया। परन्तु इन पदों को वितरित करते समय उसने योग्यता का मापदण्ड अधिकतर अपनाया। इस कारण हेनरी स्टिमसन (Henry Stimson) और फेलिक्स फ्रेंकफर्टर (Felix Frankfurter) जैसे योग्य व्यक्तियों को वह प्रशासिनक सेवाओं में आकर्षित कर सका। अपने प्रथम राष्ट्रपति काल के समाप्ति से पहले रिपब्लिकन दल पर इसका पूर्ण प्रभाव स्थापित हो गया था।

अतः उसे 1904 के चुनाव में रिपब्लिकन दल की ओर से राष्ट्रपति पद के लिए मनोनीत किया था। इस बार डेमोक्रेटिक दल ने ब्रायन के स्थान पर न्यू यार्क के एक न्यायाधीश एल्टन बी. पार्केर (Elton B. Parker) को खड़ा किया। सोशलिस्ट दल ने यूजीन वी. डेब्स (Eugin V. Debs) को मनोनीत किया। बड़ी-बड़ी व्यापारिक कम्पनियों ने रिपब्लिकन दल को मुक्त हस्त से चन्दा दिया। अपनी लोकप्रियता व चुनाव प्रचार के कारण थियोडोर रूजवेल्ट को बहुमत से विजय हुआ। उसे लगभग पच्चीस लाख लोकप्रिय मत मिले। पार्केस के अनुसार अपने द्वितीय राष्ट्रपतित्व काल में थियोडोर रूजवेल्ट ने प्रगतिवाद का पहले की अपेक्षा खुल कर समर्थन किया।

यहाँ रूजवेल्ट के दोनों प्रशासन काल की आन्तरिक नीतियों का विवेचन किया गया है।

(2) रूजवेल्ट का प्रशासन (1901-09 ईसवी)

(i) न्यासों की जाँच -आन्तरिक प्रशासन में रूजवेल्ट ने न्यासों के विरुद्ध प्रभावशाली कदम उठाये। 1901 ईसवी में कांग्रेस को पहले संदेश में उसने उसके देश की आर्थिक जीवन में उद्योगपतियों की सेवाओं की प्रशंसा की, परन्तु यह भी स्पष्ट कर दिया कि बड़े उद्योगों के संगठनों पर सरकार को यथेष्ठ मात्रा में देखभाल करनी चाहिए। राष्ट्रपति न्यासों को समाप्त करना नहीं चाहता था, उसका उद्देश्य तो इतना था कि सरकार को बड़े न्यासों के कार्य की जाँच करने का अधिकार होना चाहिए। उस समय बड़े उद्योगपतियों का कांग्रेस में यथेष्ठ प्रभाव होने के कारण रूजवेल्ट को शीघ्र सफलता नहीं मिली। परन्तु राष्ट्रपति के दबाव के कारण 1903 ईसवी में कांग्रेस ने वाणिज्य और श्रम विभाग (Department of Commerce and Labour) की स्थापना की। इसके साथ-साथ निगमों का कार्यालय (Bureau of Corporations) भी बनाया गया जिसने तुरन्त न्यास के कार्यों की जाँच शुरू कर दी। प्रगतिवादी कार्यक्रम को बढ़ावा देने के उद्देश्य से रूजवेल्ट ने प्रारम्भ में शरमन न्यास विरोधी अधिनियम को लागू करने की कोशिश की। परन्तु इससे न्यासों की शक्ति पर अंकुश नहीं लगाया जा सका। अब रूजवेल्ट ने शरमन अधिनियम का कठोरता से पालन करने का आदेश दिया। उसके एटॉर्नी जनरल नोक्स (Knox) ने नारदर्न सिक्योरिटीज कम्पनी (Northern Securities Company) पर, जिसमें तीन और कम्पनियाँ शामिल थीं, मुकदमा चलाया। इस कम्पनी से हिल (Hill) और हेरीमेन (Harriman) जैसे बड़े रेल मालिक और मोर्गन (Morgan) जैसे धनवान बैंकर्स सम्बन्धित थे। मुकदमे में सर्वोच्च न्यायालय ने पाँच और चार के बहुमत से सरकार के पक्ष में फैसला दिया और शरमन अधिनियम के उल्लंघन के अपराध में इस कम्पनी को भंग करने के आदेश दिये। न्यायालय के फैसले ने बड़े उद्योगपतियों का ध्यान पहली दफा इस बात की ओर आकर्षित किया कि वे सरकार से महान् नहीं है। अब रूजवेल्ट ने भी उत्साहित होकर कांग्रेस से शरमन अधिनियम से परिवर्तन करने के लिए कहा जिससे न्यास विरोधी कार्यक्रम व्यापक रूप से किया जा सके, परन्तु कांग्रेस ने इससे अधिक सहयोग नहीं दिया। फिर भी प्रशासन ने तम्बाकू, चीनी और तेल से सम्बन्धित न्यासों के विरुद्ध मुकदमे चलाये और पच्चीस मुकदमों में न्यायालय के फैसले सरकार के पक्ष में हुए। 1904 ईसवी में दुबारा जीतने के बाद रूजवेल्ट ने न्यासों पर अपना आक्रमण जारी रखा और इस

कारण उसे न्यास उन्मूलक(Trust Buster) कहा जाता है। परन्तु वास्तव में रूजवेल्ट का उद्देश्य न्यासों का उन्मूलन नहीं, उन पर नियन्त्रण करना था, जिससे वे जनता का अहित न कर सके।

(ii) श्रमिकों के कल्याण के कार्य- श्रमिकों और उनकी समस्याओं के प्रति रूजवेल्ट सहानुभूति रखता था। वह समाजवादी राजनीति नहीं चाहता था और उसका विचार था कि समाजवादी मत वाले श्रमिक आन्दोलन में रक्तपात और शक्ति प्रदर्शन जैसे गलत सिद्धान्तों का प्रचार कर रहे थे जिनके कारण उद्योगपतियों और मजदूरों के संघर्ष में जनता की सहानुभूति श्रमिकों के साथ कम हो रही थी। रूजवेल्ट मानता था कि इन झगड़ों में सरकार का कार्य मजदूर आन्दोलन को दबाना नहीं, परन्तु दोनों के बीच एक मध्यस्थ की भूमिका निभाना था। 1902 ईसवी में तीन प्रमुख माँगों को लेकर जब एन्थ्रसाइड (Anthraside) कोयला खानों के मजदूरों ने हड़ताल कर दी तो रूजवेल्ट ने अपनी निर्धारित नीति पर चलते हुए मध्यस्थता की। मजदूर आठ घंटे प्रतिदिन काम,बीस प्रतिशत बढ़ी मजदूरी और अपनी संगठन को मान्यता की माँग कर रहे थे। कोयला खान के मालिकों ने इन शर्तो को स्वीकार नहीं किया। जब हड़ताल कुछ महीने तक चलती रही तो रूजवेल्ट ने मजदूर नेता जॉन मिचैल (John Mitchel) को और खान मालिकों को वार्तालाप के लिए बुलाया। अन्त में यह समझौता हुआ कि मजदूरों के पारिश्रमिक में दस प्रतिशत वृद्धि की जाये और उसके काम करने की अवधि 9 घंटा प्रतिदिन निश्चित कर दी जाये। परन्तु श्रमिक संगठन को मान्यता प्रदान नहीं की गई। यह समझौता काफी समय तक प्रभावशाली रहा। रूजवेल्ट की प्रगतिवादी नीति का इसे एक महत्त्वपूर्ण भाग माना जा सकता है। इस हड़ताल को समाप्त करवाने में उसने एक महत्त्वपूर्ण निष्पक्ष भूमिका निभाई। श्रमिकों की अवस्था में और सुधार करने की दिशा में कांग्रेस ने कर्मचारी मुआवजा कानून (Workmen's Compensation Law) भी बनाया।

(iii) रेल कम्पनियों पर नियन्त्रण-1904 ईसवी में राष्ट्रपति चुने जाने पर रूजवेल्ट ने भ्रष्टाचार की ओर ध्यान दिया। रेल कम्पनियों पर कुछ धनाढ्य उद्योगपतियों का एकाधिकार था और उन्होंने रेलों के संचालन में जनता के हितों की ओर ध्यान देना बन्द कर दिया। फिर भाड़े की दर में मनमानी वृद्धि कर देते थे और यात्रियों को सुविधायें नगण्य की मात्रा में देते थे। मेकिन्ले के समय से ही यह विचारधारा चल रही थी कि सरकार को रेल कम्पनियाँ अपने अधिकार में ले लेनी चाहिए। अन्तर्राज्य वाणिज्य कमिशन को भी इस भ्रष्टाचार को रोकने में सफलता नहीं मिली। 1903 ईसवी में एल्किन्स अधिनियम (Elkin's Act) पास किया गया जिसके अनुसार गुप्त रुप से बट्टा (Rebate) लेना या देना गैर कानूनी घोषित कर दिया गया। परन्तु अभी रेल कम्पनियों पर और अधिक नियन्त्रण की आवश्यकता थी। इस दिशा में 1906 ईसवी में हैपबर्न अधिनियम (Hepburn Act) पारित हुआ जिसके अनुसार अन्तर्राज्य वाणिज्य कमीशन को रेल किराये की दर निर्धारित करने का अधिकार दे दिया गया। प्रभावशाली व्यक्तियों को पास देने की प्रथा बन्द की गई और शीघ्रगामी तथा शयन गाड़ियाँ भी कमीशन के नियन्त्रण में ले ली गई। इसके अतिरिक्त हिसाब रखने की समान प्रणाली सब कम्पनियों में लागू कर दी गई।

(iv) वनों का संरक्षण- वनों के प्रति रूजवेल्ट को शुरू से बड़ा आकर्षण था। वह वनों को राष्ट्रीय सम्पदा मानता था। शहरीकरण के कारण उसके समय तक देश के लगभग तीन चौथाई वन समाप्त हो गये थे। ऐसी परिस्थिति में रूजवेल्ट और वन विभाग के अध्यक्ष गिफर्ड पिनकॉट (Gifford Pinchot) और कई पूर्वी राज्यों के प्रगतिवादियों की यह इच्छा थी कि अमेरिका में भी यूरोप के समान राष्ट्रीय वन स्थापित किये जायें। हेरिसन के राष्ट्रपति काल में वन संरक्षण अधिनियम (Forest Reserve Act) बनाया गया, जिसके अनुसार लगभग चार करोड़ सत्तर लाख एकड़ भूमि राष्ट्रीय जंगलों के लिए निर्धारित कर दी गई। रूजवेल्ट ने सुरक्षित भूमि की सीमा को बढ़ाने की कोशिश की परन्तु लकड़ी के व्यापार से सम्बन्धित छोटे व्यापारियों ने इसका काफी विरोध किया। 1907 ईसवी में पश्चिमी राज्यों के कांग्रेस सदस्यों ने एक संशोधन पास करवा दिया जिसके अनुसार राष्ट्रपति और अधिक भूमि को वन संरक्षण के लिए निर्धारित नहीं कर सकता था परन्तु रूजवेल्ट ने बिल पर दस्तखत करने से पहले और अधिक भूमि जंगलों के लिए सुरक्षित करने के आदेश दे दिए। परिणामस्वरूप बारह करोड़ पचास लाख एकड़ भूमि उसने लकड़ी काटने वालों से बचाकर राष्ट्रीय वनों के लिए सुरक्षित कर दी। इसी प्रकार राष्ट्रीय उद्यानों का भी रूजवेल्ट बड़ा समर्थक था। 1909 ईसवी में एक राष्ट्रीय संघ-रक्षण कमीशन (Natinal Conservation Commission) की स्थापना की, जिसका उद्देश्य प्राकृतिक सम्पदा की रक्षा करना था।

(v) बिजली उत्पादन में वृद्धि एवं आन्तरिक जल मार्गों का विकास- इसी समय बिजली उत्पादन में वृद्धि की गई और बड़े पैमाने पर बिजली योजनाएँ बनाई गई। इसके लिए बांधों के निर्माण की आवश्यकता थी। 1902 ईसवी में न्यू लेण्डस् अधिनियम (New Lands Act) पारित हुआ जिसके अनुसार पश्चिम और दक्षिण पश्चिम में सिंचाई योजनाओं के लिए धन राशि निर्धारित की गई। आन्तरिक जल-मार्ग कमीशन (Inland Waterways Commission) की स्थापना कर रुजवेल्ट ने यातायात के लिए आन्तरिक जल-मार्गों का उपयोग करने पर जोर दिया।

(vi) स्वास्थ्य सुरक्षा के लिए किये गये प्रयत्न- जन कल्याण की दिशा में रूजवेल्ट की सर्वश्रेष्ठ देन स्वास्थ्य सुधार थी। कुछ समय से राज्य रसायन शास्त्री डॉ. हार्वे वायली (Dr. Harvey Wiley) सरकार का ध्यान खाद्य सामग्री में बढ़ती हुई मिलावट की ओर दिला रहे थे। वाइली ने यह बतलाया कि दवाओं में भी मिलावट की जाती थी। 1906 ईसवी में अप्टन सिनक्लेयर (Upton Sinclair) ने अपनी प्रसिद्ध उपन्यास ''दी जंगल'' ने खाद्य संस्थानों में गन्दगी की ओर ध्यान आकर्षित किया। सिन्क्लेयर और अन्य लेखकों के वर्णन से प्रभावित होकर रूजवेल्ट ने तुरन्त इस स्थिति की जाँच करने के लिए एक कमीशन नियुक्त किया। अपने प्रतिवेदन में जब कमीशन ने इन तथ्यों को सच बताया तो 1906 ईसवी में विशुद्ध भोजन और दवा अधिनियम (Pure Food and Drug Act) पास किया गया। इसके अनुसार खाद्य सामग्री में मिलावट करने या विषैला भोजन और दवा की बिक्री को बन्द करने के आदेश दिये गये। इसके साथ मांस निरीक्षण अधिनियम (Meat Inspection Act) पास किया गया, जिसके द्वारा सरकारी निरीक्षकों

के पास किये बिना मांस बेचने पर निषेध लगा दिया गया। इस प्रकार के नियम राज्य सरकारों ने भी बनाये जिनसे देश में बीमारी का प्रकोप कम किया जा सका।

1919 ईसवी में रूजवेल्ट की मृत्यु पर किसी ने कहा कि अब अखबार पढ़ने का क्या लाभ है? यह देश में रूजवेल्ट की लोकप्रियता का सूचक था। यद्यपि रूजवेल्ट ने जन कल्याण की दिशा में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया फिर भी उसके आलोचकों का कथन है कि वह जितने जोर से बोलता था उतनी तेजी उसके कार्य में नहीं थी। यह भी कहा गया है कि 1901 ईसवी में न्यास अधिक संख्या में थे और वे ज्यादा शक्तिशाली भी थे। वास्तव में रूजवेल्ट एक सीमा तक ही सुधारक था। वह रिपब्लिकन दल के अति सुधारक वर्ग (Radicals) के क्रान्तिकारी विचारों से सहमत नहीं था और व्यवहारिक नीति पर चल कर उसने सिर्फ आवश्यक सुधारों तक ही अपने को सीमित रखा।

1885 ईसवी से 1909 ईसवी तक के समय को सुधार का युग कहा जा सकता है, क्योंकि लगभग प्रत्येक राष्ट्रपति ने अपने दल की सीमाओं के अन्दर सुधार की दिशा में प्रयत्न किये। फलस्वरूप देश में नई राजनीति चेतना आई। समाज के विभिन्न वर्ग चाहे वे कृषक, श्रमिक या व्यापारी हो, अब अधिक जाग्रत होने लगे। यह स्पष्ट होता है कि अमेरिका विकास और उन्नति के नये मार्गों पर अग्रसित हो रहा था।



अध्याय-16

संयुक्त राज्य अमेरिका के औपनिवेशिक प्रयत्न
(1865 से 1909 ईसवी)

□ आई. एस. मेहता

I. संयुक्त राज्य अमेरिका का विश्व शक्ति के रूप में प्रवेश :

गृह युद्ध के पहले संयुक्त राज्य अमेरिका की रुचि विदेश नीति के क्षेत्र में नाम मात्र ही थी। यद्यपि 1823 ईसवी में अमेरिका के राष्ट्रपति जेम्स मुनरो ने विदेश नीति से सम्बन्धित एक सिद्धान्त प्रतिपादित किया कि किसी भी शक्ति द्वारा अमेरिकन महाद्वीप में जिन देशों ने स्वतन्त्रता प्राप्त कर ली है उनकी स्थिति को बदलने के किसी भी प्रयत्न को अमेरिका के प्रति अमैत्री-पूर्ण कार्यवाही समझा जायेगा। किन्तु यह घोषणा अपने हितों की सुरक्षा एवं भविष्य में अपने ही महाद्वीप में रुचि की अभिव्यक्ति मानी जा सकती है तथा काफी समय तक अमेरिका विश्व की अन्य समस्याओं के प्रति तटस्थ बना रहा।

गृह युद्ध के पश्चात् मुख्य रूप से अमेरिका का ध्यान अपनी आन्तरिक समस्याओं के समाधान की ओर आकृष्ठ रहा तथा वह विश्व की राजनीति में सक्रिय नहीं रहा, किन्तु उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम दशकों में अमेरिका विश्व राजनीति में एकान्तवास का नीति का पालन नहीं कर सका। इसके लिये निम्नलिखित परिस्थितियाँ जिम्मेवार थीं।

विश्व राजनीति में प्रवेश के कारण :

(1) यूरोपीय साम्राज्य वाद की होड़ – अठारहवीं सदी की औद्योगिक क्रान्ति के फलस्वरूप पश्चिम यूरोप के औद्योगिक देशों को विदेशी बाजारों में अपने उत्पादन को खपाने की आवश्यकता हुई। इस समय तक ग्रेट ब्रिटेन, जर्मनी व फ्रांस ने अफ्रीका व एशिया के अनेक देशों में अपने उपनिवेश स्थापित कर लिये थे तथा उनमें पारस्परिक प्रतिस्पर्धा बढ़ती गई। पूरा विश्व बड़े औद्योगिक राष्ट्रों के प्रभाव में बँट गया था। उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में जापान भी एक प्रमुख औद्योगिक देश व शक्ति के रूप में उभरा। इन परिस्थितियों में अमेरिका के कुछ व्यक्तियों में यह धारणा बनती जा रही थी कि उनके देश का भी समुद्र पार अपना प्रभुत्व स्थापित करना चाहिए।

(2) अमेरिका का आर्थिक विकास – अमेरिका को विश्व शक्ति का दर्जा दिलाने के समर्थकों का यह कहना था कि गृह युद्ध के बाद अमेरिका का तेजी के साथ औद्योगिक विकास

हुआ, सड़कों एव रेल मार्गों का विस्तार हुआ बड़े-बड़े न्यासों का गठन हुआ तथा उत्पादन में वृद्धि हुई । उसका व्यापार भी बढ़ा है। अत: पश्चिमी यूरोप के औद्योगिक देशों के समान कच्चा माल प्राप्त करने तथा उत्पादित माल को खपाने के लिए बाजारों की आवश्यकता पड़ी। अत: उसके भी अपने उपनिवेश होने चाहिए।

(3) सशक्त नाविक बेड़े का निर्माण – पार्केस के अनुसार अमेरिका की विदेश नीति में इस प्रकार के परिवर्तन का प्रथम संकेत उसके नौ-बेड़े को सशक्त करने के प्रयासों में मिलता है। ग्रान्ट व हेज के प्रशासन काल में अमेरिका का नाविक बेड़ा अत्यन्त दुर्बल था। कुछ यूरोपियन शक्तियों की नौ-सेना की शक्ति का वह मुकाबला नहीं कर सकता था। यहाँ तक कि दक्षिण अमेरिका के चिली गणतन्त्र का नाविक बेड़ा इससे सशक्त था। इसमें कोई सन्देह नहीं कि वह अपने तटों की रक्षा कर सकता था किन्तु बढ़ते हुए व्यापार की रक्षा हेतु नाविक शक्ति और अड्डों की आवश्यकता प्रतीत होने लगी। इस समय केप्टन एल्फ्रेड मेहान (Captain Alfred Mehan) ने अपनी पुस्तक ''इतिहास में सामुद्रिक शक्ति का प्रभाव'' (Influence of Sea Power in Hitory) में नाविक शक्ति एवं अड्डों के महत्त्व की वकालत की। अत: 1881 ई. में अमेरिका की कांग्रेस ने नये जहाजों के निर्माण के लिए धन की व्यवस्था की। चेस्टर आर्थर (1881--1885 ईसवी) के शासन काल में अमेरिकन नौ-सेना के आधुनिकीकरण का कार्य आरम्भ हुआ। 1890 ईसवी तक 'श्वेत जहाजी बेड़ा' राष्ट्रीय गर्व का विषय बन गया था। उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त तक अमेरिका की नौ सेना केवल ब्रिटेन व जर्मनी की नौ सेना के मुकाबले में कम शक्तिशाली थी।

(4) राजनीतिक विचारकों का प्रभाव - रूडयार्ड किपलिंग व अन्य यूरोपियन लेखकों के विचारों से प्रभावित होकर कुछ राजनीतिक विचार भी अमेरिका को एक विश्व शक्ति बनाने का समर्थन कर रहे थे। इसमें थियोडोर रूजवेल्ट, हेनरी केबट लॉज (Henry Cabot Lodge) व एलबर्ट जे. बेवेरीज (Albert J. Beveridge) प्रमुख थे।

यद्यपि सामान्य रूप से समुद्र पार के देशों में अमेरिका का विस्तार 1867 ईसवी में मिडवे द्वीप पर अधिकार से आरम्भ हो गया था, किन्तु थियोडोर रूजवेल्ट के शासन काल में इस दिशा में उत्साह के साथ कार्य किया गया तथा अमेरिका की विदेश नीति का यह एक प्रमुख अंग बन गया। वह अमेरिका को अन्तर्राष्ट्रीय रंगमंच पर ले गया।

विस्तार की प्रक्रिया :

(1) अलास्का व मिडवे द्वीप की प्राप्ति - अमेरिका का सबसे पहला विस्तार अलास्का (Alaska) में हुआ जिसे जानसन के विदेश मन्त्री सेवार्ड (Seward) ने रूस के साथ बातचीत करके 1867 ईसवी में क्रय कर लिया। इसी वर्ष मिडवे द्वीप भी हथिया लिये गए। लेकिन अमेरिकी जनमत इसको पूर्णरूपेण नहीं समझ सका।

(2) सेमोआ में नाविक अड्डा -राष्ट्रपति क्लीवलैन्ड के शासन काल में प्रशान्त महासागर में अमेरिकी नाविक अड्डों की आवश्यकता महसूस होने लगी, क्योंकि पश्चिमी तट से चीन एवं

जापान तक की लम्बी यात्रा के लिए बीच में रसद, कोयला एवं विश्राम के लिए कुछ ठिकानों की आवश्यकता थी। 1878 ईसवी में राष्ट्रपति हेज के समय सेमोआ (Samoa) के साथ सन्धि के द्वारा पागो-पागो नामक बन्दरगाह पर नाविक अड्डे स्थापित करने की अनुमति प्राप्त की जा चुकी थी। पर इंग्लैण्ड एवं जर्मनी भी सेमोआ में रुचि रखने लगे। जर्मनी की महत्त्वाकांक्षा के कारण ही अमेरिका ने कड़ा रुख अपनाया और अमेरिकी कांग्रेस ने सेमोआ में अपने हितों की रक्षा हेतु धन की व्यवस्था की। इस पर 1889 ईसवी में जर्मनी ने एक समझौता कर लिया जिसके द्वारा सेमोआ पर त्रिशक्तिय संरक्षित राज्य की व्यवस्था की गई। 10 वर्ष पश्चात् यह द्वीप तीनों राष्ट्रों द्वारा बाँट लिया गया। यह घटना अपने आप में कोई विशेष महत्त्व की नहीं थी। पर इसमें अमेरिका की साम्राज्यवादी प्रवृति को बढ़ावा दिया और भविष्य में निरन्तर वह इस दिशा में प्रयत्नशील रहा।

(3) हवाई द्वीप का संरक्षण – इससे अधिक महत्त्वपूर्ण द्वीप था हवाई (Hawaii) जो सामरिक दृष्टि से कहीं ज्यादा उपयोगी था। गृह युद्ध से पहले भी इसके महत्त्व को समझा गया था और 1842 ईसवी में सेक्रेटरी ऑफ स्टेट वेब्स्टर ने घोषणा की थी कि किसी भी शक्ति को हवाई द्वीप पर अधिकार नहीं करने दिया जायेगा। इस द्वीप पर अमेरिकी उद्योगपतियों ने चीनी उत्पादक उद्योग पर नियन्त्रण स्थापित कर लिया था और 1875 ईसवी में एक सन्धि द्वारा हवाई द्वीप पर एक प्रकार का संरक्षण स्थापित कर लिया था। 1887 ईसवी में पर्ल हारबर (Pearl Harbour) पर नाविक अड्डा स्थापित करने का भी अधिकार प्राप्त कर लिया। अमेरिकी नागरिकों, उद्योपतियों, पादरियों ने हवाई द्वीप के चीनी उद्योग एवं जनजीवन को विकसित किया और इस प्रकार वहाँ अमेरिकी प्रभाव स्थापित हो गया। वहाँ की रानी ने इस प्रभाव को तथा अमेरिका के विशेषाधिकारों को कम करना चाहा पर उसे सफलता नहीं मिली। 1893 ई. में एक क्रान्ति के द्वारा, जो कि अमेरिकी सहायता से सफल हो गई थी, हवाई में फिर अमेरिकी प्रभाव सुदृढ़ हो गया पर क्लीवलैण्ड के विरोध के कारण वहाँ अमेरिका का शासन स्थापित नहीं हो सका। राष्ट्रपति मेकिन्ले के सत्तारूढ़ होते ही 1898 ईसवी में हवाई द्वीप को अपने अधिकार में ले लिया गया, क्योंकि इसका सामरिक महत्त्व भी था। अन्ततोगत्वा हवाई द्वीप को अमेरिका के एक राष्ट का दर्जा उपलब्ध हो गया।

(4) ब्रिटेन के साथ सौहार्द्रपूर्ण सम्बन्धों की स्थापना – इस बढ़ते हुए अमेरिकी प्रभाव के साथ-साथ बड़ी बुद्धिमतापूर्वक अमेरिका ने ब्रिटेन के साथ सौहार्द्रपूर्ण सम्बन्ध स्थापित किये। नेविन्सन एवं कोमेजर के अनुसार मुनरो सिद्धान्त, व्यवसायिक विकास और 1899 ईसवी के पश्चात् पूर्व में खुले द्वार की नीति के कारण और अपने सर्वोत्तम ग्राहक के साथ स्वभाविक व्यवसायिक सम्पर्कों व लोकतन्त्र के विकास में दोनों की रुचि होने के कारण अमेरिका ने ब्रिटेन के साथ अच्छे सम्बन्ध स्थापित किये। ब्रिटेन ने भी अपने पूर्वाग्रह भुलाकर अमेरिका के प्रति दृष्टिकोण में परिवर्तन किया। ग्लेडस्टन (Gladestone) के उदार दृष्टिकोण एवं शान्तिप्रिय नीति के कारण ही क्लेरेन्डन ने अलाबामा विवाद को पंच-निर्णय को सुपुर्द करना स्वीकार कर लिया। पर्याप्त आलोचना के बावजूद ग्लेडस्टन ने इस पंच-निर्णय को स्वीकार किया और क्षतिपूर्ति करने

में तत्परता दिखाई। इसके बाद कनाड़ा, अमेरिका के पश्चिमी तट के कुछ टापुओं सम्बन्धी सीमा विवाद को भी पंच-निर्णय द्वारा हल कर लिया गया। बैरिंग सागर में अलास्का की फर वाली मछलियाँ पकड़ने के अधिकार सम्बन्धी कनाड़ा के साथ विवाद को भी पंच निर्णय द्वारा सुलझा लिया गया। इनसे अमेरिका और ब्रिटेन के सम्बन्ध सौहार्द्रपूर्ण बने रहे। ब्रिटेन का दृष्टिकोण उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम दशक एवं बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में जर्मनी की बढ़ती हुई प्रतिस्पर्द्धा से बहुत अधिक प्रभावित हुआ और वे अमेरिका के साथ मित्रता को बहुत महत्त्व देने लगे।

(5) कैरीबियन क्षेत्र में रुचि – अमेरिका की समुद्र पार के देशों में इस बढ़ती हुई रुचि ने उसकी विदेश नीति को बहुत प्रभावित किया और वह अब दक्षिण और पश्चिम की ओर के क्षेत्रों में बहुत रुचि लेने लगा तथा अपने प्रभाव क्षेत्र को बढ़ाने के लिए अवसर खोजने लगा। साथ ही जर्मनी की बढ़ती शक्ति के प्रति सशंकित होने लगा। सामरिक दृष्टिकोण से भी अपने हितों के प्रति जागरूक रहने लगा। इसके परिणामस्वरूप वह लैटिन अमेरिकी देशों में अधिक दिलचस्पी लेने लगा और कैरीबियन क्षेत्रों में अमेरिकी प्रभाव स्थापित करने के लिए उत्सुक हो गया। 1881 ईसवी में एक अखिल अमेरिकन सभा बुलाने का सुझाव रखा गया पर राष्ट्रपति आर्थर के समय इस पर जोर नहीं दिया गया। क्लीवलैन्ड के शासन काल में इस प्रस्ताव को पुनर्जीवित किया गया। अन्त में यह सभा 1889 ईसवी में वाशिंगटन में हुई। इससे कोई वास्तविक महत्त्व की बात तो नहीं हुई पर भविष्य में समय-समय पर ऐसी सभाएँ आयोजित करने की परम्परा पड़ गई और महाद्वीपीय एकता, सहयोग एवं व्यापार को बल मिला तथा अमेरिका की अपने ही गोलार्द्ध के देशों में रुचि बढ़ी जिसके परिणाम जल्दी ही स्पष्ट नजर आने लगे।

(6) लैटिन अमेरिकी देशों के प्रतिनिधि - (अ) वेनेजुएला विवाद - अमेरिका की रुचि अमेरिकी क्षेत्रों में पहले से ही थी और नये आर्थिक एवं राजनैतिक कारणों से बढ़ती जा रही थी। इंग्लैण्ड का उपनिवेश ब्रिटिश गायना में था जिसका लम्बे समय से एक विवाद दक्षिणी अमेरिका के एक राष्ट्र वेनेजुएला (Venezuela) से चल रहा था। अमेरिका ने इस विवाद को हल करने के लिए अपनी सेवाएँ प्रस्तुत भी की पर ब्रिटेन ने पंच निर्णय को स्वीकार नहीं किया और ऐसा महसूस किया जाता था कि ब्रिटेन एक छोटे एवं निर्बल राष्ट्र की भूमि हड़पना चाहता है। 1895 ई. में यह विवाद अचानक महत्त्वपूर्ण बन गया जबकि राष्ट्रपति क्लीवलैन्ड ने अमेरिकी कांग्रेस को 17 दिसम्बर, 1895 ईसवी को एक सन्देश भेजा जिसमें इंग्लैण्ड को इस विवाद पर फिर धमकी दी गई थी। एक पत्र द्वारा अमेरिकी विदेशी विभाग ने ब्रिटेन पर मुनरो सिद्धान्त भंग करने का आरोप लगाया और वेनेजुएला विवाद में पंच निर्णय के प्रश्न पर स्पष्ट उत्तर माँगा। ब्रिटेन ने इसको अस्वीकार कर दिया और ऐसा लगने लगा कि दोनों देशों में संघर्ष न छिड़ जाये। पर इन्हीं दिनों ब्रिटेन अफ्रीका के प्रदेशों के औपनिवेशिक मामलों में उलझा हुआ था और जर्मनी से विभिन्न क्षेत्रों में उसकी प्रतिस्पर्धा चल रही थी इसलिए ब्रिटेन भी संघर्ष टालना चाहता था। लार्ड साल्सबरी (Salisbury) की विदेश नीति का प्रमुख आधार था कि शान्ति बनी रहे और सारे

औपनिवेशिक विवाद शन्तिपूर्ण वार्तालाप, मध्यस्थता एवं पंच-निर्णय से हल किये जायें और संघर्ष जहाँ तक हो टाला जाये। दक्षिण अफ्रीका में बोअर संघर्ष (Boer War) चल रहा था और इन्हीं दिनों जर्मन कैसर का क्रूगर (Kruger) को तार द्वारा 'जेम्सन रेड' की घटना पर बधाई दिये जाने से ब्रिटेन बहुत चिन्तित था। अत: वेनेजुएला विवाद को ब्रिटेन ने अमेरिकी मध्यस्थता के द्वारा हल करना स्वीकार कर लिया। इस प्रकार दोनों देशों में संघर्ष की स्थिति टल गई और उनके मध्य सन्देह और अविश्वास का वातावरण समाप्त हो गया। दोनों के पारस्परिक सम्बन्ध मजबूत भी हुए और एक दूसरे में विश्वास की भावना का संचार हुआ जिसने भविष्य में दोनों देशों के सम्बन्धों को दृढ़ बना दिया। केवल एक माँग जो इस सम्बन्ध में इंग्लैण्ड के प्रधान मन्त्री लार्ड साल्सबरी ने की कि अगर अमेरिका लैटिन अमेरिकी देशों के संरक्षण का दावा करता है तो उसे उनके न्यायोचित व्यवहार का भी उत्तरदायित्व लेना चाहिए। अन्ततोगत्वा यह 1904 ईसवी में 'रूजवेल्ट कोरोलरी' (Roosevelt Corrolary) में स्वीकार कर लिया गया। अमेरिका के साथ अच्छे सम्बन्धों के कारण ही ब्रिटेन ने पश्चिमी गोलार्द्ध से काफी सेनाएँ हटा ली और केरीबियन सागर में अमेरिकी प्रधानता को स्वीकार करने को तैयार हो गया।

(ब) क्यूबा संकट एवं पोर्टो रिको - वेनेजुएला विवाद हल होने के तुरन्त बाद ही कैरीबियन क्षेत्र में एक अन्य संकट पैदा हो गया। काफी समय से अमेरिका क्यूबा एवं अन्य क्षेत्रों में पूँजी लगा रहा था, धर्म प्रचार एवं व्यापार कर रहा था और वहाँ अमेरिकी प्रभाव स्थापित करने का प्रयत्न कर रहा था। कुछ समय के लिए साम्राज्यवादी दृष्टिकोण क्लीवलैण्ड की नीति के कारण नियन्त्रण में रहा, पर परिस्थितियों ने यह आवश्यक बना दिया था कि क्यूबा का संघर्ष अगर लम्बा चला तो अमेरिकी हस्तक्षेप आवश्यक हो जायेगा। इस समय क्यूबा एवं पोर्टो रिको (Puerto Rico) पर स्पेन का नियन्त्रण था। उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में दक्षिणी अमेरिका पर से स्पेन का प्रभाव समाप्त होने के बाद से स्पेन का प्रभाव केवल क्यूबा एवं पोर्टो रिको पर ही रह गया था। स्पेन का प्रशासन बहुत भ्रष्टाचारी, क्रूर एवं शोषण करने वाला था। उन्होंने किसी भी प्रकार के सुधार क्यूबा में नहीं किये और वे बड़े-बड़े वेतन, उच्च कर प्रणाली, व्यापारिक एकाधिकार तथा कृषि एवं खनिज उद्योग पर भारी उत्पादन कर द्वारा द्वीपों का शोषण कर रहे थे। समाचारों पर प्रतिबन्ध तथा राजनीतिक दमन, विना अभियोग के नागरिकों को बन्दी बनाना तथा आम लोगों के प्रति हीन भावना रखना स्पेन के प्रशासकों की नीति थी। क्यूबा के लोग करों के भार एवं शोषण से दबे जा रहे थे। वहाँ पर स्पेन विरोधी तत्त्व एवं जन नेता क्रान्ति के लिए उत्सुक हो रहे थे। 1870-80 ईसवी के बीच प्राय: छुटपुट गुरिल्ला युद्ध चल रहा था। 1895 ईसवी में तो क्यूबावासियों का धैर्य समाप्त हो गया। क्यूबा के देशभक्त जन नेता जोस मार्टी के नेतृत्व में उन्होंने विद्रोह कर ही दिया। सारा देश क्रान्ति की आग से भभक उठा। प्रारम्भ में यद्यपि अमेरिकी प्रशासन ने तटस्थ रहने का भरसक प्रयत्न किया पर यह अधिक समय तक सम्भव न हो सका। इस क्रान्ति का अमेरिका के आर्थिक ढाँचे पर गम्भीर प्रभाव पड़ा। क्यूबा के क्रान्तिकारियों ने अमेरिकी भूमि को अपना अड्डा बना कर प्रयोग किया। इसका स्पेन ने कड़ा विरोध किया तथा दोनों देशों में सम्बन्ध तनावपूर्ण स्थिति में पहुँच गये। अमेरिकी नागरिकों की सम्पत्ति, स्वाधीनता

एवं जीवन खतरे में पड़ने लगा तथा स्पेन के अधिकारियों द्वारा उन पर अत्याचार एवं दुर्व्यवहार किया जाने लगा। विद्रोह को कुचलने के लिए वैलेरिआनो वेलर (Valeriano Weyler) की नियुक्ति के पश्चात् तो संघर्ष और तीव्र हो गया। दोनों पक्षों द्वारा बर्बरता एक दूसरे क प्रति बरती जाने लगी और बन्दियों की हत्याएँ की जाने लगीं। लाखों की संख्या में लोग भूख एवं अभाव की स्थिति के कारण मरने लगे। दूसरी ओर स्पेन अपना दमन बढ़ाते ही जा रहा था। स्पेन ने यूरोपीय देशों की सहानुभूति प्राप्त करने का प्रयत्न भी किया। उसे जर्मनी, आस्ट्रिया एवं फ्रांस का थोड़ा-बहुत समर्थन प्राप्त हुआ, पर ब्रिटेन ने विरोध किया और इसमें रूस ने भी कोई रुचि नहीं बताई। 1898 ईसवी में इस प्रश्न पर स्पेन व अमेरिका में युद्ध छिड़ गया।

(7) स्पेन अमेरिका युद्ध (1898 ईसवी) – 1898 ईसवी में स्पेन व अमेरिका के मध्य हुए युद्ध के अनेक कारण हैं –

(अ) कारण :

(i) अमेरिका की विस्तारवादी नीति – इस समय तक अमेरिका विस्तारवादी नीति पर अग्रसर होने का निश्चय कर चुका था। मुनरो सिद्धान्त के अनुसार वह अमेरिकी महाद्वीप में किसी अन्य शक्ति के हस्तक्षेप के विरुद्ध था। काफी समय से क्यूबा के मामले में वह यही दृष्टिकोण अपना रहा था। मिलार्ड फिलमोर (1850-53 ईसवी) से जब इंग्लैण्ड व फ्रांस ने क्यूबा पर स्पेन के अधिकार के सम्बन्ध में प्रस्ताव रखा तो फिल्मोर ने कहा कि क्यूबा के मामले में किसी बाहरी देश का हस्तक्षेप का अधिकार नहीं है। वास्तव में यह क्यूबा पर अधिकार करना चाहता था। फिलमोर के उत्तराधिकारी पियर्स के शासन काल में क्यूबा के द्वीप को खरीदने का असफल प्रयत्न भी किया गया। किन्तु काफी समय तक भी अमेरिका ने क्यूबा में स्पेन के दमनचक्र के विरुद्ध कोई कठोर कदम नहीं उठाये, अन्त में 1898 ईसवी में उसने स्पेन के बढ़ते हुए दमन एवं बर्बरता के विरुद्ध कार्यवाही की।

(ii) क्यूबा में अमेरिका के आर्थिक हित – गृह युद्ध के बाद तीस वर्षों में अमेरिका की पूँजी अधिकाधिक मात्रा में क्यूबा के खदान उद्योग तथा चीनी के उत्पादन में लगाई गई थी। यह राशि पाँच करोड़ डॉलर से भी अधिक थी। क्यूबा के व्यापार से अमेरिका को काफी लाभ हो रहा था। क्यूबा की जनता द्वारा स्पेन के विरुद्ध किये गये विद्रोह के कारण अमेरिका को आर्थिक हानि हो रही थी।

(iii) क्यूबा में अमेरिकी अड्डे बनाने की लालसा – स्पेन के विरुद्ध कार्यवाही करने से अमेरिका को केरेबियन सागर में अड्डे बनाने का अवसर प्रदान हो सकता था जिससे कि अमेरिका को सुदूरपूर्व की ओर सहायता मिल सकती थी।

(iv) जनमत का दबाव – काफी समय से क्यूबा के निवासी स्पेनिश अत्याचार व दमन के शिकार हो रहे थे। स्पेन के दुराचारी शासन से क्यूबा को मुक्त कराना जैफरसन, वाशिंगटन एवं लिंकन के आदर्शों से युक्त अमेरिका के लिए आवश्यक हो गया था अत: जनमत को संतुष्ट करने के लिए भी क्यूबा में हस्तक्षेप करने के लिए अमेरिका उत्सुक हो गया।

(v) प्रभाव क्षेत्र का विकास -- इस समय विश्व की राजनीति में प्रभाव क्षेत्रों की स्पर्द्धा चल रही थी। फ्रांस, इंग्लैण्ड, जर्मनी व रूस अपने-अपने प्रभाव क्षेत्र से बढ़ा रहे थे। सुदुरपूर्व में अपने प्रभाव क्षेत्र के संरक्षण एवं आर्थिक राजनीतिक प्रभाव के विस्तार के लिए अमेरिका का क्यूबा पर अधिकार करना आवश्यक हो गया था।

(vi) स्पेन के मंत्री डिलोन का पत्र – 8 फरवरी, 1898 ईसवी को न्यूयार्क जनरल नामक समाचार पत्र ने डिलोन द्वारा लिखा हुआ एक पत्र प्रकाशित किया जिसमें मेकिन्ले की जोरदार शब्दों में आलोचना की गई थी। यद्यपि डिलोन ने तुरन्त त्यागपत्र दे दिया था, किन्तु इस पत्र प्रकाशन से दोनों देशों के सम्बन्ध और बिगड़ गये।

(vii) मैन नामक जहाज का डूबोया जाना – फरवरी, 1898 ईसवी में अमेरिका के नाविकों की रक्षा हेतु भेजा गया 'मैन' नामक युद्ध पोत डूबो दिया गया। यद्यपि अभी तक यह ज्ञात नहीं है कि ऐसा किसने किया, किन्तु इसके लिए अमेरिका ने स्पेन को दोषी ठहराया। इस घटना के बाद दो मास तक युद्ध टालने के प्रयास चलते रहे और स्पेन ने न चाहते हुए भी युद्ध-बन्दी के लिए तत्परता दिखाई, किन्तु इस समय तक अमेरिका का जनमत युद्ध के पक्ष में हो गया था अतः मेकिन्ले जो राष्ट्रपति के चुनाव के लिए फिर से खड़े हो गये थे ने कांग्रेस को युद्ध का संदेश दिया। मेकिन्ले द्वारा भेजे गये युद्ध संदेश के तुरन्त बाद अमेरिका व स्पेन में युद्ध छिड़ गया.

(ब) घटनायें :

यह युद्ध 1 मई, 1898 ईसवी को आरम्भ हुआ तथा दस सप्ताह में समाप्त हो गया इसलिए थियोडोर रूजवेल्ट ने इसे एक शानदार छोटा युद्ध (A Splended Little War) की संज्ञा दी। अमेरिका के लिए किसी विदेशी शक्ति के साथ लड़ा जाने वाला यह पहला युद्ध था।

क्यूबा में स्पेन की कुल सेना 80,000 थी, किन्तु यह सेना अपनी मातृभूमि से बहुत दूर थी तथा स्थानीय लोग इससे घृणा करते थे। इसकी नौ सेना अमेरिका की नौ सेना की शक्ति के सामने अत्यन्त दुर्बल थी। अतः वह अमेरिका का मुकाबला नहीं कर सका।

अमेरिका की नौ सेना के सहायक सचिव के रूप में थियोडोर रूजवेल्ट ने क्यूबा में स्पेन पर सीधा आक्रमण न करके उसे पीछे से जीतने की योजना बनाई। उसने गुप्त रूप से सैनिक अधिकारी डिवी (Dewey) को स्पेन के उपनिवेश फिलिपिन्स को जीतने के आदेश दिये। डिवी ने मनीला की खाड़ी में स्पेन के जहाजी बेड़े को नष्ट कर दिया। शीघ्र ही उसने मनीला को जीत लिया। अमेरिकी सेनाओं ने सेन डियागो और प्यूरटोरिको पर भी अधिकार कर लिया। प्यूरटोरिको पर अधिकार इतनी सरलता से हुआ कि इसे 'छुट्टी के दिन पिकनिक' की संज्ञा दी गई। स्पेन ने शीघ्र ही आत्मसमर्पण कर दिया। दोनों देशों में सन्धि के बारे में वार्तालाप चलता रहा। अन्त में अमेरिका व स्पेन के प्रतिनिधि पेरिस में मिले तथा 10 दिसम्बर, 1898 ईसवी को दोनों के मध्य एक सन्धि पर हस्ताक्षर हुए।

(स) पेरिस की सन्धि की शर्तें :

1. स्पेन ने क्यूबा पर से अपने अधिकार छोड़ दिया।

2. अमेरिकी संरक्षण व आश्रय में क्यूबा में स्वतन्त्र शासन की स्थापना किये जाने तक अमेरिका वहाँ की व्यवस्था देखेगा।

3. स्पेन ने पोर्टरिको तथा गुआम (Guam) के द्वीप क्षतिपूर्ति के रूप में अमेरिका को दिये।

4. फिलिपिन्स द्वीप समूह के लिए अमेरिका के लिए दो करोड़ डालर स्पेन को दिये।

(द) परिणाम :

स्पेन-अमेरिका युद्ध को संयुक्त राज्य अमेरिका के इतिहास में अत्यन्त महत्त्व दिया जाता है, इसके परिणाम निम्नांकित थे –

(i) एकता का प्रदर्शन – इस युद्ध के समय अमेरिकी राष्ट्र एकता की ओर बढ़ा। गृह युद्ध की कटु भावनाओं को उत्तर व दक्षिण के लोगों ने दफना दिया। बड़ी सीमा तक दलगत राजनीति भुला दी गई। यद्यपि साम्राज्यवाद विरोधी ब्रायन कार्ल शुर्ज, गोडकिन, मार्कट्वेन और सीनेटर होर ने इसका विरोध किया, किन्तु बहुमत मेकिन्ले व थियोडोर रूजवेल्ट के पक्ष में था।

(ii) पृथकतावाद का अन्त – पहली बार अमेरिका को अपने महाद्वीप के बाहर के प्रदेशों पर अधिकार मिला। वह अपने आपको एक विश्व शक्ति के रूप में अनुभव करने लगा तथा अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में अधिक रुचि लेने लगा। इसके बाद अमेरिका स्वयं को प्रशान्त महासागर के क्षेत्र के छोटे राज्यों का संरक्षक मानने लगा।

(iii) साम्राज्यवाद का पोषक – अमेरिका की विजय से क्यूबा को स्वतन्त्रता मिली। यद्यपि क्यूबा की स्वतन्त्रता दिलाने व वहाँ की जनता की स्पेनिश अत्याचार से मुक्ति कराने के पीछे अमेरिका का उच्च आदर्श प्रेरित कर रहा था लेकिन यह आदर्श साम्राज्यवाद के उद्देश्यों में परिणित हो गया। अमेरिका के उद्योगपतियों और पूँजीपतियों को लाभ कमाने के लिए कुछ और क्षेत्र मिले। इसके बाद अमेरिका ने प्रशान्त क्षेत्र में अपना और विस्तार किया। पादरियों को धर्म प्रचार के लिए नये क्षेत्र प्रास हुए। वास्तव में अमेरिका ने प्यूरटोरिको और फिलिपिन्स का उपनिवेश के रूप में प्रयोग किया। यूरोप के राष्ट्र की भांति वह भी स्वयं को सभ्यता का मसीहा बताने लगा। नेविन्स एवं कामेज़र के अनुसार 'स्पेन अमेरिकी युद्ध ने अमेरिकी इतिहास में एक नया मोड़ ला दिया।'

(iv) रक्षा विभाग एवं नौ सेना का आधुनिकीकरण- इस युद्ध ने अमेरिका के रक्षा विभाग की अकर्मण्यता को उजागर कर दिया। स्वास्थ्य एवं चिकित्सा के अभाव में सैकड़ों अमेरिकी सैनिक बिना युद्ध किये ही मर गये। अन्न, वस्त्र और शस्त्र को सैनिक ठिकानों तक पहुँचाये जाने में कुशलता का प्रदर्शन नहीं किया गया। यदि यह युद्ध स्पेन के बजाय किसी अन्य पश्चिमी यूरोपीय शक्ति से होता तो युद्ध का परिणाम कुछ और हो सकता था। अत: 1899 ईसवी में राष्ट्रपति मेकिन्ले ने रक्षा विभाग का पुनर्गठन किया। उसने इस कार्य के लिए इलिहू रूट को नियुक्त किया। समुद्र पार के बढ़ते हुए उत्तरदायित्वों का निर्वाह करने के लिए अमेरिका अपनी सैनिक तथा नौ-सैनिक शक्ति का विस्तार करने लगा। इस युद्ध के अनुभव के आधार पर सैनिक

सुधार किये गये। कुछ समय बाद अमेरिका अपनी नौ सेना के बल पर मुनरो सिद्धान्त को क्रियान्वित कर सकता था।

(v) आंग्ल-अमेरिकी सहयोग - इस युद्ध में अमेरिका व जर्मनी के सम्बन्ध तो बिगड़े, किन्तु इंग्लैण्ड व अमेरिका के सम्बन्ध घनिष्ठ हो गये।

(8) क्यूबा में अमेरिकी संरक्षण - क्यूबा अस्थाई रूप से सैनिक प्रशासन के अधीन कर दिया गया था और जनरल लियोनार्ड वुट उसके गवर्नर बनाये गये। एक समिति ने क्यूबा के लिए संविधान बनाया और 1902 ईसवी क्यूबा को स्वशासन के अधिकार दिये गये हालांकि वे सीमित थे। भविष्य में क्यूबा एवं अमेरिका के सम्बन्धों की व्याख्या प्लाट संशोधन (Platt Amendment) से निश्चित हुई जिनको कि अमेरिका के विदेश मन्त्री एलिहू रूट (Elihu Root) ने बनाया था। क्यूबा के गणतन्त्र को अत्यधिक ऋण लेने की मनाहीं थी और इससे अमेरिका को अपने धन, जनजीवन, सम्पत्ति की रक्षा हेतु हस्तक्षेप करने का अधिकार भी दिया गया था तथा वहाँ नाविक अड्डे बनाने का अधिकार भी दिया गया था। क्यूबावासियों को उनकी ईच्छा के विपरीत यह व्यवस्था करनी पड़ी। इस प्रकार अमेरिका ने अपने अधीन क्षेत्रों के प्रति आदर्शवादी दृष्टिकोण अपनाने की बजाय व्यवहारिक दृष्टिकोण अपनाया।

यह भी सच है कि अमेरिका ने अपने अधीन क्षेत्रों में कई सुधार किये और जनजीवन के विभिन्न क्षेत्रों को उन्नत बनाया।

(9) पोर्टोरिको में अमेरिकी शासन - पोर्टोरिको में भी गवर्नर नियुक्त किया गया और एक राष्ट्रपति द्वारा नियुक्त सलाहकार मण्डल स्थापित किया गया। एक चुनी हुई व्यवस्थापिका सभा की व्यवस्था भी की गई। अन्त में 1917 ईसवी में जोन्स अधिनियम (Jones Act) द्वारा पोर्टो रिको के लोगों को संयुक्त राज्य अमेरिका का नागरिक बना दिया गया और सलाहकार मण्डल के स्थान पर एक उच्च सदन की व्यवस्था की गई। फिर भी इसके द्वारा पारित अधिनियमों को राष्ट्रपति निरस्त कर सकता था। पोर्टोरिको में विभिन्न क्षेत्रों में बहुत सुधार किये गये। स्वास्थ्य के क्षेत्र में, शिक्षा के क्षेत्र में, सार्वजनिक निर्माण तथा आर्थिक क्षेत्रों में भी पर्याप्त उन्नति हुई। यहाँ तक कि पोर्टोरिको के जननेता यह महसूस करने लगे कि स्वतन्त्रता उनके लिए कम लाभकारी रहेगी। फिर भी वहाँ राष्ट्रवादी आन्दोलन ने अमेरिका के नियन्त्रण का विरोध किया और धीरे-धीरे अमेरिका ने भी उनकी कठिनाइयों को समझने में तत्परता दिखाई।

(10) फिलिपिन्स में अमेरिकी शासन - फिलिपिन्स में भी अमेरिकी प्रशासन स्थापित हुआ और दमन की नीति द्वारा वहाँ छुटपुट क्रान्तियों को दबा दिया जाता था। फिलिपिन्स के लोग सोचते थे कि उन्हें स्वतन्त्रता प्रदान कर दी जायेगी। इसलिए वहाँ एक राष्ट्रवादी एमिलियो एग्वीनाल्डो (Emilio Aguinaldo) के नेतृत्व में बगावत हुई, पर जनरल मेकआर्थर ने उसे दबा दिया। 1901 ईसवी में नागरिक प्रशासन की स्थापना की गई और प्रथम गवर्नर विलियम हावर्ड टेफ्ट (William Haward Taft) को नियुक्त किया गयां जो कि सफल रहा। पोर्टोरिको के समान ही एक चुनी हुई व्यवस्थापिका की व्यवस्था की गई और शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में पर्याप्त

सुधार किये गये। अधिकतर फिलिपिन्स निवासी छोटे-छोटे कृषक थे न कि बड़े नगरों के उद्योगों में काम करने वाले श्रमिक, इसलिए अमेरिका का इतना तीव्र विरोध नहीं हो पाया। फिर भी ब्रिटेन ने डच उपनिवेशों की तुलना में अमेरिकी प्रशासन काफी उदार एवं उत्तम व्यवहार पर आधारित था। लेकिन जै॰ ॰ आशा थी कि अमेरिका के सुदुरपूर्व में व्यापार के दृष्टिकोण से फिलिपिन्स लाभदायक सिद्ध होगा, सही साबित नहीं हुआ। सामरिक दृष्टिकोण से भी कोई विशेष लाभ फिलिपिन्स पर अधिकार से नहीं हुआ, क्योंकि अमेरिका के पश्चिमी तट से इनका फासला 6000 मील से भी अधिक था। यह तो एक प्रकार का उत्तरदायित्व था जो कि अलाभकारी सिद्ध हो रहा था। केरेबियन सागर में अमेरिकी प्रभाव के कारण एक परिणाम जरूर निकला वह यह कि दोनों अमेरिका के मध्य स्थल-डमरु-मध्य नहर की आवश्यकता महसूस होने लगी, क्योंकि प्रशान्त महासागर से हार्न अन्तरिप के चारों ओर परिक्रमा कर क्यूबा पहुँचने में दो माह से भी अधिक समय लगता था। अमेरिका के सुदूर पूर्व तथा केरेबियन में प्रभाव के कारण जर्मनी से भी सम्बन्ध बिगड़ने लगे।

(11) सुदुर पूर्व में अमेरिकन प्रभाव - सुदूरपूर्व में अमेरिका की रुचि काफी पुरानी थी। अठारहवीं शताब्दी से ही अमेरिका, चीन एवं इन्डोनेशिया से व्यापार कर रहा था। धर्म प्रचारक भी चीन में सक्रिय थे। चीन की राजनीति कमजोरी के कारण यूरोपीय देशों ने सुदूर पूर्व में उन्नीसवीं शताब्दी में लूट-खसौट मचा रखी थी। उधर उत्तर में रूस अपने प्रभाव को बढ़ा रहा था और उसने उत्तरी मंचूरिया पर अधिकार कर लिया। उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त तक मास्को से ब्लाडीवोस्टक तक विश्व की सबसे लम्बी रेलवे लाइन का निर्माण भी हो गया था। दूसरी ओर चीन के पूर्वीय समुद्री तट पर जगह-जगह यूरोपीय राष्ट्रों ने अपने-अपने अड्डे एवं प्रभाव-क्षेत्र स्थापित कर लिये थे। जर्मनी ने शान्तुक प्रान्त पर नियन्त्रण के लिए किया आचाओ बन्दरगाह ठेके पर ले लिया था। ब्रिटेन एवं फ्रांस भी अपने-अपने हित साध रहे थे। ब्रिटेन का हांगकांग पर अधिकार था। उधर मेकाओ पर काफी समय से पुर्तगाल का अधिकार था तथा तटीय बन्दरगाहों पर सभी यूरोपीय राष्ट्रों को व्यापारिक सुविधाएँ प्राप्त थीं। ऐसा लगता था जैसे चीन में यूरोपीय राष्ट्रों की लूट-खसोट मची हुई थी। सभी यूरोपीय राष्ट्र व्यापारिक एकाधिकार, रेल निर्माण के कार्य एवं निकटवर्ती प्रदेशों के खनिज उद्योग के विकास के अधिकार प्राप्त कर अपनी-अपनी हित सिद्धी में लगे हुए थे। इस स्थिति को जापान के प्रवेश ने और पेचीदा बना दिया, क्योंकि जापान इसी क्षेत्र का एक राष्ट्र था।

उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य तक जापान एक पुरातन एवं सामन्ती ढंग का देश था। जिसका बाहर के देशों से सम्पर्क बहुत कम था, लेकिन जुलाई 1853 ईसवी में एडमिरल पेरी (Admiral Perry) के जापान पहुँचने के बाद तथा मेईज क्रान्ति (Meiji Revolution) के बाद तो जापान ने आधुनिक संविधान की स्थापना, औद्योगीकरण, शिक्षा में विकास तथा आधुनिक निर्माण कार्यों से देश का कायापलट हो गया और उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त तक तो पश्चिमी देशों के समतुल्य जापान भी एक औद्योगिक देश बन गया तथा अपने विकास के हेतु अपना प्रभाव बढ़ाने के लिए इधर-उधर देखने लगा। सुदुरपूर्व में रुचि रखने वाले देशों में जापान एवं रूस की रुचि आर्थिक

होने के साथ-साथ राजनीतिक अधिक थी। जबकि दूसरे राष्ट्र एवं अमेरिका की रुचि व्यापारिक एवं आर्थिक अधिक थी। जापान ने जब चीन को 1894-95 ईसवी में हरा दिया और शिमोनोस्की सन्धि (Treaty of Shimonoski) के द्वारा जापान ने लियाओतुंग, फोरमोसा, पेस्काडोर, द्वीप समूह तथा युद्ध क्षति न देने तक वाई-हाई-वाई पर अधिकार प्राप्त कर लिया। इसके अलावा चार और नये बन्दरगाह विदेशी व्यापार के लिए खुलवा लिये। इसके सन्धि ने सुदूरपूर्व में एक नई परिस्थिति पैदा कर दी और सभी रुचि रखने वाले राष्ट्र अपने-अपने दावे पेश करने लगे तथा चीन पर और अधिक सुविधाएँ देने के लिए दबाव डालने लगे। ऐसा लगने लगा कि चीन का विभाजन सन्निकट है। रूस, फ्रांस एवं जर्मनी ने मिलकर खासतौर पर लियाओतुंग का जापान को दिये जाने का विरोध किया तथा बढ़ते हुए विरोध और दबाव के कारण जापान ने अतिरिक्त युद्ध क्षति प्राप्त करने तक अपनी लियाओतुंग प्राप्त करने की शर्त छोड़ दी। इस प्रकार की परिस्थितियों का अमेरिका बड़ी दिलचस्पी से अध्ययन कर रहा था। 1898 ईसवी में ब्रिटेन ने अमेरिका के समक्ष एक प्रस्ताव रखा था कि जिसके द्वारा दोनों देश यह प्रस्ताव करते कि चीन में सभी देशों को व्यापार के समान अधिकार हों अमेरिका के लंदन स्थित राजदूत जोन हे (John Hay) तो इस मत से सहमत हो गये लेकिन राष्ट्रपति मेकिन्ले तैयार नहीं हुए। 1899 ईसवी में जोन हे अमेरिका के सेक्रेटरी ऑफ स्टेट बने तब उसने चीन से मुक्त द्वार (Open Door) की नीति को प्रतिपादित किया। वह सुदूरपूर्व में अमेरिकी स्थिति का अध्ययन कर इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि चीन के प्रति मुक्त द्वारा की नीति से ही अमेरिकी हितों की रक्षा की जा सकती है और वे अपने व्यापारिक हित बनाये रख सकते हैं। इसलिए जान हे ने एक प्रस्ताव सभी सुदूरपूर्व में रुचि रखने वाले बड़े यूरोपीय राष्ट्रों को 6 जून, 1899 ईसवी को भेजा जिसमें कहा गया कि सभी देशों को अपने-अपने प्रभावक्षेत्रों में दूसरे देशों के नागरिकों को समान व्यापारिक अधिकार दिये जायें। कुछ देशों ने टालमटोल के जवाब दिये लेकिन हे ने स्पष्ट किया कि सबने सहमति प्रकट की है। चीन में राष्ट्रवादी तत्त्वों में विदेशियों के विशेषाधिकारों के विरुद्ध रोष फैल गया और सन् 1900 ईसवी में बक्सर आन्दोलन भड़क उठा। अमेरिका सहित सभी देशों ने एकता प्रदर्शित की और जॉन हे ने बड़ी कुशलता के साथ इस कठिन परिस्थिति में सब राष्ट्रों को कहा कि यदि चीन मुक्त द्वार का उल्लंघन करेगा तो अमेरिका को उसके विरोध के लिए बाध्य होना पड़ेगा। भाग्यवश यह विरोध शीघ्र ही समाप्त हो गया और इसी वर्ष अक्टूबर में रूस तथा जर्मनी ने मुक्त द्वार की नीति का समर्थन करते हुए चीन की स्वतन्त्रता को स्वीकार कर लिया और दूसरे देशों ने भी इसका अनुसरण किया। इस प्रकार चीन का बड़े राष्ट्रों द्वारा विभाजन रुक गया और अंशतः सुदूरपूर्व में अमेरिका नीति सफल हुई।

सितम्बर, 1901 ईसवी में राष्ट्रपति मेकिन्ले की मृत्यु के बाद उपराष्ट्रपति थियोडोर रूजवेल्ट राष्ट्रपति बना उसका पदारूढ़ होना अमेरिका की विदेश नीति के इतिहास में एक परिवर्तन बिन्दु माना जाता है। वस्तुतः इसे एक नये युग का शुभारम्भ कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी। उसके शासन काल में विदेशी नीति के क्षेत्र में दो महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुए-

(i) स्पेन-अमेरिकी युद्ध के फलस्वरूप उसे केरेबियन द्वीप के नये क्षेत्र प्राप्त हुए। थियोडोर रूजवेल्ट की नीति इन क्षेत्रों तथा पनामा नहर के निर्माण के चारों ओर केन्द्रित रही।

(ii) विश्व कूटनीति के क्षेत्र में अमेरिका आगे बढ़ने लगा।

(12) पनामा नहर के निर्माण का प्रश्न - स्पेन-अमेरिकी युद्ध के बाद से ही अमेरिका कैरीबियन एवं लैटिन अमेरिका में सक्रिय रुचि लेने लगा था और जरा भी गड़बड़ होने पर बल प्रयोग करने में नहीं हिचकिचाता था। इससे उन क्षेत्रों के राष्ट्रों में अमेरिका विरोधी भावना बढ़ने लगी थी। रूजवेल्ट की नीति काफी उग्र एवं सक्रिय थी और वह कहा भी करता था कि "विनम्रतापूर्वक बोलो पर साथ में एक बड़ा सोटा भी रखो।" इस प्रकार के बल प्रयोग का उदाहरण पर्याप्त मात्रा में पनामा नहर बनाने के मामले में स्पष्ट नजर आता है। कैरीबियन क्षेत्र में प्रभाव स्थापित होने के पश्चात् यह आवश्यक हो गया कि अमेरिका एटलांटिक एवं प्रशान्त महासागर दोनों में किसी भी आक्रमण के लिए तैयार रहे। इसलिए पनामा क्षेत्र में एक बड़ी नहर बनाने का निश्चय किया गया। वैसे इस नहर के बनाने की योजना 1850 ईसवी में ब्रिटेन के साथ क्लेटन-बुलवर सन्धि (Clayton-Bulwer Treaty) द्वारा प्रस्तावित थी, पर वह स्थगित हो गई। उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम दिनों में तथा खासतौर पर स्पेन अमेरिका युद्ध के बाद फिर अमेरिका की इसमें रुचि बढ़ गई लेकिन वह ब्रिटेन को भागीदार नहीं बनाना चाहता था। इसी बीच एक फ्रांसीसी कम्पनी ने कोलम्बिया से इस नहर के बनाने का अधिकार प्राप्त कर दिया था। लेकिन धन अभाव के कारण यह काम स्थगित कर लिया गया था अब अमेरिका अपने बढ़ते हुए उत्तरद''ित्वों के कारण रक्षात्मक दृष्टिकोण से सोचने लगा था और साथ ही ब्रिटेन के साथ अच्छे सम्बन्धों के कारण इस नहर के बनाने में सुविधा प्राप्त हुई। ब्रिटेन को पुरानी क्लेटन-बुलवर सन्धि के अन्तर्गत जो समान अधिकार प्राप्त थे वे उसने छोड़ दिये और 1801 ईसवी में एक नई सन्धि की जिसे "हे- पौंसफोर्ट सन्धि" (Hay-Pauncefort Treaty) के नाम से पुकारा जाता है। इस सन्धि के द्वारा ब्रिटेन ने अमेरिका को इस नहर के बनाने का अधिकार दे दिया तथा किलेबन्दी भी करने की स्वीकृति दे दी बशर्ते कि शान्तिकाल में सब देशों के जहाजों को इसके उपयोग की स्वतन्त्रता रहे। 1903 ईसवी में 'हे-हेरान सिन्ध' (Hay-Haron Treaty) जो अमेरिका एवं कोलम्बिया सरकार के बीच हुई। इसके अन्तर्गत अमेरिका ने एक करोड़ डालर नकद एवं ढ़ाई लाख डालर सालाना नहर क्षेत्र का किराया देना स्वीकार किया। साथ ही फ्रांसीसी कम्पनी ने अपने नहर बनाने का अधिकार तथा बचा खुचा सामान चार करोड़ डालर में अमेरिका को बेचना स्वीकार कर लिया। कोलम्बिया की सीनेट ने इस सन्धि को अस्वीकार कर दिया। इस पर रूजवेल्ट ने कड़ा रुख अपनाया, क्योंकि उन्हें यह भय था कि यदि उस वक्त नहर नहीं बन पाई तो योजना धरी ही रह जायेगी। फ्रांसीसी कम्पनी भी उत्सुक थी कि नहर बन जाये ताकि उन्हें चार करोड़ डालर मिल जायें तथा पनामा क्षेत्र के लोग भी नहर बनाने के लिए उत्सुक थे, क्योंकि उन्हें भय था कि अगर नहर नहीं बनी तो निकारागुआ में बनेगी। अमेरिका के भड़काने से पनामा क्षेत्र में कोलम्बिया के विरुद्ध विद्रोह आरम्भ हुआ। 'रिव्यू ऑफ रिव्यूज' (Review of Reviews) नामक पत्रिका में इस आशय का एक लेख छपा। अमेरिकी नौ-सैनिक तट पर उतारे गये और

उन्होंने कोलम्बिया की सेना को क्रान्तिकारियों का सामना करने से रोक दिया। अन्त में बातचीत के बाद कोलम्बिया गणराज्य ने सन्धि पर हस्ताक्षर कर दिये। इस अवसर पर रूजवेल्ट ने कहा कि ''यदि मैंने परम्परागत तरीकों का आश्रय लिया होता तो मुझे कांग्रेस को दो सौ पृष्ठों का एक मोटा वक्तव्य प्रस्तुत करना पड़ता और वाद-विवाद अब तब चल रहा होता। किन्तु नहर क्षेत्र मैंने ले लिया और कांग्रेस को वाद-विवाद करने दिया। यहाँ वाद-विवाद चल रहा है तथा उसके साथ-साथ नहर का खुदाई कार्य भी चल रहा है।'' थियोडोर के ये शब्द उसके साहसिक, निर्भीक मनोवृत्ति को स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त करते हैं। इस प्रकार की नीति से लैटिन अमेरिका के लोग चौकन्ने हो गये और 1914 ईसवी में नहर के बन कर तैयार हो जाने के बाद तो इस क्षेत्र में अमेरिका की रुचि अत्यधिक बढ़ गई। इसकी तथा इसके आसपास के क्षेत्र की सुरक्षा उसके लिए जीवन और मरण का प्रश्न बन गयी जिसके कारण उसे इस क्षेत्र में शान्ति व्यवस्था बनाये रखने के लिए समय-समय पर हस्तक्षेप करना पड़ा।

(13) कनाड़ा के साथ अलास्का की सीमा का विवाद - राष्ट्रपति रूजवेल्ट के समय में ही कनाडा के साथ एक सीमा सम्बन्धी पुराना विवाद उपस्थित हुआ। 1825 ईसवी की एंग्लो-रूसी सन्धि के अनुसार अलास्का के तट के साथ-साथ पर्वतों की चोटियों को इस प्रकार लिया जाना था कि रूस के लिए एक तीस मील की भू-पट्टी सुरक्षित रहे। इस सन्धि के बाद 1867 ईसवी में अलास्का अमेरिका के संयुक्त राज्य ने प्राप्त कर लिया था और यह समस्या उसे विरासत में मिली थी। प्रश्न यह था कि जो रेखा खींची जानी थी वह सीधी हो या समुद्र तट के साथ-साथ टेड़ी मेढ़ी। कनाडा चाहता था उसे भी इस तट पर कुछ बन्दरगाह मिल जायें। गहरे वाद-विवाद के पश्चात् यह मामला कानून विशेषज्ञों के एक मण्डल को पंच-निर्णय के लिए सौंपा गया जिसके सदस्य ब्रिटेन, कनाडा एवं अमेरिका थे। रूजवेल्ट ने अपनी परम्परागत नीति के अनुसार बड़ा सोटा दिखाना शुरू किया और धमकियाँ देने लगा परन्तु न्याय भी उसके साथ ही था। इसका निर्णय अमेरिका के समर्थन में ही हुआ।

(14) वेनेजुएला की नाकेबन्दी - इसी प्रकार की एक घटना वेनेजुएला के बारे में 1920 ईसवी में हुई। इस राष्ट्र पर जर्मनी, ब्रिटेन तथा हालैण्ड का कर्ज था। वहाँ की कैस्ट्रो की सरकार भ्रष्ट एवं बदनाम थी और रकम अदा करने में असमर्थ थी। इस पर तीनों राष्ट्रों ने वैनेजुएला के तट की नाकेबन्दी कर दी और इंग्लैण्ड ने उसके दो किलों पर गोलाबारी कर दी। अमेरिकी जनमत इससे क्षुब्ध हो गया। ऐसा देखकर ब्रिटेन ने तो अपने द्वारा उठाये गये कदम को वापस ले लिया और घोषित किया कि वह संघर्ष टालने का इच्छुक है। अमेरिका ने अपने नौ सैनिक बेड़े के सेनापति एडमिरल ड्यूई को सतर्क रहने के आदेश दे दिये ताकि जर्मनी के कैसर को पीछे हटने को बाध्य किया जा सके। इस घटना से अमेरिका एवं ब्रिटेन के सम्बन्ध एक दूसरे के प्रति सहानुभूतिपूर्ण हो गये तथा ब्रिटेन ने अपना नाविक बेड़ा प्रशान्त क्षेत्र से हटा लिया। उधर जापान के साथ 1902 ईसवी की सन्धि से भी उसके लिए यह सम्भव हो सका। ब्रिटेन अब जर्मनी के विरुद्ध अपनी पूरी शक्ति लगाने के लिए अपने नौ-सैनिक बेड़े का पुनर्गठन कर रहा था। अमेरिका ने इस कदम का स्वागत किया क्योंकि प्रशान्त एवं कैरीबियन क्षेत्र में अमेरिका पूर्ण

प्रधानता चाहता था। वेनेजुएला में जर्मनी के प्रभाव को समाप्त करने के लिए उसने इंगलैण्ड व जर्मनी को यह विवाद पंच फैसले के लिए सौंपने को राजी कर लिया। परिणामस्वरूप समस्या का हल हो गया। किन्तु यह समाधान कोई अन्तिम फैसला नहीं था। रूजवेल्ट ने एक बार सही ही कहा था कि ''मैंने पनामा को अपने अधिकार में ले लिया। नहर निर्माण करने का यही एकमात्र मार्ग था।'' इस प्रकार बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ तक प्रशान्त तथा कैरीबियन तथा लैटिन अमेरिकी क्षेत्र में अमेरिका का संयुक्त राज्य पूर्णतया प्रमुख शक्ति बन गया और उस क्षेत्र के भविष्य के हर प्रश्न में हस्तक्षेप करने लगा।

(15) रूजवेल्ट कोरोलरी (Roosevelt Corollary) – इस प्रकार की परिस्थितियों से प्रेरित होकर तथा अमेरिका की विभिन्न क्षेत्रों में बढ़ती हुई रुचि के कारण विशेषतया लैटिन अमेरिकी क्षेत्र में, रूजवेल्ट ने 1904 ईसवी में मुनरो सिद्धान्त में एक संशोधन प्रस्तुत किया जिसे 'रूजवेल्ट कोरोलरी' के नाम से पुकारा जाता है। उन्होंने मुनरो सिद्धान्त को दक्षिण के गणराज्यों की सुरक्षा के लिए महत्त्वपूर्ण माना पर उसमें एक चीज और जोड़ दी जिससे दक्षिण के राज्य भयभीत हो गये। रूजवेल्ट का कहना था कि दक्षिण के राज्य जो कर्ज अदा नहीं कर सकते और यूरोपीय राज्यों के प्रति अभद्र व्यवहार करते हैं उन्हें अमेरिका ऐसा नहीं करने देगा। उन्होंने इस क्षेत्र में व्यवस्था बनाये रखने का उत्तरदायित्व एक प्रकार से अपने ऊपर ले लिया। हालांकि ऐसा करते वक्त उन्होंने अपने विदेश मन्त्री ऐलीहू रूट (Elihu Root) को दक्षिण के राज्यों की सद्भवना यात्रा पर भेजा ताकि वे उन राष्ट्रों को अमेरिका की नीति स्पष्ट समझा दे कि लैटिन अमेरिका से वे मित्रता चाहते हैं पर किसी प्रकार का अभद्र व्यवहार एवं विदेशियों का अनादर नहीं होने देंगे। ऐसा होने पर अमेरिका हस्तक्षेप करेगा और इसका उत्तरदायित्व उसी का होगा। एक प्रकार से संयुक्त राज्य अमेरिका को रूजवेल्ट ने अमेरिकी महाद्वीप का पुलिस सार्जेंट बना दिया। स्वाभाविक ही इसकी प्रतिक्रिया दक्षिण के राज्यों में तीव्र हुई। रूजवेल्ट कोरोलरी पर बड़ा विवाद हुआ। कुछ लोग इसको सामरिक एवं राजनीतिक उद्देश्यों से प्रेरित समझते थे जबकि कुछ आर्थिक कारणों से प्रभावित। बहरहाल यह दोनों का परिणाम थी। यह हो सकता है कि उस वक्त सामरिक एवं राजनीतिक कारण ज्यादा महत्त्व रखने लगे थे, खास तौर पर पनामा नहर के कारण। लैटिन अमेरिकी राज्यों की प्रतिक्रिया स्वरूप अर्जेन्टीना (Argentina) के विदेश मन्त्री लुई ड्रेगो ने एक सिद्धान्त प्रसारित किया जिसमें किसी भी प्रकार के हस्तक्षेप को दक्षिण के राज्यों के सार्वभौम अधिकारों का अतिक्रमण माना गया। आम तौर पर दक्षिण में यह धारणा बनती जा रही थी कि संयुक्त राज्य अमेरिका साम्राज्यवादी बनता जा रहा है।

(16) डोमिनिक गणराज्य में हस्तक्षेप – 'रूजवेल्ट कोरोलरी' का प्रथम प्रभाव डोमिनिकन गणराज्य (Dominican Republic) पर पड़ा जो अपना कर्ज देने में असमर्थ था। अमेरिका ने हस्तक्षेप की धमकी दी और अपने आपको 'रिसीवर' बनाना प्रस्तावित किया। डेमोनियन गणराज्य की स्वीकृति से अमेरिका ने वहाँ का वित्तीय उत्तरदायित्व सम्भाल लिया। यह बात दूसरी है कि अमेरिका ने व्यवस्था कायम कर दी और यूरोपीय कर्जदारों का स्थान अमेरिकी साहूकारों ने ले लिया। नेविन्स एवं कौमेजर के अनुसार इस घटना ने कैरीबियन सागर में अनेक संरक्षित राज्यों में

निर्माण के लिए उदाहरण प्रस्तुत किया। यद्यपि यह नीति शांति व व्यवस्था बनाये रखने में सहायक थी, किन्तु इसने लैटिन अमेरिका में यह आशंका पैदा कर दी कि अमेरिका लूटमार करने वाले तरीके अपना रहा है।

(17) क्यूबा में हस्तक्षेप – इसी प्रकार दूसरा हस्तक्षेप रूजवेल्ट के समय क्यूबा में करना पड़ा। 1906 ईसवी में वहाँ कुछ क्रान्तिकारियों ने उपद्रव किये। अमेरिकी सेना को वहाँ उतारा गया और वह वहाँ 1909 ईसवी तक रही और व्यवस्था स्थापित कर दी गई।

(18) प्रशान्त महासागर के क्षेत्रों के प्रति नीति – प्रशान्त महासागर में रूजवेल्ट ने इसी प्रकार की नीति अपनाई पर वहाँ वह इतना सफल नहीं हो पाया, क्योंकि उसे जापान से निपटना था। सुदूर पूर्व में जापान की शक्ति बढ़ती जा रही थी और वह अपना प्रभाव चीन पर जमाने के प्रयास कर रहा था। यह 1894-95 ईसवी के चीन के साथ युद्ध से स्पष्ट हो गया था। 1904-05 ईसवी का रूसी-जापानी युद्ध भी इसी नीति का परिणाम था। इस युद्ध के प्रति अमेरिकी नीति जापान के प्रति साहानुभूति की थी, क्योंकि अमेरिका जापान से अधिक रूस को खतरनाक समझता था। दोनों देशों के बीच मध्यस्थता करके रूजवेल्ट ने पोर्टस्माऊथ की सन्धि 1905 ईसवी में करवा दी जिससे जापान को कोरिया एवं दक्षिणी मंचूरिया मिल गया पर युद्ध क्षति नहीं मिल पायी। इससे जापान और अमेरिका के सम्बन्ध कुछ मनमुटाव के हो गये। इन्हीं दिनों केलिफोर्निया में बसे जापानी प्रवासियों के साथ जातीय भेद भाव के प्रश्न पर विवाद खड़ा हो गया। जापानी लोगों के साथ अमेरिकनों का व्यवहार ठीक नहीं था और स्कूलों में जापानी बच्चों के साथ भेद भाव किया जाता था। इसको अमेरिकी लोग 'पीला खतरा' (Yellow Peril) कह कर पुकारने लगे। जापान की प्रगति को देखते हुए वे अपने को गोरों से हीन मानने को तैयार नहीं थे। रूजवेल्ट ने इस विवाद को बड़ी कुशलता एवं यथार्थवादी दृष्टिकोण अपना कर हल किया और सान फ्रान्सिस्कों के अधिकारियों को व्हाइट हाउस बुला कर अपने भेदभाव पूर्ण आदेश वापस लेने के लिए तैयार कर लिया। 1907-08 ईसवी के समझौते के अनुसार जापान ने अमेरिका जाने वाले कुलियों को और पासपोर्ट देना बन्द करना मान लिया। यह समझौता सभ्य समझौता (Gentlemen's Agreement) कहलाता है। लेकिन साथ ही रूजवेल्ट ने अमेरिका की शक्ति प्रदर्शित करने के लिए सोलह युद्ध पोतों के एक बेड़े को विश्व भ्रमण के लिए भेज दिया जो याकोहामा रुका और इसका जापान ने स्वागत किया। यह घटना विनम्रतापूर्वक बोलने के साथ बड़ा सोटा रखने की रूजवेल्ट की नीति को चरितार्थ करती है। अन्त में 1908 ईसवी में रूट-ताकाहीरा समझौते (Root-Takahira Agreement) के द्वारा दोनों अमेरिका तथा जापान ने एक दूसरे के हितों का सम्मान करने तथा सुदूरू पूर्व में यथास्थिति बनाये रखने का संकल्प किया। इस समझौते ने चीन में मुक्त द्वार तथा चीन की स्वतन्त्रता तथा अखण्डता को स्वीकार किया लेकिन यथास्थिति का अर्थ था कि जापान ने कोरिया और दक्षिणी मंचूरिया जो प्राप्त कर लिया था उसे अपवाद के रूप में मान्यता मिल गई। वास्तव में अमेरिका को अपने क्षेत्रों की सुरक्षा की गारन्टी के बदले चीन में जापान की रुचि को स्वीकार करना पड़ा। यह रूजवेल्ट ने प्रत्यक्ष रूप से

स्वीकार कर लिया था जब उसने कहा था कि ''मंचूरिया के बारे में सफल युद्ध का अर्थ होगा कि अमेरिका के पास ब्रिटेन जैसी नाविक शक्ति और जर्मनी के समतुल्य सेना हो।''

थियोडोर रूजवेलट की विदेश नीति को व्यावहारिक एवं नियंत्रित रखने के लिए उसके विदेश मंत्री एलिहु रूट (Elihu Root) ने बड़ी बुद्धिमता से काम लिया। वह जान हे का उत्तराधिकारी था और अमेरिका के महान् एवं सफल विदेश मंत्रियों में एक था। उसने लैटिन अमेरिका के देशों की सद्भावना यात्रा करके वहाँ के देशों की भ्रांतियाँ दूर की और अमेरिका के बिगड़ते हुए सार्वजनिक स्वरूप को सुधारा। बहुत हद तक वह रूजवेल्ट की द्वितीय अवधि के समय लैटिन-अमेरिकी देशों के साथ सम्बन्ध सुधारने में सफल भी हुआ।

यह सत्य है कि ज्यों-ज्यों समय बीतता गया और प्रथम महायुद्ध तक अमेरिका एक विश्व शक्ति ही नहीं बन गया अपितु संसार की तीन चार ताकतों में गिना जाने लगा। रूजवेल्ट के युग में वह अपनी शक्ति के अनुपात में ही अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में रुचि रखने लगा और विश्व सम्मेलनों में भाग लेने लगा। विश्व शान्ति के लिए दोनों हेग सम्मेलनों में उसने भाग लिया और पूर्ण विश्व में लोकतांत्रिक सिद्धान्तों एवं व्यावसायिक स्वतन्त्रता का नैतिक समर्थन किया। 1909 ईसवी तक अमेरिका का संयुक्त राज्य एक विश्व शक्ति के रूप में उभर चुका था।

□□□

अध्याय - 17

टैफ्ट से हूवर के प्रशासन काल में प्रगतिवादी सुधार (1909-1929 ईसवी)

□ बी.एस. माथुर

I. 1908 ईसवी का चुनाव :

1904 ईसवी में चुनाव जीतने पर थियोडोर रूजवेल्ट ने यह घोषित कर दिया था कि अपने कार्यकाल के समाप्त होने पर वह राष्ट्रपति पद के लिए तीसरी बार खड़ा नहीं होगा। रूजवेल्ट के घनिष्ट मित्रों में दो मुख्य थे – ऐलिहु रूट और विलियम होवर्ड टैफ्ट (William Haward Taft)। रूजवेल्ट यह चाहता था कि उसका उत्तराधिकारी ऐसा व्यक्ति हो जो उसके द्वारा की गई प्रगतिवादी नीतियों का अनुगमन कर सके और इस दृष्टि से टैफ्ट उसे ज्यादा उपयुक्त लगा। 1908 ईसवी के चुनाव में रिपब्लिकन दल ने रूजवेल्ट के इशारे पर टैफ्ट को अपना उम्मीदवार नामांकित किया। देश के बड़े व्यापारी वर्ग ने टैफ्ट को सिर्फ शुभकानाएँ ही नहीं भेजी बल्कि उसके चुनाव में धन की सहायता भी प्रचुर मात्रा में दी। अपनी चुनाव घोषणा में टैफ्ट ने मुख्य रूप से छोटे व्यापारियों के हितों की रक्षा और प्रशुल्क दरों में कमी करने का आश्वासन दिया।

डेमोक्रेटिक दल ने पहले की भाँति विलियम ब्रायन को अपना उम्मीदवार बनाया। ब्रायन ग्रामीण क्षेत्रों में ज्यादा लोकप्रिय था, उसके भाषणों ने किसान वर्ग को बहुत प्रभावित भी किया था, किन्तु चुनाव में वह निर्वाचक मण्डल के तीन सौ इक्कीस के मुकाबले एक सौ बासठ वोट ही प्राप्त कर सका। इस प्रकार रिपब्लिकन दल फिर सत्ता में आ गया।

II. टैफ्ट का व्यक्तित्व व कार्य प्रणाली :

टैफ्ट का जीवन क्रम एक प्रकार से रोचक था। एक राजनीतिज्ञ का पुत्र होते हुए भी उसने युवावस्था में राजनीति में कोई उत्साह नहीं दिखाया। उसके जीवन का ध्येय अपने देश के न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश का पद प्राप्त करना था। मेकिन्ले के समय में वह एक प्रशासक रह चुका था और रूजवेल्ट के समय में अमेरिका के बढ़ते हुए औपनिवेशिक साम्राज्य में उसका महत्त्वपूर्ण योगदान था। वास्तव में उसे रूजवेल्ट की प्रगतिशील नीति का कोई ज्ञान नहीं था, क्योंकि वह अधिकतर अमेरिका से बाहर रहा। दल की आन्तरिक नीतियों के निर्माण में भी उसका कोई हाथ न था। यद्यपि वह रूजवेल्ट का विश्वासप्राप्त मित्र था, परन्तु अपने मित्र की

उच्छृंखल कार्य विधियों में विश्वास नहीं करता था। उसका दृष्टिकोण कानूनी था और वह प्रत्येक कार्य को नियमानुसार करना चाहता था। उसके और रूजवेल्ट के व्यक्तित्व में यह बहुत बड़ा अन्तर था।

रिपब्लिकन नेता टैफ्ट से बहुत आशाएँ रखते थे। उनमें से अधिकांश का विचार था कि वह रूजवेल्ट की प्रगतिवादी नीतियों को गति देगा। टैफ्ट स्वयं भी ऐसा ही सोचता था और अपने एक पत्र में उसने रूजवेल्ट को इसी प्रकार का विश्वास भी दिलाया था। परन्तु राष्ट्रपति बनने के बाद उसे कुछ ऐसी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा जिनके कारण वह प्रगतिवादियों की आशाएँ पूरी नहीं कर सका। उसके व्यक्तित्व में न्यायिक पुट अधिक होने के कारण ही सम्भवतः उसके मंत्रिमण्डल में अधिकांश सचिव ऐसे थे जो वकील रह चुके थे। दुर्भाग्य से इनका पार्टी के कार्यक्रम से सम्बन्ध प्रायः नहीं के बराबर था और वे पार्टी की नीतियों को क्रियान्वित करने में अधिक सहयोग नहीं दे सके। एक अन्य बड़ी समस्या यह भी थी कि अपने शासन काल के अन्तिम समय में रूजवेल्ट ने प्रगतिवादियों को ऐसे आश्वासन दे दिये थे जिनको पूरा करना बहुत कठिन था। जब टैफ्ट ने उनमें परिवर्तन करने का प्रयत्न किया तो प्रगतिवादियों को यह रूजवेल्ट की नीति का उल्लंघन लगा। वास्तव में टैफ्ट प्रगतिवादियों के सिद्धान्तों से सहमत तो था, परन्तु उनकी कार्य प्रणालियों को पसन्द नहीं करता था। इस प्रकार पदासीन होने के बाद टैफ्ट को अपने ही तरीकों से उन नीतियों को व्यवहार में लाना था जिन्हें रूजवेल्ट ने तय किया था। इसे पूरा करने के लिए रिपब्लिकन दल में प्रगतिशील और अनुदारवादियों को साथ लेकर चलना आवश्यक था।

III. टैफ्ट का प्रशासन (1909-1913 ईसवी) :

(1) राष्ट्र के सम्मुख समस्याएँ - यद्यपि थियोडोर रूजवेल्ट एक योग्य राष्ट्रपति था, किन्तु वह अपने शासन काल में अनेक समस्याओं का समाधान नहीं कर सका था। उसने अपने उत्तराधिकारी को निम्नलिखित समस्याएँ विरासत के रूप में छोड़ी जिनका क्रियान्वयन शक्ति से ही किया जा सकता था-

(i) रिपब्लिकन दल में अनुदारवादियों का प्रभाव अधिक था। सुधारों के लिए यह आवश्यक था कि दल में प्रगतिशील तत्त्वों का वर्चस्व हो। अतएव दल में आन्तिरिक संघर्ष था।

(ii) तटकर में कमी करने का सुधार रूजवेल्ट ने आरम्भ नहीं किया था।

(iii) उसके समय में रेल नियन्त्रण अधिनियम जो पारित हुआ था वह पर्यास नहीं था।

(iv) न्यासों को पूर्ण नियंत्रण में रखना एवं न्यायालयों में उनके विरुद्ध मुकदमों को चलाना आवश्यक था। क्योंकि टैफ्ट स्वयं अनुदार प्रवृत्ति का व्यक्ति था इसलिए उसने रूढ़िग्रस्त नेताओं पर अधिक विश्वास किया। अतः उग्रपंथी उससे अप्रसन्न हो गये तथा दल में एक संकट पैदा हो गया।

(2) प्रशासनिक सुधार - (i) तटकर की दरों में परिवर्तन - देश के सामने इस समय तटकर का प्रश्न महत्त्वपूर्ण था। टैफ्ट तटकरों की दरों को कम करना चाहता था और उसे ध्यान था कि 1907 ईसवी में रूजवेल्ट ने भी इन दरों को कम किये जाने पर जोर दिया था। परन्तु इस सम्बन्ध में वह मजबूती के साथ कोई कदम नहीं उठा सका। 1909 ईसवी में पेन (Payne) ने तटकरों की दरों में कमी लाने की दृष्टि से एक बिल प्रस्तुत किया जिस पर काफी वाद-विवाद हुआ। आलड्रिच (Aldrich) और उसके साथियों ने उसमें आठ सौ सैंतालीस संशोधन लगा दिये, जिससे कई मदों पर दरें घटने की बजाय बढ़ गईं। मध्य पश्चिम राज्यों के नेता ला फौलेट (La Follat) ने आलड्रिच के संशोधनों के विरुद्ध बहुत से तथ्य प्रस्तुत किये और टैफ्ट से सहायता की आशा की। परन्तु टैफ्ट ने कोई कदम नहीं उठाया और 5 अगस्त, 1909 ईसवी को संशोधित पेन-आलड्रिच बिल (Payne-Aldrich Bill) पर हस्ताक्षर कर दिये। ऐसा करने में टैफ्ट का मुख्य उद्देश्य पार्टी की एकता बनाये रखना था। परन्तु इससे उसने दल के प्रगतिशील वर्ग को हमेशा के लिए अप्रसन्न कर दिया। इस अधिनियम के अनुसार अधिकतर डिंग्ले की प्रशुल्क तालिका (Dingley Tariff Schedule) की दरों को रखा गया। कुछ वस्तुएँ जैसे ऊन और शक्कर पर तटकर बढ़ा दिया गया। इसके अतिरिक्त तट करों की दरों के अध्ययन के लिए एक प्रशुल्क आयोग (Tariff Commission) की स्थापना करने का प्रावधान भी इसमें था। पेन-आलड्रिच अधिनियम के कारण मध्य -पश्चिम की प्रगतिवादी रिपब्लिकन और पूर्व के पुराने रिपब्लिकन नेताओं के बीच मतभेद बढ़ गया तथा मध्य-पश्चिम के प्रगतिवादियों से अब टैफ्ट के सम्बन्ध खराब होते ही गये।

(ii) कनाडा के साथ व्यापारिक समझौते का असफल प्रयत्न - 1911 ईसवी में राष्ट्रपति ने कनाडा के साथ एक पारस्परिक व्यापिरक समझौता (Reciprocal Trade Agreement) करने का प्रस्ताव सीनेट के सामने पेश किया। जिसके अनुसार खाने की कुछ वस्तुओं पर दोनों देशों में स्वतन्त्र व्यापार होता तथा अन्य वस्तुओं पर प्रशुल्क की दर कम कर दी जाती। मध्य पश्चिम के ला फालेट जैसे नेताओं के विरोध के बावजूद राष्ट्रपति ने इस प्रस्ताव पर कांग्रेस की सहमति प्राप्त कर ली। इसी समय कनाडा में सरकार का परिवर्तन हो गया और नई सरकार ने इस विषय में कोई रुचि नहीं ली। कनाडा में बहुत से राजनैतिक नेताओं ने अमेरिका के वास्तविक उद्देश्यों पर शंका प्रकट की और कहा कि अमेरिका इस प्रकार के प्रस्तावों से अपना राजनैतिक और आर्थिक प्रभाव स्थापित करना चाहता था।

(iii) भूमि संरक्षण- भूमि संरक्षण के सम्बन्ध में टैफ्ट ने रूजवेल्ट के समान ही रुचि दिखलाई। 1910 ईसवी में उसने कांग्रेस के सामने कुछ प्रस्ताव रखे। जंगलों के संरक्षण का कार्य भी हाथ में लिया गया परन्तु इस दिशा में भी उसके कार्यों ने पार्टी के प्रगतिशील वर्ग में असन्तोष पैदा कर दिया, क्योंकि उनको ऐसा लगा कि टैफ्ट पूर्ण रूप से रूजवेल्ट की भूमि-संरक्षण नीति पर नहीं चल रहा था। इस विचार की पुष्टि वालिन्जर-पिंशाट (Ballinger Pinchot) विवाद में उसकी नीति से हो गई। बालिन्जर ने वोमिंग और मोन्टाना जल-शक्ति (Wyoming and Montana Water Power) स्थलों को वन संरक्षण कार्यक्रम के विपरीत कुछ उद्योगपतियों को दे दिया

था, जहाँ उन्होंने जंगल साफ करा कर अपने कारोबार स्थापित कर लिये थे। इसी प्रकार अलास्का में भी उसने कुछ भूमि व्यापारिक संगठन मार्गन गगनहीम सिन्डीकेट (Morgan Guggenheim Syndicate) को दे दी थी। मुख्य वन-संरक्षक पिंशाट (Pinchot) और दूसरे अधिकारी ग्लेविस (Glavis) ने इस पर आपत्ति की। पिंशाट रूजवेल्ट का विशेष कृपापात्र था। टैफ्ट ने बालिन्जर के स्पष्टीकरण को स्वीकार कर लिया और इस प्रश्न को कांग्रेस में ले जाने के आरोप में पिंशाट को राज्य सेवा से हटा दिया। इससे प्रगतिशील वर्ग में यह विचार और भी दृढ़ हो गया कि टैफ्ट रूजवेल्ट की नीतियों पर पूर्ण रूप से नहीं चल रहा था।

(iv) न्यासों के विरुद्ध कार्यवाही - रूजवेल्ट की न्यास विरोधी नीति का टैफ्ट ने पूर्ण रूप से पालन किया। उसके समय में 1890 ईसवी के शरनन न्यास विरोधी अधिनियम का अच्छा उपयोग किया गया। टैफ्ट ने चार साल में लगभग नब्बे न्यासों को समाप्त कर दिया, जबकि रूजवेल्ट के समय सिर्फ 44 न्यासों पर प्रहार किया गया था। स्टेंडर्ड आयल कम्पनी और अमेरिकन टबेको कम्पनी (American Tabacco Company) जैसे प्रसिद्ध संगठनों के विरुद्ध कार्यवाही की गई। इस दिशा में अमेरिका के सर्वोच्च न्यायालय ने भी सहायता दी और यह ओदश दिये कि इन कम्पनियों को भंग कर दिया जाय। इस प्रकार इस क्षेत्र में रूजवेल्ट के साढ़े सात वर्ष की तुलना में टैफ्ट क़े प्रशासन काल में ज्यादा उपलब्धियाँ हुई।

(v) अन्य प्रगतिवादी सुधार - इस समय के अन्य आन्तरिक सुधार भी उल्लेखनीय हैं जो प्रगतिवादी नीति के विकास पर प्रकाश डालते हैं। बैंकों के विरोध के बावजूद पोस्ट आफिसों में बचत खातों की प्रथा शुरू की गई। पार्सल पोस्ट की पद्धति आरम्भ की गई। श्रम विभाग की स्थापना की गई। संघीय बाल ब्यूरो (Federal Children's Bureau) ने उद्योगों में बाल-रक्षा नियमों का पालन कराया। संविधान में भी सोलहवाँ और सत्रहवाँ संशोधन पास हुआ जिसके अनुसार आय कर लगाया गया और सीनेट के सदस्यों का प्रत्यक्ष चुनाव स्वीकार किया गया। संघीय प्रशासनिक राज्य सेवा में योग्यता के आधार पर और अधिक पद सुरक्षित रखे गये।

(vi) एरिजोना (Arizona) राज्य के संघ में प्रवेश का विरोध - उसने एरिजोना राज्य का संघ में प्रवेश का विरोध इसलिए किया कि उस राज्य में जनता की माँग पर न्यायाधीशों को वापस बुलाया जा सकता था। इससे दल के प्रगतिशील तत्त्व उससे नाराज हो गये।

(vii) टैफ्ट का विरोध एवं रिपब्लिकन दल का विभाजन – शनैः-शनैः रिपब्लिकन दल में टैफ्ट का विरोध बढ़ता ही गया। उग्र सुधारवादी उसकी निन्दा करने लगे और अपने कार्यक्रम में आने वाली सभी बाधाओं को हटाने की चेष्टा करने लगे। हाउस के स्पीकर केनन (Cannon) को भी एक प्रकार की बाधा समझा जाता था और इस कारण उसे मार्ग से हटाना आवश्यक था। नोरिस (Noris) के नेतृत्व में उग्र सुधारकों ने काफी वाद-विवाद के बाद एक प्रस्ताव पास करा दिया जिसके द्वारा नियम समिति (Rules Committee) में केनन के अधिकार बहुत कम हो गये। यद्यपि टैफ्ट स्वयं केनन से अप्रसन्न था, परन्तु वह समझता था कि केनन के बिना उसके रिपब्लिकन दल का विघटन हो जायेगा। इस प्रकार टैफ्ट के समय में रिपब्लिकन दल दो भागों में बँट गया जिससे अगले चुनाव में डेमोक्रेटों को विजय मिलना आसान हुआ।

अच्छे उद्देश्य रखते हुए भी टैफ्ट का प्रशासन सफल नहीं कहा जा सकता। रूजवेल्ट को एक पत्र में उसने स्वीकार किया कि शायद उसकी कार्यविधियाँ ही ऐसी थीं कि वह सुधारवादियों को सन्तुष्ट नहीं कर सका। वास्तव में उसमें रूजवेल्ट जैसा उत्साह नहीं था और जब देश में तीव्र सुधारवादी लहर बह रही थी उस समय उसके सुधार, दल को हल्के लगे।

IV. 1912 ईसवी का चुनाव :

1912 ईसवी के चुनाव के समय रिपब्लिकन दल की आन्तरिक स्थिति कमजोर थी। 1910 ईसवी के उपचुनावों से ही देश की प्रतिक्रिया सामने आ गई थी जब हाउस में डेमोक्रेटों का बहुमत स्थापित हो गया था। 1911 ईसवी में रिपब्लिकन दल के कुछ सदस्यों ने राष्ट्रीय प्रगतिशील रिपब्लिकन लीग (National Progressive Republican League) की स्थापना की, जिसका उद्देश्य टैफ्ट का दुबारा चुनाव नहीं होने देना था। रूजवेल्ट भी, जो अफ्रीका और यूरोप के लम्बे दौरे के बाद लौटा था, टैफ्ट की नीतियों से असन्तुष्ट था, अत: जब कुछ रिपब्लिकन नेताओं ने उसके समक्ष दुबारा चुनाव में खड़े होने का प्रस्ताव रखा तो प्रारम्भिक हिचकिचाहट के बाद उसने स्वीकार कर लिया। परन्तु अपने ही दल में उसे पूर्ण समर्थन नहीं मिल सका। इस कारण उसने प्रगतिवादी दल (Progressive Party) के नाम से अलग दल का संगठन किया जिसने अगस्त, 1912 ईसवी में शिकागो अधिवेशन में रूजवेल्ट को राष्ट्रपति पद के लिए मनोनीत किया। एक प्रकार से रिपब्लिकन दल का विभाजन गम्भीर रूप से हो गया। डेमोक्रेटो ने वर्जीनिया के वुडरो विल्सन (Woodroe Wilson) को अपना उम्मीदवार चुना।

विल्सन का जन्म 1856 ईसवी में हुआ था। उसके पिता उसे पादरी बनाना चाहते थे, परन्तु वह एक शिक्षाशास्त्री बन गया। प्रिंसटन और जॉन होपकिन्स जैसे प्रख्यात विश्वविद्यालयों में अध्ययन करने के बाद उसने शिक्षक का पद ले लिया और धीरे-धीरे प्रिंसटन का अधिष्ठाता बन गया। विल्सन के राजनैतिक विचार उसकी धार्मिक परम्परा और इंग्लैण्ड के संविधान से बहुत प्रभावित हुए थे और उसने अपने राजनैतिक जीवन में इन्हीं आदर्शों को व्यवहार में लाने का प्रयत्न किया।

1906 ईसवी से ही डेमोक्रेटिक दल के पूर्वी राज्यों के रूढ़िवादी नेताओं की दृष्टि उस पर थी और वे उससे बराबर सम्पर्क बनाये हुए थे। 1910 ईसवी में प्रिंसटन छोड़ कर विल्सन ने राजनीति में प्रवेश किया और वह न्यू जर्सी के गवर्नर के पद पर रहा। 1912 ईसवी में बाल्टीमोर कन्वेंशन में डेमोक्रेटिक दल ने उसे अपनी ओर से राष्ट्रपति पद के लिए चुनाव में खड़ा किया। टैफ्ट और रूजवेल्ट के मतभेदों के कारण रिपब्लिकन दल की पराजय स्पष्ट थी। 1912 ईसवी के चुनावों में टैफ्ट को दो और रूजवेल्ट को छ: राज्यों का समर्थन मिला, बाकी राज्यों के वोट विल्सन को मिले और वह राष्ट्रपति चुन लिया गया।

(1) विल्सन का व्यक्तित्व - यद्यपि विल्सन का प्रारम्भिक जीवन शिक्षाशास्त्री के रूप में हुआ था, किंतु राष्ट्रपति बनने के बाद उसने शीघ्र ही अपने को नये ढाँचे में ढ़ाल लिया। उसने अपने चुनाव अभियान में प्रगतिशीलता को महत्त्व दिया था। उसने 'नई स्वतन्त्रता' (New

Freedom) के रूप में कुछ सिद्धान्त प्रतिपादित किए। वह व्यापार की उन्नति चाहता था, किन्तु संघों द्वारा नहीं। अतएव उसने स्पष्ट कर दिया था कि वह पूँजीपतियों के एकाधिकार को सीमित करने का प्रयत्न करेगा। उसने लघु उद्योगपतियों के अधिकारों को संरक्षण देने का भी वचन दिया। उसने तटकरों की दरें घटाने व अनेक वस्तुओं को तट-कर हीन सूची में शामिल करने की बात भी कही। उसके विचार में बैंकों का विकेन्द्रीकरण करना चाहिए ताकि धन का केन्द्रीकरण न हो। बैंकों पर पूँजीपतियों का नहीं वरन सरकार का नियन्त्रण हो। उसके द्वारा प्रतिपादित नई स्वतन्त्रता में सम्पत्ति एवं निहित स्वार्थों के तीन मुख्य स्तम्भों पर कठोर प्रहार किया जाना था। ये तीन स्तम्भ थे – (अ) न्यास, (ब) तटकर, (स) बैंक। पार्केस के अनुसार उसकी 'नई स्वतन्त्रता' के कार्यक्रम का प्रभाव जनता विशेषकर कृषकों पर पड़ा तथा उन्होंने उसका समर्थन किया।

इस प्रकार विल्सन ने रेडिकल न होते हुए भी समाज के पुनर्निर्माण के लिए नई स्वतन्त्रता का कार्यक्रम जनता के सामने रखा। उसने विशेष हितों के प्रभुत्व, जिसने जनता की व्यक्तिगत स्वतन्त्रता को समाप्त कर दिया था, का अंत करके जनता को समान अवसर प्रदान करने के एक कार्यक्रम का पालन करने का वचन दिया।

पार्केस के अनुसार विल्सन ने अपने प्रथम राष्ट्रपतित्व काल के पहले डेढ़ वर्षों में अपने कार्यक्रम को मूर्त्त रूप देने के लिए तत्परता का प्रदर्शन किया। इस समय में उसने वाशिंगटन व लिंकन को छोड़ कर अन्य सभी राष्ट्रपतियों के मुकाबले में महत्त्वपूर्ण कानून बनाये। उसने तटकरों, बैंकिंग व मुद्रा प्रणाली व न्यासों से सम्बन्धित कानून पारित किये। 1914 ईसवी में यूरोप में महायुद्ध छिड़ने से उसकी गति में कमी आई तथा विल्सन के प्रशासन का ध्यान युद्ध जनित आर्थिक समस्याओं तथा विदेश नीति की ओर अधिक रहा।

(2) 1916 ईसवी का चुनाव – डेमोक्रेटिक दल ने विल्सन को पुनः अपना उम्मीदवार चुना। रिपब्लिकन दल का प्रत्याशी चार्ल्स ई. ह्यूजेस् (Charles E. Hughes) था। सोशलिस्ट दल की ओर से ए.एल. बेनसन (A.L.Benson) ने चुनाव लड़ा। इस चुनाव में विल्सन की विजय हुई। ह्यूजेस् को 85,38,221 लोकप्रिय मत मिले जब कि विल्सन को 91,29,606 मत प्राप्त हुए। इससे यह ज्ञात होता है कि 1912 ईसवी के मुकाबले 1916 ईसवी में विल्सन की लोकप्रियता में कमी आई थी। इसका प्रमुख कारण उसका अपने वचनों को पूरा नहीं करना था।

इसी अध्याय में उसके दोनों राष्ट्रपतित्व काल के प्रशासनिक सुधारों के संयुक्त रूप से वर्णन किया गया है।

(3) प्रशासनिक सुधार – (i) प्रशुल्क अधिनियम (1913 ईसवी) – राष्ट्रपति पद सम्भालने के तुरन्त बाद ही विल्सन ने प्रशुल्क समस्या को सुलझाने के लिए कांग्रेस का एक विशेष अधिवेशन बुलाया। जेफरसन के समय से चली आ रही परम्परा को तोड़ कर वह स्वयं कांग्रेस के सामने गया और अपने भाषण में उसने प्रशुल्कों में भारी कमी करने का प्रस्ताव रखा। उसके मतानुसार विलास की वस्तुओं अथवा ऐसी चीजों पर जो अमेरिका में तैयार नहीं होती थी

प्रशुल्क लगा दिया जाय। उसकी मान्यता थी कि कर लगाने का सिद्धान्त यह होना चाहिए कि अमेरिका और विदेशों में सामान बनाने की कीमत बराबर हो जिससे सब देशों के उद्योग संस्थानों में एक प्रतियोगिता की भावना पैदा की जा सके। करों में कमी करने की दिशा में 1913 ईसवी में अन्डरवुड सीमन्स प्रशुल्क अधिनियम (Underwood Simmons Tariff Act) पास किया गया। इसके अनुसार शक्कर, लोहा, लकड़ी, इत्यादि वस्तुओं पर प्रशुल्क की दर कम कर दी गई। लगभग 100 वस्तुओं पर से कर हटा दिया गया। इससे दस गुना वस्तुओं पर करों में कमी की गई। यह कमी छब्बीस प्रतिशत से 37 प्रतिशत तक थी। वास्तव में गृह युद्ध के बाद यह पहला अवसर था कि जब दरों में इतनी अधिक कमी की गई थी। इससे पैदा हुए राजस्व घाटे को आयकर द्वारा पूरा किया गया जो सोलहवें संशोधन से न्यायोचित बना दिया गया था।

(ii) मुद्रा व बैंकिंग व्यवस्था में सुधार – सुधार कार्यक्रम में दूसरा कदम मुद्रा से सम्बन्धित था। जून, 1913 ईसवी में विल्सन स्वयं कांग्रेस के सामने बैंक प्रणाली में परिवर्तन के प्रस्ताव को लेकर आया। गृह युद्ध के समय राष्ट्रीय बैंकों की स्थापना की जा चुकी थी। परन्तु उनकी कार्यप्रणाली में बहुत से दोष थे। उनमें से कुछ को दूर करने का प्रयत्न 1907 ईसवी के आलड्रिच व्रिलेण्ड अधिनियम (Aldrich Vreeland Act) द्वारा किया गया था। सुधारों को और आगे बढ़ाने की दिशा में सचिव मेक अडू (Mc Adoo) और सीनेटर ओवन (Owen) और ग्लास ने संयुक्त योजनाएँ बनाई जिनके आधार पर कांग्रेस ने 1913 ईसवी में फैडरल रिजर्व अधिनियम (Federal Reserve Act) पास किया। इसके द्वारा मुद्रा व्यवस्था की दृष्टि से देश को बारह क्षेत्रों में विभाजित कर दिया गया। जिसके प्रत्येक भाग में फैंडरल रिजर्व बैंक की एक शाखा स्थापित करने की योजना थी। इस शाखा को केन्द्रीय रिवर्ज बैंक के प्रतिनिधि के रूप में काम करना था। परन्तु इसे जनता से लेनदेन का हिसाब नहीं रखना था। उसका कार्य तो संदस्य बैंकों और संघीय सरकार से तालमेल रखना था। संघीय और स्थानीय बैंकों की पूँजी उनमें जमा की जाती थी। स्थानीय बैंकों को संघीय बैंक का सदस्य होना अनिवार्य था। व्यापार की स्थिति के अनुसार फैडरल रिजर्व बैंक नोट जारी कर सकता था और उनकी संख्या घटा बढ़ा भी सकता था। इससे मुद्रा प्रसार में आवश्यकतानुसार लचीलापन पैदा किया जा सका। इस सब व्यवस्था की देखभाल और मूल नीति निर्धारित करने के लिए वाशिंगटन में एक फैडरल रिजर्व बोर्ड (Federal Reserve Board) की स्थापना की गई। इसमें कोष सचिव के अलावा छः अन्य सदस्य थे जो राष्ट्रपति द्वारा मनोनीत किये जाते थे। यद्यपि अमेरिका के बैंक संघ ने इस सुधार का विरोध किया, परन्तु इसके प्रथम वर्ष के प्रयोग ने ही देश के लगभग आधे मूल धन पर इसका नियंत्रण हो गया। इससे यह स्पष्ट हो गया कि यह प्रथा लाभदायक थी, क्योंकि इसके द्वारा ऋण प्रसार को रोकना सम्भव था। इस अधिनियम के पारित होने के बाद पुराने नोटों के स्थान पर नये फैडरल रिजर्व नोटों का चलन शुरू हुआ। मुद्रा प्रसार पर अब केन्द्रीय सरकार का अधिकार भी दृढ़ हो गया और मुद्रा पर पहले जो बड़े बैंकपतियों का प्रभाव था वह भी अब कम होने लगा। विल्सन अपने 'नई स्वतन्त्रता' के कार्यक्रम अन्डरवुड-सीमन अधिनियम और फैडरल रिजर्व अधिनियम को महत्त्वपूर्ण कड़ी समझता था। इसे अमेरिकन मुद्रा प्रणाली तथा बैंकिंग व्यवस्था के इतिहास में एक क्रान्तिकारी कदम माना जा सकता है।

(iii) न्यास विरोधी अधिनियम - थियोडोर रूजवेल्ट की भाँति विल्सन भी न्यासों का विरोधी था। उसका विचार था कि न्यासों द्वारा किये जा रहे व्यापार के अनियमित तरीकों को रोका जाये। सितम्बर, 1914 इसवी में इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए कांग्रेस कमीशन ने फेडरल ट्रेड कमीशन (Federal Trade Commission) की स्थापना की। इस कमीशन में पाँच सदस्य थे। कमीशन को यह अधिकार दिया गया कि वह किसी भी न्यास के कार्य की जाँच कर उसमें गलत तरीकों के प्रयोग पर 'रोक आदेश' लगा सकता था। यदि आवश्यकता हो तो न्यायालयों में उनके विरुद्ध मुकदमे चलाये जा सकते थे। 1915 और 1931 ईसवी के बीच इस कमीशन ने व्यापारिक अनियमितताओं के आधार पर सात सौ अट्ठासी मुकदमे चलाये। इसके साथ-साथ अक्टूबर, 1914 ईसवी में कांग्रेस ने क्लेटन न्यास-विरोधी अधिनियम (Clayton Anti Trust Act) पास किया जिसका उद्देश्य शरमन अधिनियम की कमियों को दूर करना था। इसके द्वारा व्यापार में गलत प्रणालियों के प्रचलन को रोकने का प्रयत्न किया गया। इस अधिनियम की दो धाराएँ विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण थीं। छठी धारा के अनुसार मजदूर संघों को न्यास विरोधी नियमों से मुक्त कर दिया और बीसवीं धारा से हड़ताल को संघीय कानूनों के विरुद्ध नहीं मान गया। रूजवेल्ट प्रशासन की भांति विल्सन के समय में भी न्यास विरोधी कार्यक्रम चलता रहा और उसके आठ वर्ष के काल में बानवें न्यासों के विरुद्ध कदम उठाये गये।

(iv) नाविक अधिनियम - यद्यपि 1914 ईसवी के मध्यवर्ती चुनावों में डेमोक्रेटिक दल का बहुमत हो गया था, परन्तु फिर भी विल्सन सुधार के मार्ग से नहीं हटा। 1915 ईसवी में नाविक अधिनियम (Seamen's Act) बनाया गया जिसका मुख्य श्रेय सीनेट के सदस्य ला फालेट को था। इससे नाविकों को रहने और खाने की अधिक सुविधाएँ दी गई और उनकी कार्यव्यवस्था में भी काफी सुधार किया गया।

(v) कृषकों की दशा में सुधार- कृषकों की दशा को सुधारने के लिए विल्सन ने कई कदम उठाये। 1914 ईसवी में स्मिथ-लोवर अधिनियम (Smith Lover Act) के द्वारा राज्यों को कृषि विकास कार्य के लिए संघ द्वारा धन की सहायता देना शुरू हुआ। यह कार्य संघीय कृषि विभाग और राज्यों के कृषि महाविद्यालयों की संयुक्त देखरेख में किये जाने थे। 1916 ईसवी में संघीय फार्म ऋण अधिनियम (Federal Farm Loan Act) पास किया गया जिसके द्वारा छः प्रतिशत ब्याज पर कृषकों को धन उधार दिया जा सके। कोषसचिव के अतिरिक्त इसमें चार और सदस्य थे। 1916 ईसवी में एडम्सन अधिनियम (Adamson Act) पारित किया गया। यह अधिनियम रेलवे के चार कर्मचारी संघों की संयुक्त माँग पर बनाना पड़ा। संघों ने माँग स्वीकार नहीं किये जाने पर हड़ताल करने की धमकी दी थी। इस पर विल्सन ने यह मामला अपने हाथ में ले लिया। उसने कांग्रेस को बतलाया कि यदि कर्मचारी की माँग स्वीकार नहीं की गई तो लगभग चार लाख रेलवे कर्मचारी हड़ताल पर चले जायेंगे और देश के व्यापार को बहुत धक्का पहुँचेगा। राष्ट्रपति के हस्तक्षेप पर एडमसन अधिनियम बनाया गया जिसके अनुसार कर्मचारियों को दिन में आठ घंटे काम करना तय हुआ। इस प्रकार कर्मचारी संघों ने धमकी के द्वारा अपनी माँगें स्वीकार करा ली।

(vi) श्रमिकों की दशा में सुधार - 1915 ईसवी में बच्चों द्वारा मजदूरी किये जाने पर रोक लगाई गई । इस उद्‌देश्य से कीटिंग-ओवन अधिनियम (Keating-Owen Act) बनाया गया।

(vii) विल्सन के सुधारों का मूल्यांकन -'नई स्वतन्त्रता' के कार्यक्रम के अन्तर्गत 1913 और 1915 के मध्य जितने सुधार कानूनों में परिणित किये गये वे सभी पुराने प्रश्नों पर आधारित थे, जैसे तटकर सम्बन्धी या मुद्रा एवं बैंकिंग व्यवसाय में सुधार। यह कहा जा सकता है कि वह बहुत अंशों तक अपने उद्देश्यों में सफल रहा। लेकिन वह उग्र प्रगतिशीलवादियों को प्रसन्न नहीं कर सका।

इसके अतिरिक्त 'नई स्वतन्त्रता' के कार्यक्रम की अपनी सीमाएँ थीं। इसमें महिलाओं के मताधिकार को प्रोत्साहित नहीं किया गया था। विल्सन की नई स्वतन्त्रता नीग्रो लोगों के प्रश्न पर भी मौन रही। प्रथम विश्व युद्ध के आरम्भ होने के पश्चात् उसकी गति धीमी पड़ गई थी तथा विलसन अपने सभी चुनावी वायदों को पूरा नहीं कर सका। यद्यपि उसके द्वारा किए गए सुधारों ने बड़े उद्योगों पर संघ व राज्यों की सरकार का नियन्त्रण स्थापित करने की दिशा में ठोस कदम उठाये थे लेकिन वे बड़े न्यासों के अधिकारों का अंत नहीं कर सके।

पार्केस के अनुसार विल्सन व उसके समर्थक, अमेरिका की राजनीतिक व आर्थिक व्यवस्था में आमूल परिवर्तन नहीं कर सके, उनका यह उद्देश्य भी नहीं था, किन्तु इससे देश में एक नवीन दृष्टिकोण पनपा। राजनैतिक एवं व्यापार व व्यवसाय के क्षेत्रों के नेताओं ने जनता की सहमति प्राप्त करने को, पहले की अपेक्षा अधिक महत्त्व दिया। वे यह मानने लगे कि प्रगतिशील सुधारों को प्रभावशाली बनाने की दिशा में मतदाताओं को उनके बारे में शिक्षित करना आवश्यक हैं। प्रबुद्धीकरण एवं लोकमत का महत्त्व अब अमेरिकी जीवन का महत्त्वपूर्ण अंग बन गया।

V. 1920 ईसवी का चुनाव :

1920 ईसवी में जब यूरोप में युद्ध समाप्त होकर शान्ति स्थापित हो गई थी। उस समय अमेरिका में राष्ट्रपति चुनाव के लिए तैयारियाँ हो रही थीं। डेमोक्रेटिक दल ने विल्सन के स्थान पर ओहियो के भूतपर्व गवर्नर जेम्स कोक्स (James Cox)को मनोनीत किया। रिपब्लिकन दल ने कुछ वाद-विवाद के बाद वारेन हार्डिंग (Warren Hardinge) को नामांकित किया। रिपब्लिकन दल ने विल्सन की आन्तरिक और विदेशी नीति की कड़ी आलोचना की और चुनाव जीतने में सफल हो गये। हार्डिंग को कोक्स की तुलना में जनता के लगभग सत्तर लाख मत वोट ज्यादा मिले। सिनेट और हाउस में भी रिपब्लिकन दल का बहुमत बन गया। डेमोक्रेटिक दल के एक सदस्य ने कहा कि यह चुनाव एक भूकम्प के समान था।

VI. हार्डिंग का प्रशासन :

(1) हार्डिंग का व्यक्तित्व - रिपब्लिकन दल के नेताओं ने हार्डिंग को उसके गुणों के कारण नहीं, परन्तु इस कारण चुना था कि वह उनके हाथ में कठपुतली बन कर रह सके। नया राष्ट्रपति विल्सन के समान योग्य और दृढ़ निश्चय का व्यक्ति नहीं था। व्यक्तिगत रूप से वह उदार

हृदय था परन्तु स्थिति को ठीक समझने की योग्यता उसमें नहीं थी। इसके अतिरिक्त वह अपने मित्रों पर आवश्यकता से अधिक विश्वास करता था, लेकिन मित्रों ने उसे सबसे ज्यादा धोखा दिया। हार्डिंग को राजनीति का भी अधिक अनुभव नहीं था, क्योंकि उसने अपना अधिकांश समय एक स्थानीय समाचार पत्र के सम्पादक के रूप में व्यतीत किया था। उसके मित्र डागरटी (Daugherty) ने उसे राजनीति में प्रवेश कराया और 1914 ईसवी में वह सीनेट का सदस्य बना। प्रथम महायुद्ध के उपरान्त अमेरिका की जनता एक बार फिर अपना सामान्य जीवन चाहती थी। यद्यपि मध्य-पश्चिमी राज्यों के कुछ सीनेटर सुधार चाहते थे, परन्तु मुख्यत: प्रगतिवादी सुधार की लहर समाप्त हो गई थी। रूढ़िवादी रिपब्लिकन दल इस समय शक्तिशाली था और उसका उद्देश्य व्यापार को बढ़ावा देना और उसका अधिक प्रसार करना था। राष्ट्रपति स्वयं अमेरिका को युद्ध से पूर्व की स्थिति में लाना चाहता था, परन्तु वह कोई ठोस काम नहीं कर सका, क्योंकि वह अधिक समय आमोद-प्रमोद में व्यतीत करता था। अपने प्रशासन काल के अन्तिम दिनों में हार्डिंग ने स्वीकार किया कि उसके मित्र दुश्मनों से ज्यादा बुरे सिद्ध हुए।

(2) हार्डिंग के सहयोगी (1921-23 ईसवी) - अपने मन्त्रिमण्डल में हार्डिंग ने योग्य व्यक्तियों को रखा। चार्ल्स हयूज (Charles Hughes) को विदेश सचिव और एन्ड्रयू मैलन (Andrew Mellon) जो स्वयं बहुत धनवान था को वित्त सचिव बनाया। हर्बर्ट हूवर (Herbert Hoover) को वाणिज्य विभाग दिया गया। इन तीनों व्यक्तियों ने आगे चल कर अपने विभाग संचालन में काफी प्रतिभा दिखलाई। डोगरटी (Daugherty), फॉल (Fall), हेज (Hayes) को क्रमश: एटारनी जनरल (Attorney General), आन्तरिक सचिव और पोस्ट मास्टर जनरल के पद दिये गये।

(अ) हार्डिंग के सुधार - उसके शासन काल में कई क्षेत्रों में सुधार किये गये। देश में यह विचारधारा बन गई थी कि यदि व्यापार की उन्नति होगी और अधिक मात्रा में सामान बनाया जायेगा तो बेरोजगारी कम होगी और सभी वर्गों में आर्थिक सम्पन्नता लाना सम्भव होगा। इस नीति पर चलते हुए न्यास विरोधी कार्य बन्द कर दिये गये और शरमन तथा क्लेटन अधिनियमों का प्रयोग नहीं किया गया। वाणिज्य विभाग में हूवर ने व्यापारिक अनियमितताओं को रोकने का प्रयत्न किया। इसी प्रकार वित्त सचिव मैनल ने युद्ध के बाद साधारण नागरिक के आर्थिक भार को कम करने के लिए करों की दर में कमी करने का प्रस्ताव रखा। कांग्रेस ने 1921 और 1924 ईसवी में राजस्व अधिनियम पास किये जिससे करों का भार कम हुआ परन्तु इस कमी के बाद भी सरकार की आमदनी बढ़ती गई। 1922 ईसवी में फोर्डने-मेकम्बर प्रशुल्क अधिनियम (Fordney -Mc Cumber Tariff Act) के द्वारा प्रशुल्क की दरें फिर बढ़ा दी गई जिससे ऐसे व्यापारी वर्ग में असन्तोष पैदा हुआ जो विदेशों से व्यापार करते थे। सरकार के खर्चे में कमी करने के लिए 1921 ईसवी में बजट और अकाउन्टिंग अधिनियम (Buduget and Accounting Act) पारित किया गया और चार्ल्स डावेस (Charles Dawes) को सरकार के खर्च में बचत करने का काम सौंपा गया।

महायुद्ध के समय रेल कम्पनियों का प्रशासन सरकार ने अपने हाथ में ले लिया था। 1920 ईसवी में इश-कमिन्स अधिनियम (Esch-Cummins Act) के अनुसार रेलों का प्रशासन निजी कम्पनियों को वापस दे दिया गया। परन्तु अब अन्तर्राज्यीय वाणिज्य आयोग (Inter State Commerce Commission) को रेल दरें निश्चित करती थी। 1920 ईसवी में मरचेन्ट मैरीन एक्ट (Merchant Marine Act) के द्वारा सरकार ने कई व्यापारी जहाज निजी कम्पनियों को बचने का निश्चय किया। इनमें से बहुत से जहाज अच्छी दशा में नहीं थे जिसके कारण माल भेजने का काम इनसे ठीक रूप से नहीं लिया जा सका। हार्डिंग के समय में संघीय शक्ति आयोग (Federal Power Commission) स्थापित किया गया, जिसके द्वारा न्यासों को बिजली उत्पादन करने की मशीनें लगाने के अधिकार दिये गये। 1922 ईसवी में केपर-वोल्सटेड अधिनियम (Copper-Volstead Act) द्वारा सहकारी समितियों को न्यास विरोधी नियमों से मुक्त कर दिया। एक अन्य अधिनियम द्वारा कृषकों को सहायता देने के लिए नये बैंक स्थापित किये गये। पिछले कुछ वर्षों से आप्रवासियों की समस्या गम्भीर रूप धारण कर रही थी। उनकी संख्या को रोकने के लिए 1921 ईसवी में एमरजेन्सी कोटा अधिनियम (Emergency Quota Act) बनाया गया जिसके अनुसार साढ़े तीन लाख से अधिक विदेशी प्रवासी किसी एक वर्ष से अमेरिका में नहीं आ सकते थे।

हार्डिंग के समय में नशाबन्दी नियमों का पालन कराने का भी प्रयत्न किय गया, परन्तु बड़े शहरों में इन नियमों को व्यवहार में लाना कठिन साबित हुआ। मदिरा के अधिक प्रचलन के साथ-साथ गुण्डागर्दी भी देश में काफी बढ़ गई और बदमाशों के बड़े-बड़े दल चोरी छिपे शराब बेचने का कार्य करने लगे। इन्हें रोकने का कोई विशेष प्रयत्न नहीं किया गया।

(ब) हार्डिंग के समय में भ्रष्टाचार -हार्डिंग के प्रशासन काल में बहुत भ्रष्टाचार रहा। पेट्रोल को लेकर एक बड़ा कलंक सामने आया। 1912 ईसवी में जल सेना की संकटकालीन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए टैफ्ट ने एल्क हिल्स (Elk Hills) और विल्सन टीपाट डोम (Teapot Dom) के स्थानों पर पेट्रोल अभिरक्षित क्षेत्र स्थापित किये थे, परन्तु मई, 1921 ईसवी में यह दोनों अभिरक्षित स्थान जल सेना विभाग के अधिकार से लेकर आन्तरिक विभाग के अधीन कर दिये गये। कुछ ही समय पश्चात् ला फालेट और कुछ अन्य प्रगतिवादी सीनेटरों ने इन परिवर्तनों के विरुद्ध आरोप लगाये। 1923 ईसवी में वाल्श (Walsh) की अध्यक्षता में एक जाँच कमेटी बनाई गई, जिसने यह पाया कि आन्तरिक सचिव फाल (Fall) और जल सेना सचिव डेन्बी (Danby) ने इस स्थानान्तरण में भारी रिश्वत ली थी इससे प्रशासन की बड़ी बदनामी हुई। इसी प्रकार न्यास विभाग के एटार्नी जनरल डागरटी के विरुद्ध भ्रष्टाचार का मुकदमा चलाया गया। वेटरन्स ब्यूरो (Veteran's Bureau) के अध्यक्ष फारब्स (Farbes) के अनुचित कार्य की भी जाँच की गई। अगस्त 1923 ईसवी में होर्डिंग की मृत्यु हो गई। उसकी मृत्यु के बाद उस काल के और बहुत से भेद खुले जिनके कारण उसकी प्रतिष्ठा को काफी धक्का पहुँचा।

VIII. काल्विन कूलिज का प्रशासन (1923-29 ईसवी) :

(1) काल्विन कूलिज का व्यक्तित्व व अनुभव - संविधान के अनुसार उपराष्ट्रपति काल्विन कूलिज राष्ट्रपति बना। वर्मान्ट (Vermont) के एक प्यूरिटन परिवार में जन्म लेकर वह नार्थम्पटन में बस गया जहाँ उसने कानून का अध्ययन किया। रिपब्लिकन दल की नीतियों में सहयोग देने के कारण वह पार्टी के नेताओं का प्रिय हो गया और शीघ्र ही उसने स्थानीय और राज्यीय स्तर की राजनीति में अपना अच्छा स्थान बना लिया। 1919 में वह मैसाचुसेट्स राज्य का गवर्नर बन गया। उसी वर्ष इस राज्य के बोस्टन नगर में पुलिस हड़ताल हुई। हड़ताल के टूटने पर उसने यह स्पष्ट कर दिया कि किसी को जन सुरक्षा के विरुद्ध हड़ताल करने का अधिकार नहीं था। इस एक वाक्य से कूलिज की लोकप्रियता बढ़ गई। वह रूढ़िवादी विचारों का था और कठोर परिश्रम में विश्वास करता था। यद्यपि उसमें रूजवेल्ट जैसे उत्साह और हार्डिंग जैसी उदारता की कमी थी, परन्तु भ्रष्टाचार को कम करने में उसके प्रयत्नों ने अमेरिका के जनमानस पर बहुत अनुकूल प्रभाव डाला।

(2) 1924 ईसवी का चुनाव एवं कूलिज की विजय - हार्डिंग के बचे हुए लगभग डेढ़ वर्ष की अवधि में ही कूलिज ने सुधार करने का प्रयत्न किया। राष्ट्रपति निवास में हार्डिंग के अवांछनीय मित्रों का आना बहुत कम हो गया। जब 1924 ईसवी में चुनाव का समय आया तो बिना किसी कठिनाई के रिपब्लिकन दल ने कूलिज का नाम स्वीकार कर लिया। जान डेविस (John Davis) जो न्यू यार्क का एक वकील था, उपराष्ट्रपति पद के लिए नामांकित किया गया। पुराने प्रगतिवादी इन दोनों से ज्यादा सुधारों की आशा नहीं करते थे और उन्होंने कुछ मजदूर और किसान समूहों से मिल कर एक नया दल बनाया जो प्रगतिवादी दल (Progressive Party) के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इसका अध्यक्ष ला फालेट था। इस दल ने भी चुनाव लड़ा परन्तु कूलिज और डेविस बहुमत से विजयी हुए।

(3) 1923-24 ईसवी में कूलिज प्रशासन के सुधार - समय-समय पर कांग्रेस को भेजे गये सन्देशों से कूलिज प्रशासन की नीतियाँ स्पष्ट होती हैं। दिसम्बर, 1923 ईसवी में कांग्रेस को अपने पहले सन्देश में कूलिज ने यह कहा कि आन्तरिक और विदेश नीति में कोई विशेष परिवर्तन नहीं किया जायेगा। उसने कर की दरों में कमी और कृषि के लिए सीमित सरकारी सहायता का भी संकेत दिया था। हार्डिंग के समय के भ्रष्टाचार कांड भी अब धीरे-धीरे खुलने लगे थे और इनमें लिस आन्तरिक सचिव फाल को सजा हुई और अटारनी जनरल डागरटी को इस्तीफा देने पर मजबूर किया गया। मार्च, 1925 ईसवी में अपने नये सन्देश में राष्ट्रपति ने कहा कि देश ने सन्तुष्टि की स्थित प्राप्त कर ली थी और उसे यथावत बनाये रखना उसका प्रमुख उद्देश्य था। इस प्रकार कूलिज अनुदारवादी नीति पर चलता रहा। 1924 ईसवी में जब कांग्रेस ने वेटर्नस् बोनस विधेयक (Veteran's Bonus Bill) पास किया तो कूलिज ने उसे वीटो कर दिया, परन्तु उसके निषेधाधिकार के बावजूद कांग्रेस ने इसे दुबारा पारित कर दिया। हार्डिंग के समय में सामान्य नागरिक पर कर की दर कम कर दी गई थी यद्यपि वित्त सचिव मैलन धनवानों को और

बड़े-बड़े न्यासों को भी यह सुविधा देना चाहता था। मैलन की योजना कूलिज के समय सफल हुई। 1924 ईसवी में आप्रवासी कोटा अधिनियम (Immigration Quota Act) पास हुआ जिसमें आप्रवासियों की संख्या और भी कम कर दी गई।

अपना अनुदारवादी कार्यक्रम सुरक्षित रखने के लिए कूलिज ने सर्वोच्च न्यायालय में ऐसे न्यायाधीशों को नियुक्ति दी जो उसके विचारों का समर्थन करते थे। इसी प्रकार का एक न्यायाधीश हारलन स्टोन (Harlan Stone) था। कूलिज को यह आशा थी कि स्टोन के दिये गये फैसले सरकार के पक्ष में होंगे परन्तु स्टोन ने न्यायाधीश बनने के बाद निष्पक्ष दृष्टिकोण अपना लिया जिससे राष्ट्रपति और उसके सहयोगियों को बहुत अचम्भा हुआ।

(4) 1924-1928 ईसवी के सुधार- कूलिज का प्रशासन काल अमेरिका के इतिहास में आर्थिक सम्पन्नता का युग कहा जाता है। कृषि को छोड़ कर और प्रत्येक क्षेत्र में उन्नति हुई। कृषि सम्बन्धी कार्यों में कूलिज कोई क्रान्तिकारी सुधार करना नहीं चाहता था। कृषकों की स्थिति सुधारने की दिशा में कांग्रेस द्वारा प्रस्तावित मैकनरी-हागेन (Mcnary – Haughen Bill) विधेयक को उसने अपने निषेधाधिकार का प्रयोग कर दिया जिससे यह वर्ग उससे अप्रसन्न हो गया। कोयले और कपड़े के उत्पादन में काफी प्रगति हुई। सरकार की आर्थिक स्थिति को मजबूत करने की दिशा में प्रशासन के खर्चों को भी कूलिज ने कम करने का प्रयत्न किया। यद्यपि कूलिज बहुत योग्य राष्ट्रपति नहीं माना जा सकता, परन्तु उसके समय में अमेरिका में धन धान्य की प्रचुरता अवश्य हो गई थी।

IX. 1928 ईसवी का चुनाव

1928 ईसवी के चुनाव से कुछ ही समय पहिले कूलिज ने घोषित कर दिया था कि वह अगले राष्ट्रपति चुनाव में नामांकित होना नहीं चाहता था। इस कारण रिपब्लिकन दल ने वाणिज्य सचिव हर्बर्ट हूवर को राष्ट्रपति पद के लिए और उसके साथ कैनसास के चार्ल्स कर्टिस (Charles Curtis) को राष्ट्रपति पद के लिए नामांकित किया। अपने दल के चुनाव कार्यक्रम को स्पष्ट करते हुए रिपब्लिकनों ने कूलिज के समय की आन्तरिक और बाह्य क्षेत्र में उपलब्धियों पर प्रकाश डाला और कृषकों की स्थिति को सुधारने का वचन दिया। डेमोक्रेटिक दल ने न्यू यार्क के गवर्नर स्मिथ (Smith) को अपना उम्मीदवार बनाया। इस चुनाव में स्मिथ को सिर्फ आठ राज्यों का समर्थन मिला और हूवर लगभग छः लाख वोटों से विजयी घोषित कर दिया गया।

X. हूवर का प्रशासन (1929-1933 ईसवी)

हूवर का व्यक्तित्व - हूवर का जन्म आयओवा (Iowa) राज्य में हुआ था और उसने अपनी शिक्षा स्टानफोर्ड (Stanford) विश्वविद्यालय में प्राप्त की थी। खानों के इन्जीनियर के रूप में उसने काफी धन अर्जित किया। प्रथम विश्व युद्ध के समय वह बैल्जियम-सहायता संस्थान का अध्यक्ष था और हार्डिंग तथा कूलिज के समय लगभग आठ वर्ष तक वह वाणिज्य विभाग का सचिव रहा। हूवर ने अपना कार्यभार बहुत अनुकूल परिस्थितियों में सम्भाला था। देश में धन सम्पन्नता थी और कांग्रेस में रिपब्लिकन दल का बहुमत था। उसने पुराने सचिवों में से मैलन और

डेविस को क्रमशः वित्त और श्रमिक-विभागों में रखा। स्टिमसन (Stimson) को राज्य सचिव नियुक्त किया गया। इन सचिवों की तुलना में उसके मंत्रिमंडल के अन्य सदस्य साधारण योग्यता के थे। इस प्रकार राजनैतिक और आर्थिक वातावरण हूवर के अनुकूल प्रतीत हुआ, परन्तु कुछ परिस्थितियाँ पैदा हो रही थीं जिन्होंने अमेरिका में भयंकर आर्थिक संकट पैदा कर दिया। हूवर का सारा शासन काल इसी संकट से संघर्ष करने में व्यतीत हुआ।

(i) कृषि सुधार - पदासीन होने के बाद हूवर ने कांग्रेस के एक विशेष अधिवेशन में कृषि सुधार के प्रस्ताव रखे। इस दिशा में जून, 1929 ईसवी में एग्रीकल्चर मारकेटिंग अधिनियम (Agricultural Marketing Act) पास किया गया। इसके अनुसार पचास करोड़ डालर राशि संघीय फार्म बोर्ड (Federal Farm Board) द्वारा सहकारी समितियों को निर्धारित की गई जिससे अनाज और रूई के अति उत्पादन को नियंत्रित किया जा सके। हूवर यों तो आर्थिक व्यक्तिवाद में विश्वास करता था, परन्तु अब उसके विपरीत सहकारी समितियों द्वारा कृषि की अति उत्पादित वस्तुओं की रक्षा करने की चेष्टा कर रहा था।

(ii) प्रशुल्क दरों में परिवर्तन - अगले वर्ष हाले-स्मूट प्रशुल्क अधिनियम (Hawley-Smoot Tariff Act) द्वारा काफी वस्तुओं पर प्रशुल्क दरें बढ़ा दी गईं। इस अधिनियम से पूँजीपति ही लाभान्वित हुए। इस विधयेक पर कांग्रेस में बड़ा वाद-विवाद हुआ और सीनेट में तो यह सिर्फ दो अधिक वोटों से ही पारित हो सका। प्रशुल्क दरों का बढ़ाना हूवर द्वारा चुनाव के समय दिये गये वचन का उल्लंघन था और इसके कारण कृषि प्रधान राज्यों के प्रगतिशील सीनेटरों से भी हूवर का विरोध बहुत बढ़ गया। अमेरिका के अधिकांश अर्थशास्त्रियों ने राष्ट्रपति को एक आवेदन पत्र में इस बिल के वीटो करने के लिए कहा, परन्तु हूवर ने इसे स्वीकार नहीं किया। इस अधिनियम के परिणामस्वरूप विदेशों में भी अमेरिका से आने वाले सामान पर प्रशुल्क दरें बढ़ा दी गई जिसके कारण अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार को बहुत धक्का लगा। वास्तव में, प्रथम विश्व युद्ध के बाद रिपब्लिकन दल की आर्थिक नीति बड़े उद्योगपतियों की ओर झुकी हुई थी। वे फिर व्यापार में अनुचित प्रणालियों का उपयोग करने लगे जिन्हें रोकने का कोई प्रयत्न नहीं किया गया। परिणामस्वरूप धनी और अधिक धनवान हो गये और गरीबों की स्थिति बिगड़ती गई। बाह्य रूप से देखने में देश में हर तरफ सम्पन्नता दिखाई देती, परन्तु आर्थिक ढाँचा वास्तव में कमजोर होता जा रहा था।

(iii) औद्योगिक उत्पादन में वृद्धि - 1920 ईसवी के बाद अमेरिका के औद्योगिक उत्पादन में अति तीव्रता आई। नये आविष्कारों, नयी कार्यविधियों और शक्ति के नये साधनों ने मिल कर उत्पादन के क्रम को बहुत तेज कर दिया। 1922 ईसवी के बाद जब देश की जनसंख्या सिर्फ 11 प्रतिशत ही बढ़ी, राष्ट्र का धन 31 प्रतिशत बढ़ गया। उत्पादन के नये तरीकों के कारण अब खान-पान और कपड़ा उद्योग जैसे क्षेत्रों में कम मजदूरों की आवश्यकता पड़ने लगी। जीवन स्तर को ऊँचा करने वाली वस्तुएँ, जैसे कार, टेलीफोन और बिजली के उपकरणों की खरीद बहुत बढ़ने लगी, क्योंकि ये सब आसान किश्तों पर उपलब्ध थीं। फोर्ड और जनरल मोटर्स जैसी कम्पनियों ने बहुत बड़े पैमाने पर कारों का उत्पादन किया और कुशल निरीक्षण और प्रबन्ध के

कारण इन कारों के दामों में काफी कमी करना सम्भव हो सका। हूवर के समय में अमेरिका पहियों पर चलने वाला राष्ट्र बन गया। वास्तव में विज्ञान की प्रगति ने अमेरिकियों के दैनिक जीवन में क्रान्ति पैदा कर दी। 1912 और 1930 ईसवी के बीच बिजली का उत्पादन लगभग छः सौ प्रतिशत बढ़ा। 1880 ईसवी के बाद चलचित्रों का चलन भी धीरे-धीरे जोर पकड़ने लगा। 1927 ईसवी में अमेरिका में लगभग सात सौ बत्तीस रेडिया स्टेशन थे। 1920 ईसवी के बाद हवाई जहाजों का उपयोग भी अधिक संख्या में होने लगा और एक स्थान से दूसरे स्थान पर सामान भेजना बहुत सुगम हो गया। इन सब परिवर्तनों के कारण यन्त्रों के उत्पादन में वृद्धि हुई और एक सामान्य नागरिक का जीवन स्तर ऊँचा होता प्रतीत हुआ। इस प्रकार 1920 से 1930 ईसवी तक के समय को द्वितीय औद्योगिक क्रान्ति कहा जा सकता है। जन साधारण में भी यह विचार समा गया कि अमेरिका एक ऐसे नये युग में प्रवेश कर रहा था जिसमें स्थायी सम्पन्नता होगी।

(iv) आर्थिक मन्दी – हूवर के शासन काल में अमेरिका को आर्थिक मंदी का सामना करना पड़ा जो शीघ्र ही विश्वव्यापी हो गई। अपने विचारों के आधार पर हूवर ने आर्थिक संकट से उत्पन्न समस्याओं को सुलझाने का प्रयत्न किया, किन्तु वह सफल नहीं हुआ। 1932 ईसवी के चुनाव में उसके स्थान पर डेमोक्रेटिक दल का प्रत्याशी फ्रेंकलिन डी. रूजवेल्ट राष्ट्रपति चुना गया। आर्थिक मंदी के कारणों तथा हूवर द्वारा किये गये उपायों का वर्णन अगले अध्याय में किया गया है।



अध्याय-18

आर्थिक मन्दी व न्यू डील

☐ बी.एस. माथुर व सी.एम. जैन

I. आर्थिक मंदी के कारण :

1920-30 ईसवी में अमेरिका को एक महान आर्थिक संकट का सामना करना पड़ा। वास्तव में देश की अर्थ-व्यवस्था में कुछ ऐसे दोष थे जिनके कारण उसे एक भयंकर आर्थिक मंदी का सामना करना पड़ा । इनके अतिरिक्त यूरोप के देशों से सम्बन्धित कुछ ऐसी परिस्थितियाँ भी थीं जिन्होंने अमेरिका की अर्थ व्यवस्था पर विपरीत प्रभाव डाला ।

(1) प्रथम विश्व युद्ध से उत्पन्न परिस्थितियाँ -अनेक अर्थशास्त्रियों की यह मान्यता है कि प्रथम विश्व युद्ध से उत्पन्न परिस्थितियाँ इस आर्थिक मंदी का एक कारण थीं। प्राय: युद्ध के पश्चात् ऐसी परिस्थिति उत्पन्न हो जाती है, जिससे आर्थिक संकट उत्पन्न होता है। ऐसा क्यों होता है? इसके उत्तर में जे.बी.कांडलिफ ने अपनी पुस्तक 'कोड्स आफ फेयर कम्पिटीशन' (Codes of Fair Competition) में लिखा है, "युद्ध काल में सैनिक सामग्री की माँग बढ़ जाने से उद्योग का असाधारण विस्तार होता है। सैनिकों की असाधारण भर्ती के कारण मजदूरों की कमी हो जाती है। अत: रोजगार, मजदूरी और लाभ की दर भी बढ़ जाती है। युद्ध की समाप्ति के बाद कुछ समय तक तो यह अभिवृद्धि बनी रहती है, किन्तु उसके बाद मंदी आ जाती है।" प्रथम महायुद्ध के पश्चात् यही घटनाक्रम चला और सम्पूर्ण विश्व इस मन्दी की चपेट में आ गया। एडविन एफ.गे (Edwin F. Gay) के मत में विश्वव्यापी मंदी के कारणों का विश्व युद्ध से घनिष्ठ सम्बन्ध है।

(2) औद्योगिक वस्तुओं व कृषि उपजों का अति उत्पादन - इसके कारण भी 1929-30 ईसवी की आर्थिक मंदी आयी। युद्ध काल की अतिरिक्त माँग की पूर्ति के लिये कृषि व औद्योगिक क्षेत्र में उत्पादन बढ़ाया गया। साथ ही इनके मूल्यों में भी वृद्धि हुई। युद्ध के समय विशेषकर अमेरिका और जापान में बड़े-बड़े कारखाने खुले थे जिनकी उत्पादन शक्ति बहुत अधिक थी। युद्ध के बाद वस्तुओं का उत्पादन उसी रफ्तार से होता रहा जिस रफ्तार से युद्ध के समय में हुआ था। पर इन वस्तुओं के खरीदने वाले कम हो गये थे। वस्तुओं से बाजार भरा पड़ा था, किन्तु खरीददारों में क्रय शक्ति नहीं थी। ऐसी परिस्थितियों में आर्थिक मन्दी का आना स्वाभाविक था।

(3) स्वर्ण का विषम विभाजन - युद्ध के बाद संसार का बहुत अधिक सोना अमेरिका में एकत्रित होने लगा था। प्रथम विश्व युद्ध के आरम्भ तक अमेरिका की व्यावसायिक प्रगति अपनी

चरम सीमा पर पहुँच चुकी थी। अमेरिका आरम्भ से इस युद्ध में सम्मिलित नहीं हुआ और वह अपना उत्पादित माल व अस्त्र-शस्त्र मित्र राष्ट्रों को कर्ज के रूप में देता रहा। युद्ध में सम्मिलित होने के बाद भी यह प्रक्रिया चलती रही। युद्ध के बाद मित्र राष्ट्रों को जो कर्ज अमेरिका ने दिया था वह पाँच हजार करोड़ डालर से भी अधिक था। इस रकम का भुगतान उसने मित्र राष्ट्रों से सोने के रूप में वसूल किया। इसके अतिरिक्त उस समय फ्रांस ने भी जर्मनी से क्षतिपूर्ति सोने के रूप में वसूल की। अतएव इन दोनों देशों के पास उस समय संसार का लगभग साठ प्रतिशत सोना था। लेकिन अन्य देशों के पास सोने की कमी हो गई। फलतः वहाँ के सिक्कों की कीमत बढ़ गई और वस्तुओं के मूल्य गिर गये। इससे अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार पर बुरा असर पड़ा और 1929 ईसवी में आर्थिक संकट उत्पन्न हुआ।

(4) संकुचित आर्थिक राष्ट्रीयता – पूँजीवादी व्यवस्था में एक देश दूसरे देश को कुचल कर आगे बढ़ने का प्रयत्न करता रहता था। प्रत्येक राष्ट्र अपनी आवश्यकता की अधिकांश वस्तुएँ बाहर से न मँगा कर स्वयं अपने देश में बनाता है। वह विदेशों से आने वाले माल पर उच्च सीमा शुल्क लगाता है, आयात की मात्रा निश्चित करता है और विदेशी राष्ट्रों के प्रति आर्थिक पक्षपात की नीति अपनाता है। युद्ध के बाद ग्रेट ब्रिटेन ने जो कि मुक्त व्यापार का समर्थक था, अपने राष्ट्रीय उद्योगों की सुरक्षा की दृष्टि से संरक्षता की नीति अपनाई। एशिया में स्वदेशी आन्दोलन, रूस में बोल्शेविक क्रांति तथा यूरोप में नव-स्थापित राज्यों की संरक्षता नीति के कारण पश्चिमी यूरोप के हाथ से एक बड़ा बाजार निकल गया। इस प्रकार संकुचित आर्थिक राष्ट्रीयता की भावना से प्रेरित होकर जो नीतियाँ अपनाई गईं उसके फलस्वरूप अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार और भी संकुचित हो गया। इसका प्रभाव उन देशों के लिये अहितकर सिद्ध हुआ, जिनको युद्ध ऋण अथवा क्षतिपूर्ति का भुगतान करने के लिए अनुकूल व्यापार-अन्तर (Balance of Trade) की अत्यन्त आवश्यकता थी।

(5) उपभोग में कमी – 1900 से 1929 ईसवी के बीच की अवधि में मजदूरी की तुलना में लाभ में बहुत अधिक वृद्धि हुई थी जिससे बचत तथा उपभोग के बीच का अन्तर बहुत बढ़ गया था। इस अवधि में राष्ट्रीय आय में अनुमानतः चार गुणा वृद्धि हुई थी, किन्तु राष्ट्रीय आय में इस असाधारण वृद्धि के फलस्वरूप जनता की क्रय शक्ति में तीव्र वृद्धि न होने से आर्थिक संकट का उत्पन्न होना स्वाभाविक था।

(6) यूरोपीय आर्थिक व्यवस्था की निर्बलता – इस समय यान्त्रिक उत्पादन में यूरोप का एकाधिकार लगभग समाप्त हो चुका था। युद्ध काल की कठिनाइयों के कारण जापान, भारत और ब्रिटिश राष्ट्रमंडल के देशों ने फ्रांस, जर्मनी, इंग्लैण्ड आदि यूरोपीय देशों से माल खरीदने के स्थान पर स्वयं अपनी आवश्यकता की बहुत-सी वस्तुएँ बनाने लग गये थे। इस समय कनाडा व रूस आदि देश इतना सस्ता अनाज पैदा कर रहे थे कि यूरोप के कृषि प्रधान देश मूल्यों में इनका मुकाबला नहीं कर सकते थे। यूरोप के देशों की दूसरी आर्थिक दुर्बलता यह थी कि उस समय वे ऋण लेकर अपना काम चला रहे थे, इनमें जर्मनी प्रमुख था। उसने अपना अधिकांश ऋण

अमेरिका से लिया था। अक्टूबर, 1929 ईसवी में न्यूयार्क के बैंकों का दिवाला निकल जाने से जर्मनी व अन्य यूरोपीय देशों को अमेरिका से ऋण मिलना बंद हो गया।

(7) यन्त्र जनित बेरोजगारी - विश्व युद्ध के बाद उत्पादन के प्रत्येक क्षेत्र में नये-नये यन्त्रों के उपयोग की होड़-सी लग गई। इन यन्त्रों के अपनाने के कारण अब एक-एक यन्त्र पाँच सौ व्यक्तियों या उससे भी अधिक के बराबर काम करता था। इसे बेकारों की संख्या में वृद्धि हुई तथा उनकी क्रय शक्ति कम हो गई, जिससे प्रभावोत्पादक माँग में कमी हो गई।

(8) सट्टेबाजी की बढ़ती हुई प्रवृत्ति - अक्टूबर, 1929 ईसवी में अमेरिका के मुद्रा बाजार में सट्टेबाजी का एक तीव्र दौर आया जिसने आम अमेरिकन पूँजीपति का ध्यान आकर्षित किया। इसके फलस्वरूप अमेरिका के धन कुबेर भी यूरोप को ऋण देने के बजाय अपने ही देश में पूँजी लगाने लगे। यूरोप, जो इस समय अमेरिका से लिये गये ऋणों के आधार पर टिका हुआ था, सहसा अधारहीन हो गया। फाकनर ने अमेरिका में सट्टेबाजी की बढ़ती हुई प्रवृत्ति को भी आर्थिक मंदी का एक कारण माना है। उनके अनुसार शुरू में सट्टेबाजी करने वालों को बहुत लाभ हुआ, अतः शेयरों में प्रतिद्वन्द्विता आरम्भ हो गई। करीब दस लाख लोग इसमें प्रवेश कर गये। फलस्वरूप जनवरी, 1925 ईसवी तथा अक्टूबर, 1929 ईसवी की अवधि में न्यू यार्क स्टाक एक्सचेंज में अंशों की संख्या 44.34 करोड़ से बढ़ कर एक सौ करोड़ हो गई। अंश अपने अंकित मूल्य से बीस गुना अधिक मूल्य पर बिक रहे थे। साधारण जनता इसे समृद्धि का प्रतीक मान रही थी, किन्तु यह चरम सीमा थी। 29 अक्टूबर, 1929 ईसवी को शेयर बाजार में गिरावट आरम्भ हो गई तथा आर्थिक संकट आरम्भ हो गया।

(9) न्यासों द्वारा देश की अर्थ व्यवस्था पर नियन्त्रण– गृह युद्ध के पश्चात् अमेरिका में कुछ बड़े-बड़े न्यासों ने देश की अर्थ व्यवस्था पर अपना एकाधिकार स्थापित कर लिया था। यद्यपि अनेक राष्ट्रपतियों ने ऐसे न्यासों पर नियन्त्रण स्थापित करने के लिए अधिनियम पारित किये थे परन्तु फिर भी 1929 ईसवी में देश में एक हजार तीन सौ उनचास ऐसे न्यास थे जो व्यापार का अस्सी प्रतिशत लाभ लेते थे जबकि शेष बीस प्रतिशत लाभ साढ़े चार लाख छोटे न्यासों को मिलता था। आर्थिक मन्दी आने पर प्रभावशाली न्यासों ने वस्तुओं के दाम कम करने के स्थान पर उत्पादन में कमी की, जिससे बेरोजगारी में और वृद्धि हुई।

(10) विभिन्न वर्गों में आर्थिक असमानता में वृद्धि – न्यासों के संगठन का उद्देश्य सिर्फ उद्योगपतियों को ही आर्थिक लाभ पहुँचाना था। यद्यपि प्रमुख उद्योगों में अन्य भागीदार भी काफी संख्या में होते थे, परन्तु उनको लाभ का कम अंश मिलता था। इस प्रकार धन का वितरण समान अनुपात में नहीं था। कुछ उद्योग अवश्य ऐसे थे जो मजदूरों को अच्छा वेतन देते थे परन्तु यह वेतन उनके लाभ की तुलना में बहुत कम था। इस कारण श्रमिक वर्ग की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं कही जा सकती थी। इसी प्रकार जनता के अन्य वर्गों को भी इस सम्पन्नता में कोई हिस्सा नहीं मिलता था। परिणामस्वरूप, एक तरफ धनवानों ने काफी मात्रा में धन कमाया। सामान्य व्यक्ति ऐसा नहीं कर सका जिससे वर्गों में आर्थिक असमानता बढ़ गई।

(11) जनता में ऋण लेने की प्रवृत्ति - सामाजिक स्तर को ऊँचा उठाने की दृष्टि से सामान्य व्यक्ति में ऋण लेने की एक नई प्रवृत्ति पैदा हो गई थी। ऋण लेकर सुविधा और विलासिता की वस्तुएँ खरीदना और इस ऋण को आसान किश्तों में चुकाना एक सामान्य बात हो गई । छोटे व्यापारीयों ने भी अपने उत्पादन को बढ़ाने के लिए ऋण लेना शुरू किया और 1929 ईसवी तक कोई भी वर्ग इस प्रवृत्ति से बच नहीं सका। इससे मुद्रा का प्रसार बहुत बढ़ गया और मंदी का वातावरण बनते ही इसने बहुत से परिवारों को आर्थिक क्षति पहुँचाई।

1929-30 ईसवी की आर्थिक मंदी के कारणों का विश्लेषण करने पर यह स्पष्ट होता है कि खपत से उत्पादन की अधिकता और धन वितरण की असमानता ऐसे मुख्य दोष थे, जिन्होंने इस संकट को प्रकट किया। किसी भी देश का आर्थिक संगठन कड़ियों के समान जुड़ा होता है और एक कड़ी के टूटने से सारा संगठन प्रभावित हो सकता है। ऋण चुकाने की प्रणाली में यदि एक व्यापारी अपने ऋण चुकाने में असमर्थ हो जाता तो उससे और कई समूह प्रभावित होते थे। बड़े निगमों द्वारा मूल्य-नियंत्रण प्रथा ने इस संकट को और बढ़ाया, क्योंकि अपने हितों की रक्षा के लिए निगमों ने मूल्य कम करने के स्थान पर मजदूरों की छंटनी करना आरम्भ किया जिससे बड़े स्तर पर बेकारी पैदा हुई। अन्त में, जनता का विश्वास काफी मात्रा में व्यापार का आधार होता है। 1929 ईसवी में जब स्थिति बिगड़ने लगी तो यह विश्वास क्षीण हो गया और विपत्ति एक दम टूट पड़ी।

II. आर्थिक मंदी का आरम्भ :

1929 ईसवी का आर्थिक संकट विश्वव्यापी था। इसके आने के पूर्व ही अनेक देशों में खाद्य पदार्थों, अन्न कपास आदि के भावों में गिरावट आने लगी। माल से बाजार भरा था। अनेक कम्पनियाँ बंद हो चुकी थी। बेकारी बढ़ रही थी। अमेरिका में भी इसके चिह्न 1929 ईसवी में भी प्रकट होने लगे थे। इस्पात और मोटर कारखानों जैसे प्रमुख उद्योगों से श्रमिकों को हटाया जाने लगा। आर्थिक विशेषज्ञों ने संकट की कोई पूर्व सूचना भी नहीं दी थी और न संघीय रिजर्व बोर्ड ने सट्टेबाजी को कम करने का कोई प्रयत्न किया। 19 अक्टूबर, 1929 ईसवी को स्टॉक-दरें अपनी उच्चतम सीमा पर पहुँच गईं। इसके बाद 29 अक्टूबर को वास्तविक संकट आया। लगभग एक करोड़ पैंसठ लाख शेयरों का व्यापार हुआ जिनमें कुछ के मूल्य लगभग अस्सी प्रतिशत तक घट गये और कुछ का कोई खरीददार ही नहीं दिखाई दिया। अमेरिका के ऋण संकुचन के कारण यह संकट यूरोप और लैटिन अमेरिकी देशों में भी फैल गया जिससे उनकी अर्थ व्यवस्था को धक्का लगा। वहाँ के देश भी न तो अमेरिका के ऋण चुकाने की स्थिति में रहे और न अमेरिका से सामान खरीदने की। जुलाई, 1932 ईसवी तक सब देशों की स्थिति बहुत गम्भीर हो गई।

कुछ समय तक यह माना जाता रहा कि स्थिति शीघ्र ही सुधर जायेगी, परन्तु अवस्था बिगड़ती ही गई। हजारों आदमी बेरोज़गार और बेघरबार हो गये। उनके पास आय का कोई साधन न रहा और दैनिक खाने-पीने की सामग्री तक उन्हें नहीं मिली। कुछ छुट-पुट कानूनी

उल्लंघन की घटनाओं के अतिरिक्त आम जनता ने इस संकट को धीरज के साथ सहन किया परन्तु हूवर के सामने अब समस्या यह थी कि स्थिति को सुधारने के लिए क्या कदम उठाये जायें।

III. आर्थिक संकट के निवारण के उपाय एवं हूवर की असफलता :

आर्थिक संकट से उत्पन्न समस्याओं को सुलझाने के लिए विभिन्न प्राकर की योजनाएँ प्रस्तावित की गईं। कुछ प्रमुख उद्योगपतियों और अमेरिका के वाणिज्य संघ ने यह सुझाव रखा कि देश में एक आर्थिक समिति स्थापित की जाये जो व्यापार को मार्गदर्शन दे। कुछ अर्थशास्त्रियों ने बड़े स्तर पर योजनायें बनाने तथा मुद्रा प्रणाली को ठीक करने का प्रस्ताव रखा, परन्तु हूवर के अलग विचार थे और उन्हीं के आधार पर उसने इस संकट का सामना किया। उसने यह निश्चय किया कि सरकार को इस दिशा में व्यापारी और श्रमिक वर्ग से मिलकर कदम उठाने होंगे। इसके अतिरिक्त जनता में विश्वास पैदा करना और संकट के प्रति भय की भावना हटाना भी अत्यन्त आवश्यक था। इस कारण सर्वप्रथम उसने यह घोषणा की कि देश में उत्पादन और वितरण की स्थित ठीक की जाये। इसके बाद उसने उद्योग, कृषि और श्रम नेताओं को विचार विनियम के लिए बुलाया। परिणामस्वरूप उद्योगपतियों ने यह आश्वासन दिया कि वे न तो उत्पादन कम करेंगे और न ही मजदूरों की छंटनी करेंगे। दूसरी तरफ मजूदर नेताओं ने भी विश्वास दिलाया कि वे अधिक वेतन की माँग नहीं करेंगे। सरकार की तरफ से हूवर ने करों में कमी की घोषणा की तथा व्यापारी और कृषक वर्गों को ऋण देने की सुविधा का आश्वासन दिया। उसके सुझाव पर कांग्रेस ने निर्माण कार्य पर दुगुना खर्च करने का निश्चय किया। हूवर इससे अधिक और कुछ करने का इच्छुक नहीं था। 1929 ईसवी के अन्त तक ऐसा प्रतीत होने लगा कि सम्भवत: उसके प्रयत्न मन्दी की प्रगति को रोकने में सफल होंगे, परन्तु ऐसा नहीं हुआ और बेकारों की संख्या दिन प्रति दिन बढ़ती रही।

1931 ईसवी में कांग्रेस ने स्थिति का मूल्यांकन करते हुए हूवर पर दबाव डाला कि संघीय सरकार को अधिक बड़े स्तर पर राहत का कार्य करना चाहिए। इस समय तक यूरोप के प्रमुख देशों पर भी मन्दी का पूरा प्रभाव हो गया था। दिसम्बर, 1931 ईसवी तक स्थिति इतनी गम्भीर हो गई कि हूवर को अपनी नीति में परिवर्तन करना पड़ा और राहत से अधिक से अधिक सरकारी हस्तक्षेप की नीति को अपनाना पड़ा। अब उसने कृषक वर्ग को व्यापक सहायता देने के लिए राज्यों को तीस करोड़ डालर की राशि दी। इसके साथ-साथ बड़े स्तर पर सार्वजनिक निर्माण कार्य हाथ में लिये गये, परन्तु डेमोक्रेटिक दल के मतानुसार ये सब कार्य काफी नहीं थे। उन्होंने कांग्रेस में यह प्रस्ताव रखा कि अगले पाँच वर्षों से पुनर्स्थापना करने के लिए सरकार को कम से कम चालीस अरब डालर की राशि खर्च करनी चाहिए। जनवरी, 1932 ईसवी में कांग्रेस ने पुनर्निर्माण वित्त निगम (Reconstruction Finance Corporation) की स्थापना की जिसने काफी बड़ी धन राशि बैंक, रेल और औद्योगिक प्रतिष्ठानों की सहायता से वितरित की। वित्त निगम को स्थापित करने से हूवर का मुख्य उद्देश्य मन्दी को रोकना और अधिकाधिक लोगों को नौकरी देने का था। यह निगम रूजवेल्ट के समय में भी प्रमुख वित्त संस्था बना रहा। पहले से चलते आ रहे संघीय रिजर्व प्रणाली (Federal Reserve System) में भी हूवर ने सुधार किये।

मकानों को गिरवी रखने से बचाने के लिए गृह-ऋण बैंक (Home-Loan Bank) स्थापित किये गये। इतना करने पर भी हूवर व्यक्तिगत ऋण देने के पक्ष में नही था, क्योंकि इस प्रकार की सहायता उसकी दृष्टि में राज्य सरकार और स्थानीय संस्थाओं के क्षेत्र में आती थी। हूवर की इस विचारधारा का बड़ा विरोध हुआ और उसके प्रशंसक भी उसको हृदयहीन कहने लगे।

IV. 1932 ईसवी का चुनाव व रूजवेल्ट की विजय :

1932 ईसवी चुनाव का वर्ष था। रिपब्लिकन दल ने हूवर को दुबारा अपना उम्मीदवार मनोनीत किया। उस पर यह आरोप लगाया गया कि वह मन्दी की स्थिति का जिम्मेदार था। हूवर ने यह स्पष्टीकरण दिया कि मन्दी की अवस्था तो विश्वव्यापी थी जिस पर अमेरिका का कोई नियंत्रण नहीं था। उसने यह भी कहा कि मन्दी को रोकने की दिशा में उसके द्वारा उठाये गये कदम अब प्रभावशाली होने लगे थे। दूसरी तरफ डेमोक्रेटिक दल ने अपना चुनाव कार्यक्रम घोषित किया जिसमें उन्होंने एक संतुलित बजट, संघीय खर्चों में कमी और दोषपूर्ण व्यापारिक प्रथाओं में सुधार के प्रस्ताव रखे। उनका उम्मीदवार फ्रेंकलिन डी. रूजवेल्ट था जो 1928 ईसवी से न्यूयार्क का गवर्नर था। मन्दी का समाधान ही इस समय देश की प्रमुख समस्या थी। रिपब्लिकन दल की नीति इस दिशा में पूर्ण रूप से सफलता नहीं दिखा सकी थी इसलिये डेमोक्रेटों की विजय के लक्षण स्पष्ट दिखाई दे रहे थे। हूवर के राष्ट्रपति काल के अन्तिम दिन घोर निराशा के थे। विरोधियों की कटु आलोचना से उसके हृदय को काफी ठेस पहुँची। उसके विदेश सचिव स्टीमसन ने अपनी डायरी में लिखा, ''मैं कितना चाहता हूँ कि वृद्ध राष्ट्रपति को पुनः हर्षित कर सकूँ।''

रूजवेल्ट ने अपने चुनाव अभियान का आधार शिकागो में प्रतिपादित 'न्यू डील' (New Deal) को बनाया जो अमेरिकी गृह नीति में एक बड़े परिवर्तन का प्रतीक था। इतिहासकारों के अनुसार 1932 ईसवी में राष्ट्रपति के निर्वाचन को दो विभिन्न विचारधाराओं ने प्रभावित किया। वस्तुतः अमेरिकन नागरिकों की ''व्यक्तिवाद बनाम शासनवाद'' तथा ''स्वतन्त्रता बनाम संघीय नौकरशाही तंत्र'' आदि दो विरोधी विचारधाराओं के अनुयायियों के बीच राष्ट्रपति पद के लिए निर्णय लेना था। रूजवेल्ट का प्रतिपक्षी उम्मीदवार राष्ट्रपति हूवर अमेरिका को 1929 के पूर्व का सम्पन्न अमेरिका की ओर लौटाना चाहता था जबकि रूजवेल्ट एक नवीन अमेरिकी समाज के निर्माण के पक्ष में था। राष्ट्रपति पद पर रूजवेल्ट की विजय हुई और उसे कवल छः राज्यों को छोड़कर सभी क्षेत्रों में अत्यधिक बहुमत प्राप्त हुआ। चुनाव परिणामों के अनुसार रूजवेल्ट को 22,822,000 अर्थात् 57.74 प्रतिशत मत प्राप्त हुए जबकि उसकी तुलना में उसके प्रतिपक्षी हूवर को 15,762,000 अर्थात् 39.7 प्रतिशत मत मिले। इस प्रकार निर्वाचक मण्डल में रूजवेल्ट को चार सौ बहत्तर और हूवर को केवल मात्र उनसठ मत प्राप्त हुए।

V. रूजवेल्ट का व्यक्तित्व :

राष्ट्रपति फ्रेंकलिन डिलनों रूजवेल्ट, थियोडोर रूजवेल्ट का रिश्ते में दूर का चचेरा भाई था। वह जन्म से न्यूयार्क के एक धनाढ्य परिवार का सदस्य था और उसके वंशज अमेरिका में

बसने वाले डच थे। फ्रेंकलिन रूजवेल्ट की शिक्षा हारवर्ड के ग्रोटन स्कूल तथा कोलम्बिया के विधि स्कूल में हुई थी। 1905 ईसवी में उसका विवाह एलिनोट रूजवेल्ट से हुआ। 1910 ईसवी में जब वह लगभग तीस वर्ष का था उसका चुनाव डेमोक्रेटिक पार्टी के प्रत्याशी के रूप में अमेरिकी सीनेट के लिए किया गया। न्यू यार्क क्षेत्र से डेमोक्रेटिक दल के प्रत्याशी की यह विजय एक महत्त्वपूर्ण घटना थी।

1912 ईसवी में रूजवेल्ट ने राष्ट्रपति विल्सन का समर्थन किया और परिणामस्वरूप विल्सन ने उसे नौ सेना का सहायक सचिव नियुक्त किया। प्रथम विश्व युद्ध के समय रूजवेल्ट ने नौ सेना क्षेत्र में कई प्रशंसनीय कार्य किये। 1920 ईसवी में उसका नाम राष्ट्रपति टिकिट के लिए कॉक्स के साथ जोड़ दिया गया, किन्तु उसमें डेमोक्रेटिक दल की पराजय हुई और परिणामस्वरुप रूजवेल्ट ने राजनीति का परित्याग कर वकालत प्रारम्भ कर दी। एक वर्ष पश्चात् उसे पोलियो-माईलिटिक की बीमारी ने घेर लिया और वह लगभग छः वर्ष तक इससे संघर्ष करता रहा। बीमारी के काल में भी उसने डेमोक्रेटिक दल के नेताओं से अपना विस्तृत सम्पर्क बनाये रखा। 1924 ईसवी में राष्ट्रीय सम्मेलन अलस्मथ के मनोनयन हेतु वह पुनः जनता के सामने आया। 1928 ईसवी में वह न्यूयार्क का गवर्नर निर्वाचित हुआ। 1932 ईसवी में वह राट्रपति पद के लिए डेमोक्रेटिक दल के प्रत्याशी के रूप में खड़ा हुआ और विजय प्राप्त की।

राष्ट्रपति फ्रेंकलिन रूजवेल्ट प्रकृति से उदारवादी विचारक था। वह प्रारम्भ से ही नवीन स्वतन्त्रता का समर्थक था। राष्ट्रपति पद ग्रहण करने के समय यद्यपि उसका प्रशासनिक अनुभव बहुत सीमित था, किन्तु व्यावहारिक राजनीतिक दृष्टि से वह बहुत कुशल हो चुका था। 1932 ईसवी में उसका राजनीतिक दर्शन बहुत ही अव्यवस्थित और असंगत था। 1933 ईसवी में उसने अपने राजनीतिक विचारों को निरन्तरता देने के लिए एक पुस्तक प्रकाशित की जिसका नाम 'लुकिंग फारवर्ड' (Looking Forward) था। रूजवेल्ट स्वभाव से एक ग्रहणशील राजनीतिज्ञ था, जो नये-नये अनुभवों व प्रयोगों के प्रति सदैव लालायित रहता था। उसमें प्रबल आत्मविश्वास, महान् मानसिक व शारीरिक शक्ति तथा विकासोन्मुख प्रवृत्ति विद्यमान थी। वह नवीन विचारों को ग्रहण करने के लिए सदैव उत्सुक रहता था।

VI. 1933 ईसवी में देश की विपन्न आर्थिक स्थिति :

रूजवेल्ट ने जब राष्ट्रपति पद ग्रहण किया उस समय देश की आर्थिक स्थिति बड़ी अस्त-व्यस्त थी। आर्थिक मंदी विश्व के अन्य राष्ट्रों के समान ही अमेरिका में भी सर्वनाश के कगार पर पहुँच गई थी और अमेरिकी साख विश्व बाजार में क्षतिपूर्ति एवं युद्ध ऋणों के बीच उलझ कर रह गई थी। 1933 ईसवी तक बैंकिंग संघर्ष अत्यन्त विषम स्थिति में पहुँच चुका था। बैंकों में जमा राशि तेजी से गिरती जा रही थी और पूर्व के तीन वर्षों में पाँच हजार बैंक फेल हो चुके थे तथा राज्यों के गवर्नरों ने बैंकों में छुट्टी की घोषणा करना प्रारम्भ कर दिया था। व्यापारिक क्रियाएँ साधारण वर्षों की तुलना में लगभग आधी रह गई थी। विक्रय शक्ति लुप्तप्रायः सी हो गई थी। बेकारों की संख्या बढ़कर 13,000,000 तक पहुँच चुकी थी, राष्ट्रीय आय 1929 ईसवी की अपेक्षा आधी रह गई थी और लगभग चालीस प्रतिशत खेत रहन रख दिये गये थे। दिन-प्रति-दिन के

उपभोग की वस्तुएँ बहुत महँगी हो चुकी थी तथा कीमतों के अनुपात में प्रति व्यक्ति आय काफी मात्रा में कम हो गई थी। लोहा व इस्पात उद्योगों में प्रति व्यक्ति आय बीस से तीस सेन्ट प्रति घन्टा थी जबकि शिकागो नगर में स्त्रियों का वेतन दस सेन्ट प्रति घंटा रह गया था। मण्डी में कोयले की कीमत में इतनी वृद्धि हुई कि एक टन कोयले की कीमत चार डालर थी जबकि उसकी तुलना में पुराने धान (Old Corn) की कीमत एक डालर चालीस सेन्ट प्रति टन थी और कहा जाता है कि सर्दियों में लोग जलाने के लिए कायेले के स्थान पर पुराना धान काम में लाने लगे थे।

(1) 'न्यू डील' कार्यक्रम की घोषणा - आर्थिक मंदी के परिणामस्वरूप राष्ट्रीय उद्योगों को बड़ी क्षति पहुँची । उद्योगों मे हड़ताल, हिंसा आदि सामान्य-सी हो गई थी। रेल-रोड़ ने एक सौ पचास मिलियन डालर का नुकसान बतलाया। बैंकों के फेल हो जाने से उद्योगों को और अधिक क्षति पहुँची। कृषि उद्योग को पुनर्जीवित करने के लिए एक बड़ी मात्रा में सरकारी ऋण एवं सहायता की आवश्यकता थी, परिणामत: राष्ट्रपति रूजवेल्ट को भीषण आर्थिक विषमताओं तथा उससे सम्बन्धित अनेक प्रकार की अन्य प्रशासिनक एवं मानवीय समस्याओं का सामना करना पड़ा। आर्थिक संकट से उत्पन्न विषमताओं से देश को सुरक्षित करने के लिए उसने 'न्यू डील' की नवीन नीति का प्रतिपादन किया। यद्यपि 'न्यू डील' की घोषणा उसने चुनाव अभियान के दौरान ही कर दी थी, किन्तु उसने उद्घाटन भाषण में इसका पुन: स्पष्टीकरण किया। उसका उद्घाटन भाषण बहुत ही सूक्ष्म किन्तु मार्मिक था। उसने कहा - "डालर की क्रय शक्ति निम्न स्तर तक गिर चुकी है, राष्ट्रीय करों में अत्यधिक मात्रा तक वृद्धि हो चुकी है, हमारी चुकाने की शक्ति का काफी ह्रास हो चुका है, सभी स्तरों पर सरकार आय की कमी की शिकार होती जा रही है, विनिमय के साधन व्यापारिक बहाव में जम चुके हैं, हर ओर औद्योगिक पतन का स्वरूप दृष्टिगत हो रहा है, किसानों के पास अपने माल को बेचने के लिए कोई बाजार नहीं है और हजारों परिवारों के सैकड़ों वर्षों के परिश्रम का संचित धन समाप्त सा हो गया है। इससे भी कहीं अधिक लाखों बेकार बिना नौकरी के जीवन-निर्वाह नहीं कर पा रहे हैं। ऐसी परिस्थिति में केवल मूर्ख आशावादी ही वर्तमान दु:खों के क्षणों को अदृष्टिगोचर कर सकता है इसलिए सम्पूर्ण राष्ट्र को एक निश्चित कार्यक्रम के आधार पर क्रियाशील होना आवश्यक है।"

इस प्रकार उपर्युक्त घोषणा से नये कार्यक्रम का आरम्भ हुआ। राष्ट्रपति रूजवेल्ट ने बड़ी आशा और दृढ़ता के साथ यह आग्रह किया कि राष्ट्र की स्थिति अपने आप में बुनियादी तौर पर अच्छी होते हुए भी यह भय है कि कुछ स्वार्थी लोग इस स्थिति का लाभ उठा कर अधिकांश जनता को इसके लाभ से वंचित न रख दें। अत: राष्ट्रपति रूजवेल्ट 'न्यू डील' के रूप में नई गृह नीति की घोषणा कर उसके क्रियान्वयन में जुट गया। डैलस (Dulles) के शब्दों में, "न्यू डील प्रगतिवादी आन्दोलन की निरन्तरता थी, इसमें थियोडोर रूजवेल्ट और वुडरो विल्सन की नीतियों का मिश्रण था।" रूजवेल्ट ने कांग्रेस से अपनी नवीन नीति को कार्यान्वित करने हेतु विस्तृत कार्यपालिका सम्बन्धित अधिकारों की माँग की। उसने कहा "मैं वह कदम उठाने के लिए तैयार हूँ जो संकटग्रस्त दुनिया में एक संकट ग्रस्त राष्ट्र को उठाने चाहिए। इन योजनाओं को पूरा करने के लिए मैं अपने प्राप्त समस्त संवैधानिक अधिकारों का प्रयोग करूँगा और यदि कांग्रेस मेरा

समर्थन नहीं करेगी तो मैं इस संकट को टालने के लिए अन्तिम अस्त्र की माँग करूँगा अर्थात् उन विस्तृत प्रशासनिक अधिकारों की, जो मुझे उस स्थिति में प्रदान किये जाते जब राष्ट्र संकटकालीन स्थिति में हो।''

(2) उद्देश्य व स्वरूप - 'न्यू डील' अपने आप में राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक जीवन को घटित करने की दिशा में अमेरिकी राष्ट्र नीति में एक महत्त्वपूर्ण नया मोड़ था। वास्तव में यह लोकतांत्रिक दर्शन पर आधारित कार्यक्रम था, जिसका मूल उद्देश्य राष्ट्रीय, आर्थिक स्रोतों का लाभ जन साधारण तब पहुँचाने का था। न्यू डील का कार्यक्रम यद्यपि पूँजीवादी अर्थ व्यवस्था को सुरक्षित रखना चाहता था, फिर भी इसके तीन प्रमुख ध्येय थे - प्रथम, प्राकृतिक एवं मानवीय साधनों का संरक्षण, द्वितीय, संविधान के अन्तर्गत निहित उद्देश्यों तथा हितों के साथ संतुलन व तृतीय, राष्ट्रीय स्वतन्त्रता एवं सुरक्षा को दृढ़ करना। करन्ट के अनुसार 'सुविधा', 'पुनरुद्धार' व 'सुधार' (Relief Recovery and Reorm) 'न्यू डील' कार्यक्रम के प्रमुख स्तम्भ थे। राष्ट्रपति रूजवेल्ट ने 'न्यू डील' व्याख्या करते हुए बतलाया क उसका उद्देश्य पूँजिवादी अर्थ व्यवस्था में कोई परिवर्तन करना नहीं था बल्कि इसे और अधिक सुरक्षित बनाने के लिए सुधारी कार्यक्रम का संचालन था। 'न्यू डील' एक आर्थिक कार्यक्रम था जिसके द्वारा अमेरिका की अर्थिक व्यवस्था को और अधिक सुदृढ़ और संतुलित करन की आशा की गई। उपर्युक्त उद्देश्यों के आधार पर राष्ट्रपति रूजवेल्ट न विशेषकर दो क्षेत्रों- आर्थिक स्थिति का पुनरुद्धार तथा सहायता विकास में अपने नवीन कार्यक्रम को प्रस्तुत किया। यद्यपि यह कहना कठिन है कि पुनरुद्धार कार्य कहाँ समाप्त हुआ, क्योंकि दोनों एक दूसर के साथ अभिन्न रूप से जुड़े हुए थे। सम्पूर्ण 'न्यू डील' कार्यक्रम का धीरे-धीरे विकास व विस्तार हुआ। रूजवेल्ट ने राष्ट्रपति पद के प्रथम कार्यकाल में दो प्रकार के कदम उठाये, उनमें पहले वे थे जिनका उद्देश्य अल्पकालीन समस्याओं का समाधान करना था जिसमें मुख्य तौर पर बैंकिग समस्या का समाधान, कृषि विकास तथा संघीय संकटकालीन सहायता आदि सम्मिलित थे तथा दूसरे वे कार्यक्रम थे जिनका उद्देश्य अमेरिका के दीर्घकालीन हितों की रक्षा करना था, जैसे विस्तृत बैंक सुधार अध्यादेश (Banking Reform Ordinances), टैनेसी घाटी योजना (Tenessee Valley Project) आदि।

(3) कार्यक्रम :

(i) सहायता कार्य - मोटे तौर पर सहायता कार्य के क्षेत्र में आर्थिकि संकट से ग्रसित व्यापारियों तथाऔद्योगिक संस्थाओं को संघीय ऋण के रूप में सहायता देना प्रारम्भ किया गया, जो शीघ्र ही अरबों डालर तक पहुँच गया, बेकारी निवारण के लिए एक विशाल सहायता कार्यक्रम अपनाया गया जिसमें लगभग सोलह अरब डालर सीधे सहायता विकास कार्यों पर तथा अतिरिक्त सात अरब डालर अन्य सार्वजनिक हितों के कार्यक्रम पर व्यय किये गये। राष्ट्रीय प्राकृतिक सम्पदाओं के संरक्षण हेतु विशाल पैमाने पर कार्यक्रम चलाये गये और नागरिक संरक्षण दल की स्थापना की गई। लगभग तीस लाख युवकों को कार्य पर लगाया गया। संघीय वित्त की सहायता से लेखकों से रचनाएँ लिखवाकर नाटक, संगीत और सार्वजकि भवनों में सजावट, बनावट आदि सुधार करवा कर, आर्थिक संकट से ग्रसित लेखकों, कलाकारों तथा

संगीतकारों को विपुल मात्रा में सहायता दी गई और राष्ट्र के कलात्मक जीवन को विकसित व समृद्ध किया गया।

(ii) पुनर्निर्माण कार्य - पुनर्निर्माण कार्य के क्षेत्र में मकानों, सड़कों, पुलों और स्थानीय विकास कार्यों के लिये ऋण दिये गये, रेल मार्गों के निर्माण की योजना बनाई गई तथा सार्वजनिक हित की दृष्टि से अनेक प्रकार की सुविधाओं में वृद्धि की गई। देश में नये उद्योगो एवं व्यवसायों को पनपाने के लये ठोस कदम उठाये गये। 'न्यू डील' को व्यवस्थित रूप से क्रियान्वित करने हेतु राष्ट्रपति रुजवेल्ट ने कांग्रेस से नई कानून पारित करने की अपील की जिससे मुद्रा संकुचन तथा दिवालियापन की प्रक्रिया को रोका जा सके। कांग्रेस ने चौदह सप्ताहों में तेहत्तर अधिनियम व उपनियम पारित किये जो बैंकिग व मुद्रा आदि के अतिरिक्त कृषि-उत्पादन, व्यापार, श्रम-संगठन, सामाजिक सुरक्षा, बेकारी-नियोजन तथा राष्ट्रीय सुरक्षा से सम्बन्धित थे।

(iii) बैंकिंग समस्या का समाधान - राष्ट्रपति रूजवेल्ट ने अपनी नियुक्ति के तुरन्त पश्चात् लिये गये कार्यक्रमों में बैंकिंग समस्या को सर्वाधिक प्राथमिकता प्रदान की। वह उद्योगपतियों तथा उद्योग प्रतिष्ठानों में पुन: आत्मविश्वास जागृत करने के लिए बैंकिंग समस्या का समाधान सबसे अधिक आवश्यक मानता था। सर्वप्रथम उसने बैंकिंग समस्या को इस प्रकार सुलझाने का प्रयास किया जो सम्पूर्ण बैंकिंग समुदाय को स्वीकार्य तथा प्रिय प्रतीत हुआ। 6 मार्च, 1933 ईसवी को उसने उन चार दिनों तक जब तक कि अमेरिकी कांग्रेस की बैठक बुलायी जा सके, सभी बैंकों को बन्द करने तथा सोने के निर्यात को रोकने की घोषणा कर दी। 9 मार्च को उसने एक अनुदारवादी प्रस्ताव (Conservative Bill) प्रस्तुत किया जिसके अनुसार संघीय रिजर्व व्यवस्था (Federal Reserve System) को मुद्रा-चलन तथा पुनर्निर्माण वित्तीय आयोग (Reconstruction Finance Corporation) को ऋण देने का अधिकार दे दिया गया। इस प्रस्ताव में छोटे बैंकों को एक गहरा धक्का पहुँचा, क्योंकि सरकारी निरीक्षकों ने उन्हें पुन: खोलने की स्वीकृति प्रदान करने से इन्कार कर दिया था। इसके अतिरिक्त उक्त प्रस्ताव ने सरकारी खजाने से सोने का प्रसार (Circulation of Gold) रोक दिया और वस्तुत: सारे देश में स्वर्ण मुद्रा का प्रचलन समाप्त सा हो गया (यद्यपि 19 अप्रैल, 1933 ईसवी को तो सरकारी तौर पर इसके प्रचलन को समाप्त कर दिया गया था)। कांग्रेस ने उक्त प्रस्ताव को चार घंटों में पारित कर बैंकिंग समस्या को नियन्त्रित करने में काफी सहायता प्रदान की।

इस प्रस्ताव के पारित होने से रूजवेल्ट ने एक और बैंकिंग समस्या को सम्भाल लिया तथा दूसरी ओर अमेरिकी पूँजीवादी व्यवस्था की रक्षा की। बैंकिंग प्रस्ताव के लागू होने के तीन दिनों के भीतर ही देश के तीन चौथाई बैंक पुन: खोल दिये गये, करोड़ों की तादाद में संगृहीत धन राशि बैंकों में वापस जमा करा दी गई। अगले दो वर्षों में पुनर्निर्माण वित्तीय आयोग ने कमजोर बैंकों को ऋण प्रदान किये, यद्यपि असुरक्षित बैंकों को समाप्त कर दिया गया और लगभग दो हजार तीन सौ बावन बैंक स्वयं बंद हो गये। कुछ भी हो, बैंकिंग समस्या के समाधान के परिणामस्वरूप अमेरिकी व्यापिरयों में पुन: विश्वास की लहर दौड़ गयी और स्टॉक मंडी को पन्द्रह प्रतिशत की वृद्धि प्राप्त हुई।

(iv) बचत प्रस्ताव – संकटकालीन बैंकिंग अधिनियम के तुरन्त पश्चात् राष्ट्रपति रूजवेल्ट ने कांग्रेस में बचत प्रस्ताव (Economy Bill) रखा जिसके द्वारा राष्ट्रीय बजट को सन्तुलित करने के लिए सरकारी कर्मचारियों के वेतन में पन्द्रह प्रतिशत की कटौती कर दी गयी तथा सरकारी खर्च में भी भारी कमी की गई। 13 मार्च, 1933 ईसवी को राष्ट्रपति रूजवेल्ट ने नशाबन्दी संशोधन को रोक कर 3.2 प्रतिशत मात्रा वाली शराब को वैधानिक करार दे दिया। इससे उसे यह आशा थी कि देश के पुनर्विकास तथा करों की वसूली में सहायता मिलेगी।

(v) कृषि विकास कार्य – 16 मार्च, 1933 ईसवी को कृषि विकास कार्यक्रम लागू किये गये और किसानों हेतु मई, 1933 ईसवी में कृषि समायोजन प्रशासन अधिनियम (Agriculture Adjustment Administration Bill) पारित कियद्य गया। इस अधिनियम द्वारा किसानों को सरकार से सहायता प्राप्त करने की व्यवस्था की गई। इसके साथ-साथ उनकी प्रतिदिन उपज में कटौती कर उनकी आय को बढ़ाने के लिए कई कार्य किये गये – (i) कृषि के अन्तर्गत जोत के क्षेत्रफल में कटौती, (ii) जिस भूमि पर अस्थायी रूप से खेती न करने की व्यवस्था की गई उसके बदले में लाभ देने की व्यवस्था, तथा (iii) विपणन समझौते के द्वारा वैज्ञानिक विपणन व्यवस्था स्थापित करना।

इन प्रयासों के अतिरिक्त कृषि के क्षेत्र में विशिष्ट प्रकार के लाभ अथवा सहायता अधिनियम पारित किये गये। 1933 ईसवी में कृषि साख विधेयक (Farm Credit Act) के द्वारा किसानों को बैंकों तथा वित्तीय संस्थाओं से आर्थिक सहायता प्रदान करने की व्यवस्था की गई। इसी प्रकार आपातकालीन फार्म मार्टगेज अधिनियम (Emergency Farm Mortgage Act) के द्वारा ऋणग्रस्तता निवारण की सुविधाएँ दी गई। इसी प्रकार होम ओनर्स लोन एक्ट-1933 (Home Owners Loan Act, 1933) के अन्तर्गत उन लोगों को ऋण देने की व्यवस्था की गई। राल्फ वान हारलो (Ralff Van Harlow) के अनुसार तीन वर्षों के अन्दर तीन अरब डालर के ऋण दिये गये जिसके द्वारा कितने ही गिरवी रखे मकान उनके मालिकों को वापस मिल गये।

कृषि विकास के लिए एक निश्चित कार्यक्रम बनाया गया। कृषि पदार्थों तथा औद्योगिक पदार्थों के मूल्यों में सन्तुलन स्थापित किया गया। इसके अन्तर्गत इस प्रकार कृषि उत्पादन को कम करने और कृषि कीमतों को बढ़ाने का प्रयास किया गया। इसी अधिनियम के अन्तर्गत कांग्रेस और विदेश मन्त्रालय ने कनाड़ा व यूरोप से कृषि उत्पादन सम्बन्धी व्यापारिक समझौते किये। परिणामत: तीन वर्षों में किसानों की आय पचास प्रतिशत से भी अधिक बढ़ गई और कृषि पदार्थों का मूल्य तेजी से बढ़ने लगा। कपास उत्पादन के क्षेत्र में भी द्रुत गति से विकास हुआ। कई क्षेत्रों में तो अतिरिक्त उत्पादन को संतुलित करने के लिए कई अन्य पदार्थों का विनाश भी करना पड़ा। लगभग साठ लाख सूअर और दो लाख बीस हजार सूअर के बच्चों का कत्ल करना पड़ा। परिणामत: 1936 ईसवी में सर्वोच्च न्यायालय ने इस अधिनियम को असंवैधानिक घोषित कर दिया, किन्तु 1938 ईसवी में यह अधिनियम और भी अधिक सहमति और विस्तार के साथ स्वीकृत हुआ।

(vi) ग्रामीण विकास कार्य -कृषि तथा ग्रामीण विकास की समस्याओं को लेकर 'न्यू डील' के अन्तर्गत कुछ और भी कदम उठाये गये। भूमि-संरक्षण और घरेलू आवंटन अधिनियम (Soil Conservation and Domestic Allotment Act) पारित किया गया, जिसके द्वारा सरकार ने उन किसानों को सहायता देने का आश्वासन दिया जो व्यापारिक फसलों की अपेक्षा अपनी भूमि का एक भाग भूमि संरक्षण के लिए प्रयुक्त करने को तैयार थे। 1935 ईसवी में बन्दोबस्त प्रशासन (Resettlement Administration) की स्थापना की गई जिसका उद्देश्य विभिन्न योजनाओं द्वारा समसीमांत (Submarginal) कृषकों को सहायता देना था। इसी प्रकार 1935 ईसवी में ग्रामीण विद्युत प्रशासन (Rural Electrical Administration) की स्थापना की गई और सहकारिता की सहायता से 1940 तक लगभग 25 प्रतिशत खेतों को विद्युत शक्ति प्रदान की गई।

(vii) व्यापार व उद्योगों को सहायता - व्यापार और उद्योग के विकास के लिए भी न्यू डील के अन्तर्गत 1933 ईसवी में एक राष्ट्रीय औद्योगिक पुनर्विकास अधिनियम (National Reconstruction Administration Bill) पारित कर उत्पादन, लागत और श्रम के घन्टों को स्थिर किया गया और अनुचित व्यापार एवं श्रम को निषिद्ध घोषित कर दिया गया। सरकार ने उद्योगपतियों को आश्वासन दिया कि यदि वे कीमतों और वेतनों के सम्बन्ध में इस अधिनियम के प्रावधानों को क्रियान्वित कर देंगे तो उन्हें अनेक सुविधाएँ प्रदान को जायेंगी। इस अधिनियम द्वारा न्यूनतम वेतन तीस से चालीस सेन्ट प्रति घन्टा निर्धारित किया गया, अधिकतम काम के घन्टे पैंतीस से चालीस प्रति सप्ताह निर्धारित किये गये और बाल श्रम पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया। इस नवीन व्यवस्था को 'ब्ल्यू ईगल' के मोनोग्राम से चिह्नित किया गया, जो व्यापारी वर्ग इस अधिनियम की शर्त कार्यान्वित करने के लिए तैयार थे वे ब्ल्यू ईगल का मोनोग्राम प्रयोग में ला सकते थे। इस अधिनियम की सहायता से लगभग दो करोड़ मजूदरों को पाँच सौ विभिन्न संस्थाओं में काम दिया गया। परन्तु 1935 ईसवी में इस अधिनियम को सर्वोच्च न्यायालय ने असंवैधानिक घोषित कर दिया।

(viii) बेरोजगारों को सहायता - राष्ट्रीय विकास कार्यक्रमों के अन्तर्गत नागरिक कार्य प्रशासन, सार्वजनिक प्रशासन और कार्य विकास प्रशासन आदि को मिला कर एक विशाल सहायता कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया जिसके अन्तर्गत चालीस लाख लोगों को रोजगार दिया गया और जिस पर कुल मिला कर 7,03,20,00,000 डालर व्यय किये गये। रोजगार बढ़ाने तथा राष्ट्रीय प्राकृतिक व मानवीय सम्पदा को संरक्षण देने हेतु कांग्रेस ने एक असैनिक संरक्षण सेना (Civilian Conservation Corporation) नामक संस्था की स्थापना की। इस संस्था को तीन सौ मिलियन डालर की सहायता दी गयी तथा राहत परिवारों में से दो लाख पचास हजार व लकड़हारों में से पचास हजार युवकों को बाढ़ नियन्त्रण तथा वन-निर्माण के कार्यों में लगाया गया।

(ix) टैनेसी घाटी योजना - मई, 1933 ईसवी में कांग्रेस ने टैनेसी घाटी अधिकरण

(Tenessee Velley Administration) की स्थापना की तथा इसे टैनेसी नदी के पास बाँध बनाने, विद्युत शक्ति बेचने आदि का काम सौंपा गया। अगले बीस वर्षों में पाँच पूर्वस्थित बाँधों को सुधारने और बीस नये बाँधों को बनाने का निर्णय लिया गया। इस योजना के अन्तर्गत देश के अत्यधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में बाढ़ों को रोकने की व्यवस्था की गई और अतिरिक्त पानी को नहर द्वारा विकास कार्यों में तथा विद्युत उत्पादक प्लान्ट के निर्माण में प्रयुक्त किया गया। इसके अतिरिक्त फास्फेट खाद के निर्माण का कार्य भी प्रारम्भ किया गया।

(x) सामाजिक सुरक्षा अधिनियम – 1935 ईसवी में सामाजिक सुरक्षा अधिनियम पारित किया गया जिसके अन्तर्गत बूढ़े, असहाय लोगों के लिए दो प्रकार से सहायता देने की व्यवस्था की गई। प्रथम, बूढ़े निराश्रय लोगों को पन्द्रह डालर प्रति माह संघीय व्यवस्था के रूप में सहायता देने की व्यवस्था की गई, द्वितीय, उन लोगों को, जो सक्रिय रूप से कार्यरत थे उन्हें सेवानिवृत्ति पर कई प्रकार की आर्थिक सुविधाएँ देने की घोषणा की गईं। इस अधिनियम के द्वारा बेरोजगार बीमा का भी प्रारम्भ किया गया। अन्धे, अपंग तथा आश्रित माताओं और बच्चों के लिए वि.भिन्न प्रकार की आर्थिक सहायता देने की व्यवस्था की गई। इन सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रमों का भार मालिकों को उठाना था और कुछ श्रमिकों को। सारे सुरक्षा कार्यक्रमों को राज्य सरकारें लागू करती थी और नियन्त्रण निर्देशन संघीय सरकार के हाथ में रखा गया।

(xi) विद्यार्थियों की सहायता – इसी प्रकार 1935 ईसवी में कार्य विकास प्रशासन (Work Progress Administration) की स्थापना कर कांग्रेस ने बेरोजगारों की कई प्रकार से सहायता की। इस प्रशासन के अन्तर्गत ही एक कनिष्ठ प्रशासन की स्थापना की गई, जिसका उद्देश्य सोलह से पच्चीस वर्ष के विद्यार्थियों को सहायता देना था।

(xii) श्रमिकों के वेतन व काम आदि के बारे में नियम – श्रम क्षेत्र में 'न्यू डील' के अन्तर्गत अनेक महत्त्वपूर्ण कानून पारित किये गये। राष्ट्रीय पुनरुद्धार अधिनियम (National Reconnection Act) द्वारा श्रमिकों का वेतन बढ़ाया गया और काम के घन्टे निश्चित कर दिये गये। 1935 ईसवी के वेगनर कानून (Wagner Act) के द्वारा श्रमिकों को अपनी पसन्द के श्रमिक संगठन बनाने एवं उनके द्वारा सौदेबाजी करने की मान्यता दी गई।

मालिक और उद्योगपतियों का श्रमिक संगठन के किसी सदस्य के विरुद्ध भेद भाव का व्यवहार अपराध घोषित किया गया तथा राष्ट्रीय मजदूर सम्पर्क मण्डल (National Labour Relation Board) को इसके प्रशासन की सत्ता सौंप दी गई। 1937 ईसवी तक इस मण्डल ने पाँच हजार विवादों का निपटारा किया, दो हजार हड़तालों में मध्यस्थता की तथा श्रमिक संगठनों में चुनाव सम्पन्न कराये, साथ ही इसके तत्वावधान में पुराने अमेरिकी श्रम संगठन (American Federation of Labour) को पुनर्जीवित किया गया और एक नये तथा अधिक शक्तिशाली श्रमिक संगठन 'औद्योगिक संगठन कांग्रेस' (Congress of Industrial Organisation) का श्रीगणेश किया गया। इस संगठन ने पुराने श्रमिक संगठनों को जागृत किया और इस्पात, सूती मिल, मोटर आदि अन्य उद्योगों में श्रमिकों को संगठित किया। यद्यपि राष्ट्रपति रूजवेल्ट वेगनर

अधिनियम (Wagnar Act) के बहुत से प्रावधानों से सन्तुष्ट नहीं था, विशेषकर श्रमिक संगठनों को सरकारी सरक्षण की व्यवस्था से, फिर भी उसे इस अधिनियम को स्वीकृति प्रदान करनी पड़ी। इस अधिनियम के पारित होने के परिणामस्वरूप अमेरिका में कई उग्र श्रमिक संगठनों का मिर्माण हुआ। उदाहरणार्थ, 1936 ईसवी में तेल कम्पनियों में उनके श्रमिक संगठनों ने कम्पनियों का विरोध होते हुए भी कई लोगों की नियुक्तियाँ करवाई, 1940 ईसवी तक अमेरिका में श्रमिक संगठनों की संख्या नब्बे लाख तक पहुँच गई थी।

(xiii) प्रशासनिक सुधार - प्रशासन के क्षेत्र में 'न्यू डील' द्वारा अनेक महत्त्वपूर्ण एवं दूरगामी सुधार किये गये। सरकार का कार्यपालिका विभाग, जो अव्यवस्थित रूप से बढ़ गया था और अकुशल व अधिक खर्चीला था, पुन: संगठित किया गया। 1939 ईसवी के हेच कानून (Hatch Act) द्वारा सरकारी कर्मचारियों की हानिकारक गतिविधियों पर रोक लगा दी गई और सार्वजनिक दलों के भ्रष्टाचार और फिजूलखर्ची पर प्रतिबन्ध लगाये गये।

(4) रूजवेल्ट के प्रथम प्रशासन (1933-37 ईसवी) की अवधि में 'न्यू डील' के परिणाम- रूजवेल्ट की प्रथम अवधि समाप्त होने तक इस प्रकार इक्कीस विधेयक और सैंकड़ों छोटे-मोटे कानून पारित किये गये। औद्योगिक उत्पादन 1923-25 ईसवी की अपेक्षा नब्बे प्रतिशत अधिक बढ़ गया। बैंकिंग व्यवस्था में काफी सुधार हुआ तथा भ्रष्ट तरीकों पर प्रतिबन्ध लगने से व्यापार में सुधार हुआ। कृषि और सामाजिक सुरक्षा के क्षेत्र में 'न्यू डील' की देन प्रशंसनीय थी। दूसरी ओर 'न्यू डील' की कमियाँ भी स्पष्ट दिखलाई देने लगी। अमेरिका में लगभग एक करोड़ व्यक्ति अब भी बेरोजगारी से ग्रस्त थे। कृषि और उद्योगों के उत्पादनों में मूल्य का संतुलन अब भी बिगड़ा हुआ था। कीमतों में बराबर वृद्धि हो रही थी, जबकि उसके अनुपात में वेतनों में कम वृद्धि हुई। 1935 ईसवी में रेलवे की आय 1933 ईसवी की अपेक्षा आधी थी। इसी प्रकार राष्ट्रीय ऋण 1932 ईसवी की अपेक्षा 19,500,000,000 से 29,800,000,000 बढ़ गया था। श्रम की दृष्टि से मालिकों और श्रमिकों के मध्य सामूहिक लेनदेन को लेकर आपसी संघर्ष प्रारम्भ हो गये थे, जिसके परिणामस्वरूप औद्योगिक संस्थानों में तालाबन्दी, हड़ताल, न्यायालय हस्तक्षेप तथा अन्य हिंसात्मक कार्यवाहियाँ जोर पकड़ने लगीं। उदाहरणार्थ, जनरल मोटर्स कम्पनी ने 1934 ईसवी से 1936 ईसवी के बीच श्रमिक संगठन की कार्यवाहियों को नियन्त्रित करने के लिए दस लाख डालर खर्च किया। इस्पात कारखाने में भारी मात्रा में हिंसात्मक कार्यवाहियाँ हुईं। इस प्रकार राष्ट्रीय औद्योगिक पुनर्निर्माण अधिनियम (National Industrial Reorganisation Act) तथा वेगनर अधिनियम ने श्रमिक संगठनों को बहुत मजबूत कर उद्योग संस्थानों में हड़ताल व हिंसक कार्यवाहियों को पारस्परिक संघर्ष का केन्द्र बना दिया। रूजवेल्ट के विरोधियों ने 'न्यू डील' की तीव्र भर्त्सना की और इसे अधिक खर्चीला, नौकरशाही को बढ़ावा देने वाला तथा संघीय सरकार को भयात्मक रूप से अधिक सशक्त करने वाला कार्यक्रम बतलाया। इस प्रकार 'न्यू डील' के आलोचकों ने इस कार्यक्रम को वामपक्षीय नीति का समर्थक बताया जबकि उदारवादियों ने इसे डराने वाली नीति का परिचायक घोषित किया।

VII. 1936 ईसवी का चुनाव :

इस विरोध और अवरोध के वातावरण में राष्ट्रपति रूजवेल्ट ने अपने द्वितीय निर्वाचन की यात्रा प्रारम्भ की। इसके विरोधियों ने (न्यू डील) कार्यक्रम की खुल कर भर्त्सना की किन्तु राष्ट्रपति रूजवेल्ट को द्वितीय निर्वाचन में आशातीत सफलता प्राप्त हुई। उसे कुल मिला कर 2,74,80,000 मत प्राप्त हुए जबकि उसके प्रतिद्वन्दी लेडन को 1,66,75,000 मत प्राप्त हुए। निर्वाचक मण्डल ने रूजवेल्ट को पाँच सौ अट्ठाईस मत और उसके प्रतिद्वन्द्वी को आठ मत दिये। द्वितीय निर्वाचन मे इस प्रकार राष्ट्रपति रूजवेल्ट ने न केवल रिपब्लिकनों को ही हराया बल्कि लिंकन लीग को हराया जिसमें जी.डब्ल्यू. डेबिल (G.W.Debil), एल्फ्रेड ई. स्मिथ जैसे रूढ़िवादी डेमोक्रेटिक सम्मिलित थे, क्योंकि इन लोगों ने चुनाव में 'न्यू डील' को प्रतिक्रियावादी और साम्यवादी बतला कर जनमत को प्रभावित करने का प्रयास किया।

1936 ईसवी की भारी विजय ने स्वभावत: राष्ट्रपति रूजवेल्ट का आत्मविश्वास बढ़ा दिया और उसने अगले चार वर्ष के लिए फिर से 'न्यू डील' को लागू करने का जनता को वचन दिया। अब राष्ट्रपति रूजवेल्ट के समक्ष कुछ नवीन समस्याएँ महत्त्वपूर्ण होती जा रही थीं, उनमें नाजीवाद और फासीवाद का विकास तथा अन्य अन्तर्राष्ट्रीय घटनाएँ थी, जिन्होंने उसे अधिक गतिशील विदेश नीति अपनाने के लिए प्रेरित किया। दूसरी ओर उसे अब उन आर्थिक कार्यक्रमों की ओर ध्यान देना पड़ा जो विकास की दृष्टि से स्थायी महत्त्व के थे।

VIII. द्वितीय प्रशासन काल (1937-41 ईसवी) में 'न्यू डील' के अन्तर्गत सुधार :

(1) सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीशों की नियुक्ति सम्बन्धी विवाद - इस क्रम में पहला कदम रूजवेल्ट ने सर्वोच्च न्यायालय में सुधार लाने के सम्बन्ध में उठाया, क्योंकि सर्वोच्च न्यायालय ने 'न्यू डील' सम्बन्धी बहुत से व्यवस्थापनों को अवैध घोषित कर दिया था और वकीलों की तीव्र दृष्टि 'सामाजिक संरक्षण' एवं वेगनर अधिनियम को अवैध घोषित कराने पर थी। न्यायालय ने वाणिज्य एवं कर सम्बन्धी विषयों पर संकुचितता और चौदहवें संविधान संशोधन की व्याख्या से यह स्पष्ट कर दिया था कि संघीय सरकार किसी भी स्वामित्वहीन भूमि के सम्बन्ध में कोई कानून नहीं बना सकती थी। इस प्रकार न्यायालय की संकुचित प्रकृति पर रोक लगाने के लिए किन्हीं क्षेत्रों में यह आवाज उठाई जाने लगी कि संविधान में संशोधन किया जाये जिससे संघीय सरकार को और अधिक अधिकार प्राप्त हो सकें। जहाँ रूजवेल्ट ने यह स्पष्टीकरण दिया कि यद्यपि संघीय सरकार को विस्तृत अधिकार प्राप्त हैं पर बुराई केवल न्यायालय द्वारा विस्तृत प्रगतिवादी व्याख्या नहीं किये जाने की है। अतएव सर्वोच्च न्यायालय के इस दृष्टिकोण में परिवर्तन करने हेतु उसमें नये रक्त का संचार करना आवश्यक है और इसलिए राष्ट्रपति रूजवेल्ट ने लगभग छ: नये न्यायाधीशों को सर्वोच्च न्यायालय में नियुक्त करने सम्बन्धी प्रस्ताव कांग्रेस में प्रस्तुत किया। यद्यपि संवैधानिक दृष्टि से यह कोई चिन्ताजनक बात नहीं थी, क्योंकि कांग्रेस को समय-समय पर सर्वोच्च न्यायालय में न्यायाधीशों की संख्या में परिवर्तन करने का अधिकार प्राप्त

था, फिर भी इस विषय को लेकर राष्ट्र भर में राजनीतिक तूफान उठ खड़ा हुआ और बहुत से चिन्तनशील लोग, जिन्होंने 1936 ईसवी में रूजवेल्ट का राष्ट्रपति पद पर निर्वाचन का समर्थन किया था अब यह सोचने और समझने के लिए विवश हो गये कि धीरे-धीरे राष्ट्रपति इस प्रकार संवैधानिक कटौती कर एक तानाशाह का रूप धारण कर लेगा। स्वयं कांग्रेस के भीतर यह मतभेद राजनीतिक दलीय सीमा को पार कर गया और अब स्वयं डेमोक्रेटिक दल के दो गुट बन गये – रूढ़िवादी और न्यू डील विरोधी। डेमोक्रेटिक गुट ने रिपब्लिकन दल के साथ मिल कर कांग्रेस में कन्जरवेटिव मोर्चें (Conservative Front) का निर्माण किया। फलस्वरूप राष्ट्रपति के उपर्युक्त प्रस्ताव को कांग्रेस ने अस्वीकार कर दिया। परन्तु इसी दौरान में न्यायालय के रूढ़िवादी बुजुर्ग न्यायाधीश अवकाश प्राप्त करने लगे और उनके स्थान पर रूजवेल्ट अपनी ही तरह के विचार वाले न्यायाधीशों को नियुक्ति करने लगा। परिणामस्वरूप, सर्वोच्च न्यायालय में उदार दृष्टिकोण का विस्तार हुआ और कई कानूनों को पुनः वैध करार घोषित कर दिया गया। सर्वोच्च न्यायालय ने सामाजिक सुरक्षा अधिनियम एवं वेगनर अधिनियम को वैध मान लिया और इसी प्रकार सर्वोच्च न्यायालय ने वाणिज्य एवं कर उपबन्धों को इतने विस्तार से तथा चौदहवें संशोधन को इतनी संकुचितता से व्याख्या की कि न्यू डील कार्यक्रम द्वारा स्थापित आर्थिक व्यवसायों को स्वीकृति प्राप्त हो गई और सम्पूर्ण आर्थिक व्यवस्था पर सभी संवैधानिक अड़चनें स्वतः दूर हो गई। इस प्रकार अप्रत्यक्ष रूप से राष्ट्रपति रूजवेल्ट को सर्वोच्च न्यायालय केविषय में सफलता प्राप्त हो गई और उसने न्यायालय को प्रेरित किया कि वह शासन की तीनों शाखाओं की पृथकता एवं समकक्षता सम्बन्धी संवैधानिक उपबन्धों का अधिक यथार्थवादी रीति से सम्मान करे और अपने आपको अमेरिकी लोकतन्त्र के अनुकूल ढाले।

(2) उचित श्रम स्तर कानून – 1938 ईसवी के कांग्रेस के चुनाव में न्यू डील का विरोध करने वाले रिपब्लिकन दल को यद्यपि निम्न सदन में पचास स्थान तथा सीनेट में छः स्थान प्राप्त हुए थे, परन्तु न्यू डील विरोधी कन्जरवेटिव डेमोक्रेट्स क साथ मिलकर इसको दोनों सदनों में पूर्ण बहुमत प्राप्त हो गया और इस प्रकार कांग्रेस पर न्यू डील, विरोधियों का प्रभुत्व स्थापित हो गया। फलस्वरूप रूजवेल्ट के लिए अपने नये कार्यक्रम को तीव्रता से लागू करना थोड़ा कठिन हो गया, फिर भी 1938 ईसवी में राष्ट्रपति रूजवेल्ट ने उचित श्रम स्तर कानून (Fair Labour Standard Act) को कांग्रेस से पारित करवा लिया। इसके अनुसार सामान्य परिस्थिति में एक सप्ताह में चालीस घन्टे काम तथा पच्चीस सेन्ट प्रति घन्टा न्यूनतम वेतन निर्धारित किया गया। इस अधिनियम द्वारा कृषि को छोड़ कर शेष क्षेत्रों में सोलह वर्ष की कम उम्र वाले बच्चों को कार्य पर लगाना अवैधानिक घोषित कर दिया गया।

(3) कृषकों को सहायता – द्वितीय कृषि समायोजना प्रशासन (Secound Agriculture Adjustment Administration) की स्थापना 1938 ईसवी में की गई। जिसके अन्तर्गत इस बार उत्पादन की अपेक्षा मंडियों पर नियंत्रण की व्यवस्था की गई और जिससे पाँच प्रकार की मुख्य फसलों का मण्डी में भाव निर्धारित किया गया तथा कृषकों को पदार्थ-ऋण (Commodity

Loan) देने की व्यवस्था भी की गई। 1937 ईसवी में ही किसानों को सहायता देने के लिए खेत सुरक्षा प्रशासन (Farm Security Administration) की स्थापना की गई जिसने अगले तीन वर्षों में लगभग तेरह हजार परिवारों को भू स्वामित्व दिलवा दिया तथा दक्षिणी प्रदेशों के छः हजार परिवारों को आर्थिक सहायता देकर घुमक्कड़ जातियों को एक स्थान पर स्थायी कार्य दिलवा दिया।

(4) विधायी परिवर्तन – इन्हीं वर्षों में राजनैतिक क्षेत्र में भी कुछ विधायी परिवर्तन किये गये। 1939 ईसवी में हेच अधिनियम पारित किया गया जिसके द्वारा उन संघीय कर्मचारियों को, जो नीति-निर्धारण में निम्न पदों पर कार्य कर रहे थे, उन्हें राष्ट्रीय चुनाव में किसी भी प्रकार के सरकारी लाभ प्राप्त करने के अधिकार से वंचित कर दिया गया। 1940 ईसवी में द्वितीय हेच अधिनियम के द्वारा इन प्रतिबन्धों को राज्य तथा स्थानीय निकायों के कर्मचारियों पर भी लागू कर दिया गया। इस अधिनियम ने किसी भी राजनीतिक दल का वार्षिक व्यय 30 लाख डालर सीमित कर दिया। इस प्रकार न्यू डील ने सरकार, श्रम और व्यापार आदि तीनों के विस्तार की प्रवृत्ति को सशक्त किया।

परन्तु 1938 ईसवी के उत्तरार्द्ध काल में तो 'न्यू डील' वैचारिक सीमाओं से प्रतिबन्धित होता जा रहा था। कांग्रेस के अन्तर्गत 'न्यू डील' विरोधी वातावरण पनप रहा था। इसी वर्ष यूरोप में युद्ध के बादल मंडराने लगे और राष्ट्रपति रूजवेल्ट का 'न्यू डील' भी इसकी काली छाया में धुंधला पड़ने लगा। 1939 ईसवी के पश्चात् सभी अधिनियम और आदेश प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से युद्ध सम्बन्धी घटनाओं से प्रभावित होने लगे और न्यू डील धीरे-धीरे राष्ट्रीय नीति से अन्तर्राष्ट्रीय नीति का रूप धारण करने लगा। राष्ट्रपति रूजवेल्ट ने कई तटस्थता अधिनियम (Neutral Act) पारित करवाये जिससे अमेरिका अपने को द्वितीय विश्व युद्ध से पृथक् रख सके।

IX. 1940 के चुनाव :

नवम्बर, 1940 ईसवी में राष्ट्रपति पद के लिए पुनः चुनाव हुए जिसमें राष्ट्रपति रूजवेल्ट का प्रतिद्वन्द्वी वेन्डल विल्की (Wendell Wilkie) था। 'न्यू डील' को लेकर राष्ट्रपति रूजवेल्ट का विरोध किया गया, किन्तु अन्त में राष्ट्रपति रूजवेल्ट की विजय हुई। उसे अड़तालीस राज्यों में से अट्ठाइस राज्यों का समर्थन प्राप्त हुआ और 27,200,000 मत प्राप्त हुए जबकि उसके प्रतिद्वन्द्वी विल्की को 22,300,000 मत ही मिल सके।

राष्ट्रपति रूजवेल्ट का तृतीय काल द्वितीय विश्व युद्ध और अन्य अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं के मध्य व्यतीत हुआ। 1940 ईसवी में उसने उधार पट्टे पर सामग्री (Land Lease Act) देने सम्बन्धी विधयेक कांग्रेस से पारित करवा कर अमेरिका की तटस्थता नीति में परिवर्तन करवा दिया। 1941 ईसवी में पर्ल हार्बर (Pearl Harbour) पर जापानी आक्रमण होने पर रूजवेल्ट ने युद्ध में सक्रिय रूप से अमेरिका के सम्मिलित होने की घोषणा कर दी। युद्ध काल में उसने अमेरिकी जनता को कुशल नेतृत्व प्रदान किया। 1944 ईसवी के राष्ट्रपति के चुनाव में अमेरिकी जनता ने रूजवेल्ट को

चतुर्थ बार अपना विश्वास प्रकट कर राष्ट्रपति पद पर पुनः निर्वाचित किया, किन्तु चार माह पश्चात् ही 2 अप्रैल, 1945 ईसवी को उसकी मृत्यु हो गई और राष्ट्रपति पद हेरी.एस. ट्रूमेन (Harry S. Truman) को प्राप्त हुआ।

X. 'न्यू डील' का मूल्यांकन :

आलोचकों के मत में 'न्यू डील' कार्यक्रम अपने आप में कोई नवीन बात नहीं था और न ही यह राष्ट्रपति रूजवेल्ट के मस्तिष्क की उपज ही थी बल्कि यह अपने पूर्वधिकारियों की नीतियों से उधार लिया गया पिछले पचास वर्षों के राजनीतिक विकास का निचोड़ था। उदाहरणार्थ, वन संरक्षण नीति प्रथम टी.रूजवेल्ट ने ही प्रारम्भ कर दी थी, बैंक तथा मुद्रा सम्बन्धी सुधार अंशतः विल्सन के प्रशासन काल में प्रारम्भ किये जा चुके थे, रेल मार्गों एवं ट्रस्टों का नियमन एक दशक से चल रहा था, कृषि सहायता कार्यक्रम बहुत कुछ पापुलिस्टों के कार्यक्रमों के अनुरूप बनाया गया था। श्रम-नियमन कानून विस्कोन्सिन और ओरिगेन राज्यों के में प्रचलित कानून के अनुकरण पर बनाये गये थे, यहां तक कि जिन न्याय सम्बन्धी सुधारों ने इतनी हलचल पैदा कर दी थी उन्हें भी लिंकन व टी. रूजवेल्ट पहले ही प्रचलित कर चुके थे। रूजवेल्ट का तो इसमें केवल मात्र इतना ही योग था कि उसने अपने समय की परिस्थिति और कांग्रेस में अपने समर्थन का लाभ उठाते हुए अनेक सुधार सम्बन्धी कानून पारित करवा लिये।

पुराने उदारवादियों की यह शिकायत थी कि 'न्यू डील' के समर्थकों ने बहुत कुछ ध्यान सच्चे प्रजातन्त्र के स्वरूपों एवं तरीकों पर दिया। रूढ़िवादियों का दावा था कि रूजवेल्ट की नीति मुख्यतः प्रतिक्रियावादी थी, उदरवादियों के मत में उसकी नीति समयानुकूल न होकर समय से आगे की थी। बहुत से न्यू डील के आलोचकों ने रूजवेल्ट का इसलिए समर्थन नहीं किया वह अपनी नीति में मध्यममार्गी था और सिद्धान्तवादी की अपेक्षा समन्वयवादी अधिक था।

'न्यू डील' अमेरिकी आर्थिक जीवन को पूँजीपतियों के बन्धन से मुक्त कराने में असफल रहा। अब भी सिद्धान्ततः प्रतिस्पर्द्धा होने के बाजवूद भी व्यावहारिक आम जीवन पर उन्हीं कुछ पूँजीपतियों का आधिपत्य बना रहा जो बाजार पर प्रभुत्व रखते थे, जैसे 1937 ईसवी में 'न्यू डील' के पाँच वर्ष के बाद भी व पुरानी तीन कम्पनियाँ राष्ट्र का अस्सी प्रतिशत तेल उत्पन्न करती थीं, साठ प्रतिशत से भी अधिक इस्पात का उत्पादन करती थीं और एक एल्यूमिनियम कम्पनी कुल उत्पादन का शत प्रतिशत अकेली ही पैदा करती थीं। इस प्रकार अब भी एकाधिकार और अल्पाधिकार की प्रवृत्ति अमेरिकी व्यापार में निरन्तर बनी रही।

राजनीतिक क्षेत्र में भी 'न्यू डील' को कोई विशेष सफलता प्राप्त नहीं हो पाई। यद्यपि सर्वोच्च न्यायालय के विरुद्ध संघर्ष तथा राजनीतिक दल की सदस्यता से निष्कासन के बावजूद भी 'न्यू डील' को दीर्घकालीन कार्यक्रमों में कोई विशेष सफलता हाथ नहीं लगी। रूजवेल्ट के द्वितीय चुनाव के पश्चात् उसका नेतृत्व पहले की अपेक्षा अधिक कमजोर हुआ और उसके विरोधियों की संख्या धीरे-धीरे बढ़ती गई। जिन्होंने उसके न्यू डील को क्रियान्वित करने में अनेक कठिनाइयाँ उत्पन्न कर दीं।

'न्यू डील' के द्वारा अमेरिकी जन जीवन में संघीय शक्ति में अभूतपूर्व वृद्धि हो गई। विशेषकर सामाजिक और आर्थिक जीवन को लेकर उसके विरोधियों की दृष्टि मे वह एक ऐसे शक्तिशाली राष्ट्रीय निर्माण करने की ओर प्रयत्नशील था जो प्रभावी रूप से राष्ट्रीय हित की दृष्टि से व्याख्या कर सके। राष्ट्रीय व्यय की दृष्टि से रूजवेल्ट की नीतियाँ राष्ट्रीय बजट को भयंकर रूप से असन्तुलित कर रही थी आलोचकों की दृष्टि में रूजवेल्ट 'न्यू डील' के द्वारा हेमिल्टिनियन साधनों के माध्यम से जेफरसनियन उद्देश्यों को प्राप्त करना चाहता था। इस प्रकार 'न्यू डील' विल्सन के नये स्वतन्त्रतावाद की अपेक्षा नये राष्ट्रवाद की ओर अधिक झुका हुआ था।

किन्तु उपर्युक्त आलोचनाओं का यह अभिप्राय नहीं निकाला जा सकता कि वास्तव में रूजवेल्ट का 'न्यू डील' एक निम्न स्तर का असफल कार्यक्रम था। वस्तुत: 'न्यू डील' अपने आप में एक नवीन और समथानुकूल कार्यक्रम था जिसका प्रमुख उद्देश्य पूँजीवाद को समाप्त करना न होकर राष्ट्र को आर्थिक अस्त-व्यस्तता से बाहर निकालना था और इसमें रूजवेल्ट को पर्याप्त सफलता भी मिली। उसने पूँजीवादी व्यवस्था बनाये रखते हुए भी कुछ ऐसे कानून पारित करवाये जिनके द्वारा जनकल्याणकारी उपायों को अपूर्व प्रोत्साहन मिला। यही नहीं, 'न्यू डील' ने कला और संस्कृति के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। शिक्षा, चर्च के क्षेत्र में उल्लेखनीय परिवर्तन किये गये तथा विज्ञान एवं वैज्ञानिक अन्वेषणों पर अप्रत्याशित ध्यान दिया गया। फ्रैंक फ्रेडल के अनुसार, " 'न्यू डील' एक पीढ़ी से भी कम वर्षों में एक इतिहास की महत्त्वपूर्ण घटना के रूप में बदला गया। अमेरिकी राजनीतिक इतिहास में 'न्यू डील' के समर्थकों और विरोधियों ने इसे एक अत्यधिक श्रेष्ठ अथवा निकृष्ट रूप में प्रस्तुत किया है। 'न्यू डील' के बहुत वर्षों पश्चात् भी दोनों दलों के राजनीतिज्ञों ने हर चुनाव के समय मत प्राप्ति के लिए 'न्यू डील' का बहुतायत से प्रयोग किया।"

इतिहासकारों में 'न्यू डील' की उपलब्धियों के बारे में काफी मतभेद हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि अमेरिका के इतिहास में पहली बार 'न्यू डील' कार्यक्रम द्वारा सरकार ने अर्थ व्यवस्था को नियंत्रित करने के लिय कुछ कदम उठाये। किन्तु इसका यह अभिप्राय नहीं कि अमेरिका में पूँजीवादी नीति का त्याग कर समाजवाद का समर्थन किया जाने लगा। फाकनर ने 'अमेरिकन इकोनोमिक हिस्ट्री ' में लिखा है कि "न्यू डील अबंध नीति का पतन प्रदर्शित करता है, किन्तु पूँजीवाद की समाप्ति नहीं।" नेविन्सन और कामेजर के मत में यह नव अर्थ नीति केवल दो कारणों से उग्र सुधारवादी प्रतीत होती थी – प्रथम जिस शीघ्रता से इस नीति का अधिनियम पारित किया गया और द्वितिय हार्डिंग, कूलिज और हूवर की कोई कार्य न करने की प्रणाली की तुलना में इस नीति को उग्रवादी समझा गया।

जैसा कि पहले बताया जा चुका है यह कोई नयी नीति नहीं थी। यह तो अमेरिका के पूर्व उदारवादी इतिहास की निरन्तरता का द्योतक थी। आर्थर श्लेसेंजर के मत में इस नीति की उत्पत्ति का एक मात्र कारण आर्थिक मंदी नहीं वरन् इस आर्थिक मंदी ने इसको एक विशिष्ट स्वरूप प्रदान किया। यदि आर्थिक मंदी का काल न आया होता तो भी यह नीति किसी न किसी

रूप में निर्मित होती। अतएव श्लेसेंजर ने इस नीति को व्यवहारिक, वास्तविक एवं क्रियाशील बताते हुए लिखा है कि इसके द्वारा व्यक्तिगत स्वतंत्रता एवं आर्थिक विकास का सम्मिश्रण सम्भव हुआ।

फ्रेंक फ्रिडेल ने श्लेसेंजर के मत का समर्थन करते हुए इस नव अर्थ नीति को उन व्यक्तियों का कार्य बताया जो प्रगतिशील युग में प्रौढ़ता एवं नैतिक मूल्यों से प्रभावित हो चुके थे। उसके अनुसार ये मानवीय सुधारवादी सरकारी राजतंत्र के द्वारा साधारण जनता को लाभान्वित करना चाहते थे। अतएव फ्रिडेल ने प्रगतिशील युग के उद्देश्यों तथा प्रथम विश्वयुद्ध के अनुभव को नव अर्थनीति का आधार माना।

लेकिन रिचर्ड होप्सटाटर का मत इनसे नहीं मिलता। उसने इसे पूर्व के सुधार आन्दोलनों से हट कर माना है। उसके मत में इस नीति के सुधारकों ने अमेरिकन समाज को दूषित एवं रोगग्रस्त समझकर कार्य किये। वह लिखता है कि इसमें कोई दार्शनिक तत्त्व नहीं था और न ही इसका लक्ष्य प्रगतिवादी एवं सुधारवादी था। यह नीति राजनीतिज्ञों, प्रशासकों एवं तकनीशियनों के संतुष्टिकरण के लिए बनाई गई थी।

निष्कर्ष के तौर पर हम यह कह सकते हैं कि इस नीति में एक नये आर्थिक दर्शन और सिद्धान्त का सूत्रपात किया। इसके अन्तर्गत एक सीमा तक राजकीय नियन्त्रण को स्थापित किया गया, किन्तु ऐसा करते समय पूँजीवादी नीति को नहीं त्यागा गया। डलनेस के अनुसार इसका उद्देश्य कुछ सुधारों द्वारा पूँजीवादी व्यवस्था को बनाये रखना था। 'न्यू डील' के अन्तर्गत औद्योगिक व कृषि सम्बन्धी और आर्थिक पुनर्रुत्थान की नीतियाँ अपनाई गई थीं और इससे सभी वर्गों की जनता को लाभ पहुँचा। यह नीति 'अधिक टिकाऊ समृद्धि की स्थापना' के अपने उद्देश्य में काफी हद तक सफल रही।

कुछ इतिहासकारों ने इसका एक दूसरा पक्ष भी बताया है। उनके मत में अमेरिका की आर्थिक स्थिति में परिवर्तन लाने का श्रेय 'न्यू डील' को उतना नहीं है जितना अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की सुधरती हुई दशा को है। उनके अनुसार इसमें जो भी कुछ किया गया है वह सरकारी व्यय करके किया गया। अत: 1939 ईसवी में जब सरकार ने व्यय कम कर दिया तो पुन: स्थिति बिगड़ने लगी। इसको लागू करने में इतनी अधिक राशि व्यय की गई की पुन: स्थिति बिगड़ने लगी। इस व्यय के फलस्वरूप अमेरिका का राष्ट्रीय ऋण 1933 ईसवी के उन्नीस हजार पाँच सौ डालर से बढ़कर 1957 ईसवी में छत्तीस हजार डालर हो गया। एल.एम.राय ने लिखा है कि "राष्ट्रपति रूजवेल्ट अमेरिकी अर्थव्यवस्था के मौलिक दोषों को दूर करने में मुख्यत: विफल रहे तथा उनका कार्य एक भयानक रोग के केवल लक्षणों की ही व्याख्या करने तक सीमित रहा।"

अंत में यह कहा जा सकता है कि 6 मार्च 1933 ईसवी को अपने भाषण में रूजवेल्ट ने देश में व्याप्त भय की भावना को दूर करने का जो वायदा किया था उसे पूरा करने में वह 'न्यू डील' द्वारा सफल नहीं रहा।

□□□

अध्याय-19

अमेरिका की विदेश नीति (1909-1917 ई.) तथा प्रथम विश्व युद्ध में अमेरिका

□ सी.एम. जैन

बीसवीं शताब्दी के आगमन के पूर्व तक अमेरिका ''जेफरसरन सिद्धान्त'' के पार्थक्यवाद तथा मुनरो सिद्धान्त (Munroe Doctrine) की अमेरिकी महाद्वीप की सुरक्षा तथा उसमें अहस्तक्षेप की नीति को दृष्टिगत रख, पृथकता की नीति का अनुसरण करता रहा, किन्तु वर्तमान शताब्दी के प्रारम्भ में राष्ट्रपति थियोडोर रूजवेल्ट के समय में अमेरिका ने यह अनुभव किया कि उसे विश्व राजनीति में रुचि लेनी चाहिए। इस परिवर्तित दृष्टिकोण के प्रादुर्भाव के पीछे चार प्रमुख प्रवृत्तियाँ कार्य कर रही थीं।

1. यूरोपीय साम्राज्यवाद की होड़
2. अमेरिका का आर्थिक विकास व पूँजीपति शक्तियों का दबाव
3. सशक्त नाविक बेड़े का निर्माण
4. राजनैतिक विचारों का प्रभाव

थियोडोर रूजवेल्ट के राष्ट्रपतित्व काल में लम्बे समय से चली आ रही अमेरिकी पृथकता का अन्त हुआ तथा प्रशान्त महासागर के क्षेत्र में अमेरिका का विस्तार आरम्भ हुआ। उसने लैटिन अमेरिकन देशों की समस्याओं में भी रुचि लेना शुरू किया तथा मुनरो सिद्धान्त को लागू किया। (उपरोक्त प्रवृत्तियों तथा थियोडोर रूजवेल्ट की विदेश नीति का अध्ययन इसके पहले एक अध्याय में किया गया।)

यूरोपीय साम्राज्यवाद की होड़ – उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम वर्षों में यूरोपीय देशों में उपनिवेशों पर नियन्त्रण स्थापित करने की जो होड़ चल पड़ी थी उसके प्रभाव से अमेरिका अपने को अधिक समय तक उन्मुक्त नहीं रख सकता था।

अमेरिका में पूँजीवादी शक्तियों का दबाव – अमेरिकी व्यापारिक वर्ग ने कनाड़ा मैक्सिको आदि पड़ौसी राज्यों से मुक्त व्यापार की नीति अपनाने के लिए जो प्रभाव डाला उससे अमेरिकी सरकार के लिए समुद्र पार उपनिवेशवाद की विदेश नीति का अनुगमन करना आवश्यक हो गया।

सशस्त्र नौ सेना का निर्माण – अमेरिका की बढ़ती हुई नौ सैनिक शक्ति ने भी उसे विस्तारवादी नीति की ओर प्रोत्साहित किया और अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं में रुचि लेने के लिए प्रेरित किया।

रूजवेल्ट की लैटिन अमेरिका नीति - राष्ट्रपति थियोडोर रूजवेल्ट ने बड़ी दृढ़ता के साथ मुनरो सिद्धान्त को लैटिन अमेरिका में प्रयुक्त किया था। जिसके अनुसार उसने सभी विदेशी शक्तियों को आगाह कर दिया था कि अमेरिका इस क्षेत्र में अन्य किसी शक्ति का किसी प्रकार का हस्तक्षेप सहन नहीं करेगा। इस नीति के अन्तर्गत अमेरिका ने लैटिन अमेरिकी देशों की समस्याओं और उलझनों में भाग लेना प्रारम्भ कर दिया।

टैफ्ट की विदेश नीति -इस प्रकार टैफ्ट के राष्ट्रपति बनने के पूर्व ही विश्व राजनीति के मंच पर अमेरिका महान् शक्ति के रूप में उभरने लगा था। 1905 ईसवी में रूस-जापान युद्ध की समाप्ति के लिए राष्ट्रपति रूजवेल्ट का हस्तक्षेप, 1906 ईसवी में फ्रांस और जर्मनी के बीच मोरक्कों के प्रश्न पर अमेरिका की मध्यस्थता, हेग पंचायती न्यायालय का समर्थन आदि घटनाएँ अमेरिका की विदेश नीति में इस परिवर्तित दृष्टिकोण का प्रतीक थी।

राष्ट्रपति टैफ्ट के समय में अमेरिका की विदेशी नीति में कोई विशेष परिवर्तन नहीं आया क्योंकि अधिकतर विषयों में उसकी नीति राष्ट्रपति थियोडोर रूजवेल्ट से काफी मिलती-जुलती थी। उसकी विदेश नीति के प्रमुख बिन्दु थे-

(1) टैफ्ट की विदेश नीति की प्रथम विशेषता 'डालर कूटनीति' (Dollar Diplomacy) थी। उसने मुक्त द्वार नीति (Open Door Policy) को दृढ़ता व निरन्तरता देने के लिए इस नीति का समर्थन किया।

(2) उसने कनाड़ा के साथ स्वतन्त्र व्यापार बढ़ाने की दृष्टि से 'पारस्परिकता की सन्धि' (Treaty of Reciprocity)की।

(3) उसने मध्य अमेरिका में 'मध्यस्थता के अधिकार' को प्राप्त करने की चेष्टा की।

(4) उसने निकारगुआ में 'नोक्स केस्ट्रिलो कन्वेन्शन' (Knox Castrillo Convention) आयोजित किया।

(5) उसने मेगलेडिनी खाड़ी के क्षेत्र में 'लॉज कोरोलरी' (Lodge Corollory) का समर्थन किया जिसका उद्देश्य गैर यूरोपीय शक्तियों और विदेश कम्पनियों आदि पर 'मुनरो सिद्धान्त' के क्षेत्र को विस्तृत करना था।

टैफ्ट की डालर कूटनीति - अन्तर्राष्ट्रीय जगत अर्थात् विदेश नीति के सन्दर्भ में राष्ट्रपति टैफ्ट की प्रथम उपलिब्ध 'डालर कूटनीति' थी। इसं नीति का मुख्य लक्ष्य लैटिन अमेरिका और सुदूरपूर्व में अन्य राष्ट्र की अपेक्षा अमेरिकी आर्थिक हित की अधिकाधिक रक्षा करना था। दूसरे शब्दों में, राष्ट्रपति टैफ्ट इन क्षेत्रों में मुक्त द्वार नीति को दृढ़ करने के लिए डालर कूटनीति का समर्थन करना चाहता था। इस नीति के आधार पर राष्ट्रपति और उसके विदेश सचिव नोक्स दोनों, विदेशों में अमेरिकी बैंकिंग और व्यापारिक हितों की केवल वृद्धि करना चाहते थे। यद्यपि अमेरिकी पूँजीपति विदेशी विस्तारवाद के प्रति अधिक इच्छुक थे। राष्ट्रपति टैफ्ट ने इस नीति को सुदूरपूर्व और लैटिन अमेरिका दोनों ही क्षेत्रों में प्रयुक्त किया।

सुदूर पूर्व – सुदूर पूर्व में राष्ट्रपति टैफ्ट ने थियोडोर रूजवेल्ट की नीति में परिवर्तन किया। टैफ्ट ने थियोडोर रूजवेल्ट द्वारा प्रतिपादित उस मत का समर्थन नहीं किया जिसमें जापान से यह वादा किया गया था कि अमेरिका मंचूरिया से पृथक् रहेगा बल्कि उसने उसके स्थान पर चीन और मंचूरिया में अमेरिकी व्यापारियों के पूँजी लगाने के अधिकार को मान्यता देने की कोशिश की। जब ब्रिटेन, फ्रांस और जर्मनी के व्यापारियों ने चीन में रेल निर्माण के लिए सिन्डीकेट बनाई तब नोक्स ने इसमें भागीदार बनने के लिए प्रयत्न किये। किन्तु जब नोक्स को सफलता नहीं मिली तो 1911 ईसवी में राष्ट्रपति टैफ्ट ने चीन के रिजेन्ट राजकुमार चुन को व्यक्तिगत रूप से अपील की और परिणामत: अमेरिका को चार शक्तियों के सिन्डीकेट में सदस्यता मिल गई। किन्तु टैफ्ट की इस नीति से अमेरिका को सुदूर पूर्व में कोई विशेष लाभ नहीं मिल सका। अमेरिका की इस नीति के विरुद्ध पहले ही 1910 ईसवी में रूस-जापान के मध्य मित्रता की सन्धि हो चुकी थी और मंचूरियन द्वार अमेरिका के लिए बन्द कर दिया गया था। यहाँ तक कि ब्रिटेन ने भी इस क्षेत्र में जापान के दृष्टिकोण की पुष्टि की और मंचूरिया में उसके अधिकार को सशक्त करने में समर्थन दिया। परिणामत: सुदूर पूर्व में अमेरिका की प्रतिष्ठा को इस प्रकार गहरा आघात पहुँचा।

लैटिन अमेरिका – राष्ट्रपति टैफ्ट ने लैटिन अमेरिकी देशों में भी डालर कूटनीति का प्रयोग किया। उसने निकारगुहा में विशेष रुचि लेने की कोशिश की जिससे इसका नहर मार्ग विदेशी नियन्त्रण के अधीन न चला जाये। 1909 ईसवी में उसने क्रान्तिकारियों की सहायता के लिए निकारगुआ में जहाज भी भेजे। 1911 ईसवी में अमेरिका के विदेश मन्त्री नोक्स और निकारगुआ के मन्त्री केस्ट्रिलो के बीच एक समझौता हुआ जिसके अनुसार अमेरिका ने अपने बैंकों से निकारगुआ को ऋण देना स्वीकार किया और बदले में निकारगुआ ने अपने शुल्क प्रशासन को एक ऐसे कलेक्टर जनरल के अधीन रखने का वायदा किया जिसे अमेरिका के महाजन व सरकार दोनों की सहमति प्राप्त हो, किन्तु अमेरिकी सीनेट ने उक्त समझौते को स्वीकृत नहीं किया। सन्धि के असफल होने पर निकारगुआ को 15 मिलियन डालर के स्थान पर केवल 1.5 मिलियन डालर ऋण विभिन्न प्राइवेट किश्तों के समझौते पर दिया गया। इसके अतिरिक्त 1912 ईसवी में निकारगुआ विद्रोह को समाप्त करने के लिए एक सौ युद्ध पोत भी भेजे गये, परन्तु अमेरिका को निकारगुआ में कोई विशेष सफलता नहीं मिल सकी।

राष्ट्रपति टैफ्ट के प्रशासन ने यही नीति केरेबियन क्षेत्र में अपनाई। 1909 ईसवी में विदेश मन्त्री नोक्स को होन्दू राज में अमेरिकी बैंकों के हितों की रक्षा हेतु कस्टम कलेक्टर नियुक्त करने का प्रयत्न किया। 1910 ईसवी में उसने हेटी के राष्ट्रीय बैंक में पूँजी लगाने के लिए न्यू यार्क के महाजनों को प्रेरित करने का प्रयत्न किया, किन्तु उसे यहाँ भी विशेष सफलता नहीं मिल सकी।

आरम्भ से ही अमेरिका मैक्सिको को अपना संरक्षित प्रदेश मानकर उसके तेल भंडारों पर अपना आधिपत्य स्थापित करने का प्रयत्न कर रहा था। अत: जब भी मैक्सिको की सरकार ने अमेरिका की इस प्रवृत्ति का विरोध किया तब-तब दोनों राष्ट्रों के मध्य तनाव एवं शस्त्र-संघर्ष का वातावरण बन गया। मैक्सिको में अमेरिका उस समय तक अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा करता रहा जब तक वहाँ का राष्ट्रपति डियाज (Diaz), जो कि तानाशाह शासक था, अपने पद पर बना रहा।

नवम्बर, 1910 ईसवी को मैक्सिको में लोकतन्त्रीय सुधारक फ्रांसिस्को मेडेरो (Franscisco Madero) ने डियाज सरकार के विरुद्ध क्रांति की। इसके परिणामस्वरूप डियाज को पदत्याग करना पड़ा और अमेरिकावासियों को मैक्सिको छोड़कर भागने के लिए विवश कर दिया। राष्ट्रपति टैफ्ट ने मेडेरो की सरकार को तुरन्त मान्यता दे दी, किन्तु कुछ ही दिनों पश्चात् मेडेरो की हत्या कर दी गई और उसके स्थान पर जनरल विक्टोरियन ह्यूरता (Victorian Huerta) अधिपति बन गया, किन्तु राष्ट्रपति टैफ्ट ने अमेरिकी व्यापारिक हित के दबाव के बावजूद भी इस सरकार को मान्यता नहीं दी।

डोमेनी की गणतन्त्र में भी टैफ्ट प्रशासन ने गृह युद्ध को दबाने की कोशिश की तथा वित्तीय हित संरक्षण हेतु वहाँ नौ सेनाएँ भेजी, किन्तु यहाँ भी अमेरिकी विदेश नीति को कोई विशेष सफलता नहीं मिल सकी।

कनाड़ा के साथ सम्बन्ध – टैफ्ट प्रशासन ने कनाड़ा के साथ स्वच्छ और निकटतम आर्थिक सम्बन्धों को स्थापित करने के लिए अनेक कूटनीतिक प्रयत्न किये। अमेरिकी प्रशंसकों के विचार में कनाड़ा अमेरिका के तैयार माल की खपत के लिए सर्वाधिक अच्छा बाजार बन सकता था। परन्तु इस मार्ग में अनेक बाधाएँ थी, क्योंकि 1907 ईसवी में कनाडा ने फ्रांस के साथ व्यापारिक समझौता करके कुछ निश्चित वस्तुएँ अमेरिका की अपेक्षा फ्रांस को सस्ते मूल्य पर देश में निर्यात की खुली छूट दे दी थी इससे अमेरिकी व्यापार को नुकसान होने लगा और इसलिए 1910 ईसवी में अमेरिका ने राष्ट्रपति टैफ्ट के प्रयत्न से कनाड़ा के साथ वार्ता करके 'पारस्परिकता की सन्धि' (Reciprocity Treaty) करने का निश्चय किया। 21 जनवरी, 1911 ईसवी को दोनों सरकारों ने यह स्वीकार किया कि वह कनाड़ा की कृषि वस्तुओं पर कर में कमी करेंगे और अमेरिकी उत्पाद को कम कीमत पर स्वीकार करेंगे, किन्तु कनाड़ा में उसे अमेरिकी साम्राज्यवाद मानकर इसकी तीव्र प्रतिक्रिया हुई तथा अमेरिकी सीनेट ने भी बड़ी कठिनाई के साथ इसे स्वीकृति दी।

राष्ट्रपति टैफ्ट के कार्यकाल की अवधि में अमेरिका की विदेश नीति को विशेष सफलता नहीं मिल सकी। इसके कई कारण थे राष्ट्रपति टैफ्ट में व्यक्तिगत गुण होते हुए भी प्रेरक शक्ति और छा जाने वाले नेतृत्व के गुणों का अभाव था। उसे अपनी नीतियों पर तात्कालिक कांग्रेस, विशेषकर सीनेट का सरलता से समर्थन नहीं मिल सका। यहाँ तक कि उसे 'डालर कूटनीति' पर भी सीनेट का पूर्ण समर्थन नहीं मिल सका। अमेरिकी इतिहास के लेखक रिचर्ड करन्ट के अनुसार, ''टैफ्ट की विदेशी नीति ने लैटिन अमेरिका के पड़ौसी राज्यों को अमेरिका से सम्बन्ध बढ़ाने की बजाय विच्छेद की ओर अधिक अग्रसर किया। '' इस कूटनीति से जो भी लाभ हुए वे लैटिन अमेरिकी देशों में अमेरिका के विरुद्ध उत्पन्न भावनाओं से परास्त हो गये। 1911 के कनाड़ा के चुनावों में भी पारिस्परिकता सन्धि के विरोधियों की विजय ने टैफ्ट की विदेश नीति के खोखलेपन को स्पष्ट कर दिया। एक अमेरिकी पत्रिका ने प्रश्नवाचक रूप में यह आलोचना की कि राष्ट्रपति टैफ्ट और विदेश मन्त्री नोक्स को व्यापारिक हित के विनिमय में विदेशी शक्तियों की ऐसी कौनसी सुविधा मिल सकती थी जिसके लिए वायदा न किया हो? कुछ अन्य आलोचकों के

अनुसार टैफ्ट प्रशासन ने राष्ट्रपति विल्सन के द्वार पर विदेश नीति सम्बन्धित अनेक जटिल समस्याओं को प्रस्तुत कर दिया था।

विल्सन की विदेश नीति (1913-1919 ईसवी) :

1913 से 1919 ईसवी तक अमेरिका की विदेशी नीति को जिन तत्त्वों ने विशेषतौर पर प्रभावित किया उनमें राष्ट्रपति विल्सन का व्यक्तित्व, लैटिन राष्ट्रों की समस्याएँ, प्रथम विश्वयुद्ध व इसकी समाप्ति पर शान्ति समझौता प्रमुख थे। कौमेजर के अनुसार, ''अमेरिका के नवीन राष्ट्रपति वुडरो विल्सन ने साहसिक निर्भीकता, निरस्त कर देने वाली निष्कपटता, आदर्शवाद का प्रहसन, अपने को ही दल का नेता चुनने पर बल देना, राजनीति के स्तर से ऊँचे उठकर स्वयं से जनता से अपील करना तथा कड़े प्रहार करने का कौशल उनमें कूट-कूटकर भरा था।'' लान्सिग के शब्दों में, ''विल्सन अन्तर्राष्ट्रीय नैतिकता और न्याय की प्रतिमूर्ति थे।'' विल्सन के व्यक्तित्व के प्रभावस्वरूप अमेरिका की विदेशी नीति में नैतिकतावाद, शक्तिवाद, प्रजातन्त्रवाद आदि का समन्वय हुआ। उसने अमेरिका को पार्थक्यवाद से हटाकर अन्तर्राष्ट्रीयतावाद की ओर अग्रसर किया।

लैटिन अमेरिकन नीति – दूसरे तत्त्व जिन्होंने विल्सन के समय में विदेश नीति को प्रभावित किया, वे लैटिन अमेरिका की समस्यायें थी। विल्सन प्रशासन ने संधि के द्वारा निकारागुआ में हस्तक्षेप को नियमित ही नहीं किया बल्कि सांटो डोमिन्गो (Santo Domingo) और हेटी में हस्तक्षेप भी किया। सांटो डोमिन्गो में अमेरिका ने सम्पूर्ण वित्तीय व्यवस्था और पुलिस शक्ति पर अपना नियंत्रण स्थापित किया। 1916 ईसवी में विल्सन सरकार ने वहाँ एक सैनिक सरकार की स्थापना की । लगभग आठ वर्षों की अवधि में अमेरिका ने लैटिन अमेरिकी राष्ट्रों की शक्ति के आधार पर कानूनी व्यवस्था की, स्थानीय पुलिस को प्रशिक्षित किया गया तथा चिकित्सा, स्वास्थ्य और जनकार्यों में विकास भी किया । इसी प्रकार का हस्तक्षेप राष्ट्रपति विल्सन के प्रशासन ने निरन्तर क्रांतियों से ग्रस्त हेटी गणतन्त्र में भी किया । 1915 ईसवी में जब एक भीड़ ने हेटी के बदनाम राष्ट्रपति की हत्या की तब अमेरिका ने वहाँ समुद्र पोत भेजे तथा दूसरी सैनिक सरकार के निर्माण में सहायता दी। 1918 ईसवी में अमेरिका ने वहाँ अपने द्वारा परिचालित एक नवीन संविधान की स्थापना में सहयोग दिया।

मैक्सिको में राष्ट्रपति विल्सन ने एक नवीन नीति का प्रारम्भ किया। उसने मैक्सिको में डालर कूटनीति को समाप्त किया और यह घोषणा की कि अमेरिका उसी सरकार को मान्यता देगा जो जनता की इच्छा पर आधारित हो। उसने मैक्सिको में ह्यूरता सरकार को मान्यता नहीं दी और उसे पदत्याग करने के लिए विवश किया। मैक्सिको के सम्बन्ध में विल्सन की नीति अमेरिकी व्यापारियों की स्थिति के अनुकूल नहीं थी। उसने ''सतर्कतापूर्ण विलम्ब'' (Watchful Waiting). की नीति तथा समुद्री व्यापार पर रोक लगाने की नीति का अनुसरण किया, किन्तु राष्ट्रपति विल्सन के आदर्शवाद तथा उसके अपूर्ण सूचना पर आधारित कार्यक्रम ने मैक्सिको की समस्या को अधिक गम्भीर बना दिया।9 अप्रैल, 1914 ईसवी को जब मैक्सिको के ह्यूरता ने टेम्पिका में कुछ

अमेरिकी नौ सैनिकों को गिरफ्तार कर लिया तो विल्सन ने जल्दबाजी में बेराक्रुज (Beracruz) में नौ सैनिक उतार दिये। इससे अमेरिका और मैक्सिको के बीच कूटनीति सम्बन्ध समाप्त हो गये और युद्ध अवश्यसम्भावी होने लगा। परन्तु राष्ट्रपति विल्सन जो युद्ध की स्थिति टालना चाहता था, ने अर्जेन्टाइना, ब्राजील, चीली के सम्मेलन (ABC Conference) द्वारा प्रस्तावित मध्यस्थता के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। इस प्रस्ताव के अनुसार यह सिफारिश की गई कि हूरता को पदच्युत कर दिया जाय, मैक्सिको में एक अस्थाई सरकार का निर्माण किया जाये और अमेरिका पर बेराक्रूज के बन्दरगाह पर आधिपत्य स्थापित करने हेतु कोई दण्ड रूप राशि न लगाई जाये। परिणामत: हूरता को पदच्युत होने के लिए विवश होना पड़ा और केरेन्जा (Kerenza) की सरकार को मान्यता दे दी गई किन्तु फिर भी मैक्सिको में शांति स्थापित न हो सकी। जनवरी, 1916 ईसवी को 16 अमेरिकावासियों की हत्या कर दी गई। विल्सन ने ब्रिगेडियर जॉन जे. की अध्यक्षता में प्रतिशोध के लिए कुछ कदम उठाये। दो स्थानों पर अमेरिका और मैक्सिको के मध्य सशस्त्र संघर्ष हुए और अन्त में जुलाई 4, 1916 ईसवी को एक प्रकार का समझौता हुआ जिसके अनुसार समस्या के समाधान के लिए एक संयुक्त उच्चायुक्त की स्थापना का निर्णय लिया गया। अमेरिका ने अपनी सेना को मैक्सिको से पुन: वापस बुलाना शुरू कर दिया। 1 मार्च, 1916 ईसवी को केरेन्जा सरकार को वैधानिक मान्यता दे दी गई। इतिहासकारों के अनुसार मैक्सिको में विल्सन की नीति कई गलतियों के कारण सफल न हो सकी और उसके राष्ट्रपति काल का अधिकांश भाग इस समस्या को सुलझाने में व्यर्थ ही गुजर गया।

विल्सन ने पनामा विवाद का भी शांति से हल करना चाहा। जहाँ पर अमेरिका का प्रमुख हित पनामा नहर पर अपना आधिपत्य स्थापित कर अपने व्यापारिक हितों को सुरक्षित करना था। इस प्रश्न को लेकर पनामा और अमेरिका के मध्य कई बार संघर्ष हुए और 1913-14 ईसवी में राष्ट्रपति विल्सन ने कोलम्बिया से एक सन्धि कर पनामा घटना के सम्बन्ध में अपना खेद प्रकट करते हुए पच्चीस मिलियन डालर की राशि दण्ड के रूप में पनामा को देना स्वीकार किया। रूजवेल्ट के शब्दों में यह व्यवस्था धोखाधड़ी की सन्धि (Blackmail Treaty) थी और इसीलिए रिपब्लिकन सीनेटरों ने विल्सन की मृत्यु तक इसे स्वीकृत नहीं होने दिया। 1921 ईसवी में जाकर कांग्रेस ने दंड की अदायगी को स्वीकार किया, किन्तु किसी भी प्रकार की क्षमा याचना को अंगीकार नहीं किया।

यूरोपीय मामलों के प्रति दृष्टिकोण :

विल्सन अपने प्रथम राष्ट्रपति काल के अधिकांश वर्षों में गृह समस्याओं में व्यस्त रहा। विदेश नीति के सम्बन्ध में विदेश मन्त्री ब्रायन ने भी विल्सन को शांति समझौते (Cooling off Treaties) की ओर प्रेरित किया अमेरिका ने यूरोपीय समस्याओं की ओर विशेष ध्यान नहीं दिया। सिराजेवों में आस्ट्रियन आर्क ड्यूक की हत्या, बाल्कन समस्याएँ, आस्ट्रिया-हंगरी पर सर्बिया का आक्रमण आदि घटनाओं में कोई विशेष प्रभाव नहीं डाला तथा पार्थक्यवादी नीति का परित्याग करने के लिए 6 अप्रैल, 1917 ईसवी तक अमेरिका बाध्य नहीं हुआ।

अमेरिका और प्रथम विश्व युद्ध :

1. प्रथम विश्द युद्ध में प्रवेश के कारण :

राष्ट्रपति विल्सन प्रथम विश्वयुद्ध के प्रारम्भिक लगभग तीन वर्षों में अमेरिका को युद्ध से मुक्त रखने का प्रयत्न करता रहा, क्योंकि वह युद्ध का प्रारम्भ से ही विरोधी था और ऐसा मानता था कि युद्ध से किसी समस्या का कोई स्थाई समाधान नहीं मिलता इसलिए विश्व युद्ध की घोषणा के तुरन्त बाद राष्ट्रपति विल्सन ने विदेशी नीति के क्षेत्र में तटस्थता के दृष्टिकोण को दोहराया और उसने अमेरिकी जनता से विचार और कार्य दोनों दृष्टियों से युद्ध से पृथक् रहने की अपील की, किन्तु 1914 ईसवी के पश्चात् घटनाक्रमों में इतने तेजी से परिवर्तन हुआ कि अमेरिका के लिए तटस्थ रहना असम्भव सा हो गया और उसे युद्ध में भाग लेने के लिए विवश होना पड़ा।

घटनाक्रम की दृष्टि से 28 जून, 1914 ईसवी में आस्ट्रिया के आर्क ड्यूक फ्रांसिस फर्डिनेन्ड की सिराजेवो में हत्या के उपरान्त तथा जुलाई, 1914 में युद्धकारी राष्ट्रों के दो भागों में बँट जाने के कारण इनमें एक ओर बेल्जियम, फ्रांस, ब्रिटेन, रूस तथा इटली थे तो दूसरी ओर जर्मनी, आस्ट्रिया, हंगरी, बल्गेरिया, टर्की तथा अन्य केन्द्रीय शक्तियाँ थी-दोनों के बीच विश्व युद्ध आरम्भ हो गया। जब विल्सन ने युद्ध में तटस्थ रहने की घोषणा की तो राष्ट्र इसके बारे में एक मत था। केवल थोड़े से जर्मन-अमरीकी और आइरिश-अमेरिकी इसके विरुद्ध थे। लेकिन यह तटस्थता अन्त में असम्भव प्रमाणित हुई।

(i) यूरोप में नियुक्त राजदूतों के विचार - युद्ध की घोषणा के तुरंत बाद विल्सन ने यूरोप में राजदूतों का स्थानान्तरण किया। इतिहासकारों के अनुसार ये नये राजदूत राष्ट्रपति विल्सन की नीति की भांति अधिक बुद्धिवादी व आदर्शवादी थे। उदाहरणार्थ, ब्रिटेन में नियुक्त राजदूत पेज निष्पक्ष होने के बजाय ब्रिटिश मत का अधिक पक्षपती था जबकि जर्मनी में नियुक्त जीरॉड के प्रबल रूप से जर्मन-विरोधी था। इससे अमेरिका को युद्ध के घटनाचक्रों के बारे में उचित व निष्पक्ष धारणा बनाना कठिन हो गया और अमेरिका की दृष्टि धीरे-धीरे मित्र राष्ट्रों के पक्ष में सहानुभूतिपूर्ण होती चली गई।

(ii) जर्मन विरोधी प्रचार - युद्ध शुरू होने के बाद अमेरिका की जनता को जर्मन विरोधी प्रचार ने प्रभावित किया। वैसे तो युद्ध के पूर्व ही प्रशांत, चीन और कैरीबियन में जर्मनी की नीति, जर्मन सैन्य अधिकारियों के नृशंस कार्यों और जर्मन राजनीतिज्ञों के दंभपूर्ण वक्तव्यों ने अमेरिकनों को उनके विरुद्ध कर दिया था। बेल्जियम पर जर्मन के आक्रमण ने उन्हें और नाराज कर दिया। वे यह सोचने लगे कि यदि जर्मन सरकार, जो निरंकुशता के पक्ष में थी, ने यूरोप पर अधिकार कर लिया तो देर सवेर उन्हें लोकतन्त्रवादी अमेरिका के साथ संघर्ष करना पड़ेगा। जर्मन विजय के परिणामों से उत्पन्न भय में उनकी सहानुभूति को जो पहले से ही मित्र राष्ट्रों की ओर थी, और बढ़ा दिया।

(iii) पश्चिमी यूरोप के प्रजातन्त्रों के साथ अमेरिकी जनता की सहानुभूति - अमेरिका की जनता की सहानुभूति पश्चिमी यूरोप में प्रजातन्त्रों के साथ थी। वहाँ के अधिकांश लोगों की आशा थी कि ब्रिटेन, फ्रांस और बैल्जियम विजय होंगे। एलेन नेविन्स और हेनरी स्टील कौमेजर के अनुसार ''संस्कृति, परम्पराओं, समान संस्थाओं और समान दृष्टिकोण के सैंकड़ों सम्बन्ध ब्रिटिश जनता के साथ मौजूद थे।'' अतएव अमेरिका ने निष्पक्ष रहते हुए भी ब्रिटेन और फ्रांस को भारी राशियाँ ऋण में दीं। अमेरिकी उद्योग ने शीघ्रतापूर्वक एंग्लो-फ्रेंच के युद्ध की आवश्यकताओं के लिये अपने आप को सज्जित कर लिया। अमेरिकी बैंक मित्र राष्ट्रों के लिए खरीद करने वाले एजेंटों के रूप में कार्य करने लगे। अमेरिका को कपास, गेहूँ और माँस के लिये इंग्लैण्ड और फ्रांस में लाभदायक बाजार मिल गये।

(iv) आर्थिक हितों की सुरक्षा - युद्ध की घोषणा के साथ-साथ स्टाक व बोन्ड्स की कीमतें युद्ध पूर्व की दर पर आकर रुक गई और अमेरिकी कृषि-पदार्थ निर्यात, जो युद्ध के पूर्व वर्षों में द्रुतगति से बढ़ा था, 1915 ईसवी में जाकर युद्ध सामग्री के निर्यात में बदलना पड़ा। एक रिपोर्ट के अनुसार, अगस्त 1914 ईसवी से अप्रैल 1917 ईसवी के बीच अमेरिका को छः अरब डालर के युद्ध सम्बन्धी पदार्थ निर्यात करने पड़े। इस निर्यात वृद्धि ने आर्थिक दृष्टि में भुगतान और ऋण की समस्या को जन्म दिया। विदेश सचिव ब्रायाँ, किसी भी प्रकार के ऋण देने के पक्ष में नहीं था, क्योंकि वह ऋण देने की नीति को तटस्थता की नीति के विपरीत मानता था। दूसरी ओर, अक्टूबर, 1914 ईसवी में राष्ट्रपति विल्सन ने यह महसूस किया कि मित्र राष्ट्रों को ऋण देनें से अमेरिका की तटस्थता के ऊपर कोई विपरीत प्रभाव नहीं पड़ेगा और परिणामस्वरूप अमेरिकी बैंकिंग सिन्डीकेट ने 2.3 अरब डालर की राशि मित्र राष्ट्रों को बोन्ड्स (Bonds) के रूप में दे दी। इस आर्थिक नीति परिवर्तन से अमेरिका अनायास और अप्रत्यक्ष रूप से युद्ध की ओर अग्रसर होने लगा।

(v) ब्रिटेन द्वारा अमेरिका के झंडे के प्रयोग एवं जर्मनी द्वारा पनडुब्बियों का इस्तेमाल -1915 ईसवी के शुरू के दिनों में पूर्ण निषिद्ध वस्तुओं (Contraband) को लेकर अमेरिका और ब्रिटेन तथा ब्रिटेन व जर्मनी के मध्य नौ सैनिक गतिरोध उभरे। अमेरिका ने ब्रिटेन द्वारा तटस्थ राष्ट्रों के झंडे का प्रयोग तथा उसके डाक तार आदि की छानबीन पर तीव्र विरोध प्रकट किया और उसे लन्दन घोषणा के विरुद्ध बतलाया। ब्रिटेन द्वारा इस प्रकार की छानबीन उसके गुप्त व्यापारिक हित के भी विरुद्ध था। उधर जर्मनी को ब्रिटेन द्वारा खाद्य पदार्थों को भारी तादाद में समुद्री मार्ग से मँगवाना तथा समुद्री मार्ग पर नियंत्रण करना स्वीकार नहीं था। वह यह भी कभी स्वीकार करने को तैयार नहीं था कि ब्रिटेन तटस्थ राष्ट्रों के झण्डों को तैयार करे। इस समस्या पर दोनों के बीच गतिरोध और बढ़ गया तथा जर्मनी ने अपनी पनडुब्बियों को ब्रिटिश समुद्री नावों को डूबोने का आदेश दे दिया। फलस्वरूप 28 मार्च, 1915 ईसवी को ब्रिटिश सम्रुदी पोत फलाबा (Falaba) आयरलैण्ड के किनारे पर डुबो दिया गया जिनमें एक अमेरिकी नागरिक की मृत्यु हो गई। 1 मई को एक अमेरिकी पोत गुलफाइट (Gulfight) पर जर्मनी द्वारा हमला किया गया जिसमें केप्टन सहित तीन नाविकों की मत्यु हो गई। इन घटनाओं से अमेरिकी जनता में एक

ओर शोभ तथा दूसरी ओर तीव्र प्रतिक्रिया हुई। किन्तु फलाबा घटना के ठीक छ: दिन बाद एक ओर ब्रिटिश पोत लूसिटानिया (Lusitania) 7 मई, 1915 को जर्मनी द्वारा डुबोया गया जिसमें अन्य व्यक्तियों के अतिरिक्त 128 अमेरिकी नागरिक भी मारे गये। इस घटना को अमेरिका ने 'सुनियोजित मानव हत्या' की संज्ञा दी और कई अमेरिकी नेताओं ने जिसमें भूतपूर्व राष्ट्रपति थियोडोर रूजवेल्ट भी सम्मिलित थे, जर्मनी के विरुद्ध पूर्ण विरोध तथा प्रतिशोध के लिए क्रुद्ध जनमत तैयार किया। यहाँ तक कि अमेरिका के राजदूत पेज ने भी तुरन्त जर्मनी पर युद्ध घोषणा के लिए दबाव डाला। किन्तु राष्ट्रपति विल्सन इस पर भी विचलित नहीं हुआ और उसने तटस्थ राष्ट्रों के अधिकारों (Neutral Rights) का पुन: स्पष्टीकरण किया और स्थिति को उत्तेजित होने से बचा लिया। इस घटना के कुछ दिन पश्चात् फिर 19 अगस्त, 1915 ईसवी को एक और ब्रिटिश जहाज अरेबिक (Arabic) डूबो दिया गया जिसमें मरने वालों में 2 अमेरिकी भी शामिल थे।

(vi) जर्मनी के हृदय परिवर्तन के प्रयत्नों में असफलता - इसके पश्चात् विल्सन ने जर्मन हृदय परिवर्तन की कूटनीति की ओर अमेरिकी जनता को उन्मुख किया। इसके साथ-साथ वह अमेरिकी मध्यस्थता तथा नि:शस्त्रीकरण के लिए भी बराबर प्रयास करता रहा। 22 फरवरी, 1916 ईसवी में हाउस-ग्रे समझौता (House-Grey Agreement) किया गया जिसमें यह व्यवस्था की गई थी कि युद्ध समाप्ति के लिए एक सम्मेलन बुलाया जाये और जर्मनी पर यह जोर डाला जाये कि वह भी इसमें भाग ले। इस समझौते में अप्रत्यक्ष रूप से यह निहित था कि यदि सम्मेलन के निर्णय के बावजूद भी जर्मनी युद्ध जारी रखेगा तो अमेरिका उस युद्ध में मित्र राष्ट्रों की ओर से भाग लेगा। राष्ट्रपति विल्सन ने समझौते को कुछ संशोधनों के साथ स्वीकार किया, किन्तु उसका कोई विशेष परिणाम न निकला। दिसम्बर, 1915 ईसवी को एक और मित्र राष्ट्रीय पोत परसिया (Persia) भूमध्य सागर में डूबो दिया गया इस पर विदेश सचिव लांसिंग (Lansing) ने ब्रिटिश और जर्मन राष्ट्रों के लिए एक नई योजना बनाई जिससे इंग्लैण्ड अपने व्यापारिक जहाजों को सशस्त्र न कर सके और जर्मनी उन्हें बिना चेतावनी के डूबो न पावे। इस योजना के साथ-साथ अमेरिका के जैफ मैक्लेमोर (Jeff McLemore) ने यह प्रस्ताव रखा कि सरकार अमेरिकी नागरिकों की अटलांटिक में सशस्त्र जहाजों में यात्रा पर पाबन्दी लगा दे। इस प्रस्ताव से चिन्तित होकर राष्ट्रपति विल्सन ने 24 फरवरी को यह घोषणा की कि अमेरिकी सरकार किसी भी प्रकार से अमेरिकी जनता के अधिकारों का न्यूनीकरण स्वीकार नहीं कर सकती। इस निर्णय के बाद ही फिर जर्मनी ने एक नि:शस्त्र फ्रेंच पोत ससैक्स (Sussex) पर हमला किया और उसे नौ सैनिक पोत बता कर जर्मनी ने भुलावे में डालने की कोशिश की।

(vii) जर्मनी के समझौते के प्रस्ताव - 1916 ईसवी में राष्ट्रपति विल्सन ने मिडिल वेस्ट (Middle West) की यात्रा की और उस दौरान उसने यह प्रचार किया कि अमेरिका युद्ध के लिए तैयार नहीं है, किन्तु राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए अवश्य प्रयत्नशील है। विल्सन ने इसी संदर्भ में "बिना विजय की शांति" (Peace Without Victory) की भी काफी विस्तार से चर्चा की। चर्चा के दिनों में राष्ट्रपति विल्सन को जर्मनी द्वारा दो कठोर शांति प्रस्ताव भेजे गये। पहला प्रस्ताव 31

जनवरी, 1917 ईसवी को भेजा गया जिसमें जर्मनी ने यह सुझाव रखा कि वह बेल्जियम को पुनः स्थापित करने तथा उसके द्वारा विजित भूमि को लौटाने के लिए तैयार है, बशर्ते कि जर्मनी की सीमाओं का पुनर्वियोजन स्वीकार किया जाये, समुद्रों को खुला छोड़ा जाये तथा युद्ध के दौरान मरने वाले जर्मन नागरिकों के बदले मुआवजा दिया जाये। दूसरा प्रस्ताव जर्मनी ने 1 फरवरी को भेजा जिसमें उसने अपने पहले प्रस्ताव की शर्ते बदल दी। इस प्रस्ताव में उसने जर्मन युद्धपोतों को सभी प्रकार के शत्रु पोतों (तटस्थ तथा युद्धाकारी) को डूबोये जाने को न्यायसंगत बतलाते हुए अमेरिका को यह रियायत दी थी कि जर्मनी अमेरिका के एक पोत को एक सप्ताह में एक बार जाने के लिए स्वीकृति देता है, यदि वह पोत निषिद्ध वस्तुओं को न ले जाये तथा लाल व सफेद धारी वाला झण्डा फहराये हुए हो। राष्ट्रपति विल्सन को इन प्रस्तावों ने बड़ा शोभ पहुँचाया और क्षुब्ध होकर उसने जर्मनी से कूटनीतिक सम्बन्ध विच्छेद करने की धमकी दी। इधर जर्मनी की आक्रामक नीति से भयभीत होकर अमेरिकी व्यापारियों ने सभी व्यापारिक पोतों का भेजना रोक दिया तथा अमेरिकी निर्यात को भी सीमित कर दिया। परिणामतः इसने अमेरिका तथा ब्रिटेन दोनों की आर्थिक स्थिति को विकट बनाने तथा युद्ध की ओर अग्रसर करने में बल दिया।

(viii) जिम्मरमैन तार – 25 फरवरी, 1917 ईसवी को अमेरिका के राजदूत पेज ने राष्ट्रपति विल्सन को जर्मनी द्वारा भेजे गये एक तार (Zimmerman Telegam) की प्रतिलिपि भेजी। यह तार जर्मनी के विदेश मंत्री द्वारा मैक्सिको के मन्त्री वॉन एक्हार्ट (Van Eckhart) को भेजा गया था जिसे ब्रिटिश अधिकारियों ने बीच में ही अन्तस्थ कर इसकी सम्पूर्ण जानकारी 23 फरवरी को राजदूत पेज की सहायता से अमेरिका को भेज दी। मूल रूप से तार में यह कहा गया था कि जर्मनी मैक्सिको के साथ युद्ध व शांति साथ-साथ चाहता है और युद्ध समाप्ति पर मैक्सिको को टैक्सास, न्यू मैक्सिको तथा रिजोना को जीतने में सहायता का वायदा करता है। संक्षेप में, इस तार का अभिप्राय जर्मनी का मैक्सिको की सहायता से अमेरिका पर आक्रमण करना था। 1 मार्च, 1917 ईसवी को राष्ट्रपति विल्सन ने अपनी नीति के प्रति पार्थक्यवादियों का समर्थन प्राप्त करने हेतु इस तार को प्रकाशित कर दिया तथा 9 मार्च को उसने अमेरिकी पोतों को सशस्त्र करने का आदेश भी दिया।

अमेरिका का युद्ध में प्रवेश :

इन्हीं घटनाओं के दौरान एक और घटना हुई। 12 मार्च, 1917 ईसवी को रूस में क्रान्ति हुई और साम्यवादी क्रान्तिकारियों ने जार की निरंकुश सरकार का तख्ता उलट दिया। इससे अमेरिकी पूँजीवादी व्यवस्था को गहरा धक्का पहुँचा। राष्ट्रपति विल्सन ने तुरंत अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि यदि किसी भांति रूस तथा जर्मनी की कार्यवाहियों को रोका जा सके तो हमें युद्ध में भाग लेना चाहिए। विल्सन ने 20 मार्च को युद्ध-प्रस्ताव पर अपने सहयोगियों से चर्चा की और 4 अप्रैल को अमेरिकी सीनेट ने 82 : 6 के अनुपात से उसके युद्ध प्रस्ताव का अनुमोदन कर दिया। 6 अप्रैल, 1917 ईसवी को अमेरिका ने विश्व युद्ध में मित्र राष्ट्रों की ओर से प्रवेश किया।

इन घटनाओं से यह सुस्पष्ट है कि अमेरिकी विदेशी नीति लगातार तटस्थता तथा पार्थक्यवाद को बनाये रखने के लिए संघर्ष करती रही, किन्तु लगातार कुछ घटनाएँ ऐसी हुई, विशेषकर जैसे

जर्मनी द्वारा जहाज पोतों का बराबर डूबोये जाना, अमेरिकी व्यापार को ठेस पहुँचाना, मित्र राष्ट्रों द्वारा अमेरिका की सहानुभूति के लिए प्रयास करना तथा जिम्मरमैन तार का भेजना आदि जिन्होंने अमेरिका को युद्ध में भाग लेने के लिए विवश कर ही दिया।

विल्सन द्वारा अमेरिका के युद्ध उद्देश्यों की व्याख्या :

युद्ध की घोषणा के उपरान्त अमेरिकी सरकार ने अपने आर्थिक स्रोतों और सैनिक शक्ति को जर्मनी के विरुद्ध प्रयुक्त करने के लिए कदम उठाये। 1 मई, 1918 ईसवी को रूस में स्थित केरेन्स की सरकार ने युद्ध उद्देश्यों की घोषणाएँ की जिसमें आत्मनिर्भरता के आधार पर विश्व शांति स्थापित करना तथा सम्पूर्ण क्षतिपूर्ति का परित्याग व नि:शस्त्रीकरण मुख्य थे। अमेरिका में भी इसी के समान युद्ध उद्देश्यों की माँग की गई। 8 जनवरी, 1918 ईसवी को राष्ट्रपति विल्सन ने अपने चौदह सूत्री उद्देश्यों की घोषणा की। यह चौदह सूत्रीय कार्यक्रम कर्नल हाउस से हुई वार्ता और बुद्धिवादियों द्वारा तैयार की गई एक इन्क्वायरी (The Enquiry) पर आधारित थे। संक्षिप्त में यह सिद्धान्त निम्न थे –

(1) गुप्त कूटनीतिक वार्ता के स्थान पर खुले ढंग से खुले करार किये जायें।

(2) सामुद्रिक यातायात पर सभी का समान अधिकार हो।

(3) सभी आर्थिक अवरोधों की समाप्ति कर दी जाये।

(4) राष्ट्रों द्वारा नि:शस्त्रीकरण उस सीमा तक कर दिया जाये जितना गृह रक्षा के लिए अनिवार्य हो।

(5) निष्पक्षता के साथ उपनिवेशों का बँटवारा किया जाये और उसमें जनता के हितों को प्रधानता दी जाये।

(6) सभी प्रदेशों को खाली किया जाकर उनकी स्वाधीनता को स्वीकृत किया जाये।

(7) बेल्जियम की प्रभुत्ता को पुन: मान्यता दी जाये।

(8) एल्सास व लॉरेन फ्रांस को लौटा दिये जाये।

(9) इटली की सीमा में राष्ट्रीयता के आधार पर परिवर्तन किया जाये।

(10) आस्ट्रिया और हंगरी के राष्ट्रों को स्वतन्त्र विकास का मौका दिया जाये।

(11) रूमानिया, सर्बिया और मान्टिनीग्रो को खाली किया जाये तथा सर्बिया को समुद्री मार्ग दिया जाये।

(12) बाल्कन प्रायद्वीप में तुर्की शासन के अन्तर्गत जो राष्ट्रीय समुदाय हैं, उन्हें विकास का अवसर दिया जाये।

(13) स्वतन्त्र पोल राज्य की स्थापना की जाये और इसे स्वतन्त्र समुद्री मार्ग दिया जाये।

(14) राष्ट्र संघ की स्थापना की जाये।

इसके अतिरिक्त राष्ट्रपति विल्सन ने 11 फरवरी, 1918 ईसवी को चार सिद्धान्तों, 14 जुलाई, 1918 ईसवी को चार उद्देश्यों, तथा 27 दिसम्बर, 1918 ईसवी को पाँच विशेषताओं की घोषणा की। विल्सन के 14 सूत्रीय कार्यक्रम का अमेरिकी उदारवादियों और श्रमिकों ने स्वागत किया। यहाँ तक कि जर्मन लोगों ने भी चौदह सूत्रीय कार्यक्रम तथा पाँच विशेषताओं जिनमें लोकतन्त्रीय जर्मनी का समानता के आधार पर निर्माण करने का वायदा किया था, स्वागत किया। इन सिद्धान्तों ने युद्धोत्तर काल में जनमत निर्माण में एक प्रभावशाली प्रचार का भी कार्य किया। इसके अतिरिक्त युद्ध की अवधि में राष्ट्रपति विल्सन द्वारा कई गृह कानून भी पारित किये गये। इन अधिनियमों ने जासूसी अधिनियम (Espionage Act), राजद्रोह अधिनियम (Sedition Act) आदि प्रमुख थे।

अमेरिका की युद्ध में भूमिका :

यद्यपि 1916 ईसवी की ग्रीष्म ऋतु में विल्सन ने कांग्रेस से सेना व नाविक बेड़े में वृद्धि के लिए स्वीकृति ले ली थो, किन्तु अमेरिका के युद्ध में प्रवेश तक इस सम्बन्ध में विशेष कार्य नहीं हुआ था अतः लगभग एक वर्ष तक अमेरिका मित्र राष्ट्रों को ठोस सहायता नहीं पहुँचा सका। अमेरिका के सैनिक कूटनीतिज्ञों का यह अनुमान था कि युंद्ध कम से कम 1919 ईसवी के अन्त तक चलेगा, किन्तु जिस समय नवम्बर, 1918 ईसवी में जर्मनी ने आत्मसमर्पण किया उस समय तक अमेरिका युद्ध के लिए तैयार हो पाया था।

अमेरिका की सरकार ने युद्ध के लिए सत्ताईस लाख पचास हजार व्यक्तियों की भर्ती की। युद्ध आरम्भ होने के समय उसके पास पिचहत्तर हजार सैनिक थे। इनके अतिरिक्त बारह लाख पचास हजार व्यक्तियों ने स्वयं को युद्ध के लिए समर्पित किया। इस प्रकार कुल मिलाकर उसके पास सैंतालीस लाख पचास हजार सैनिक हो गये। लेकिन उनमें से अधिकांश को वह युद्ध स्थलों को नहीं भेज सका। किन्तु अमेरिका ने आर्थिक क्षेत्र में मित्र राष्ट्रों को भरपूर सहायता पहुँचाई। घरेलू उद्योगों का तीव्र गति से विकास किया गया, काफी मात्रा में अस्त्र-शस्त्र बनाये गये तथा खाद्य पदार्थों व अनाजों के उत्पादन में वृद्धि की गई। उत्पादन में हुई वृद्धि को मित्र राष्ट्रों को पहुँचाया गया तथा ज़नता से ऋण लेकर उन्हें ऋण दिया गया।

लगभग एक वर्ष तक जर्मन पनडुब्बियों को मित्र राष्ट्रों के जहाज डुबोने से अमेरिका न रोक सका लेकिन 1918 ईसवी के मध्य में अमेरिका और ब्रिटेन के जहाजों ने जर्मन नाविक बेड़े को ब्रिटेन की नाकेबन्दी करने से रोकने में सफलता प्राप्त की। इसी प्रकार जून, 1917 ईसवी में जान जे. परशिंग (John J. Pershing) के नेतृत्व में फ्रांस में भेजी गयी सेना भी पूर्ण रूप से लगभग एक साल बाद सक्रिय हुई। 21 मार्च, 1918 ईसवी को जर्मनी ने मित्र राष्ट्रों की रक्षा पंक्तियों पर लगातार हमले किये, किन्तु अमेरिका की बढ़ती हुई सैनिक सहायता के कारण वे सफल न हो सके। नवम्बर के द्वितीय सप्ताह में जर्मन सेनाएँ तितर-बितर होने लगी और उसकी हार निश्चित हो गई। इस युद्ध में अमेरिका के एक लाख बारह हजार चार सौ सैनिक मारे गये तथा उसमें इक्कीस हजार आठ सौ पचास मिलियन डालर राशि खर्च हुई। युद्ध से राष्ट्रपति विल्सन और

जनता दोनों ही काफी थक चुके थे। किन्तु फिर भी सभी मित्र राष्ट्रों को अपने चौदह सूत्रीय कार्यक्रम की ओर बराबर प्रेरित करता रहा।

युद्धोपरान्त अमेरिका की विदेश नीति :

विश्व युद्ध की समाप्ति पर राष्ट्रपति विल्सन की विदेश नीति के प्रमुख उद्देश्य निम्न थे-

पहला : विश्व में अमेरिकी पूँजीवाद का नेतृत्व स्थापित करना। इसका अभिप्राय यह था कि सभी शांति समझौतों में अमेरिका अपने आर्थिक हितों की रक्षा करना चाहता था। इस हेतु वह प्रत्येक स्थान पर अमेरिका के लिए आर्थिक सुविधाएँ प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील था।

दूसरा : राष्ट्रपति विल्सन प्रशांत महासागर में ब्रिटिश और जापानी नौ सेना शक्ति को अपने बराबर संतुलित करना चाहता था। सुदूर पूर्व के सन्दर्भ में आगे वर्णित विश्लेषण से यह स्पष्ट हो जायेगा कि किस प्रकार विल्सन जापान के मन्सूबों से भयभीत था और वह सुदूर पूर्व में शक्ति संतुलन लाने के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहा।

तीसरा : राष्ट्रपति विल्सन अपने द्वारा निर्मित चादह बिन्दुओं के आधार पर सभी शांति समझौते करना और युद्धोपरान्त निर्णय लेना चाहता था।

चौथा : विल्सन की विदेश नीति का प्रमुख दृष्टिकोण स्थाई विश्व शांति के लिए राष्ट्रसंघ का निर्माण करना था। विल्सन की यह तीव्र इच्छा थी कि राष्ट्र संघ सम्पूर्ण शांति समझौतों का प्रमुख भाग बने। विल्सन ने स्वयं राष्ट्रसंघ के निर्माण हेतु घटित आयोग की अध्यक्षता की। उसके व्यक्तित्व की छाप राष्ट्र संघ के गठन प्रारम्भ से अन्त तक देखी जा सकती है। कुछ इतिहासकारों के मत में इसलिए राष्ट्रपति विल्सन राष्ट्रसंघ का ईश्वर पिता (God Father) माना जाता है।

पाँचवाँ: इसके अतिरिक्त राष्ट्रपति विल्सनं ब्रिटेन और फ्रांस द्वारा मध्य एशियों के न्यासित क्षेत्रों (Mandate Areas) में मुक्त द्वार नीति का समर्थन प्राप्त करवाना चाहता था। वह मुनरो सिद्धान्त को अन्तर्राष्ट्रीय मान्यता दिलवाने के लिए प्रयत्नशील था तथा पश्चिमी जगत हेतु प्रस्तावित पान-अमेरिकन समझौता (Pan-American Pact) को अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था का आधार बनाना चाहता था।

पेरिस शांति सम्मेल में विल्सन की भूमिका :

प्रथम महायुद्ध के अन्त हो जाने पर विजयी राष्ट्रों के समक्ष स्थाई शांति कायम करने की समस्या उपस्थित हुई। यह तय किया गया कि इसके लिए एक शांति सम्मेलन पेरिस में बुलाया जाये। अमेरिका की ओर से स्वयं विल्सन ने इसमें भाग लेने का निश्चय किया लेकिन अपने देश की आन्तरिक समस्याओं के कारण वे दिसम्बर 1918 ईसवी के पहले पेरिस नहीं पहुंच सकते थे। अन्त में 1919 ईसवी के आरम्भ में पेरिस में शान्ति सम्मेलन आरम्भ हुआ। इसमें रूस

को नहीं बुलाया गया तथा पराजित राष्ट्रों के प्रतिनिधियों को भी सम्मिलित नहीं किया गया। शीघ्र ही यह निर्णय लिया गया कि पराजित राष्ट्रों से की जाने वाली संधियों से सम्बन्धित सभी कार्य चार व्यक्तियों की एक परिषद् करेगी। ये व्यक्ति थे – 1. विल्सन 2. ब्रिटेन के प्रधानमंत्री लायड जार्ज, 3. फ्रांस का प्रधानमंत्री क्लिमेंशो (Clemenceou), और 4. इटली के प्रधान मंत्री औरलैंडो (Orlando)। इन चारों के अपने अलग-अलग दृष्टिकोण व स्वार्थ थे। मुख्य रूप से विल्सन, जिसे इस सम्मेलन में प्रमुख स्थान प्राप्त था के सम्मुख दो उदेद्श्य थे। राष्ट्रसंघ की स्थापना और आत्मनिर्णय सिद्धान्त को मान्यता। लायड जार्ज लूट के माल में से अपने देश के लिए अधिक से अधिक हिस्सा लेना चाहता था। इसके साथ ही वह जर्मनी का एक नाविक प्रतिद्वन्दी के रूप में सर्वनाश करना चाहता था और फ्रांस को इतना शक्तिशाली नहीं बनने देना चाहता था जिससे यूरोप का शक्ति सन्तुलन बिगड़ जाये। वह विल्सन के चौदह सूत्रों में से कुछ को मानने को तैयार था। क्लीमेंशो के सामने केवल एक ही उद्देश्य था कि वह जर्मनी को पूर्ण रूप से कुचल देना चाहता था। वह विल्सन के चौदह सूत्रों को नहीं मानता था। उसके अनुसार परमात्मा ने दस आदेश काफी समझे, किन्तु विल्सन को चौदह की आवश्यकता पड़ी। औरलैंडो चाहता था कि युद्ध काल में की गई गुप्त सन्धियों के अनुसार इटली को दिये गये वचन पूर्ण किये जाये, किन्तु विल्सन के विरोध के कारण कुछ समय बाद वह पेरिस से चला गया।

वास्तव में विल्सन के चौदह सूत्रों को लागू करने में सबसे बड़ी अड़चन वे गुप्त सन्धियाँ थी जो युद्ध के दिनों में मित्र राष्ट्रों में एक दूसरे के साथ की थी। इसके अतिरिक्त अन्य तीन देशों के राजनीतिज्ञ उसके द्वारा प्रतिपादित चौदह सूत्रों को आदर्शवाद पर आधारित मानते थे। अतः उन्होंने उनको अपनी स्वीकृति नहीं दी। फलस्वरूप सन्धि वार्ता के समय विल्सन व अन्य प्रतिनिधियों में कई मतभेद पैदा हुए। यहाँ तक कि विल्सन ने एक दो बार सम्मेलन से चले जाने की धमकी भी दी। विल्सन को यूरोपीय देशों की भूगोल व राजनीति का भी पर्याप्त ज्ञान नहीं था। अतः वह यूरोप के देशों की सीमाओं के निर्धारण में प्रभावशाली सलाह नहीं दे सका। ऐसी परिस्थितियों में विल्सन ने राष्ट्र संघ के निर्माण और उसको शांति सन्धि का एक अंग बनाने पर विशेप जोर दिया। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए विल्सन को शांति समझौते की अवधि में बहुत से परिवर्तन करने पड़े। उसे क्षतिपूर्ण सम्बन्धी ब्रिटिश और फ्रांसीसी माँगों को स्वीकार करना पड़ा जो कई प्रकार से चौदह सूत्रीय सिद्धान्तों के प्रतिकूल थी। इसके अतिरिक्त उसने जर्मनी के विरुद्ध मित्र राष्ट्रों के अन्य प्रस्तावों जैसे – असैन्यकरण, राईन का पश्चिमी भाग पर अधिकार और एंग्लो- फ्रेन्च-अमेरिकिन सुरक्षा समझौता आदि की भी स्वीकृति देनी पड़ी। युद्धोपरान्त समझौतों में विल्सन की सबसे बड़ी उपलब्धि राष्ट्रसंघ थी। किन्तु अन्य निर्णयों पर विल्सन की मित्र राष्ट्रों तथा शत्रु राष्ट्रों और यहाँ तक कि अमेरिका में भी तीव्र आलोचना की गई। जापान, इटली तथा फ्रांस तक भी शांति समझौतों से बिल्कुल सन्तुष्ट नहीं थे। वर्साय सन्धि द्वारा जर्मनी का विभाजम तथा उस पर लगाये गये 'युद्ध अपराध' की जिम्मेदारी क्षतिपूर्ति की अदायगी के रूप में माँगी गई राशि से जर्मनी तक का अमेरिकी आदर्शवाद तथा शान्तिवाद में विश्वास उठ गया। स्वयं अमेरिका में भी विल्सन की तीव्र आलोचना हुई। अमेरिका में रहने वाले आयरिश निवासियों ने विल्सन पर

यह आक्षेप लगाया कि उसे एक स्वतन्त्र आयरलैण्ड के निर्माण के लिए पेरिस सम्मेलन में जोर नहीं लगाया। जर्मनी पर थोपी गई वर्साय संधि के विरुद्ध विल्सन के उदारवादी समर्थकों तक में भी प्रबल प्रतिक्रिया हुई। उनके शब्दों में यह सन्धि 'एक नरक का घर' (Hellis Brew) थी। राष्ट्रपति विल्सन के विरुद्ध सबसे बड़ी प्रतिक्रिया अमेरिकी सीनेट में हुई। 10 जुलाई, 1919 ईसवी को राष्ट्रपति विल्सन ने यह कहते हुए कि ''हम इसे अस्वीकृत कर दें और विश्व का हृदय विदीर्ण कर दे।'' (We reject it and break the heart of the world)। वर्साय सन्धि को अनुमोदन के लिए प्रस्तावित किया किन्तु सीनेट में विल्सन के विरोधियों ने, जिनमें हिरम डब्ल्यू. जान्सन (Heram W. Johnson), विलियम ई. ब्रोरह (William E. Borah) और रोबर्ट ला फोले प्रमुख थे, सन्धि और राष्ट्र संघ के बहिष्कार और अस्वीकृति के लिए बड़ी कटु शब्दों में आलोचना की। हेनरी केबट लाज (Henry Cabot Lodge) ने सन्धि की स्वीकृति में सभी प्रकार की बाधाएँ उपस्थित करने की क़ोशिश की। लाज तो राष्ट्र संघ में अमेरिकी सदस्यता कुछ शर्तों के अन्तर्गत ही लेने के पक्ष में था, किन्तु इसके विपरीत राष्ट्रपति विल्सन सन्धि की सीमाओं के अन्तर्गत स्वीकृति प्राप्त कराने की अपेक्षा अस्वीकृति के पक्ष में अधिक था। 19 नवम्बर, 1919 इसवी को जब इस पर मतदान हुआ तो पचपन सदस्यों ने विरोधी पक्ष में तथा अड़तीस सदस्यों ने पक्ष में समर्थन दिया और सन्धि अस्वीकृत कर दी गई।

विल्सन की सुदूर पूर्व की नीति :

सुदूर पूर्व में अमेरिका की विदेश नीति ''अत्यन्त सतर्कता'' के सिद्धान्त पर आधारित थी। इस क्षेत्र में अमेरिका उदासीनता या पार्थक्यवाद का दृष्टिकोण अपनाने को बिल्कुल तैयार नहीं था। प्रथम युद्ध के प्रारम्भ होने पर राष्ट्रपति विल्सन का सबसे बड़ा भय यही था कि कहीं जापान पूर्व में विस्तार द्वारा इस युद्ध का लाभ न उठा ले। जापान के विस्तारवादी इरादों पर रोक लगाने के लिए उसने शक्ति सन्तुलन की नीति अपनाई। उधर जापान ने युद्ध काल में चीन के शाण्टुंग क्षेत्र को, जो जर्मनी के अधीन था, छीन लिया। इसके पश्चात् 1915 ईसवी में जापान अपनी इक्कीस माँगों के आधार पर चीन को अपना संरक्षित प्रदेश के रूप में प्राप्त करने की ओर अग्रसर हुआ, किन्तु जापान के उक्त इरादों की प्राप्ति में सबसे बड़ी अड़चन अमेरिका ही था, क्योंकि अमेरिका चीन की एकता को विघटित करने वाली कोई भी संधि या समझौता मुक्त द्वार नीति की समाप्ति अथवा चीन में अमेरिकी सन्धि अधिकारों को खत्म करने की किसी भी नीति को मान्यता देने के लिए तैयार न था। 1916-17 ईसवी के मध्य जापान ने मित्र राष्ट्रों से बहुत सी कूटनीतिक गुप्त सन्धियाँ कीं और उसे उत्तरी प्रशान्त महासागर और शाण्टुंग में मान्यता प्राप्त हो गई। इससे अमेरिका को सुदूरपूर्व के क्षेत्र में धक्का पहुँचा। ऐसी स्थिति में अमेरिका के पास केवल दो ही उपाय थे कि या तो वह युद्ध में सम्मिलित हो जाये या जापान से शान्ति समझौते द्वारा अपने हितों की रक्षा करे। चूंकि अमेरिका युद्ध में सम्मिलित होने के पक्ष में नहीं था, उसने 2 नवम्बर, 1917 ईसवी को जापान से लान्सिंग ईशी समझौता (Lansing Ishii Agreement) किया। इस समझौते के अनुसार अमेरिका ने जापान को चीन में विशेष हितों को मान्यता देना स्वीकार किया। तत्कालीन राष्ट्र हित की प्राप्ति के कारण इस समझौते का दोनों देशों में स्वागत हुआ। लान्सिंग ने

इस समझौते को युद्ध की समाप्ति कर एक अन्तरिम व्यवस्था के रूप में उचित उपाय माना जबकि जापान की दृष्टि में इस समझौते ने जापान के चीन में प्रवेश में अमेरिकी व्यवधान को दूर कर दिया। ई.एच.कार के अनुसार ''प्रथम विश्व युद्ध में जिस जापान ने नाममात्र से कुछ ही अधिक सैनिक गतिविधियाँ की थी, वही जापान युद्ध समाप्त होने के बाद प्रशान्त महासागर के क्षेत्र में एक शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में उस समय सामने आया।'' वर्साय सन्धि के अनुसार जर्मनी ने इसे चीन के शाण्टुंग प्रान्त में स्थित कियोचाओ (Kiaochow) नामक पट्टाक्रमित क्षेत्र (Leased Territory) मिला। यह क्षेत्र हाथ से निकल जाने के कारण ही चीन ने सन्धि पर हस्ताक्षर करने से इन्कार कर दिया था। इसके साथ ही साथ जापान को उत्तरी प्रशान्त सागर स्थित जर्मनी के भूतपूर्व द्वीपों का संरक्षण भी दिया गया था। उसको यदि छोड़ दिया जाये तो चीन की सीमा पर केवल जापान ही इस एक समय बड़ा राष्ट्र था। सभी ओर जर्मनी बेड़ों के एक साथ ही नष्ट हो जाने के कारण जापान सुदूर पूर्व में ही सबसे अधिक शक्तिशाली समुद्री बेड़े वाला राष्ट्र नहीं रहा गया था अपितु संसार में भी वह तीसरे नम्बर की समुद्री ताकत हो गया था। जापान से चीन को खतरे की आशंका से और प्रशान्त महासागर में सामुद्रिक प्रभुत्व स्थापित करने के जापान के प्रयत्नों से अमेरिकी पर्यवेक्षकों को बहुत चिन्ता हुई।

राष्ट्रपति विल्सन की विदेश नीति के विवेचन से यह स्पष्ट है कि उसने अमेरिका को पार्थक्यवाद से थोड़ा हट कर अन्तर्राष्ट्रीयवाद की ओर अग्रसर किया। उसने विदेश नीति में आदर्शवाद और यथार्थवाद का समन्वय किया। विदेशी नीति के क्षेत्र में उसकी सबसे बड़ी देन खुली कूटनीति (Open Diplomacy), सम्मेलन की कूटनीति (Diplomacy by Conference), अन्तराष्ट्रीय संघ पर आधारित कूटनीति (Diplomacy Based Upon International Organisation) तथा लोकतन्त्रीय विदेश नीति (Democratic Diplomacy) अर्थात् जनमत पर आधारित कूटनीति की शुरुआत करना था। यह निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है कि विल्सन ने विदेश नीति को सैद्धान्तिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण मोड़ दिया यद्यपि व्यवहारिक दृष्टि से वह पूर्णतः सफल नहीं हो सका। इतिहासकारों के अनुसार '' यदि युद्ध के पश्चात् वह गम्भीर रूप से बीमार न होता तो सम्भवतः वह सीनेट की स्वीकृति प्राप्त करने में सफल हो जाता।'' किन्तु विल्सन की विदेश नीति में कुछ कमियाँ भी थी। उसकी नीति में आदर्शवाद का पुट अधिक होने से अमेरिकी हित की यथार्थ व व्यवहारिक दृष्टि से रक्षा न हो सकी। यही कारण था कि उसके पद त्याग के पश्चात् अमेरिका की विदेश नीति में पार्थक्यवाद का पुनः उदय हुआ। लैटिन अमेरिका और सुदूरपूर्व में उसकी नीति ने कुछ अन्य समस्याओं को उत्पन्न किया। जो आगे के राष्ट्रपतियों के लिए अत्यधिक जटिल सिद्ध हुई। ग़थोर्न हार्डी के अनुसार, राष्ट्रपति विल्सन के द्वारा निर्मित राष्ट्र संघ अमेरिकी की अनुपस्थिति में ''एक बालक यूरोप के द्वार पर अनाथों की भांति छोड़ दिया गया था।'' विल्सन की विदेश नीति और चौदह सूत्रीय कार्यक्रम यूरोपीय कूटनीति के झंझावातों के समक्ष एक अल्पकालीन अस्थाई प्रवृत्ति के रूप में थे।

□□□

अध्याय-20

अमेरिका के अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध (1921-33 ईसवी)

□ सी.एम. जैन

विल्सन के कार्यकाल में अमेरिका को विश्व की राजनीति में सक्रिय भाग लेना पड़ा। यूरोप के प्रजातन्त्रीय राष्ट्रों की मदद के लिए अमेरिका ने विश्व युद्ध में भाग लिया। विल्सन ने स्थायी शान्ति स्थापित करने हेतु अपने प्रसिद्ध चौदह सूत्रों को प्रतिपादित किया तथा पेरिस शांति में सम्मेलन में उन पर आधारित शान्ति व्यवस्था स्थापित करने का प्रयत्न किया। लेकिन वह अपने प्रयत्नों में सफल नहीं हुआ। यहाँ तक कि वह अमेरिका को राष्ट्र संघ का सदस्य भी नहीं बना सका। उसके बाद अमेरिका में पार्थक्यवाद की नीति को पुनः महत्त्व दिया। युद्ध से उत्पन्न महँगाई, मुद्रा स्फीति तथा अन्य आन्तरिक समस्याओं ने अमेरिका के राष्ट्रपतियों और प्रशासकों को इस नीति पर चलने के लिए विवश किया। मार्च, 1920 ईसवी में हार्डिंग ने राष्ट्रपति पद ग्रहण करते ही घोषणा की कि ''संयुक्त राज्य अमेरिका दुनिया के भाग्य को निर्देशित करने में भाग नहीं लेगा।'' ब्लेक के अनुसार 1920-30 ईसवी के मध्य अमेरिका के विदेशी नीति के तीनों ही क्षेत्रों- यूरोप एशिया तथा लेटिन अमेरिका में परिवर्तन हुआ। लैटिन अमेरिका में संयुक्त राज्य अमेरिका अब भी एक संरक्षक की भूमिका अदा कर रहा था लेकिन शीघ्र ही उसने यह नीति त्याग कर ''अच्छे पड़ौसी की नीति'' अपना ली। हूवर ने कुछ यूरोपीय देशों को आर्थिक संकट से भी उबारने का प्रयत्न किया। उसने निशस्त्रीकरण व क्षतिपूर्ति समस्याओं में सहयोग दिया। अमेरिका जापान से अपने सम्बन्धों को सुधारने में लगा रहा।

(i) सुदूर पूर्व की नीति - प्रथम महायुद्ध के पूर्व जापान के साम्राज्य में दक्षिणी सखलीन रिक्युक्यू द्वीप, लियाओतुंग, कोरिया तथा दक्षिणी मंचूरिया के प्रदेश सम्मिलित हो चुके थे। उसने आर्थिक क्षेत्र में भी पर्याप्त प्रगति कर ली थी। वह चीन में भी अपना साम्राज्य विस्तार करने की योजना बना रहा था। अपनी योजनाओं को आगे बढ़ाने के लिए प्रथम महा युद्ध उसके लिए एक अच्छा अवसर था, क्योंकि 1917 ईसवी के पहले अमेरिका को छोड़कर कोई भी पश्चिमी देश उसकी बढ़ती हुई शक्ति को रोकने की स्थिति में नहीं था। अगस्त, 1914 ईसवी में जापान ने मित्र राष्ट्रों की ओर से युद्ध में प्रवेश किया। उसने शीघ्र ही जर्मनी के अधीन एशिया में सिगराओं पर अधिकार कर लिया और शाण्टुंग प्रदेश की जर्मनी रेलों और खानों पर कब्जा जमा लिया। चीन द्वारा इसका विरोध करने पर उसने चीन के समक्ष इक्कीस माँगे रखीं। उसकी

यह माँगें साधारण नहीं थी। जापान के दबाव में आकर चीन ने जापान की कुछ माँगें स्वीकार कर ली। युद्ध काल ने मित्र राष्ट्रों को युद्ध सामग्री व शस्त्र भेजकर भी उसने बहुत धन कमाया तथा अपने उद्योगों का विकास किया। पेरिस के शान्ति सम्मेलन में उसने शाण्टुंग जर्मनी की अधिकृत सम्पत्ति पर अधिकार प्राप्त कर लिया। राष्ट्र संघ की ओर से उसे भूमध्य रेखा के उत्तर में स्थित जर्मनी द्वारा पूर्व शासित मेरियाना (लेड्रोन) केरालाईन तथा मार्थल द्वीपों का शासनाधिकार प्राप्त हुआ। उसे राष्ट्र संघ का एक स्थायी सदस्य बनाया गया। उसकी बढ़ती हुई शक्ति को देखकर इंग्लैण्ड व अमेरिका को चिन्ता हुई। अमेरिका को यह आशंका हुई कि जापान, फिलिपिन्स, हवाई द्वीप आदि पर आधिपत्य जमाने के लिए उचित अवसर की ताक में है। वह जापान की बढ़ती हुई शक्ति को रोकने के लिए ठोस कदम उठाना चाहता था।

(ii) वाशिंगटन सम्मेलन (1921-22 ईसवी) -विल्सन की भाँति हार्डिंग भी प्रशान्त महासागर में जापानी विस्तारवाद में रोक लगाना चाहता था तथा सामुद्रिक प्रभुत्व को भी संतुलित करने के पक्ष में था। इसलिए 1921 ईसवी में अमेरिका ने वाशिंगटन में रूस के अतिरिक्त विश्व के नौ बड़े राष्ट्रों का सम्मेलन बुलाया, जिसके दो प्रमुख उद्देश्य थे। पहला, शस्त्रों पर रोक तथा दूसरा, सुदूर पूर्व एवं प्रशान्त महासागर सम्बन्धी समस्याओं पर विचार करना। यह सम्मेलन 12 नवम्बर, 1921 ईसवी को प्रारम्भ हुआ और 6 फरवरी, 1922 को समाप्त हुआ। वाशिंगटन सम्मेलन में तीन सन्धियों पर हस्ताक्षर किये गये। पहली सन्धि चार राष्ट्रों की सन्धि (Four Power Treaty) थी जो अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस और जापान के बीच हुई। इस सन्धि के द्वारा एंग्लो-जापानी सन्धि का अन्त कर दिया गया और यह स्वीकृत कर दिया गया कि प्रशान्त क्षेत्रों में एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र के अधिकारों का सम्मान करेगा, विशेषकर टापुओं के अधिकार एवं प्रभुत्व को, प्रशान्त सम्बन्धी प्रश्न, जो कूटनीतिक प्रयास से हल न हो सके, संयुक्त सम्मेलन में आपसी विचार-विमर्श से सुलझाये जायेंगे। इसके अतिरिक्त यदि कोई समझौताकारी पक्ष किसी भी बाह्य आक्रमण द्वारा खतरे में होगा तो उस अवस्था में आक्रामक के विरुद्ध सभी संयुक्त रूप से साथ देंगे। दूसरी सन्धि पाँच राष्ट्रों की सन्धि (Five Power Treaty) थी। इसके अनुसार विस्तृत नौ सैनिक निशस्त्रीकरण (Naval Disarmament) की योजना बनाई गई और उसके तहत अगले दस वर्षों में नौ सेना निर्माण से छुट्टी के रूप में घोषणा की गई। सन्धि द्वारा अमेरिका, ग्रेट ब्रिटेन, जापान, इटली, फ्रांस का युद्ध पोत सम्बन्धी अनुपात क्रमश: 5 : 5 : 3 : 1 : 6.7 : 1.67 निर्धारिंत किया गया।

दूसरे शब्दों में जापान के बड़े जहाजों की संख्या ब्रिटेन और अमेरिका की संख्या के 60 प्रतिशत के बराबर निर्धारित कर दी गई इस सन्धि में हल्के गश्ती जहाजों, पनडुब्बियों तथा अन्य सहायक यानों की संख्या पर कोई सीमा नहीं लगाई गई और प्रशान्त महासागर के निर्धारित क्षेत्रों में किलेबन्दियों और समुद्री अड्डों के सम्बन्धी ज्यों की त्यों स्थिति स्वीकृत की गई। वाशिंगटन सम्मेलन में तीसरी सन्धि नौ राष्ट्रों के बीच थी (Nine Power Treaty) जिस पर अमेरिका, ग्रेट ब्रिटेन, फ्रांस, जापान, इटली, बेल्जियम, नीदरलैण्ड, पुर्तगाल और चीन ने 6 फरवरी, 1922 ईसवी को हस्ताक्षर किये और सभी ने यह स्वीकार किया कि (1) सभी हस्ताक्षरकर्ता राष्ट्र चीन

की सम्प्रभुता, स्वतन्त्रता और अखण्डता का सम्मान करेंगे। (2) चीन की वर्तमान स्थिति से लाभ उठाकर उसे ऐसे कोई भी अधिकार व सुविधाएँ नहीं लेंगे जिससे अन्य मित्र राष्ट्रों के अधिकारों में किसी भी प्रकार की कमी हो। इन सन्धियों के अतिरिक्त वाशिंगटन में यह भी समझौता जापान और चीन के बीच किया गया कि जापान चीन को कियोचावों (Kiaochow) के क्षेत्र लौटा देगा। ई.एच.कार के अनुसार, वाशिंमटन सम्मेलन एक महत्त्वपूर्ण सम्मेलन था। उसके शब्दों में, ''सम्मेलन से कम से कम ऊपरी तौर से प्रशान्त महासागर में युद्ध पूर्व का संतुलन पुनः स्थापित हो गया।'' अमेरिका को चीन में मुक्त द्वार की नीति बनाये रखने का अधिकार मिला। करन्ट के अनुसार ''वाशिंगटन सन्धियों ने अमेरिका और जापान के बीच तनाव को कम से कम एक दशाब्दी तक के लिए कम कर दिया।'' 'सम्मेलन में चीन की अखण्डता को बनाये रखने तथा प्रशान्त महासागर में एंग्लो अमेरिकी सामुद्रिक प्रभुत्व को जापानी खतरे से दूर रखने में काफी योग दिया।' जापान ने शाण्टुंग को चीन को लौटा दिया और इसके बदले में टेसियन टेसीगरो रेलवे (Tesion Tessigro Railway) पर जापान को पन्द्रह वर्षीय अधिकार दे दिया गया। यद्यपि द्वीप में जापान ने अमेरिका का सागरतलीय तार का अधिकार स्वीकार कर लिया। इन सन्धियों द्वारा चीन को अपने प्रदेश में आने वाली वस्तुओं पर कर लगाने का अधिकार दे दिया गया। दूसरी ओर वाशिंगटन सम्मेलन की तीव्र आलोचना की गई। क्लाईड के अनुसार ''इस सम्मेलन में राष्ट्रों में बड़े युद्ध पोत और प्रशान्त सम्बन्धी विवादों को विचार विमर्श से हल करने पर जोर दिया गया था, परन्तु दूसरी तरफ नौ सेना सम्बन्धी अन्य प्रकार के जहाजों और स्थल सेना पर रोक नहीं लगाई गई थी और इसी प्रकार चीन से सम्बन्धित अपने विशेषाधिकारों के बारे में एक-एक शताब्दी पूर्व की सन्धियों का भी इन राष्ट्रों ने त्याग नहीं किया था। अतः स्पष्ट है कि ये सारी प्रयास अपने-आप में अपूर्व और आंशिक लाभकारी ही थे।'' दूसरा, इस सम्मेलन की बड़ी कमी यह थी कि यह ईमानदारी की भावना से कोसों दूर थी। अर्थात् एक तरफ अमेरिका व ब्रिटेन इसके द्वारा जापान की शक्ति छिन्न-भिन्न करना चाहते थे, वहाँ दूसरी ओर जापान ने भी इसे धोखाधड़ी की कूटनीति समझकर इसकी अवहेलना करने की शपथ मन ही मन में ले ली थी।

राष्ट्रपति कूलीज तथा हूवर दोनों के समय में अमेरिका की सुदूर पूर्व में विदेश नीति अमेरिकी अधिकारों की रक्षा तथा सम्पूर्ण क्षेत्र में शांति बनाई रखने की थी। किन्तु धीरे-धीरे अमेरिका चीन की अखण्डता को बनाये रखने में अक्षम सिद्ध होता जा रहा था। ज्योंही रूस सशक्त हुआ और उसने पूर्वीय साईबेरिया में अपनी शक्ति को मजबूत किया तो उत्तरी मंचूरीया के प्रश्न पर उसने एक अघोषित युद्ध लड़ा तब अमेरिका ने 1929 ईसवी के ब्रिया केलाग समझौते अथवा पेरिस समझौता के आधार पर हस्तक्षेप किया और उसके बीच मध्यस्थता के द्वारा शांति स्थापित करने की कोशिश की किन्तु वह असफल हो गया। उधर जापान ने दक्षिणी मंचूरिया में रूसी और चीनी राष्ट्रवादियों से भयभीत होकर सितम्बर, 1931 ईसवी को मंचूरिया पर उस समय धावा बोल दिया जबकि अमेरिका और ब्रिटेन आर्थिक संकट के हल में व्यस्त थे। इस पर अमेरिका ने स्टीमसन सिद्धान्त की सहायता से सुदूरपूर्व में नैतिक नेतृत्व प्राप्त करने का प्रयत्न किया।

(iii) लेटिन अमेरिकन नीति - (अ) निकारगुआ और होंडुराज के विवाद का निपटारा-राष्ट्रपति हार्डिंग ने इस क्षेत्र के राष्ट्रों के प्रति सद्भावना की नीति का अनुसरण किया। 4 दिसम्बर, 1922 से 7 फरवरी, 1923 के मध्य अमेरका ने द्वितीय मध्य अमेरिकी सम्मेलन वाशिंगटन में बुलाया। इस सम्मेलन का उद्देश्य निकारगुआ और होन्डुराज के मध्य संघर्ष को तय करना था। अमेरिका और मध्य अमेरिका के गणतन्त्रों ने इसमें भाग लिया। सम्मेलन में तटस्थता की सन्धि का एक प्रस्ताव तैयार किया गया, मध्य अमेरिकी न्यायालय की स्थापना और शस्त्र नियन्त्रण की व्यवस्था की गई।

(ब) मैक्सिको के साथ विवाद - इसके पश्चात् राष्ट्रपति कूलिज ने 1924 ईसवी में सान्टो डोमिन्गो से अमेरिकी समुद्री बेड़े को वापस ले लिया यद्यपि हेटी में उसने पूर्व स्थिति ही बनाई रखी। 1924 ईसवी में मैक्सिको में अमेरिकी तेल कम्पनियों के अधिकारों को लेकर जब समस्या पुन: उत्पन्न हुई तो कूलिज के विदेश मन्त्री कैलोग ने मैक्सिको सरकार को यह चेतावनी दी कि अमेरिका मैक्सिको को अपना सहयोग तब तक देता रहेगा जब तक कि वहाँ अमेरिकी जनजीवन अधिकार सुरक्षित था। उसकी मैक्सिको में तीव्र प्रतिक्रिया हुई और वहाँ की सरकार ने पेट्रोलियम कानून (Petroleum Law) और भूमि कानून पारित किये, जिसके अनुसार विदेशी सरकारों को रियायतें पचास वर्ष तक सीमित कर दी गई। इस पर अमेरिका के राष्ट्रपति ने कूलिज ने मैक्सिको से पंच निर्णय का प्रस्ताव रखा और परिणामस्वरूप दोनों देशों के बीच संघर्ष में कमी हुई और समन्वयवादी नीति को प्रोत्साहन मिला। 17 नवम्बर, 1927 ईसवी को मैक्सिको के सर्वोच्च न्यायालय ने पेट्रोलियम कानून को अवैधानिक घोषित कर दिया और 25 दिसम्बर को मैक्सिको कांग्रेस ने कुछ भूमि पर विदेशों को असीमित रियायतें देना पुन: स्वीकार कर लिया।

(स) चिली और पेरु के मध्य सीमा विवाद - टाकना-ऐरिका विवाद (चिली-बोलिविया और पेरु के मध्य), इन दो देशों को लेकर चिली-पेरु के मध्य संघर्ष था यद्यपि एनकोन की सन्धि (1883 ईसवी) के द्वारा दोनों राष्ट्रों ने यह स्वीकार कर लिया था कि दस वर्ष बाद इन राष्ट्रों ने जनमत संग्रह द्वारा फैसला कर लिया जायेगा परन्तु पेरु जनमत संग्रह के स्थान पर पंच निर्णय पर अधिक बल देने लगा, अत: अन्त में चिली की सहमति पर अमेरिका को इस सम्बन्ध में पंच निर्णय का कार्य सौंपा गया। अमेरिका ने मार्च, 1925 ईसवी में अपने पंच निर्णय में जनमत संग्रह के पक्ष में फैसला दिया, किन्तु अन्य कारणों से जनमत संग्रह सम्भव न होने से अमेरिका ने दोनों पक्षों के बीच मध्यस्थता कर प्रत्यक्ष वार्ता द्वारा विवाद सुलझाने का प्रयत्न किया। अमेरिकी प्रयत्न से 1929 ईसवी में दोनों पक्षों ने इस विवादग्रस्त प्रदेश को आपस में बांट लेने सम्बन्धी सन्धि को स्वीकार कर लिया।

(द) बोलीविया-पैरागुआ विवाद - उक्त दोनों राष्ट्रों में चाको बेरिअल प्रदेश को लेकर विवाद था। धीरे-धीरे स्थिति ने पूर्णत: विस्फोटक रूप धारण कर लिया था। अत: अमेरिका के नेतृत्व में अखिल अमेरिकी देशीय सम्मेलन में यह निश्चिय किया गया कि विवाद का समापन पंच निर्णय द्वारा कर लिया जाये तथा 3 फरवरी, 1929 ईसवी को निपटारा किया गया परन्तु फिर भी दोनों पक्षों के मध्य तनाव बना रहा और 1933 ईसवी में पेरागुआ ने औपचारिक रूप से

बोलिविया के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। इस पर राष्ट्रसंघ एवं अमेरिका ने अपने प्रयत्न से दोनों के मध्य शांति समझौता करवाया।

(य) अमेरिकी देशों का एकता सम्मेलन - निकारगुआ और मैक्सिको के साथ अमेरिका के तनावपूर्ण सम्बन्धों के कारण सम्पूर्ण अमेरिकी महाद्वीप में अमेरिका विरोधी वातावरण बन गया। अत: इन राष्ट्रों की सहानुभूति पुन: प्राप्त करने के लिए 1923 ईसवी में वाशिंगटन में केन्द्रीय अमेरिकी देशों का सम्मेलन हुआ और उसमें अमेरिका ने अपना शान्तिसूत्र 'शान्ति मध्यस्थता एवं युद्ध त्याग' (Conciliation, Arbitration and Renunciation of War) के रूप में प्रस्तुत किया। इस सम्मेलन में यह स्वीकार किया गया कि अब कोई भी राष्ट्र दूसरे राष्ट्र के घरेलू मामलों में हस्तक्षेप नहीं करेगा और अवैधानिक एवं विद्रोही सरकार को मान्यता न देगा और मध्यस्थता के माध्यम से अपने विवादों का निपटारा करेगा।

सम्पूर्ण अमेरिकी देशों का 'पान अमेरिकी सम्मेलन' सैन्टयागो ने 1923 ईसवी में और हवाना में 1928 ईसवी में सम्पन्न हुआ। सेन्टयागो सम्मेलन से गोन्दरा कन्वेन्शन (Gondra Convention) और हवाना सम्मेलन में अन्तर्राष्ट्रीय अपराधों में आक्रमणकर्ता को परिभाषित किया गया और उनके अन्तर्राष्ट्रीय कानून संहिता बद्ध किये गये। अमेरिका ने इन सभी सन्धियों को स्वीकृत कर इस क्षेत्र में अपनी शान्तिवादिता का परिचय देना प्रारम्भ कर दिया और 1924 ईसवी में अमेरिका ने डोमिनिकन रिपब्लिक में स्वशासन पुन: स्थापित कर दिया। (जो 1916 ईसवी में अमेरिकी सैनिक कानून के अधीन था) इस प्रकार अब अमेरिका ने लेटिन अमेरिकी प्रदेशों में "पुलिसमैन एवं चौकीदारी नीति" जो डालर कूटनीति एवं रूजवेल्ट-उपसिद्धान्त द्वारा संचालित थी का परित्याग कर नवीन क्लार्क स्मृति पत्र (Clark Memarandum) के आधार पर कार्य करना शुरु किया। अब क्लार्क स्मृतिपत्र द्वारा लेटिन अमेरिकी देशों में हस्तक्षेप का आधार आत्मनिर्णय का अधिकार प्रतिपादित किया।

(र) हेटी की समस्या - 1915 ईसवी में हेटी अमेरिका का संरक्षित प्रदेश रहा था और इसका शासन अमेरिका का हाई कमिश्नर पाँच अन्य अमेरिकी अफसरों की सहायता से और नौ सेना की एक टुकड़ी की सहायता से करता था पर 1929 ईसवी में अमेरिकी नीति के कुछ पहलू नापसन्द होने से विशेषकर विदेशियों के भूमि खरीदने पर लगी पाबन्दी हटाने और शिक्षा की नीतियों के अमेरिकी रूप देने के कारण यहाँ उपद्रव हो गये जिसके बाद 1930 ईसवी में यहाँ जाँच करने के लिए एक आयोग नियुक्त किया गया कि अमेरिका हेटी से कब और कैसे हटे और इसी बीच के काल में अपनी नीति क्या रखें? इस आयोग ने यह सिफारिश की कि नौकरियों में हेटी वासियों की संख्या क्रम से बढ़ाई जाये, सरकारी विभाग में 1936 ईसवी से उन्हें जिम्मेदारी सम्भालने योग्य बनाया जाये, हाई कमिश्नर का पद हटा दिया जाये और उसके स्थान पर एक असैनिक दूत नियुक्त किया जाये जो हाई कमिश्नर तथा राजनयिक प्रतिनिधि दोनों का संयुक्त काम करें। शिक्षा प्रणाली सम्बन्धी शिकायतों की एक ओर आयोग ने स्वतन्त्र रूप से जाँच की। इन जाँचों के बाद अमेरिका के सैनिकों ने चुनावों का, जो अक्टूबर, 1930 ईसवी में हुए, पर्यवेक्षण नहीं किया और ये बिना किसी गम्भीर अव्यवस्था के सम्पन्न हुए। उसी वर्ष के नवम्बर

में अमेरिका द्वारा नियुक्त एक दूत हेटी में पहुँचा और हाई कमिश्नर को वापस बुला लिया गया। इसके बाद एक सन्धि पर हस्ताक्षर हुए पर उसे हेटी की असेम्बली ने कुछ कथित अस्पष्टताओं के आधार पर अस्वीकार कर दिया। 7 अगस्त, 1933 ईसवी को एक नये समझौते पर हस्ताक्षर हुए कुछ अवशिष्ट ऋणों का ब्याज आदि सुनिश्चित रूप से प्राप्त कर सकने के लिए पहले स्थापित वित्तीय प्रशासन को जारी रखते हुए अमेरिकी सैनिकों की अक्टूबर, 1944 ईसवी तक विशेष वापसी का उपबन्ध किया गया।

फिलिपिन्स के प्रति नीति :

फिलिपिन्स में 1929 ईसवी के बाद दूसरों की हित रक्षा की नीति अमेरिकी औद्योगिक स्वार्थों को सुविधाजनक नहीं लगी, क्योंकि अब उन्हें अपने पदार्थों को फिलिपिन्स से होने वाले निर्यात से प्रतियोगिता में खड़ा रखने का सवाल था अत: फिलिपिन्स को स्वाधीनता देने एवं उसके परिणामस्वरूप तटकरों को उसके अधीन करने के लिए 1929 ईसवी में जो विधेयक पुन: स्थापित किया गया था वह थोड़े से ही अन्तर से अस्वीकृत हो गया और दिसम्बर 1931 ईसवी और फरवरी, 1931 ईसवी के मध्य दस विधेयक कांग्रेस में पुन: स्थापित किये गये। जिनमें से एक 1932 ईसवी में पारित हो गया। परन्तु जनवरी 1933 ईसवी में राष्ट्रपति हूवर ने इसे इस आधार पर विटो कर दिया कि फिलिपिनवासियों के आर्थिक जीवन की दशाओं में ऐसा आकस्मिक परिवर्तन करना अन्याय होगा। यद्यपि इस वीटों को दोनों सदनों ने बड़े बहुमत से रद्द कर दिया। पर वह विधेयक फिलिपिनी विधान मण्डल द्वारा अस्वीकार कर दिया गया। इस प्रकार शुरू में अमेरिका और फिलिपिनी लोगों द्वारा प्रतिपादित नीतियाँ उल्टी हो गई परन्तु अन्त में जाकर अमेरिका इच्छा की विजय हुई।

निकारगुआ संकट :

1927 और 1928 ईसवी के मध्य निकारगुआ में अमेरिका को एक बार फिर संकट का सामना करना पड़ा। इस संकट का कारण निकारगुआ में आन्तरिक विवाद, विद्रोह और उपद्रवों का पुन: भड़काना था अमेरिका ने 25 अक्टूबर, 1929 ईसवी में हुई विद्रोह के फलस्वरूप एमेलियनों कौमारो की सरकार को मान्यता देने से इन्कार कर दिया था। 1927 ईसवी के बाद निकारगुआ में कई बार उपद्रव हुए और अमेरिका वहाँ सैनिक हस्तक्षेप करता रहा। 2 जनवरी, 1933 ईसवी में कही जाकर उपद्रव में कमी आई जबकि राष्ट्रपति हूवर ने अधिकांश लैटिन अमेरिकी क्षेत्रों की यात्रा की, सौहार्द्रता के सन्देश दिए तथा निकारगुआ से अमेरिकी समुद्री पोत वापस बुला लिये। उसने क्यूबा में हस्तक्षेप से इन्कार कर दिया। उसने आर्थिक संकट से ग्रस्त कई लैटिन अमेरिकी देशों से में निरंकुश सरकारों को मान्यता दे दी। यहाँ तक कि कई अमेरिकी देश ऋण की अदायगी नहीं कर सके तो उसने उन्हें भुगतान के लिए विवश नहीं किया और न ही कोई दंडात्मक कार्यवाही ही की। इस प्रकार राष्ट्रपति हूवर ने लैटिन अमेरिकी देशों के प्रति 'अच्छे पड़ौसी' की नीति की भूमिका तैयार कर दी थी। 1933 ईसवी के पश्चात् दोनों राष्ट्रों के मध्य मैत्री का नया युग प्रारम्भ हुआ। उपर्युक्त वर्णन से यह स्पष्ट है कि राष्ट्रपति हार्डिंग से हूवर तक की

अवधि में अमेरिका की लैटिन की सम्बन्धी विदेश नीति समय-समय पर हस्तक्षेप के द्वारा सम्बन्धों को सुधारने की ओर बराबर प्रयत्नशील थी और इसी के परिणामस्वरूप कुछ आगे जाकर यह नीति राष्ट्रपति रूजवेल्ट की अवधि में 'अच्छे पड़ौसी' नीति (Good Neighbour Policy) के रूप में परिणित हुई।

यूरोपीय मामलों के प्रति नीति :

राष्ट्रपति हार्डिंग से हूवर तक के काल में यूरोपीय मामलों में अमेरिका की विदेश नीति का उद्देश्य क्षतिपूर्ति, युद्ध ऋणों का भुगतान तथा निशस्त्रीकरण के मुद्दों से प्रमुखत: सम्बन्धित था अमेरिका ने युद्ध काल और युद्धोपरान्त के वर्षों में 10,350,470,074,40 डालर राशि ऋण के रूप में यूरोप को दी थी और उसका यूरोप द्वारा वापसी भुगतान अमेरिका की विदेश नीति का प्रमुख लक्ष्य था। चूँकि मित्र राष्ट्रों ने इस ऋण की अदायगी जर्मन द्वारा क्षतिपूर्ति से जोड़ दी थी अमेरिका के लिए क्षतिपूर्ति समस्या के हल के लिए प्रयत्नशील होना आवश्यक हो गया। 1922 ईसवी में अमेरिकी कांग्रेस ने विदेशी ऋण आयोग की स्थापना की। 1923 तथा 1929 ईसवी में अमेरिका ने अमेरिकी वित्त विशेषज्ञ डावेज (Dawes) तथा यंग को क्षतिपूर्ति की समस्या के समाधान हेतु नियुक्त आयोगों की अध्यक्षता की अनुमति दी। उनके द्वारा बनाई गई योजनाएँ क्रमश: डावेज योजना और यंग योजना के नाम से विख्यात है। 1929 ईसवी की आर्थिक मंदी के कारण सम्पूर्ण क्षतिपूर्ति की समस्या और अधिक जटिल हो गई। इस आर्थिक मन्दी ने न केवल यूरोप की ही अर्थव्यवस्था को अस्त-व्यस्त किया बल्कि न्यू यार्क स्टॉक एक्सचेन्ज में भी गम्भीर तहलका मचा दिया। गम्भीर आर्थिक संकट के कारण यूरोपीय राष्ट्र ऋण अदायगी के बारे में अपनी असमर्थता प्रकट करने लगे और जर्मनी के लिए क्षतिपूर्ति भुगतान असम्भव सा हो गया। 11 मई, 1931 ईसवी को आस्ट्रिया क्रेडिट अन्सटाल्ट फैल हो गया और सभी विदेशी धन जर्मनी से निकाल लिया गया। इस गम्भीर आर्थिक स्थिति को देखकर राष्ट्रपति हूवर ने एक वर्ष का 'विलम्ब प्रस्ताव' (Hoovers Moratorium) प्रस्तुत किया। इस प्रस्ताव का तात्पर्य था कि अमेरिकी सरकार विदेशी सरकारों से अपना पैसा इस शर्त पर स्थगित कर सकती थी कि सभी अन्य सरकारी ऋण जिसमें क्षतिपूर्ति कर्ज शामिल था, की वसूली एक वर्ष के लिए स्थगित कर दी जावे। हूवर प्रस्ताव अन्धेरे में रोशनी की किरण के समान था। इससे सभी राष्ट्रों में आशा बन्धनें लगी, किन्तु फ्रांस ने इसे पसन्द नहीं किया और विलम्ब से अपनी स्वीकृति देने के कारण इसके अच्छे प्रभाव को खो दिया। सितम्बर, 1931 ईसवी तक इंग्लैण्ड और अन्य राष्ट्रों ने स्वर्ण मुद्रा का परित्याग कर दिया और सम्पूर्ण अमेरिकी बैंकों से सोना निकाल लिया गया। मई, 1931 से जुलाई, 1931 तक आर्थिक स्थिति और गिरती चली गई तथा परिणामस्वरूप यूरोप की क्षतिपूर्ति समस्या एक नये राजनैतिक झंझावात और आर्थिक संकट के गर्त में विलिन हो गई।

इस अवधि में यूरोप में संयुक्त राज्य अमेरिका की विदेश नीति का दूसरा सम्बन्ध निशस्त्रकीरण समस्या से था। 12 नवम्बर, 1921 ईसवी को वाशिंगटन सम्मेलन में नौ सैनिक सन्धि पर हस्ताक्षर किये जा चुके थे। 1927 ईसवी में राष्ट्रपति कूलिज ने पाँच शक्तियों का नौ सैनिक सम्मेलन जेनेवा में बुलाया। इस सम्मेलन का उद्देश्य उन हल्के गश्ती जहाजों, विध्वसंकों, पनडुब्बियों और

सहायक यानों, जिन्हें वाशिंगटन सम्मेलन में छोड़ दिया गया था पर नियंत्रण करना था किन्तु सम्मेलन बिना किसी निर्णय के स्थगित हो गया, क्योंकि फ्रांस और इटली ने इसमें भाग नहीं लिया और ब्रिटेन और अमेरिका के मध्य हल्के गश्ती जहाजों के नियन्त्रण पर कोई समझौता नहीं हो सका। 1 फरवरी, 1929 ईसवी को अमेरिका ने दस हजार टन के नये पन्द्रह हल्के गश्ती जहाज बनाने का आदेश दिया। 4 अक्टूबर, 1929 ईसवी को नौ सैनिक निशस्त्रीकरण को लेकर इंग्लैण्ड के प्रधानमन्त्री रेम्जे मेक्डोनॉल्ड और राष्ट्रपति हूवर के बीच बातचीत हुई। 7 अक्टूबर, 1929 ईसवी को अमेरिका ने स्टिम्सन की अध्यक्षता में एक प्रतिनिधि मण्डल नौ सैनिक सम्मेलन में भाग लेने के लिए लन्दन भेजा, किन्तु इस सम्मेलन में भी किसी राष्ट्र ने निशस्त्रीकरण के मुख्य प्रावधानों पर हस्ताक्षर नहीं किये, यद्यपि अमेरिका, ग्रेट ब्रिटेन, जापान ने हल्के गश्ती जहाजों के नियंत्रण के सम्बन्ध कुछ निर्णय अवश्य लिये और ब्रिटेन अमेरिका और जापान के क्रमशः 5: 3: 1 के अनुपात में युद्ध पोत समाप्त करने के लिए निर्णय लिये गये। इसके पश्चात् 1932 ईसवी में राष्ट्र संघ द्वारा जेनेवा में आयोजित विश्व-निःशस्त्रीकरण सम्मेलन में भी अमेरिका ने भाग लिया। हूवर ने इस सम्मेलन में सम्पूर्ण आक्रमणकारी शस्त्रों पर रोक तथा स्थल सेना और नौ सेना पर तीस प्रतिशत कटौती का प्रस्ताव रखा, किन्तु वह स्वीकृत नहीं हो सका।

इस अवधि में अमेरिका की विदेश नीति अन्तर्राष्ट्रीय विवादों के शांति पूर्ण समाधान तथा पंच निर्णय के क्षेत्र में काफी सक्रिय रही। 29 अगस्त, 1928 ईसवी को अमेरिका के फ्रांस के साथ केलॉग ब्रियाँ सन्धि (Kellog Briand Pact) करके युद्ध को राष्ट्रीय नीति के रूप में अवैधानिक घोषित कर दिया। इस सन्धि के प्रमुख उद्देश्य युद्ध का बहिष्कार, अन्तर्राष्ट्रीय झगड़ों का शांतिपूर्ण समाधान करना था। इतिहासकारों के अनुसार ''केलॉग ब्रियाँ सन्धि ने अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में अमेरिकी की सहयोगपूर्ण नीति को पुनः जन्म दिया।'' यद्यपि राष्ट्रपति हार्डिंग और कूलिज अमेरिका द्वारा राष्ट्र संघ में सदस्यता ग्रहण करने के लिए बहुत इच्छुक थे, किन्तु इस सम्बन्ध में कोई खास कदम नहीं उठाये गये। 11 नवम्बर, 1929 ईसवी को हूवर ने घोषणा की कि हिंसा पर रोक लगाने के लिए ठोस जनमत का निर्माण ही काफी होगा। 14 अप्रैल, 1930 ईसवी को राष्ट्रपति हूवर ने इसी दृष्टिकोण को पुनः दोहराया। यह सत्य है कि अमेरिका ने इन वर्षों में राष्ट्र संघ की सदस्यता ग्रहण नहीं की, किन्तु वह प्रत्यक्ष रूप से राष्ट्र संघ के उद्देश्यों को समर्थन देने में तथा उसके मानवीय रचनात्मक कार्यक्रमों में किसी न किसी प्रकार से भाग लेता रहा। उदहारणार्थ 1931 ईसवी तक राष्ट्र संघ द्वारा आयोजित सम्मेलनों में अमेरिका की ओर से भाग लेने के लिए दो सौ बारह प्रतिनिधि भेजे गये। जेनेवा में अमेरिकी हित को प्रतिनिधित्व देने हेतु उसने पाँच स्थायी अधिकारियों को नियुक्त की। 16 अक्टूबर, 1931 ईसवी में मंचूरिया संकट के सम्बन्ध में राष्ट्रसंघ द्वारा आयोजित लिटन आयोग (Lytton Commission) में अमेरिका ने एक प्रतिनिधि भेजने की स्वीकृति प्रदान की। इसके अतिरिक्त 1931 ईसवी में मंचूरिया पर जापानी आक्रमण के बारे में अमेरिका ने स्टिम्सन सिद्धान्त, जिसे राष्ट्र संघ की साधारण सभा ने भी प्रस्ताव के अन्तर्गत स्वीकृत किया था, लागू किया।

निष्कर्ष :

इस प्रकार क्रमश: राष्ट्रपति हार्डिंग, कूलिज और हूवर के शासन काल में अमेरिका की विदेश नीति में पार्थक्यवाद बराबर बना रहा। हार्डिंग अमेरिका को ''सामान्यता और सम्पन्नता'' (Normaly & Prosperity) की ओर ले जाना चाहता था। कूलिज यूरोप की क्षतिपूर्ति समस्या और नौ सैनिक नियन्त्रण व सन्तुलन की ओर प्रयत्नशील रहा, जबकि हूवर ने यूरोप को आर्थिक संकट से बचाने की चेष्टा की। इस सम्पूर्ण काल में अमेरिका लैटिन अमेरिकी देशों से सद्भावनापूर्ण सम्बन्ध बनाने के लिए प्रयत्नशील रहा। इसके अतिरिक्त एशिया में तीनों राष्ट्रपतियों ने लगभग दस वर्ष तक जापानी साम्राज्यवाद पर नियन्त्रण स्थापित करने और चीन की सार्वभौमिकता और अखण्डता को बनाये रखने में काफी सहायता प्रदान की। इन राष्ट्रपतियों की लैटिन अमेरिकी नीति ने आगे जाकर 'अच्छे पड़ौसी की नीति' के निर्माण में सहायता दी। ब्लैक के अनुसार राष्ट्रपति हूवर युद्ध का बहिष्कार करने, शस्त्र-नियन्त्रण को कार्यान्वित करने तथा आर्थिक स्थिति सुधारने में एक युद्ध से घृणा करने वाला शासक (War Hating Quacker) और युद्ध की व्यर्थता को रोकने वाला व्यापारी (Waste Hating Businessman) के रूप में सिद्ध हुआ।

1909 से 1932 ईसवी तक विभिन्न राष्ट्रपतियों की अमेरिकी विदेश नीति का अध्ययन करने पर कुछ विशेष प्रवृत्तियाँ स्पष्ट दिखाई पड़ती हैं। प्रथम, इस अवधि में अमेरिकी 'पार्थक्यवाद' और 'संलग्नतावाद' के मध्य संघर्ष करती रही, कभी पार्थक्यवाद हावी हो जाता तो कभी संलग्नतावाद। जैसे राष्ट्रपति टैफ्ट से विल्सन तक संलग्नतावाद प्रबल था तो विल्सन के पश्चात् हूवर प्रत्यक्ष रूप से पृथकतावाद तथा अप्रत्यक्ष रूप से सतर्कता पर आधारित अन्तर्राष्ट्रीयवाद प्रभावशाली रहे। दूसरा, इस काल में राष्ट्रपति पद पर डेमोक्रेटिक दल की अपेक्षा रिपब्लिकन दल का अधिक वर्चस्व था। परिणामत: जहाँ राष्ट्रपति टैफ्ट ने गृह हितों के लिए अन्तर जगत में 'डालर कूटनीति' को अपनाया वहाँ विल्सन ने आदर्शवाद पर आधारित विदेश नीति को संचालित किया। उसके पश्चात् 1920-32 ईसवी तक तीनों रिपब्लिकन राष्ट्रपतियों ने लगभग एक समान ही असंलग्न सहयोग नीति (Non-Aligned Cooperation Policy) को अपनाया। तीसरा, इस अवधि में अमेरिका की विदेश नीति राजनीतिक तत्त्वों की अपेक्षा अमेरिका के आर्थिक व व्यापारिक हित के दृष्टिकोण से अधिक प्रभावित रही। विश्व के विभिन्न भागों में अमेरिका के व्यापारिक हित और उनकी साख की रक्षा हेतु सभी राष्ट्रपतियों ने एक ही नीति का संचालन किया, जिससे अमेरिका का विश्व में आर्थिक नेतृत्व गतिशील रहे। चौथा, अमेरिकी कांग्रेस, विशेषकर सीनेट ने इस अवधि में उसकी विदेश नीति को अत्यन्त नियन्त्रित किया उदाहरणार्थ, इस काल में की गई सभी सन्धियाँ जैसे नोक्स-केस्ट्रिलो सन्धि केरेबियन क्षेत्र में बैंक खोलने की सन्धि, वर्साय सन्धि आदि पर अमेरिकी सीनेट ने अपनी स्वीकृति देने से इन्कार कर दिया। सम्भवत: इसके पीछे अमेरिकी विदेश नीति पर गृह समस्याओं का प्रभाव, यूरोपीय झंझावतों से बचने का प्रयत्न तथा अमेरिकी आर्थिक हितों की रक्षा व अधिकार प्रमुख कारण थे। पाँचवाँ, इस अवधि में अमेरिकी विदेशी नीति पर लोकमत का प्रभाव धीरे-धीरे उभरता हुआ दृष्टिगत हुआ था। लैटिन अमेरिका में लोकतान्त्रिक सरकारों को समर्थन तथा युद्ध काल में राष्ट्रपति विल्सन

द्वारा खुली कूटनीति (Open Diplomacy), लोकतान्त्रिक कूटनीति (Democratic Diplomacy) आदि पर जोर देना इसके ज्वलन्त उदाहरण हैं। छठा, इन वर्षों में प्रयुक्त अमेरिका की विदेश नीति ने संयुक्त अमेरिकी आन्दोलन (Pan American Movement) तथा लैटिन अमेरिका में 'अच्छे पड़ौसी नीति' (Good Neighbour Policy)की ओर अमेरिका को अग्रसर किया जिसका वर्णन अगले अध्याय में और अधिक स्पष्ट हो जायेगा।

□□□

अध्याय-21

रूजवेल्ट की विदेश नीति (1933-1953 ईसवी)

□ सी.एम. जैन

रूजवेल्ट के राष्ट्रपति पद ग्रहण करने के समय अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति :

1935 ईसवी में रूजवेल्ट राष्ट्रपति पद पर आसीन हुआ। उसे अमेरिका में आर्थिक मन्दी का सामना करना पड़ा। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अमेरिका की स्थिति बड़ी प्रतिकूल थी। रूजवेल्ट के पद ग्रहण के समय अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति चीन के प्रदेश पर मंचूरिया पर जापानी आक्रमण से अत्यधिक उग्र हो चुकी थी। जर्मनी में हिटलर के नेतृत्व में नाजीवाद का प्रादुर्भाव हो चुका था और वह वर्साय सन्धि का विघटन तथा उल्लंघन करने पर तुला हुआ था। इटली में मुसोलिनी के नेतृत्व में फासीवाद जोर पकड़ चुका था और वह साम्राज्यवाद की नीति की ओर अग्रसर हो रहा था जापान सशक्त होता जा रहा था और वह आक्रमण द्वारा एशिया में विस्तार करने में प्रयत्नशील था। लैटिन अमेरिकी देशों में भी अमेरिका की हस्तक्षेप की नीति असफल होती जा रही थी और सौहार्द्र की आवश्यकता प्रबलता से अनुभव की जाने लगी थी। यूरोप भी संकट की स्थिति से गुजर रहा था। राष्ट्रसंघ की कमजोरी व अयोग्यता भी धीरे-धीरे सदस्य राष्ट्रों को जाहिर होने लग गई थी। विश्व निशस्त्रीकरण सन्धि की असफलता के पश्चात् इस समस्या के समाधान का अन्त भी प्रत्यक्षत: प्रकट हो रहा था। इस प्रकार राष्ट्रपति एफ.डी. रूजवेल्ट को राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में कई कठिन परिस्थितियों का सामना करना था। उसे दोहरे उत्तरदायित्वों की जिम्मेदारीयों निभानी थी। एक ओर राष्ट्रीय मामलों में आर्थिक अराजकता का हल निकालना था तो दूसरी ओर अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में युद्ध से सुरक्षा और शांति स्थापित करना था। उसके आर्थिक संकट विरोधी कार्यक्रमों की विवेचना का अध्ययन हम पहले कर चुके हैं।

रूजवेल्ट की विदेश नीति :

(i) 1933 व 1934 के तटस्थता कानून - अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के क्षेत्र में राष्ट्रपति एफ.डी. रूजवेल्ट ने अपने निर्वाचन के दौरान कई घोषणाएँ की थीं। जिनमें 'दृढ़ विदेश नीति', 'विश्व में शांति सुरक्षा', 'सभी अन्तर्राष्ट्रीय झगड़ों का पंच निर्णय द्वारा फैसला', 'राष्ट्रों के आन्तरिक मामलों में अहस्तक्षेप', 'सन्धियों के प्रति आदर' तथा 'निशस्त्रीकरण' मुख्य थी। इन लक्ष्यों के आधार पर विधेयक प्रस्तुत किये। 1934 ईसवी के राष्ट्रपति रूजवेल्ट ने आक्रामक देशों से व्यापार पर पाबंदी लगाने सम्बन्धी कई विधेयक प्रस्तुत किये। 1934 ईसवी में राष्ट्रपति रूजवेल्ट तथा

विदेश सचिव हल ने फासीवादी राष्ट्रों के साम्राज्य के विरुद्ध संयुक्त सुरक्षा (Collective Security) की नीति को सशक्त किया और इस दिशा में उसने 1934 ईसवी में पारस्परिक व व्यापार समझौता अधिनियम (Reciprocal Trade Agreement) अमेरिकी कांग्रेस के सम्मुख प्रस्तुत किया। इसी समय अमेरिकी कांग्रेस ने 'जानसन बिल' (Johnson Debt Default Act) पारित किया जिसके अनुसार उन सभी राष्ट्रों को ऋण देने से इन्कार कर दिया जो अपने पुराने ऋणों के भुगतान में असफल रहे थे।

(ii) तटस्थता कानून - दूसरा अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में राष्ट्रपति एफ. डी. रूजवेल्ट ने पृथकतावाद तथा तटस्थता की विदेश नीति को दृढ़ करने का प्रयत्न किया । सैद्धान्तिक दृष्टि से इस पृथकतावाद के पीछे अमेरिका की भौगोलिक स्थिति, उसकी परम्परागत पृथकतावादी दृष्टि यूरोपीय कूटनीतिक चालें तथा अमेरिकी निजी आर्थिक समस्याएँ थीं। व्यवहारिक दृष्टि से भी अमेरिका के लिए तात्कालीक परिस्थितियों में तटस्थता को बनाए रखना आवश्यक था। फलत: अमेरिका ने द्वितीय विश्व युद्ध के पूर्व के वर्षों में कई तटस्थता अधिनियम पारित किये। 1935 ईसवी में इटली द्वारा इथोपिया पर आक्रमण करने पर अमेरिका के विदेश विभाग ने तटस्थता बिल प्रस्तावित किया। जिसके द्वारा अग्रिम युद्धों में युद्धकारी राष्ट्रों के विरुद्ध शस्त्र पाबन्दी का अधिकार राष्ट्रपति को दिया गया। 29 फरवरी, 1933 ईसवी को तटस्थता अधिनियम का सीमा क्षेत्र बढ़ा दिया गया और युद्ध व्यस्त राष्ट्रों को दिये जाने वाले अमेरिकी ऋणों और साखों पर पाबन्दी लगा दी गई। 18 जुलाई 1936 ईसवी में स्पेन में गृह युद्ध छिड़ जाने पर अमेरिका ने 6 फरवरी, 1937 ईसवी को शस्त्रों के निर्यात पर पाबन्दी लगा दी। इस प्रकार 1937 ईसवी तक अमेरिका ने विदेश नीति के क्षेत्र में पृथकता तथा तटस्थता के सिद्धान्त को बार-बार प्रतिपादित किया। यद्यपि यह नीति निरन्तर रूप से परिवर्तित अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियों के कारण स्थाई न बन सकी और 1937 ईसवी के पश्चात् यूरोप की स्थिति में अमेरिका को अन्तर्राष्ट्रवाद की ओर विवश कर ही दिया।

(iii) रूस को मान्यता - यद्यपि 1920 ईसवी में अमेरिका मे रूस को मान्यता देने के लिए प्रयत्न जारी हो चुके थे किन्तु राष्ट्रपति रूजवेल्ट ने इसके लिए सर्वप्रथम सक्रिय कदम उठाये। 1933 ईसवी में राष्ट्रपति रूजवेल्ट ने रूस सहित पैंतालीस राष्ट्राध्यक्षों से निशस्त्रीकरण एवं आर्थिक समस्याओं के हल हेतु सहयोग की माँग की। इसके पश्चात् लंदन आर्थिक सभा में रूस व अमेरिका के प्रतिनिधियों ने मित्रता पूर्ण बातचीत शुरू हुई। कुछ समय पश्चात् अमेरिका ने कपास खरीदने के लिए रूस को ऋण दिया। 10 अक्टूबर, 1933 ईसवी को राष्ट्रपति ने रूस को पत्र लिखकर सामान्य सम्बन्ध बनाने की बात की जिसे रूस के एम. कालिनिन ने स्वीकार कर लिया। अमेरिका ने सोवियत रूस को मान्यता दे दी और आपस में कूटनीतिक सम्बन्ध स्थापित कर लिये। इस मान्यता के पीछे अमेरिकी विदेश नीति का उद्देश्य रूस से व्यापार विस्तार तथा जर्मनी और जापान की साम्राज्यवादी व आक्रामक नीति के विरुद्ध रूस का समर्थन प्राप्त करना था। अमेरिकी दृष्टिकोण से विश्व शांति के लिए भी रूस से कूटनीतिक सम्बन्ध आवश्यक होते जा रहे थे। उधर रूस के प्रतिनिधि लिटविनॉव ने अमेरिका को यह विश्वास दिलाया कि रूस अमेरिका के अधिकारों की रक्षा करेगा। रूस में अमेरिकी निवासियों को स्वतन्त्र जीवन की

सुविधाएं व सामान्य अधिकार प्रदान किये जायेंगे और ऐसे सभी प्रचारों पर पाबंदी लगा दी जायेगी जो दोनों देशों के मध्य विरोधी भावनाओं को उकसाते हो अमेरिका द्वारा रूस को मान्यता देने की घटना अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टि से बड़े-बड़े महत्त्व की थी।

(iv) लैटिन अमेरिका के प्रति ''अच्छे पड़ौसी'' की नीति –लैटिन अमेरिका के देशों के सम्बन्ध में अमेरिका की विदेश नीति में जो परिवर्तन राष्ट्रपति हूवर के समय में आरम्भ हो गया था, उसे राष्ट्रपति एफ.डी. रूजवेल्ट ने अधिक स्पष्ट रूप से दृढ़ किया। उसने अपने उद्घाटन भाषण में अमरीकी देशों के साथ ''अच्छे पड़ौसी की नीति'' (Good Neighbour Policy) की घोषणा की जिसका प्रमुख लक्ष्य इन देशों में सशस्त्र हस्तक्षेप का विरोध तथा सौहार्द्रपूर्ण सम्बन्धों को स्थापित करना था। इस नीति को स्पष्ट करते हुए राष्ट्रपति रूजवेल्ट ने कहा ''इस गोलार्द्ध में शान्ति व्यवस्था और वैधानिक सरकारों को बनाये रखना प्रत्येक सीमावर्ती राष्ट्र का प्रथम कर्त्तव्य है। हम तभी दूसरों से भली प्रकार सम्बन्धित हो सकते है जबकि सामान्य व्यवस्था महाद्वीप के दूसरे राष्ट्रों को प्रभावित करे और तब यह व्यवस्था सम्पूर्ण महाद्वीप के राष्ट्रों की संयुक्त सहमति बन जायेगी जिनके हम पड़ौसी हैं।'' इस नीति को समर्थन देते हुए 14 अप्रैल, 1933 ईसवी को राष्ट्रपति एफ.डी. रूजवेल्ट ने संयुक्त अमेरिकी यूनियन सम्मेलन में बताया कि इस महाद्वीप के प्रत्येक राष्ट्र का कर्त्तव्य है कि वे एक दूसरे को अपना सही पड़ोसी समझें तथा वे बिना विलम्ब के सभी अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक बन्धनों का त्याग कर दें और आपसी सहयोग की ओर अग्रसर हो जायें।

इस नीति के परिणामस्वरूप सर्वप्रथम हेटी से सेनाएँ हटायी गई, क्यूबा, ग्वाटेमाला, निकारगुआ व मैक्सिको के साथ अच्छे सौहार्द्रपूर्ण सम्बन्ध स्थापित किये गये। दिसम्बर, 1933 ईसवी में अमेरिका ने मॉन्टविडो में हुए सातवें संयुक्त अमेरिकी सम्मेलन में लैटिन-अमेरिकी देशों से अधिकारों और कर्त्तव्यों के सम्बन्ध में सन्धियाँ की और अहस्तक्षेप के सिद्धान्त (Non-Intervention) को दृढ़ किया। अमेरिका ने हेटी तथा क्यूबा से पारस्परिक व्यापारिक समझौते किये और उन्हें उनकी गिरती हुई आर्थिक स्थिति से संरक्षण देने में सहायता की। क्यूबा में व्याप्त आन्तरिक विद्रोह को समाप्त करने तथा स्थाई शांति लाने के लिए राष्ट्रपति रूजवेल्ट ने सक्रिय प्रयत्न किये। इसी प्रकार अच्छे पड़ौसी की नीति का परिचय अमेरिका ने पनामा में भी दिया। इस नीति का प्रमाण 1933 ईसवी में क्यूबा में हुए उपद्रवों में देखा जा सकता है। क्यूबा में अमेरिकी व्यापार से उत्पन्न आर्थिक मन्दी (1929 ईसवी में 2,070 लाख डालर खरीद जो घटकर 1932 ईसवी में 583 लाख डालर रह गई थी) को लेकर तात्कालिक सरकार के विरुद्ध अनेक उपद्रव होने लगे। वैसे 1901 ईसवी में प्लेट संशोधन (Platt Amendment) के अन्तर्गत अमेरिका को ''ऐसी सरकार बनाये रखने के लिए, जो जीवन, सम्पत्ति और व्यक्तिगत स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए पर्याप्त हो'' क्यूबा के मामलें में हस्तक्षेप करने का पूरा अधिकार प्राप्त था। परन्तु फिर भी राष्ट्रपति रूजवेल्ट ने 1933 ईसवी में हुई दो क्रान्तियों में अपनी ओर से प्रत्यक्ष हस्तक्षेप करने का प्रयत्न नहीं किया यद्यपि दोनों अवसरों पर युद्ध पोत भेजे गये पर वे यथासम्भव शीघ्र बुला लिये गये। यही नहीं, बल्कि इस सम्बन्ध में रूजवेल्ट ने दक्षिणी अमेरिका के प्रमुख राज्यों और मैक्सिको के राजनयिक प्रतिनिधियों का एक सम्मेलन बुलाया और किसी प्रकार का हस्तक्षेप

करने में अपनी अनिच्छा प्रकट की। अन्त में जून, 1934 ईसवी को एक सन्धि द्वारा इस व्यवस्था को सुनिश्चित रूप से समाप्त कर दिया गया।

इसी प्रकार की 'अच्छे पड़ौसी' की नीति का परिचय अमेरिका ने पनामा में भी दिया जिससे पनामा की नहर क्षेत्र में प्रचुर सम्पन्न राज्य के सम्पूर्ण व्यवहारिक अधिकार प्राप्त हो गये। 2 मार्च, 1936 ईसवी की सन्धि द्वारा अमेरिका 1930 ईसवी की हे-बुनोवरिला सन्धि (Hay-Bunavarilla Treaty) से नहर सम्बन्धी प्राप्त सभी अधिकारों का परित्याग कर दिया। इसके बदले में पनामा ने नहर से सुरक्षा रखने के लिए सहयोग देना स्वीकार किया। यद्यपि इस सन्धि का सीनेट में विरोध हुआ किन्तु 25 जुलाई, 1939 ईसवी में इसे कुछ संशोधनों के साथ स्वीकृत कर क्यूबा व पनामा को प्रभुत्व सम्पन्न राज्य बना दिया गया।

निकारगुआ से भी मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित किये गये। 1938 ईसवी में मैक्सिको से एक नया समझौता किया गया। इसमें निश्चय किया गया कि एक संयुक्त आयोग की स्थापना की जाये जो कृषि भूमि के उपयोग के बदले मुआवजे की राशि निर्धारित करे। यह भी स्वीकृत किया गया कि 1939 ईसवी के आगे मैक्सिको अमेरिका को दस लाख डालर की राशि प्रतिवर्ष चुकायेगा और तेल सम्बन्धी दावों के बारे में निर्णय बाद में लिया जायेगा। इसी तरह 1940 ईसवी में राष्ट्रपति रूजवेल्ट ने डामिनिकन गणतन्त्र में 1905 ईसवी से व्याप्त चुंगी व्यवस्था का भी परित्याग कर दिया।

इसी प्रकार के सौहार्द्र सम्बन्ध की नीति का परिचय अमेरिका ने बोलिविया तथा परागीय में दिया जहाँ ग्रान्चाको युद्ध (Granchaco War) में शांतिपूर्ण समझौते हुए। अब अमेरिका की यह सद्इच्छा थी कि वह सम्पूर्ण अमेरिकी महाद्वीप की दृढ़ता के सिद्धान्त (Hemispheric Solidarity) की ओर अग्रसर होकर पारम्परिक संघर्षों से इस क्षेत्र को मुक्त रखे। 1 दिसम्बर, 1936 ईसवी में हुए ब्युनास ऐयरर्स सम्मेलन (Buenos Aires Conference) में अमेरिका ने लैटिन अमेरिकी देशों से मित्रता के समझौते किये। इस मामले में कुल मिलाकर ग्यारह सन्धियाँ की गई तथा बासठ प्रस्ताव पारित किये गये। इन सभी समझौतों के उद्देश्य अमेरिकी महाद्वीप में सामूहिक सुरक्षा प्रदान करना तथा शांति विघटन की स्थिति में अनिवार्य मध्यस्थता को स्वीकार करवाना था। इसके पश्चात् 1938 ईसवी में अमेरिकी राष्ट्रों के लीमा सम्मेलन (Lima Conference) में भी सहयोग और आपसी दृढ़ता की नीति को दोहराया गया। परिणामत: अब मुनरो सिद्धान्त को लागू करने में जिम्मेदारी मात्र अमेरिका की न रहकर इक्कीस अन्य लैटिन अमेरिकी राष्ट्रों की संयुक्त रूप से हो गई। इससे अमेरिकी हितों को कुछ नुकसान भी पहुँचा। उदाहरणार्थ जब मैक्सिको ने तल का राष्ट्रीयकरण कर दिया तब अमेरिका ने हस्तक्षेप के स्थान पर सहयोग की नीति का परिचय दिया और 1939 ईसवी में दोनों देशों ने तेल कम्पनियों को उचित मुआवजा देने के लिए एक संयुक्त आयोग की स्थापना कर समस्या का बहुत कुछ शांतिपूर्ण समाधान प्राप्त कर लिया। अमेरिका ने अपने तेल सम्बन्धी हित की हानि होने पर भी अहस्तक्षेप की नीति का पालन किया और इस क्षेत्र में अच्छे पड़ौसी और महाद्वीप की दृढ़ता के सिद्धान्त को मजबूत किया।

द्वितीय विश्वयुद्ध काल के दौरान सितम्बर, 1939 ईसवी में विदेश मन्त्रियों का सम्मेलन पनामा में हुआ जिसमें अमेरिका ने यह दबाव डाला कि इक्कीस लैटिन अमेरिकी राष्ट्र अपने राष्ट्र हितों, व्यापारिक अधिकारों तथा निजी सुरक्षा को युद्धकारी राष्ट्रों द्वारा ग्रसित नहीं होने देंगे और शीघ्र ही एक, तीन सौ से एक हजार मील लम्बा क्षेत्र तटस्थता का क्षेत्र घोषित किया गया। इसके पश्चात् 21 जुलाई, 1940 ईसवी में अमेरिका ने हवाना में सम्मेलन बुलाकर मुनरो सिद्धान्त (Munroe Doctrine) को पुन: दृढ़ किया। द्वितीय विश्व युद्ध की अवधि में इन लैटिन अमेरिकी देशों ने अमेरिका के प्रति दृढ़ता को दोहराया और मैक्सिको को छोड़कर सभी केरेबियन और मध्य अमेरिकी राष्ट्रों ने धुरी राष्ट्रों पर संयुक्त रूप से युद्ध की घोषणा की तथा चीली तथा अर्जेन्टाइना को छोड़कर सभी ने धुरी राष्ट्रों से कूटनीतिक सम्बन्ध विच्छेद कर लिये। 1942 ईसवी में फिर विदेश मन्त्रियों का सम्मेलन तीसरी बार रायो डी जेनेरो (Rio De Jeneiro) में हुआ इसमें यह निर्णय लिया गया कि एक राष्ट्र के विरुद्ध आक्रमण सभी राष्ट्रों के विरुद्ध माना जायेगा। सभी राष्ट्र धुरी राष्ट्रों से कूटनीतिक सम्बन्ध तोड़ लेंगे। सामरिक महत्त्व की सामग्री का सभी राष्ट्र आपस में विनिमय करेंगे और विध्वंसकारी कार्यवाहियों पर नियंत्रण के हेतु एक समिति का निर्माण करेंगे। इस तरह अच्छे पड़ौसी नीति के अन्तर्गत लैटिन अमेरिकी देशों में अमेरिका को युद्ध काल में उपयोगी युद्ध सामग्री दी, नौ सैनिक व वायु सेना सम्बन्धी अड्डे दिये तथा सभी ने धुरी राष्ट्रों के विरुद्ध तथा अमेरिका के समर्थन में भाग लिया। 26 जून, 1945 ईसवी को लैटिन अमेरिका के लगभग सभी सदस्यों ने संयुक्त राष्ट्र संघ की सदस्यता स्वीकार की।

(v) सुदूर पूर्व की प्रति नीति –मंचूरिया पर आक्रमण के पश्चात् जापान अपनी साम्राज्यवादी नीति को और अधिक पनपाने लगा 17 अप्रैल, 1934 ईसवी में जापान के विदेश विभाग ने पूर्वी एशिया में अपने विशेष उत्तरदायित्व तथा चीन पर अपने राजनीतिक संरक्षण की घोषणा की। इसकी अमेरिका में प्रतिक्रिया होना स्वाभाविक थी और उसने 29 अप्रैल, 1934 ईसवी को चीन में अपने संधि प्राप्त अधिकारों को पुन: दृढ़ता से दोहराया। इसके पश्चात् 1935 ईसवी में जब जापान ने चीन के पाँच प्रांतों को मिलाने का प्रयत्न किया तो अमेरिका ने जापान का एक बार पुन: संधि-अधिकारों की ओर ध्यान आकर्षित किया। 7 जुलाई, 1937 ईसवी को जब चीन व जापान में अघोषित युद्ध (Undeclared War) प्रारम्भ हो गया तब भी अमेरिका ने जान बूझ कर आत्मनियंत्रण की नीति का पालन किया और मध्यस्थता का प्रस्ताव रखा, जिस पर जापान ने कोई विशेष ध्यान नहीं दिया। परिणामत: 5 अक्टूबर, 1937 ईसवी को राष्ट्रपति रूजवेल्ट ने अपने प्रसिद्ध ''क्वरेनटाइन भाषण'' (Quarantine Speech) में जापान की नीति की भर्त्सना की। 12 दिसम्बर, 1937 ईसवी को जापानी बमबारों ने अमेरिकी बन्दूकधारी नाव पनाय (Panay) को यांगतसी नदी में डूबो दिया। इस पर अमेरिका ने जापान को खेद प्रकट करने व क्षतिपूर्ति के लिए विवश किया। हालांकि जापान ने खेद अवश्य प्रकट किया परन्तु उसने अपनी नीति में कोई परिवर्तन नहीं किया। इसके बावजूद भी अमेरिका निरन्तर चीन में 'मुक्त द्वार' नीति पर जोर देता रहा, यद्यपि जापान ने उसकी खुली अवहेलना की थी। जापान की उग्रता से विवश होकर अमेरिका ने चीन को 25,000,000 डालर की धन राशि तथा युद्ध सामग्री भेजने की सुविधा प्रदान

की। इसके अतिरिक्त अमेरिका ने चीन को 50,000,000 डालर के गेहूँ और रूई की भी सहायता दी। उधर अमेरिका ने जापान से संधि की शर्तों का विच्छेद कर जापान को निर्यात होने वाले तेल, लोहा व अन्य सामग्रियों की कटौती कर दी। किन्तु उसका भी जापान की साम्राज्यवादी नीति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। इस पर 1941 ईसवी में अमेरिका ने एक बार फिर जापान से चीन से मुक्त द्वार नीति के समर्थन, चीन की अखण्डता की सुरक्षा तथा अन्तर्राष्ट्रीय झगड़ों को शांति प्रयासों से सुलझाने के लिए बातचीत प्रारम्भ की, परन्तु जापान बराबर सुदूर पूर्व में जापानी आधिपत्य के लिए दृढ़ रहा और 7 दिसम्बर, 1941 ईसवी को उसने अकस्मात् पर्ल हार्बर (Pearl Harbour) पर आक्रमण कर दिया। इस पर अमेरिका ने सुदूर पूर्व में शांति प्रयासों का तुरन्त परित्याग कर चीन को जापान के विरुद्ध पूर्ण सहायता देना प्रारम्भ कर दिया।

(vi) फिलिपीन्स की स्वतन्त्रता का वचन - राष्ट्रपति एफ.डी. रूजवेल्ट के राष्ट्रपति बनने के पूर्व ही फिलीपीन्स में स्वतन्त्रता की माँग चल पड़ी थी जिसे क्रमश: राष्ट्रपति विल्सन, हार्डिंग, कूलिज आदि किसी तरह से दबाते रहे। किन्तु विश्व आर्थिक संकट के पश्चात् अधिकांश अमेरिकी जनमत फिलीपीन्स की स्वतंत्रता के पक्ष में बदल गया और रूजवेल्ट के चुनाव के पूर्व ही अमेरिकी कांग्रेस ने "हेयर हाज कटिंग बिल" (Hare Hawes Cutting Bill) पारित कर दिया जिसके द्वारा फिलीपीन्स को ठीक दस वर्ष पश्चात् स्वतन्त्र घोषित करने की व्यवस्था की गई थी। परन्तु फिलिपीनों ने इस बिल का तीव्र विरोध किया। इस पर राष्ट्रपति रूजवेल्ट ने उदारवादी दृष्टिकोण अपनाने के लिए कांग्रेस को प्रेरित किया और पिछले बिल को संशोधित कर मार्च, 1934 ईसवी में टाइडिंगस् मक्डूफी अधिनियम (Tyding-Mc Duffi Act) पारित कर फिलिपीन्स में सैनिक और नौ सैनिक उपबन्धों को समाप्त कर दिया। फिलिपीन्स की व्यवस्थापिका सभा ने इस अधिनियम को तुरन्त स्वीकृति प्रदान कर दी।

(vii) यूरोपीय मामलों में तटस्थता - प्रारम्भिक वर्षों में यूरोप में राष्ट्रपति रूजवेल्ट की विदेश नीति पृथकतावाद व तटस्थता पर आधारित थी। इस तटस्थता की नीति को सुरक्षित रखने के लिए उसने कई तटस्थता अधिनियम पारित किये। इसके साथ-साथ उसने राष्ट्र संघ के शान्ति प्रयासों में सहयोग दिया तथा नि:शस्त्रीकरण योजनाओं में भी सक्रिय भाग लिया। अमेरिका ने इथोपिया में इटली के आक्रमण तथा स्पेन में गृह युद्ध होने के बावजूद भी तटस्थता की नीति का परित्याग नहीं किया। राष्ट्र संघ में उसने अन्तर्राष्ट्रीय श्रमिक संगठन (I.L.O.) की सदस्यता ग्रहण की। नि:शस्त्रीकरण के क्षेत्र में अन्तर्राष्ट्रीय नि:शस्त्रीकरण सम्मेलन (World Disarmament Conference) में अमेरिका ने पचपन राष्ट्रों से सम्मेलन की सफलता के लिए अपील की। राष्ट्रपति रूजवेल्ट ने युद्धकारी राष्ट्रों पर शस्त्र-पाबन्दी के भी प्रयत्न किये, यद्यपि वह यूरोप में सशस्त्र सैनिकवाद को रोकने में सफल न हो सका। जून, 1934 ईसवी में अमेरिका, जापान और ब्रिटिश प्रतिनिधियों के मध्य लन्दन में बातचीत प्रारम्भ हुई, किन्तु युद्ध पोतों के अनुपात को लेकर ब्रिटेन व अमेरिका के बीच कोई समझौता नहीं हो सका। इधर जापान नौ सेना के क्षेत्र में वाशिंगटन संधि सम्मेलन की शर्तों को विघटित कर अमेरिका व ब्रिटेन के अनुपात में नौ सैनिक शक्ति बढ़ाना चाहता था। इसी अविश्वास के वातावरण में एक वर्ष पश्चात् द्वितीय लन्दन

सम्मेलन की शुरुआत हुई और 25 मार्च, 1936 ईसवी को चार राष्ट्रों के बीच एक नौ सैनिक संधि की गई, किन्तु जापान के साम्राज्यवाद के सम्मुख अमेरिका को नि:शस्त्रीकरण के मामले में विशेष सफलता न मिल सकी।

द्वितीय विश्व युद्ध में अमेरिका का प्रवेश :

1931 ईसवी के पश्चात् जापान-जर्मनी और इटली ने खुले तौर पर साम्राज्यवादी और आक्रामक नीतियों पर बल दिया। जापान ने मंचूरिया पर आक्रमण कर कठपुतली मंचुकुओ राज्य स्थापित किया और उत्तर में रूसी साइबेरिया तथा दक्षिण में चीन की ओर वह अग्रसर हुआ। इटली ने फ्यूम को वापिस ले लिया और उसने इथोपिया के साथ युद्ध प्रारम्भ कर पुराने रोम राज्य को नया जन्म देने की ठान ली। जर्मनी ने वर्साय को ठुकरा कर शस्त्रीकरण की ओर ठोस कदम उठाये। परन्तु अमेरिका बड़ी उदासीनता से इन घटनाओं को देखता रहा, यद्यपि वह इन घटना चक्रों से काफी क्षुब्ध था। इस उदासीनता के पीछे अमेरिकी जनमत था जो बराबर इस पर दबाव डाल रहा था कि अमेरिका ने प्रथम विश्व युद्ध में भाग लेकर जो त्रुटि की थी उसे वह अब न दोहराये। अत: ज्यों-ज्यों फासिस्ट शक्तियों का रुख आक्रामक होता गया त्यो-त्यों अमेरिका पार्थक्यवाद की ओर अधिकता से बढ़ा और 31 अगस्त, 1935 ईसवी को राष्ट्रपति रूजवेल्ट ने तटस्थता अधिनियम (Neutrality Act) का प्रस्ताव कांग्रेस के सम्मुख रखा। इस अधिनियम द्वारा अमेरिका ने शस्त्र सामग्री आदि पर अधिरोध प्रभावकारी कर दिया तथा युद्धकारी राष्ट्रों से व्यापार करने वाले व्यापारियों को अपनी खुद की जोखिम पर व्यापार करने की छूट दी गई। परन्तु इस अधिरोध का परिणाम अहितकारी सिद्ध हुआ, क्योंकि अमेरिकी व्यापारियों ने अधिकांश युद्ध सम्बन्धी सामग्री इटली को निर्यात करना शुरू कर दिया जिसका प्रयोग उसने अपनी आक्रामक नीति को प्रशस्त करने में किया। मार्च, 1936 ईसवी में जर्मनी ने राइनलैण्ड पर पुन: आधिपत्य प्राप्त कर लिया और नवम्बर में रोम-बर्लिन धूरी (Rome-Berlin Axis) का निर्माण किया गया। जुलाई, 1936 ईसवी में स्पेन में गृह युद्ध आरम्भ हो गया। 1 मई, 1937 ईसवी को पुन: तटस्थता कानून पारित किया गया और तद्नुसार सभी प्रकार के ऋणों पर पाबन्दी लगा दी गई। यहाँ तक कि अपनी जोखिम पर यात्रा करने वालों पर भी सीमा लगाई गई तथा युद्ध सामग्री के निर्यात पर रोक लगा दी गई। इसी दौरान 1937 ईसवी में कांग्रेस के एक प्रतिनिधि लुईस लुडलो ने एक संशोधन (Ludlow Amendent) प्रस्तुत किया। जिसका अभिप्राय था कि कांग्रेस द्वारा युद्ध घोषणा तब तक प्रभावकारी नहीं होगी जब तक उसकी परिवेक्षा न की जाये। किन्तु यह संशोधन इस आधार पर गिर गया कि इससे अमेरिकी राष्ट्रपति की विदेश नीति सम्बन्धी विषयों में स्वतन्त्रता पूर्णतया समाप्त हो जाती। इस तरह का एक और प्रस्ताव लॉ फालेट ने रखा, वह भी कांग्रेस द्वारा अस्वीकृत कर दिया गया। इस सब के बावजूद भी अमेरिका पार्थक्यवाद को सुरक्षित रखने के लिए बराबर प्रयत्नशील रहा।

परन्तु सुदूर पूर्व में जापान की साम्राज्यवादी नीति आक्रमणकारी होती जा रही थी। फरवरी में जापान ने अमेरिका से शांति व मित्रता का प्रस्ताव रखा और अप्रैल में उसने यह घोषणा की कि

यदि चीन ने किसी बाहरी देश की सहायता लेने की कोशिश की तो जापान उसका मुँह तोड़ मुकाबला करेगा। 25 नवम्बर, 1936 ईसवी को जापान ने जर्मनी से साम्यवाद विरोधी समझौता (Anti-Commitern Pact) कर लिया। इस पर राष्ट्रपति रूजवेल्ट ने तटस्थता अधिनियम का उल्लंघन करना चाहा और उसने 5 अक्टूबर, 1937 ईसवी को अपना प्रसिद्ध शिकागो भाषण (Quarantine Speech) दिया जिसमें उसने आक्रामक राष्ट्रों को नैतिक बहिष्कार का सुझाव दिया, जापान की नीति की भर्त्सना की तथा दक्षिणी अमेरिकी राष्ट्रों व कनाड़ा से सम्बन्ध बढ़ाने की चर्चा की। इसके साथ-साथ यह भी स्पष्ट कर दिया कि अमेरिका धीरे-धीरे युद्ध का विरोध करेगा। इसके कुछ समय पश्चात् 12 दिसम्बर, 1937 ईसवी को पनामा बोट दुर्घटना (Panama Boat Accident) हुई। 1938 ईसवी में जर्मनी ने आस्ट्रिया पर अपना अधिकार जमा लिया और वह चेकोस्लोवाकिया पर ललचाई नजरों से देखने लगा। 29 नवंम्बर को राष्ट्रपति रूजवेल्ट की अपील पर म्यूनिक समझौता (Munich Pact) हुआ जिसके द्वारा जर्मनी को सुडेटनलैण्ड पर अधिग्रहण करने की स्वीकृति मिल गई। इस समझौते की अमेरिका में तीव्र प्रतिक्रिया हुई और राष्ट्रपति रूजवेल्ट ने अपना ध्यान सामूहिक सुरक्षा की विदेश नीति पर लगाना शुरू कर दिया तथा अमेरिकी शस्त्रों को बढ़ाने की घोषणा कर दी। कुछ ही दिनों पश्चात् जर्मनी ने मेमल को अपने में वापस मिला लिया और फिर पोलैण्ड पर हमला कर दिया। 3 सितम्बर, 1939 ईसवी को विश्व युद्ध प्रारम्भ हो गया।

युद्ध के प्रारम्भिक वर्षों में अमेरिका की विदेश नीति को लेकर राष्ट्रपति और सीनेट के बीच संघर्ष होता रहा। राष्ट्रपति कांग्रेस से तटस्थता कानून में संशोधन करवाना चाहता था। किन्तु कांग्रेस इसके लिए तैयार न थी। एक लम्बी बहस के पश्चात् वह जिद्दी कांग्रेस से 'नगद देकर सामान खरीदने' (Cash and Carry) का कानून पास करवा सका। इसके कुछ ही महीनों पश्चात् 1940 ईसवी के प्रारम्भ में जर्मनी ने डेनमार्क, नार्वे, बेल्यिजम आदि जीत लिये। 24 जून, 1940 ईसवी को फ्रांस का भी पतन हो गया। इससे रूजवेल्ट की चिंताएँ बढ़ गई और उसने समर वेल्स (Summer Wells) की शांति व्यवस्था का प्रथम एवं अन्तिम संदेश देकर, लंदन, पेरिस, रोम और बर्लिन भेजा। वेल्स ने शीघ्र ही परिस्थितियों का अध्ययन कर यह स्पष्ट कर दिया कि हिटलर किसी भी प्रकार के शांति समझौते के लिए तैयार नहीं है। हिटलर की बढ़ती हुई महत्त्वकांक्षाओं और विजय से चिंतित राष्ट्रपति रूजवेल्ट ने ''मित्रों की सहायता नीति ''को अपनाया और इसके अन्तर्गत उसने 'नकद देकर सामान खरीदने' के स्थान पर उधार पट्टा (Lend-Lease) की नीति रीति अपनायी और 50,226,845,387 डालर राशि ऋण के रूप में युद्ध में लगा दी। जून से दिसम्बर, 1941 ईसवी तक अमेरिका ने कई तटस्थता-विरोधी (Un-Neutral Act) कानून पारित किये, धुरी राष्ट्रों के जहाज जब्त कर लिये, उनके धन पर कब्जा कर लिया और किसी भी जर्मन पनडुब्बी को देखते ही गोली मारने का आदेश दे दिया। यद्यपि अमेरिका अभी तक जर्मनी से अघोषित युद्ध (Undecleared war) की ओर ही उन्मुख था कि 7 दिसम्बर, 1941 ईसवी को पर्ल हार्बर के अमेरिकी नौ सैनिक अड्डे पर जापान ने अप्रत्याशित आक्रमण कर दिया। इस बार अमेरिका ने क्रुद्ध होकर 8 दिसम्बर को जापान से और जर्मनी और इटली ने अमेरिका से 11 दिसम्बर को पूर्ण युद्ध की घोषणा कर दी।

द्वितीय विश्व युद्ध में अमेरिका की भूमिका :

फ्रांस के पतन ने अधिकांश अमेरिकनों की आँखें खोल दी। वे जान गये कि जर्मन सैनिक तंत्र कितना शक्तिशाली है। इसके पश्चात् गर्मी और सर्दी में ग्रेट ब्रिटेन पर किये गये हवाई हमलों ने यह सोचने को बाध्य कर दिया कि यदि ब्रिटेन का पतन हो गया तो अमेरिका एक महा प्रबल शक्तिशाली सैनिक गुट से अकेले जूझना पड़ेगा। अतएव अमेरिकी कांग्रेस ने पुन: सशस्त्रीकरण के लिए अरबों डालर स्वीकृत किये, अमेरिकी गोलार्द्ध के प्रजातन्त्रों के साथ सामूहिक सुरक्षा के बारे में समझौते किये गये तथा कनाड़ा के साथ एक संयुक्त प्रतिरक्षा मंडल का गठन किया गया। शांति काल में भी दस लाख सैनिकों की भर्ती और उनके प्रशिक्षण की व्यवस्था की गई। ब्रिटेन ने पचास पुराने विध्वंसकों के बदले में अमेरिका को न्यूफाऊंडलैण्ड से ब्रिटिश गायना तक के लिए कई सैनिक अड्डे उपयोग के लिए ठेके पर प्रदान किये। फिर से राष्ट्रपति बनने के बाद रूजवेल्ट ने कांग्रेस से उधार पट्टे पर सामग्री देने का अधिनियम पारित कराया। धुरी राष्ट्रों के जहाज जब्त कर लिये गये और किसी भी जर्मनी पनडुब्बी को देखते ही गोली मारने के आदेश दे दिये गये। ऐसा लगने लगा कि अमेरिका जर्मन के विरुद्ध युद्ध की ओर बढ़ रहा है, किन्तु उसमें थोड़ा समय और लगेगा। अमेरिका ने ब्रिटेन के साथ मिलकर जापान के विरुद्ध कड़ा रुख अपनाना शुरू किया, किन्तु जापान ने इसकी चिन्ता नहीं की।

इस प्रकार पर्ल हार्बर की घटना के समय अमेरिका युद्ध के लिए काफी तैयारियाँ कर चुका था। पर्ल हार्बर की घटना ने अमेरिकी राष्ट्र को उतना संगठित कर दिया जितना वह किसी प्रकार से नहीं हो सकता था।

अमेरिका के युद्ध में प्रवेश के समय मित्र राष्ट्रों की स्थिति गम्भीर थी। हिटलर की सेनाएँ रूस में घुस गई थी। रूस का पतन निकट दिखाई देता था। इटली का भूमध्यसागर पर प्रभुत्व था और उसकी सेनाएँ मिस्त्र और स्वेज नहर पर खतरा पैदा कर रही थी। चीन के एक बड़े भाग पर कब्जा करके जापानी मलाया, डच ईस्ट इण्डिज और फिलिपीन्स पर कब्जा करने की तैयारी कर रहे थे। ब्रिटेन हवाई हमलों से क्षत-विक्षत था।

अमेरिका ने युद्ध में प्रवेश करने के बाद मित्र राष्ट्रों से कुछ समय पहले किये गये दो निश्चयों पर अमल किया। उसने जापान को हराने पर अपना ध्यान केन्द्रित करने के बदले जर्मनी को हराने के कार्य को प्राथमिकता दी, क्योंकि जर्मनी को हराने के बाद विजयी राष्ट्रों की संयुक्त शक्ति के आगे जापान अधिक देर तक नहीं टिक सकता था। दूसरा संकल्प युद्ध को एक सम्मिलित कार्यवाही की योजना बनाना था। सैनिक, राजनीतिक, राजनयिक और आर्थिक नीतियों में मित्र राष्ट्रों को मिलकर कार्य करना था।

रूजवेल्ट ने अमेरिका की असाधारण शक्तियाँ तेजी से युद्ध उत्पादन में लगा दी। उसने अपने इस वचन को पूरा किया कि अमेरिकी लोकतन्त्र का शस्त्रागार बनेगा। कई नये उद्योग लगाये गये। उसकी क्षमता का अनुमान इससे ही लगाया जा सकता है कि युद्ध की समाप्ति पर उधार पट्टे

अधिनियम के अन्तर्गत उसने पचास हजार डालर मूल्य की खाद्य सामग्री और युद्ध का सामान दिया। विमान और जहाज निर्माण के क्षेत्र में भी उसने आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त की। अनाज उत्पादन में भी आशातीत सफलता कृषकों को मिली।

संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के युद्ध में भाग लेने से मित्र राष्ट्रों का साहस बढ़ा। अमेरिका व ब्रिटेन ने रूस को अधिकाधिक मदद पहुँचानी प्रारम्भ की। जर्मन पनडुब्बियों की विनाशकारी कार्रवाई का डट कर मुकाबला किया गया। अमेरिका ने जनरल आईजनहावर (Eisenhower) के नेतृत्व में एक सेना भेजी। उसकी अध्यक्षता में मित्र राष्ट्रों की सेनाओं ने मार्च, 1943 ईसवी में उत्तरी अफ्रीका पर पूर्ण नियंत्रण स्थापित कर लिया।

जनवरी, 1943 ईसवी में आयोजित कैसाब्लांका सम्मेलन (Casablanca Conference) में रूजवेल्ट, चर्चिल और उनके सेनापतियों द्वारा लिये गये निर्णय के अनुसार जून, 1943 ईसवी में आईजन हावर ने सिसली पर आक्रमण कर दिया। इस बीच रूसियों ने स्टालिनग्राड में जर्मन सेनाओं के आक्रमण को विफल कर दिया था और वे प्रत्याक्रमण के लिए तैयार थे। अब जर्मनी पर हवाई हमलों की संख्या बढ़ा दी गई। 5 जून, 1944 ईसवी को मित्र राष्ट्र की सेनाएँ फ्रांस में जर्मन पंक्तियों के पीछे उतरी। शीघ्र ही उन्होंने जर्मन फौजों को खदेड़ दिया और जर्मनी की ओर बढ़ी। दूसरी ओर से रूसी सेनाएँ आगे बढ़ी। अप्रैल, 1945 ईसवी में दोनों ओर से बढ़ती हुई सेनाओं ने जर्मनी पर अधिकार कर लिया।

उधर प्रशान्त महासागर के क्षेत्र में आरम्भ में जापान की विजय हो रही थी। शीघ्र ही उसने थाइलैण्ड और हिन्द चीन को जीत लिया। मलाया पर अधिकार करके वह सोलोमन द्वीप में पहुँच गया। फिलिपीन्स पर भी उसका अधिकार हो गया था। इस प्रकार 1942 ईसवी के अन्त तक एशिया के एक बड़े भाग पर उसका प्रभुत्व था। अमेरिका ने जनरल मेकार्थर को ब्रिटेन और आस्ट्रेलिया की मदद को भेजा। मई व जून, 1942 ईसवी में अमेरिकी व जापानी जहाजी बेड़े में लड़ाईयाँ हुईं। इनमें जापानी जहाजी बेड़े को नुकसान पहुँचा। अगले वर्ष फिलिपीन्स सागर के युद्ध में जापानी नौ सेना को हराकर अमेरिकी नौसेना ने सेपान और गुआम को जीत लिया। अक्टूबर, 1944 ईसवी में मेकऑर्थर ने फिलिपीन्स पर आक्रमण किया। फरवरी, 1945 ईसवी में मनीला का पतन हो गया। इस समय तक यूरोप का युद्ध समाप्त हो चुका था। मलाया, सिंगापुर व बर्मा को ब्रिटिश सेनाओं ने जापान से पहले ही मुक्त करा लिया था। अन्त में युद्ध को जल्द समाप्त करने के लिए अमेरिका ने क्रमश: 7 तथा 9 अगस्त, 1945 ईसवी को जापान के नगरों हिरोशिमा और नागासाकी पर अणुबम गिराया। विवश होकर 14 अगस्त, 1945 ईसवी को जापान ने आत्म समर्पण कर दिया।

युद्ध काल में स्थाई शांति के लिए प्रयत्न :

स्थाई शांति एवं विश्व की नव व्यवस्था (New World Order) के लिए युद्ध काल में रूजवेल्ट के प्रयत्न- 1940 ईसवी में राष्ट्रपति पद के चुनाव में विजयी होने के पश्चात् रूजवेल्ट ने ग्रेट ब्रिटेन को उसके युद्ध प्रयत्नों में और अधिक सहायता देना आरम्भ किया। इन

दोनों के बीच सहयोग की भावना बढ़ती गई तथा उन्होंने अपने उद्देश्यों को और अधिक स्पष्ट रूप से घोषित करने की आवश्यकता महसूस की। वास्तव में रूजवेल्ट के इस समय दो मुख्य उद्देश्य थे-प्रथम, एक सुदृढ़ ऋण नीति की सहायता से मित्र राष्ट्रों को विजय की ओर अग्रसर करना तथा दूसरा एक स्थायी विश्व शांति की स्थापना की ओर राष्ट्रों को उन्मुख करना।

इसके लिए उसने मित्र राष्ट्रों के प्रतिनिधियों के साथ समय-समय पर ऐसी कुछ घोषणाएँ की जिनमें युद्धोपरान्त विश्व की नव व्यवस्था की ओर स्पष्ट संकेत थे।

(i) अटलांटिक घोषणा पत्र (Atlantic Charter) – अगस्त, 1942 ईसवी में रूजवेल्ट और चर्चिल की भेंट न्यूफाउण्डलैण्ड के तट के पास एक युद्ध पोत पर हुई। इसमें ब्रिटेन को मदद पहुँचाने के उपायों पर विचार किया गया। इसके साथ-साथ दोनों के युद्ध उद्देश्यों का आठ सूत्रीय घोषणा पत्र जारी किया गया। दोनों शक्तियों ने यह स्पष्ट किय कि उनके कोई भी विस्तारवादी इरादे नहीं हैं। वे जनमत के विरुद्ध किसी भी प्रादेशिक व्यवस्था का समर्थन नहीं करेंगे तथा जनता द्वारा चुनी गई सरकारों को मान्यता देंगे। सभी राष्ट्रों को व्यापार और कच्चे माल प्राप्त करने की स्वतन्त्रता होगी तथा आर्थिक प्रगति एवं सामाजिक सुरक्षा के लिए अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग पर बल दिया जायेगा। उन्होंने एक ऐसी शांति का आह्वान किया जिसमें सभी व्यक्तियों को भय और आवश्यकताओं से सुरक्षा एवं मुक्ति मिले। इस घोषणा के कुछ सिद्धान्त विल्सन के 14 सूत्रों पर आधारित थे और इनमें 'विश्व के अच्छे भविष्य की आशाएँ' दिलाई गई थी।

जनवरी, 1942 ईसवी के आरम्भ में अमेरिका, ब्रिटेन, सोवियत, रूस, चीन और 22 अन्य देशों ने एक संयुक्त घोषणा पत्र में अटलांटिक चार्टर को स्वीकार किया।

(ii) मास्को सम्मेलन (अक्टूबर, 1943 ईसवी) – 1943 ईसवी में रूजवेल्ट, विल्सन और दिगाल ने यह तय किया कि उत्तरी अफ्रीका पर आक्रमण करने से पहले इटली पर आक्रमण किया जाये। अक्टूबर, 1943 ईसवी में अमेरिका का विदेश सचिव कोरडेल हल ने मास्को में इंग्लैण्ड के विदेश सचिव एन्थोनी एडन तथा रूस के विदेश सचिव मोलोटोव से परामर्श किया। उन्होंने एक घोषणा पत्र पर हस्ताक्षर किये जिसमें स्थायी सहयोग तथा एक ऐसी अन्तर्राष्ट्रीय संस्था का निर्माण करने का वचन दिया जो सभी शांतिप्रिय राष्ट्रों की प्रभुसत्ता की समानता के सिद्धान्त में विश्वास रखती हो।

(iii) काहिरा एवं तेहरान सम्मेलन (नवम्बर, 1943 ईसवी) – इस महीने में रूजवेल्ट, चर्चिल और चांगकाई शेक पहले काहिरा में और बाद में रूजवेल्ट, चर्चिल, स्टालिन तेहरान में मिले। यद्यपि ये दोनों सम्मेलन प्रमुख रूप से युद्ध के संचालन से सम्बन्धित थे किन्तु इनमें यह तय किया गया कि जापान ने 1894 ईसवी से जो प्रदेश विजयी किये हैं, उनसे उसे वंचित रखा जाये लेकिन रूस ने 1939 व 1940 ईसवी में जो प्रदेश हथियाये हैं उनमें से कुछ को उसके पास ही रहने दिया जाये।

(iv) डम्बार्टन ओक्स सम्मेलन (Dumbarton Oakes Conference) (अक्टूबर, 1944 ईसवी) – इस सम्मेलन में सोवियत रूस, अमेरिका, ब्रिटेन और चीन के प्रतिनिधियों ने संयुक्त

राष्ट्र संघ की प्रारम्भिक रूप रेखा तैयार की। इसको अन्य मित्र राष्ट्रों की सरकार के पास अनुमोदन के लिए भेजा गया।

(v) याल्टा सम्मेलन (Yalta Conference) (फरवरी, 1945 ईसवी) – आठ दिन के इस सम्मेलन में अमेरिका के राष्ट्रपति, ग्रेट ब्रिटेन के प्रधानमंत्री और सोवियत रूस के प्रधानमंत्री ने भाग लिया। इसमें युद्ध के बाद यूरोप के प्रादेशिक प्रबन्धों पर निर्णय लिये गये। जर्मनी को चार भागों में विभाजित किया जाना निश्चित हुआ। इन भागों पर तीन राष्ट्रों के अतिरिक्त फ्रांस का अधिकार होना था। जर्मनी पर क्षतिपूर्ति लादना तय किया गया। अन्य धुरी राष्ट्रों तथा उनके अधीन छोटे देशों में ऐसी आन्तरिक सरकारें बनाई जाने का सिद्धान्त स्वीकार किया गया जो प्रजातंत्रीय विचार रखने वाली जनता का प्रतिनिधित्व करती हो। इसके लिए ऐसी जनता की इच्छा को ध्यान में रखते हुए इन प्रदेशों में यथासम्भव शीघ्र चुनाव कराये जायेंगे। पौलेण्ड को अपने पूर्वी प्रदेशों के चले जाने के बदले जर्मनी का एक भाग दिया जायेगा। रूस ने यह वायदा किया कि वह शीघ्र ही जापान के विरुद्ध युद्ध में कूद पड़ेगा। बशर्ते कि उसे वे प्रदेश जापान से दिलाये जाएँ। जो जापान ने 1905 ईसवी के बाद उससे छीन लिये थे तथा मंचूरिया ने उसे पहले की भाँति सर्वोच्च स्थान दिलाया जाये।

(vi) सान फ्रांसिस्को सम्मेलन (San Fransisco Conference) (अप्रैल 1945-ईसवी) – इस सम्मेलन को अनेक राष्ट्रों को संयुक्त राष्ट्र संघ के चार्टर पर हस्ताक्षर करने के लिए बुलाया गया। 26 जून 1945 ईसवी को छब्बीस राष्ट्रों ने इस पर हस्ताक्षर कर दिये।

(vii) पोस्टेडम सम्मेलन (Postdom Conference) (जुलाई 1945)– इस समय तक रूजवेल्ट की मृत्यु हो चुकी थी। अतएव इस सम्मेलन में ट्रूमैन ने भाग लिया। इसमें याल्टा सम्मेलन में लिए गये निर्णयों पर विस्तार के साथ विचार किया गया । जर्मनी के चार भागों के नियन्त्रण में सामंजस्य बनाये रखने के लिए एक केन्द्रीय नियन्त्रण परिषद् का गठन करने का निश्चय किया । पोलैण्ड व जर्मनी की भावी सीमा निश्चित की गई ।

याल्टा व पोस्टडम सम्मेलनों में लिये कुछ निर्णय अटलाण्टिक घोषणा पत्र की भावना के विरुद्ध थे। इनका अनुमोदन करने से अमेरिका की नैतिक स्थिति दुर्बल हुई।

उपर्युक्त सभी सम्मेलनों में अमेरिका ने प्रमुख रूप से भाग लिया। इनमें लिये गये निर्णयों ने अमेरिका की विदेश नीति पर गहरा प्रभाव डाला। इसकें फलस्वरूप उसकी नीति पार्थक्यवाद के स्थान पर सक्रिय अन्तर्राष्ट्रवाद की ओर मुड़ी।

दो विश्व युद्धों के संतुलन में अमेरिकी विदेश नीति में अन्तर :

यदि अमेरिका की विदेश नीति तथा रणनीति की दो विश्व युद्धों के बीच तुलना की जाये तो यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि अमेरिका के विदेश सम्बन्धों पर द्वितीय विश्व युद्ध का पहले विश्व युद्ध की अपेक्षा अधिक प्रभाव पड़ा । द्वितीय युद्ध की अवधि मे अमेरिका पहले युद्ध की तुलना में अधिक सुनिश्चित व प्रतिबद्ध था और उसने युद्ध के प्रारम्भ से ही अपने को अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग की ओर पूर्णरूपेण उन्मुख कर दिया था। सम्पूर्ण द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान अमेरिकी सरकार ने संयुक्त सुरक्षा के लिए प्रयत्न किये, मित्र राष्ट्रों को कंधे से कंधा मिला कर सहयोग

दिया। इस युद्ध काल में अमेरिकी सीनेट ने, जो राष्ट्रपति की निर्बाध नीति में सदैव अड़चन के रूप में कार्य करती थी, खुला सहयोग दिया और मित्र राष्ट्रों का शत्रु पराजय तथा विश्व शांति की स्थापना के लिए भरसक सहयोग दिया। अप्रैल 1945 ईसवी में राष्ट्रपति रूजवेल्ट की मृत्यु के पश्चात् भी सीनेट ने संयुक्त राष्ट्र संघ के मसविदे को अनुमोदित कर दिया और इस प्रकार अमेरिकी पार्थक्यवाद को भविष्य के लिये समाप्त कर दिया।

रूजवेल्ट की विदेश नीति की उपलब्धियाँ :

राष्ट्रपति रूजवेल्ट की विदेश नीति के क्षेत्र में कई उपलब्धियाँ थीं। उसने लैटिन अमेरिका के क्षेत्र में 'डालर कूटनीति' को त्याग कर 'अच्छे पड़ौसी' की नीति का प्रारम्भ किया, जिसका परिणाम था कि इन राष्ट्रों ने युद्ध काल में अपनी सम्पूर्ण शक्ति अमेरिकी हित में अर्पित कर दी। दूसरा, राष्ट्रपति रूजवेल्ट ने तटस्थता के सिद्धान्त को अपनाते हुए भी अमेरिका को सुदूर पूर्व में यथार्थवाद की ओर अग्रसर किया। तीसरा, अमेरिका को सुरक्षित रखते हुए भी उसने अटलाण्टिक शक्तियों को सम्पूर्ण विध्वंस से बचा लिया। चौथा, राष्ट्रपति रूजवेल्ट की विदेश नीति में आदर्शवाद और यथार्थवाद का सुन्दर समन्वय होने के कारण उसने एक और साम्राज्यवाद का विध्वंस किया तो दूसरी ओर विश्व राष्ट्रों को शान्तिवाद की ओर सफलता से अग्रसर भी किया।

□□□

अध्याय-22

ट्रूमैन की आन्तरिक व विदेश नीति

☐ सी.एम. जैन

1933 ईसवी में फ्रेंकलिन डी. रूजवेल्ट ने प्रथम बार राष्ट्रपति का पद ग्रहण किया था उस समय अमेरिका एक भयंकर आर्थिक संकट से गुजर रहा था। रूजवेल्ट ने अपनी न्यू डील की नीति से इस संकट का तत्परता से मुकाबला किया। अपने दूसरे राष्ट्रपतित्व काल में भी वह इसी समस्या से जुझता रहा। रूजवेल्ट के इन प्रयत्नों का अध्ययन हम पहले एक अध्याय में कर चुके हैं। 1939 ईसवी में यूरोप में द्वितीय विश्व युद्ध छिड़ गया तथा रूजवेल्ट का ध्यान व समय इस ओर अधिक लगा रहा। वह संयुक्त राज्य अमेरिका का पहला ऐसा राष्ट्रपति था जिसे पहली बार इस पद के लिए चुना गया। किन्तु राष्ट्रपति बनने के कुछ समय वाद उसका देहान्त हो गया तथा उसके स्थान पर उपराष्ट्रपति हैरी एस. ट्रूमैन ने राष्ट्रपति के पद का भार ग्रहण किया।

ट्रूमैन का व्यक्तित्व :

राष्ट्रपति ट्रूमैन का जन्म अमेरिका के मसौरी के एक छोटे से कस्बे में घोड़े के व्यापरी के यहाँ हुआ था। उसका लालन-पालन कैन्सास नगर के पास के खेत में ही हुआ था। उसकी शिक्षा दीक्षा बहुत सीमित थी और विश्वविद्यालय की शिक्षा का तो उसे अवसर ही न मिल सका। प्रथम विश्वयुद्ध के समय वह सुरक्षा सेवाओं में पदासीन रहा। 1922 ईसवी में वह काउंटी कमिश्नर के पद पर निर्वाचित हुआ। 1924 ईसवी के कार्यकाल को छोड़ कर 1934 ईसवी तक इस पद पर आसीन रहा। 1934 ईसवी में 50 वर्ष की आयु में वह सीनेट का सदस्य निर्वाचित हुआ। 1940 ईसवी में बिना रूजवेल्ट प्रशासन की सहायता के वह पुनः निर्वाचित कर लिया गया। इसके पश्चात् वह युद्ध जाँच समिति (War Investigation Committee) का अध्यक्ष नियुक्त किया गया। जहाँ उसकी सेवाओं ने उसे अमेरिकी जन मानस तथा राष्ट्रपति रूजवेल्ट की दृष्टि में सम्मान दिलवाया। 1944 ईसवी में उसे 'न्यू डील' का समर्थक तथा कांग्रेस के मित्र रूप में मानने के कारण उपराष्ट्रपति पद के लिए उम्मीदवार घोषित किया गया।

राष्ट्रपति ट्रूमैन एक साधारण व्यक्ति था। इतिहासकारों के मत में वह कोई अद्‌भुत या विशिष्ट श्रेणी का व्यक्ति नहीं था, किन्तु ट्रूमैन प्रकृति से नम्र, एक सच्चा ईमानदार तथा दृढ़ शासक था। राजनीति की दृष्टि में वह रूजवेल्ट की नीतियों की ओर झुका हुआ था, किन्तु अनुभवहीन होने के कारण कांग्रेस के सतत दबाव से मुक्ति न पा सका।

आन्तिरक समस्याएँ :

जब ट्रूमैन अमेरिका का राष्ट्रपति बना उसने समय अमेरिका की आन्तरिक स्थिति अनेक समस्याओं से आक्रान्त थी। द्वितीय विश्व युद्ध ने अमेरिका के आन्तरिक जन जीवन को प्रथम विश्व युद्ध से भी कहीं अधिक प्रभावित किया था। अमेरिका के सम्मुख राष्ट्रीय समस्याओं के स्थान पर अन्तर्राष्ट्रीय समस्याएँ बहुत महत्त्वपूर्ण थीं। उनमें प्रमुख तौर पर यूरोप का पुनर्गठन, साम्यवाद के विस्तार पर रोक, अमेरिकी पूँजीवाद का विस्तार तथा शीत युद्ध से उत्पन्न समस्याओं का उचित समाधान खोज निकालना था, किन्तु इसका यह अभिप्राय नहीं कि अमेरिका की गृह समस्याएँ कम थीं। युद्धोपरान्त अमेरिका में संघ राज्य संघर्ष बढ़ने लगा था। अमेरिकी समाज अधिक स्वतन्त्र और खुली आर्थिक प्रतिस्पर्धा पर बल दे रहा था तथा संघीय हस्तक्षेप से मुक्ति चाहता था। वह साथ-साथ मुद्रा स्फीति, बेरोजगारी, आर्थिक संकट आदि समस्याओं में संघीय सरकार से सुधार की आशा कर रहा था। वस्तुत: युद्धोपरान्त अमेरिका एक परिवर्तित पूँजीवाद की ओर अग्रसर था। वह पूँजीवाद में व्याप्त जोखिम से सुरक्षा तथा उसके लाभांशों की रक्षा के प्रति उन्मुख था। तत्कालीन अमेरिकी नागरिक संघीय वाद तथा विकेन्द्रीकरण के मध्य एक उचित संतुलन की स्थापना चाहता था।

आर्थिक दृष्टि से युद्ध की समाप्ति पर अमेरिका अत्यन्त ऋण ग्रस्त था, किन्तु साथ ही उसकी उत्पादन क्षमता में असाधारण वृद्धि भी हो चुकी थी। युद्ध की चरम अवस्था में अमेरिका ने कृषि, उद्योग, परिवहन आदि सभी क्षेत्रों में आश्चर्यजनक प्रगति की। अनुमानत: उत्पादन आर्थिक संकट से वर्षों की तुलना में ढ़ाई गुना बढ़ गया था। यद्यपि इस वृद्धि के साथ-साथ अमेरिका के अन्तर्राष्ट्रीय उत्तरदायित्व भी विस्तृत हो गये थे।

सामाजिक दृष्टि से द्वितीय विश्वयुद्ध ने अमेरिका के अल्पसंख्यक समूहों खासकर नीग्रो जाति में रंगभेद के विरोध में आन्दोलनों को प्रोत्साहित किया। 1943 ईसवी में डेट्रायट में हिंसात्मक जातिय झगड़े फैल गये। नीग्रो लोगों ने सामाजिक और आर्थिक क्षेत्रों में बड़ी प्रगति दिखलाई और अमेरिका के कई क्षेत्रों में नीग्रो मत अमेरिकी राजनीति को प्रबल रूप से प्रभावित करने लगा। इसी प्रकार द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् अमेरिकी जनता में जापानी अल्पसंख्यकों के विरोध में भी तीव्र प्रतिक्रिया हुई। इसके साथ-साथ अमेरिकी जनता में साम्यवाद एवं रूस विरोधी भावनाएँ तीव्र रूप से उभर रही थीं।

इक्कीस सूत्रीय कार्यक्रम :

राष्ट्रपति ट्रूमैन ने इन समस्याओं का उचित हल देने हेतु 6 सितम्बर, 1946 ईसवी को इक्कीस सूत्रीय गृह सम्बन्धी कार्यक्रम (Twenty One Point Domestic Programme) प्रस्तुत किया। जिसको उसने 'उचित नीति' (Fair Deal) का नाम दिया। "इस कार्यक्रम में पूर्ण रोजगार की व्यवस्था, न्यूनतम वेतन दरों में वृद्धि (चालीस से पैंसठ सैन्ट प्रति घन्टा), सामाजिक सुरक्षा प्रणाली को व्यापक बनाना, गन्दी बस्तियों की सफाई और बेहतर आवास व्यवस्था के लिए संघीय कोष से धन के व्यय, फसलों के मूल्यों का स्थिरीकरण, भावों को बढ़ाने और मिसौरी,

कोलम्बिया और अन्य नदियों पर टैनेसी घाटी सत्ता जैसी योजनाएँ क्रियान्वित करने की व्यवस्था रखी गई।" राष्ट्रपति ट्रूमैन रूजवेल्ट की नीतियों को निरन्तरता देना चाहता था। यद्यपि कुछ समस्याएँ इतनी नवीन थी कि पुरानी व्यवस्था को गतिशील रखना पूर्णतया सम्भव नहीं था। फिर भी उसने अमेरिकी कांग्रेस से यह अपील की कि वह क्रूर दण्ड (Lynching) के विरुद्ध संघीय कानून बनाये। नीग्रो लोगों को काम दिलाने के लिए उचित रोजगार–कार्यविधि समिति इसी प्रकार कार्य करती रहे।

स्वास्थ्य, शिक्षा, चिकित्सा व रोजगार के क्षेत्र में सुधार :

राष्ट्रपति ट्रूमैन ने शिक्षा, स्वास्थ्य व चिकित्सा के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण कदम उठाये। इन सभी क्षेत्रों में विकास हेतु अतिरिक्त सहायता प्रदान की गई। फरवरी, 1946 ईसवी को अधिकतम नियोजन अधिनियम (Maximum Employment Act) पारित किया गया और एक तीन सदस्यीय आर्थिक सलाहकार समिति की स्थापना की गई। इस अधिनियम के पीछे प्रशासन का उद्देश्य किनेशियन सिद्धान्तों (Keynessian Principles) के आधार पर पूर्ण नियोजन के लिए संघीय सरकार को उत्तरदायी बनाना था और यदि आवश्यकता पड़े तो उसे संघीय खर्चे से हल किया जा सकने की व्यवस्था भी थी।

वित्तीय सुधार :

मुद्रा स्फीति को रोकने तथा उद्योगों को असैनिक उत्पादन की ओर उन्मुख करने के लिए राष्ट्रपति ट्रूमैन नें मूल्य वृद्धि, वेतन वृद्धि, किराया वृद्धि आदि पर सीमा लगा दी तथा उन सभी नियंत्रणों को शीघ्रता से हटाने का प्रयत्न किया जिससे शान्तिकालीन आवश्यकताओं पर आधारित उत्पादन की वृद्धि की जा सके। अमेरिकी कांग्रेस ने एक नया राजस्व अधिनियम (New Revenue Act) पारित कर लगभग छः मिलियन डालर के कर कम कर दिये तथा युद्ध सामग्री प्रशासन (War Provision Administration) ने 1946 ईसवी में सैंकड़ों सरकारी व गैर सरकारी युद्ध प्रतिष्ठानों को बन्द करवा दिया तथा अतिरिक्त युद्ध सामग्री को उचित मूल्य पर बिकवा दिया। इसके साथ-साथ कम ब्याज की दर पर असैनिक उद्योगों को प्रचुर मात्रा में ऋण देने की व्यवस्था की गई। युद्ध से बेकार लोगों के लिए व्यापार अथवा कृषि में कार्य दिलाने की सुविधाएँ दी गई। इसके अतिरिक्त आय, वेतन तथा सुरक्षा सम्बन्धी क्षेत्रों में भी कुछ कदम उठाये गये जिनमें वेतन स्थायीकरण आयोग (Wage Stabilisation Board) की स्थापना मुख्य था।

किन्तु उद्योगों में कीमत वृद्धि के कारण अधिक वेतन की माँग को लेकर हड़तालें एवं तालेबंदी की प्रवृत्ति तेजी से बढ़ रही थी। फलतः सम्पूर्ण मूल्य निर्धारण कार्यक्रम असफल होने लगा। इस प्रश्न को लेकर 1946 ईसवी में एक गृह विवाद पैदा हुआ। प्रशासन चाहता था कि मूल्य नियन्त्रण की शक्तियाँ फिलहाल बनी रहें जबकि कांग्रेस में अनुदार सदस्य चाहते थे कि मूल्य नियन्त्रण नीति का त्याग कर व्यापारियों को अधिक लाभ कमाने दिय जायें जिससे उत्पादन बढ़ेगा और उत्पादन की कमी स्वतः मिट जायेगी। 27 जून, 1946 ईसवी को अमेरिकी कांग्रेस ने मूल्य नियन्त्रण बिल पारित कर दिया, किन्तु राष्ट्रपति ट्रूमैन ने निषेधाधिकार का प्रयोग कर

स्वीकृति प्रदान नहीं की। परिणामत: कीमतें और तेजी से बढ़ने लगी। इस पर अमेरिकी कांग्रेस ने पुन: मूल्य नियन्त्रण बिल पारित किया जिस पर 25 जुलाई को राष्ट्रपति ने स्वीकृति प्रदान कर दी। परन्तु इन सबके बावजूद भी कीमतों में वृद्धि और काला बाजारी को नहीं रोका जा सका। इसी प्रकार किरायों में भी वृद्धि दिन दुगुनी बढ़ती गई और सम्पूर्ण अमेरिका मुद्रा स्फीति व मूल्य वृद्धि से अधिकाधिक संतप्त होता गया। इस पर राष्ट्रपति ट्रूमैन ने भूतपूर्व राष्ट्रपति हूवर की अध्यक्षता में एक आयोग की स्थापना की और इसके पश्चात् अमेरिकी कांग्रेस ने टैफ्ट-हार्टले श्रम मालिक सम्बन्ध अधिनियम (Taft-Hartely Labour Management Relation Act) पारित किया जिसके अनुसार बन्द दुकानों को अवैधानिक घोषित कर दिया गया। राष्ट्रपति को ऐसी हड़तालों पर, जो राष्ट्रीय सुरक्षा को हानि पहुँचा सकती थी, प्रतिबन्ध लगाने का अधिकार दिया गया। सभी प्रकार की सीमा सम्बन्धी हड़तालें, काला बाजारी तथा श्रमिक संगठनों द्वारा राजनीतिक संस्थाओं को सहायता देना अनुचित घोषित कर दिया गया। इसके अतिरिक्त उक्त अधिनियम के द्वारा श्रमिक संगठनों के सभी प्रतिनिधियों पर उद्योग व्यवस्थापकों से आपसी वार्तालाप पर उस समय तक प्रतिबन्ध लगा दिया गया जब तक कि वे प्रतिनिधि यह प्रमाण पत्र प्रस्तुत नहीं करें कि वे साम्यवादी नहीं हैं। यद्यपि राष्ट्रपति ट्रूमैन ने इस अधिनियम पर निषेधाधिकार का प्रयोग किया किन्तु कांग्रेस ने इसके बावजूद भी इसे पुन: पारित कर दिया।

1948 ईसवी का चुनाव :

ट्रूमैन की 'उचित नीति' कार्यक्रम का सबसे महत्त्वपूर्ण परिणाम यह निकला कि उसने नई व्यवस्था से प्राप्त कई प्रकार के लाभों को सुरिक्षत कर दिया, उसने प्रगतिवादी विचारकों को प्रोत्साहित किया और कई प्रकार के आन्तरिक संघर्षों के बावजूद भी उसने बहुत से कानून पारित करवा दिये। ट्रूमैन को गृह नीति के क्षेत्र में सबसे बड़ी सफलता यह मिली कि उसे प्रगतिशील लोगों और श्रमिकों का भारी समर्थन प्राप्त हुआ। इसके परिणामस्वरूप 1948 ईसवी के निर्वाचन में उसे भारी विजय प्राप्त हुई। ट्रूमैन को 24,106,000 मत तथा तीन सौ तीन निर्वाचक मतों से विजय प्राप्त हुई जबकि उसके प्रतिद्वन्द्वी ड्यूई (Dewey) को 21,969,000 मत तथा एक सौ नवासी निर्वाचक मत ही मिल सके। डेमोक्रेटिक दल को अमेरिकी कांग्रेस के दोनों ही सदनों में क्रमश: निम्न सदन में तिरानवें तथा सीनेट में बारह सीटों का बहुमत मिला।

ट्रूमैन का द्वितीय प्रशासन (1950-53 ईसवी) :

(i) राष्ट्रीय आवास योजना - राष्ट्रपति ट्रूमैन ने द्वितीय चुनाव के पश्चात् अपनी उचित नीति कार्यक्रम को फिर दुहराया। 1950 ईसवी में उसने निष्कासित व्यक्तियों के लिए एक अधिनियम पारित करवाया। 1949 ईसवी के राष्ट्रीय आवास अधिनियम (National Housing Act) की सहायता से उसने निम्न आय वाले परिवारों के लिए इक्यासी हजार मकान निर्माण की योजना बनवाई, तथा गन्दी बस्तियों की सफाई की भी कांग्रेस ने स्वीकृति दे दी। उसने राष्ट्रीय विज्ञान प्रतिष्ठान के लिए भी कुछ कदम उठाये।

(ii) सामाजिक सुरक्षा अधिनियम – ट्रूमैन ने सामाजिक सुरक्षा अधिनियम को व्यापक बनाया। 1948 ईसवी तक लगभग 60,000,000 बेकार लोगों को काम दिला दिया गया। 1939 ईसवी की तुलना में उत्पादन 225,000,000,000 डालर की दर से बढ़ा और उत्पादन व उपभोग के मध्य सन्तुलन आने लगा।

अन्य सुधार :

1950 ईसवी में अमेरिकी कांग्रेस ने शरणार्थी अधिनियम (Displaced Persons Act) को स्वीकृति प्रदान कर दक्षिण व यूरोप से आकर बसने वाले व्यक्तियों के लिए और अधिक उदार नीति का समर्थन किया। इसी तरह कांग्रेस ने विद्युत विकास के लिए आर्थिक धनराशि देना स्वीकार कर लिया। इसके अतिरिक्त ट्रूमैन द्वारा निर्देशित योजनाओं से औद्योगीकरण को अधिकाधिक प्रोत्साहन प्राप्त हुआ। जहाँ 1939 ईसवी में पिचहत्तर प्रतिशत पारिवारिक आय दो हजार डालर से कम थी वहाँ लगभग अब पचास प्रतिशत की यही स्थिति रही। इस प्रकार उत्पादन, आय-वितरण आदि सभी क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण विकास किया।

परन्तु इन सब सुधारों के बावजूद भी ट्रूमैन को गृह नीति के क्षेत्र में अत्यधिक सफलता नहीं मिल सकी। उदाहरणार्थ ट्रूमैन द्वारा प्रस्तुत स्वास्थ्य बीमा कार्यक्रम अमेरिकी मेडिकल संघ के तीव्र विरोध के कारण क्रियान्वित नहीं हो सका। उसके द्वारा प्रस्तुत शिक्षा को संघीय अनुदान प्राप्त होने वाला कार्यक्रम पक्षपात के आधार पर क्रियान्वित नहीं किया जा सका। अमेरिकी कांग्रेस ने ट्रूमैन को टैनेसी घाटी परियोजना को क्रियान्वित करने के प्रस्ताव को भी अस्वीकृत कर दिया। जनवरी, 1950 ईसवी में मूल्य और मजदूरी सम्बन्धी जो आदेश प्रशासन को दिये थे वे भी अस्थाई सिद्ध हुए। 1950 ईसवी के कोरीयाइ युद्ध के कारण अमेरिका में मूल्य वृद्धि तथा मजदूरी वृद्धि का दुष्चक्र चल पड़ा। ट्रूमैन प्रशासन पर पक्षपात और भ्रष्टाचार के आरोप लगाये गये। पुनः निर्माण वित्त निगम पर भ्रष्टाचार का आरोप लगाया गया। परिणामस्वरूप ट्रूमैन को इसे पुनर्गठित करना पड़ा। ट्रूमैन ने सबसे बड़ी भूल विभागों के बड़े अधिकारियों की नियुक्ति में की। कुछ विभागाधिकारी जो लगभग 30 से 40 मिलियन डालर अपने विभाग पर खर्च कर रहे थे, इस अवसर का निजी हित में लाभ में उठाकर राष्ट्रीय हित को नुकसान पहुँचा रहे थे। ब्यूरो ऑफ इन्टरनल रेवेन्यू (Bureau of Internal Revenue) जैसे विभाग में तो बेईमानी की कोई सीमा ही नहीं रही। ऐसी ही स्थिति कुछ अन्य राजस्व विभागों की भी थी। बहुत से अधिकारीगणों ने पक्षपात करके अपने मित्रों को लाभ पहुँचाना आरम्भ कर दिया था। वाशिंगटन में ऐसे सैकड़ों दलालों का उदय हो गया था जो पाँच प्रतिशत की दलाली लेकर सरकारी कार्यालयों में व्यापारी वर्ग के लिए बड़े से बड़ा काम निकलवा देते थे। अमेरिकी जनमानस को आर्थिक अहितों के प्रति इतनी चिन्ता नहीं थी जितनी कि भ्रष्टाचार की प्रवृत्ति के उद्‌गम की। राष्ट्रपति ट्रूमैन स्वयं ईमानदार होते हुए अपने मित्रों की इन हरकतों के प्रात क्षुब्ध होने के अतिरिक्त कुछ समय तक कोई कड़ा कदम नहीं उठा सके।

ट्रूमैन के मार्ग में दूसरी कठिनाई कांग्रेस की अड़चन व कठोर नीति के कारण उत्पन्न हुई। उसे अनवरत रूप से कांग्रेस से अपने सुधारों की स्वीकृति के लिए संघर्ष करना पड़ा। उसके

प्रारम्भिक वर्षों में अनुदार व प्रगतिशील नेताओं के बीच व्याप्त गतिरोधों ने सुधार की क्रियाओं को अवरुद्ध कर दिया। जब राष्ट्रपति ट्रूमैन ने अपने 'उचित नीति' कार्यक्रम को 'न्यू डील' का विस्तार बतलाया तो अनुदारवादियों ने उस पर तीव्र प्रतिक्रिया प्रकट की। उसके राष्ट्रपति बनने के अट्ठारह महीनों के पश्चात् अमेरिकी राजनीति में जो नेतृत्व पनपने लगा वह ऐसे छोटे वकील वर्ग अथवा व्यापारियों का था, जिन्हें राष्ट्रीय विषयों के बारे में कम ज्ञान था।

ट्रूमैन के मार्ग में तीसरी कठिनाई उसकी व्यक्तिगत थी। वह स्वयं एक साधारण परिवार से उत्पन्न राजनैतिक नेता था। जिसे राजनीति और प्रशासन का न्यूनतम ज्ञान प्राप्त था। उसके राष्ट्रपति पद पर नियुक्त होने पर लोगों ने उसे रूजवेल्ट के समकक्ष तौलना चाहा। जिसे एक प्रतिभाशाली राष्ट्रपति का सम्मान प्राप्त हो चुका था। इसके साथ-साथ ट्रूमैन के पदासीन होने के समय अमेरिका अनेक राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं में फंसा हुआ था तथा उसे एक ऐसे राष्ट्रपति की आवश्यकता थी जो अनुभवी हो।

राष्ट्रपति ट्रूमैन के मार्ग में चौथी कठिनाई अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं की थी। उसके सम्मुख सबसे बड़ी चुनौति साम्यवाद के विस्तार की थी। एक ओर उसे यूरोप के एकीकरण, यूरोप का पुनर्स्थापन तथा उसे साम्यवादी प्रभाव से मुक्त रखना था तो दूसरी ओर कोरिया युद्ध का मुकाबला करना था। उसे अन्तर्राष्ट्रीय झंझावातों का सामना करते हुए द्वितीय विश्व युद्ध से उत्पन्न गृह समस्याओं का समापन करना एक अत्यन्त कठिन कार्य था। इसलिए स्वयं राष्ट्रपति ट्रूमैन ने अपने शासन काल को 'निर्णयों का वर्ष' (Year of Decision) तथा 'प्रयोग व आशा का वर्ष' (Year of Trial & Hope) की संज्ञा दी थी।

परन्तु इन कठिनाइयों के होते हुए भी राष्ट्रपति ट्रूमैन ने गृह नीति के क्षेत्र में कतिपय महत्त्वपूर्ण सफलताएँ प्राप्त कीं। उसने असैनिक उद्योगों के विकास, न्यूनतम वेतन की राशि में वृद्धि, भवन निर्माण, सामाजिक सुरक्षा व जनकल्याणकारी कार्यक्रमों को कार्यान्वित करने में कई महत्त्वपूर्ण योजनाएँ व नियम पारित करवाये। उसका 'उचित नीति' कार्यक्रम समान अधिकार एवं समान अवसरों का प्रतीक था। अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में तो पुनरुद्धार कार्यक्रम, नाटो (N.A.T.O.) का निर्माण तथा साम्यवाद के प्रसार पर रोक उसके प्रशंसनीय कार्य थे। इतिहासकारों के अनुसार राष्ट्रपति ट्रूमैन का ट्रूमैन सिद्धान्त, मार्शल योजना तथा 'उचित नीति' कार्यक्रम उसकी सफलता के प्रमुख बिन्दु थे।

ट्रूमैन की विदेश नीति (1945-53 ईसवी) :

द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् अन्तर्राष्ट्रीय जगत में शक्ति ध्रुवीकरण, विचारधाराओं का संघर्ष, राज्य स्थिति में परिवर्तन, क्षेत्रवाद व बहुराष्ट्रीय कूटनीति, अणुशक्ति आदि की समस्याओं का प्रादुर्भाव हुआ। राज्यों की स्थिति में परिवर्तन की दृष्टि से अमेरिका का विश्व शक्ति के रूप में आविर्भाव; साम्यवादी व्यवस्था के अन्तर्गत सोवियत रूस का विकास; पश्चिमी यूरोप का शक्तिपतन; एशिया, अफ्रीका तथा लैटिन अमेरिका में राजनैतिक आत्मनिर्णय और स्वतन्त्रता के लिए आन्दोलन आदि द्वितीय विश्व युद्ध के उपरान्त की ऐतिहासिक घटनाएँ थीं। अमेरिका की विदेश

नीति की दृष्टि से द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् साम्यवादी रूस का उत्कर्ष तथा यूरोप का पतन बहुत ही महत्त्वपूर्ण चुनौतियाँ थीं। फलतः युद्धोपरान्त वर्षों में अमेरिका शान्ति संधियों, आधिपत्य, आर्थिक पुनर्वास,ऋण अदायगी तथा संयुक्त से सहयोग आदि के विषयों में अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में विशेष रूप से सम्बन्धित रहा। विश्व की परिवर्तित परिस्थितियों से प्रभावित होकर अमेरिका के नये राष्ट्रपति टूमैन ने अपनी विदेश नीति के दो प्रमुख लक्ष्य घोषित किये-(1)चिरस्थायी विश्व शान्ति के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ का समर्थन तथा प्रोत्साहन, (2) सोवियत रूस के साम्यवादी प्रसार को रोकना, घेरेबंदी करना एवं शीत युद्ध। इन लक्ष्यों को लेकर अमेरिका में अपनी बिदेश नीति को निरन्तर गतिशील व यथार्थवादी बनाया।

1945 व 1946 ईसवी के बीच राष्ट्रपति टूमैन की विदेश नीति सहयोग व अनुकूलता (Co-operation and Accommodation) के सिद्धान्त पर आश्रित रही। इस नीति का प्रमुख आधार युद्धकालीन सहयोग और मैत्री का प्रभाव जारी रहना था। परिणामतः अमेरिका ने संयुक्त राष्ट्र पुनर्वास संघ (United Nations Relief and Rehabilitation Association) के अन्तर्गत पुनर्निर्माण कार्यक्रम में भाग लिया। संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना में गहरी रुची दिखाई; यूरोप से सेनाएँ वापस बुलाई; साम्यवादी व राष्ट्रवादी चीन में समन्वय कराने का प्रयास किया; जर्मनी, जापान व इटली से शांति समझौते किये तथा अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार संघ के निर्माण हेतु सफल प्रयत्न किये। पामर व पर्किन्स के शब्दों में यह काल अमेरिका की विदेश नीति की दृष्टि से 'मधु रात्रि काल' (Honey Moon Period) था। 28 दिसम्बर, 1945 ईसवीं को इसी सामन्जस्य के दृष्टिकोण से प्रभावित होकर राष्ट्रपति टूमैन ने अमेरिका की विदेश नीति के आधार स्वरूप बारह सूत्रीय उद्देश्यों की घोषणा की। इसके अनुसार अमेरिका ने अहस्तक्षेप, अनाक्रमण, आत्मनिर्णय का सिद्धान्त, सार्वभौमिक, प्रभुसत्ता की रक्षा, स्वशासन का अधिकार, मैत्री सहयोग, निर्बाध समुद्री आबागमन, कच्चे माल का स्वतन्त्र व्यापार, पड़ौसीपन का सिद्धान्त, दरिद्रता का अन्त, अभिव्यक्ति व धर्म की स्वतन्त्रता तथा संयुक्त राष्ट्र संघ में विश्वास आदि उद्देश्यों की रक्षा का वायदा किया।

शीत युद्ध का आरम्भ व अमेरिका के रूस विरोधी प्रयत्न :

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद अमेरिका व रूस विश्व की दो प्रथम श्रेणी की शक्तियाँ रह गई। ब्रिटेन, फ्रांस, चीन आदि मित्र राष्ट्रों तथा जापान, जर्मनी, इटली आदि धुरी राष्ट्रों की शक्ति इस युद्ध में नष्ट अथवा क्षीण हो चुकी थी। रूस भी क्षत-विक्षत था, किन्तु जर्मनी की हार के बाद यूरोप में उसका दबदबा कायम हो गया था। पश्चिमी यूरोपीय देशों में राजनीतिक अस्थिरता के कारण उसे साम्यवाद के प्रसार की संभावनाएँ प्रबल दिखाई देती थी। दूसरी ओर अमेरिका साम्यवाद के प्रसार को रोकना चाहता था। लेकिन अब वे अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिये युद्ध का सहारा नहीं ले सकते थे। अतः उन्होंने अपनी श्रेष्ठता स्थापित करने के लिये राजनीतिक प्रचार का मार्ग पकड़ा जिसे 'शीत युद्ध' कहते हैं। इस संघर्ष में उन्होंने अस्त्र-शस्त्रों से काम न लेकर कागज के गोलों, अखबारों और राजनीतिक प्रचार का सहारा लिया।

कारण :

युद्ध काल में सोवियत रूस ने पश्चिमी प्रजातन्त्रों के साथ मिलकर काम किया। इससे ऐसा लगने लगा कि युद्धोत्तर काल में भी यह सहयोग बना रहेगा लेकिन उनकी पुरानी शत्रुता व संदेह फिर से जाग उठे। इसके लिये निम्नलिखित कारण जिम्मेवार थे–

(i) द्वितीय मोर्चा का प्रश्न – युद्ध के दौरान जब हिटलर की सेनाएँ रूस से आगे बढ़ रही थी तब से ही स्टालिन मित्र राष्ट्रों को पश्चिमी यूरोप में एक दूसरा मोर्चा खोलने के लिये अनुरोध करता रहा था। किन्तु काफी समय तक अमेरिका और ग्रेट ब्रिटेन ऐसा न कर सके। सोवियत इतिहासकारों के मत में इन दोनों राज्यों ने जान बूझ कर ऐसा करने में देर की थी ताकि जर्मनी किसी तरह सोवियत संघ की साम्यवादी व्यवस्था को नष्ट कर दे। 1944 ईसवी के आरम्भ में जब द्वितीय मोर्चा खोलने की योजनाएँ बनने लगी तब रूस यह सोचने लगा कि वह पूर्वी यूरोप के देशों को अपने प्रभाव में रख कर सुरक्षित रख सकता है।

स्टालिन ने प्रस्ताव किया कि ब्रिटेन व अमेरिका की सेनाएँ बाल्कन प्रायद्वीप से उत्तर की ओर बढ़े लेकिन उसका यह प्रस्ताव मंजूर नहीं हुआ। इससे स्टालिन का संदेह और बढ़ गया।

(ii) पुरातन व्यवस्था की स्थापना का प्रश्न – ऐसी परिस्थितियों में पूर्वी यूरोप पर प्रभुत्व कायम करने की प्रतिद्वन्द्विता युद्ध काल में शुरू हो गई। दोनों पक्ष जर्मनी से जीते हुए प्रदेशों में अपने विचार वाले दलों को सहायता देने लगे। यूगोस्लाविया में साम्यवादी नेता मार्शल टीटो को रूस का समर्थन मिला लेकिन ग्रेट ब्रिटेन और अमेरिका ने इसका विरोध किया। इटली के परास्त होने के पहले ये दोनों देश फासिस्ट दल से सहयोग करने पर विचार करने लगे। ब्रिटेन में भी चुनाव के दौरान साम्यवादी विरोधी प्रचार किया गया।

(iii) रूस द्वारा याल्टा और बाल्कन समझौते का अतिक्रमण – दोनों पक्ष अपना-अपना प्रचार करते रहे। इससे आशंकित होकर इंग्लैण्ड ने अक्टूबर, 1944 ईसवी में रूस के साथ समझौता करके यह तय किया कि रूस की सेना का प्रभाव क्षेत्र रूमानिया व बल्गेरिया रहे, यूनान आंग्ल-अमरीकी प्रभाव क्षेत्र में हो तथा यूगोस्लाविया और हंगरी पर दोनों का प्रभुत्व कायम हो। लेकिन इससे स्थिति में सुधार नहीं हुआ। रूस ने पूर्वी यूरोप के सब देशों में साम्यवादी व्यवस्था कायम कर ली। ग्रेट ब्रिटेन व अमेरिका ने इस पर आपत्ति की तथा याल्टा सम्मेलन में यह तय किया गया कि नाजियों से मुक्त किये गये राज्य अपने इच्छानुसार लोकतंत्रीय संस्था चुनेंगे और इसके लिए मित्र राष्ट्रों के बीच सम्मिलित विचार विनिमय किया जायेगा। लेकिन रूस ने अपना कार्य जारी रखा।

(iv) ईरान से सोवियत सेना के हटाये जाने की समस्या – युद्ध काल में ब्रिटेन की अनुमति से रूस ने ईरान पर अधिकार किया था, किन्तु युद्ध के बाद दक्षिणी ईरान से आंग्ल-अमेरिकन सेना तो हट गई, किन्तु सोवियत सेना वहीं बनी रही। काफी समय बाद उसे इस बात के लिये राजी किया गया।

(v) तुर्की पर सोवियत दबाव - युद्ध के बाद तुर्की से बोसफोरस के दो जलडमरूमध्य व कुछ भूमि लेने के लिये सोवियत रूस लगातार दबाव डाल रहा था, किन्तु अमेरिका व ब्रिटेन ने इसका विरोध किया।

(vi) यूनान में साम्यवादी व्यवस्था - युद्ध काल में ही सोवियत सेना ने यूनान के उत्तर में पूर्वी तथा दक्षिणी पूर्वी यूरोप के अधिकांश भाग पर कब्जा कर लिया तथा वहाँ साम्यवादी व्यवस्था स्थापित कर दी। इससे ब्रिटेन व अमेरिका नाराज हुए।

(vii) अमेरिका व रूस में परस्पर विरोधी प्रचार - युद्ध के समाप्त होते ही रूस के समाचार पत्रों ने अमेरिका की नीतियों की आलोचना आरम्भ कर दी। इसे उत्तर में अमेरिकी समाचार-पत्रों ने भी साम्यवादी नीतियों की निंदा की।

(viii) अणु बम का आविष्कार -काफी समय से अमेरिका में अणु बम के निर्माण के लिये अनुसंधान हो रहा था। अमेरिका ने ग्रेट ब्रिटेन को इस शोध की प्रगति से परिचित रखा किन्तु सोवियत रूस को जानकारी न होने दी। इससे रूस क्षुब्ध हुआ। इसका एक और परिणाम यह हुआ कि अब पश्चिमी राष्ट्र यह मानने लगे कि उन्हें रूस की सहायता की आवश्यकता नहीं है।

उपर्युक्त कारणों ने दोनों देशों में मतभेद बढ़ा दिये। इसने विश्व के देशों को दो गुटों में बाँट दिया। पहले गुट का नेता अमेरिका था और यह गुट स्वयं को स्वतन्त्र विश्व मानता था। दूसरा गुट साम्यवादी था। अमेरिकन नेतृत्व वाले गुट ने सोवियत गुट को लौह परदे (Iron Curtain) की उपाधि दी। उसने इस गुट के बढ़ते हुए प्रभाव को विश्व के लिये खतरनाक बताया। दूसरी ओर साम्यवादी गुट ने डालर साम्राज्यवाद व पूँजीवाद का विरोध किया। अब नव स्थापित संयुक्त राष्ट्र संघ भी शीत युद्ध का एक मंच बन गया। सोवियत संघ ने सुरक्षा परिषद में अपने निषेधाधिकार का प्रयोग किया।

अब ट्रूमैन ने सोवियत रूस को दी जाने वाली सभी रियायतों में कटौती कर दी। उसकी नीति मैत्री के स्थान पर कटुता व दृढ़ता की ओर विकसित हुई। दिसम्बर, 1946 ईसवी में मास्को सम्मेलन से लौट कर अमेरिका के विदेश सचिव ने अमेरिका और रूस के बीच सहयोग की सम्भावनाओं को काल्पनिक बताया। अमेरिका में अवरेल हेरीमैन (Averall Harriman) और जार्ज कैनन (George Kennan) ने रूस के साथ सहयोग की नीति को अव्यावहारिक बताया। अतएव ट्रूमैन ने रूस के साथ सहयोग की नीति त्याग दी और साम्यवादी विस्तार को रोकेन का निश्चय किया। उसकी इस नीति को साम्यवाद को सीमित करने की नीति (Policy of Containent of Communism) कहते है।

ट्रूमैन सिद्धान्त :

5 मार्च, 1946 ईसवी को चर्चिल ने फुल्टन नगर में ट्रूमैन की उपस्थिति में कहाकि हमें तानाशाही के दूसरे स्वरूप को बढ़ने से रोकना चाहिए अर्थात् साम्यवाद के प्रसार को सीमित करना चाहिए। इसके बाद से अमेरिका में सोवियत विरोधी भावनाएँ बढ़ने लगी। 19 फरवरी,

1947 ईसवी को राज्य सचिव डीन एचिसन (Dean Acheson) ने सीनेट मे कहा कि "सोवियत संघ की विदेश नीति आक्रमणकारी और विस्तारवादी है।" 12 मार्च, 1947 ईसवी को अमेरिकन राष्ट्रपति ने सोवियत विस्तार को रोकने के लिये ट्रूमैन सिद्धान्त (Trumen Doctrine) प्रतिपादित किया। उसने कांग्रेस से यूनान व तुर्की की मदद के लिये चालीस करोड़ डालर की स्वीकृति माँगी। उसने कहा कि तानाशाही सत्ताओं ने प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष अग्रगामी कार्यवाईयों से स्वतन्त्र जनता पर अपना नियन्त्रण थोपा है। इससे अन्तर्राष्ट्रीय शांति को आघात पहुँचता है और अंत में अमेरिका की सुरक्षा को भी। इसलिये अमेरिका की यह नीति हो कि वह उन स्वतन्त्र जनताओं को, जो सशस्त्र अल्पसंख्यकों अथवा बाहरी दबाव का विरोध कर रहे हैं, सहायता दे। उसका यह सिद्धान्त ट्रूमैन सिद्धान्त कहलाता है। इसके प्रमुख लक्ष्य तीन थे- रूसी साम्राज्यवाद के विस्तार को रोकना, यूनान व तुर्की को सैनिक सहायता तथा यूरोप में हर स्थान पर आक्रमण का प्रतिशोध।

यद्यपि तुर्की व यूनान को सहायता पहुँचाने से इन दोनों देशों में इनको साम्यवादी होने से बचा लिया गया किन्तु दूसरी ओर इसकी कुछ प्रतिक्रियाएँ भी हुईं। इसने एक ओर शीत युद्ध को गति प्रदान की तो दूसरी ओर संयुक्त राष्ट्र संघ की प्रतिष्ठा को आघात पहुँचाया, क्योंकि अमेरिका ने यह सहायता उसके माध्यम से न देकर प्रत्यक्ष रूप से दी। आलोचकों की दृष्टि में यह 'डालर साम्राज्यवाद' था। अमेरिका ने ब्रिटेन के प्रभाव के घट जाने से जो 'राजनीतिक शून्यता' (Political Vaccum) स्थापित हुआ था उसका लाभ उठाया। यह स्वतन्त्रता की रक्षा के नाम पर मध्य यूरोप पूर्व के अविकसित देशों की आर्थिक कठिनाइयों का निजी स्वार्थ के लिए लाभ उठाने का प्रयाश था। स्वयं ट्रूमैन ने भी इसे स्वीकार किया था और उसने एक स्थान पर यह स्पष्ट भी किया कि यदि ईरान के तेल पर सोवियत रूस का अधिकार हो जाता तो विश्व का शक्ति संतुलन बिगड़ जाता और पश्चिमी देशों की अर्थ व्यवस्था को इससे भारी क्षति पहुँचती।

मार्शल योजना – द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान उधार पट्टा (Lend Lease) के अन्तर्गत अमेरिका को लगभग इकतालीस अरब डालर खर्च करना पड़ा जबकि युद्ध के पश्चात् उसने इक्यावन अरब डालर सहायता के रूप में और खर्च किये। युद्ध काल में सारी अमेरिकी सहायता का आधार संकटकालीन और तकनीकी था जबकि मार्शल योजना (Marshall Plan) में दी गई राशि का उद्देश्य अमेरिकी हितों को और द्रुत गति से आगे बढ़ाना था। मार्शल योजना का सीमा क्षेत्र पश्चिमी यूरोप था जो द्वितीय युद्ध के परिणामस्वरूप नष्ट प्राय: हो चुका था और उसमें साम्यवादी प्रवृत्तियों का द्रुत गति से विकास होने की आशंका बढ़ चुकी थी। मार्शल योजना का जैसा कि जार्ज मार्शल ने अपने हार्वर्ड विश्वविद्यालय के भाषण में बताया "भुखमरी, गरीबी, निराशा एवं अव्यवस्था के मुकाबले के लिए" इसका निर्माण किया गया था। इसके अन्तर्गत अमेरिका ने चार वर्षों की अवधि में पश्चिमी यूरोप के सोलह राष्ट्रों को बारह अरब डालर की सहायता देना स्वीकार किया। मार्शल योजना अमेरिकी विदेश नीति की सबसे महत्त्वपूर्ण सफलता थी। यूरोपीय सहयोग प्रशासन (European Cooperative Administration) की रिपोर्ट के अनुसार मार्शल योजना के द्वारा दी गई सहायता से यूरोप का उत्पादन विश्व युद्ध के पूर्व की स्थिति

की तुलना में 2.20 प्रतिशत अधिक हो गया। मुद्रा स्फीति पर नियन्त्रण हो गया तथा पश्चिमी यूरोप में साम्यवाद प्रायः निष्कासित सा कर दिया गया। मार्शल योजना ने यूरोपीय एकता को भी प्रशस्त किया तथा इससे यूरोप में आर्थिक प्रगति अमेरिका से भी अधिक द्रुत गति से हुई। आलोचकों के मत में मार्शल योजना एक आर्थिक व्यवस्था ही नहीं थी वरन् अमेरिकी कूटनीति की एक चाल भी थी। अमेरिकी सहायता के दौरान राष्ट्रों ने यह अनुभव किया कि इसके पीछे साम्यवाद को निकालने की शर्त जुड़ी हुई थी। रूसी राजनीतिज्ञ मोलोतॉव के मत में यह योजना अमेरिकी साम्राज्यवाद की पोषक तथा सोवियत विरोधी चाल थी। इसी कारण चेकोस्लोवाकिया तथा पालैण्ड जिन्होंने प्रारम्भ में इस सहायता का लाभ उठाने की इच्छा प्रकट की थी, शीघ्र ही सहायता लेने से मुकर गये और परिणामतः इस योजना में शीत युद्ध का विस्तार किया। वस्तुतः मार्शल योजना ट्रूमैन सिद्धान्त का ही विकसित रूप थी और उसके पीछे अवरोध की नीति का सिद्धान्त अप्रत्यक्षतः रूप से निहित था इसमें कोई सन्देह नहीं कि यहं योजना ''अमेरिकी विदेशी नीति के इतिहास में सर्वाधिक दिलचस्प और युद्ध प्रवर्तक घटनाओं में से एक थी।''

चार सूत्रीय कार्यक्रम –अमेरिका की विदेश नीति का एक मात्र उद्देश्य आर्थिक सहायता देने तक ही सीमित नहीं था वरन् वह साम्यवादी प्रसार को रोकने के लिए कुछ अन्य निश्चित कार्यक्रम निर्माण की ओर भी उन्मुक्त थी। 20 जनवरी, 1949 ईसवी को राष्ट्रपति ट्रूमैन ने चीन को साम्यवादी होते हुए देखकर अविकसित राष्ट्रों के लिए एक चार सूत्रीय कार्यक्रम (Four Point Programme) की घोषणा की। इस कार्यक्रम के प्रमुख लक्ष्य संयुक्त राष्ट्र संघ का पूर्ण समर्थन, निरन्तर आर्थिक सहयोग, स्वतन्त्र राज्यों को सशक्त करना था। अल्प विकसित देशों के विकास के लिए प्रावधिक सहायता देना आदि थे। अमेरिकी कांग्रेस ने उक्त कार्यक्रम को 1950 ईसवी में स्वीकृति प्रदान कर दी और अविकसित राष्ट्रों को इसके अन्तर्गत तकनीकि और आर्थिक सहायता प्रचुर मात्रा में दी गई।

सैनिक संगठन –युद्धोपरान्त वर्षों में अमेरिका की विदेशी नीति का एक और प्रमुख आधार था, वह था सोवियत संघ को चारों तरफ से सैनिक संगठनों तथा अमेरिका नियंत्रित अड्डों से घेरे रखना। इसके लिये अमेरिका ने एक विस्तृत पारस्परिक प्रतिरक्षा सहायता कार्यक्रम (Mutual Defence Assistance Programme) की योजना बनाई। इसी के अनुसार 17 मार्च, 1948 को अमेरिका ने ब्रूसेल्स सन्धि (Brussels Pact) की इसमें ब्रिटेन, फ्रांस, बेल्जियम, नीदरलैण्ड और लक्जमबर्ग को आक्रमण की दशा में परस्पर सैनिक सहयोग का वचन दिया। इससे कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण 4 अप्रैल, 1949 ईसवी को उत्तरी एटलांटिक संधि (North Atlantic Treaty) की गई थी। इसके हस्ताक्षरकर्ता अमेरिका, कनाड़ा, ब्रिटेन, इटली, बेल्यिजम, नीदरलैण्ड,नार्वे, डेनमार्क, आइसलैण्ड और पुर्तगाल थे इसमें यह वचन दिया गया कि यदि इनमें से किसी एक या उससे अधिक देशों पर यूरोप अथवा उत्तरी अमेरिकन महाद्वीप में आक्रमण किया गया तो वह सबके विरुद्ध आक्रमण माना जायेगा। 1951 ईसवी में अमेरिका ने पारस्परिक सुरक्षा एप्रोप्रिएेशन अधिनियम (Mutual Security Appropriation Act) पारित किया और अमेरिका के साथ सैनिक सन्धि करने वालों को सात अरब तैंतीस करोड़ डालर की सहायता की

व्यवस्था की गई। इस अधिनियम के द्वारा अमेरिकी सैनिक अड्डों का भी निर्माण किया गया तथा विश्व के कई देश सामरिक दृष्टि से अमेरिका के प्रभाव में आ गये।

1950 ईसवी में अमेरिकी विदेश नीति 'खुले संघर्ष' (Open Conflict) की ओर बढ़ने लगी। इस महत्त्वपूर्ण परिवर्तन के पीछे रूस की 'लौह आवरण' (Iron Curtain) नीति, सोवियत रूस में अणुबम की खोज, मार्शल योजना तथा अमेरिकन सैनिक शक्ति में तिगुना विनियोग आदि प्रमुख कारण थे। परिणामस्वरूप अमेरिका में प्रतिकारात्मक युद्ध की भावना अधिक सशक्त हुई और 1950 ईसवी में कोरिया युद्ध इसी दृष्टिकोण की बहुत कुछ अभिव्यक्ति थी।

कोरिया युद्ध में अमेरिका का हस्तक्षेप –जून, 1950 ईसवी में उत्तरी कोरिया के साम्यवादी शासकों ने दक्षिणी कोरिया पर हमला कर दिया। रूस को यह विश्वास था कि अमेरिका पूर्वी एशिया के मामले में जल्दी से हस्तक्षेप नहीं करेगा किन्तु ट्रूमैन और उसके सलाहकारों ने तत्काल कार्यवाही की। शीघ्र ही दक्षिणी कोरिया की सहायता के लिए हवाई और नौ सैनिक टुकड़ियाँ भेज दी गई। जुलाई के शुरू में ब्रिटेन, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड और नीदरलैण्ड्स ने भी सेनाएँ भेजना शुरू की। कनाडा, फ्रांस, टर्की व थाइलैण्ड ने उनका अनुसरण किया। 6 जुलाई को सुरक्षा परिषद् ने संयुक्त राष्ट्र से सब देशों की सेनाओं को एक संयुक्त कमान बनाने का आदेश दिया। ट्रूमैन ने मेकार्थर को यह काम सौंप दिया।

सितम्बर के तीसरे सप्ताह में संयुक्त सेनाओं ने सियोल (Seoul) पर अधिकार कर लिया। अब साम्यवादी चीन ने अपनी एक विशाल सेना उत्तरी कोरिया में भेज दी। शीघ्र ही मैकार्थर के अधीन सेना की स्थिति नाजुक हो गई। 1957 ईसवी में चीनी सेना का बढ़ना रोका गया। लेकिन इस समय तक इस संघर्ष का विस्तार हो चुका था। ट्रूमैन विश्व युद्ध का खतरा मोल लेने को तैयार था। अतएव उसने मैकार्थर को सीमित युद्ध करने को कहा। मेकार्थर इसके लिए तैयार न था। विवश होकर अप्रैल, 1951 ईसवी में उसने मेकार्थर को उसके पद से हटा दिया।

यद्यपि जून, 1951 ईसवी से दोनों पक्षों के मध्य युद्ध विराम की बातचीत आरम्भ हुई। लेकिन युद्ध बन्दियों के प्रश्न पर मतभेद के कारण वह लम्बे समय तक चलती रही। 1953 ईसवी में स्टालिन की मृत्यु और उसके बाद मैलनकोव और बेरिया के बीच संघर्ष ने सोवियत संघ और चीन के रवैये में परिवर्तन ला दिया। 26 जून, 1953 ईसवी को विराम सन्धि पर हस्ताक्षर हो गये तथा युद्ध समाप्त हो गया।

इन तीनों वर्षों के युद्ध के बीच अमेरिका ने 1951 ईसवी में फिलिपीन्स प्रतिरक्षा समझौता एवं आस्ट्रेलिया–न्यूजीलैण्ड के साथ एन्जेस समझौता (Anzus Pact) किया। दिसम्बर, 1951 ईसवी में जापान के साथ एक प्रतिरक्षा सन्धि की गई।

ट्रूमैन के काल में अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध :

ट्रूमैन काल में अमेरिका की विदेश नीति यद्यपि द्वितीय विश्व युद्ध के उपरान्त की समस्याओं से विकसित हुई थी और उसका सामान्य उद्देश्य विश्व में शान्ति, सुरक्षा की स्थापना करना तथा

साम्यवाद के विस्तार को रोकना था। किन्तु इस नीति का यदि क्षेत्रानुसार अध्ययन किया जाये तो कई अन्य तथ्यों और प्रवृत्तियों का स्पष्टीकरण होता है जो संक्षिप्त में निम्नांकित है

(i) सुदूर पूर्व के प्रति नीति – इस काल में पूर्वी एशिया में अमेरिका की विदेश नीति राष्ट्रीय चीन को दृढ़ करने की थी। उसने राष्ट्रीय चीन की वैधानिक सरकार को मान्यता दी और लालचीन की सरकार को मान्यता देने से अस्वीकार कर दिया। कोरिया में अमेरिका ने प्रतिकारात्मक युद्ध लड़कर खुले संघर्ष तथा शक्ति प्रदर्शन की नीति का परिचय दिया। जापान में अमेरिका ने अमेरिकी विरोधी शक्तियों का दमन कर उसे शीत युद्ध में अपना मित्र बनाना चाहा। प्रारम्भ में अमेरिका 'सुप्रीम कमान्डर अलाइड् पावर्स' (Supreme Commander Allied Powers) की सहायता से अमेरिका तथा विश्व शांति को जापानी खतरे से बचाना चाहता था। अतः शुरू में इस नीति की अभिव्यक्ति मेकार्थिज्म (Mc Carthism) के रूप में हुई और 1951 ईसवी में अमेरिका ने जापान से प्रतिरक्षात्मक सन्धि की। दक्षिणी एशिया में अमेरिका अविकसित देशों को आर्थिक सहायता देकर साम्यवादी चंगुल से बचाना चाहता था इसलिए 1951 ईसवी में अमेरिका ने फिलिपीन्स से प्रतिरक्षात्मक सन्धि की तथा इस क्षेत्र में सैनिक अड्डों का निर्माण किया। पश्चिमी एशिया में अमेरिका ने 'अवरोध की नीति' अपनाई और ट्रूमैन सिद्धान्त के अन्तर्गत आर्थिक व कूटनीतिक कदम उठाये। इसके अतिरिक्त पश्चिमी एशिया में अमेरिका ने एक स्वतन्त्र यहूदी राज्य इजराइल की स्थापना में भी महत्त्वपूर्ण सहयोग दिया।

(ii) अफ्रीकन देशों के प्रति नीति – अफ्रीकी महाद्वीप में अमेरिका की सबसे अधिक रुचि द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान उत्पन्न हुई। 1945 ईसवी से 1950 ईसवी के बीच अमेरिका की कुल विश्व लागत का 2.3 प्रतिशत भाग अफ्रीका में लगा हुआ था और क्षेत्रीय दृष्टि से नाटों के सदस्य अफ्रीका राष्ट्रों से बहुत अधिक सम्बन्धित थे। ट्रूमैन काल में अफ्रीका में अमेरिकी विदेश नीति के लक्ष्य अफ्रीका में अमेरिकी प्रतिष्ठा को बढ़ाना, आर्थिक सहायता देना, राजनीतिक स्थायित्व के लिए सहयोग देना तथा शिक्षा व संस्कृति के सम्बन्धों को बढ़ावा देना आदि थे। इस क्षेत्र में उसकी विदेश नीति यूरोपीय दृष्टिकोण से बहुत-कुछ जुड़ी हुई थी।

(iii) यूरोपीय देशों के प्रति रवैया – द्वितीय विश्व युद्ध के परिणामस्वरूप यूरोप का राजनैतिक विघटन तथा आर्थिक पतन हुआ। युद्धोपरान्त ब्रिटेन और फ्रांस अमेरिका के पेन्शनर के रूप में अशक्त बन चुके थे। जर्मनी के विघटन स्वरूप वह महाशक्तियों के शीत युद्ध का शिकार हो गया था। अतः ट्रूमैन काल में अमेरिका की यूरोप में विदेश नीति के लक्ष्य, यूरोप को साम्यवादी संरक्षण देना, आर्थिक प्रगति करना तथा यूरोप का पुनः एकीकरण आदि थे। इन लक्ष्यों से प्रभावित होकर यूरोप में अमेरिका ने कई विस्तृत योजनाएँ बनाई जैसे यूरोपीय पुनर्विकास कार्यक्रम (European Rehabilitalion Programme) जिसके द्वारा यूरोपीय देशों के विकास के लिए राष्ट्रीय कार्यक्रम बनाये गये। 16 अप्रैल, 1948 ईसवी को अमेरिकी कांग्रेस ने 'विदेशी सहायता अधिनियम' पारित कर 'आर्थिक सहयोग प्रशासन' तथा 'यूरोपीय आर्थिक सहयोग कन्वेंशन्' की स्थापना की। इनके अन्तर्गत कई राष्ट्रों के लिए आर्थिक सहायता तथा अन्तरयूरोपीय भुगतान योजना की व्यवस्था की गई। यूरोप के आर्थिक एकीकरण हेतु अमेरिका ने शूमाँ योजना

(Schuman Plan) के निर्माण में सहायता दी, जिसके लक्ष्य आर्थिक एवं राजनैतिक दोनों थे। इसके अतिरिक्त यूरोप के राजनीतिक एकीकरण की दृष्टि से अमेरिका ने 'पश्चिमी यूरोपीय संघ' की स्थापना में सहयोग देकर यूरोपीय राजनीतिक एकता तथा शस्त्र नियन्त्रण की ओर सक्रिय सहायता प्रदान की। यूरोप में सुरक्षा के क्षेत्र में अमेरिका के ट्रूमैन युग में प्रतिरक्षात्मक अधिनियम पारित किये तथा डन्कर्क तथा ब्रूसेल्स प्रयत्नों को दृढ़ किया व उत्तरी अटलांटिक सन्धि द्वारा एक क्षेत्रिय संगठन का निर्माण किया। इसके साथ-साथ यूरोपीय सुरक्षा की दृष्टि से 'यूरोपीय सुरक्षा समुदाय' की स्थापना भी अमेरिका विदेश नीति की प्रतिरक्षात्मक कार्यक्रम का एक प्रमुख भाग बनी।

(iv) सोवियत रूस के प्रति नीति –ट्रूमैन काल में अमेरिका की रूस के प्रति विदेश नीति शीत युद्ध से प्रभावित रही। 1945 ईसवी के पश्चात् रूस द्वारा लौह आवरण नीति का प्रयोग, याल्टा समझौते की अवहेलना, रूसी सेनाओं का ईरान से हटाया जाना, जर्मन समस्या, संयुक्त राष्ट्र संध में निषेधाधिकार का प्रयोग, अमेरिका में साम्यवादी गतिविधियाँ, सोवियत संघ को पट्टा-ऋण का बंद करना, अणुबम तकनीक को गुप्त रखना आदि कारणों ने दोनों देशों के बीच शीत युद्ध को प्रशस्त किया। ट्रूमैन काल में अमेरिका की विदेश नीति रूस के विरुद्ध शक्ति संघर्ष, अवरोध, डालर साम्राज्यवाद की ओर, उन्मुख हुई। परिणामत: सोवियत संघ ने प्रबल आक्षेप किये और 1947 में कामिनफार्म (Comminform) की स्थापना की। वस्तुत: सोवियत रूस से शीत युद्ध ने ही अमेरिकी नीति को इस काल में बहुत बड़ा मोड़ दिया।

ट्रूमैन युग में अमेरिका की विदेश नीति की मुख्य प्रवृत्तियाँ :

उपर्युक्त विवेचना से यह स्पष्ट है कि द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् अमेरिका की विदेश नीति में कई नए मोड़ आये, वे संक्षेप में इस प्रकार हैं –

प्रथम, इस काल में अमेरिका की विदेश नीति शक्ति संघर्ष सिद्धान्त के आधार पर निर्मित की गई थी। अब अमेरिकी नीति का ठोस पक्ष यथार्थवाद था और इसी आधार पर अमेरिका ने दृढ़ता तथा अवरोध का एक निश्चित दृष्टिकोण भी अपनाया।

द्वितीय, इस काल में अमेरिका की विदेश नीति ने पार्थक्यवाद का परित्याग कर अन्तर्राष्ट्रीयवाद की ओर प्रयास किया। यद्यपि अन्तर्राष्ट्रीयवाद की प्रवृत्ति द्वितीय विश्व युद्ध की अवधि में ही प्रारम्भ हो गई थी किन्तु राष्ट्रपति ट्रूमैन ने अमेरिका को निश्चितता (Commitment Policy) के साथ विश्व के विभिन्न राजनीतिक क्षेत्रों में बाँध दिया। ट्रूमैन सिद्धान्त का उद्देश्य अमेरिका के नेतृत्व में पश्चिमी यूरोप की अर्थव्यवस्थाओं को सुदृढ़ करना था।

तीसरा, राष्ट्रपति ट्रूमैन ने अमेरिका की विदेश नीति को 'राष्ट्र हित' (National Interest) के दृष्टिकोण से इतना जोड़ दिया कि 'साम्यवाद का अवरोध', प्रतिकारात्मक युद्ध की घोषणा तथा मैकार्थीवाद इसी दृष्टिकोण की अभिव्यक्ति बने। अमेरिका की नीति में निरन्तर परिवर्तन-सहयोग से संघर्ष 'राष्ट्र हित' के ही दृष्टिकोण से अभिप्रेरित थे। यहाँ तक की ट्रूमैन सिद्धान्त तक भी इसी 'राष्ट्र हित' का खुला प्रतीक था।

चौथा, द्वितीय विश्व युद्ध तक अमेरिका की विदेशी नीति गृह समस्याओं से अपेक्षाकृत अधिक प्रभावित थी। अमेरिका की अन्तर्राष्ट्रीय भूमिका, कांग्रेस की स्वीकृति, आंतरिक समस्याओं के सहज सामंजस्य पर निर्भर करती थी। वस्तुत: द्वितीय विश्व युद्ध के पहले यदि कोई अमेरिका की विदेशी नीति थी भी तो वह मुख्य रूप से लैटिन अमेरिका तक सीमित थी। राष्ट्रपति ट्रूमेन ने अमेरिका को वैदेशिक समस्याओं की ओर उभारा और अमेरिका ने अपनी विदेश नीति को सही अभिप्राय में साकार रूप दिया। अमेरिका के निश्चित मित्र व शत्रु सामने आये और उसने इसी आधार पर सहयोग व संघर्ष को आगे बढ़ाया।

पाँचवा, ट्रूमैन काल में अमेरिका की विदेश नीति को 'डालर साम्राज्यवाद' की संज्ञा से स्पष्ट किया जा सकता है। अमेरिका ने आर्थिक सहायता के निश्चित कार्यक्रम के आधार पर जो वृहत् योजनाएँ बनाई थी और सहायता प्राप्त राष्ट्रों को अपने राजनीतिक प्रभाव में ढालने का प्रयास किया था, उसके पीछे यही साम्राज्यवादी उद्देश्य था। इसी डालर शक्ति के द्वारा उसने साम्यवादी प्रसार को रोका तथा सुरक्षा सम्बन्धी सैनिक सन्धियाँ कीं। परन्तु राष्ट्रपति ट्रूमैन की डालर नीति राष्ट्रपति ट्रैफ्ट की 'डालर कूटनीति' से बिल्कुल पृथक् तथा भिन्न थी।



अध्याय-23

सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक दशा (1861-1953 ईसवी)

□ एल.पी. माथुर

अमेरिकी इतिहास में किसी अन्य समय में इतने क्रांतिकारी परिवर्तन नहीं हुए जितने कि गृह युद्ध की समाप्ति के बाद के तीन दशकों में हुए। इस अवधि में होने वाले क्रान्तिकारी परिवर्तनों ने अमेरिकी जनता को आधुनिकता की ओर तीव्र गति से बढ़ाया। इसलिए इस युग को अमेरिकी इतिहास में आडंबर का युग (Gilded Age) कहा जाता है। उन्नीसवीं शताब्दी के उतरार्द्ध के इन अन्तिम तीन दशकों में राजनैतिक, सांस्कृतिक, सामाजिक एवं आर्थिक क्षेत्रों में होने वाले महान् परिवर्तनों में बीसवीं शताब्दी के अमेरिकी जीवन की आधारशिलाएँ रखीं।

जनसंख्या में वृद्धि :

अनेक कारणों से गृह युद्ध के बाद अमेरिका की जनसंख्या बड़ी तेजी के साथ बढ़ने लगी। इनके मुख्य कारण अमेरिका की अर्थव्यवस्था की सुदृढ़ता, देश की असाधारण औद्योगिक प्रगति, अमेरिकी सरकार की उदार भूमि-नीति, भूमि की अधिकता तथा तेजी से चलने वाले वाष्प जहाजों में कम व्यय पर सुरक्षित यात्रा की सुविधाएँ आदि थे। अमेरिका के विभिन्न राज्यों में देशान्तरवास विभागों (Immigration Bureaus) और कम्पनियों के प्रचार ने भी प्रवासियों की संख्या में वृद्धि की। उन्होंने अमेरिका को 'सुअवसर की भूमि' (Land of Opportunities) बताया। इस समय यूरोप के अधिकांश देशों की जनसंख्या में तेजी के साथ वृद्धि हो रही थी। वहाँ पर भूमि पर दबाव अधिक था और बेकारी फैल रही थी। इंग्लैण्ड के शासन से तंग आकर आयरलैण्ड के कैथोलिक निवासी भी देश छोड़कर अमेरिका आये। रूस व अन्य देशों से यहूदी काफी संख्या में अमेरिका में आकर बस गये। बीसवीं शताब्दी में यह प्रवासी अमेरिकी समाज में इस प्रकार घुल मिल गये जिस प्रकार की एक बर्तन में विभिन्न धातुओं को गरम कर पिघलाने से एक सम्मिश्रित धातु का निर्माण हो जाता है। इसलिए इस अवधि में अमेरिका की तुलना 'उबलते हुए बर्तन' (Melting Pot) से की जाती है।

1870 से 1920 ईसवी के बीच के पचास वर्षों में अमेरिका में आने वाले प्रवासियों की संख्या 2,62,77,565 थी। यह संख्या पिछले दो सौ पचास वर्षों के प्रवासियों की संख्या से तीन गुने से

अधिक थी। 1870 से 1890 ईसवी के मध्य आने वाले प्रवासियों में पिच्यासी प्रतिशत व्यक्ति उत्तर व पश्चिमी यूरोप से आये थे। इनमें भी जर्मनी, आयरलैण्ड, इंग्लैण्ड और स्कैंडनेवियन देशों से आये मनुष्य अधिक थे। 1890 ईसवी के पश्चात् इन प्रदेशों से आने वाले प्रवासियों की संख्या घटने लगी। इसके बाद नवीन देशान्तरवास (New Immigration), में चेक, स्लाव, हंगरीयन, क्रोशियन, पोल, यूक्रेशियन और रूस व आस्ट्रिया के प्रदेशों से यहूदी काफी संख्या में आये। पश्चिमी व उत्तरी यूरोप से आने वाले मनुष्य पूर्वी यूरोप के प्रवासियों की अपेक्षा अधिक पढ़े लिखे थे। आयरीश और कुछ जर्मनी को छोड़कर पश्चिमी व उत्तरी यूरोप के प्रवासी प्रोटेस्टेन्ट मत के अनुयायी थे। 'नवीन देशान्तरवास' के काल में आने वाले व्यक्तियों का जीवन स्तर निम्न था। वे लोकतांत्रिक पद्धति से परिचित नहीं थे। उनमें से अधिकांश रोमन कैथोलिक, कट्टर यूनानी चर्च के अनुयायी तथा यहूदी थे। यद्यपि 1870 से 1920 ईसवी के मध्य आने वाले प्रवासियों में अधिकांश कृषक थे, परन्तु उनमें से अधिकांश व्यक्ति अमेरिका के पश्चिमी प्रदेशों में मवेशी उद्योग व खदानों में कार्य करने के लिए चले गये। वे इस्पात के कारखानों और कपड़ा मिलों में भी श्रमिक के रूप में कार्य करन लगे। 1849 ईसवी में केलिफोर्निया में स्वर्ण की प्राप्ति की सम्भावना से लोग इस ओर जाने के लिए आकृष्ट हुए। इसी प्रकार कोलारैडो (Colarado) के पहाड़ी प्रदेशों में स्वर्ण और चांदी की खोज में अनेक व्यक्ति वहाँ गये। 1875 ईसवी में डैकोटा (Dakota) की पहाड़ियों में सोने की खोज आरम्भ हुई। इन प्रदेशों में खदानों के पास अनेक बस्तियाँ बस गई। उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त तक पश्चिमी प्रदेशों में लगभग चालीस करोड़ एकड़ भूमि पर अधिकार किया जा चुका था। इंन बस्तियों में रहने वालों में सभी वर्ग के व्यक्ति थे। उनका जीवन स्तर निम्न था। रेल मार्गों के विकास से शनैः शनैः उन्हें जीवन की आवश्यक सुविधाएँ उपलब्ध होने लगीं।

पश्चिम के अनेक प्रदेशों में गृह युद्ध के पश्चात् मवेशी उद्योग का विस्तार हुआ। डेकोटा, नेब्रासका, केनसोस, कोलारैडो, मोनटाना, वोमिंग आदि प्रदेशों के मैदान में विशाल चारागाह बनाये गये। इन प्रदेशों के निवासी खनिज सीमा की बस्तियों के निवासियों की अपेक्षा शान्त व सीधे स्वभाव के थे।

पश्चिमी प्रदेशों में पर्याप्त वर्षा होने के कारण विस्तृत पैमाने पर खैती की गई। परन्तु नदियों में आने वाली बाढ़ों से इन इलाको में खेती पनप नहीं सकी। बीसवीं सदी के आरम्भ में अमेरिका की सरकार ने सिंचाई की व्यवस्था करके यहाँ की कृषि अर्थ व्यवस्था को सुधारने का प्रयास किया।

अमेरिका में प्रवासियों के आगमन पर लगाये गये प्रतिबन्ध :

देश की बढ़ती हुई जनसंख्या को नियन्त्रित करने के लिए प्रथम बार अमेरिका की संघीय सरकार ने 1875 ईसवी में सजा-प्राप्त अपराधियों और वेश्याओं के आगमन को रोकने के लिए एक अधिनियम बनाया। 1882 ईसवी में मूर्ख व्यक्तियों और देश के लिए सार्वजनिक रूप से भार सिद्ध होने वाले व्यक्तियों का देशान्तरवास बन्द कर दिया गया। इसी वर्ष प्रत्येक प्रवासी पर एक

साधारण कर भी लगाया गया। 1882 ईसवी के अधिनियम में चीनी नागरिकों के आगमन पर अस्थाई प्रतिबन्ध लगाया। 1852 से 1882 ईसवी तक डेढ़ लाख चीनी श्रमिक अमेरिका के प्रशान्त महासागर के तटीय प्रदेशों में काम करने के लिए लाए गए थे। कैलिफोर्निया के श्वेत श्रमिकों ने इसका विरोध किया और उनके आन्दोलन के फलस्वरूप यह अधिनियम लागू किया गया। 1902 ईसवी में चीनियों के देशान्तरवास पर स्थायी प्रतिबन्ध लगाया गया। चीन के साथ मित्रता होने के कारण द्वितीय विश्व युद्ध में यह प्रतिबन्ध हटा लिया गया। कैलिफोर्निया में जापानियों के देशान्तरवास के विरोध में 1890 ईसवी में उपद्रव हुए। जापान की सरकार के साथ वार्ता करके 1907 ईसवी में जेन्टलमैन समझौता (Gentleman's Agreement) किया गया। इसके अनुसार उचित पासपोर्ट लेकर न आने वाले जापानियों का अमेरिका में आगमन बन्द कर दिया गया। कैलिफोर्निया के राज्य ने 1913 ईसवी में जापानी व चीनी प्रवासियों को खेत खरीदने या तीन वर्ष से अधिक ठेके पर लेने पर रोक लगा दी। पश्चिम के अन्य राज्यों ने कैलिफोर्निया का अनुकरण किया। यद्यपि एशिया के कुछ देशों के निवासियों के देशान्तरवास पर प्रतिबन्ध लगाये गये। परन्तु यूरोप से आने वाले सामान्य व्यक्तियों पर कोई रोक नहीं थी। 1917 ईसवी में विल्सन ने अशिक्षितों, आवारा और हिंसात्मक तरीकों से सरकार का तख्ता उलटने में विश्वास करने वाले व्यक्तियों के देशान्तरवास पर प्रतिबन्ध लगा दिये। प्रथम विश्व युद्ध के बाद प्रवासियों की संख्या पुनः तेजी के साथ बढ़ी। अत: 1921 ईसवी में इमरजेन्सी कोटा एक्ट (Emergency Quota Act) बनाया गया। इस अधिनियम के अन्तर्गत एक यूरोपीयन देश से अमेरिका में 1910 ईसवी तक बसे हुए प्रवासियों की कुल जनसंख्या के तीन प्रतिशत व्यक्ति ही अमेरिका में आ सकते थे। 1924 ईसवी के लाज-जॉनसन अधिनियम (Lodge-Johnon Act) ने उपर्युक्त अधिनियम को रद्द करते हुए यह नियम बनाया कि 1890 ईसवी तक एक यूरोपीय देश से अमेरिका में बसे प्रवासियों की कुल जनसंख्या के दो प्रतिशत व्यक्ति अमेरिका में एक साल में आकर बस सकते हैं। यह अधिनियम खुले तौर पर उत्तर पश्चिमी यूरोप के देशों के प्रवासियों के प्रति पक्षपात था क्योंकि 1890 ईसवी तक अमेरिका में आने वाले प्रवासियों में इनकी संख्या बहुत अधिक थी। जापानियों के आगमन पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाया गया। 1929 ईसवी में प्रवासियों की कुल संख्या एक वर्ष में डेढ़ लाख सीमित कर दी गई। 1920 ईसवी में यूरोप के प्रत्येक देश के प्रवासियों की कुल आबादी के आधार पर उनके प्रवासियों की संख्या निर्धारित की गई। आर्थिक संकट के काल में अनेक व्यक्तियों को आने की अनुमति नहीं दी गई, क्योंकि आने वाले व्यक्ति अमेरिका से अपने जीवन निर्वाह की समुचित व्यवस्था नहीं कर सकते थे और वे सरकार पर व्यर्थ का भार सिद्ध हो सकते थे। केवल 1939 ईसवी को छोड़कर 1931 से 1945 ईसवी तक निर्धारित संख्या से लगभग एक तिहाई व्यक्ति यूरोप से अमेरिका आये। द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् सरकार ने यूरोप के विस्थापितों की एक सीमित संख्या को अमेरिका में बसने की अनुमति दी।

सामाजिक परिवर्तन व समस्याएँ :

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध और बीसवीं शताब्दी के प्रथम दो दशकों में अमेरिका में जनसंख्या की असाधारण वृद्धि से कई समस्याएँ उत्पन्न हुईं। पश्चिमी व उत्तरी यूरोप के देशों से

आने वाले मनुष्यों की अपेक्षा पूर्वी यूरोप के देशों से आने वाले व्यक्ति कम पढ़े लिखे थे। वे लोकतन्त्रीय पद्धतियों से पूर्णतया परिचित नहीं थे। अतः पूर्वी यूरोप के प्रवासियों को अमेरिका के लोकतन्त्रीय विचारों और पद्धतियों को अपनाने में देर लगी। इस अवधि में यूरोप व एशिया से आने वाले प्रवासियों में अधिकांश अंग्रेजी नहीं जानते थे, अतः उन्हें अमेरिकी समाज में घुल मिल जाने में समय लगा।

नगरों का विकास :

यद्यपि नगरों का विकास गृह युद्ध के पहले से ही आरम्भ हो चुका था, परन्तु उसके बाद उनके विकास की गति में तेजी आई। 1860 ईसवी में केवल 19.8 प्रतिशत व्यक्ति नगरों में रहते थे लेकिन 1900 ईसवी में 39.7 व्यक्ति नगरों में रहने लगे। 1920 ईसवी तक लगभग आधी जनसंख्या नगरों में निवास करती थी। लेकिन कुछ बड़े नगरों को छोड़कर शेष नगरों के निवासियों का दृष्टिकोण ग्रामवासियों के समान ही बना रहा। नगरीकरण का दूसरा मुख्य पहलू कुछ ही बड़े-बड़े नगरों में व्यक्तियों का निवास था। उनमें न्यूयार्क, शिकागो, फिलाडेलफिया, बोस्टन, लॉसएजेल्स, व क्लीवलैण्ड आदि प्रमुख थे। ज्यो-ज्यों नगरों का विकास होता गया, त्यों-त्यों वहाँ की स्थानीय संस्थाओं की कठिनाइयाँ बढ़ती गई। उन्हें स्वास्थ्य, पुलिस, प्राथमिक सुविधाओं आदि का प्रबन्ध करना पड़ा। इस दिशा में उनके प्रयत्नों की गति धीमी थी।

अमेरिका में नगरों का विकास बिना किसी योजना के हुआ। इसके फलस्वरूप गन्दी बस्तियों का उदय हुआ। आम तौर पर नगरों पर सफाई की समुचित व्यस्था न थी, फलस्वरूप समय-समय पर संक्रमण रोगों का प्रकोप होता रहता था। अनेक बार नगरों में भीषण आग लग जाती थी लेकिन शनैः-शनैः इस प्रकार की समस्याओं के निराकरण के लिए प्रबन्ध किये गये।

जीवन स्तर की विभिन्नता :

अमेरिकी उद्योगों की तीव्र गति से प्रगति के फलस्वरूप देश में धनी व्यक्तियों की संख्या में तेजी के साथ वृद्धि हुई। 1861 ईसवी में अमेरिका में केवल तीन लक्षाधीश थे, किन्तु बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में इनकी संख्या अड़तीस सौ तक पहुँच गई थी। देश की सम्पत्ति का 9/10 भाग इनके नियन्त्रण में था। अधिकांश धनवान शान शौकत का जीवन व्यतीत करते थे। उन्होंने नगरों में विशाल भवन बना लिये थे, जहाँ वे आराम के साथ रहते थे। वे अपने शौक के लिए असीमित राशि व्यय करते थे।

उनके विशाल महलों में पशुओं, पक्षियों और बगीचों के लिए विशेष प्रबन्ध होता था। घुड़सवार के लिए अनेक घोड़े अस्तबल में रहते थे। कीमती वस्त्र हीरे-जवाहरात व गहनों का प्रदर्शन करने में वे गौरव का अनुभव करते थे। ओपेरा घरों में नृत्य करना उनकी दिनचर्या का एक प्रमुख भाग था। घरों की सजावट के लिए वे पहले की अपेक्षा अधिक धन व्यय करने लगे। मगर श्रमिकों व अकुशल कारीगरों को शहरों में मलिन बस्तियों में रहना पड़ता था। बड़े नगरों की लगभग दस प्रतिशत जनसंख्या मलिन बस्तियों में रहती थी। उनके मकानों में प्रकाश व हवा नहीं पहुँच पाती थी। धुएँ से भरे मकान में वे गन्दी गलियों के वातावरण में पले हुए मनुष्य का

स्वास्थ्य शीघ्र खराब हो जाता था और वे कई प्रकार के रोगों के शिकार हो जाते थे। उनके बच्चों की शिक्षा का कोई प्रबन्ध नहीं था। ऐसी परिस्थितियों में गन्दी बस्तियों में अपराधियों का बढ़ना स्वाभाविक था।

कुशल कारीगर, साधारण व्यापार करने वाले व्यक्ति, वकील व डॉक्टर आदि मध्यम श्रेणी के वर्ग में गिने जाते थे। उनके मकान अमीरों की अपेक्षा छोटे होते थे। परन्तु उसमें जीवन की साधारण सुविधाएँ उपलब्ध होती थीं। उनके पास कपड़ा सीने की मशीन, गैस लैम्प, पियानों और अन्य वस्तुएँ होती थीं। निर्धन वर्ग के मनुष्य मध्यम वर्ग के मनुष्यों के जीवन स्तर, रहन-सहन और विचारधारा को जीवन का आदर्श मानते थे।

गंदी बस्तियों के सुधार के प्रयत्न :

मलिन बस्तियों के निवासियों की दशा सुधारने के लिए सामाजिक सुधारकों काफी लम्बा व कठोर संघर्ष करना पड़ा। उन्होंने स्थानीय संस्थाओं, राज्यों की सरकारों की और संघीय सरकार से मलिन बस्तियों में रहने वाले मनुष्यों की दशा सुधारने की अपील की। 1890 ईसवी तक इस कार्य के लिए लगभग सौ समितियों का गठन किया गया। अनेक नगर पालिकाओं ने सार्वजनिक स्वास्थ्य नियम लागू किये। कई नगरों में श्रमिकों के लिए हवादार मकान बनाये गये। मलिन बस्तियों की दशा सुधारने के कार्य में सबसे सराहनीय योगदान जेन एडम्स (Jane Adames) नामक एक महिला ने किया। उसने 1899 ईसवी में शिकागो में 'हल हाउस' (Hull House) की स्थापना की। शनैः-शनैः उसने श्रमिकों के लिए कई लाभप्रद अधिनियम पारित कराये। इस प्रकार की सस्थाएँ अन्य नगरों में भी खोली गई। समाज सुधारकों ने इन बस्तियों में नशाबन्दी अभियान चलाने की चेष्टा की संस्थाएँ इसमें चर्च ने भी अपना योगदान दिया। उन्होंने राज्य सरकारों से नशाबन्दी लागू करने की अपील भी की। कई नगरों में नशाबन्दी संस्थाएँ भी खोली गईं।

स्त्रियों की दशा में सुधार :

गृह युद्ध के पहले स्त्रियों के अधिकार सीमित थे। वे कानून, चिकित्सा शास्त्र और तकनीकी शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकते थे। कारखानों में उन्हें पुरुषों से कम वेतन दिया जाता था। स्त्री की कमाई को उसके पति की सम्पत्ति माना जाता था। एक स्त्री का उसके पति से पृथक् होने पर उसके बच्चों पर पुरुष का अधिकार होता था। उन्हें मत देने का अधिकार नहीं था। उन्नीसवीं शताब्दी के उतरार्द्ध में स्त्रियों की दशा में सुधार करने का आन्दोलन प्रारम्भ हुआ। उस समय में अनेक सुधारवादी संस्थाओं द्वारा नशाबन्दी के समर्थन में किये गये आन्दोलन में स्त्रियों ने पूर्ण सहयोग प्रदान किया। अनेक स्थानों पर स्त्रियों का सार्वजनिक मंच पर आकर भाषण देने का विरोध किया गया। पुरुषों के इस प्रकार के व्यवहार से असन्तुष्ट हो श्रीमती स्टेंटन (Mrs. Stanton) और कुमारी सुसान एन्थोनी (Miss Susan Anthony) ने स्त्रियों को पुरुषों के समान अधिकार दिलाने के लिए आन्दोलन का नेतृत्व किया। उन्होंने स्त्रियों के लिए मताधिकार की माँग की। 1869 ईसवी में योमिंग (Wyoming) के प्रदेश में स्त्रियों को मताधिकार दिया गया।

1890 ईसवी में योमिन के संयुक्त राज्य अमेरिका के सघ के सदस्य बनने से राष्ट्रीय स्त्री मताधिकार परिषद् (National Woman's Suffrage Association) के आन्दोलन ने जोर पकड़ा। 1896 ईसवी तक कोलारैडो, उताह (Utah), इदाहो (Idaho) ने भी स्त्रियों को मताधिकार प्रदान किया। 1914 ईसवी तक मिसिसिप्पी के पश्चिम में स्थित आठ राज्य उनका अनुसरण भी कर चुके थे। 1916 ईसवी में मोन्टाना (Montana) ने एक महिला कांग्रेस के लिए चुनी गई। 1920 में संविधान के उन्नीसवें संशोधन द्वारा स्त्रियों को पुरुषों के समान मताधिकार मिल गये।

बीसवीं शताब्दी में सामाजिक दशा और रहन-सहन में आमूल परिवर्तन हो गया। अमेरिका समाज की उदारवादी प्रवृत और स्त्रियों के आन्दोलन के कारण परिवार में पुरुषों का आधिपत्य समाप्त होने लगा। वर्तमान शताब्दि के पूर्वार्द्ध में स्त्रियों का कार्यक्षेत्र विस्तृत हो गया व उनकी संख्या दफ्तरों, कारखानों, व्यापारिक व व्यवसायिक प्रतिष्ठानों, शिक्षालयों और न्यायालयों में निरन्तर बढ़ने लगी। स्त्रियाँ सार्वजनिक हलचलों में प्रभावशाली भाग लेने लगी। 1900 ईसवी में लगभग पाँच लाख महिलाएँ नौकरी कर अपना जीवन निर्वाह कर रही थी। 1966 में यह संख्या बढ़कर ग्यारह लाख हो गई थी। 1940 ईसवी में लगभग तीन प्रतिशत स्त्रियाँ कार्य कर रही थी। इसमें से अनेक महत्त्वपूर्ण सरकारी पदों पर भी थीं। 1933 ईसवी में राष्ट्रपति रूजवेल्ट ने मिस फ्रांसिस परकिन्स (Miss Francis Perkins) को अपनी केबिनेट में श्रम-विभाग का सचिव नियुक्त किया। वे इस पद पर 1945 ईसवी तक कार्य करती रही।

स्त्रियों की दशा में क्रान्तिकारी परिवर्तनों से अमेरिका के सामाजिक व्यवस्था के स्वरूप को बदल दिया। अनेक आलोचकों का यह मत है कि इससे अमेरिकी बच्चों पर उनकी माता का अधिक प्रभाव पड़ा। फलस्वरूप इन परिवर्तनों से परिवार में तनाव बढ़ा और तलाकों की संख्या बढ़ने लगी।

दास प्रथा का अन्त व नीग्रो जाति की उन्नति :

गृह युद्ध के फलस्वरूप अमेरिका से दास प्रथा का अन्त हो गया। दक्षिण के राज्यों में नीग्रों दासों को स्वतन्त्र कराने के विरुद्ध तीव्र प्रतिक्रिया हुई। अनेक गुप्त संस्थाएँ जिनमें कु-क्लक्स-कलान (Ku-Klux Klan) सबसे अधिक प्रसिद्ध थी। हिंसात्मक तरीकों से नीग्रो जाति को कुचलने का प्रयत्न करने लगीं। 1870 व 71 ईसवी में एनफोर्समेंट अधिनियमों (Enforcement Acts) द्वारा इस प्रकार की कार्यवाहियों को अवैध घोषित किया गया। इस अधिनियम के लागू करने से भी उनकी दशा में विशेष सुधार नहीं हुआ और नीग्रो जाति के मनुष्यों की आर्थिक व सामाजिक दशा भी सोचनीय बनी रही। भूमि पर स्वामित्व अधिकार न होने के कारण अब भी उन्हें श्वेत स्वामियों के बागानों में श्रमिक के रूप में कार्य करना पड़ता था। अमेरिकी समाज में उनको श्वेतों से निम्न माना जाता था। 1900 में अमेरिका में नीग्रों की संख्या लगभग 8,834,000 थी जो कि अमेरिका की कुल जनसंख्या की 11.6 प्रतिशत थी। इनमें से 82.8 प्रतिशत कृषि कार्य करते थे। कृषि कार्य करने वालों में से केवल एक चौथाई के पास अपने खेत थे। आधे के लगभग नीग्रो अशिक्षित थे। बीसवीं शताब्दी में विशेषकर प्रथम महायुद्ध की अवधि में काफी संख्या में

नीग्रो व दक्षिण के राज्यों से उत्तर के राज्यों में नौकरी के लिए आये। यद्यपि उत्तर के नगरों में उन्हें निम्न पदों पर कार्य करने के लिए अवसर दिये गये लेकिन उन्होंने दक्षिणी राज्यों में उनके साथ होने वाले व्यवहार से उत्तर के प्रदेशों में जाना पसन्द किया। धीरे-धीरे उनकी दशा सुधारने लगी। बुकर टी. वाशिंगटन (Booker T. Washington) द्वारा उन्नीसवीं शताब्दी अन्तिम के दो दशकों में नीग्रोज की दशा सुधारने के लिए आरम्भ किये गये आन्दोलन का प्रभाव अमेरिकी जनता व सरकार पर पड़ा। अनेक नीग्रो मनुष्यों ने अपनी बुद्धिमता व परिश्रम से भी उन्नति की। दक्षिण के राज्यों में शनैः-शनैः उनके प्रति घृणा मिटने लगी। जहाँ 1880 ईसवी में 30 प्रतिशत नीग्रो शिक्षित थे वहाँ 1930 ईसवी में 84 प्रतिशत नीग्रोज शिक्षित थे। व्यापार व व्यवसायिक प्रतिष्ठानों में कार्य करने वालों में नीग्रोज की संख्या बढ़ गई थी। संगीत, साहित्य व विज्ञान के क्षेत्र में नीग्रोज ने अपना बहुमूल्य योगदान दिया। राजनैतिक क्षेत्र में कार्य करने में सबसे अधिक ख्याति राल्फ जे. बुन्चे (Ralph J. Bunche) को मिली। उन्हें 1950 ईसवी में नोबल पुरस्कार मिला था। अमेरिकी इतिहासकार पाकर्स के मत में गृह युद्ध के बाद सौ वर्षों में यद्यपि अमेरिका के नीग्रो नागरिकों की प्रगति कभी-कभी असाधारण रूप से धीमी दिखाई देती है और वर्ग विभेद की उग्र भावना कभी भयंकर रूप से विस्फोटित होती दिखाई देती है। परन्तु फिर भी 1860 व 1900 ईसवी और 1900 ईसवी से 1950 ईसवी की प्रगति पर एक विहंगम दृष्टि डालने के बाद इस सम्बन्ध में एक आशावादी दृष्टिकोण अपनाया जा सकता है।

शिक्षा में प्रगति :

1863 ईसवी के पश्चात् शिक्षा के क्षेत्र में विशेष रूप से उन्नति की गई। यद्यपि गृह युद्ध के पहले जनता को निःशुल्क शिक्षा देने के सिद्धान्त को मान्यता प्राप्त हो गई थी, किन्तु इस दिशा में वास्तविक प्रगति उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में ही हुई। अनेक राज्यों में अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा के कानून इस समय में बनाये गये। 1900 ईसवी तक बत्तीस राज्यों में और 1918 ईसवी तक संयुक्त राज्य अमेरिका के सभी 48 राज्यों में ऐसे कानून बन चुके थे आरम्भ में एक बालक के लिए ग्रामर स्कूल में दो या तीन वर्ष की शिक्षा अनिवार्य की गई। शनैः-शनैः इसकी अवधि बढ़ाई गई और शीघ्र ही राज्यों ने माध्यमिक शिक्षा देने की जिम्मेदारी भी ग्रहण कर ली। 1870 ईसवी में सार्वजनिक माध्यमिक शिक्षालयों (Public High School) की संख्या पाँच सौ थी। 1890 ईसवी में बढ़कर दो हजार पाँच सौ और 1915 में बारह हजार हो गई थी। 1870 ईसवी में एक विद्यार्थी पर औसतन 9.23 डालर व्यय होता था। 1930 ईसवी में उस पर 74.38 डालर खर्च होने लगा। शिक्षा के प्रसार के फलस्वरूप अमेरिका में निरक्षरता घटने लगी। 1876 ईसवी में पच्चीस प्रतिशत व्यक्ति अशिक्षित थे। 1870 में 1930 ईसवी में अशिक्षितों की संख्या घटकर क्रमशः 11 व 4.3 प्रतिशत रह गई। यद्यपि इस समय में प्राथमिक व माध्यमिक शिक्षा का विकास तीव्र गति से हुआ, किन्तु अध्यापकों की दशा अच्छी नहीं थी। उनका वेतन बहुत कम था। एक पुरुष अध्यापक को एक श्रमिक से कम वेतन मिलता था और महिला अध्यापक को पुरुष अध्यापक से कम वेतन दिया जाता था। ऐसी परिस्थितियों में योग्य व विद्वान् व्यक्ति अध्यापक नहीं बनते थे। अतः शिक्षा का स्तर अनेक शिक्षालयों में आशा के अनुकूल उच्च नहीं था। किन्तु इससे अमेरिका

के सार्वजनिक माध्यमिक शिक्षालयों का महत्त्व कम नहीं होता। इन स्कूलों में अमेरिकी बालकों को नागरिकता की शिक्षा के साथ-साथ राष्ट्रीय एकता का पाठ भी पढ़ाया जाता था। इन शिक्षालयों में पढ़ने से प्रवासियों की सन्तानों को अमेरिकी राष्ट्र व समाज का अविभाज्य अंग बनने में कठिनाई का अनुभव नहीं हुआ।

बीसवीं शताब्दी में शिक्षा के उद्देश्यों में भी परिवर्तन किये गये। कोलिम्बया विश्वविद्यालय के प्रोफेसर जॉन डिवी (John Dewey) ने एक बालक के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास को आवश्यक बताया। अधिक खेल-कूद की सुविधाएँ, प्रकृति से अभिन्न परिचय और स्कूल के प्रांगण में सामूहिक जीवन द्वारा अमेरिका की स्कूलों में बालकों को भावी जीवन के लिए तैयार किया जाने लगा। व्यवसायिक शिक्षा की व्यवस्था स्कूलों में की गई।

इस अवधि में उच्च शिक्षालयों के विद्यार्थियों की संख्या और उनके शिक्षा स्तर में वृद्धि हुई। 1862 ईसवी में संघीय सरकार ने मोरिल अधिनियम (Moril Act) बनाकर राज्यों को कम से कम एक कॉलेज स्थापित करने के लिए मुफ्त भूमि देने का निश्चय किया। इस अधिनियम के अन्तर्गत तेरह करोड़ एकड़ भूमि राज्य को दी गई। राज्यों, स्थानीय संस्थाओं और धनी व्यक्तियों ने भारी अनुदानों से अपने प्रदेशों में कॉलेजों व विश्वविद्यालय खोलने में सहायता दी। हारवर्ड, येल और कोलम्बिया के कॉलेज विश्वविद्यालय बन गये और शिकागो, कोरनेल (Cornell), जान हॉकिन्स, ड्यूक, वेन्डिर बिल्ट (Vander Bilt) और फोर्ड में विश्वविद्यालय स्थापित किये गये। 1900 ईसवी में लगभग पाँच सौ कॉलेज उच्च शिक्षा दे रहे थे। इनमें से लगभग 70 प्रतिशत में सह शिक्षा दी जाती थी। कानून व चिकित्सा शास्त्र के अध्ययन के लिए पृथक् कॉलेज खोले गये। अनेक स्थानों में लड़कियों के लिए पृथक् कॉलेज की व्यवस्था भी की गई।

हारवर्ड ने 1908 ईसवी में व्यापारिक प्रशासन (Business Administration) का अध्ययन और 1912 ईसवी में कोलम्बिया में पत्रकारिता का अध्ययन आरम्भ किया गया। विश्वविद्यालयों ने अपन पाठ्यक्रमों में क्रान्तिकारी परिवर्तन किये। अनेक नए विषयों का पठन आरम्भ किया गया। वर्जीनिया के विश्वविद्यालयों में विद्यार्थियों के प्रतिनिधि को पढ़ाई के विषयों को चुनने का अधिकार दिया गया। इस पद्धति का अनुकरण अन्य विश्वविद्यालयों ने भी किया। इनमें कोई संदेह नहीं कि इस पद्धति ने ऐसे विषयों का अध्ययन प्राप्त किया जो आधुनिक युग में आवश्यक नहीं थे, परन्तु इसने अनेक स्थानों पर अव्यवस्था को भी जन्म दिया। बीसवीं शताब्दी में यह प्रयत्न किया गया कि एक विद्यार्थी कुछ विषयों का अध्ययन अवश्य करे और कुछ विषयों का चुनाव अपनी प्रतिभा और इच्छा के आधार पर करे। एक विद्यार्थी का विश्वविद्यालयों में भी स्कूलों के समान खेलकूद में भाग लेना अनिवार्य कर दिया गया।

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध और बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में अमेरिकी विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में स्नातकोत्तर अध्ययन और शोध कार्य के क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति की। 1850 ईसवी में अमेरिका में केवल आठ विद्यार्थी स्नातकोत्तर अध्ययन कर रहे थे। 1900 ईसवी तक विभिन्न विश्वविद्यालयों में ऐसे विद्यार्थियों की संख्या पाँच हजार थी। इससे कला, साहित्य, विज्ञान के क्षेत्र में अनुसंधान की प्रवृत्ति बढ़ी और उल्लेखनीय कार्य किया गया।

इस अवधि में सार्वजनिक पुस्तकालयों की संख्या भी बढ़ी। बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में एन्ड्रयू कारनेजी (Andrew Carnegie) ने नये वाचनालय स्थापित करने के लिए नगरों की स्थानीय संख्याओं को साठ लाख डालर इस शर्त पर दान दिया कि वे इन्हें अपने खर्चे से चलायेंगे।

1874 ईसवी में मिलर (Miller) और विन्सेट (Wincent) ने पश्चिमी न्यूयार्क में प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र खोलकर राष्ट्र को इस दिशा में प्रेरित किया। बीसवीं शताब्दी तक प्रत्येक नगर में इस प्रकार के केन्द्र खुल गये थे। समाचार पत्रों, पत्र व्यवहार, रेडियो टेलीविजन और सिनेमा के माध्यम से भी प्रौढ़ों के ज्ञान को बढ़ाया गया। प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों ने अध्यापकों को दूर-दूर के ग्रामों में भेजने के कार्यक्रम का भी सफलतापूर्वक संचालन किया।

समाचार पत्रों का विकास :

नगरों के विकास और शिक्षा की उन्नति से समाचार पत्रों की संख्या में असाधारण वृद्धि हुई। 1870 ईसवी में 1900 समाचार पत्र प्रकाशित होते थे। 1900 ईसवी में इनकी संख्या 16200 हो गई थी। इस समय के समाचार पत्र पहले की अपेक्षा बड़े होने लगे। 1922 ईसवी में ऐसासियेटेड प्रेस (Associated Press) नामक समाचार पत्र एकत्र करने वाली संस्था की स्थापना हुई। इसी प्रकार की अन्य संस्थाएँ भी कार्य करने लगीं। शीघ्र ही पत्रिका प्रकाशन, सम्पादन व लेखन एक प्रमुख व्यवसाय बन गये। अपने स्वतन्त्र विचारों स अनेक सम्पादकों ने अमेरिकी जीवन को प्रभावित किया। 1902 ईसवी के पश्चात् समाचार पत्रों की संख्या में कमी होने लगी। व्यापारिक निगमों ने समाचार पत्रों पर एकाधिकार स्थापित कर लिया। किन्तु अनेक समाचार पत्र बीसवीं शताब्दी में भी अपनी स्वतन्त्रता बनाये रखने में सफल रहे।

उन्नीसवीं शताब्दी का अन्तिम दशक पत्रिकाओं के प्रकाशन का स्वर्ण युग था। एटलांटिक मंथली (Atlantic Monthly), हार्पर्स (Harper's), सेंचुरी (Century) जैसी पत्रिकाओं का स्तर बहुत उच्च कोटि का था। साप्ताहिक पत्रिकाओं में नेशन (Nation) सबसे अधिक प्रचलित था। बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में समाचार पत्रों की तरह पत्रिकाएँ भी पहले की अपेक्षा बड़ी और काफी संख्या में छपने लगी। सेटरडे इवनिंग पोस्ट (Saturday Evening Post) बीस लाख ग्राहकों द्वारा खरीदी जाती थी। इन पत्रिकाओं में विद्वानों, कलाकारों, वैज्ञानिकों और राजनीतिज्ञों आदि के लेख छपते थे। प्रमुख उद्योगपतियों ने इनको भी अपने नियन्त्रण में लेने का प्रयास किया, जिसके फलस्वरूप अनेक पत्रिकाएँ उनकी प्रशंसा के लेख प्रकाशित करने लगी।

साहित्य में प्रगति :

गृह युद्ध के पहले लोंगफेलो (Longfellow), व्हीटीअर (Whitter), ब्रिएंट (Bryant) और लॉवेल (Lowel) आदि न्यू इंग्लैण्ड के लेखक अमेरिका के प्रमुख साहित्यकार माने जाते थे। गृह युद्ध के बाद इनके अतिरिक्त इनके शिष्य टेलर (Tayler), एलड्रिच (Aldrech), स्टेंडमैन (Stendemen) और बोकर (Boker) प्रसिद्ध हुए। इन पर अंग्रेजी साहित्य का अधिक प्रभाव था। वे कवि अमेरिकी समाज को उच्छृंखल और भौतिकवादी मानकर आदर्शवादी कल्पना का

आश्रय लेते थे। इसलिए आधुनिक आलोचकों ने इन्हें 'विनित परम्परा' (Gental Tradition) का प्रतिपादक बता कर अधिक महत्त्व नहीं दिया है। उनके बाद मैसाचुसेट्स की एक कवियित्री एमिल डीकिन्सन (Emil Dickinson) प्रसिद्ध हुई। उसने अपनी कविताओ में भौतिक वस्तुओं को दैवी शक्तियों का प्रतीक बताया। उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त में सबसे अधिक लोकप्रियता वाल्ट ह्विटमैन (Walt Whitmen) को मिली। उसने अमेरिकी परम्परा के साथ जन साधारण की योग्यता की प्रशंसा में कविताएँ लिखीं। उसकी अधिकांश कविताएँ मुक्त छन्द में लिखी गई थी। उसने अपनी रचनाओं में प्रकृति की सुन्दरता का सूक्ष्म वर्णन किया है। उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम दशकों में दक्षिण व पश्चिम के प्रदेशों के कवियों ने अपने प्रदेशों के विषयों में रचनाएँ कीं। अमेरिकी साहित्य के इतिहास में उन्हें रीजनेलिस्ट (Regionalist) कहा जाता है।

इसमें सबसे अधिक प्रसिद्ध मिसौरी के लेखक सेम्यूअल लेंगहार्न क्लीमेन्स (Samuel Langhorn Clemence) को मिली जो अपने उपनाम मार्क ट्वेन (Mark Twain) से अधिक माना जाता है। उसने इंग्लैण्ड की साहित्यक परम्परा का अनुकरण न करके अपनी रचनाओं में अमेरिका में प्रयोग में आने वाली अंग्रेजी का प्रयोग किया। उसकी रचनाओं में हास्य का बड़ा सुन्दर पुट है। उसकी प्रसिद्ध रचनाएँ टाम सायर (Tom Sawyer), हक्लेबरी फिन (Huckleberri Finn) और लाइफ इन मिसीसिप्पी (Life in Missisippi) है। मार्क ट्वेन के एक प्रसिद्ध समकालीन लेखक हेनरी जेम्स (Henery James) में अपने उपन्यासों में यूरोप व इंग्लैण्ड के सामाजिक जीवन का चित्रण किया है तथा अमेरिका के समाज पर वहाँ के प्रभाव को बताया है।

बीसवीं शताब्दी के आरम्भ के प्रथम दशकों में कविताओं के साथ-साथ कहानी, उपन्यास व हास्य रस की रचनाएँ भी की गईं। इस समय में ऐतिहासिक उपन्यासों की लोकप्रियता में वृद्धि हुई। चार्ल्स मेजर (Charles Major), वेयर मिचेल (Weir Mitchell) आदि के उपन्यास बड़े शौक से पढ़े जाने लगे। इस समय में अमेरिकी साहित्य में वास्तविकता (Realism) के साथ राष्ट्र व समाज के दोषों की अलोचना भी की गई। 1920 से 1930 ईसवी के मध्य अमेरिका की साहित्यक रचनाओं में अनुदारता के स्थान पर स्वतन्त्रता व प्रगति की भावना की झलक अधिक दिखाई देती है। मेनकेन (Meneken) और सिन्कल्येर लिविस (Sinclair Lewis) आदि लेखकों को अमेरिका के नगरों के जीवन, वहाँ के मनुष्यों के आदर्शों और रहन-सहन के तरीकों की कटु आलोचना करने के कारण विद्रोहियों (Rebels) की संज्ञा दी गई है। 1930 ईसवी व उसके बाद के वर्षों के आर्थिक संकट के फलस्वरूप अमेरिकी लेखकों के उपन्यासों में पहले की अपेक्षा अधिक सहृदयता और निर्माणकारी प्रवृत्ति देखने को मिलती है। साहित्य के क्षेत्र में इसे अनुदारवाद आन्दोलन (Conservation Movement) कहा जाता है। टी.एस. इलियट (T.S.Eliot) जो कि हारवर्ड में अध्ययन करने के पश्चात् इंग्लैण्ड में बस गया था, तथा वेण्डरबल्ट (Venderbilt) विश्वविद्यालय में अध्ययन किये हुए लेखकों ने आधुनिक युग के प्रारम्भ में यूरोप के मानववादियों (Humanists) के समान अपने युग की सभ्यता की आलोचना की। इसलिए 1930 व 1940 ईसवी के दशक को आलोचना का एक महान् काल माना जाता है। इस काल का एक प्रसिद्ध उपन्यासकार एर्नेस्ट हेमिंग्वे (Ernest Hemingway) है। पर्ल बक (Pearl Buck) ने इसी समय

चीन के ग्रामीण जीवन पर मर्मस्पर्शी उपन्यास लिखे। राबर्ट फ्रोस्ट (Robert Frost) इसी काल का सबसे प्रसिद्ध कवि है।

कला का विकास :

(i) चित्रकला - यद्यपि उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में अमेरिकी चित्रकारों की कृतियों का स्तर पहले की अपेक्षा उच्चतर था, परन्तु उनके चित्रों में मौलिकता का अभाव था। इनके चित्रों में वास्तविकता के स्थान पर कृत्रिम सौन्दर्य का प्रदर्शन अधिक है। 1877 ईसवी में कुछ चित्रकारों ने राष्ट्रीय अकादमी (National Academy) से पृथक् होकर सोसयटी ऑफ अमेरिकन आर्टिस्ट्स (Society of American Artists) नामक संस्था खोली। इस संस्था के सदस्यों को फ्रेंच इम्प्रेसनिस्ट (French Impressionist) कहा गया, क्योंकि इन कलाकारों ने पेरिस में अध्ययन किया था और इन पर फ्रांसीसी चित्रकला का प्रभाव अधिक था। जॉन ला फर्जे (John La Farge), मेरी केसाट (Marry Cassat), जेम्स मेकनेल विट्स्लर (James Macnall Whitsler) और जान सिंगर सार्जेण्ट (John Singer Sargent) इस शैली के प्रमुख चित्रकार थे। मार्क ट्वेन व अन्य साहित्यकारों द्वारा स्थानीय विषयों पर रचनाएँ लिखने का प्रभाव अमेरिकी चित्रकारों पर भी पड़ा। उन्होंने अपनी कृतियों में अमेरिका के प्राकृतिक दृश्य और जन साधारण के जीवन का चित्रण आरम्भ किया। जार्ज इनेस (George Inness) ने मध्य एटलांटिक राज्यों के प्राकृतिक दृश्यों के नयनगोचर चित्र बनाने में प्रसिद्धि प्राप्त की। विन्सलो होमर (Winslow Homer) समुद्र के दृश्यों को चित्रित करने में दक्ष था। एलबर्ट पिनखान राईडर (Albert Pinkhan Ryder) ने पारलैकिक अनुभवों को चित्रत करके बीसवीं शताब्दी के चित्रकारों का मार्ग प्रशस्त किया। फिलाडेल्फिया के चित्रकारों के एक समूह ने शहरी जीवन के चित्रों में कृत्रिम सौन्दर्य के स्थान पर वास्तविकता का चित्रण किया। 1908 ईसवी में इनके चित्रों की एक प्रदर्शनी न्यू यार्क में हुई।

प्रथम विश्व युद्ध के कुछ वर्ष अमेरिकी चित्रकला के विकास के इतिहास में महत्त्वपूर्ण हैं। फिलाडेल्फिया के चित्रकारों के समान हेनरी (Henry) और स्लोन (Sloan) ने यथार्थवादी (Realist) आन्दोलन का सूत्रपात किया। इससे भी अधिक प्रतिभाशाली परिवर्तन यूरोप से प्रभावित चित्रकारों की कृतियों में पाया जाता है। इस समय में यूरोप में एक नई शैली का उद्भव हो रहा था। वहाँ के चित्रकार ऐसे चित्र बना रहे थे जिनमें पारलौकिक अनुभव और भावनाओं का दिग्दर्शन होता था। 1913 ईसवी में न्यूयार्क में आयोजित एक प्रदर्शनी में केजान (Cazanne) से लेकर पिकासो (Picasso) तक के यूरोपियन चित्रकारों की कलाकृतियों के साथ अमेरिकी चित्रकारों के चित्र भी प्रदर्शित किये गये। इसी समय में अमेरिकी चित्रकारों की शैली में परिवर्तन होने लगा। प्रथम विश्व युद्ध के समय के प्रमुख चित्रकारों में जार्ज बेलो (George Bellow), रेजीनाल्ड मार्श (Reginald Marsh), मैक्स वेबर (Max Weber), जान मेरीन (John Marin), मार्सडन हार्टलें (Marsden Hartlen), जार्जिया ओ ' कीफी (Georgia O' Keefee), एडवर्ड हॉपर (Edward Hopper) और चार्ल्स बर्चफील्ड (Charles Burchfield) उल्लेखनीय हैं।

1920 व 1930 ईसवी के मध्य अमेरिकी चित्रकारों ने यूरोपीय प्रभाव से मुक्त होकर अमेरिका के गौरवमय अतीत और परम्पराओं को अपने चित्रों का विषय बनाया। अमेरिका के थामस हार्ट बेन्टन (Thomes Hart Benton), जान स्टीआर्ट करीं (John Steuart Curry) और ग्रांड वुड (Grand Wood) ने अमेरिका के आन्तरिक भागों के प्राकृतिक दृश्यों और ग्रामों के जीवन का चित्रण किया। आर्थिक संकट के काल में विलियम ग्रोपर (William Gropper), फिलिप एवरगुड (Phillip Evergood) आदि चित्रकारों ने श्रमिकों की दशा को चित्रित करते हुए धनी वर्ग के विशेषाधिकारों पर व्यंग्य किया। फ्रैंकलिन डी. रूजवेल्ट के राष्ट्रपतित्व काल में अमेरिकी कलाकारों के आर्थिक स्तर में उन्नति हुई। धनी व्यक्ति उनके चित्र खरीदने लगे। अनेक नये संग्रहालय खोले गये। न्यू डील (New Deal) की योजनाओं में प्रथम बार संघीय सरकार ने चित्रकारों को संरक्षण प्रदान किया। चालीस राज्यों में पाँच हजार चित्रकार सार्वजनिक भवनों में चित्र बनाने के लिए नियुक्त किये गये। 1940 से 1950 ईसवी के मध्य में व्यापारिक प्रतिष्ठानों और श्रमिक संघों ने भी उन्हें संरक्षण प्रदान किया। यद्यपि इस दशक में बनाये गये चित्रों की तकनीक प्रशंसनीय है, किन्तु ये यथार्थवाद के चित्रण के आदर्श से दूर हटे हुए दिखाई देते हैं।

(ii) मूर्ति कला – उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम दशकों में अमेरिका के विभिन्न राज्यों ने अपने नगरों में गृह युद्ध के शहीदों अथवा महान् पुरुषों के स्मारकों का निर्माण कराया। अधिकांश मूर्तिकारों ने पुनर्जागरण युग के इटली के मूर्तिकारों की शैली की नकल की। केवल कुछ कलाकरों ने वास्तविकता का प्रदर्शन किया। जान क्वीन्सी एडम्स वार्ड (John Quincy Adames Ward) और सेन्ट गॉडेन्स (Saint Gaudens) की मूर्तियाँ इस दृष्टि से प्रशंसनीय हैं। बीसवीं शताब्दी में मूर्ति कला में विशेष प्रगति नहीं हुई। लोराडो टेफ्ट (Loardo Taft) और पाल मेनशिप (Paul Mainship) ने उन्नीसवीं शताब्दी की शैली का अनुकरण किया। डेविडसन (Davidson) ने अपनी मूर्तियों में मनुष्यों की सुन्दर आकृति बनाई।

(iii) भवन निर्माण कला – गृह युद्ध के बाद के दो दशकों में भवन निर्माण कला में भी यूरोप की गोथिक शैली (Goethic) की नकल की गई। सार्वजनिक भवनों में किले के समान दीवारें बनाई जाती थीं और विस्तृत अलंकरण किया जाता था। धनी पुरुषों के मकानों पर भी सौन्दर्य का प्रभाव था। हेनरी रिचर्ड हाब्सन (Henry Richard Hobson) ने 1880–1890 ईसवी के मध्य परम्परागत शैली के विरुद्ध विद्रोह किया। उसने विस्तृत अलंकरण के स्थान पर सादगी को अपनाया। इस समय में तकनीकी प्रगति और पत्थर के स्थान पर भवनों में इस्पात के प्रयोग ने अमेरिका की भवन निर्माण कला में क्रान्तिकारी परिवर्तन ला दिय। बड़े-बड़े शहरों में स्थान की कमी के क्रारण कई मंजिल के मकान बनने लगे। 1885 ईसवी में शिकागों में दस मंजिल का एक भवन निर्मित हुआ। उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त तक न्यू यार्क में उन्तीस मंजिल के भवन निर्मित हो चुके थें। 1890 ईसवी में लुई सुलिवान (Louis Sulivan) ने सेंट लुई (Sant Louis) के एक भवन में विस्तृत अलंकरणों के स्थान पर स्वयं का ऐसा भवन बनाया कि उसको देखने से उसके बनाने का उद्देश्य ज्ञात हो जाता है। 1900 ईसवी के लगभग स्थापत्य कला की इस फंक्शनल (Functional) शैली के विरुद्ध प्रतिक्रिया हुई। पहले के समान विविध यूरोपीय शैलियों

के अनुकरण को पसन्द किया गया। इसका प्रभाव अनेक मंजिलों वाले भवनों (Skyscrapers) पर भी पड़ा। बीसवीं शताब्दी में लुई सुलिवान के शिष्य फ्रेंक लायड राईट (Frank Lloyd Wright) ने स्काईस्क्रेपरों के स्थान पर क्षितिज के समानान्तर भवन बनाये। उसने वातावरण, भवन निर्माण की सामग्री और आधुनिक आवश्यकताओं के अनुकूल भवन बनाये। उसकी शैली का अनुकरण यूरोप में भी किया गया।

संगीत कला :

संगीत के क्षेत्र में भी उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में उल्लेखनीय प्रगति नहीं हुई। इस शताब्दी के अन्तिम दशकों में लोक गाथाओं का संग्रह किया गया। ओपेरा संगीत में विक्टर हर्बर्ट (Victor Herbert) ने ख्याति प्राप्त की। पियानो बजाने में न्यूयार्क का एडवर्ड मेकडोवेल (Edward Macdowell) दक्ष था। इस अवधि में अनेक नगरों में ओपेरा के लिए थियेटर बनाये गये। बीसवीं शताब्दी में जनता में संगीत की लोकप्रियता बढ़ी। थियेटरों में लोक गीत सुनने वालों की संख्या में वृद्धि हुई। व्यावसायिक संगीतज्ञों ने जाज (Jazz) बजा कर जनता को मोहित किया। वाद्य संगीत (Orchestra) बजाने वाले समूहों की संख्या 1940 ईसवी तक बहुत अधिक हो गई थी।

फोनोग्राफ और रेडियो के आविष्कार के शास्त्रीय संगीत को जनता तक पहुँचाने में सहायता दी। 1920 ईसवी में प्रथम बार अमेरिका में पीट्सबर्ग में रेडियो प्रसारण (Broadcasting) केन्द्र खोला गया। अगले दस वर्षों में ऐसे कई केन्द्र काम करने लगे और 1930 ईसवी तक देश के पचास प्रतिशत मकानों में रेडियो सेट लग चुके थे। 1950 ईसवी तक लगभग सभी अमेरिकी गृहों में कम से कम एक रेडियो सेट था। किन्तु शीघ्र ही टेलीविजन के आविष्कार ने रेडियो का महत्त्व कम कर दिया। 1950 से 1960 ईसवी के मध्य के प्रत्येक वर्ष में लाखों नये टेलीविजन अमेरिका में खरीदे गये। आज कल लगभग 90 प्रतिशत परिवारों के पास टेलीविजन हैं। रेडियो और टेलीविजन के द्वारा न केवल देश-विदेश की घटनाओं को उसी समय जाना व देखा जा सकता है वरन् उससे मनोरंजन भी प्राप्त किया जा सकता है। बीसवीं सदी में मनोरंजन का एक नवीन साधन चलचित्रों का प्रदर्शन है। प्रथम विश्व युद्ध के पहले अमेरिका में चलचित्रों का निर्माण आरम्भ हो गया था। आरम्भ में उनका उद्देश्य मनोरंजन करना ही था, किन्तु शीघ्र की कुछ ऐसे चलचित्रों का निर्माण भी किया जाने लगा जो कला की दृष्टि से भी उत्कृष्ट थे। हालीवुड चलचित्र व्यवसाय का अमेरिका में सबसे बड़ा केन्द्र है।

वैज्ञानिक प्रगति :

बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में अमेरिका में ज्ञान विज्ञान के क्षेत्र में भी अभूतपूर्व प्रगति की गई। विज्ञान के क्षेत्र में सबसे उल्लेखनीय प्रगति भौतिक शास्त्र में दिखलाई देती है। रोबर्ट मिल्लीकान (Robert Millikan), आर्थर काम्पटन (Arthur Compton), एर्नेस्ट लारेन्स (Ernest Lawrence) आदि विद्वानों के सफल प्रयोगों ने विश्व की कुल गतियों के आपस में सम्बन्धित रहने के सिद्धान्तों (Principles of Relativity) के विषय में ज्ञान की वृद्धि की। प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात् कई नई औषधियों का आविष्कार अमेरिका में किया गया। सरकार ने कम आमदनी

वाले मनुष्यों की चिकित्सा का भी समुचित प्रबन्ध किया, जिसके फलस्वरूप 1900 से 1949 ईसवी के मध्य अमेरिका में मरने वालों की संख्या में काफी कमी हो गई और एक मनुष्य की औसत आयु 22.9 से 30.1 वर्ष तक बढ़ गई।

आधुनिक युग का सबसे महत्त्वपूर्ण आविष्कार परमाणु शक्ति का प्रयोग है। 1942 ईसवी में शिकागो विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों को यूरेनियम में रेडियोधर्मिता (Radio Activity) होने का पता चला। शीघ्र ही अमेरिका ने परमाणु युग में प्रवेश किया। 1945 ईसवी में अमेरिकी हवाई जहाजों ने जापान में हिरोशिमा और नागासाकी में परमाणु बम गिरा कर उसे युद्ध में हार मानने के लिए बाध्य किया। परमाणु शक्ति का प्रयोग, शान्तिपूर्ण और निर्माणकारी कार्यों के लिए भी किया जाने लगा।

आध्यात्मिक चिन्तन :

गृह युद्ध के बाद लगभग बीस वर्षों तक अमेरिकी विद्वानों ने आध्यात्मिक चिन्तन में प्रतिभा का प्रदर्शन नहीं किया। परन्तु उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम दो दशकों में इस क्षेत्र में गम्भीर चिन्तन किया गया। हेगल के विचारों ने अमेरिकी विद्वानों का दृष्टिकोण बदल दिया। इस समय में अमेरिका में एक नयी विचारधारा का विकास हुआ। विलियम जेम्स (William James) ने 1890 ईसवी में प्रिंसिपल्स ऑफ साइकोलोजी (Principles of Psychology) नामक पुस्तक में "प्रेग्मैटिज्म" (Pragmatism) की विचारधारा को स्पष्ट किया। उसने विचार को क्रिया के अधीन बताया और यह कहा कि एक विचार को सदैव उसके व्यवहारिक मूल्य से तौलना चाहिए। वह परमात्मा में श्रद्धा रखते हुए भी उसकी सर्वज्ञता में विश्वास नहीं रखता था। उसके मत में मानव की प्रतिभा और कार्य प्रणाली पर ही एक कार्य का परिणाम निर्भर रहता है। उसके शिष्य जान डिवी (John Dewey) ने यह मत प्रतिपादित किया कि मनुष्य एक क्रिया द्वारा ही विचारों का विकास कर सकता है। दार्शनिक विचारधारा को प्राचीन मान्यताओं से मुक्त करा कर वह उसका लोकतन्त्रीकरण करने के पक्ष में था। बीसवीं शताब्दी की अमेरिकी दार्शनिक विचारधारा पर इन दो दार्शनिकों का गहन प्रभाव पड़ा।

गृह युद्ध के पश्चात् अमेरिका के धार्मिक विश्वासों पर डारविन (Darwin), विलियम जेम्स और डिवी के विचारों का प्रभाव पड़ा। बाइबिल में वर्णित चमत्कारिक कार्यों के प्रति अनेक पादरियों का विश्वास हटने लगा। ऐसे विचार रखने वाले मनुष्यों को आधुनिक (Modernists) और उनका विरोध करने वालों को सनातनी (Fundamentalists) कहा गया। धीरे-धीरे मोडर्निस्ट का प्रभाव कम होने लगा। 1880 ईसवी के बाद कुछ प्रोटेस्टेंट बिशपों ने एक नवीन सामाजिक सिद्धान्त (Social Gospel) का प्रचार किया। उनके अनुसार एक व्यक्ति के लिए नैतिकता का पालन करना ही पर्याप्त नहीं है। उसे समाज, राष्ट्र व पददलितों की सेवा भी करनी चाहिए। 1908 ईसवी में मेथोडिस्ट चर्च (Methodist Church) की राष्ट्रीय सभा ने समाज सेवा का कार्य आरम्भ किया।

आर्थिक विकास :

(i) कारण - हेनरी बेमफोर्ड पार्केस के अनुसार उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में अमेरिकी इतिहास की प्रमुख विशेषता आर्थिक विकास की तीव्र गति थी। आश्चर्यजनक औद्योगिक प्रगति के साथ-साथ कृषि उत्पादन में असाधारण वृद्धि में संयुक्त राष्ट्र अमेरिका को विश्व का सबसे धनी और शक्तिशाली देश बना दिया। उद्योग व कृषि के क्षेत्र में संयुक्त राज्य अमेरिका की उन्नति के निम्न कारण थे -

1. रूस को छोड़ कर अमेरिका में संसार के अन्य सभी राष्ट्रों से अधिक विशाल पैमाने पर विभिन्न प्रकार का कच्चा माल प्रचुर मात्रा में उपलब्ध था। आधुनिक युग में औद्योगिक क्रान्ति के मुख्य आधारों- कोयला, पेट्रोल और बिजली की प्रचुरता अमेरिका में थी। पैसिलवेनिया, पश्चिमी वर्जीनिया के पर्वतीय प्रदेश, इलिनोय, कैनसास, कोलारैडो और टैक्सास में कोयले के ऐसे भंडार है कि उनके बल पर सदियों तक अमेरिकी कारखानें चलाये जा सकते हैं। पैट्रोल के मामले में भी अमेरिका सम्पन्न है। लेक सुपिरियर के तट टैनेसी और कोलारैडो के प्रदेश में कच्चा लोहा प्रचुरता के साथ पाया जाता है। जल शक्ति का सबसे बड़ा भंडार प्रकृति ने अमेरिका को प्रदान किया है। जिसके बल पर वह 30 करोड़ की आबादी की औद्योगिक जरूरतें पूरी करने की सामर्थ्य रखता है। यद्यपि इन भौतिक साधनों का उपयोग 1850 ईसवी से अधिक मात्रा में होने लगा था, किन्तु वास्तविक प्रगति गृह युद्ध के बाद ही हुई।

2. अमेरिका में कृषि योग्य भूमि प्रचुर मात्रा में उपलब्ध थी। इस समय खेती के नये तरीकों, यातायात के विकास, आबादी में वृद्धि तथा सरकार व बैंकों द्वारा कृषक को वित्तीय सहायता देने की नीति के कारण अनाज के उत्पादन में वृद्धि हुई।

3. इस समय अमेरिका में पूँजी की अधिकता थी। गृह युद्ध के बाद उत्तर पूर्व के पूँजीपतियों ने नये -नये उद्योगों, सड़कों और रेलों के विकास तथा अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की वृद्धि में अपनी पूँजी लगाना आरम्भ किया, क्योंकि पश्चिम में प्रसार, सरकार की उदारनीति और वैज्ञानिक व तकनीकी ज्ञान के विकास के कारण उन्हें लाभ की असीमित सम्भावनाएँ दिखाई देने लगीं। उन्होंने अपने उद्योगों एवं व्यापारों के विकास के लिए सभी प्रकार के उचित व अनुचित तरीकों का प्रयोग किया। शीघ्र ही कुछ परिवार करोड़पति हो गये। इनमें से वेन्डरबिल्ट (Wenderbilt), कारनेगी (Carnegie), रोकफैलर (Rockfeller) और मोर्गन (Morgan) उल्लेखनीय हैं।

4. पश्चिमी की ओर इस काल में आरम्भ में तेजी के साथ प्रसार हुआ। डलेस (Dulles) के कथनानुसार उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में चालीस करोड़ एकड़ भूमि पर कब्जा कर लिया गया। सुदूर पश्चिम में खनिज पदार्थ निकाले गये, मवेशियों के लिए खुले मैदानों में बड़े-बड़े चारागाह बनाये गये और उपजाऊ भूमि पर विशाल पैमाने पर कृषि कार्य किया गया।

5. संयुक्त राज्य अमेरिका की सरकार ने उद्योग और कृषि के क्षेत्र में उदारवादी नीति अपनाई। गृह युद्ध में उत्तर के राज्यों की विजय के कारण सरकारी विभाग में व्यापारों को प्रोत्साहित करने के लिए समर्थकों का नियन्त्रण स्थापित करने के कारण सत्तारूढ़ रिपब्लिकन

दल ने संरक्षण की नीति को प्रश्रय दिया। पार्क्स के अनुसार सुप्रीम कोर्ट के कानूनों की इस प्रकार व्याख्या की कि फेडरेल तथा राज्य की सरकारों के लिए उद्योगपतियों पर प्रतिबन्ध लगाना कठिन हो गया।

6. यातायात का विकास इस युग में तीव्र गति के साथ हुआ। टेलीफोन, तार, बेतार के तार और बाद में विद्युत् आटोमोबाइल्स और हवाई जहाज के प्रयोग ने भी अमेरिका की समृद्धि में योग दिया।

(ii) रेल मार्गों का विकास - गृह युद्ध के बाद तीन दशकों को रेल-रोड़ युग कहा जा सकता है, क्योंकि इस काल में अमेरिका में बड़ी तेजी के साथ रेल का विकास हुआ। संयुक्त राज्य अमेरिका के पूर्वी प्रदशों को सुदूर पश्चिम के प्रदेशों से शीघ्र ही रेल मार्गों द्वारा जोड़ दिया गया। 1860 ईसवी में अमेरिका में केवल तीस हजार मील रेल पंक्तियाँ बिछी हुई थीं । गृह युद्ध के पश्चात् के आठ वर्षों में पैंतीस हजार मील में और रेल पंक्तियाँ बना दी गई थीं। 1873 ईसवी में व्याप्त साधारण आर्थिक मंदी के कारण रेल मार्गों के विस्तार की गति कुछ धीमी हुई किन्तु 1880 ईसवी से पुनः बड़ी तेजी से उनका विस्तार होने लगा। 1880 से 1890 तक सत्तर हजार मील लम्बे नये रेल मार्ग बनाये जा चुके थे। उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त में लगभग दो लाख मील के मार्गों में रेल चल रही थी। प्रथम महायुद्ध के आरम्भ होने के समय दो लाख पचास हजार मील तक इनका विस्तार हो चुका था। इसके पश्चात् रेल मार्गों का निर्माण लगभग बन्द हो गया। अनेक रेल मार्गों को आर्थिक दृष्टि से लाभदायक न मान कर उनका प्रयोग कम हो गया।

अमेरिका में रेल मार्गों के विकास में पूँजीपतियों का योगदान सराहनीय है। इनमें कोरनिलियस वेन्डरबिल्ट (Cornelius Venderbilt) अग्रणी है। 1862 से 1877 ईसवी तक उसने न्यू यार्क से शिकागो तक रेल मार्गों को बिछा दिया था। उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त तक उसकी कम्पनी उन्नीस राज्यों में रेलों का संचालन कर रही थी। पेनसिलवेनिया रेलरोड कम्पनी ने हेरिसबर्ग से पिट्सबर्ग तक रेल मार्गों का जाल बिछा दिया और और इस प्रकार उसने मध्य पूर्व अमेरिका और पूर्वी समुद्र तट को जोड़ दिया। ऐरिक रेलरोड कम्पनी ने न्यूयार्क से शिकागो तक माल ले जाने के काम का सफलतापूर्वक संचालन किया।

इस प्रकार शीघ्र ही देश के एक कोने से दूसरे कोने तक रेल मार्गों का विकास हो गया। उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त तक एक यात्री अमेरिका के एक कोने से दूसरे कोने तक एक या दो स्थान पर रेल बदल कर यात्रा कर सकता था। आरम्भ में रेल रोड़ कम्पनियों ने किराये की दरें अधिक रखीं, किन्तु शीघ्र ही उन्होंने सस्ती दरों पर यात्रियों व माल को ले जाना आरम्भ कर दिया। यात्रियों की सुविधा का भी ध्यान रखा गया। नये-नये आविष्कारों के कारण यात्रा कम समय में बिना खतरे के होने लगी। रेल मार्गों के विकास में पूँजीपतियों को सरकार ने प्रोत्साहित किया। कम्पनियों को रेल मार्गों के दोनों ओर भूमि दी गई। उन्हें निर्माण कार्यों के लिए संघ, राज्य एवं स्थानीय सरकारों ने ऋण दिये। अनेक करों से उन्हें मुक्त रखा गया। रेल-रोड़ कम्पनियों ने अनेक मामलों में सरकार की उदारता का लाभ उठाया। अनेक स्थानों पर उन्होंने किराये की दरें बढ़ा दी। भिन्न-भिन्न राज्यों की सरकारों ने इन कम्पनियों की अनियमितताओं को रोकने के लिए

पृथक् अधिनियम बनाये। 1886 ईसवी में सर्वोच्च न्यायालय ने इलिनोय में पास किये गये एक अधिनियम को इस आधार पर अवैध घोषित कर दिया कि रेल की दरों के निश्चत करने से अन्य राज्यों के व्यापार पर प्रभाव पड़ने के कारण एक राज्य इस सम्बन्ध में अपना अन्तिम फैसला नहीं दे सकता। इस निर्णय के आधार पर संघीय सरकार ने 1827 ईसवी में इन्टरस्टेट कॉमर्स अधिनियम (Inter State Commerce Act) बनाया। इस अधिनियम के नियमों का पालन कराने के लिए पाँच सदस्यों का एक आयोग नियुक्त किया गया। यह आयोग प्रभावशाली ढंग से कार्य नहीं कर सका, क्योंकि कम्पनियों के साथ हुए लगभग सभी झगडों में न्यायालयों में फैसला कराने में काफी विलम्ब हो जाता था।

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध और बीसवीं शताब्दी के आरम्भिक वर्षों में रेल मार्गों के विकास का अमेरिका के आर्थिक विकास में अत्यधिक महत्त्व है। उसने आर्थिक क्षेत्र की प्रत्येक गतिविधियों को प्रोत्साहित किया। देश के एक छोर से दूसरे छोर तक यातायात के विकास से व्यापार और व्यवसाय में उन्नति हुई। पश्चिम की ओर प्रसार तीव्र गति से हुआ और नये प्रदेशों के विकास में बहुत थोड़ा समय लगा। कृषि उत्पादन में वृद्धि के साथ-साथ औद्योगिक उत्पादन में भी वृद्धि हुई।

(iii) मोटर कारों के निर्माण में प्रगति - बीसवीं सदी के आरम्भ में मोटर कार के निर्माण ने यातायात के साधनों के विकास में अपना अभूतपूर्व योगदान दिया। यद्यपि यूरोप में गैसोलिन से संचालित कार का प्रयोग 1870 ईसवी से होने लगा, परन्तु इसका प्रचलन अमेरिका में 1890 ईसवी के बाद हुआ। नये-नये आविष्कारों की सहायता से फोर्ड मोटर कम्पनी व अन्य कम्पनियों ने साधारण जनता के लिए उचित दरों पर बड़ी संख्या में कार का निर्माण आरम्भ किया। 1915 ईसवी तक ढाई लाख कारें सड़कों पर दौड़ती रहीं। 1928 ईसवी तक दो करोड़ पैंतालीस लाख मोटरों का निर्माण हो चुका था और लगभग चालीस लाख व्यक्ति इस उद्योगों में काम कर रहे थे। इस समय तक संघ व प्रान्तों की सरकारें एक अरब डालर सड़कों के विकास में व्यय कर चुकी थी। फलस्वरूप रेल कम्पनियों को मोटर कम्पनियों की प्रतिद्वन्द्विता का सामना करना पड़ा। द्वितीय विश्व युद्ध के पहले और उसके पश्चात् मोटर कारों के निर्माण में असाधारण प्रगति हुई। पार्क्स के अनुसार बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में अमेरिकी जनता कार का इतना अधिक प्रयोग करने लगी कि उन्हें पहियों पर चलने वाला कहा जा सकता है।

(iv) हवाई जहाजों का निर्माण - प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात् हवाई जहाजों का प्रयोग यूरोप में बढ़ने लगा, किन्तु अमेरिका इस क्षेत्र में आरम्भ में उल्लेखनीय प्रगति नहीं कर सका। 1925 ईसवी में संघीय कांग्रेस ने ऐयर मेल अधिनयम (Air Mail Act) बना कर हवाई जहाज का निर्माण करने वाले उद्योगपतियों को आर्थिक सहायता देने का प्रबन्ध किया। 1927 ईसवी में चार्ल्स लिन्डनबर्ग की हवाई जहाज में अकेले एटलांटिक महासागर की सफलतापूर्वक यात्रा ने भी अमेरिकी जनता को हवाई जहाज में यात्रा करने के लिए प्रोत्साहित किया। द्वितीय महायुद्ध के

पहले और बाद के कुछ वर्षों में हवाई जहाज द्वारा अमेरिका के लगभग सभी स्थानों को जोड़ दिया गया। आजकल एक मनुष्य अमेरिका के किसी एक शहर से दूसरे शहर तक बहुत कम समय में तीव्र गति से चलने वाले हवाई जहाजों में सुविधाजनक यात्रा कर सकता है।

(v) सूती वस्त्र उद्योग – गृह युद्ध के बाद दक्षिणी राज्यों, विशेषकर उत्तरी व दक्षिणी कैरोलिना और जार्जिया में सूती वस्त्र उद्योग ने काफी उन्नति की। आरम्भ में छोटे पूँजीपतियों ने इसमें रुचि ली। उन्होंने अपने यहाँ ग्रामों से कृषक परिवारों के सदस्यों को श्रमिकों के रूप में भर्ती किया। उनका वेतन कम और समय के घंटे लम्बे थे। तीस प्रतिशत श्रमिक सोलह से कम की आयु के थे। लेकिन ये पूँजीवादी श्रमिकों के हित में कानून बनाये जाने के विरुद्ध थे, क्योंकि इससे उनका लाभ कम होता था और वे उत्तरी राज्यों की प्रतिस्पर्द्धा नहीं कर सकते थे। 1900 ईसवी तक ऐसी मिलों में चौदह लाख उन्नासी हजार डालर की पूँजी लगी हुई थी और वे न्यू इंग्लैण्ड से अधिक सूती वस्त्रों का उत्पादन कर रहे थे।

अन्य उद्योग –तकनीकी ज्ञान की निरन्तर वृद्धि के फलस्वरूप अनेक प्रकार के नये उद्योगों का भी विकास हुआ। कुछ पूँजीपतियों ने कृषि में काम में आने वाले यंत्रों का निर्माण आरम्भ किया। 1867 ईसवी में टाइपराइटर, 1868 ईसवी में एडिंग यंत्र (Adding Machine), 1897 ईसवी में नकद लेन देन के हिसाब का रजिस्टर आदि बनाने के उद्योग प्रारम्भ हुए। रेफ्रिजरेशन (Refrigeration) और कैनिंग (Canning) के विकास ने खान–पान की आदतों में परिवर्तन ला दिया। इस प्रकार कई अन्य उद्योग भी आरम्भ हुए। जहाँ 1860 ईसवी में संघीय सरकार ने छत्तीस हजार पेटेन्ट्स (Patents) स्वीकार किये थे वहाँ 1890 ईसवी में उनकी संख्या चार लाख चालीस हजार तक पहुँच गई थी।

यद्यपि उपर्युक्त उद्योग उस समय बड़े पैमाने पर विकसित नहीं हुए थे, किन्तु बीसवीं शती प्रारम्भ में धनी पूँजीपतियों अथवा निगमों ने अनेक उद्योगों में एकाधिकार प्राप्त कर लिया। शिकागों की मैक क्रोमिक हार्वेस्टर कम्पनी (Mc Cromic Harwester Company) ने कृषि यंत्रों में अपना एकाधिकार स्थापित कर लिया। 1890 ईसवी में स्थापित अमेरिकन तम्बाकू कम्पनी (American Tobacco Company) और 1891 ईसवी में गठित अमेरिकन शुगर रिफाईनिंग कम्पनी (American Sugar Refining Company) ने भी ऐसा ही किया। नमक, व्हिस्की, दियासलाई, पटाखे, तार आदि के व्यवसाय भी इस पद्धति के अन्तर्गत आ गये।

(vi) प्रथम विश्व युद्ध में प्रगति – प्रथम विश्व युद्ध के आरम्भ होने के थोड़े समय में ही अमेरिकन उद्योग ने शीघ्रतापूर्वक इंग्लैण्ड व फ्रांस की युद्ध की आवश्यकताओं के लिये स्वयं को सुसज्जित कर लिया। वह कपास, गेहूँ और मांस आदि इंग्लैंड व फ्रांस को भेजने लगा। फार्म उत्पादन पच्चीस प्रतिशत बढ़ा दिया गया। कोयले के उत्पादन में चालीस प्रतिशत की वृद्धि हुई। एक ही साल में अमेरिका ने तीस लाख टन जहाजों का निर्माण भी कर लिया।

मित्र राष्ट्रों को अरबों डालर की राशि ऋण में दी गई। इस प्रकार अमेरिका प्रथम विश्व युद्ध के बाद एक ऋणदाता के रूप में सामने आया।

(vii) प्रथम विश्व युद्ध के बाद की स्थिति - मित्र राष्ट्रों को दिये गये ऋणों की वसूली के लिये यह आवश्यक था कि अमेरिका उनसे माल खरीदे। वैसे भी औद्योगिक उत्पादन में कमी आ गई थी। अतएव सरकार ने जहाजरानी और उड्डयन कम्पनियों को, जो अमेरिकी माल लाया करती थीं, खुले दिल से सहायता की। युद्ध के दिनों में बने जहाजों को बहुत ही कम दामों पर निजी कम्पनियों को बेच दिया। लेकिन औद्योगिक स्थिति में विशेष सुधार नहीं हुआ और 1929 ईसवी में देश को मंदी का सामना करना पड़ा।

(viii) 'न्यू डील' के अन्तर्गत उद्योगों की सहायता - राष्ट्रीय औद्योगिक पुनर्विकास अधिनियम पारित करके एफ.डी. रूजवेल्ट ने उत्पादन, लागत और श्रम के घन्टों को निर्धारित किया। बेरोजगारों को काम दिया गया।

(ix) द्वितीय विश्व युद्ध में औद्योगिक प्रगति - यूरोप में युद्ध के आरम्भ होते ही अमेरिका की सरकार ने निर्माण उद्योग, कृषि, खनन, परिवहन, संचार, वित्त आदि गतिविधियों को सरकारी नियन्त्रण में ले लिया। शीघ्रता के साथ नये विशाल उद्योग खड़े कर दिये गये, खास पर मैग्नेशियम और नकली रबड़ के उद्योग। विमानों और पोतों का निर्माण असाधारण रूप से बढ़ा दिया गया। संघीय धन की विशाल राशियाँ युद्ध के लिए स्थापित कारखानों के निर्माण और विस्तार में लगाई गई। अनेक छोटे कारखाने भी खोले गये। विश्वविद्यालयों और औद्योगिक अनुसंधान प्रयोगशालाओं को सैंकड़ों नई तकनीकों एवं यंत्रों के विकास तथा आविष्कारों के लिये आदेश दिया गया। साथ ही उनकी उनकी सेवाएँ राडार, सोनार, प्राक्सिमिटी फ्यूज (Proximity Fuse) और परमाणु बम के विकास के काम में ली जाने लगी।

मजदूरों में बेरोजगारी सामाप्त हो गई। वे अब अतिरिक्त समय में काम कर रहे थे। हड़तालें बंद हो गई थी। सरकार, पूँजीपति, प्रवंधक एवं मजदूर मिल कर काम कर रहे थे। फलस्वरूप अमेरिकी उद्योगों ने उत्पादन के समस्त रिकार्ड तोड़ दिये।

जुलाई, 1940 ईसवी से लेकर अगस्त, 1945 ईसवी तक अमेरिकी कारखानों और जहाज निर्माण घटकों ने लगभग तीन लाख सैनिक विमानों, छियासी हजार टैंकों, तीस लाख मशीनगनों, सभी प्रकार के इकहत्तर हजार नौ सैनिक जहाजों, साढ़े पाँच करोड़ टन के व्यापारिक जहाजों का निर्माण किया। तेल, लकड़ी, इस्पात और एल्युमिनियम के उत्पादन में बहुत अधिक वृद्धि हुई। ट्रकों, रणस्थलीय टेलीफोनों, रबर के टायरों, राडारों आदि का उत्पादन इतना था कि अमरिका की आवश्यकता पूरी करने के बाद ब्रिटेन की और कुछ हद तक रूस की आवश्यकताएँ पूरी हो जाती थीं।

विमानों के निर्माण में भी लगातार वृद्धि हुई। 1944 ईसवी के वर्ष में छियानवे हजार विमान बनाये गये।

कृषकों ने भी युद्ध के वर्षों में खूब उत्पादन किया। 1939 और 1944 ईसवी के बीच कृषि उत्पादन में पच्चीस प्रतिशत की वृद्धि हो गई। पशुओं और सुअरों की संख्या भी काफी बढ़ी।

उद्योगों में असाधारण प्रगति :

(i) इस्पात व कोयले के उत्पादन में वृद्धि - यद्यपि गृह युद्ध के पहले ही अमेरिका में औद्योगिक क्रान्ति का आरम्भ हो चुका था। किन्तु उसकी गति बहुत धीमी थी। 1860 ईसवी में अमेरिका की अधिकांश जनता कृषि पर आधारित थी और छोटे कारखानों में उत्पादन केवल उत्तर पश्चिम के राज्यों तक ही सीमित था। जैसे कि पहले ही बताया जा चुका है। अनेक कारणों से गृह युद्ध के बाद औद्योगिक विकास अत्यन्त तीव्र गति के साथ हुआ। व्यवसायिक प्रगति के लिए आवश्यक तीन प्रमुख खनिज पदार्थ-कोयला, लोहा और तेल-के उत्पादन में आश्चर्यजनक उन्नति की गई। उन्नीसवीं सदी के अन्तिम चालीस वर्षों में कोयले का उत्पादन एक करोड़ साठ लाख टन से बढ़कर छब्बीस करोड़ टन हो गया। कोयले के उत्पादन में इस वृद्धि का कारण पेनसिलवेनिया, अपालेशियन (Appalachian) के पठार और मध्य पश्चिमी अमेरिका में कायले की नयी खानों का आरम्भ होना था। गृह युद्ध के बाद पेनसिलवेनिया के अतिरिक्त लेक सुपिरियर और मिनिसोटा (Minnesota) में भी लोहे की खानों से उत्पादन आरम्भ हुआ। 1860 ईसवी में लोहे का उत्पादन आठ लाख टन था। इसमें से इस्पात बहुत ही कम मात्रा में बनाया जाता था। 1900 ईसवी तक अमेरिका में एक करोड़ चौदह लाख टन लोहा खानों से प्रतिवर्ष निकाला जाता था । जिसमें से 1 लाख 11 टन इस्पात बनाया जाता था। इस क्षेत्र में कार्नेगी (Carnegie) द्वारा स्थापित यू.एस. स्टील कारपोरेशन का कार्य उल्लेखनीय है। सबसे पहले पेनसिलवेनिया में ड्रेक ने खनिज तेल को निकालने का कार्य प्रारम्भ किया था, किन्तु वह इसका सफलतावूक संचालन नहीं कर सका। गृह युद्ध के बाद रोकफेलर (Rockfeller) ने स्टेंडर्ड आईल कम्पनी का संगठन कर नवीन तरीकों से क्लीवलैंड में यह कार्य आरम्भ किया। उसे अपने कार्य में असाधारण सफलता मिली और शीघ्र ही देश में आन्तरिक आवश्यकताओं से अधिक तेल का उत्पादन होने लगा।

(ii) उद्योगों में विद्युत शक्ति का प्रयोग -इस युग की एक अन्य विशेषता फैक्टरियों, रेल-इंजिनों व घरों में रोशनी के लिए विद्युत शक्ति का प्रयोग था। इंगलैण्ड में फैरेडे (Fareday) और अमेरिका में जोसेफ हेनरी (Joseph Henery) व एडीसन (Edison) के आविष्कारों के बाद 1882 ईसवी में न्यू यार्क में प्रथम बार एडीसन इलेक्ट्रिक कम्पनी ने विद्युत शक्ति का उत्पादन कर शहर में रोशनी का प्रबन्ध किया। शीघ्र ही कारखानों और रेल इंजिनों का संचालन विद्युत शक्ति से होने लगा। एलेक्जेंडर ग्राहम बेल (Alexander Graham Bell) ने 1876 ईसवी में टेलीफोन के आविष्कार में विद्युत शक्ति का प्रयोग किया 1900 से 1950 ईसवी तक अमेरिका में क्रमश: 13,55,900 और 40,000,000 टेलीफोन लग चुके थे। इसी प्रकार तार का प्रयोग भी बढ़ गया था। बीसवीं सदी में विद्युत शक्ति के प्रयोग में असाधारण वृद्धि हुई। 1940 ईसवी तक टैनेसी घाटी में विशाल बाँध का निर्माण हो चुका था जिससे काफी मात्रा में विद्युत शक्ति उपलब्ध की जाने लगी। राष्ट्रपति फ्रेंकलीन डी. रूजवेल्ट ने "ग्रामीण विद्युत प्रशासन संगठन" (Rural Electric Administration Organisation) बना कर देश के विभिन्न भागों के गाँवों में बिजली की रोशनी का प्रबन्ध किया। बड़े और छोटे उद्योगों में भी विद्युत शक्ति का प्रयोग होने लगा।

(iii) कारखानों में विशाल पैमाने पर उत्पादन तथा निगमों का गठन - गृह युद्ध के पश्चात् खानों व कारखानों में विशाल पैमाने पर उत्पादन तथा रेल मार्गों के विस्तार के लिए यह आवश्यक हो गया कि छोटे-छोटे औद्योगिक संस्थानों, जिनका स्वामित्व एक या दो व कुछ अधिक व्यक्तियों के पास था, के स्थान पर ऐसे व्यापारिक व औद्योगिक प्रतिष्ठान स्थापित किये जायें जिनमें अनेक व्यक्तियों की पूँजी लगी हो। अतएव इस काल में अमेरिका में कारपोरेशन (Corporation) स्थापित किये गये। इन संस्थानों को सरकार ने एक विशिष्ट उद्योग को चलाने के एकाधिकार प्रदान किये। 1890 ईसवी तक ऐसे कारपोरेशन अमेरिका के तीन-चौथाई माल का उत्पादन करते थे। कारनेगी, रोकफेलर, वेन्टरबिल्ट आदि पूँजीपति इस प्रकार की कम्पनियाँ स्थापित करने में अग्रणी थे। उन्होंने अपने कार्य क्षेत्र में काम करने वाले अनेक कम्पनियों का एक संगठन बनाकर ट्रस्ट (Trust) स्थापित किये। यद्यपि इस प्रकार की व्यवस्था से औद्योगिक उत्पादन में वृद्धि हुई, किन्तु जनता को इससे विशेष लाभ नहीं हुआ, क्योंकि वे माल कम्पनियों द्वारा निर्धारित मूल्य पर खरीदने पर विवश थे। कम पूँजी वाले व्यापारी भी नुकसान में रहते थे। अतएव इन्होंने कारपोरेशनों के एकाधिकारों का विरोध किया। 1880 ईसवी के अधिनियम के लागू होने के बाद अनेक प्रान्तों की सरकारों ने ट्रस्ट विरोधी कानून (Anti Trust Laws) बनाये, किन्तु अन्य प्रान्तों में इस प्रकार के अधिनियम न बनाये जाने पर इन्हें प्रभावशाली ढंग से लागू नहीं किया जा सका। अंत में संघीय कांग्रेस ने 1890 ईसवी में शरमन एण्टी ट्रस्ट अधिनियम पारित किया। इस अधिनियम के अनुसार ट्रस्टों के संगठन व उनके द्वारा अन्तर्देशीय अथवा विदेशी व्यापार पर एकाधिकर स्थापित कर उस पर नियन्त्रण करने की कार्यवाही को अवैध घोषित किया। इंटरस्टेट कॉमर्स अधिनियम (Inter State Commerce Act) की भाँति यह अधिनियम भी अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में सीमित सफलता प्राप्त कर सका। इस अधिनियम की धाराओं की भाषा इतनी पेचीदा थी कि सरकार पूँजीपतियों व उनके संगठनों के विरुद्ध कोई ठोस कार्यवाही नहीं कर सकी। 1891 से 1901 ईसवी तक सर्वोच्च न्यायालय ने संघीय सरकार द्वारा पेश किये गये अट्ठारह मामलों में से केवल दस में उसके पक्ष में फैसला दिया। निजी व्यक्तियों द्वारा इस अवधि में दायर किये गये बाईस मुकदमों में केवल तीन उनके पक्ष में रहे। अतएव कारपोरेशन एवं ट्रस्ट की संख्या में वृद्धि होती रही। 1929 ईसवी में अमेरिका में दस लाख डालर वार्षिक आमदनी वाले एक हजार तीन सौ उनचास व्यापारिक प्रतिष्ठान कार्य कर रहे थे। लघु पूँजी वाली चार लाख पचपन हजार व्यापारिक संस्थाओं की वार्षिक आय समस्त कारपोरेशनों की आय का केवल बीस प्रतिशत थी। इस समय में एक ही उद्योग में बड़े कार्य करने वाले अनेक व्यापारिक प्रतिष्ठान विक्रय दर के मामले में सहयोग की भावना से काम लेते थे। द्वितीय विश्व युद्ध के पहले ऐसी कम्पनियों का भी संगठन किया गया जिनमें भागीदारी की संख्या एक लाख से लेकर छः लाख तक होती थी। अमेरिकी टेलीफोन और टेलीग्राम कारपोरेशन के भागीदारों की संख्या 1930 ईसवी में पाँच लाख सत्तर हजार थी। ऐसी संस्थाओं का प्रबन्ध उच्च वेतन पाने वाले मैनेजर करते थे।

श्रमिक संगठनों का गठन व सरकार का उनके प्रति दृष्टिकोण :

उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध और बीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध में अमेरिका में कृषि व उद्योग के क्षेत्र में तीव्र गति के साथ असाधारण प्रगति ने अनेक प्रकार की नवीन समस्याएँ उत्पन्न कर दीं, इनमें सबसे अधिक उल्लेखनीय समस्या कारखानों व कृषि के बड़े-बड़े फार्मों में कार्य करने वाले श्रमिकों के वेतन और सुविधाओं के सम्बन्ध में थी। जब श्रमिकों ने यह अनुभव किया कि पूँजीपति उनकी दशा सुधारने पर विशेष ध्यान नहीं दे रहे हैं तो उन्होंने अपने संगठन बनाकर आन्दोलनात्मक तरीके अपनाये। 1870 ईसवी तक तीस प्रमुख उद्योगों में राष्ट्रीय स्तर पर श्रमिक संघों का संगठन किया जा चुका था। विलियम एच. सिलविस (William H. Sylvis) द्वारा 1867 ईसवी में संगठित राष्ट्रीय श्रमिक संघ के सदस्यों की संख्या 1868 ईसवी में छह लाख थी। यह संख्या 1872 ईसवी में छिन्न-भिन्न हो गई। इसी प्रकार एक अन्य संस्था नाईट्स ऑफ लेबर (Knights of Labour) भी असफल रही। 1886 ईसवी में संगठित अमेरिकन फेडरेशन ऑफ लेबर (American Federation of Labour) ने सेम्युअल ग्रोम्पर्स (Samuel Grompers) के नेतृत्व में श्रमिकों को संगठित करने व उनकी माँगों को मनवाने में सफलता प्राप्त की। 1880 व 1890 ईसवी के मध्य कई कारखानों में हड़ताल व तालेबन्दी हुई। ऐसी घटनाओं के समय हिंसात्मक तरीके भी अपनाये गये। श्रमिक संघों ने संघ व राज्य के न्यायालयों में अपने अधिकारों के लिए मुकद्दमे दायर किये, किन्तु उन्हें अपने इन प्रयत्नों में विशेष सफलता नहीं मिली। सरकार की नीति भी पूँजीपतियों के समर्थन में थी।

बीसवीं सदी के आरम्भ में श्रमिकों के प्रति नीति में सरकार ने उदारवादी दृष्टिकोण अपनाना प्रारम्भ किया। 1902 ईसवी में कोयले की खदानों के श्रमिकों ने जब अपनी माँगों के समर्थन में हड़ताल की तो राष्ट्रपति थियोडोर रूजवेल्ट ने हस्तक्षेप कर उद्योगपतियों को समझौता करने के लिए बाध्य किया। उसके राष्ट्रपतित्व काल में विभिन्न राज्यों ने श्रमिकों की दशा सुधारने के लिए कई अधिनियम बनाये। 1905 ईसवी में अमेरिका में इण्डस्ट्रियल वर्कर्स ऑफ दी वर्ल्ड (Industrial Workers of the World) नामक एक नवीन श्रमिक संघ स्थापित हुआ। प्रथम विश्व युद्ध के पहले उसके नेतृत्व में अनेक सफल हड़तालें की गईं। 1914 ईसवी में संघीय सरकार द्वारा बनाया गया क्लेटन अधिनियम (Clayton Act) श्रमिक संघों के हित में था। उसने श्रमिकों के शांतिपूर्ण ढंग से की गई हड़ताल व बहिष्कारों को उचित माना। राष्ट्रपति टैफ्ट के समय संघीय सरकार द्वारा खोले गये नये श्रम विभाग में विल्सन ने सचिव पद पर मजदूरों के प्रतिनिधि को नियुक्त कर श्रमिकों की प्रशंसा प्राप्त की।

प्रथम विश्व युद्ध में श्रमिकों ने अपनी माँगों को मनवाने में और सफलताएँ प्राप्त कीं। 1916 ईसवी में रेलवे के कर्मचारियों ने राष्ट्रव्यापी हड़ताल की चेतावनी देकर संघीय सरकार से एडम्स अधिनियम (Adams Act) पारित कराया। इसके अनुसार श्रमिकों के कार्य के घंटे 10 के बदले आठ तथा सप्ताह में एक अवकाश देना निश्चित किया गया।

1919 ईसवी में युद्ध समाप्त होने के तुरन्त बाद अमेरिका में उत्पादन कम होने लगा, क्योंकि अब युद्धकालीन आवश्यकताएँ समाप्त हो गई थीं। उद्योगपतियों ने श्रमिकों को नौकरी से हटाने

के अतिरिक्त उनके वेतन में भी कमी कर दी। इन कार्यों की तीव्र प्रतिक्रिया हुई। इस वर्ष लगभग चार हजार हड़तालें हुईं जिनमें बीस प्रतिशत अमेरिकी मजदूरों ने भाग लिया। इनमें से कई हड़तालें असफल रही।

अगले वर्ष श्रमिकों की दशा में पुनः सुधार हुआ, क्योंकि अमेरिका में इस समय में उद्योग के क्षेत्र में पुनः सभृद्धि (Boom) का युग आ गया था। उद्योगपति भी यह समझ गये थे कि मजदूरों को प्रसन्न रखने में उनका हित है। उन्होंने श्रमिकों के वेतन में वृद्धि की और उन्हें बोनस भी देना आरम्भ किया। श्रमिकों को अन्य सुविधाएँ भी दी गई। फलस्वरूप श्रमिक संघों की सदस्यता कम हो गई और अगले दस वर्षों में हड़तालें भी बहुत कम हुई। 1926 ईसवी में सरकार ने रेलवे लेबर एक्ट (Railway Labour Act) पास कर उद्योगपतियों व श्रमिकों के बीच मतभेदों का निर्णय करने के लिए एक स्थायी मध्यस्थता बोर्ड का संगठन किया।

1929 ईसवी में विश्व के महान् आर्थिक संकट का प्रभाव अमेरिका पर भी हुआ। इससे सहस्त्रों की संख्या में या तो श्रमिक बेकार हो गये अथवा उनका वेतन कम कर दिया गया। फ्रेंकलिन रूजवेल्ट ने अपने कार्यक्रम न्यू डील (New Deal) में श्रमिकों की बेकारी मिटाने और उन्हें उचित वेतन दिलवाने के लिए नेशनल इण्डस्ट्रियल रिकवरी एक्ट (National Industrial Recovery Act) पारित किया। यह अधिनियम वेगनर एक्ट (Wagner Act) के नाम से भी प्रसिद्ध है। अनेक पूँजीपतियों ने सरकारी हस्तक्षेप का विरोध किया । किन्तु कुछ ही समय में स्थिति में सुधार होने लगा। 1937 ईसवी में एक श्रमिक का औसत वेतन 1921 ईसवी के मुकाबले में दस प्रतिशत अधिक था और वह कम घंटे काम करता था। 1942 ईसवी में रूजवेल्ट ने नेशनल वार लेबर बोर्ड (National War Labour Board) बनाकर उसे यह अधिकार दिये कि वह उद्योगपतियों और श्रमिकों के झगड़ों को सुलझाये। यद्यपि उस वर्ष में श्रमिकों ने सरकार को सहयोग प्रदान किये, किन्तु अगले वर्ष जान एल. लिविस (John L. Lewis) के नेतृत्व में खानों में काम करने वाले लगभग पचास हजार श्रमिकों ने हड़ताल कर दी। राष्ट्रपति रूजवेल्ट द्वारा निषेधाधिकार के प्रयोग करने पर भी कांग्रेस ने कॉनाली स्मिथ एंटी स्ट्राइक एक्ट (Conally Smith Anti Strike Act) पारित किया। इसके अनुसार किसी भी सरकारी प्रतिष्ठान में हड़ताल व तालेबन्दी को प्रोत्साहन देने वाले व्यक्ति पर जुर्माना किया जा सकता था अथवा उसे सजा दी जा सकती थी। निजी प्रतिष्ठानों में कार्य करने वाले श्रमिकों को हड़ताल करने के लिए पूँजीपति को तीस दिन का नोटिस देना आवश्यक कर दिया गया।

द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति ने पुनः शांति के समय की स्थिति ला दी। उद्योगपतियों ने युद्ध काल में बढ़ाये गये वेतनों में कमी की। इसका विरोध श्रमिक संघों ने किया। मोटरकार, इस्पात, खनिज, पेट्रोल व अन्य प्रमुख उद्योगों में 1946 ईसवी में लगभग डेढ़ लाख श्रमिकों ने हड़ताल की। सरकार ने हस्तक्षेप कर दोनों में समझौता कराया। पूँजीपतियों को पुनः श्रमिकों का वेतन बढ़ाना पड़ा। किन्तु इस वेतन वृद्धि से उन्हें कम लाभ हुआ, क्योंकि वस्तुओं की कीमतों में लगातार वृद्धि हो रही थी, फिर भी यह कहा जा सकता है कि अमेरिका में भी श्रमिकों में बेकारी बहुत कम थी और उनका जीवन स्तर द्वितीय विश्व युद्ध के पहले की अपेक्षा ऊँचा था।

1947 ईसवी में संघीय सरकार ने वेगनर एक्ट के स्थान पर टैफ्ट-हाटले एक्ट (Taft-Hartley Act) पारित किया। यद्यपि इसमें श्रमिकों के सामूहिक रूप से अपनी माँगों के समर्थन में कार्य करने के अधिकार को पुन: मान्यता प्रदान की गई, किन्तु यह अनिवार्य कर दिया गया कि हड़ताल या तालेबन्दी के लिए साठ दिन का नोटिस हो। सरकार द्वारा नियुक्त बोर्ड को यह अधिकार दिया गया कि वह उद्योगपतियों अथवा श्रमिक संगठनों की अवैध कार्यवाहियों को रोक सके। सभी श्रमिक संगठनों को अपने संविधान, पदाधिकारियों की सूची और अन्य सूचनाएँ समय-समय पर श्रम विभाग को देना अनिवार्य कर दिया गया। यह भी नियम बनाया गया कि संघों ने पदाधिकारी साम्यवादी न होने की शपथ लें। इस अधिनियम का श्रमिकों ने विरोध किया। यद्यपि ट्रूमैन ने 1948 ईसवी के चुनाव अभियान में इसे समाप्त करने के समर्थन में मत प्रकट किया, किन्तु वे इसे रद्द अथवा संशोधित करने में सफलता प्राप्त नहीं कर सके। अमेरिका में साम्यवादी विचारधारा के प्रसार का भय इसका मूल कारण था।

कृषि उत्पादन में वृद्धि :

गृह युद्ध के पश्चात् कृषि के उत्पादन में भी असाधारण वृद्धि हुई। संयुक्त राज्य अमेरिका के विभिन्न राज्यों में जलवायु व आवश्यकताओं के अनुसार गेहूँ, कपास, फल व सब्जी की विशाल पैमाने पर नये तरीके से खेती की गई। इस समय में पश्चिम की ओर प्रसार के कारण लाखों एकड़ नई भूमि खेती योग्य बनाई गई। 1850 ईसवी में 290,000,000 एकड़ भूमि के 1,500,000 फार्मों में से आधी भूमि पर खेती की जाती थी। 1900 ईसवी में फार्मों की संख्या 5,700,000 थी तथा इनकी 840,000,000 एकड़ भूमि में से 414,000,000 एकड़ भूमि पर खेती होती थी। इन पचास वर्षों में गेहूँ के उत्पादन में छ: गुना तथा अन्य प्रकार के अनाज के उत्पादन में पाँच गुना वृद्धि हो चुकी थी।

कृषकों में असन्तोष एवं पापुलिस्ट आन्दोलन :

दक्षिणी राज्यों के कृषकों में अपनी दशा के प्रति काफी समय से असन्तोष व्याप्त था। इसके कई कारण थे -

कृषकों में असन्तोष के कारण - दक्षिण के राज्यों की अधिकांश जनता कपास की खेती करती थी। यद्यपि गृह युद्ध के पश्चात् कपास व अन्य कृषि उत्पादन में वृद्धि हुई लेकिन इनका वास्तविक लाभ कृषक नहीं उठा सके। कपास व अन्न के अधिक उत्पादन के कारण उनकी कीमतें गिरने लगीं। अनाज व कपास के व्यापारी और सट्टेबाजों की हलचलों के कारण उन्हें अपनी उपज का उचित मूल्य नहीं मिल पाता था। रेल कम्पनियाँ अनाज एवं कपास को दूसरे प्रदेशों में ले जाने के लिए ऊँचे दर पर भाड़ा माँगते थे। जिसे वहन करना कृषकों के लिए हितकर नहीं था। अत: दक्षिणी राज्यों के ग्रामीण इलाकों में गरीबी बनी रही।

गृह युद्ध में दक्षिण के राज्यों का विनाश हो गया था। उत्तरी राज्यों के उद्योगपति और वित्तीय संस्थानें इस स्थिति का लाभ उठा रही थीं। ऐसी परिस्थिति में वहाँ के कृषकों की दशा में सुधार नहीं हो पाया था।

दक्षिण के राज्यों में दास प्रथा के उन्मूलन के समय में काफी समय तक विवाद बना रहा। दासों की मुक्ति के फलस्वरूप उनकी कृषि पनप नहीं सकी, क्योंकि काफी समय से वे दासों की सहायता से खेती कर रहे थे।

दक्षिण के कृषक कपास की खेती पर ही निर्भर रहना चाहते थे। उन्होंने अन्न आदि अन्य फसलों के उत्पादन को शीघ्र नहीं अपनाया, क्योंकि उन्हें कपास की कीमत उचित मात्रा में नहीं मिल पाती थी, अतएव वे पनप न सके।

पार्क्स के अनुसार इन राज्यों में भूमि की उर्वरता में भी कमी आ गई थी। फलस्वरूप कपास की उपज कम हो गई थी।

यद्यपि गृह युद्ध के पश्चात् अमेरिका में तेजी के साथ हुए औद्योगिक विकास के कारण एक व्यक्ति की आय (Per Capita Income) एक हजार एक सौ पैंसठ डालर थी, किन्तु दक्षिण के निवासियों की यह आय केवल पाँच सौ नौ डालर थी। दक्षिण के निवासी, विशेषकर किसान गरीबी में जीवन व्यतीत कर रहे थे। वे अनेक प्रकार की बीमारियों के शिकार हो रहे थे और उनमें शिक्षा का भी पर्याप्त विकास नहीं हुआ था। यहाँ के अनेक कृषक ऋणग्रस्त भी हो गये थे। उन्होंने अपनी भूमि बेच दी थी तथा वे बेरोजगार हो गये थे।

कृषकों के हित में आन्दोलन करने वाली संस्थाओं का उदय :

कृषकों में बढ़ते हुए असन्तोष को दूर करने के लिए उनकी दशा में सुधार लाना आवश्यक था। गृह युद्ध के थोड़े समय बाद पश्चिम और मध्य पश्चिम राज्यों में औलिवर एच. कैली (Oliwer H. Kelly) द्वारा स्थापित संस्था ग्रेंजर्स (Grangers) ने कृषकों के हित में कार्य करना शुरू किया। 1874 ईसवी में इस संस्था के सदस्यों की संख्या लगभग सात लाख पचास हजार थी। इसकी शाखाएँ अनेक स्थानों पर फैली हुई थी। इन्होंने कृषकों को उचित दरों पर बीज व यंत्र देने तथा उनकी उपज का उचित मूल्य दिलाने का प्रबन्ध किया। उनके सदस्यों ने कुछ राज्यों के चुनावों में भी सफलता प्राप्त की तथा वहाँ पर रेलों के भाड़े की दरों को सीमित करने के लिए भी कानून पारित कराये। ऐसे कानून ग्रेंजर्स अधिनियम (Gangers Law) के नाम से प्रसिद्ध हुए। ग्रेंजर्स ने संघीय राजनीति में भी भाग लिया। 1887 ईसवी के इन्टर स्टेट कॉमर्स अधिनियम को पास कराने में इस संस्था का भी हाथ था।

1880 से 1890 ईसवी के दशक में ग्रेंजर्स की लोकप्रियता कम होने लगी। उसका स्थान कृषकों की मेल-मिलाप संस्था (Farmer's Alliance) ने ले लिया। अनेक राज्यों के चुनावों में इसके प्रतिनिधियों को सफलता मिली। 1890 ईसवी में इस संस्था के नौ प्रतिनिधि संघीय कांग्रेस के चुनाव में जीत गये। यह संस्था कई बातों में पहले के ग्रेंजर्स के समान थी इसने विस्तृत शैक्षणिक कार्यक्रम बनाये। कृषि विकास सम्बन्धी पुस्तकों को वितरित किया। समाचार पत्र प्रकाशित किए तथा कृषकों के हितकारी कानूनों के लिए प्रचारक भेजे और क्लब स्थापित किये। सहकारी क्रय, बिक्री और माल गोदामों की व्यवस्था को तथा फसलों के बीमा का उत्तरदायित्व लिया।

पापुलिस्ट दल का गठन :

इसी समय देश के अनेक राज्यों के कृषक संघों ने एक नवीन राजनीतिक दल बनाया। एलेन नेविन्स और कोमेजर के अनुसार 1890 के बाद के वर्षों में इस दल के नेतृत्व में हो रहा विद्रोह मैदानों और कपास-भूमि पर छा गया। मई, 1991 ईसवी में सिनसेनाटी (Cincenate) में आयोजित एक अधिवेशन में इसका नाम पिपुल्स पार्टी (People's Party) रखा तथा इसके अनुयायी पापुलिस्ट (Populist) कहलाये।

पापुलिस्ट दल के कार्यक्रम :

आरम्भ से ही इस दल ने अपना एक कार्यक्रम बनाया। रेल मार्गों, तार व टेलीफोन सेवाओं पर सरकार का स्वामित्व, राष्ट्रीय बैंको की समाप्ति,भूमि पर गैर किसान के स्वामित्व का न होना, तट कर में कमी और किसानों के लिए सरल ऋण व्यवस्था के हेतु एक उपकोष का निर्माण, मुद्रा स्फिति पर नियन्त्रण, आयकर का उचित प्रबन्ध उनके कार्यक्रम के मुख्य अंग थे। वे चाहते थे कि संघीय सरकार प्रत्येक कृषि तहसील में गोदामों का निर्माण करे। जहाँ किसान अपनी उपज संचित कर सके और इसके बदले में उपज के बाजार मूल्य का अस्सी प्रतिशत प्रमाण पत्र के रूप में प्राप्त कर सके। वे सरकार से यह अनुरोध करते थे कि सड़कों, स्कूलों और अन्य सुविधाओं पर अधिक व्यय किया जाये।

इस दल के राजनीतिक उद्देश्य भी थे। इनके नेताओं ने अपने जोशीले भाषणों में इनको स्पष्ट किया। मेरी लीज़ (Mary Liege) नामक एक नेता ने कहा कि "यह सरकार अब जनता की, जनता द्वारा और जनता के लिये नहीं रही, वरन् वाल स्ट्रीट (Wall Street) द्वारा और वाल स्ट्रीट के लिए है।" उनके मत में अमेरिका के कानून एक ऐसी प्रणाली की देन है, जो बदमाशों को भव्य वस्त्रों में अलंकृत करती है और ईमानदारों को चिथड़ों में। वे बदमाशों और धनी व्यक्तियों के स्थान पर चाहते थे कि किसानों का प्रभुत्व हो। ऐलेन नेविन्स और कोमेजर के अनुसार इस दल ने किसानों का एक नया घोषणा पत्र स्वीकार किया। वे ऐसे सुधार चाहते थे जिससे कि सत्ता कुछ गिने चुने राजनीतिज्ञों के हाथ से निकलकर जनता के हाथ में आ जाये।

इस आन्दोलन को एक प्रत्यक्षदर्शी ने आर्थिक पुनर्जागरण, धर्मयुद्ध और राजनीति का भव्य उत्सव बताया। वे किसानों की आर्थिक दशा को सुधारना चाहते थे, देश की राजनीतिक सुधार की आवश्यकता पर जोर देते थे और इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए उन्होंने धर्म युद्धों की तरह जोश में आकर काम किया। पार्क्स के अनुसार पापुलिस्टवाद वास्तव में कृषकों के प्रजातन्त्र जो कि जैफरसन और जैक्सन के प्रजान्तत्र का आधार थी, की पुनर्स्थापना का कार्यक्रम था।

चुनावों में भाग :

पार्क्स के अनुसार यद्यपि इस दल को दक्षिण के राज्यों में भी समर्थन मिला, किन्तु पश्चिम के क्षेत्र में यह अधिक लोकप्रिय हुआ। 1890 के राज्यों के चुनावों में उसने भाग लिया। इसके प्रतिनिधियों ने दक्षिण के राज्यों में अनेक विजयें प्राप्त कीं। 1892 ईसवी में पहली बार पापुलिस्ट

दल ने राष्ट्रपति पद के चुनाव के लिए अपना प्रतिनिधि मनोनीत किया। इस उम्मीदवार का नाम जेम्स विवर (James Weaver) था। चुनाव आन्दोलन में दल ने रिपब्लिकन और डेमोक्रेटों के कार्यक्रमों की तीव्र आलोचना की। कृषकों की दशा सुधारने पर जोर दिया तथा आर्थिक सुधारों की समस्याओं को सबसे महत्त्वपूर्ण बताया। इस चुनाव में डेमोक्रेट दल के उम्मीदवार क्लीवलैंड की विजय हुई। लेकिन पापुलिस्ट दल के बारह सदस्य कांग्रेस में चुन लिये गये तथा उसे दस लाख से भी अधिक मत प्राप्त हुए।

यद्यपि पापुलिस्ट दल ने दक्षिण के कुछ राज्यों के चुनावों में कुछ सफलताएँ हासिल की थी लेकिन कुल मिलाकर उनकी उपलब्धियाँ कुल मिला कर साधारण रही। पार्क्स के अनुसार इसका मुख्य कारण नीग्रो लोगों की समस्या थी। इसके फलस्वरूप पापुलिस्ट दल ने इन प्रदेशों में अपने मुख्य उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए ठोस कार्य न कर श्वेतांगों की सत्ता के लिए काम किया।

1896 ईसवी के चुनाव में इस दल ने राष्ट्रपति पद के लिए अपना उम्मीदवार न खड़ा करके रिपब्लिकन दल द्वारा मनोनीत ब्रायन को इस शर्त पर समर्थन दिया कि उनका प्रतिनिधि टॉम वाटसन उपराष्ट्रपति पद के लिए मनोनीत किया जायेगा। उसका यह निर्णय दल के लिए घातक सिद्ध हुआ, क्योंकि इससे जनता में यह भावना पैदा हुई कि उनके दल में राष्ट्रपति पद के लिए कोई योग्य नेता नहीं है। इस चुनाव में रिपब्लिकन दल की विजय हुई।

पापुलिस्ट दल की उपलिब्धयाँ :

(i) मुद्रा स्फीति पर नियन्त्रण - उस समय कृषकों में यह विश्वास था कि कृषि उत्पादन के मूल्यों के गिरने का मुख्य कारण गृह युद्ध के बाद संघीय सरकार की नीति थी। ब्लांड-एलीसन और शरमन चाँदी क्रय अधिनियमों द्वारा इस समस्या का आर्थिक हल नहीं हो पाया था। वे चाहते थे कि कागजी मुद्रा अथवा चाँदी के सिक्कों का पूर्व के अनुपात में अधिक प्रचलन किया जिससे कि उन्हें अपनी उपज की उचित कीमतें मिल सके। उन्होंने स्वर्ण मान को बनाये रखना अपने हितों के विरुद्ध बताया तथा इसे पूर्व के वित्तीय प्रबन्धकों का षड्यन्त्र माना। लेकिन वित्तीय विशेषज्ञों ने इन माँगों को आर्थिक सिद्धान्तों के प्रतिकूल माना। 1893 ईसवी की आर्थिक मंदी के फलस्वरूप क्लीवलैंड ने शर्मन चाँदी क्रय अधिनियम रद्द कर दिया।

कुछ समय पश्चात् क्लीवलैन्ड ने ऋण पत्र जारी करके सोना खरीदा। तथा संघीय कोष में स्वर्ण की वृद्धि की। लेकिन यह कार्य उसने पापुलिस्ट दल के दबाव में आकर नहीं किया था। पापुलिस्टों के मत में भी यह कार्य उसने अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक परिस्थितियों से विवश होकर किया था।

(ii) रेल कम्पनियों पर सरकारी नियन्त्रण - थियोडोर रूजवेल्ट का दृष्टिकोण उग्र परिवर्तनवादी था। पार्क्स के अनुसार वह पापुलिस्ट आन्दोलन राज्यों तथा शहरों में फैली हुई प्रगति की लहरों तथा प्रसिद्ध लेखक मकरेकरो द्वारा प्रतिपादित सुधारवादी भावना से प्रभावित था। उसने रेल कम्पनियों पर नियन्त्रण स्थापित किया। उसके द्वारा गठित अन्तर्राज्यीय वाणिज्य आयोग को रेल किराये की दर निश्चित करने का अधिकार दे दिया गया।

(iii) संघीय कृषि-ऋण साधन -विल्सन ने वेयरहाऊस अधिनियम (Warehouse Act) पारित करके कृषकों को प्रधान फसलों की जमानत पर ऋण देने की अनुमति देकर पापुलिस्टों की उपकोष योजना को बहुत कुछ अंशों में कार्यान्वित कर दिया। लेकिन यह दल अपने राजनीतिक उद्देश्यों में सफल नहीं हो सका।

दल के पतन का कारण :

(1) नीग्रो लोगों की समस्या में अधिक रुचि - इस दल के सदस्यों ने नीग्रो व श्वेतांगों के आपसी मतभेद व संघर्षों में अधिक रुचि ली। पार्क्स के मत में इसके उदारवादी नेताओं के प्रयत्नों के बावजूद गरीब श्वेत किसान नीग्रो लोगों का कट्टर विरोध करते रहे। विशेषकर दक्षिण के राज्यों में तो पापुलिस्ट आन्दोलन अपने मुख्य उद्देश्यों से भटक गया और श्वेतांगों की प्रभुसत्ता का धर्म-युद्ध बन गया।

(2) उत्तर के औद्योगिक प्रतिष्ठानों का विरोध - इस दल का आंदोलन उत्तर के औद्योगिक प्रतिष्ठानों के विरुद्ध भी था। उन्होंने सदैव इस दल का विरोध किया।

(3) 1896 ईसवी के चुनाव में राष्ट्रपति पद के लिए रिपब्लिकन दल का समर्थन- ऐसा करके उन्होंने जनता में यह विश्वास पैदा कर दिया कि उनके पास कोई योग्य नेता नहीं है।

(4) सरकार का सुधारवादी दृष्टिकोण - कृषकों के प्रति सरकार ने सुधारवादी दृष्टिकोण अपनाया। थियोडोर रूजवेल्ट एवं विल्सन ने उनके हित में कानून पारित किये।

(5) कृषकों की दशा में सुधार - बीसवीं सदी के आरम्भ में वैज्ञानिक अनुसंधान के नये तरीकों के उपयोग से कृषकों की दशा में सुधार, कृषि उत्पादन में वृद्धि हुई तथा कृषकों को उनके उत्पादों की उचित कीमतें मिलने लगीं।

इस समय कृषि यंत्रों का प्रचलन भी व्यापक हो गया। लूथर बरबैंक (Luthar Burbank) और मार्क कार्लेटन (Mark Carleton) आदि ने विभिन्न फसलों को कीड़ों से बचाने, उनको उत्पादन बढ़ाने के नये तरीकों का आविष्कार कर कृषि उत्पादन में वृद्धि करने में योगदान दिया। विभिन्न राज्यों के कृषि कॉलेज भी शोध कार्य में पीछे नहीं रहे। केन्द्रीय सरकार द्वारा स्थापित कृषि विभाग के वैज्ञानिकों ने भी अपने शोध कार्यों द्वारा पापुलिस्ट आन्दोलन ने अमेरिकी सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक व्यवस्था को अत्याधिक प्रभावित किया। वास्तव में इस आन्दोलन को ग्रामीण प्रजातन्त्र का पुनरुत्थान माना जा सकता है जो जेफरसनवाद व जैक्सनवाद का आधार था तथा जिन्होंने अमेरिकी विचारों और संस्थाओं का निर्माण किया था। यद्यपि यह आन्दोलन पूर्ण रूप से सफल नहीं हुआ, किन्तु इसने निहित स्वार्थों एवं एकाधिकारियों को यह स्मरण कराया कि अमेरिकी प्रजातन्त्र जनता का, जनता के लिए एवं जनता द्वारा ही निर्दिष्ट दशा में सफल हो सकता है, अन्यथा नहीं।

कृषकों की दशा में सुधार होने का एक प्रभाव पापुलिस्ट दल का पतन था। कृषकों के उचित प्रशिक्षण की व्यवस्था की, और इस क्षेत्र में सराहनीय कार्य किया। 1914 ईसवी में संघीय

सरकार ने स्मिथ-लीवर एक्ट (Smith- Lever Act) द्वारा प्रत्येक जिले में कृषि विस्तार निदेशक की नियुक्ति की। सरकार द्वारा नियुक्त व्यक्तियों ने कृषि महाविद्यालयों के सहयोग से फोर एच. क्लब (Four H. Club) प्रत्येक जिले में खोले गये। इन प्रयत्नों के फलस्वरूप उत्पादन में बहुत अधिक वृद्धि हुई और कृषकों को अपनी उपज की कीमत पहले की अपेक्षा पचास प्रतिशत अधिक मिलने लगी। द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् अनेक कारणों से फिर अनाज की कीमतें गिरने लगीं। 1929 ईसवी में आरम्भ हुए आर्थिक संकटों ने कृषकों की दशा को शोचनीय कर दिया। अनेक कृषकों ने अपने खेत बेच दिये। रूजवेल्ट ने न्यू डील कार्यक्रम में एग्रीकल्चरल एडजस्टमैंट एक्ट (Agricultural Adjustment Act) द्वारा कृषि उत्पादन को आवश्यकता के अनुसार सीमित करने का सफल प्रयत्न किया। इसके परिणामस्वरूप अनाज आदि के मूल्यों में और कमी नहीं आई। 1936 ईसवी में इस अधिनियम को अवैध घोषित किया गया। रूजवेल्ट ने अब अन्य तरीकों से कृषकों की सहायता आरम्भ की। 1933 ईसवी में बनाये गये फार्म क्रेडिट एडमिनिस्ट्रेशन (Farm Credit Administration) ने कृषकों को उदार शर्तों पर ऋण देने की व्यवस्था की। उसने यह भी प्रयत्न किया कि अधिक से अधिक कृषक भूमि का स्वामित्व पुनः प्राप्त करे। 1938 ईसवी में द्वितीय एग्रीकल्चरल एडजस्टमैंट एडमिनिस्ट्रेशन बनाया गया। रूजवेल्ट के इन कार्यों से कृषकों की दशा सुधरने लगी। द्वितीय विश्व युद्ध के आरम्भ होते ही अनाज, कपास व तम्बाकू के मूल्यों में वृद्धि होने से कृषकों को अधिक लाभ हुआ। उनमें से अधिकांश ने बन्धक रखी हुई भूमि छुड़ा ली। युद्ध की समाप्ति के बाद अमेरिका के अनाज व अन्य फसलों की माँग फिर गिर गई। 1947 ईसवी में मार्शल योजना के अन्तर्गत सोलह पश्चिमी यूरोपीय देशों को सहायता प्रदान करने के कार्यक्रम में यह भी व्यवस्था की गई कि संयुक्त राज्य अमेरिका की आवश्यकता से अधिक उपज को इन देशों में भेजा जाये। इस प्रकार देश में अनाज आदि के मूल्यों में गिरावट नहीं आने दी गई।

उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध और बीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध में अमेरिका विश्व की एक महान् शक्ति बन गया। आधुनिक युग में विज्ञान व तकनीकी ज्ञान के क्षेत्र में भी यह देश अग्रणी है। औद्योगिक व कृषि उत्पादन में अमेरिका पर्याप्त उन्नति कर चुका है। शिक्षा का सर्वांगीण विकास इस शक्तिशाली प्रजातन्त्र से स्पष्ट दिखाई देता है। यद्यपि कला व साहित्य के क्षेत्र में अमेरिका की उपलिब्धयाँ इतनी प्रभावशाली नहीं हैं, किन्तु उन्हें नगण्य भी नहीं माना जा सकता। अमेरिका के निवासियों का जीवन स्तर भी बहुत ऊँचा है। इससे अनेक प्रकार की सामाजिक समस्याएँ भी उत्पन्न हो गई हैं। जिनमें सबसे अधिक गम्भीर समस्या वहाँ के निवासियों का नैतिक पतन है। अपराधों की संख्या में वृद्धि हो रही है और शराब व अन्य मादक द्रव्यों का प्रयोग बढ़ रहा है। मनुष्यों में मानसिक तनाव अधिक बढ़ रहा है। इन समस्याओं के समाधान के लिए राष्ट्र प्रयत्नशील है।

□□□

प्रश्नावली

प्रथम खण्ड

अध्याय – 1

1. अमेरिका में इंग्लैण्ड के औपनिवेशिक साम्राज्य स्थापित करने के कारणों का विश्लेषण कीजिए।
2. अमेरिका में ब्रिटिश उपनिवेशों की प्रगति का वर्णन कीजिए।

अध्याय – 2

1. उत्तरी अमेरिका के ब्रिटिश उपनिवेशों के प्रवासियों की सामाजिक, धार्मिक व आर्थिक दशा की विवेचना कीजिए।
2. औपनिवेशिक काल में अमेरिकन उपनिवेशों के व्यापार व व्यवसाय पर इंग्लैण्ड के नियन्त्रण की विवेचना कीजिए।
3. तेरह अमेरिकन उपनिवेशों की शासन-व्यवस्था की विवेचना कीजिए।
4. निम्नलिखित पर संक्षिप्त में टिप्पणी लिखिए –
   अमेरिका में इंग्लैण्ड व फ्रांस के बीच संघर्ष।

अध्याय – 3

1. अमेरिकन क्रान्ति के कारणों का विश्लेषण कीजिए।
2. प्रथम व द्वितीय महाद्वीपीय कांग्रेस के निर्णयों की विवेचना कीजिए।
3. अमेरिकन क्रान्ति में अमेरिका की सफलता के कारणों का परीक्षण कीजिए।
4. अमेरिकन क्रान्ति के स्वरूप व महत्त्व की विवेचना कीजिए।

अध्याय – 4

1. आन्तरिक व विदेश नीति के क्षेत्र में अमेरिकन परिसंघ की उपलब्धियों की विवेचना कीजिए।
2. अमेरिकन संविधान के निर्माण की प्रक्रिया और रूपरेखा पर प्रकाश डालिए।
3. अमेरिका के संविधान के महत्त्व की समीक्षा कीजिए।
4. 1786 ईसवी के फिलाडेल्फिया सम्मेलन पर एक निबन्ध लिखिए।

अध्याय - 5

1. वाशिंगटन के प्रशासनिक सुधारों का मूल्यांकन कीजिए।
2. वाशिंगटन के शासन काल में ब्रिटेन, फ्रांस व स्पेन के साथ अमेरिका के सम्बन्धों की विवेचना कीजिए।
3. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए-
   (अ) हैमिल्टन के वित्तीय सुधार
   (ब) फ्रांसीसी क्रान्ति के प्रति अमेरिका का दृष्टिकोण (1789-1795 ईसवी)
4. जॉन एडम्स के शासन काल का वर्णन कीजिए।

अध्याय - 6

1. जेफरसन की आन्तरिक व विदेशी नीति की समीक्षा कीजिए।

अध्याय - 7

1. मेडीसन (1809-1816 ईसवी) की आन्तरिक व विदेश नीति की समीक्षा कीजिए।
2. 1812 ईसवी में इंग्लैण्ड के साथ आरम्भ हुए युद्ध के कारणों और परिणामों का विश्लेषण कीजिए।
3. निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखिए -
   (अ) घैण्ट की सन्धि (1814 ईसवी)
   (ब) असंसर्ग विधेयक

अध्याय - 8

1. थॉमस मुनरो की विदेश नीति की विवेचना कीजिए।
2. निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखिए-
   (अ) मुनरो सिद्धान्त
   (ब) मुनरो की गृह नीति
   (स) जान क्विंसी एडम्स की गृह व विदेश नीति (1825-1829 ईसवी)

अध्याय - 9

1. जैक्सोनियन लोकतन्त्र की मुख्य विशेषताओं की विवेचना कीजिए।
2. एन्ड्रयू जैक्सन की गृह नीति की विवेचना कीजिए।
3. जैक्सन के शासन काल में तटकरों के सम्बन्धों में प्रतिपादित निरस्त्रीकरण के सिद्धान्त के पक्ष व विपक्ष में राजनीतिज्ञों द्वारा दिये गये तर्कों की विवेचना कीजिए।
4. निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखिए -
   (अ) निष्प्रभावन संकट (1832 ईसवी)

(ब) राष्ट्रीय बैंक का मुद्दा (1832 ईसवी)

(स) जैक्सन की विदेश नीति

अध्याय - 10

1. टिलर व पोल्क के शासन काल में मैक्सिको के साथ अमेरिका के सम्बन्धों की विवेचना कीजिए।
2. अमेरिका व मैक्सिको के बीच हुए युद्ध के कारणों व परिणामों का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए।
3. 1841 से 1861 के मध्य दास प्रथा के उन्मूलन के आन्दोलन की प्रगति का विवरण दीजिए।
4. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए-

   (अ) नियति अभिव्यक्ति (Manifest Destiny)

   (ब) दास प्रथा के बारे में 1850 ईसवी का समझौता

   (स) केन्सस-नेब्रास्का बिल

   (द) ड्रेट-स्कॉट का मामला

   (य) लिंकन-डगलस विवाद

   (र) जॉर्ज ब्राउन का आक्रमण

अध्याय - 11

1. पश्चिम की ओर प्रसार के कारणों व परिणामों का विश्लेषण कीजिए।

अध्याय - 12

1. 1789 से 1861 के मध्य अमेरिका की सामाजिक दशा का वर्णन कीजिए।
2. स्वतंत्रता प्राप्ति से लेकर गृह युद्ध तक अमेरिका की आर्थिक प्रगति का विवरण दीजिए।
3. 1789 से 1861 तक अमेरिका में शिक्षा साहित्य व कला के विकास पर एक निबन्ध लिखिए।

द्वितीय खण्ड

अध्याय - 13

1. गृह युद्ध के कारणों और परिणामों का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए।
2. दास प्रथा उन्मूलन आन्दोलन के उदय व विकास को रेखांकित कीजिए।
3. गृह युद्ध एक शल्य चिकित्सा थी जो कि दुःखदायी होते हुए भी संयुक्त राज्य अमेरिका के लिए अनकहा आशीर्वाद बन गई। विवेचना कीजिए।

अध्याय - 14

1. अमेरिका के गृह युद्ध के पश्चात् पुनर्निर्माण की समस्याओं की विवेचना कीजिए। उन्हें किस प्रकार सुलझाया गया।
2. 'एन्ड्र्यू जॉन्सन अमेरिकी इतिहास में बहुत दुर्भाग्यशाली तथा अनुचित ढंग से बदनाम किया गया राष्ट्रपति था।' इस कथन की विवेचना कीजिए।
3. यूलिसिस ग्रान्ट की गणना अमेरिका के द्वितीय श्रेणी के राजनीतिज्ञों में की जाती है। इस कथन की विवेचना कीजिए।
4. 1865 से 1885 ईसवी तक रिपब्लिकन राष्ट्रपतियों की प्रशासनिक उपलब्धियों का मूल्यांकन कीजिए।
5. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए -
   (अ) कु कलक्स क्लान
   (ब) 1865 से 1885 ईसवी तक के पुनर्निर्माण कार्यों का मूल्यांकन
   (स) हेज का प्रशासन

अध्याय - 15

1. क्लीवलैण्ड के दोनों राष्ट्रपतित्व काल में हुए सुधारों का वर्णन कीजिए।
2. थियोडोर रूजवेल्ट के आन्तरिक प्रशासन की प्रमुख विशेषताओं की व्याख्या कीजिए।

अध्याय - 16

1. संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा साम्राज्यवाद नीति को अपनाने के कारणों की विवेचना कीजिए। 1909 ईसवी तक के उसके साम्राज्य विस्तार को रेखांकित कीजिए।
2. "स्पेन-अमेरिकी युद्ध अमेरिकी साम्राज्यवादी भावनाओं की अभिव्यक्ति था जिसके परिणामस्वरूप संयुक्त राज्य अमेरिका विश्व शक्ति बन गया।" इस कथन की विवेचना कीजिए।
3. स्पेन-अमेरिकी युद्ध के कारणों और परिणामों की विवेचना कीजिए।
4. थियोडोर रूजवेल्ट की लैटिन अमेरिकन नीति की समीक्षा कीजिए।
5. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए -
   (अ) रूजवेल्ट कारोलरी
   (ब) 1865 से 1909 तक सुदूर पूर्व में अमेरिकन प्रभाव
   (स) पनामा नहर का निर्माण
   (द) थियोडोर रूजवेल्ट की 'लम्बी छड़ी' नीति

अध्याय - 17

1. टैफ्ट के शासन काल में किये गये सुधारों का वर्णन कीजिए।

2. 1909 से 1929 ईसवी में प्रगतिवादी सुधार आन्दोलन की उपलब्धियों का मूल्यांकन कीजिए।
3. वुडरो विल्सन द्वारा किये गये आन्तरिक सुधारों की विवेचना कीजिए।
4. ''हार्डिंग का सम्पूर्ण शासन काल भ्रष्टाचारों से युक्त था।'' इस कथन की समीक्षा कीजिए।
5. कुलीज़ व हूवर की प्रशासनिक उपलब्धियों का मूल्यांकन कीजिए।

अध्याय - 18

1. 1929-1930 ईसवी की भयंकर आर्थिक मंदी के कारणों की विवेचना कीजिए।
2. फ्रेंकलिन डी. रूज़वेल्ट के न्यू डील कार्यक्रम की विवेचना कीजिए। वह किस सीमा तक सफल रहा?
3. न्यू डील के स्वरूप व प्रमुख उद्देश्यों की विवेचना कीजिए।

अध्याय - 19

1. टैफ्ट की ''डालर कूटनीति'' का क्या अभिप्राय है? लैटिन अमेरिका में इसके प्रभाव का परीक्षण कीजिए।
2. अमेरिका के प्रथम विश्व युद्ध में प्रवेश के कारणों का विश्लेषण कीजिए।
3. पेरिस शांति सम्मेलन में विल्सन की भूमिका की विवेचना कीजिए।

अध्याय - 20

1. 1921 से 1933 तक अमेरिका के चीन व जापान के साथ सम्बन्धों की विवेचना कीजिए।
2. 1921 से 1933 के मध्य संयुक्त राज्य अमेरिका की लैटिन अमेरिका नीति की समीक्षा कीजिए।

अध्याय - 21

1. फ्रेंकलिन डी. रूजवेल्ट की लैटिन अमेरिकी नीति की विवेचना कीजिए।
2. लैटिन अमेरिकन देशों के प्रति 'अच्छे पड़ौसी' की नीति से क्या अभिप्राय है? इसके अन्तर्गत लैटिन अमेरिकी देशों के साथ अमेरिका के सम्बन्धों का परीक्षण कीजिए।
3. 1933 से 1940 ईसवी तक फ्रेंकलिन डी. रूजवेल्ट की विदेश नीति का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए।
4. 1933 से 1941 ईसवी तक जापान व चीन के साथ अमेरिका के सम्बन्धों की विवेचना कीजिए।
5. द्वितीय महायुद्ध में अमेरिका के प्रवेश के क्या कारण थे? इस युद्ध में उसकी भूमिका की विवेचना कीजिए।
6. युद्ध काल में स्थायी शांति एवं विश्व की नव व्यवस्था की स्थापना के लिए अमेरिका के प्रयत्नों को रेखांकित कीजिए।

अध्याय - 22

1. ट्रूमैन प्रशासन की उपलब्धियों की विवेचना कीजिए।
2. शीत युद्ध से क्या अभिप्राय है? इसके लिए उत्तरदायी परिस्थितियों की विवेचना कीजिए।
3. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए -
   (अ) ट्रूमैन सिद्धान्त
   (ब) मार्शल योजना
4. विल्सन द्वारा प्रतिपादित 'नई स्वतंत्रता' के कार्यक्रमों व उपलब्धियों का मूल्यांकन कीजिए।

अध्याय - 23

1. 1861 से 1953 ई. तक अमेरिका की बदलती हुई सामाजिक दशा का वर्णन कीजिए।
2. गृह युद्ध से लेकर 1953 ई. तक शिक्षा व साहित्य के क्षेत्र में अमेरिका की प्रगति को रेखांकित कीजिए।
3. 1861 से 1953 ईसवी तक कला व विज्ञान के क्षेत्रों में अमेरिका की प्रगति का वर्णन कीजिए।
4. उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध तथा बीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध में अमेरिका के इतिहास की एक प्रमुख विशेषता उसकी आर्थिक प्रगति थी। इस कथन की विवेचना कीजिए।
5. पोपुलिस्ट दल के उदय के कारणों और उसके कार्यक्रम की विवेचना कीजिए। उसकी उपलब्धियों का मूल्यांकन कीजिए।



परिशिष्ट I

संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति

क्र.सं.	राष्ट्रपति के नाम	कार्य अवधि	दल का नाम
1.	ज़ार्ज वाशिंगटन	1789 – 1797	
2.	जॉन एड्म्स	1797 – 1801	फेडरलिस्ट
3.	थामस जेफ़रसरन	1801 – 1809	रिपब्लिकन
4.	जेम्स मेडिसन	1809 – 1817	"
5.	जेम्स मुनरो	1817 – 1825	"
6.	जॉन क्विंसी एडम्स	1825 – 1829	"
7.	ऐंड्रयू जैक्सन	1829 – 1837	डेमोक्रेट
8.	मार्टिन वान ब्यूरेन	1837 – 1841	"
9.	विलियम हेनरी हेरिसन	1841	ह्विग
10.	जॉन टिलर	1841 – 1845	ह्विग
11.	जेम्स के.पोल्क	1845 – 1849	डेमोक्रेट
12.	जकारे टेलर	1849 – 1850	ह्विग
13.	मिलार्ड फिलमोर	1850 – 1853	ह्विग
14.	फ्रेंकलिन पियर्स	1853 – 1857	डेमोक्रेट
15.	जेम्स बुचानन	1857 – 1861	डेमोक्रेट
16.	अब्राहम लिंकन	1861 – 1865	रिपब्लिकन
17.	एन्ड्रयू ज़ानसन	1865 – 1869	"
18.	यूलिसिस ग्रांट	1869 – 1877	"
19.	रदरफ़ोर्ड हैज़	1877 – 1881	"
20.	जेम्स ए. गारफील्ड	1881	"
21.	चेस्टर ए. आर्थर	1881 – 1885	"
22.	ग्रोवर क्लीवलैंड	1885 – 1889	डेमोक्रेट
23.	बैंजामिन हेरिसन	1889 – 1893	रिपब्लिकन
24.	ग्रोवर क्लीवलैंड	1893 – 1897	डेमोक्रेट
25.	विलियम मेकिन्ले	1897 – 1901	रिपब्लिकन
26.	थियोडोर रूजवेल्ट	1901 – 1909	"
27.	विलियम टैफ्ट	1909 – 1913	"
28.	वुडरो विल्सन	1913 – 1921	डेमोक्रेट
29.	वारेन जी. हार्डिंग	1921 – 1923	रिपब्लिकन
30.	काल्विन कूलिज	1923 – 1929	"
31.	हरबर्ट हूवर	1929 – 1933	"
32.	फ्रेंकलिन डी. रूजवेल्ट	1933 – 1945	डेमोक्रेट
33.	हैरी एस. ट्रूमैन	1945 – 1953	डेमोक्रेट

परिशिष्ट II

चयनित ग्रन्थों की सूची

(1) अंग्रेजी भाषा :

लेखक :	ग्रन्थ
आग एफ.ए.	: रेन ऑफ एनड्रयू जैक्सन
इरविन ब्रान्ट	: दी कोन्सिटिट्यूशन ऑफ दी यूनाइटेड स्टेट्स
एडम्स हैनरी	: हिस्ट्री ऑफ दी यूनाइटेड स्टेट्स ड्यूरिंग दी एडमिनिस्ट्रेशन ऑफ जेफरसन एण्ड मेडीसन (1 जिल्द)
एल्डन जे.आर.	: दी अमेरिकन रिवोल्यूशन 1775–1783
एन्ड्रयूज सी.एम.	: दी कोलोनिअल पिरीयड ऑफ अमेरिकन हिस्ट्री (चार जिल्द)
कामेजर एच.एस.	: संयुक्त राज्य अमेरिका का इतिहास (हिन्दी)
कामेजर एच.एस.	: अमेरिका इन परसपेक्टिव
कैनफील्ड लियो एच. व विल्डर बी. हावर्ड	: माडर्न अमेरिका
क्राउन जे. ए. व फाक्स डी.आर.	: दी कम्पलीशन ऑफ इन्डेपेंडेंस 1790–1830
कूउल्टर ई.एम.	: दी साउथ ड्यूरिंग रिकन्सट्रक्शन
केनन जी.एफ.	: अमेरिकन डिप्लोमेसी (1900–1950)
करेंट रिचर्ड, एन. विलियम्स, टी. हैरी व फेडल फ्रेंक	: अमेरिकन हिस्ट्री : ए सर्वे
कन्लिपफ्रे मार्क्स	: जार्ज वाशिंगटन : मैन एण्ड मोन्यूमेन्ट
गिप्सन एल.एच.	: दी कमिंग ऑफ दी रिवोल्यूशन, 1763–1775
ग्रिअर टी.एच.	: अमेरिकन सोशल रिफोर्म मूवमेन्ट
जोन्स वी.एल.	: दी कैरीबियन इन्ट्रैस्ट्स ऑफ द यूनाइटेड स्टेट्स
जेनसन मेरिल	: दि न्यू नेशन : ए हिस्ट्री ऑफ यूनाइटेड स्टेट्स ड्यूरिंग कन्फेडरेशन (1781–1789)
टाइन वान	: दी वार ऑफ इन्डेपेंडेंस
डेविड सनन	: दी ग्रेट डिप्रेशन
डलेस एफ.आर.	: अमेरिका 'ज् राइज टू वर्ल्ड पावर (1898–1954)
थामस बी.पी.	: अब्राहम लिंकन
थामस ग्रीयर	: वाट रूजवेल्ट थॉट
नेविन्स, एलन	: दी इमरजेन्स ऑफ लिंकन (दो ज़िल्द)

नेविन्स, एलन	: दी इमेरजेन्स ऑफ मॉडर्न अमेरिका
न्ये. आरबी. व मांरपरगोने ई.	: दी ग्रोथ ऑफ यू.एस.ए.
पार्क्स हेनरी बेम्फोर्ड	: दी यूनाइटेड स्टेट्स ऑफ अमेरिका
प्रिंगल हेनरी	: थियोडोर रूजवेल्ट
प्राट जे. डब्ल्यू.	: ए हिस्ट्री ऑफ दी यूनाइटेड स्टेट्स फोरेन पॉलिसी
प्लैट और ड्रमन्ड	: ऑवर नेशन फ्राम इट्स क्रिएशन
फॉकनर एच.यू.	: अमेरिकन इकोनॉमिक हिस्ट्री
फोर्ड एच.जे.	: वाशिंगटन एण्ड हिज कौलिंग्स
बीयर्ड चार्ल्स व बीयर्ड मेरी	: दी राईज ऑफ अमेरिकन सिविलिजेशन (दो जिल्द)
दी बीयर्डस्	: न्यू बेसिक हिस्ट्री ऑफ दी यूनाइटेड स्टेट्स (दो जिल्द)
ब्रोगन डी. डब्ल्यू.	: दी इरा ऑफ फ्रेंकलिन डी. रूजवेल्ट
बूरस्टीन डी.जे.	: दी अमेरिकन : दी कोलोनियर एक्सपीरियन्स
बीयर जी.एल.	: दी ओल्ड कोलोनियल सिस्टम (1660-1754)(दो जिल्द)
ब्रोक डब्ल्यू.आर.	: दी चार्टर ऑफ अमेरिकन हिस्ट्री
ब्लेक एन.एम.	: ए शार्ट हिस्ट्री ऑफ अमेरिकन लाइफ
बेलिन, डेविस, डॉनाल्ड थॉमस, बीवे तथा वुड	: दी ग्रेट रिपब्लिक
मैकडोनेल्ड विलियम	: जैक्सोनियन डेमोक्रेसी
मारिस आर.बी.	: दी अमेरिकन रिवोल्यूशन, ए शोर्ट हिस्ट्री
मिलर जे.सी.	: दी ओरिजन ऑफ दी अमेरिकन रिवोल्यूशन
मोरिसन ऐसई	: दी आक्सफोर्ड हिस्ट्री ऑफ दी अमेरिकन पिपुल
मोरोय, आन्द्रे	: ए न्यू हिस्ट्री ऑफ दी यूनाइटेड स्टेट्स
रेंडाल जे.जी.	: दी सिविल वार एण्ड रिकन्सट्रक्शन
रेंडाल जे.जी.	: लिंकन दी प्रेसिडेन्ट (चार जिल्द)
रिस्टर, सी.सी.	: दी साउथ वैस्टर्न फ्रन्टियर (1865-1890)
लेलैण्ड, बाल्डविन	: दी राईज ऑफ अमेरिकन सिविलिजेशन
व्हाइट एल. डी.	: दी रिपब्लिकन इरा (1768-1801)
वेड, वील्डर, वेड	: ए हिस्ट्री ऑफ दी यूनाइटेड स्टेट्स ए स्टडी इन एडमिनिस्ट्रैटिव हिस्ट्री
वील्डर कनफ्लिड	: दी मेकिंग ऑफ मॉडर्न अमेरिका
विलियम्स डब्ल्यू.ए.	: दी शेपिंग ऑफ अमेरिकन डिप्लोमेसी

शलेसिंगर ए.एम. : दी एज ऑफ जैक्सन
शलेसिंगर ए.एम. व फोक्स डी.आर. : ए हिस्ट्री ऑफ अमेरिकन लाईफ (13 जिल्द)
हीक्स जे.डी. : दी पोपुलिस्ट रिवोल्ट
हिल सी.पी. : ए हिस्ट्री ऑफ दी यूनाइटेड स्टेट्स

2. हिन्दी भाषा :

जे.आर. काम्बले : अमेरिका का इतिहास (1860-1950)
शर्मा, मथुरालाल : अमेरिका का इतिहास (1776-1950)
नेविन्स एवं कोमेज़र : संयुक्त राज्य अमेरिका का इतिहास
रामपाल कौशिक : संयुक्त राज्य अमेरिका का इतिहास - शोधपूर्ण अध्ययन

□□□

परिशिष्ट - 3

लेखकों का संक्षिप्त परिचय

एल.पी.माथुर	:	एम.ए., पी-एच.डी., भूतपूर्व एसोसिएट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर।
स्वर्गीय प्रेम नारायण माथुर	:	एम.ए., पी-एच.डी., भूतपूर्व एसोसिएट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, जोधपुर विश्वविद्यालय, जोधपुर।
जबर सिंह	:	एम.ए., पी-एच.डी., भूतपूर्व प्रवक्ता, इतिहास एवं भारतीय संस्कृति विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।
पुखराज आर्य	:	एम.ए., एसोसिएट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, जोधपुर विश्वविद्यालय, जोधपुर।
बी.एस. माथुर	:	एम.ए., पी-एच.डी., भूतपूर्व प्रोफेसर तथा अध्यक्ष एवं अधिष्ठाता, कला संकाय, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर।
आई.एस.मेहता	:	एम.ए., भूतपूर्व अध्यक्ष, इतिहास विभाग, गवर्नमेन्ट आर्ट्स व कॉमर्स कॉलेज, इन्दौर।
सी.एम.जैन	:	एम.ए., पी.एच.डी., भूतपूर्व एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर। (वर्तमान पता - एस-1, ए,महावीर नगर, टोंक रोड, जयपुर।)

□□□

बी.एस. माथुर, एम.ए., पीएच.डी. भूतपूर्व प्रोफेसर तथा अध्यक्ष इतिहास विभाग एवं अधिष्ठाता कला संकाय, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर।

एल.पी. माथुर, एम.ए., पीएच.डी. सेवा निवृत्त ऐसोशियेट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, उदयपुर विश्वविद्यालय, उदयपुर।

स्वर्गीय प्रेम नारायण माथुर, एम.ए., पीएच.डी. ऐसोशियेट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, जोधपुर विश्वविद्यालय, जोधपुर।

जबर सिंह, एम.ए., पीएच.डी. प्रवक्ता, इतिहास एवं भारतीय संस्कृति विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।

पुखराज आर्य, एम.ए., ऐसोशियेट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, जोधपुर विश्वविद्यालय, जोधपुर।

आई.एस. मेहता, एम.ए., सेवा निवृत्त अध्यक्ष, इतिहास विभाग, गवर्नमैंट आर्ट्स व कॉमर्स कॉलेज, इन्दौर।

सी.एम. जैन, एम.ए., पीएच.डी. सेवा निवृत्त संचालक, कोरेस्पोंडेंस कोर्स, कोटा विश्वविद्यालय, कोटा।

अकादमी द्वारा प्रकाशित इतिहास, संस्कृति और पुरातत्व विषयक पुस्तकें

1.	ऐतिहासिक स्थानावली	विजयेन्द्र कुमार माथुर	80.00
2.	आधुनिक राजस्थान का वृहत् इतिहास खण्ड–1 (पं.सं.)	डॉ. रामप्रसाद व्यास	125.00
3.	आधुनिक राजस्थान का वृहत् इतिहास खण्ड–2 (च.सं.)	डॉ. रामप्रसाद व्यास	125.00
4.	मध्यकालीन भारतीय सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक संस्थाएँ (सातवां सं.)	डॉ. घनश्याम दत्त शर्मा	85.00
5.	राजस्थान का सांस्कृतिक इतिहास (18 वां संस्करण)	डॉ. गोपीनाथ शर्मा	75.00
6.	राजस्थान के इतिहास के स्रोत (छठा सं.)	डॉ. गोपीनाथ शर्मा	100.00
7.	मारवाड़ से मुगलो का सम्बन्ध (1526–1748) (द्वि.सं.)	डॉ. वी.एस. भार्गव	33.00
8.	भारतीय इतिहास 1757–1950 एवं आधुनिक विश्व इतिहास (द्वि.सं.)	डॉ. वी.एस. भार्गव	150.00
9.	इतिहास : स्वरूप एवं सिद्धान्त (नवां सं.)	सम्पा.– डॉ. गोविन्दचन्द्र पाण्डेय	95.00
10.	सवाई जयसिंह (तृ.सं.)	वीरेन्द्र स्वरूप भटनागर	65.00
11.	भारतीय इतिहास (प्राचीनकाल से सन् 1757 तक) (द्वि.सं.)	डॉ. वी.एस. भार्गव	185.00
12.	भारत की तस्वीर	अर्पिता माथुर	135.00
13.	राजस्थान की मूर्तिकला परम्परा	डॉ. नीलिमा वशिष्ठ	170.00
14.	यूरोपीय चित्रकला का इतिहास (सातवां सं.)	र.वि. साखलकर	190.00
15.	राजस्थान की सांस्कृतिक परम्परा (छब्बीसवां सं)	सम्पा.– डॉ. जयसिंह नीरज, डॉ. बी.एल. शर्मा	95.00
16.	आधुनिक भारत (तृ.सं.)	पी.एल गौतम	250.00
17.	संयुक्त राज्य अमेरिका का इतिहास (पं.सं.)	सम्पा.– डॉ. बी.एस. माथुर	160.00
18.	प्राचीन सभ्यताओं में विज्ञान एवं तकनीक (द्वि.सं.)	डॉ. रजनीकान्त पंत	160.00
19.	इतिहास शिक्षण (सातवां सं.)	डॉ. उपेन्द्रनाथ दीक्षित, डॉ. हेतसिंह बघेला	90.00
20.	भारत का इतिहास (1750–1950)	डॉ. बी.के. शर्मा	235.00
21.	भारतीय संस्कृति के मूलाधार (द्वि.सं)	म0सम्पा.– शिव कुमार गुप्त	175.00
22.	राजस्थान के प्रमुख दुर्ग (आठवां सं)	डॉ. राघवेन्द्र सिंह मनोहर	200.00
23.	सुभाष चन्द्र बोस (द्वि.सं.)	डॉ. एल.पी. माथुर	145.00
24.	भारत का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास भाग–प्रथम (तृ.सं.)	डॉ. कृष्णगोपाल शर्मा, डॉ. हुकम चन्द जैन	210.00
25.	भारत का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास भाग–द्वितीय (तृ.सं.)	डॉ. हुकम चन्द जैन, डॉ. कृष्णगोपाल शर्मा	165.00
26.	राजस्थान में किसान एवं आदिवासी आन्दोलन (च.सं.)	डॉ. बृज किशोर शर्मा	105.00
27.	राजस्थान में प्रजामंडल आन्दोलन (तृ.सं.)	डॉ. विनीता परिहार	80.00
28.	पर्यटन : उद्भव एवं विकास (तृ.सं.)	डॉ. राजेश कुमार व्यास	85.00
29.	राजस्थान में स्वतन्त्रता संग्राम (अठारहवां सं.)	बी.एल. पानगड़िया	75.00
30.	सांस्कृतिक पर्यटन (द्वि.सं.)	डॉ. राजेश कुमार व्यास	95.00
31.	आधुनिक चित्रकला का इतिहास (चौदहवां सं)	र.वि. साखलकर	135.00
32.	महाराणा प्रताप (तृ.सं.)	प्रो. आर.पी. व्यास	100.00
33.	राजस्थान : संस्कृति, कला एवं साहित्य (सातवां सं)	डॉ. प्रेमचन्द्र गोस्वामी	100.00
34.	राजस्थान का इतिहास कोश (चतुर्थ सं.)	डॉ. सुखवीर सिंह गहलोत	100.00
35.	स्वतंत्रता संग्राम एवं जमनालाल बजाज (प्र.सं.)	डॉ. मंजु गुप्ता	75.00
36.	कविराज श्यामलदास का इतिहास लेखन	डॉ. गोपाल शरण गुप्ता	85.00

ISBN 978-81-7137-9952-1



मूल्य : 160.00 रूपये मात्र

Website : www.rajhga.com